बदस्तूर चलने लगी। अब कज्जाकों की औरतें अक्सर ही रात को खाइयों में आने और रोटी और घर की बनी वोदका अपने साथ लाने लगीं। वैसे खाने-पीने की यहां कोई तकलीफ न थी। कज्जाकों ने दो हुट्टे बछड़ों को मार डाला था। इस पर भी वे हर दिन तालाब पर जाकर मछलियां फंसा लाते थे। क्रिस्तोनिया मछली महकमे का मुखिया माना जाता था। किसी शरणार्थी का सत्तर फुट लम्बा जाल उसके हाथ लग गया था और मछली के शिकार के समय वह इसे ताल के गहरे-से-गहरे हिस्से में डाल देता था। साथ ही बड़ी डींगें मारता था कि नदी-किनारे की सारी चरागाहों में एक भी ताल ऐसा नहीं है जिसे वह पानी में हिलकर पार न कर सके।

मगर एक हफ्ते की लगातार मछलीमारी से क्रिस्तोनिया की कमीज और 'शारोवारी' कीचड़ से इस तरह चीकट होकर बदबू करने लगी कि अनीकुश्का ने खाई में उसके साथ लेटने से साफ़-साफ़ इन्कार कर दिया। बोला—"तुम्हारे बदन से मीठे पानी की मरी हुई, बड़ी मछली की तरह बदबू आती है। अगर मैं तुम्हारे साथ एक दिन और रहा तो किसी मछली को हाथ न लगा पाऊँगा।"

और, फिर, मच्छरों के बावजूद अनीकुश्का खुले में सोने लगा। तो, अब खाई की बगल में लेटने से पहले वह जमीन से मछलियों की खाल और अंतड़ियों से भरी रेत साफ़ करता और परेशानी से नाक-भौं सिकोड़ता। लेकिन, सवेरे क्रिस्तोनिया मछली के शिकार से लौटता, शांत भाव से, मर्यादा के साथ खाई के दरवाजे के पास बैठता और फिर, शिकार की कार्प मछलियों को साफ़कर उनकी अंतड़ियाँ निकालने लगता। बड़ी मक्खियाँ उसके सिर के ऊपर मँडरातीं और पीली चींटियों के दल-के-दल धावा-सा बोलते। अनीकुश्का हाँफते हुए दौड़ता और दूर से ही चीखता—"तुम्हें कोई दूसरी जगह नहीं मिलती? काश कि तुम्हारी मछलियों की ये हड्डियाँ तुम्हारे गले में जा फँसें! दूर चले जाओ, ईसा के नाम पर यहाँ से दूर चले जाओ। यहाँ मैं सोता हूँ और तुम हो कि यहीं चारों तरफ़ मछलियों की अंतड़ियाँ फैला रहे हो! चींटियों की एक पूरी फ़ौज-की-फ़ौज अपने साथ ले आये हो, और ऐसा कर दिया

है कि जगह अस्त्राखान की तरह बू करने लगी है।"

क्रिस्तोनिया घर का बना अपना चाकू पतलून के पाँयचों में पोंछता, अनीकुश्का के सफाचट नफ़रत से भरे चेहरे पर विचार-भरी दृष्टि डालता और फिर शांत भाव से कहता—"अनीकुश्का, तुम मछलियों की महक सह नहीं पाते। इसका मतलब यह है कि तुम्हारे पेट में कीड़े हैं। तुम खाली पेट थोड़ा-सा लहसुन क्यों नहीं खा लिया करते?"

इस पर अनीकुश्का थूकते और गालियाँ बकते हुए चला जाता।

इस तरह उनकी चोंचें चलती रहतीं। यों पूरी कम्पनी खासे मेल-मिलाप से रहती। खाने की चीज़ें बराबर भरी रहतीं और स्तीपान अस्ताखोव के अलावा बाक़ी सभी कज्ज़ाक ख़ुश नज़र आते।

जहाँ तक स्तीपान का सवाल है, उसने शायद कज्ज़ाकों से सुन लिया या शायद उसके दिल ने ही उससे कह दिया कि अकसीनिया, व्येशेन्स्काया जाकर ग्रिगोरी से मिलती रहती है। जो भी हो, वह अचानक ही कटु हो उठा, अकारण ही ट्रूप कमांडर पर बरस गया, और उसने पहरेदारी की ड्यूटी करने से साफ़ इनकार कर दिया।

अब वह सारा दिन काले बैंड वाले स्लेज कम्बल पर पड़ा आहें भरता और घर की उगी तम्बाकू अंधाधुंध फूँकता रहता। फिर सहसा ही उसने सुना कि कम्पनी कमाण्डर अनीकुश्का को कारतूसों के लिए व्येशेन्स्काया भेज रहा है। इस पर दो दिन में पहली बार वह अपनी खाई से बाहर निकला तो जगने के कारण सूजी आँखों से पानी बहने लगा। उसने लहराते पेड़ों की चमचमाती पत्तियाँ और हवा के इशारे पर आगे-आगे दौड़ते, सफ़ेद अयाल वाले बादलों को अविश्वास से देखा और जंगल की मर्मर ध्वनि सुनी तो उसकी आँखें चौंधियाने-सी लगीं। वह खाइयों के किनारे-किनारे अनीकुश्का की खोज में बढ़ा।

अनीकुश्का मिला तो दूसरे कज्ज़ाकों के सामने उसने उससे बातें करना पसंद न किया। वह उसे एक किनारे ले गया और बोला—"व्येशेन्स्काया में अकसीनिया को तलाशना और उससे मेरी तरफ़ से कहना कि वह फ़ौरन ही आकर मुझसे मिले। उससे कहना कि मेरे बालों में जुएँ पड़ गई हैं और मेरी कमीज़ें और पतलून गंदे हो गए हैं।

साथ ही उससे यह भी कहना···" स्तीपान घबराहट से मूंछों-ही-मूंछों मुस्कराते हुए एक क्षण को चुप रहा और फिर अपनी बात खत्म करते हुए बोला—"यह कहना कि उससे मिलने के लिए मैं बहुत ही बेचैन हूं··· मेरा दिल बहुत तड़प रहा है।"

अनीकुश्का ने आधी रात को व्येशेन्स्काया पहुंचकर अकसीनिया का ठिकाना खोज निकाला। वह ग्रिगोरी से हुई कहा-सुनी के बाद अपनी चाची के यहां रहने लगी थी। अनीकुश्का ने स्तीपान के पैग़ाम का शब्द-शब्द कह सुनाया और फिर बात में वजन लाने के लिए, अपनी तरफ़ से बोला—"स्तीपान ने कहा है अगर तुम न गईं तो वह खुद यहां आयेगा।"

अकसीनिया ने पूरी बात सुनी और लौटने की तैयारियां करने लगी। चाची ने आटा भिगोया और आटे के उठने पर केकें तैयार कर दीं। दो घंटे बाद अकसीनिया, अनीकुश्का के साथ तातारस्की कम्पनी के पड़ाव की ओर रवाना हो गई।···

स्तीपान ने अपने मन की उत्तेजना मन में ही रखते हुए अपनी पत्नी का अभिवादन किया। उसने अब पढ़ने की कोशिश की तो उसे अकसीनिया का चेहरा कहीं हलका लगा। अब उसने बड़ी ही सावधानी से स्वास्थ्य-सम्बन्धी पूछताछ की और ग्रिगोरी से मिलने या न मिलने की बात ग़लती से भी न उठाई। बातचीत के दौरान सिर्फ़ एक बार, आंखें नीची किये और मुंह दूसरी ओर को मोड़ते हुए, उसने पूछा—"लेकिन, तुम उधर से व्येशेन्स्काया क्यों नहीं गईं? तुमने तातारस्की के सामने से नदी पार क्यों नहीं की?"

अकसीनिया ने खुदकी से जवाब दिया—"अजनबियों के साथ नदी पार करने का मुझे मौक़ा नहीं लगा और मेलेखोवों के यहां जाकर कुछ पूछना मैंने ठीक नहीं समझा।" और, बात मुंह से निकलते ही औरत ने समझा कि मेरी बात का मतलब यह है कि मेलेखोव मेरे लिए अजनबी नहीं हैं, बल्कि अपने ही हैं। पर उसने चिन्ता नहीं की कि स्तीपान भी इन शब्दों का यही अर्थ लगायेगा या नहीं। शायद स्तीपान

ने ठीक ही समझा, क्योंकि क्षण-भर को उसकी भौंहें कांप गईं और उसके चेहरे पर एक रंग आया और एक रंग गया।

स्तीपान ने प्रश्न-भरी आंखें उठाईं। अकसीनिया ने सवाल समझा और अन्दर की परेशानी और खीझ के कारण उसका चेहरा एकाएक लाल हो गया।

स्तीपान, पत्नी की परेशानी बचाने के लिए, यों बना जैसे कि उसने कुछ देखा ही न हो और बात बदल दी। फ़ार्म की चर्चा की। पूछा—"घर को छोड़कर आते वक्त कौन-कौन-सी चीजें छिपाकर रखीं? और क़ायदे से छिपा भी दीं या नहीं?"

अकसीनिया ने अपने पति की उदारता अन्दर-ही-अन्दर सराही और उसके सवालों के जवाब दिये। पर उसके मन में एक कांटा-सा बराबर चुभता रहा। सो उसने अपने अन्तर की उथल-पुथल पर पर्दा डालना और अपने पति को इस बात का विश्वास दिलाना चाहा कि जो कुछ हुआ, वह यों ही है, उसकी ऐसी कोई अहमियत नहीं है। इसके लिए उसने जो कुछ कहा वह जान-बूझकर व्यवस्थित ढंग से, धीरे-धीरे, तोल-तोलकर कहा।

इस तरह दोनों खाई में बैठे बातें करते रहे। पर कज्ज़ाक उनकी बातचीत में रह-रहकर बाधा डालते रहे। पहले एक आदमी अन्दर आया और फिर दूसरा। क्रिस्तोनिया आया तो फ़ौरन ही सोने की तैयारी करने लगा। स्तीपान ने अकेले में बातें करने का मौक़ा न पाया तो न चाहते हुए भी बातचीत थोड़े में ही खत्म कर दी।

अकसीनिया के मन से बोझ उतरा। वह खुश-खुश उठी, पुलिंदा खोला, केकों से पति की गोद भर दी और उसके फ़ौजी बंडल से गंदे कपड़े निकाले और पास के दलदली ताल पर धोने को चल दी।

तड़के के सन्नाटे में, रुपहली भूरी धुन्ध की एक चादर-सी जंगल के ऊपर तनी रही। घास की पत्तियाँ, ओस की बूंदों के बोझ से जमीन पर झुक-झुक गईं। दलदल मे मेंढक अपनी बेसुरी टर्र-टर्र छेड़े रहे। खाई के पास मेपिल की घनी झाड़ी के पीछे कहीं कोई रेल-चिड़िया कर्कश-ध्वनि करती।

अकसीनिया झाड़ी की बगल से गुजरी। झाड़ी के सिरे से तने तक, नीचे की घास-फूस के अन्दर, मकड़ी के जाले एक-दूसरे में उलझे रहे। उनके तार ओस की झलाझल बूंदों से सजे रहे और ये बूंदें पानीदार मोतियों की तरह चमचमाती रहीं। रेल-चिड़िया कुछ क्षणों को चुप रही और अकसीनिया के पैरों के नीचे दबी घास की पत्तियों के सीधा होने के पहले-पहले, फिर जोर से बोलने लगी। दूसरी ओर दलदल के पार उड़ती टिटहरी जवाब में अपने स्वरों में उदासी घोलने लगी।

अकसीनिया ने हिलने-डुलने की आसानी के लिए अपना ब्लाउज और चोली उतारकर एक ओर को फेंक दी, ताल के भाप उगलते, गर्म पानी में, घुटनों-घुटनों तक हिली और कपड़े धोने लगी। उसके सिर के ऊपर छोटे-मोटे कीड़ों के दलों से घिरे मच्छर भनभनाने लगे। उन्हें हटाने के लिए उसने भरा हुआ सांवला हाथ चेहरे पर फेरा।

इस समय उसे ग्रिगोरी और ग्रिगोरी से हुई कहा-सुनी का ख़याल रह-रहकर आने लगा।

वह तो कभी से मेरी तलाश कर रहा होगा। मैं आज ही रात को व्येशेन्स्काया लौट जाऊँगी। उसने दृढ़ता से निश्चय किया और उसके होंठों पर मुस्कान दौड़ गई कि मैं फिर ग्रिगोरी से मिलूंगी और हमारे बीच समझौता हो जाएगा।

सारा कुछ विचित्र रहा। इधर अकसीनिया ने जब भी ग्रिगोरी की कल्पना की, एक ऐसा नक्शा खींचा, जो उसका होकर भी सचमुच उसका न रहा। आज का ग्रिगोरी, शक्ति और शौर्य का अवतार कज्जाक उसकी आंखों के सामने कभी आया ही नहीं। इस आदमी ने तो जाने कितना-कुछ देखा-सुना और सहा था। इसकी आंखों में थकान थी, काली मूंछों की नोकों पर जंग-सी थी, कनपटियों पर उम्र के पहले ही सफ़ेदी दौड़ गई थी और माथे पर गहरी लकीरें थीं। यह सारा कुछ इतने-इतने वर्षों की लड़ाई के कठिन जीवन के अमिट निशानों का लेखा था।

अकसीनिया के मानसपटल पर तो सदा ही उभरा पुराना, शुरू का ग्रीशा मेलेखोव—जवानी से भरा, अपने प्यार-दुलारों में भी अल्हड़ और भद्दा—पतली, गोल गर्दन—होंठों पर बेफिक्री से थिरकती सदाबहार

मुस्कान ! यही नहीं, इन विशेषताओं के कारण ही उसे उस पर ज्यादा-से-ज्यादा प्यार आया और उसने उसके प्रति माता-सुलभ स्नेह और कोमलता का भी अनुभव किया।

और, इसीलिए इस समय भी ग्रिगोरी की एक-एक विशेषता स्पष्टतम रूप में जो अकसीनिया के सामने आई और उसे बेहद बेशक़ीमती लगी तो वह बुरी तरह हाँफने लगी। उसके चेहरे पर मुस्कान खिल उठी। वह तनी। उसे अपने गले में कुछ अटकता-सा लगा। प्यार के आँसू पलकों से ढुलक चले। उसने अपने पति की आधी धुली कमीज नीचे पटककर पैरों से रौंदी और फुसफुसाती हुई बोली—"बुरा हो तेरा, तू तो हमेशा-हमेशा के लिए मेरे दिल में समा गया है, ग्रीश्का।"

आँसुओं से दिल हलका हुआ, पर बाद में उसके चारों ओर की सवेरे की पीली-नीली दुनिया सहसा ही रंगों में बुझने लगी। उसने अपने हाथ के पिछले हिस्से से गाल पोंछे। अपनी गीली भौंहों से बाल पीछे झटके और बहुत देर तक, विचार शून्य-सी एक जलमुर्गी को देखती रही। जलमुर्गी पानी पर फिसली और फिर हवा में उमड़ती धुंध की गुलाबी कसीदेकारी के बीच खो गई।

अकसीनिया ने कपड़े धोये, उन्हें झाड़ियों पर फैलाया और खाई को लौट दी।

क्रिस्तोनिया सोकर उठ गया, खाई के प्रवेश के पास बैठा अपने गांठ-गँठीले अँगूठे एँठ रहा था और स्तीपान को छेड़-छेड़कर उससे जबरदस्ती बातें करने की कोशिश कर रहा था। स्तीपान कम्बल पर लेटा चुपचाप धुआँ उड़ा रहा था और क्रिस्तोनिया के सवालों के जवाब देने से बच रहा था। आखिरकार क्रिस्तोनिया बोला—

"तो, तुम्हारा खयाल है कि लाल फ़ौजी नदी पारकर इस तरफ नहीं आयेंगे? जवाब क्यों नहीं देते? खैर, नहीं देना चाहते जवाब, तो न दो। लेकिन, मेरा अपना तो खयाल यह है कि वे कटाव की तरफ से नदी पार करेंगे···वहाँ से नदी पार की जा सकती है, और कहीं से पार करना उनके बस की बात नहीं है···शायद तुम सोच रहे हो कि वे अपने घुड़सवार नदी के पानी में हिला देंगे···क्यों?

बोलते क्यों नहीं, स्तीपान ? ऐसा लगता है कि आखिरी मौका यहीं बैठेगा। और तुम हो कि नाली में कूड़े की तरह पसरे पड़े हो।"

स्तीपान आधा उठकर बैठ गया और गुस्से से भरकर बोला—"तुम मेरी जान के पीछे क्यों पड़े हुए हो ? तुम सब, अजीब मजाकिया लोग यहाँ जमा हो। यानी मेरी बीवी मुझसे मिलने आई हो, और तुम हो कि मुझे साँस नहीं लेने देते। यानी तुम दुनिया की बकवास करते चले जाते हो और मुझे अपनी बीवी से दो बातें नहीं करने देते।"

"अच्छा है तुमने मुँह खोलकर अपने दिल की बात तो कही।" फ़िल्गोनिया खिसककर उठा, नंगे पैरों पर सैंडिल चढ़ाये और दरवाजे के सिरे से अपना सिर टकराता बाहर चला गया।

"यहाँ तो इन लोगों के मारे हमें बातें करने का मौका मिलने से रहा। आओ, जंगल में चलें।" स्तीपान अक्सीनिया से बोला और उसके जवाब का इन्तजार किये बिना दरवाजे की ओर बढ़ चला। अक्सीनिया आजिजी से पीछे-पीछे चल दी।

दोनों दोपहर को सराई में वापस आये। आल्डार की झाड़ी की ठंडी छाँव में लेटे, दूसरे ट्रूप के कज्जाकों ने अक्सीनिया और स्तीपान को देखा तो ताश के पत्ते एक तरफ़ को रख दिए और एक-दूसरे को देख-देखकर आँखें मारने, हँसने और जोर-जोर से आहें भरने लगे।

अक्सीनिया अपना मींजा हुआ, लेसवाला, सफेद रूमाल कसती और नफ़रत से होंठ बिचकाती इन फ़ौजियों के पास से गुजर गई। किसी ने उससे कुछ नहीं कहा। लेकिन स्तीपान उसके पीछे-पीछे इनके पास पहुँच भी न पाया कि अनीकुश्का उठा, टोली से बाहर आया, बनावटी ढंग से आदर दिखलाते हुए स्तीपान के सामने झुका और जोर से बोला, "ऐश के लिए मुबारकबाद, अब तो रोजा टूट गया न ?"

स्तीपान सहज भाव से मुस्कराया। उसे खुशी हुई कि कज्जाकों ने उसे उसकी बीवी के साथ जंगल से लौटते देख लिया। मन-ही-मन, सोचा, अच्छा हुआ। अब यह अफ़वाह तो कम होगी कि मेरी अक्सीनिया से बनती नहीं।

उसने तो जवानी दिखलाने के लिए अपने कंधे तक झटके और

संतोष की साँस लेते हुए पीठ पीछे कर दी। कमीज़ का पिछला हिस्सा अब तक पसीने से तर दीखा।

इस तरह स्तीपान के व्यवहार से कज़्ज़ाकों को बढ़ावा मिला और वे हँसने और तरह-तरह की आवाजकशी करने लगे।

"लेकिन, औरत गर्म है, प्यारो! स्तीपान की कमीज आसानी से उतरेगी नहीं, पसीने से ऐसी तर है कि कंधों से चिपक गई है।

"औरत ने सारी खाई-पी निकाल ली है—हर जगह से पसीने-पसीने हो रहा है···मुँह से झाग छूट गया है।"

एक जवान की खुशी से भरी निगाहें खाई तक अकसीनिया का पीछा करती रहीं। बाद में वह बड़ी हसरत से बोला—"दुनिया-भर में ढूंढ आओ, कहीं ऐसी हसीन औरत मिलेगी नहीं···नीली छतरीवाली मुझे अकसीनिया! माफ़ करे।"

इस पर अनीकुश्का ने तर्क सामने रखा—"ऐसा क्यों कहते हो? तुमने खोजने की कोशिश की है कभी?"

अकसीनिया ने ये सारी उल्टी-सीधी बातें सुनीं तो उसके चेहरे का रंग थोड़ा उड़ गया। खाई में धँसी तो अपने पति और अपने बीच की हाल की घनिष्ठता और उसके साथियों की लुच्चेपन से भरी बातों के खयाल से उसकी भौंहें तन गईं और उसका अन्तर घृणा से भर उठा। स्तीपान ने दूसरे ही क्षण पूरी बात भाँपी और मनौती करते हुए बोला—"ये आदमी नहीं स्टैलियन घोड़े हैं। इनकी बातों पर नाराज़ न हो और बात यह है कि ये खुद औरतों के लिए तरस रहे हैं।"

"मेरा ऐसा कोई नहीं, जिससे मैं नाराज हो सकूँ।" उसने अपने थैले में हाथ डालते हुए, बुझे हुए दिल से कहा और पति के लिए लाई गई सारी चीज़ें जल्दी-जल्दी निकालकर सामने रख दीं। फिर, और सधे हुए स्वर में बोली—"मुझे नाराज तो सिर्फ़ अपने आपसे होना चाहिये, लेकिन इसके लिए कलेजा मेरे पास नहीं है···।"

फिर, कुछ ऐसा हुआ कि उन दोनों के सामने बातचीत करने के लिए जैसे कुछ बचा ही नहीं। कोई दस मिनट बाद अक्सीनिया उठ खड़ी हुई।

'मैं इनसे कह दूँगी कि मैं व्येशेन्स्काया लौट जाऊँगी।' उसने सोचा, लेकिन इसी समय उसे खयाल आया कि सूखे कपड़े तो वह उठाकर लाई ही नहीं।

फिर वह गाड़ी के दरवाज़े के पास बैठी अपने पति की, पसीने से सड़ी कमीज़ें और पतलून ठीक करती रही। इस बीच रह-रहकर उसने आँखें उठाईं और क्षितिज की ओर जाते सूरज पर निगाहें डालीं।

इसके बावजूद उस दिन वह वहाँ से कहीं नहीं गई। उसका हियाव ही न हुआ। लेकिन, अगले दिन सवेरे सूरज उग भी नहीं पाया कि उसने तैयारी शुरू कर दी। स्तोपान ने उसे बहुत रोका, ज्यादा नहीं तो एक दिन और रुकने की मिन्नत की। लेकिन, अकसीनिया ने इतनी दृढ़ता से नहीं की कि आगे उसने कुछ नहीं कहा। सिर्फ़ चलते वक़्त बोला, "तुम्हारा इरादा क्या व्येशेन्स्काया में रहने का है ?"

"हाँ, फ़िलहाल तो है।"

"तुम यहाँ मेरे पास नहीं रह सकतीं ?"

"यहाँ···कज़्ज़ाकों के साथ रहना, मेरे लिए अक्ल की बात नहीं है।"

"शायद तुम ठीक कहती हो।" स्तोपान ने पत्नी की बात का समर्थन किया, लेकिन उसने पत्नी को विदाई बहुत ही भावहीन ढंग से दी।

हवा दक्षिण-पूर्वी थी। दूर से आई थी और रात में थक-सी गई थी। पर, सवेरा होने का समय होते-होते वह फिर ट्रांस-कैस्पियन रेगिस्तान की उमस और गरमी दोन के इलाक़े में ला-लाकर उँडेलने लगी और बायें किनारे की पानी से भरी चरागाहों के टुकड़ों पर टूट-टूट पड़ने लगी। उसने ओस सोख ली, धुन्ध उड़ा दी और दोन-क्षेत्र की पहाड़ियों की खड़ियावाली चोटियों को गुलाबी कुहरे से मढ़ दिया।

जंगल में अब भी ओस थी। इसलिए अकसीनिया ने सैंडल उतार लिए, अपनी स्कर्ट का सिरा बायें हाथ से पकड़ लिया और जंगल की एक सूनी सड़क के किनारे-किनारे धीरे-धीरे चल दी। उसके पैर गीली धरती पर पड़े तो तरी उसे बहुत ही अच्छी लगी। दूसरी ओर, खुश्क हवा उसकी मोटी, नंगी पिंडलियों और गर्दन को रह-रहकर चूमती रही।

अकसीनिया, खुले मैदान में इग्लैण्टाइन फूलों से भरी झाड़ी के पास बैठ गई और आराम करने लगी। कहीं पास ही आधे सूखे ताल के सरपतों के बीच बत्तखें सरसराने लगीं और एक नर बत्तख ने भर्राये गले से अपनी मादा को आवाज़ दी। दोन के पार मशीनगनें धीरे-धीरे मगर बराबर खड़खड़ाती रहीं। बीच-बीच में तोपें भी गरजती रहीं और गोलों के धड़ाकों की गूंज इस पार सुनाई पड़ती रही।

इसके बाद गोलाबारी का तार बीच-बीच में टूट भी गया और धरती की सारी छिपी हुई आवाज़ें अकसीनिया के कानों में एक साथ बजने लगीं। (अखरोट के किस्म के) ऐश पेड़ की सफ़ेद किनारियों वाली हरी पत्तियां, और शाहबलूत के फफूंदी-लगे नक्काशीदार पत्ते हवा में ज़ोर-ज़ोर से खड़खड़ाते रहे। ऐस्प के नये पेड़ों के झुरमुट से स्थिर गति से सरसराहट होती रही। दूर, बहुत दूर कोई उल्लू किसी की जिन्दगी के बचे-खुचे सालों की गिनती बहुत हलके-हलके करता रहा। ताल के ऊपर से उड़ती एक टिटहरी 'पीविट-पीविट' करती रही। अकसीनिया से दो कदम के फ़ासले पर कोई भूरी चिड़िया अपनी गर्दन ज़रा-ज़रा पीछे की ओर झटकते और खुशी से पलकें झपकाते हुए, सड़क के छोटे गड्ढे में पानी पीती रही। शहद की मखमली, गर्द से नहाई बड़ी मक्खियां भनभनाती रहीं। सांवली, जंगली तितलियां चरागाही फूलों की पंखुड़ियों से रह-रहकर टकराती और मधुमय पराग चुरा-चुराकर उड़ती रहीं। देवदारुओं की शाखों से रस टपकता रहा और हाथर्न-झाड़ी के नीचे से पत्तियों की सड़ांयध आती रही।

अकसीनिया स्थिर बैठी जंगल की तरह-तरह की महकों से अपनी सांसें सींचती रही। जंगल का स्वाभाविक, सहज-जीवन, अनगिनत सुरीले कंठों से मुखर होता रहा। वसन्त के पानी की बाढ़ से सीझी चरागाह की मिट्टी से तरह-तरह की घासों की पत्तियां उगती रहीं। सो फूलों और जड़ी-बूटियों के इस मायाजाल को देखकर अकसीनिया का मुंह अचरज से खुला-का-खुला रह गया।

उसने मुस्कराते और बिना आवाज़ के होंठ चलाते हुए, अनामे, पीले, नीले, छोटे-छोटे फूलों के डंठलों को सावधानी से छुआ और फिर उन्हें

सूँघने के लिए उसकी कमर लचकाई। सहसा ही घाटी के लिली-फूलों की उन्माद से भरी महक उसके नथुनों में आ भरी। उसने हाथ से टटोलते हुए पौधा खोज लिया। पौधा उसकी बगल में, दाईं ओर एक अनेक छायादार झाड़ी के नीचे उगा नजर आया। कभी की हरी, चौड़ी पत्तियाँ झुके हुए, बर्फ से सफ़ेद फूलों के मधु-भारों से लदे नीचे के डंठलों को इस समय भी सूरज से बचाती दीखीं। पर, ऊपर, ओस और पीली जंग के पर्दे में वे खुद अंतिम साँस लेती रहीं और मौत फूलों को रह-रहकर अपनी ठंडी उँगलियों से छूती रहीं। एक जगह नीचे के दो फूलों के चेहरे झुर्रियों से भरे और सँवराए समझ पड़े। सिर्फ ऊपर का एक फूल ओस के झलाझल आँसुओं से नहाया, सहसा ही धूप में कौंधा। उसके कपूरी रंग ने ध्यान अपनी ओर खींच लिया।

अकसीनिया भरी आँखों से इस समय इन फूलों को देखती और इनकी उदासी से भरी महक का सुख लेती रही कि पता नहीं क्यों उसकी जवानी और पूरी जिन्दगी आँखों के आगे साकार हो उठी। इतनी लम्बी जिन्दगी सुख के क्षणों की गिनती की दृष्टि से बहुत ही छोटी लगी। मन ने कहा—'अब तू शायद बूढ़ी हो रही है·········भला कोई जवान औरत भी कभी ठिठककर आँसू सहेजती है, क्योंकि उसे कोई भूली कथनी याद-सी आकर रह जाती है!'

उसने आँसुओं से नहाया चेहरा हाथों से छिपा लिया और गीले गाल पर रूमाल रख लिया। फिर रोते-रोते सो गई।

हवा और तेज हो गई और देवदार और बेंतों के सिरों को पश्चिम की ओर झुकाने लगी। ऐस्प-वृक्ष का पीला तना उड़ती हुई पत्तियों के कपूरी अंधड़ में लिपटा, हवा में लहराने लगा। अकसीनिया जिसके नीचे सोती रही, उस फूलों से भरी इग्लेंटाइन की झाड़ी पर हवा उतरी। हरी, जादूई चिड़ियों के चौंके हुए दल की तरह पत्तियाँ उत्सुकता से सरसराने और गुलाबी परों-सी पंखुड़ियों को हवा के झोंकों को सौंपने लगीं। अकसीनिया पर इग्लेंटाइन की ये मुरझाई हुई पंखुड़ियाँ बरसती रहीं और वह इस तरह सोती रही कि न तो जंगल के मुखर स्वर उसके कानों में पड़े, न दोन पार गोलाबारी

के फिर से शुरू होने का एहसास हुआ और न नंगे सिर पर सीधी पड़ती सूरज की किरणों की गरमी ही अनुभव हुई। वह जगी तो तब जगी जब किसी आदमी की आवाज़ और घोड़े की हिनहिनाहट उसके कानों में पड़ी। फिर तो हड़बड़ाकर उठकर बैठ गई।

उसने देखा बगल में खड़ा एक जवान कज्जाक—मूंछें सफ़ेद, दाँत मोती की तरह उजले ·····कसे हुए, सफेद नाक वाले घोड़े की लगाम हाथ में। कज्जाक खुलकर मुस्कराता, कंधे झटकता, पैर पटकता और भर्राये गले, मगर प्यारे ढंग से एक गीत गाता रहा—

धरती पर ढही रही,
कनखी से देखा—
कभी उधर और कभी इधर को—
कोई नहीं ऐसा जो हाथ मुझे दे दे···
किस्मत में बदा एक ऐसा भी दिन था—
लेकिन, फिर मैंने जो देखा पलटकर—
पास खड़ा पाया कज्जाक एक सुन्दर!

"मुझे मदद की ज़रूरत नहीं, मैं यों भी उठ सकती हूं।" अकसीनिया मुस्कराई और भीगी हुई स्कर्ट ठीक करती हुई फुर्ती से उछलकर खड़ी हो गई।

"कहो मेरी रानी, बात क्या है? पैरों ने आगे बढ़ने से इनकार कर दिया या योंही आलस आ गया?"—खुशी से खिले कज्जाक ने उसका अभिवादन किया।

"योंही नींद आ गई।" अकसीनिया ने शर्म से लाल होते हुए जवाब दिया।

"व्येशेन्स्काया जा रही हो?"

"हां।"

"मैं तुम्हें अपने साथ ले चलूं वहां?"

"लेकिन, किस पर?"

"तुम घोड़े पर सवार हो जाओ। मैं पैदल ही चला चलूंगा। यह भी मुझ पर मेहरबानी होगी तुम्हारी···" जवान कज्जाक ने आंख मारी।

"नहीं, तुम जाओ···ईश्वर तुम्हारी मदद करे···मैं यों ही पैरों-पैरों अपनी मंज़िल तय कर लूंगी।"

लेकिन, कज्जाक इश्क और जिद के मामले में खिलाड़ी साबित हुआ। अकसीनिया अपने सिर के रूमाल को ठीक करने में उलझी तो उसने इस क्षण से फ़ायदा उठाया। उसे छोटे पर मजबूत हाथ से कसकर सीने से लगा लिया और चूमने की कोशिश की।

"बेवकूफ़ी न करो!" अकसीनिया चीखी और उसकी नाक की नोक पर कुहनी मारी।

"मेरी रानी, बेकार परेशान न हो। देखो, आस-पास की दुनिया कितनी प्यारी, कितनी हसीन है···हर एक अपने जोड़े की तलाश में है···ऐसे में हम लोग ही अपने हिस्से के गुनाह से क्यों परहेज करें और क्यों बचें···और कज्जाक अपनी खुशी से चमकती आँखें सिकोड़ने और अकसीनिया की गर्दन को अपनी मूंछों से सहलाते हुए धीरे से बोला।

अकसीनिया का गुस्सा जैसे उतार पर आ गया। पर, उसने अपने हाथ छुड़ाये और कज्जाक के भूरे पसीने से तर चेहरे को पीछे ठेलते हुए अपने को आज़ाद करने की कोशिश की। मगर सख्त पकड़ ने जुम्बिश नहीं खाई।

"गधे हो तुम! तुम्हें पता है, मुझे बहुत ही गन्दी बीमारी है··· छोड़ दो मुझे।" अकसीनिया ने हांफते हुए मिन्नत की और सोचा कि इस मामूली-सी चालाकी से इस पाप से मेरी जान बच जाएगी।

"उफ़···लेकिन सवाल यह है कि बीमारी कितनी पुरानी है!" कज्जाक ने दांत भींचे-ही-भींचे कहा और सहसा ही उसे गोद में उठा लिया।

अकसीनिया को अचानक ही लगा कि मजाक खत्म हो गया और अब तो मामला गम्भीर शक्ल ले चला। सो, उसने कज्जाक की भूरी धूप में सँवराई नाक पर भरपूर घूंसा जमाया और अपने को जकड़ने वाले हाथों को झटककर दूर कर दिया। बोली—"मैं ग्रिगोरी मेलेखोव की बीबी हूं। तुम्हारी इतनी हिम्मत कि तुम बदनीयती से मेरे पास फटक भी जाओ! कुतिया के बच्चे कहीं के!··· मैं उससे सारा कुछ

बतला दूंगी, और वह तुम्हारी हड्डी-पसली·· "

पर, उसे लगा कि उसकी बातों का कज्ज़ाक पर असर कुछ न होगा। इसलिए उसने लपककर एक मोटी-सी सूखी लकड़ी उठा ली। लेकिन कज्ज़ाक का सारा जोश देखते-देखते ठण्डा पड़ गया। उसने नाक से बहकर गलमुच्छों पर आते खून को अपनी खाकी कमीज़ की आस्तीन से पोंछा और दर्द से तड़पते हुए बोला—"बेवकूफ़ कहीं की! बिलकुल ही बेअक्ल औरत हो तुम! तुमने यह बात पहले ही क्यों नहीं कही? उफ़,·· देखो तो कैसा खून बह रहा है! दुश्मनों ने जैसे कुछ रियायत बरत दी है कि अब खुद कज्जाक औरतें हमारा खून बहाने पर उतर आई हैं।···"

कज्ज़ाक का चेहरा एकाएक जर्द पड़ गया और सारी मोहब्बत खत्म हो गई। वह सड़क-किनारे के एक गढ़े से पानी ले-लेकर खून साफ़ करने लगा कि अकसीनिया तेज़ी से मुड़ी और हवा की तरह मैदान पार करने लगी। कोई पांच मिनट के अन्दर-अन्दर कज्जाक बराबर से आ गया। फिर, औरत को कनखी से देखता, चुप-चुप मुस्कराता, अपनी राइफ़ल के सीने पर पड़े फ़ीते को कायदे से ठीक करता और अपने घोड़े को दुलकी-चाल से दौड़ाता आगे निकल गया।

: २ :

उस रात लाल फ़ौज ने लकड़ी के तख्तों और कुण्डों के बेड़ों पर दोन नदी पार की, और वे एक छोटी झोंपड़ी के पास आ निकले।···

झोंपड़ी के कज्जाकों पर अनायास ही बिजली-सी टूट पड़ी, क्योंकि उनमें से अधिकांश रंगरेलियां मना रहे थे। तीसरे पहर से ही उनकी बीवियां आतीं और अपने साथ घड़े-घड़े और बाल्टी-बाल्टी-भर घर की बनी वोद्का लाती रही थीं। आधी रात होते-होते वे अपने आपे में न रह गए थे, मानो नशे में धुत औरतों की चीख-पुकारें और मर्दों के हँसी के ठहाकों और सीटियों की आवाज़ें खाइयों से आ रही थीं। पहरे की ड्यूटी पर तैनात बीस कज्जाकों ने भी इस शराबखोरी में हिस्सा लिया था। सिर्फ़ दो तोपची और एक बाल्टी वोद्का मशीनगन के पास छोड़ दी थी।

···लाल फ़ौज के बेड़े, सन्नाटे से भरे, दोन के दाहिने किनारे से

बने। लाल फ़ौजी सामने के किनारे पर उतरे और एक-एक, दो-दो के क्रम में खाइयों की ओर बढ़े। खाइयाँ नदी से कोई दो सौ क़दमों के फ़ासले पर थीं।

बेड़े बनाने वाले फ़ौजी इंजीनियर लाल फ़ौजियों की दूसरी टोली को लाने के लिए अपने बेड़ों पर तेज़ी से वापस लौट गये।

बायें किनारे पर भागने के छुटपुट स्वरों के अलावा पाँच मिनट तक कोई आवाज़ कहीं सुनाई न पड़ी। इसके बाद हथबम फटने लगे, मशीनगन गड़गड़ाने लगी, राइफ़लों से गोलियाँ बरसने लगीं और रात के सन्नाटे में दूर-दूर तक हुर्रा-हुर्रा का शोर गूँजने लगा।

टुकड़ी बौखला उठी और उसके पूरे-के-पूरे लोग बरबादी से सिर्फ़ इसलिए बचे कि घटाटोप अंधकार में लोगों का पीछा नहीं किया जा सका।

कज़्ज़ाकों का कोई बहुत नुकसान न हुआ, उनके बीच खलबली मच गई और वे अपनी-अपनी औरतों को लिये-दिये, चरागाहें पार कर उल्टे-सीधे व्येशेन्स्काया की ओर भागे। पर, इस बीच बेड़े लाल फ़ौजियों की नई टुकड़ियाँ ले आये और १११वीं रेजीमेंट की पहली बटेलियन की आधी कम्पनी दो हलकी मशीनगनों से लैस होकर, बाजकी के किनारे से बाग़ी स्क्वैड्रन को भूनने लगी।

इस तरह जो दरार बनी उसे पाटने के लिए ताजा कुमुक लाई गई। लेकिन, इन फ़ौजों की रफ़्तार धीमी रही क्योंकि किसी भी लाल फ़ौजी को जगह का पता न रहा। यूनिटों के पास गाइड नहीं रहे और अँधेरे में अंधों की तरह आगे बढ़ते हुए उनके सदस्य नालों और बाढ़ के पानी की तेज धारों में रह-रहकर भहराते और फँसते रहे। बाढ़ के पानी को काटा न जा सका।

हमले का निर्देशन करने वाले ब्रिगेड कमांडर ने लोगों को खदेड़ने का खयाल तड़के तक के लिए उठा रखा। इस बीच रिजर्व फ़ौजें ला-लाकर व्येशेन्स्काया के रास्तों पर जमाई गईं और तोपों की तैयारी का हुक्म दे दिया गया।

पर, व्येशेन्स्काया में दरार को पाटने के लिए क़दम तेज़ी से उठाये

जाते रहे। ज्योंही संदेशवाहक लाल फ़ौजियों के नदी पार करने की खबर लेकर अपना घोड़ा दौड़ाता आया, त्योंही स्टाफ़-हेडक्वार्टर्स में कार्याधिकारी ने कुदिनोव और मेलेखोव को बुला भेजा। कारगिन्स्काया रेजीमेंट की टुकड़ियाँ चोर्नी, गोरोखोवका और दुबरोवका से बुलाई गईं। ग्रिगोरी मेलेखोव ने पूरी कार्रवाई की आम कमान सँभाल ली। उसने तीन सौ तलवारबंद कज्ज़ाक येरेन्स्की गाँव के सामने झोंक दिए, ताकि बायाँ बाजू मजबूत हो सके, और अगर दुश्मन पूर्व की ओर से व्येशेन्स्काया लेने की कोशिश करे तो तातारस्की और लेब्याज़ी के कज्ज़ाक दुश्मन का धक्का झेलकर अपने पैर जमाये रह सकें। ग्रिगोरी ने व्येशेन्स्काया के विदेशी स्वयंसेवकों को पश्चिम की तरफ़ रवाना किया, बाज़की स्क्वैड्रन की मदद के लिए चिर-प्रदेश की एक पैदल टुकड़ी भेजी, आठ मशीनगनें खतरे के इलाके में जमवाईं और कोई दो बजे सवेरे घुड़सवार फ़ौजियों की दो टुकड़ियाँ लेकर, खुद जंगल के सिरे पर जा जमा और लाल फ़ौजियों पर हमला बोलने के लिए सुबह का इन्तज़ार करने लगा।

दूसरी ओर व्येशेन्स्काया के स्वयंसेवकों की टुकड़ी ने जंगल में झाते हुए, दोन के बाज़की वाले किनारे तक की मंज़िल तय कर डाली। पर सप्त-ऋषि आसमान में चमकता ही रहा कि उसकी टक्कर बाज़की के पीछे हटते लोगों से हो गई। टुकड़ी के लोगों ने इन लोगों को ग़लती से दुश्मन समझा, इसलिए कुछ देर तक इन पर आग बरसाई और फिर भाग खड़े हुए। व्येशेन्स्काया को चरागाह से अलगाने वाली बड़ी झील के पास पहुँचने पर इन्होंने हड़बड़ी में जूते-कपड़े किनारे पटके और तैर-तैरकर उस पार पहुँचे। ग़लती जल्दी ही पकड़ गई। लेकिन लाल फ़ौजियों के व्येशेन्स्काया पहुँचने की खबर हवा की रफ़्तार से, बहुत पहले ही हर तरफ फैली मिली। नतीजा यह हुआ कि तहखानों में छिपे शरणार्थी गाँव छोड़-छोड़कर उत्तर की तरफ़ भागे और हर जगह यह अफ़वाह फैलाते गये कि लाल फ़ौजियों ने दोन पार कर ली है, मोर्चा तोड़ डाला है और व्येशेन्स्काया पर चढ़े चले जा रहे हैं।

…ग्रिगोरी को स्वयंसेवकों के भागने की खबर मिल गई और

आसमान में दिन का उजाला छिटकना शुरू ही हुआ कि वह घोड़ा दौड़ाता दोन तक आ पहुँचा। इन तीन स्वयंसेवकों ने अपनी गलती समझी और जोर-शोर से बातें करते हुए खाइयों की ओर लौटे। ग्रिगोरी उनके एक दल के पास पहुँचा और व्यंग्य करते हुए बोला—"नदी तैरकर पार करने में बहुत लोग डूब गये क्या?"

सिर से पैर तक पानी से तर-बतर एक जेंटलमैन ने चलते-चलते अपनी गम्भीर [illegible] और स्वरों के उतार-चढ़ाव के साथ जवाब दिया—"हम सब तो पाइक-मछलियों की तरह तैरे। डूबते आखिर क्यों?"

"ऐसी गलतियाँ हर आदमी करता है।" सिर्फ़ पैंट पहने एक दूसरा आदमी गूर्गों की भाषा में बोला—"अब हमारे ग्रुप-कमांडर को ही लो। लगभग डूबते-डूबते बचा। बात यह हुई कि उसने पट्टियाँ खोलने में खर्च होने वाले वक्त को बचाने के खयाल से जूते नहीं उतारे और पानी में हिल गया। तैरने लगा तो पट्टियाँ बीच में ही खुल गईं और पैरों में उलझने लगीं। फिर तो किस तरह गला फाड़कर चिल्लाया वह। कोई एक वर्स्ट दूर होता तो भी उसकी आवाज़ सुन लेता।"

ग्रिगोरी ने स्वयंसेवकों की टुकड़ी के कमांडर को खोजा और उसे हुक्म देते हुए बोला—"इन लोगों को जंगल के सिरे पर ले जाओ और इन्हें इस तरह रखो कि जरूरत पड़ने पर ये बाहर से लाल फौजियों की कतारों को घेर सकें।" इसके बाद उसने अपना घोड़ा मोड़ा और अपने स्क्वैड्रन की ओर बढ़ा।

सड़क पर उसे स्टाफ़ का एक अर्दली मिला। आदमी ने घोड़े की रासें खींचीं और सन्तोष की साँस लेते हुए बोला—"मैं हलाकान हो गया आपको खोजते-खोजते।" और घोड़े के पुट्ठों और बाज़ुओं से देखने से लगा कि जानवर को लावड़तोड़ दौड़ाया गया है।

"क्यों? बात क्या है?"

"स्टाफ़ ने आपके पास खबर भेजी है कि तातारस्की कम्पनी के लोगों ने अपनी-अपनी खाइयाँ छोड़ दी हैं और वे, घिर जाने के डर से, बलुहे मैदान की तरफ पीछे भाग रहे हैं। खुद कुदिनोव ने कहा है कि आप

फ़ौरन ही वहाँ पहुँचें।"

ग्रिगोरी ने, ताज़े-से-ताज़े घोड़ों पर सवार, कज्ज़ाकों के दस्ते के साथ जंगल पारकर सड़क का रास्ता लिया और कोई बीस मिनट की घुड़दौड़ के बाद, वह गोली-इलमेन की झील के इलाके में पहुँच गया। बाईं ओर तातारस्की के घबराये हुए लोग चरागाह के आरपार दौड़ते दीखे। इनमें से मोर्चे के अनुभव वाले लोग या सयानी उम्र के दूसरे कज्ज़ाक, झील के पास-ही-पास रहने और नदी-किनारे के झाड़-झाड़ियों की आड़ लेते इत्मीनान से चलते रहे। लेकिन बाक़ी में से ज़्यादातर लोगों के मन में सिर्फ़ एक इच्छा पलती रही कि जैसे भी हो जल्दी-से-जल्दी जंगल तक पहुँच चला जाए। बस, तो, ऐसे सारे लोग आगे-आगे झपटते रहे, और उन्होंने मशीनगनों को बीच-बीच में बरसाती गोलियों की एक भी चिन्ता नहीं की।

"पीछा करो इनका! ज़रा जमाओ तो इन पर चाबुक।" ग्रिगोरी ने गुस्से से पलकें झपकते हुए चिल्लाकर कहा और सबसे पहले खुद अपने गाँव के लोगों का पीछा किया। घोड़ा हवा की रफ़्तार से दौड़ाया।···

क्रिस्तोनिया झूमते और मचकते हुए, नाच के-से अन्दाज़ से, जाता नज़र आया। अभी पिछली शाम को मछली मारते समय सरपत से उसकी एड़ी बहुत ही बुरी तरह कट गई थी, इसलिए वह आम दिनों की तरह भाग नहीं पा रहा था। सो, ग्रिगोरी, अपना चाबुक सिर से ऊपर ताने हुए, उसके बराबर आ गया, और घोड़े के क़दमों की टपाटप कानों में पड़ी तो क्रिस्तोनिया ने मुड़कर देखा और अपनी रफ़्तार बढ़ा दी।

"दौड़े कहाँ जा रहे हो? रुको···रुको···मैं कहता हूँ, रुको!" ग्रिगोरी चीखा, मगर कोशिश बेकार ही गई। क्रिस्तोनिया ने रुकने की बात तक न सोची और बड़ा ही अजीब लगा कि ऊँट की तरह उचक-उचककर और तेज़ी से चलना शुरू कर दिया।

इस पर ग्रिगोरी को इतना गुस्सा आया कि वह अपने आपे में न रहा। उसने बहुत ही बुरी गाली दी, घोड़े को और तेज़ी से आगे बढ़ाया,

बराबर आने पर ग्रिगोरी की बाँह की ओर ज़िनोविया की पसीने से नहाई पीठ पर भरपूर चाबुक जमाया। ज़िनोविया जमीन पर बैठ गया और धीरे-धीरे आस्तीनों से पीठ सहलाने लगा।

ग्रिगोरी के साथ के कज्जाक अपने घोड़े दौड़ाते आगे निकल गये और भागते हुए लोगों को रोकने लगे। मगर, चाबुक उन्होंने नहीं चलाया।

"चाबुक जमाओ···चाबुक जमाओ इन लोगों पर।" ग्रिगोरी ने दस्तकारी के काम वाला अपना चाबुक हिलाते हुए, फटी-सी आवाज में चिल्लाकर कहा। इसी समय उसका घोड़ा बिदका, पीछे हटा और आगे बढ़ने से इन्कार करने लगा। ग्रिगोरी ने जैसे-तैसे उसे काबू में किया और सामने भागते लोगों तक पहुँचा। बग़ल से गुजरा तो उसकी निगाह एक झाड़ी के पास टिककर चुपचाप मुस्कराते स्तीपान अस्ताख़ोव पर पड़ी। साथ ही अनीकुश्का हँसी से दोहरा होता नजर आया। उसने अपने हाथ की तुरही बनाई और तीखी, औरतों की-सी आवाज में चीखा—"भाइयो···हर आदमी अपनी जान के लिए जिम्मेदार होगा। लाल फ़ौजी आ रहे हैं। बस, तो उन्हें पकड़कर छोड़ो।"

अब ग्रिगोरी ने रुईभरी जाकिन से लैस एक दूसरे गाँव वाले के पीछे घोड़ा दौड़ाया। यह गाँव वाला थकान का नाम लिये बिना, फुरती से दौड़ता दिखलाई पड़ा। आदमी के गोल कंधे बहुत ही जाने-जाने-से लगे, पर ग्रिगोरी को उसे पहचानने का मौक़ा नहीं मिला, और वह कुछ दूर पीछे से ही चिल्लाया—"ठहरो···ओ कुतिया के बच्चे, ठहर जाओ, वरना मैं तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर डालूँगा।"

सहसा ही जाकिन से लैस गाँव वाले ने अपनी चाल धीमी की और फिर रुक गया। वह एक खास ढंग से मुड़ा और उसकी आँखों से ज्यादा-से-ज्यादा नफ़रत बरसी। ग्रिगोरी इस मुद्रा से अपने बचपन से ही परिचित था, इसलिए कज्ज़ाक के नाक-नक्शों पर पूरी तरह निगाह पड़ने के पहले ही उसने अनुमान लगा लिया कि हो-न-हो यह तो मेरे पापा हैं।

पेन्तेली के गालों की खाल काँपी···"तो, तुम्हारा अपना बाप

कुतिया का बच्चा है, क्यों ? यानी, तुम अपने बाप के ही टुकड़े-टुकड़े कर डालने की धमकी दे रहे हो ?"

उसे अपने ऊपर कोई नियन्त्रण न रहा और उसकी आँखें इस तरह क्रोध से जलने लगीं कि ग्रिगोरी का सारा गुस्सा देखते-देखते काफूर हो गया। उसने झटके से घोड़े की रासें खींचीं और जोर से बोला—"मैं तुम्हारी पीठ तो पहचानता नहीं। इस तरह आसमान सिर पर क्यों उठा रहे हो, पापा ?"

"पहचानता नहीं···क्या मतलब तुम्हारा ? यानी, तुमने अपने बाप को नहीं पहचाना ?"

बुजुर्गी कुछ ऐसे ग़लत और बेहूदे ढंग से छू गई कि ग्रिगोरी हँसता हुआ अपने पिता की सीध में आया और उसे समझाते हुए बोला—"पापा, पागल न बनो ! तुमने एक ऐसा कोट पहन रखा था जो मैंने तुम्हारे बदन पर पहले कभी देखा ही नहीं। फिर तुम भागे जा रहे थे रेस के घोड़े की तरह। हमेशा की तरह भचक भी तो नहीं रहे थे। ऐसे में भला मैं तुम्हें कैसे पहचानता ?"

घर और बाहर के पहले के दिनों की तरह पैन्तेली एक बार फिर शान्त हो गया। पर, हाँफता वह बुरी तरह अब भी रहा। फिर भी, अपने ऊपर और ज्यादा काबू पाते हुए बेटे की हाँ-में-हाँ मिलाते हुए बोला—"तुम ठीक कहते हो। कोट नया है। मैंने अपनी भेड़ की खाल के बदले में ले लिया है···भेड़ की खाल भारी होती है और इसलिए रास्ते में तकलीफ़देह लगती है···और जहाँ तक मेरे भचकने का सवाल है, भचकने के लिए वक्त नहीं है। शाहजादे, यहाँ भचकने का तो सवाल ही नहीं उठता। यानी, मौत हमारी आँखों में आँखें डाल रही है, और तुम लंगड़े पैर को लेकर गाल बजा रहे हो······"

"खैर, मौत अभी कोसों दूर है। पीछे लौटो पापा ! और तुमने अपने कारतूस अभी तक नहीं फेंके है न ?"

"लेकिन, हम लौटकर कहाँ जायें ?" बूढ़े ने घृणा से भरकर विरोध किया।

इस पर ग्रिगोरी ने अपनी आवाज ऊँची की और एक-एक शब्द

पर बल देते हुए आदेश दिया—"मैं तुम्हें पीछे लौटने का हुक्म देता हूं। पता है कि लड़ाई के मैदान में कमांडर का हुक्म न मानने की सज़ा क्या होती है ?"

शब्दों का प्रभाव पड़ा। पैन्तेली ने कंधे पर लटकी राइफ़ल ठीक की, मगर न चाहते हुए भी पीछे लौट पड़ा और एक ओर धीरे चलते बूढ़े के बराबर पहुंचते ही बोला—"इस ज़माने में हमारी औलादें ऐसी होती है। अपने बाप की इज्ज़त करने के बजाय या लड़ाई की मुसीबत से छुटकारा दिलाने के बजाय, औलाद उल्टे उसे लड़ाई के ऐन मुंह में ढकेलने की कोशिश कर रही है···हां भाई हां!···एक मेरा बेटा प्योत्र था···आसमान वाला उस पर हमेशा रहम करे···इससे कहीं बेहतर था ···मिजाज का ठण्डा था। मगर यह बेवक़ूफ़ तो बिलकुल ही अलग है··· माना कि डिवीजनल-कमांडर है, और दूसरी तमाम बातें हैं, और ठीक ही है।···यह तो भाऊ चूहे की तरह तुनुकमिज़ाज है। मुझे ज़रा भी ताज्जुब न होगा, अगर मेरे इस बुढ़ापे में यह मुझे मोची के इस्तेमाल की कीलों से कोंच-कोंचकर भट्ठी में झोंक देगा।"

उचित बात तातारस्की के कज़्ज़ाकों की समझ में आसानी से आ गई है। ग्रिगोरी ने पूरी कम्पनी जमा की, उसे किसी ढकी हुई जगह ले गया···और फिर घोड़े पर बैठे-ही-बैठे सख़्त लहज़े में बोला—

"लाल फ़ौजियों ने नदी पार कर ली है और वे व्येशेन्स्काया पहुंचने की कोशिश कर रहे हैं। दोन के किनारे लड़ाई शुरू हो गई है। यह सारा कुछ कोई मज़ाक नहीं है, और मैं तुमको बेकार में भागने की सलाह नही दूंगा। अगर तुम सब दूसरी बार भागने की कोशिश करोगे तो मैं येरेन्स्की के घुड़सवार फ़ौजियों को हुक्म दूंगा और वे तुम्हें काटकर फेंक देंगे।" उसने अपने गांव के लोगों की भीड़ पर एक नज़र दौड़ाई और उनके तरह-तरह के लिबासों पर दृष्टि गड़ाते हुए स्पष्ट घृणा से कहा—"तुम्हारी कम्पनी मे कुछ कूड़ा-करकट लोग जमा हो गए है, और यह सारी घबराहट वे ही फैला रहे हैं। क्या शानदार बहादुर हो तुम लोग! लड़ाई का मैदान छोड़कर भागे जा रहे हो, तुम्हारी पतलूनें ख़राब हुई जा रही हैं। इस पर भी तुम अपने को कज़्ज़ाक कहते हो। और बड़े

बुजुर्गो, तुम्हारी यह हिम्मत! तुमने खुद ही कहा है कि तुम लड़ोगे, इस-लिए अब टाँगो के बीच खोपड़ियाँ अड़ाने के कोई माने नहीं होते। तो बस, ट्रूप ऑर्डर में डबल-मार्च करते हुए उन झाड़ियों तक पहुँचो, फिर उनके बीच से दोन का रास्ता पकड़ो, बाद को दोन के किनारे-किनारे सेम्योनोवस्की-कम्पनी की तरफ़ बढ़ो और कम्पनी से मिलने पर लाल फ़ौजियों पर धावा बोल दो!···क्विक मार्च! और देखो, चौकस रहना।"

तातारस्की के गाँव के लोगों ने चुपचाप पूरी बात सुनी और फिर वे उसी तरह झाड़ियों की तरफ बढ़ चले। ग्रिगोरी और उसके साथ के कज़्ज़ाक घोड़े दौड़ाकर हवा से बातें करते निकल गये। बूढ़ों ने, मायूसी से, लम्बी-लम्बी साँस लेते हुए उनकी तरफ़ मुड़कर देखा। पैन्तेली की बगल में चलते बूढ़े ओबनिज़ोव ने तारीफ़ करते हुए कहा—"ठीक है···मगर उस आसमान वाले का लाख-लाख शुक्र कि उसने तुम्हें ऐसा बहादुर, नामी जवान बेटा दिया है। असली सूरमा है! कैसा चाबुक जमाया उसने क्रिस्तेनिया की पीठ पर! हर आदमी के पैर जहाँ थे, वहीं जमकर रह गये।"

ओबनिजोव की बातों ने पैन्तेली की पितृ-सुलभ भावनाओं को गुदगुदाया और बूढ़ा गदगद स्वर में बोला—"यह कहने की बात नहीं। किसी का ऐसा दूसरा बेटा खोजने के लिए आदमी को बड़ी दुनिया मँझानी पड़ेगी···सीना मैडलों से भरा हुआ है, इतने मैडल जीतना कोई मजाक नहीं है···क्यों? इसके मुक़ाबले प्योत्र को लो। वह भी मेरा ही बेटा था और पहला बेटा था, मगर ऐसा नहीं था। मिजाज में गर्मी नहीं थी, और कहीं-न-कहीं उसमें कुछ-न-कुछ कमी जरूर थी। कमीज के नीचे दिल औरत का था। लेकिन, यह दूसरा बेटा, मेरा ग्रिगोरी, बिलकुल मेरी तरह है···जान और जोश तो उसमें मुझसे भी ज्यादा है।"

ग्रिगोरी दुश्मन की नजर बचाते हुए अपने आधे ट्रूप के साथ-साथ कालमीक-घाट तक आ पहुँचा और जंगल में पहुँचने पर उसने और उसके साथ के लोगों ने अपने को पूरी तरह सुरक्षित समझा। लेकिन, दूर की पर्यवेक्षक-चौकी से लाल फ़ौजियों ने इन्हें देख लिया और एक टीम ने

अपनी तोपों के दहाने खोल दिए। पहला गोला सरपत के पौधों के सिरों के ऊपर से सरसराता निकला और किसी दलदली गड्ढे में जा गिरा, फूटा नहीं। लेकिन दूसरा गोला सड़क के पास ही, बूढ़े, काले देवदार की नंगी जड़ों के बीच फूटा तो आग-सी छिटकी और धड़ाके से कज्जाकों के कान के पर्दे फटने लगे। वे मिट्टी और सड़ी हुई लकड़ी के टुकड़ों की बौछारों से नहा उठे।

इसी समय घोड़े की दुमची के पास किसी गीली चीज के पड़ाक से गिरने की आवाज हुई, तो ग्रिगोरी अपने-आप आगे की ओर झुक गया और उसने अपनी आंखों पर हाथ की आड़ कर ली।

धड़ाके से जमीन हिल गई। कज्जाकों के घोड़े बिदके और कूल्हों के बल बैठ गए, मगर फिर, जैसे कि किसी कमान पर, आगे की तरफ़ ताबड़तोड़ भागे। परन्तु ग्रिगोरी का घोड़ा भयानक रूप से पीछे हटा, ढह पड़ा और धीरे-धीरे लुढ़कने-सा लगा। ग्रिगोरी ने जल्दी से कूद-कर घोड़े की लगाम पकड़ ली। अब दो गोले और हवा में सरसराते गुजरे और फिर जंगल के सिरे पर सन्नाटा हो गया। बारूद का धुआं घास की पत्तियों पर जम गया। आसपास से ताजी उल्टी मिट्टी, लकड़ी की चैलियों और अधसड़ी लकड़ी का संकेत मिलने लगा। दूर झुरमुट में मैगपाई चिड़ियां उत्सुकता से चहचहाती रहीं।

ग्रिगोरी का घोड़ा हींसा। उसके थरथराते हुए पिछले पैर धंसने लगे। दर्द से दांत निकल आये, गर्दन ऐंठ गई और मखमली भूरे नथुनों से गुलाबी-से झाग के बुलबुले फूटने लगे। घोड़े का पूरे-का-पूरा बदन बुरी तरह कांपने लगा और नीचे की खाल रह-रहकर सिहरने लगी।

"काम तमाम हो गया···क्यों ?" एक घुड़सवार कज्जाक ने जोर से पूछा। ग्रिगोरी ने कोई जवाब नहीं दिया। वह घोड़े की बुझती हुई आंखों में आंखें डाले रहा। उसने तो जख्म तक नहीं देखा। जरा दूर-भर हट गया। इस पर घोड़े ने झटके से आगे बढ़ने की कोशिश में अपने को समेटा, और फिर सहसा ही घुटनों के बल गिर पड़ा। इसके साथ ही उसकी गर्दन इस तरह झूल गई, जैसे कि वह मालिक से किसी

कुसूर के लिए मांफ़ी मांग रहा हो। इसके बाद ढीले ढंग से कराहते हुए वह बाजू के बल लुढ़क गया और उसने सिर उठाने की कोशिश की। पर, साफ़ है कि उसकी ताक़त टूट चुकी थी। फिर, कंपकंपी धीरे-धीरे खत्म हो गई, आंखें चमकीं कि चमककर रह गईं और गर्दन पसीने से नहा उठी। केवल टखनों के पास नब्ज़ हल्के-हल्के चलती लगी और काठी का बंद धीरे-धीरे कांपता नजर आया।

ग्रिगोरी ने जानवर की बाईं बाजू की तरफ़ निगाह दौड़ाई तो एक गहरा ज़ख्म नजर आया और ज़ख्म से काले खून की धार उमड़ती दीखी। उस बीच दूसरा कज्ज़ाक घोड़े से नीचे उतरा। ग्रिगोरी की आंखों से आंसू बहने लगे। उसने उन्हें पोंछा नहीं और अटक-अटककर बोला—"गोली मारकर एक बार में ही इसे खत्म कर दो।" उसने अपनी मॉज़र-राइफल कज्ज़ाक की ओर बढ़ाई, और उसके घोड़े पर सवार होकर अपने स्क्वैड्रन के ठिकाने की तरफ रवाना हो गया। वहां बाक़ायदा लड़ाई चालू मिली।……

लाल सेना के ट्रूपों ने तड़के नये सिरे से हमला कर दिया था। धुन्ध के पसारे के बीच उनकी कतारें उठीं और चुपचाप व्येशेन्स्काया की दिशा में बढ़ी थीं। दाईं ओर, बाढ़ के पानी से लबालब एक खड्ड ने क्षण-भर को उनका रास्ता रोका, पर दूसरे क्षण वे पानी में हिल गए और गोलियों वग़ैरा के अपने थैले और राइफ़लें हाथों में ऊपर उठाये-ही-उठाये इस पार से उस पार पहुंच गये।…

थोड़ी देर बाद, दोन के किनारे की पहाड़ियों पर से चार बैटरियां गरजने लगीं। फिर तोपों के गोलों ने पूरे जंगल को अपनी लपेट में लिया और विद्रोहियों की ओर से भी आग बरसने लगी। अब लाल फौजी अपनी राइफ़लें जमीन पर घसीटते हुए, मार्च करने के बजाय दौड़ने लगे। उनसे कोई आधे वर्स्ट के फ़ासले पर तोपों के गोलों के धड़ाके होते और उनके टुकड़े हवा में उड़ते रहे। गोले पेड़ों को तार-तार करते रहे और पेड़ चरमराकर ज़मीन पर गिरते रहे। धुएं के सफेद बादल आसमान में उमड़ते रहे। साथ ही दो मशीनगनें भी ज़रा-ज़रा देर पर खड़खड़ाती रहीं।

लाल फ़ौजियों की पहली पंक्ति के लोग गिरने लगे। वे कंधों पर झुके हुए बरानकोट लटकाये रहे कि गोलियों ने उन्हें पकड़ा और पीठों या सीनों के बल दे मारा। लेकिन बाक़ी लोगों ने ज़मीन पर लेटने की कोई कोशिश नहीं की और उनके और जंगल के बीच का फ़ासला बराबर कम होता गया।

दूसरी लाल पंक्ति के सामने एक लम्बा-सा कमांडर, लम्बे डग भरते हुए, आसानी से लपकता नज़र आया। उसका बदन थोड़ा आगे की ओर झुका दीखा और बरानकोट के सिरे खुले नज़र आए। पंक्ति बढ़ते-बढ़ते क्षण-भर को ठिठकी। पर, दौड़ते-दौड़ते कमांडर मुड़ा, उसने चिल्लाकर कुछ कहा, लोग फिर दौड़ पड़े। उनके भर्राये हुए गलों से फिर हुर्रा का घोष उमड़ा और उसमें क्रोध ने अपनी तेज़ी घोली।

इसके बाद कज़्ज़ाकों की सारी-की-सारी कुल मशीनगनें एक साथ ज़बानें खोलने लगीं। दूसरी ओर जंगल के सिरे से राइफ़लें अंधाधुंध गोलियाँ बरसाने लगीं। ग्रिगोरी जंगल के बाहर की सड़क पर अपने स्क्वैड्रनों के साथ खड़ा रहा कि कहीं पीछे से बाज़की कम्पनी की मशीनगनें खड़खड़ाने लगीं। इस पर लाल पंक्तियाँ डगमगाईं, उनके फ़ौजी ज़मीनों पर लेटे और आग का जवाब आग से दिया जाने लगा। इस तरह कोई डेढ़ घंटे तक संघर्ष चलता रहा। लेकिन विद्रोहियों ने ऐसी आग छिड़की कि लाल सेना की दूसरी पंक्ति उसका सामना न कर सकी। उसके सैनिक उठे, जान छोड़कर पीछे भागे और तीसरी पंक्ति से जा मिले। जल्दी ही चरागाह में हर जगह, घबराकर पीछे भागने लाल फ़ौजी-ही-फ़ौजी नज़र आने लगे। इसके बाद ग्रिगोरी ने अपने स्क्वैड्रनों को जंगल से बाहर निकाला, उन्हें एक व्यवस्था दी और दुश्मनों के पीछे छोड़ दिया। चिर-प्रदेश के स्क्वैड्रन ने लाल सेनाओं के ट्रूपों को उनके बेड़ों से काट दिया। यह स्क्वैड्रन आगे बढ़ा तो जंगल के बाहर नदी के दाहिने किनारे पर आमने-सामने लड़ाई होने लगी। लाल सेना के केवल कुछ ही सैनिक जैसे-तैसे बेड़ों तक लौट सके। वे बेड़ों पर सवार हुए तो तिल रखने को भी जगह न बची। फिर बेड़ों ने किनारा छोड़ दिया। दूसरों को, पीछे हटते-हटते, नदी के बिल्कुल

सिरे तक लोहा बजाना पड़ा।

ग्रिगोरी ने अपने स्क्वैड्रनों के लोगों को घोड़ों से उतरने का हुक्म दिया, घोड़ों की निगरानी करने वाले कज्ज़ाकों को जगह से बाहर न निकलने की हिदायत दी और बाकी को लेकर नदी-किनारे की ओर चला। सो, एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक दौड़ते हुए, वह और उसके फ़ौजी नदी के पास-ही-पास पहुँचते गये। कोई एक सौ पचास लाल सैनिक हथबमों और मशीनगनों की गोलियों से विद्रोही, पैदल सेना की हिम्मत तोड़ने में व्यस्त मिले। इस बीच बेड़े फिर बायें किनारे के लिए रवाना हुए। लेकिन बाजकी के कज्ज़ाकों ने लगभग सभी डांड चलाने वालों को भूनकर रख दिया। दाहिने किनारे के लाल सैनिकों को अपना भाग्य-विधान निश्चित लगा। उनका साहस जवाब दे गया। उन्होंने अपनी राइफ़लें एक ओर को फेंक दीं और तैरकर नदी पार करने की कोशिश की। पर, उनमें से कितने ही कमज़ोर पड़ गए। नदी की तेज़ धारा नहीं काट सके और बीच में ही डूब गये। सिर्फ़ दो सैनिक सही-सलामत उस पार पहुँच सके।

इनमें से नौसैनिक वाली धारीदार जर्सी पहने लाल फ़ौजी सधा हुआ तैराक लगा। उसने किनारे से दूर पहुँचने पर डुबकी लगाई और फिर मँझधार में पहुँचने पर ही ऊपर आया।

ग्रिगोरी सरपत की छितरी हुई जड़ों के पीछे से नौसैनिक के हाथों का पानी काटना देखता रहा। नौसैनिक स्थिर गति से किनारे के पास पहुँचता गया। इसी तरह एक दूसरे लाल-सैनिक ने भी सही-सलामत नदी पार कर ली। पर, दूसरी तरफ़ पहुँचने पर वह सीने-सीने तक पानी में खड़ा हुआ, उसने अपने सारे बचे हुए कारतूसों को आग में बदला, फिर कज्ज़ाकों की ओर मुट्ठी दिखलाते हुए चिल्लाकर कुछ कहा और तिरछे तैरने लगा। गोलियाँ उसके चारों ओर बरस-बरसकर पानी में बुझने लगीं, पर उसे एक नहीं लगी। वह जानवरों के पानी पीने की जगह बाहर निकला, बदन का पानी झटकने के बाद धीरे-धीरे किनारे की तरफ़ बढ़ा और फिर गाँव के अहातों की तरफ़ क़दम बढ़ाने लगा।

जो लाल फ़ौजी दूसरे किनारे पर बाकी रह गए, वे एक बलुहे टीले के पीछे लौट गये। उनकी मशीनगनें तब तक गोलियाँ बरसाती रहीं जब तक कि जैकेट में पानी उबलने नहीं लगा।

"मेरे पीछे आओ !" मशीनगन के शान्त होते ही ग्रिगोरी ने धीरे से हुक्म दिया और अपनी तलवार म्यान से खींचकर टीले की तरफ़ बढ़ा।

कज्जाक उसके पीछे-पीछे हाँफते और पैर पटकते हुए आगे बढ़ते गये।

फिर, इनके और लाल सैनिकों के बीच ज्यादा-से-ज्यादा सौ क़दम का फ़ासला रह गया कि गोलियों की तीन बौछारों के बाद एक लम्बे कद, साँवले चेहरे और सफ़ेद गलमुच्छों वाला कमांडर टीले के पीछे से उठा और सीधा हुआ।

कमांडर जख्मी हो गया था और इसे एक औरत सहारा दे रही थी।

सो, अपनी टूटी टाँग घसीटते हुए वह टीले से नीचे उतरा, और अपनी संगीन लगी राइफ़ल को जमकर हाथ में जकड़ते हुए उसने भर्राई आवाज में हुक्म दिया—"कॉमरेडो···आगे बढ़ो और इन श्वेतगार्दों को मसलकर रख दो।"

बस तो, मुट्ठी-भर जाँबाज फ़ौजी 'इन्तरनेशनाल'[1] गाते हुए हमले का जवाब हमले से देने के लिए आगे बढ़े, आगे क्या बढ़े, मौत के मुँह में धँस गये।

पता चला कि इस तरह जो ११६ अन्तिम लाल सैनिक दोन के किनारे काल के गाल में समाये, वे सभी अन्तर्राष्ट्रीय कम्पनी के कम्यूनिस्ट सदस्य थे।

: ३ :

ग्रिगोरी उस दिन काफी रात गए स्टाफ़ से अपने यहाँ वापस आया। प्रोखोर-जिकोव उसे बेंत के छोटे फाटक के पास राह देखता मिला।

---

१. १८७१ में फ्रांस में रचित एक विशेष अन्तर्राष्ट्रीय कम्यूनिस्ट गीत।

"अकसीनिया का कुछ अता-पता मिला ?" ग्रिगोरी ने अपने स्वर में बरबस उदासीनता भरते हुए पूछा।

"नहीं···कोई खबर नहीं है···वह तो जैसे हवा हो गई।" प्रोखोर ने जमुहाई लेते हुए जवाब दिया, पर मन-ही-मन चिन्तित होकर सोचने लगा, नीली छतरी वाला न करे कि इस वक्त यह मुझे जबरदस्ती ठेलकर भेजे और कहे कि जाओ, जहां से भी हो, अकसीनिया को खोजकर लाओ। दुनिया के शैतान इस वक्त मेरे सिर पर सवार हैं।

"कुछ पानी-वानी लाओ। पसीने से तर-बतर हो रहा हूं। चलो··· लाओ जल्दी !" ग्रिगोरी ने बिगड़ते हुए कहा।

प्रोखोर अन्दर से मग लाया। फिर बहुत देर तक ग्रिगोरी अंजुरी-पर-अंजुरी बांधता रहा और वह पानी उंडेलता रहा। ग्रिगोरी को इस तरह मुंह-हाथ धोने में बड़ा मजा आया। फिर उसने पसीने से गंधाती अपनी ट्यूनिक उतारी और बोला—"थोड़ा पानी पीठ पर डालो।"

ठंडा पानी पसीने से नहाई पीठ पर पड़ा तो वह कनकना उठा। उसने अपने छिले हुए कंधे और बालों से भरा सीना रगड़-रगड़कर धोया। उसने घोड़े की पीठ पर बिछाये जाने वाले कपड़े से बदन पोंछा और खुशी से भरी आवाज़ में प्रोखोर को हुक्म देते हुए बोला—

"लोग मेरे लिए घोड़ा लेकर आयेंगे सवेरे। घोड़ा ले लेना, उसकी खूब मलाई करना और उसे दाना दे देना। लेकिन मुझे मत जगाना। मैं जीभर सोना चाहता हूं। हां, अगर स्टाफ़ से कोई आए, तब अलबत्ता मुझे जगा देना। समझे ?"

वह शेड के नीचे जाकर एक गाड़ी में लेटा तो लेटते ही गहरी नींद आ गई। तड़के उसे सर्दी लगी तो उसने पैर सिकोड़ लिए और ओस से गीला बरानकोट अपने चारों ओर लपेट लिया। लेकिन धूप निकलते ही वह फिर औंघा गया और फिर तोपों की भयानक गरज सुनने के बाद ही उठकर बैठा। गांव के ऊपर के नीले आसमान में हलके रुपहले रंग का एक हवाई जहाज चक्कर लगाता दीखा। नदी के दूर के किनारे से तोपें और मशीनगनें उस पर आग बरसाती नजर आईं।

"क्यों, जैसे कि हवाई जहाज़ को मार ही तो गिराएँगे।" प्रोखोर ने, रस्से से बँधे ऊँचे स्टैलियन घोड़े को मलते हुए कहा—"देखो, पैन्तेलेयेविच, ज़रा देखो तो कि कैसा घोड़ा उन लोगों ने भेजा है तुम्हारे लिए।"

ग्रिगोरी ने स्टैलियन के ऊपर निगाह दौड़ाई और सन्तोष से भरकर पूछा—"कै साल का है यह? देखने से तो कोई पाँच साल का लगता है?"

"हाँ, पाँच साल का ही है।"

"शानदार जानवर है···पैर बहुत ही ख़ूबसूरत है और चार के चारों का निचला हिस्सा सफ़ेद है। बढ़िया घोड़ा है। ख़ैर, तो काठी कसो इस पर, ज़रा मैं जाकर देख आऊँ कि कौन आया है।"

"देखने में तो अच्छा ही लगता है···सवारी में पता नहीं कैसा साबित होगा! वैसे जानवर जानदार मालूम होता है।" प्रोखोर ने काठी के बंद कसते हुए धीरे से कहा।

इसके बाद ही तोप के गोले का एक सफ़ेद टुकड़ा जहाज के बिल्कुल पास ही फटा और धुएँ का बादल घिर गया।

वायुयान-चालक ने उतरने लायक़ जगह देखकर जहाज तेज़ी से नीचे उतारा। ग्रिगोरी ने अपना घोड़ा बेंत के छोटे फाटक से निकाला और गाँव के अस्तबलों से गुज़रता जहाज़ के उतरने की जगह की तरफ़ बढ़ा।

कभी गाँव के स्टैलियनों के अस्तबलों का काम देने वाली गाँव के बाहर बनी, पत्थरों की यह लम्बी इमारत इस समय आठ सौ से ज़्यादा लाल फ़ौजियों से ठसाठस भरी रही। पहरेदारों ने इन फ़ौजियों को शौचादि के लिए कहीं बाहर नहीं जाने दिया और वहाँ एक भी स्टूल इस काम के लिए नहीं रखा। सो, फ़ौजियों के पाख़ाने की तेज़ बदबू ने इमारत को चारों ओर से एक दीवार की तरह घेर रखा। दरवाज़े से गँधाते पेशाब की धारें बहती रहीं और उन पर पन्नों की तरह हरी मक्खियों के दल-के-दल उमड़ते रहे।

नज़रबंदों की इस जेल से रात-दिन घुटी हुई कराहें उठती रहीं

ौर सैकड़ों लाल फ़ौजी कमजोरी, टाइफस और पेचिश से दम तोड़ते रहे। कभी-कभी तो कई-कई दिनों तक लाशें उठाई तक नहीं गईं।

ग्रिगोरी इन अस्तबलों का चक्कर लगाकर घोड़े से उतरने को हुआ कि दोन के किसी दूर के किनारे से फिर तोप की गरज सुनाई पड़ी। पास आते गोले की आवाज बराबर तेज होती गई कि बीच में ही वह फूट गया और उस धड़ाके ने पिछले शोर का तार तोड़ दिया।

हवाई जहाज से चालक और सैनिक-अधिकारी बाहर निकलने लगे। इस बीच कज्ज़ाकों ने पूरा जहाज घेर लिया। लेकिन, ऐन इसी वक्त पहाड़ी की बैटरी की सारी तोपों ने एक साथ अपने दहाने खोल दिए और गोले आकर अस्तबलों के ठीक चारों तरफ गिरने लगे।

विमान-चालक फिर कॉकपिट में घुस गया, लेकिन इंजन ने स्टार्ट होने से इनकार कर दिया।

"ज़ोर से धक्का दो ज़रा!" फ़ौजी अधिकारी ने चिल्लाकर कहा और सबसे पहले उसने हवाई जहाज के एक डैने को ढकेलना शुरू किया। जहाज डगमगाता हुआ देवदारुओं के झुरमुट की ओर बढ़ा। बैटरी भी उसके आगे बढ़ने के साथ-ही-साथ आग बरसाती रही। एक गोला लाल फ़ौजियों से ठसाठस भरी इमारत के ठीक ऊपर आकर गिरा और धुएँ के बादलों और चूने की उमड़ती धूल के बीच एक हिस्सा ढह गया। पूरा मकान भयभीत क़ैदियों की चीख़-पुकारों से काँप उठा। तीन क़ैदियों ने सेंध से बाहर निकलने की कोशिश की, लेकिन कज्ज़ाकों ने बिलकुल पास पहुँचकर उन्हें विस्मय में डाल दिया। उनकी समझ में न आया कि वे करें तो करें क्या!

ग्रिगोरी ने एक तरफ को अपना घोड़ा दौड़ाया।

"तुम्हें ले डालेंगे वे लोग! अपना घोड़ा देवदारुओं की तरफ़ ले जाओ!" एक कज्ज़ाक ने बग़ल से दौड़कर गुज़रते हुए चिल्लाकर कहा। भय से उसका चेहरा भरा रहा और आँखें नाचती रहीं।

'सचमुच हो सकता है कि वे मुझे ले डालें। इस मामले में कौन, क्या कह सकता है!' ग्रिगोरी ने सोचा और घोड़े को धीरे-धीरे हाँकते हुए वह अपने क्वार्टरों को लौट दिया।

उस दिन कुदिनोव ने स्टाफ़-हेडक्वार्टरों में एक बिल्कुल गुप्त मीटिंग की और ग्रिगोरी को नहीं बुलाया। हवाई जहाज से आए सैनिक अधिकारी से उसने कहा, "काज़ान्स्काया के चारों तरफ़ जमा हमलावर फ़ौज किसी भी दम लाल मोर्चा भेद सकती है। साथ ही यह भी है कि जनरल सेक्रेतोव की कमान में दोन सेना की एक घुड़-सवार डिविज़न जल्दी ही मार्च कर विद्रोहियों से जा मिलेगी।" अधिकारी ने सलाह दी—"नदी पार करने के लिए कोई-न-कोई इन्तजाम जल्दी-से-जल्दी किया जाना चाहिए, ताकि सेक्रेतोव की डिविजन से मिलने के बाद बागियों की घुड़सवार रेजीमेंटें दोन के दाहिने किनारे से पार इकट्ठी की जा सकें। हमें रिजर्व ट्रूपों को भी नदी के ज्यादा-से-ज्यादा पास पहुँचा देना चाहिए।"···फिर, ट्रूपों को नदी के पार भेजने की योजनाओं और उनकी कार्यवाहियों की सारी रूपरेखा बन गई तो अंत में अधिकारी ने पूछा—"लेकिन आपने व्येशेन्स्काया में क़ैदी क्यों जमा कर रखे हैं?"

"क्योंकि उन्हें और कहीं रखने की जगह नहीं है। गाँवों के बाहर इस काम के लायक कोई इमारत नहीं है।" स्टाफ़ के एक कार्यकर्त्ता ने जवाब दिया।

अधिकारी ने अपना सफ़ाचट पसीने से तर सिर रूमाल से रगड़ा, अपनी ट्यूनिक के कालर के बटन खोले और एक आह भरकर बोला—"क़ैदियों को कज्ज़ान्स्काया भेज दीजिए।"

कुदिनोव ने आश्चर्य से अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। पूछा—"और फिर?"

"और, वहाँ से उन्हें फिर व्येशेन्स्काया वापस ले आइये।" अधिकारी ने अपनी भावहीन नीली आँखें सिकोड़ीं। फिर सख्ती से होंठ भींचते हुए बोला—"भाईजान, मेरी तो यही समझ में नहीं आता कि आप इस तरह उनकी इतनी खातिर क्यों कर रहे हैं? मेरे खयाल में यह वक्त इस खातिर का तो बिलकुल ही नहीं। इन्सान के बदन और समाज में सभी तरह की बीमारियाँ फैलाने वाले इन बिलबिलाते कीड़ों को तो खत्म ही कर देना चाहिए। आया की तरह इनकी

परवरिश करने का मतलब कुछ नहीं होता। मैं अगर आपकी जगह होता तो मैंने इनका नाम-निशान मिटा दिया होता।"…

बस तो अगले दिन दो सौ लाल फ़ौजियों की पहली टोली को बलुहे पसारे में मार्च करने का हुक्म दे दिया गया। पर, इन्हीं-तहाँ रुक गए, मौत की तरह पीले चेहरे वाले इन फ़ौजियों के पैर उठाए न उठे। वे 'परछाइयों की तरह' जैसे-तैसे आगे बढ़े। इसके बाद घुड़सवार फ़ौजियों की एक टोली ने इन्हें घेर लिया और फिर गाँव से कोई सात वर्स्ट के फ़ासले पर इन लाल सैनिकों को चीन-चीनकर काटकर फेंक दिया गया और शाम होते ही उनकी दूसरी पार्टी रवाना कर दी गई। इन एक सौ पचास लाल सैनिकों में से सिर्फ़ ग्यारह कज्जान्स्काया पहुँचे। बीच में, देखने-सुनने में जिप्सी-जैसे एक जवान लाल सैनिक का दिमाग खराब हो गया। वह पुदीने का एक गुच्छा सीने से लगाये पूरे रास्ते नाचता, गाता और रोता रहा। वह बार-बार मुँह के बल रेत पर गिरता तो हवा उसकी सूती कमीज के फटे हिस्सों से खिलवाड़ करती और पहरेदार कज्ज़ाकों की निगाह उसकी हड्डी, पीठ की खिंची हुई खाल और पैर के फटते तलवों पर पड़ती। वे उसे उठाते और फ्लास्क से उसके ऊपर पानी छिड़कते। वह अपनी काली उन्माद से चमकती आँखें खोल देता, शांत भाव से हँसता और फिर लड़खड़ाता हुआ आगे बढ़ने लगता।

एक जगह उस पर औरतों को इतनी दया आई कि सड़क के पास की एक झोंपड़ी के सामने उन्होंने क़ैदियों को घेर लिया, और एक शानदार, मोटी-बूढ़ी औरत ने रक्षकदल के मुखिया से सख्ती से कहा—"सुनते हो, तुम उस साँवले आदमी को छोड़ दो! वह इस दुनिया में नहीं है। आसमान वाले के पास पहुँच चुका है। अगर तुम ऐसे आदमी को मारोगे तो बड़ा गुनाह कमाओगे।"

मुखिया, लाल गलमुच्छों वाला एक तेज क़िस्म का घुड़सवार अफ़सर था। उसने हँसते हुए व्यंग्य किया—"बुढ़िया, हमें इसका कोई डर नहीं। एक गुनाह और सही। ऐसे-ऐसे गुनाह तो हम पहले भी इतने कमा चुके हैं कि अब फ़क़ीरों में गिने जाने से तो रहे।"

"लेकिन, खैर, तुम इसे छोड़ दो ! मेरी बात मत टालो ।" बुढ़िया ने आग्रह से कहा—"यह न भूलो न कि मौत तुममें से हर एक के सिर पर मँडरा रही है ।"

दूसरी औरतों ने पूरी ताक़त से बूढ़ी औरत का समर्थन किया और मुखिया उसकी बात मानने पर राजी हो गया । बोला—"अच्छा, कोई बात नहीं, ले जाओ इसे । अब यह किसी तरह का कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता । लेकिन, हम इतने अच्छे दिल के लोग हैं तो इस एवज़ में तुम हममें से हर एक को एक-एक कुल्हिया दूध क्यों न पिला दो ।"

बुढ़िया उस लाल पागल फौजी को अपनी झोंपड़ी में ले गई । वहाँ उसने उसे खिलाया-पिलाया और सोने के कमरे में उसके लिए बिस्तर लगा दिया । वह सारे दिन सोता रहा । सोकर उठा तो खिड़की से पीठ सटाकर खड़ा हो गया और धीरे-धीरे गाने लगा । उसी समय बुढ़िया कमरे में आई तो गाल पर हाथ रखकर बहुत देर तक उसके चेहरे के ढाँचे को ध्यान से देखती रही और फिर भारी आवाज़ में बोली—"सुना है कि तुम्हारे घर के लोग यहीं, कहीं पास ही में रहते हैं ।"

पागल कुछ क्षणों तक चुप रहा और इसके बाद फिर गाने लगा । लेकिन इस बार उसकी आवाज़ और धीमी हो गई ।

बुढ़िया ने सख्त पड़ते हुए कहा—"तुम अपना यह खिलवाड़ बंद करो···समझे न लड़के ! और, यह न सोचो कि तुम मुझे बेवकूफ़ बना सकते हो । मैंने एक लम्बी जिन्दगी देखी है···तुम मुझे चरका नहीं दे सकते···मैं ऐसी कोई बेअक्ल नहीं । मुझे पता है कि तुम्हारा दिमाग़ बिल्कुल ठीक है···मैंने नींद में तुम्हारी बातें सुनी हैं···सभी बातें समझदारी की थीं ।"

पर, लाल सैनिक गाता ही रहा । हाँ, शान्त अधिक होता गया । बुढ़िया कहती गई—"मुझसे डरो मत । मैं तुम्हारा कोई नुक़सान नहीं करूँगी । मैं अपने दो बेटे जर्मनी की लड़ाई में और एक बेटा अभी चेरकास्क की इस लड़ाई में खो चुकी हूँ । मैंने उन्हें अपनी कोख में रखा, दूध पिलाया, खाना खिलाया और अपनी जवानी के दिनों में रातों-रात सोई नहीं ।···इसलिए जो जवान फ़ौज में काम करते और लड़ाई

में हिस्सा लेते हैं, उन्हें देखकर मेरा दिल हमेशा ही टीस उठता है।"
बुढ़िया कुछ क्षणों तक चुप रही।

लाल फ़ौजी भी चुप हो गया। सांवले गालों पर हलकी-हलकी लाली दौड़ गई और गले की एक नस रह-रहकर फड़कने लगी। एक क्षण तक शान्त रहने के बाद उसने अपनी पलकें आधी खोलीं, तो उसकी निगाहों से समझ टपकी। काली आँखें इतने धैर्य और आशा से चमकीं कि बुढ़िया के होंठों पर सहज ही मुस्कान दौड़ गई। पूछा—"तुम शुमिलिन्स्काया की सड़क जानते हो ?"

"नहीं, माँ!" लाल सैनिक ने होंठ कठिनाई से ही खोलते हुए जवाब दिया।

"तो तुम वहाँ पहुँचोगे कैसे ?"

"मैं नहीं जानता···"

"यही तो बात है। लेकिन, अब तुम्हारे लिए मैं करूँ क्या ?" वृद्धा बहुत देर तक सैनिक के उत्तर की प्रतीक्षा करती रही और फिर प्रश्न किया—"लेकिन, तुम चल तो सकते हो न ?"

"किसी तरह चल ही लूँगा।"

"यह जमाना 'किसी तरह चल लेने' का नहीं। तुम्हें रात में मंजिल तय करनी होगी, और ज़्यादा-से-ज़्यादा तेज़ी से चलना होगा। तुम एक दिन यहाँ और ठहरो। इसके बाद मैं तुम्हें खाना दे दूँगी और रास्ता दिखलाने के लिए अपना पोता तुम्हारे साथ कर दूँगी···और ···फिर खुदा हाफ़िज़ ! यह बात मैं पक्की तरह जानती हूँ कि तुम्हारे साथी लाल फ़ौजी शुमिलिन्स्काया के ठीक बाहर हैं और तुम उनके पास जा सकते हो···सिर्फ़ बड़ी सड़क से नहीं जा सकते। तुम्हें स्तेपी-मैदान पार करना होगा, घाटियों के किनारे-किनारे चलना होगा, जंगलों के बीच से गुजरना पड़ेगा और सड़कों से दूर-ही-दूर रहना होगा, वरना कज्ज़ाक तुम पर टूट पड़ेंगे······और फिर सारा खेल खत्म हो जाएगा······सूरत यह है, मेरे राजा-बेटे !"

अगले दिन, साँझ का धुँधलका घिरते ही बुढ़िया ने अपने बारह साल के पोते और उस लाल सैनिक को क्रास से सुरक्षित किया,

जवान को कसा हुआ कज्जाक कोट पहनाया और गम्भीर स्वर में बोली—'अच्छा, अब जाओ··· प्रभु तुम्हें बचायें!······लेकिन देखो, दुश्मनों के हाथों मत पड़ जाना······किसी तरह नहीं······मेरे बेटे, किसी तरह!······मेरे सामने न झुको···तुम उन प्रभु के आगे झुको! मैं ही अकेली नहीं, हम सभी दिल वाली माएँ······तुम्हारे जैसे लाड़लों के लिए दुखी हैं······बहुत ही ज्यादा दुखी हैं। जाओ······अब जाओ······प्रभु तुम्हें सही-सलामत पहुँचा दे।" और उसने झोंपड़ी का पीला, चिकनी मिट्टी से पुता टेढ़ा-मेढ़ा दरवाजा झटके से बन्द कर लिया।

: ४ :

इलीनीचिना हर रोज उजाले की पहली किरण के साथ उठती, दूध दूहती और घर के दूसरे काम करने लगती। वह घर के अन्दर का स्टोव न जलाकर बाहर के बावर्चीखाने में आग दहकाती, खाना पकाती और फिर घर में बच्चों के पास लौट आती।

नताल्या का स्वास्थ्य, टाइफ़स के बाद, बहुत धीरे-धीरे सुधरा। वह त्रिदेव पर्व के दूसरे दिन पहली बार बिस्तर से उठी तो पैरों की कँपकँपी के बावजूद कमरा-कमरा देख आई और बच्चों के सिरों से जुएँ निकालती रही। उसने स्टूल पर बैठकर कुछ कपड़े तक धोने की कोशिश की।

उसका चेहरा लट जाने पर भी बराबर चमकता रहा, पिचके गालों पर भी गुलाबी छिटकी रही और बीमारी के कारण बड़ी लगने वाली आँखें, प्रसव के बाद की चंचलता और उछाह से चमकती रहीं।

"पोलयुश्का···मेरी मुन्नी-रानी, मैं बीमार हो गई तो मीशात्का ने तुम्हें तंग तो नहीं किया?" नताल्या ने, एक-एक शब्द विशेष प्रयत्न से निकालते हुए कमजोर आवाज में पूछा और अपनी बेटी के काले बालों पर हाथ फेरने लगी।

"नहीं, माँ···सिर्फ़ एक बार मीशात्का ने मुझे मारा···लेकिन हम लोग साथ-साथ खूब खेले!" लड़की ने धीमे से कहा और चेहरा

माँ के घुटनों से टिका दिया।

"और, दादी ने तुम्हारी फ़िक्र ठीक से की ?" नताल्या मुस्कराते हुए पूछती गई।

"दादी ने खूब प्यार किया।"

"और, अजनबी, लाल फ़ौजियों ने तो तुम्हारे बदन को हाथ नहीं लगाया ?"

"उन्होंने हमारे नन्हे-मुन्ने बछड़े को मार डाला···बुरा हो उनका !" मीशात्का ने पतली गहरी आवाज में जवाब दिया। वह अपने पिता से इतना अधिक मिलता-जुलता था कि कोई देखता तो अचरज में पड़ जाता।

"तुम्हें कोसा-कासी नहीं करनी चाहिए, मीशात्का ! तुम तो बड़े-सयानों की तरह बातें बनाने लगे। अब से याद रखना और अपने से बड़ों के लिए बुरी बात मुँह से कभी न निकालना।" नताल्या ने अपनी मुस्कराहट दबाते हुए भर्त्सना के स्वर में कहा।

"दादी ने ऐसा ही तो कहा था, उन लोगों के बारे में···न हो तो पोल्या से ही पूछ देखो।" नन्हे मेलेखोव ने उदास मन से अपना बचाव किया।

"यह बात ठीक है, माँ···और, उन लोगों ने हमारी मुर्गियों के सभी बच्चे मार डाले······एक-एक बच्चा मार डाला।"

पोल्या उमंग में आई। उसकी छोटी-छोटी काली आँखें चमकने लगीं और वह पूरी दास्तान सुना गई कि कैसे लाल फ़ौजी अहाते में दाखिल हुए, कैसे उन्होंने सभी चूजे और बत्तखें समेटीं, कैसे दादी ने मुर्गियों के अण्डों के लिए पाला-मारी, चोटी वाले, मुर्गे को उनसे छोड़ देने को कहा और कैसे उसी मुर्गे को हाथ में झुलाते हुए एक खुश-मिजाज लाल फ़ौजी बोला—"बुड्ढी, इसी मुर्गे ने सोवियत हुकूमत के खिलाफ़ कुकड़ूँकूँ की है, इसलिए हमने इसे मौत की सजा दे दी है। अब तुम चाहे जो कुछ कहो, हम तो इसका शोरबा तैयार करेंगे। बदले में, कहो तो, हम अपने फ़ेल्ट-बूट भले ही तुम्हारे लिए छोड़ जाएँ।"

अपने हाथ फैलाते हुए नन्ही पोल्या बोली—"और, इतने··· इतने बड़े-बड़े अपने बूट वे लोग छोड़ गए···बहुत ही बड़े हैं, माँ··· और उनमें छेद-ही-छेद हैं।"

नताल्या ने आँसुओं के बीच बच्चों को दुलारा और खुशी से खिली आँखों की निगाहें बेटी पर जमाए-ही-जमाए धीरे-धीरे बोली—"आह··· बेटी मेरे ग्रिगोरी की है···मेरे ग्रिगोरी की असली बेटी है···तू बिल्कुल अपने पापा की तरह है···रोआँ-रोआँ उससे मिल रहा है।"

"लेकिन, मैं हूँ पापा की तरह, माँ!" मीशात्का ने ईर्ष्या से भर-कर पूछा और कातर मन से अपनी माँ से चिपक गया।

"हाँ, तुम भी अपने पापा की तरह हो। सिर्फ़ यह याद रखना कि जब बड़े होना तब अपने पापा की तरह बुरे न निकलना।"

"लेकिन, पापा बुरे हैं, माँ? क्यों हैं बुरे पापा?" पोल्या ने पूछा।

नताल्या के चेहरे पर उदासी का बादल घिर आया। उसने कोई जवाब नहीं दिया और जैसे-तैसे बेंच से उठ खड़ी हुई।

इलीनीचिना कमरे में थी। वह असन्तोष से भरकर एक तरफ को चली गई। नताल्या, बच्चों की बातों को अनसुनी करती हुई, खिड़की के पास जा खड़ी हुई और लम्बी-लम्बी आहें भरती और 'परेशानी के कारण' अपनी बदरंग चोली के बंदों में उंगलियाँ उलझाती, अस्ता-खोव के घर की बंद झिलमिलियों को एकटक घूरती रही।

अगले दिन सवेरे उसकी आँख खुली तो बच्चों की नींद खराब न करने के ख़याल से चुपचाप उठी, हाथ-मुँह धोया और एक साफ़ स्कर्ट, चोली और सफ़ेद रूमाल बक्से से निकाला। वह देखने में उत्तेजित लगी, पर अपनी उदासी के बीच भी उसने यों ही कपड़े बदल लिए। इलीनीचिना समझ गई कि वह अपने बाबा ग्रीश्का की समाधि पर जाने की तैयारी में है।

"कहाँ जा रही हो?" बुढ़िया ने अपने अनुमान की पुष्टि के लिए जान-बूझकर पूछा।

"मैं बाबा की कब्र पर जा रही हूँ।" फूट पड़ने के डर से आँखें ऊपर न उठाते हुए नताल्या ने जवाब दिया। उसे बाबा की मौत की

खबर के साथ यह भी मालूम हो गया था कि मीशा-कोशेवोई ने बाबा के घर और फ़ार्म में भी आग लगा दी है।

"बहुत कमज़ोर हो अभी...वहां तक पहुंच भी न पाओगी।" सास ने कहा।

"मैं बीच-बीच में, ज़रा-ज़रा आराम करके, वहां तक पहुंच जाऊंगी। तुम बच्चों को खाना दे देना, मां! हो सकता है कि मुझे वहां थोड़ी देर लग जाए।"

"लेकिन, देर क्यों लग जाएगी? वहां देर तक क्या करोगी तुम? क़ब्र पर जाने का अच्छा वक्त चुना है तुमने भी! तुम्हारी जगह मैं होती तो इस वक्त जाती नहीं, नताल्या बेटी!"

"नहीं, मैं तो जाऊंगी।" नताल्या के चेहरे पर बादल छा गया और उसने दरवाजे के हत्थे पर हाथ रखा।

"ज़रा ठहरो तो...तुम वहां इस तरह भूखी-प्यासी क्यों जा रही हो? थोड़ा-बहुत कुछ मुंह में डाल लो न। थोड़ा-सा दही ले आई हूं।"

"नहीं, मां...प्रभु ईसा रहम करें...मुझे कुछ नहीं चाहिए...लौटने पर ही कुछ खाऊंगी-पीऊंगी।"

तो, बहू को जाने पर उतारू देखकर सास सलाह देती हुई बोली—"अच्छा हो कि तुम दोन के ऊपर के रास्ते से, बाग़ों के बीच से होकर जाओ। उधर काफ़ी सन्नाटा रहता है। कोई इतना ज़्यादा देखेगा नहीं तुम्हें।"

इस समय दोन पर धुंध की एक चादर-सी तनी हुई थी। सूरज अभी नहीं उगा था, पर पूर्व में देवदारुओं के पीछे छिपे आसमान के किनारे पर उषा की नीली परछाइयां धधक रही थीं और बादलों के नीचे से बदन को ठिठुरा देने वाली समीर बह रही थी।...

ऐसे में नताल्या अपने बाबा के यहां पहुंची, सरपत का गिरा हुआ फाटक पार कर, अपनी ही बगिया में आई और सीने को अपने हाथ से दबाती हुई मिट्टी के एक ताजे छोटे ढूह के पास ठिठकी।......

बगिया में घास और बिच्छुओं के पौधे जहां-तहां उगे हुए थे। हर ओर से ओस से नहाए पुदीने, गीली धरती और धुंध की गमक आ रही

थी। बाग में जल गए, कोयला-कोयला रह गए, पुराने सेब के पेड़ पर, अपने पंख फैलाए एक मैना बैठी हुई थी। क़ब्र का ढूह धीरे-धीरे कोने की ओर धँसा जा रहा था। शुष्क, सूखी घास के गुच्छों के बीच जहाँ-तहाँ छोटी हरी घास की पत्तियाँ अपना सिर उठा रही थीं।······

नताल्या को पुरानी याद आई तो वह बुरी तरह भर गई, धीरे से घुटनों के सहारे बैठी और फिर चेहरे के बल बेरहम धरती पर भहरा पड़ी। धरती से मौत और बरबादी की सदाबहार बू आई।

एक घण्टे बाद, संताप से छलनी दिल लिये, नताल्या चुपके-चुपके बगिया के बाहर निकली और उसने मुड़कर अंतिम बार पूरी जगह पर निगाह डाली। यहीं तो उसकी जवानी में फूल आए थे। उपेक्षित हाते में शेडों की धसकती पन्नियाँ, स्टोवों के काले खण्डहर और घर की नींवें जहाँ-तहाँ नज़र आ रही थीं। सारा दृश्य अपने दर्द की कहानी आप कह रहा था।

······नताल्या बाहर निकली और कोने की एक गली में मुड़ गई।

× × ×

······नताल्या की हालत दिनों-दिन सुधरती गई। होते-होते उसके पैरों में ताकत आई, कंधे गोलाए और पूरा बदन स्वास्थ्य से भरा। जल्दी ही वह घर के काम-काज में अपनी सास का हाथ बँटाने लगी। अब बावर्चीख़ाने में कुछ पकाते समय उनके बीच काफ़ी देर तक बातें होने लगीं। एक दिन नताल्या गुस्से में भरकर बोली, "यह तूफ़ान ख़त्म कब होगा? मैं तो इससे तंग आ गई।"

"देखो, अब जल्दी ही हमारे यहाँ के लोग दोन पार कर अपने-अपने घर-गाँव आयेंगे।" इलीनीचिना ने विश्वास से उत्तर दिया।

"लेकिन, यह बात तुम कैसे कह सकती हो, माँ?"

"मेरा दिल ऐसा कहता है।"

"अभी तक तो हमारे घर के कज़्ज़ाक सही-सलामत हैं। ईश्वर न करे कि उनमें से किसी को किसी तरह की कोई आँच आए।······ ग्रीशा तो बहुत ही लापरवाह है···" नताल्या ने आह भरकर कहा।

"मैं नहीं सोचती कि हमारे घर के किसी भी आदमी का बाल बाँका

होगा। ईश्वर बेरहम नहीं है। ग्रीश्का के पापा ने तो घर आने का वायदा किया था, लेकिन आया नहीं—कोई बात खास हो गई होगी। अगर आ जाता तो तुम उसके साथ जाकर अपने ग्रीशा से मिल आतीं। हमारे गांव के लोग सामने ही तो मोर्चा बांधे हुए हैं। जिन दिनों तुम बेहोश थीं, मैं एक दिन तड़के नदी से पानी लेने गई तो उस पार से अनीकुश्का की आवाज़ मेरे कानों में पड़ी। "सलाम, बूढ़ी मम्मा! पंन्तेली ने सलाम भेजा है तुम्हें।"

"लेकिन, ग्रीशा कहां है?" नताल्या ने सावधानी बरतते हुए पूछा।

"वह तो पीछे है। पूरी फ़ौज की कमान उसके हाथों में है।" इलीनीचिना ने सहज-भाव से धीरज बंधाते हुए कहा।

"लेकिन वह कमान सम्हालता कहां से है?"

"शायद व्येशेन्स्काया से। और कहीं से यह काम मुमकिन नहीं है।"

नताल्या चुप हो गई। इलीनीचिना ने उसके चेहरे पर नज़र डाली और उत्सुकता से पूछा—"लेकिन आखिर बात क्या है? तुम रो क्यों रही हो?"

नताल्या ने जवाब नहीं दिया। ऐप्रन के सिरे से अपना चेहरा ढँककर सिसकने लगी।

सास बोली—"रोओ मत, नताल्या बेटी, आंसुओं से अब कोई बात नहीं बनेगी। ईश्वर चाहेगा तो बाप-बेटे सही-सलामत घर आयेंगे। तुम अपनी फ़िक्र रखो। तुम बेकार अहाते के बाहर न जाना, नहीं तो ईसा के दुश्मनों की नज़र तुम पर गड़ जाएगी।"

बावर्चीखाने में अँधेरा हो गया। सहसा ही खिड़की के बाहर कोई आदमी दीख पड़ा। इलीनीचिना ने उधर देखा और उसके मुंह से कराह निकल गई। "वही लोग हैं।...लाल फ़ौजी हैं। नताल्या बेटी, जल्दी से बिस्तर पर लेट जाओ और बीमार बन जाओ......तुम नहीं जानतीं कि कौन-सा गुनाह...लो इस बोरे से अपने को ढंक लो।"

नताल्या डर से थरथराने लगी और वह बिस्तर पर लेट भी न पाई थी कि दरवाज़ा खड़का और एक लम्बा-सा लाल फ़ौजी झुककर बावर्चीखाने में घुसा। बच्चे इलीनीचिना की स्कर्ट से लिपट गए और वह स्टोव के

पास खड़े-ही-खड़े बेंच पर ढह पड़ी। इससे उबलते हुए दूध की हंडिया लुढ़क गई।

लाल फ़ौजी ने बावर्चीख़ाने के चारों तरफ़ तेज़ी से निगाह दौड़ाई और ज़ोर से बोला—"डरती क्यों हो? मैं तुम्हें खा तो नहीं जाऊँगा। दो ग्रेंदृबेन (गुड-डे)।"

नताल्या बीमार की तरह कराहने लगी और उसने बोरा अपने ऊपर खींच लिया। पर मीशात्का आगन्तुक को देखकर झुका और खुश होते हुए बोला—"दादी···इसी आदमी ने हमारा मुर्गा मारा था··· तुम्हें ख़याल है?"

फ़ौजी ने अपनी ख़ाकी टोपी उतारी, जीभ चटकारी और मुस्कराया—"बदमाश मुझे पहचानता है! यानी उस मुर्गे तक की याद है इसे? ख़ैर, यह बतलाओ कि तुम हम लोगों के लिए थोड़ी-सी डबल रोटी तैयार कर दोगी? आटा हमारे पास है।"

"हाँ···हाँ···तैयार हो जाएगी···" इलीनीचिना ने लाल फ़ौजी की निगाह बचाई और हकलाते हुए कहा। साथ ही बेंच पर फैला दूध पोंछने लगी।

फौजी ने दरवाजे के पास बैठते हुए जेब से तम्बाकू की थैली निकाली और सिगरेट रोल करते हुए बातचीत करने की कोशिश की—"रात तक रोटी तैयार हो जाएगी?"

"हाँ, अगर जल्दी में हो तो तैयार हो जाएगी।"

"दादी, लड़ाई के जमाने में तो हड़बड़ी रहती ही है। लेकिन तुम उस मुर्गे के लिए परेशान न हो।"

"मैं परेशान नहीं हूँ।" इलीनीचिना ने घबराकर जवाब दिया—"लड़का बेवकूफ है और जिन बातों को भूल जाना ही बेहतर है, उन्हें याद रखता है।"

"ठीक है···मगर तुम थोड़े कंजूस हो, बेटे?" बातूनी मेहमान प्यार से मुस्कराया और मीशात्का की तरफ मुड़ा—"तुम मेरी तरफ भेड़िये की तरह घूर क्यों रहे हो? आओ, इधर आओ, हम लोग तुम्हारे मुर्गे के बारे में जी भर बातें करेंगे।"

"जाओ, मेहमान के पास जाओ, गधे कहीं के।" इलीनीचिना ने पोते को अपने घुटनों से दूर ढकेलते हुए फुसफुसाकर कहा।

लेकिन मीशात्का ने अपनी दादी की स्कर्ट छोड़ दी और वहीं से खिसकने के लिए दरवाजे की ओर बढ़ा। लाल फ़ौजी ने अपना लम्बा हाथ बढ़ाकर उसे अपनी ओर खींचा और पूछा—"मुझसे नाराज हो तुम?"

"नहीं।" मीशात्का ने धीरे से जवाब दिया।

"ख़ैर, तो यह भी अच्छा ही है, ख़ुशी एक मुर्ग पर निर्भर नहीं करती···तुम्हारे पापा कहाँ हैं?···दोन के पार हैं?"

"हाँ।"

"यानी, हम लोगों से लड़ रहे हैं?"

लाल सैनिक के स्नेह-भरे शब्दों से मीशात्का का दिल बढ़ा और वह तुरन्त ही बोला—"सभी कज्जाकों की कमान मेरे पापा के हाथों में है।"

"झूठ बोल रहा है रे।"

"तो दादी से पूछ देखो।"

पर अपने पोते के बातूनीपन से तंग आकर बुढ़िया ने हाथ पीट लिये और उसके मुँह से एक कराह-सी निकल गई।

"सभी कज्जाकों की कमान उसके हाथों में है?" परेशान लाल फ़ौजी ने पूछा।

"हो सकता है कि सभी कज्जाकों की न भी हो।" अपनी दादी की परेशानी से भरी निगाह देखकर लड़के ने घबराते हुए कहा।

लाल फौजी एक क्षण तक चुप रहा और फिर नताल्या पर नज़र डालते हुए बोला—"यानी, उसकी जवान बीवी है यह···बीमार है?"

"इसे टाइफ़स हो गया है।" इलीनीचिना ने हिचकते हुए कहा।

इसी समय दो लाल सैनिक एक बोरा आटा लेकर आये और उन्होंने बोरा बावर्चीख़ाने की ड्योढ़ी पर रख दिया। उनमें से एक बोला—"स्टोव जलाओ अब···हम शाम के पहले-पहले ही रोटियों के लिए आएँगे। मगर देखो, क़ायदे की रोटियाँ तैयार करना, वरना अच्छा न होगा।"

"जितनी अच्छी-से-अच्छी तैयार कर सकूँगी, कर दूँगी।" इलीनीचिना ने कहा। उसे इस बात से अकूत ख़ुशी हुई कि नवागन्तुकों ने ख़तरनाक

बातचीत का तार बीच में ही तोड़ दिया और मीशात्का इस बीच कमरे से बाहर भाग गया।

नताल्या की ओर देखकर गर्दन हिलाते हुए एक लाल फ़ौजी ने पूछा—"टाइफ़स है?"

"हाँ।"

फिर दोनों ने आपस में धीरे-धीरे कुछ बातें कीं और वे बावर्चीख़ाने से बाहर निकले। मगर, आख़िरी लाल फ़ौजी नुक्कड़ पर मुड़ भी न पाया कि दोन के पार से राइफ़लें गोलियाँ बरसाने लगीं।

लाल सैनिक दोहरे हुए, दौड़कर घेरे की आधी बरबाद पत्थर की दीवार के नीचे जा लेटे और अपनी राइफ़लों के खटके खड़काते हुए आग का जवाब आग से देने लगे।

इलीनीचिना के हाथों के तोते उड़ गए और वह मीशात्का की खोज में अहाते की तरफ दौड़ी। दीवार के पीछे से लाल सैनिकों ने चिल्लाकर कहा, "ऐ दादी, सुनती हो, घर के अन्दर चली जाओ, नहीं तो मर जाओगी।"

"वह लड़का···मीशात्का अहाते में है। मेरा दुलारा···।" बुढ़िया ने उसी तरह जवाब दिया और उसकी आवाज में आँसू टूटने लगे।

बुढ़िया दौड़ी-दौड़ी अहाते के बीचों-बीच पहुँची कि दोन-पार की राइफ़लों की गोलियाँ एकदम रुक गईं। साफ़ है कि कज्जाकों ने उसे देखा और पहचान लिया। दूसरी ओर मीशात्का उसके पास दौड़ आया। फिर वह उसे घसीटती हुई बावर्चीख़ाने में घुसी कि राइफ़लों के दहाने फिर आग उगलने लगे, और यह सिलसिला तब तक चालू रहा जब तक कि लाल सैनिक मेलेखोव-परिवार के अहाते से बाहर नहीं निकल गये।

इलीनीचिना ने नताल्या से बहुत ही धीरे-धीरे बातें करते हुए आटा गूँधकर उठने को रख दिया। मगर हुआ कुछ ऐसा कि रोटियों की तैयारी की नौबत ही न आई।

मशीनगनों वाली चौकियों के जो लाल फ़ौजी गाँव में थे वे दोपहर होते-होते हड़बड़ाते हुए अहातों से बाहर निकले और अपनी मशीनगनें घसीटते हुए पहाड़ी के ढाल की ओर बढ़े। पहाड़ी की खाइयों वाली

कम्पनी के पैर उखड़ गए और उसने हेतमान की बड़ी सड़क की तरफ़ तेज़ी से मार्च कर दिया।

दोन के किनारे के इलाक़ों में देखते-देखते पूरा सन्नाटा हो गया। तोपें और मशीनगनें शान्त हो गईं। हर गाँव से सामान, गाड़ियाँ और बैटरियाँ उमड़ीं और हेतमान की बड़ी सड़क तक उनकी बेशुमार क़तारें बँध गईं। वे सड़कों के किनारों और गर्मी के घास-मढ़े रास्तों पर छा गईं। पैदल सेना और घुड़सवार फ़ौजी पंक्तियों में मार्च करते दीखे।

इलीनीचिना खिड़की से झाँककर देखने लगी। फिर जब आख़िरी लाल फ़ौजी भी गिरते-पड़ते, जैसे-तैसे पहाड़ी के खड़िया वाले उभार पर चढ़ गया तो बुढ़िया ने पर्दे से अपना हाथ पोंछा और भाव-विह्वल होकर क्रास बनाया—"नताल्या बेटी, उस आसमान वाले ने ऐसा किया कि सारी मुसीबत टल गई। लाल फ़ौजी पीछे भाग रहे हैं।"

"अरे, माँ, वे तो गाँव से सिर्फ़ अपनी खाइयों में जा रहे हैं···शाम होते-होते फिर लौट आएँगे।"

"अगर ऐसा है तो भाग क्यों रहे हैं ? अरे, वे भाग रहे हैं, क्योंकि हमारे जवानों ने खदेड़ दिया है उन्हें। शैतान कहीं के, पीछे लौट रहे हैं। ईसा के दुश्मन भागे जा रहे हैं···।" इलीनीचिना खुशी से खिल उठी। लेकिन इसके बावजूद भी रोटी का आटा ठीक करने लगी।

नताल्या निकलकर बरसाती में आई, ड्योढ़ी पर खड़ी हुई और आँखों पर हथेली रखकर, धूप से झुलसे उभारों वाली खड़िया की पहाड़ी पर दूर तक नज़र दौड़ाने लगी। दोपहर का सूरज धरती को तपाता रहा। चरागाह-भर में जंगली मूसे सीटियाँ बजाते रहे और उनकी शान्त, दुख से भरी आवाज़, स्काईलार्कों के सुख से नहाए, सम्हाल में न आने वाले, गानों में खोती रही। तोपों के आग बरसाने के बाद धरती पर उतरने वाला सन्नाटा नताल्या के हृदय को इतना प्रिय लगा कि वह बिना हिले-डुले खड़ी रही और लवा-पंछियों के सरल-सहज गाने, कुएँ की लकड़ी की गरारी की चरमराहट और चिरायते की महक से बसी हवा की सरसराहट कान लगाकर सुनती रही।

तीखी और महकदार रही पूर्वी स्तेपी के मैदान से आने वाली,

पंखोंवाली हवा। उसने धूप से तपी धरती की गर्म साँसें और घास की धूप में झुलसती पत्तियों की उन्माद से भरी उसाँसें अपनी साँसों में पिरोईं। लेकिन, इन सबके वावजूद वर्षा दरवाज़े पर दस्तक देती लगी। नदी की ओर से एक ताज़ा नर्मी उमड़ती लगी। अबावीलें अपनी दोहरी नोकों वाली दुमों से धरती को लगभग छू-छूकर उड़ने लगीं, और गहरे-नीले आसमान में दूर कहीं एक वाज आनेवाले तूफ़ान से डरकर तेज़ी से उड़ता दीखा।

नताल्या अहाते के बीच से गुज़री। पत्थर की दीवार के पास की कुचली हुई घास पर कारतूस के केसों का सुनहरा अम्बार लगा रहा। घर की खिड़कियाँ और चूने से पुती दीवारें मशीनगनों की गोलियों के सुराखों के मुँह फैलाकर जम्हाइयाँ लेती रहीं। नताल्या को देखकर एक मुर्ग़ा कीकता हुआ खत्ती की छत पर उड़ गया। एक अकेला वही तो वाक़ी बचा था।

लेकिन सन्नाटा वहुत देर तक न रहा। हवा गाँव के घरों की खुली खिड़कियों को खड़खड़ाने और वीरान घरों के दरवाज़ों को भड़भड़ाने लगी, ओलों से भरे एक दूधिया वादल ने सूरज को ढँक लिया और हवा के कंधों पर सवार होकर पश्चिम की ओर वढ़ने लगा।

नताल्या अपने वालों को हवा के झोंकों से वचाते हुए गर्मी के वावर्चीखाने तक गई और फिर मुड़कर पहाड़ी की तरफ़ देखने लगी। वकाइनी धुएँ में लिपटे क्षितिज में फ़ौजी, घोड़ों या दो पहियों वाली फ़ौजी गाड़ियों पर सवार उन्हें दौड़ाते नज़र आये।

'तो यह वात ठीक है कि लाल फ़ौजी पीछे भाग रहे हैं।' उसने मन-ही-मन कहा और सन्तोष की साँस ली।

फिर वह घर में घुस भी न पाई कि पहाड़ी के पार कहीं दूर तोपें गरजने लगीं और, जैसे कि उनके जवाव में, व्येशेन्स्काया के दो गिरजों के घण्टों की घनघन नदी की लहरों पर आरपार लहराने लगी।

दूरवर्ती किनारे पर भीड़-की-भीड़ लोग वजरे साधते या घसीटते हुए जंगलों से वाहर निकले और नदी की ओर वढ़े। उन्होंने वजरे पानी में उतारे और फिर अगले हिस्सों पर खड़े होकर पूरी ताक़त से डाँड़

चलाने लगे। इस तरह कोई तीन दर्जन बजरे एक-दूसरे का पीछा करते हुए गाँव की तरफ़ बढ़े।

"नताल्या, रानी···मेरी दुलारी···हमारे कज्जाक अपने गाँव-घर वापस आ रहे हैं। इलीनीचिना ने बावर्चीख़ाने से दौड़कर बाहर आते हुए चिल्लाकर कहा और उसकी आँखों से आँसू बहने लगे।

नताल्या ने लपककर मीशात्का को हाथों में उठाया। उसकी आँखें खुशी से चमकने लगी लेकिन वह हाँफने लगी। और इनके साथ ही उसकी आवाज़ टूटने लगी—"मुन्ने, देख तो तेरी आँखें तेज हैं···देख तो, हो सकता है कि तेरे पापा इन कज्जाकों में हों। दिखलाई पड़ते हैं? पहले बजरे में वही हैं क्या? उफ़, लेकिन तू तो कहीं और देख रहा है···"

सास-बहू भागी-भागी किनारे गईं। पेन्तेली एक बजरे से उतरा तो हड्डी-हड्डी लगा। बूढ़े ने सबसे पहले बैलों, फ़ार्म की चीजों और अनाज की सलामती के बारे में पूछताछ की, और उसकी पलकों में एक आँसू उलझ गया। फिर, उसने बच्चों को सीने से लगाया। लेकिन जल्दी-जल्दी भचकते हुए वह अपने अहाते में पहुँचा तो उसका चेहरा पीला पड़ गया। वह घुटनों के बल बैठा, हाथ फैला-फैलाकर क्रॉस बनाने लगा और पूर्व की ओर मुँह कर नमन करने लगा। फिर धूप से तपती धरती से उसने बहुत देर तक सफ़ेद बालों से भरा सिर ऊपर नहीं उठाया।

: ५ :

१० जून को, जनरल सेक्रेतेव की कमान में तीन हजार फ़ौजियों, छः घोड़ागाड़ियों वाली तोपों और अट्ठारह मशीनगनों के, दोन सेना के घुड़सवार-दलों ने पूरे जोर-शोर से हमला बोला और उस्त-बेलोकालित्वेंस्काया के ज़िला-केन्द्र के पास का मोर्चा तोड़ दिया। इसके बाद सेना रेलवे लाइन के किनारे-किनारे कज़ान्स्काया के ज़िला-केन्द्र की ओर बढ़ी।

तीसरे दिन सवेरे-तड़के नवीं दोन-रेजीमेंट के अफ़सरों की जासूसी गश्ती ने दोन के पास की बाग़ी फ़ौजी चौकी से सम्पर्क स्थापित करने का प्रयत्न किया। इस सिलसिले में ये लोग पास पहुँचे तो इन

घुड़सवार फ़ौजियों को देखते ही चौकी के कज्जाक जान छोड़कर नालों की तरफ़ भागे। लेकिन गश्ती टुकड़ी के कज्जाक कैप्टन ने विद्रोहियों को लिबास से पहचाना, अपनी तलवार से बँधा रूमाल हिलाया और बजती हुई आवाज़ में चिल्लाकर कहा—"हम तुम्हारे ही साथी हैं···भागो मत कज्जाको!"

फिर अपने बचाव की चिन्ता किये बिना, यह टुकड़ी नालों के किनारों पर पहुँची, तो विद्रोही चौकी का बूढ़ा सफ़ेद बालों वाला सार्जेन्ट कमाण्डर, ओस से भीगे बरानकोट के बटन लगाता, सबसे पहले सामने आया। आठ-के-आठों अफ़सर घोड़ों से उतरे। इनका कैप्टन, फ़ौजी कलगी वाली अपनी टोपी उतारता हुआ सार्जेन्ट की ओर बढ़ा, मुस्कराया और बोला—"सलाम कज्जाको, आओ, अपने पुराने कज्जाक रिवाज के मुताबिक हम एक-दूसरे को चूमें।" उसने सार्जेन्ट के दोनों गाल चूमे, रूमाल से होंठ और मूँछें पोंछी और अपने साथियों की निगाहें अपने ऊपर गड़ी देखकर, अर्थभरी मुस्कान के साथ प्रश्न किया—"तो, तुम्हें होश आ गया? तुम्हारे अपने साथी आखिरकार बोलशेविकों से बेहतर साबित हुए कि नहीं?"

"आप ठीक कहते हैं, सरकार! हमने अपना गुनाह धो दिया है। हम पिछले तीन महीने से लड़ते और आपसे मिलने को बेताब रहे हैं।"

"अच्छा ही हुआ कि तुमने अक्ल से काम ले लिया, हालांकि देर से लिया। खैर, ये सारी गुज़री बातें हैं। हम बीते कल को बीता कल माने लेते हैं।······हाँ, तो किस ज़िले के हो तुम?"

"कज़ान्स्काया का हूँ सरकार!"

"तुम्हारी टुकड़ी नदी के उस पार है?"

"जी हाँ।"

"दोन से लाल फ़ौजी किस तरफ गये?"

"शायद दोनेत्स की बस्ती की तरफ।"

"तुम्हारी घुड़सवार टुकड़ी ने अभी नदी पार नहीं की?"

"बिल्कुल नहीं।"

"क्यों नहीं ?"

"मुझे पता नहीं, सरकार ! सबसे पहले हम लोगों को इस पार भेजा गया है ।"

"लाल फ़ौजों की कुछ भी तोपें हैं यहां ?"

"दो बैटरियां हैं ।"

"वे पीछे किस वक्त हटीं ?"

"रात के वक़्त ।"

"उनका पीछा करना चाहिये था···उफ़···तुमने मौक़ा खो दिया !" कैप्टन ने भर्त्सना के स्वर में कहा, और अपने घोड़े के पास जाकर, थैले से पत्र लिखने का पैड और नक़्शा निकाला ।

सार्जेन्ट अटेंशन की स्थिति में खड़ा रहा और उसके दो क़दम पीछे खड़े कज्ज़ाक, प्रसन्नता और हलकी-हलकी-सी उत्सुकता की मिली-जुली भावनाओं के साथ अफ़सरों, घोड़ों की काठियों और शानदार नस्ल के उन घोड़ों को ग़ौर से देखते रहे । साफ़-सुथरी फ़िटिंग और कंधे के झब्बों वाली अंग्रेजी ट्यूनिकों और चौड़ी बिरजिसों से लैस अफ़सर कभी इस पैर पर बल देकर खड़े होते तो कभी उस पैर पर ज़ोर देकर । बीच-बीच में वे अपने घोड़ों के चारों ओर चंचल दृष्टि से देखते और कभी कनखी से कज्ज़ाकों पर निगाह डालते ।

उनमें से एक के भी कंधों पर वैसा झब्बा न था, जैसा १९१८ के पतझर में हर अधिकारी के कंधों पर नजर आता था । उनके बूट, घोड़ों की काठियां, कारतूस-पेटियां, दूरबीनें और काठियों के सहारे लटकी राइफलें वग़ैरा तमाम चीजें नई थीं । उनमें से सिर्फ़ एक देखने-सुनने में सबसे बड़ी उम्र के अफ़सर के बदन पर शानदार नीले कपड़े का सरकैशियन-कोट, सिर पर बोखारान-कराकुल की गोल, क़ुबान टोपी और पैरों में बिना एड़ी के पर्वतारोहियों वाले जूते थे ।

सबसे पहले वही अफ़सर हलके-हलके क़दमों से कज्ज़ाकों की तरफ़ बढ़ा । उसने अपने केस से बेलजियम के सम्राट् अलबेर्त की तस्वीर वाला सिगरेटों का पैकेट निकाला और अपनी तरफ से बोला—"सिगरेट पियो, भाइयो !"

कज्जाकों ने बहुत सकुचाकर हाथ बढ़ाये। दूसरे अफ़सरों ने भी सिगरेटें लीं।

"कहो, बोलशेविकों के निज़ाम में ज़िन्दगी कैसी लगी?" बड़े सिर और चौड़े कंधोंवाले एक घुड़सवार अफसर ने पूछा।

"सब कुछ मीठा-ही-मीठा नहीं कह सकते।" किसानों का पुराना कोट पहने एक कज्जाक ने कहा। वह सिगरेट के लम्बे-लम्बे कश लेता और अफ़सर की मजबूत पिंडलियों से कसे लम्बे गैटरों पर नजर जमाये रहा।

कज्जाक के टूटे हुए सैंडिलों का हिस्सा-हिस्सा जवाब दे रहा था। सफेद, क़ायदे से रफ़ू किये हुए मोजे पतलून के पायचों में खोंसे हुए थे और तार-तार थे। यही कारण है कि अफ़सर के अंग्रेजी बूटों ने उस पर जादू-सा कर दिया था और वह उन पर से नजर हटा नहीं पा रहा था। बूटों के तल्ले मोटे और मज़बूत थे और पीले बक्सुए चमाचम चमक रहे थे।

इसीलिए कज्जाक का अपने ऊपर वश न रहा और उसने सीधे-सादे ढंग से तारीफ करते हुए कहा, "लेकिन आपके बूट बहुत अच्छे हैं।"

पर फ़ौजी अफ़सर मित्रता और घनिष्ठता से बचा और मजाक और चुनौती से भरी आवाज़ में बोला—"तुम तो अपनी चीजें मास्को में गँठे सैंडिलों से बदलने जा रहे थे। तो अब तुम्हें दूसरों से डाह क्यों करनी चाहिये?"

"हमने ग़लती की······हम ग़लत रास्ते पर बह गए······" कज्जाक ने कहा और समर्थन की आशा से दूसरे कज्जाकों की ओर घूमकर देखा।

कज्जाक ने अपना भाषण चालू रखा—"तुमने यह साबित किया कि तुम्हें दिमाग़ बैलों का मिला है। बैल बिल्कुल यही करता है। पहले मुड़ जाता है और पीछे ठिठककर सोचता है—'ग़लती की!'—लेकिन पतझड़ में जब मोर्चा दुश्मनों के लिए खाली छोड़ दिया था, तब आखिर तुमने सोचा क्या था? तुम कमीसार बनने के सपने देख रहे थे! तुम्हारा जवाब नहीं! क्या शानदार बचाने वाले हो तुम अपने मुल्क के!"

"छोड़ो भी···वहुत हुआ !" देखने-सुनने में जवान, एक कम्पनी कमांडर ने बौखलाते अफ़सर के कानों में धीरे से कहा। अफ़सर ने सिगरेट का सिरा जमीन पर फेंककर उसे पैर से कुचला और घोड़ों की तरफ बढ़ा।

कैप्टन ने उसे एक पत्र दिया और फुसफुसाकर कुछ कहा। भारी-भरकम अफसर उछलकर अपने घोड़े पर सवार हुआ और पश्चिम की तरफ़ उड़ चला।

कज्ज़ाक अजब ढंग से गुमसुम बने रहे। कैप्टन उनके पास आया और खुशी से खनकती आवाज़ में पूछने लगा—"वारवारिस्की गांव यहां से कितनी दूर है ?'

"यहां से पैंतीस वर्स्ट दूर है।" कई कज्ज़ाक एक साथ बोल उठे।

"ठीक···तो, अब, कज्ज़ाको, तुम लोग जाओ और अपने कमांडर को खबर दे दो कि घुड़सवार फौजें, एक लमहा भी खोए बिना, नदी पारकर इसी तरफ आ रही हैं। हमारा एक अफ़सर तुम्हारे साथ जायेगा और घुड़सवारों को रास्ता दिखलायेगा। पैदल फौज कज़ान्स्काया की तरफ मार्च कर सकती है। समझे ? ······बस, तो हमारी अपनी ज़बान में ···राइट एबाउट टर्न···क्विक मार्च !"

कज्ज़ाकों की भीड़ पहाड़ी से नीचे उतरी और कोई दो सौ क़दम तक लोग इस तरह मुंह सिये रहे, जैसे कि इसके लिए कौल हार चुके हों। लेकिन, इसके बाद, जिस किसान के कोटवाले कज्ज़ाक को गुस्सावर अफ़सर ने लेक्चर पिलाया था, उसने अपना सिर हिलाया और आह भरते हुए, दर्द से बोला—"यानी, हम फिर एक हो गए, भाइयो···'दूसरे कज्ज़ाक ने तड़ाक से जवाब दिया—"हॉर्स-रैडिश जड़, मामूली मूली से कोई ज़्यादा मीठी तो होती नहीं।"

: ६ :

लाल सेनाओं के पीछे हटने की खबर व्येशेन्स्काया पहुंची नहीं कि मेलेखोव के साथ दो घुड़सवार रेजीमेंटों ने अपने घोड़े दोन के पार

फेरा दिए, जोरदार गन्दी दुलत्तियाँ भेजीं और मुड़ दक्षिण का रास्ता लिया ।

दोन के किनारे के पार लड़ाई चलती रही और तोपों की गरज भी सुनाई पड़ती रही जैसे कि जमीन के नीचे से आ रही हो ।

"कैडेट अपने गोले बेकार कभी नहीं करते । वे बाँध गिरा रहे हैं ।" एक कमांडर ने, ग्रिगोरी की तरफ अपना घोड़ा बढ़ाकर तारीफ़-सी करते हुए कहा ।

ग्रिगोरी शांत रहा और सावधानी से चारों ओर नजर दौड़ाते हुए, पाँतों के आगे-आगे बढ़ता गया । दोन से वाजकी गाँव तक का तीन घन्टे का फ़ासला, विद्रोहियों द्वारा छोड़ दी गई, हजारों गाड़ियों से पटा हुआ था । जंगल में जहाँ-तहाँ टूटे बक्से, कुर्सियाँ, कपड़े, काठियाँ, बरतन, सिलाई की मशीनें, अनाज के बोरे और तमाम दूसरी चीजें बिखरी पड़ी थीं । दोन की ओर पीछे भागते समय लोग ये तमाम घरेलू चीजें अपने साथ यहाँ तक लाद लाए थे ।······सड़क पर कई जगह सुनहरे गेहूँ का घुटनों-घुटनों गहरा अम्बार था । जहाँ-तहाँ बैलों और घोड़ों की फूली हुई लाशें सड़ रही थीं और बुरी तरह सड़ायंध फैला रही थीं ।······

"इस तरह फ़िक्र की है लोगों ने अपनी चीजों की !" ग्रिगोरी ने दर्द से कहा । उसे सारे दृश्य से धक्का-सा लगा । उसने सिर से टोपी उतारी, साँस रोकी और सावधानी से अनाज के गंधाते टीले का चक्कर लगाया । टीले पर एक बूढ़े की लाश नजर आई । बूढ़े के सिर पर कज्जाक टोपी थी । उसका कोट खून से तर था और फैला हुआ था ।

"बहुत देर तक अपने माल की रखवाली करता रहा । बूढ़ा ! उन शैतानों ने ही इसे यहाँ इस हालत में छोड़ दिया होगा !" एक कज्जाक ने हमदर्दी से कहा ।

"अपने गेहूँ को छोड़कर जाना नहीं चाहता होगा······"

"अरे बाबा, आगे बढ़ो न ! बुड्ढा जाने किस तरह बू करता है ।··· ऐ, आगे बढ़ाओ घोड़े !" पीछे की क़तार से क्रोध-भरी आवाजें आईं ।

स्क्वैड्रन के फ़ौजी अपने घोड़े दुलकी दौड़ा चले । बातचीत खत्म हो

गई। जंगल में गूंजती रहीं सिर्फ घोड़ों की टापों की आवाज़ें और कज्ज़ाक फ़ौजी सामान की धीमी खनखनाहटें।···

लिस्तनित्स्की की जागीर के पास ही लड़ाई चलती गई। लाल सैनिकों की पंक्तियाँ, एक-दूसरे से सटी, एक सूखी घाटी के किनारे-किनारे यागोदनोये की एक बाजू की तरफ भागी चली जाती रहीं। तोपों के गोले लाल सैनिक के सिरों पर आ-आकर फूटते रहे, मशीनगनें उनकी पीठों पर गोलियाँ बरसाती रहीं, और रेजीमेंट के लोग उन्हें बीच में ही रोक लेने के लिए पहाड़ी पर उमड़ते रहे।···

ग्रिगोरी अपनी रेजीमेंटों के साथ तब पहुँचा जब लड़ाई ख़त्म हो गई।

लाल सेना की चौदहवीं डिविज़न की तार-तार फ़ौजें और मालगाड़ियों की दो कम्पनियाँ काल्मीक-रेजीमेंट द्वारा पूरी तरह नेस्तनाबूद मिलीं।

घाटी की ऊपर की चोटी पर ग्रिगोरी ने कमान येरमाकोव को सौंपते हुए कहा—"यहाँ इन लोगों ने हमारे बिना ही अपना काम चला लिया। तुम जाओ और उन लोगों से अपना तार जोड़ो। मैं थोड़ी देर के लिए उस जागीर में जाना चाहता हूँ।"

"किस लिए?" येरमाकोव ने अचरज से पूछा।

"वजह एक बार में ही बतला देना मुश्किल है। बात यह है कि जब मैं छोटा था तो मैं वहाँ काम करता रहा था और इस वक्त वहाँ की पुरानी जगहें मुझे अपनी तरफ़ खींच रही हैं·········।"

ग्रिगोरी, प्रोख़ोर को आवाज़ देकर यागोदनोये की तरफ़ मुड़ा। फिर, उन दोनों ने आधे वर्स्ट की दूरी तय की कि ग्रिगोरी मुड़ा। उसे स्क्वैड्रनों के आगे एक सफ़ेद चद्दर-सी हवा में फड़फड़ाती नज़र आई। यह चादर कोई कज्ज़ाक कुछ सोच-समझकर अपने साथ ले आया था।···

'लगता है कि वे लोग हथियार डाल रहे हैं।' ग्रिगोरी ने उत्सुकता से भरकर सोचा। प्रतीत हुआ कि फ़ौजियों की क़तार धीरे-धीरे जैसे कि बेमन से, घाटी में उतरी और सेक्रेतेव के घुड़सवार-

सैनिकों की ओर बढ़ीं। ये फ़ौजी उन लाल सैनिकों से मिलने के लिए चरागाह के पार ठीक सीध में घोड़ों को दुलकी दौड़ाते दीखे।

······ग्रिगोरी गिरे हुए फाटक के बीच से अपना घोड़ा अहाते में लाया तो उदासी और लापरवाही से भरी हवा ने उसका स्वागत किया। अहाते में कलहंसों के पैरों की याद-सी मिली। यागोदनोये पहचान में न आया। हर कोना अकूत लापरवाही और बरबादी की कहानी कहने लगा। कभी की शानदार हवेली इस समय काली और अपनी नींव में ही धँसती-सी लगी।···लम्बी बदरंग छत पर जहाँ-तहाँ जंग के पीले धब्बे थे। नाली के टूटे पाइप, ओरियों के सहारे लटक रहे थे। झिलमिलियाँ टेढ़ी-मेढ़ी थीं, झूल रही थीं और क़ब्ज़ों से आधी अलग थीं। हवा चूर-चूर खिड़कियों के बीच से सर्राटे भर रही थी, और गन्दे कमरों से उमड़ती खट्टी-खट्टी बास कह रही थी कि हमें वीरान हुए एक ज़माना हुआ।

बरसाती-सहित, घर का पूर्वी कोना, तीन इंची तोप के एक गोले से ढह गया था। मेपल पेड़ का सिरा गोले से कटकर, बरामदे की टूटी हुई वेनेशियन खिड़की में धँस गया था। खुद पेड़ गिर गया था और उसका तना नींव से उखड़कर गिरी ईंटों के अम्बार में दबा पड़ा था। सूखी शाखों के किनारे-किनारे जंगली हॉप-लता रेंग और दोहर रही थी। मज़ाक की बात है कि लता, खिड़कियों के बचे-खुचे साबित शीशों के ऊपर छितरकर बारजे तक पहुँच गई थी।

वक़्त और मौसम ने अपना काम अपने ढंग से किया था। अहाते की इमारतें चौपट हो गई थीं। लगता था कि इन्सान के हाथों ने सालों-साल उन्हें छुआ नहीं है। अस्तबल की पत्थर की दीवार गिर गई थी और बहार की बरसात उसे बहा ले गई थी। गाड़ीखाने की छत तूफ़ान उड़ा ले गया था। सफ़ेद पड़ गई धरनों और धन्नियों पर मुट्ठी भर फूस यहाँ बच रहा तो मुट्ठी-भर फूस वहाँ। वह फूस भी सड़ गया था।

तीन (रूसी शिकारी कुत्ते) बोरज़ोइस नौकरों के क्वार्टरों की सीढ़ियों पर पड़े हुए थे और पूरी तरह जंगली हो गए थे। सो, इन्सानों

को देखते ही वे उछलकर खड़े हो गए और भयानक ढंग से भौंकते हुए बरसाती में गायब हो गए। ग्रिगोरी नौकरों के क्वार्टरों की चौपट खुली पड़ी खिड़की के पास अपना घोड़ा लाया, काठी पर जोर देते हुए झुका और जोर से चिल्लाकर बोला—"कोई जिन्दा भी बचा है यहाँ ?"

बहुत देर तक सन्नाटा रहा। आखिरकार एक औरत फँसी-बँधी आवाज में बोली—"रुको…ईसा के नाम पर रुको। अभी आई !"

लुकेर्या नंगे पैरों गिरती-पड़ती आई और धूप बचाने के लिए आँखों पर हथेलियाँ रखकर ग्रिगोरी को एकटक देखने लगी।

ग्रिगोरी ने घोड़े से उतरते हुए पूछा "लुकेर्या चाची, तुमने मुझे पहचाना ?"

इस पर लुकेर्या के चेचक के दागों से भरे चेहरे पर एक कँप-कँपी-सी दौड़ गई और उदासी से भरी तटस्थता की जगह भावों की भयानक बाढ़ ने ले ली। वह फूट पड़ी और काफी देर तक उसके मुँह से बोल न फूटा। ग्रिगोरी ने घोड़ा बाँधा और उसके चुप होने का इन्तजार करने लगा।

"कैसे-कैसे दिन देखे हैं मैंने ! ईश्वर न करे कि इतनी मुसीबत अब दुबारा कभी सहनी पड़े मुझे।" किरमिच के गंदे ऐप्रन से अपने गाल रगड़ते हुए लुकेर्या दर्द-भरी आवाज में बोली—"मैं तो समझी कि वे लोग फिर आ गए !…उफ़…ग्रीशा…क्या-क्या नहीं हुआ है यहाँ ! तुम्हे बताऊँ तो तुम्हें यक़ीन न आए !…एक अकेली मैं ही बची हूँ।…"

"क्यों, बाबा शाश्का कहाँ है ? मालिकों के साथ क्या वे भी भाग गये ?"

"अगर भाग जाते तो आज जीते-जागते न होते…"

"तो, क्या मर गए वे ?"

"नहीं, लोगों ने उन्हें मार डाला। पिछले तीन दिनों से तहखाने में पड़े हैं…उन्हें दफ़नाया जाना चाहिए था, मगर मैं बीमार पड़ गई… मुझसे तो तुम्हारी आवाज पर भी मुश्किल से ही उठा गया…और अब ग्रीश्का की लाश के पास जाने में मेरा दिल काँपता है…"

"लेकिन, मार क्यों डाला लोगों ने ?" ग्रिगोरी ने जमीन पर

नज़र गड़ाए-ही-गड़ाए पूछा ।

"भारी मुसीबत एक घोड़ी को लेकर पड़ी हुई···घर के मालिक तो सिर पर पाँव रखकर भागे । सिर्फ नकद रकम साथ ले गए । बाकी सारा कुछ मेरे पास छोड़ गए ।" लुकेर्या आवाज़ धीमी कर फुसफुसाने लगी—'मैंने सभी कुछ सम्हालकर रखा । छोटी-से-छोटी चीज़ सहेजकर रखी । अब तक जमीन के नीचे गड़ी हुई है ।···और घोड़ों में से सिर्फ तीन ओरलोव-स्टैलियन ले गये । बाकी बाबा-सास्का के पास छोड़ गये । फिर जब झगड़ा शुरू हुआ तो घोड़े कज्जाक भी ले गये और लाल-फ़ौजी भी । तुम्हें उस 'अंधड़' नाम के काले स्टैलियन का ख्याल होगा···उसे लाल फ़ौजी बहार के दिनों में ले गए । ले तो गये, मगर उस पर काठी कसने में उन्हें बड़ी परेशानी का सामना करना पड़ा । तुम तो जानते हो कि सवारी के लिए उसे निकाला तो गया नहीं था । सो, वह उनके क़ाबू में कभी नहीं आया । एक हफ़्ते बाद कारगिन्स्काया के कुछ कज्जाक आये तो उन्होंने एक दूसरा किस्सा सुनाया । हुआ यह कि पहाड़ी पर इन कज्जाकों की मुठभेड़ एकाएक लाल फ़ौजियों से हो गई, और वे उन पर गोलियाँ बरसाने लगे । पर, इनके पास एक बेवकूफ घोड़ी थी । वह घोड़ी ऐन इसी वक्त ज़ो हिनहिनाई तो 'अंधड़' स्टैलियन जंगल की आग की तरह उसकी तरफ़ ताबड़तोड़ इस तरह भागा कि सवार के सम्हाले न सम्हला । उसने सारी हालत समझी और पूरी रफ़्तार से दौड़ते घोड़े की पीठ से कूदने की कोशिश की । पर इस कोशिश में पैर रकाब में फँस गया और 'अंधड़' ने उस फ़ौजी को ले जाकर ऐन कज्जाकों के हाथों सौंप दिया ।"

'शाबाश !" प्रोखोर ने जोश में आते हुए कहा ।

"अब कारगिन्स्काया का एक घुड़सवार अफ़सर उस पर सवारी करता है ।" लुकेर्या ने अपनी दास्तान जारी रखी—"उस अफ़सर ने वायदा किया है कि मालिक के लौटते ही वह आकर 'अंधड़' को अस्तबल में बाँध जाएगा ।" इस तरह सभी घोड़े चले गये । बच रही दुलकी-चाल वाली घोड़ी—'तीर' और, बस ! जहाँ तक 'तीर' की

बात है, वह थी गाभिन, इसलिए किसी ने उसे छुआ नहीं। सो, उसके बछेड़ा अभी कुछ दिन पहले हुआ। और, तुम यकीन नही करोगे कि बछेड़ा हुआ तो साश्का ने उसकी जी-जान से फ़िक्र की। वह उसे गोद में लिये फिरा। उसने उसे दूध पिलाया और पैर की मजबूती के लिए किसी जड़ी का काढ़ा तक दिया। मगर, फिर हमारे सिर पर मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा। अभी तीन दिन पहले साश्का बगिया में घास काट रहा था कि तीसरे पहर के बाद तीन घुड़सवार आये और चीखते हुए बोले—'इधर आ बे·· तू यह···तू वह !' इस पर साश्का ने हंसिया नीचे रखा और उनके पास जाकर उनसे दुआसलाम की। लेकिन, उन लोगों ने आंख उठाकर उसे नहीं देखा। सिर्फ़ दूध पिया और पूछा—'घोड़े है तुम्हारे यहां ?' साश्का बोला—'सिर्फ एक जानवर है। वह भी घोड़ी है। अभी-अभी बच्चा हुआ है।' आपके फौजी काम की नहीं है। इस पर उनमें से सबसे ख़ुंखार आदमी चिल्ला उठा—'इस बात से तेरा कोई मतलब नहीं। फ़ौरन घोड़ी ला सामने···बूढ़ा···शैतान कहीं का ! मेरी घोड़ी की पीठ छिल गई है। मुझे उसको बदलना है !'·· ऐसी-वैसी बात होती तो साश्का मान जाता और घोड़ी के मामले में अड़ता नही, मगर तुम तो जानते हो कि बूढ़ा अपने-आपमें कैसा अजीब आदमी था···कभी-कभी तो मालिक तक उसकी ज़बान पर लगाम लगाने में हार जाते थे···तुम्हें खयाल होगा !"

"तो घोड़ी साश्का ने दी नहीं ?" प्रोखोर ने बीच में ही पूछ लिया।

"क्यों, वह न देता तो और करता क्या ? मगर देने के पहले बोला, 'तुम्हारे पहले भी जाने कितने घुड़सवार हमारे यहां घोड़े लेने को आये, लेकिन सभी ने इस एक घोड़ी पर रहम किया। और, अगर सबने रहम किया तो एक अकेले तुम्हीं क्यों नहीं करोगे ?'···यह सुनते ही वे लोग आपे से बाहर होकर चीखने लगे—'थूक चाटने वाला···हरामखोर···तू वह घोड़ी अपने मालिक के लिए रख छोड़ना चाहता है !' और उन्होंने उसे घसीटकर एक तरफ कर दिया···

फिर उनमें से एक घोड़ी बाहर लाकर उस पर काठी कसने लगा तो बछेड़ा माँ के थन में आ लगा। साश्का बोला—'रहम करो, इस घोड़ी को मत ले जाओ। अगर इसकी माँ चली जायेगी तो यह बछेड़ा बेचारा कहाँ जायेगा ?'···'मैं बतलाता हूँ कि बेचारा बछेड़ा कहाँ जाएगा ?'···एक दूसरे घुड़सवार ने कहा, बछेड़े को माँ से दूर खदेड़ा, कंधे से राइफल उतारी और गोली मार दी। मेरे आँसू बह चले···मैं दौड़कर उन लोगों के पास गई। मैंने उन्हें बहुत मनाया और साश्का को मुसीबत से उबारने की कोशिश की। लेकिन उसकी तो बछेड़े पर निगाह पड़ते ही दाढ़ी हिलने लगी। बिल्कुल सफेद पड़ गया और बोला—'अगर ऐसा है तो, कुतिया के बच्चे, तू मुझे भी गोली मार दे।' साश्का दौड़कर उनसे जा लिपटा और उसने उनका घोड़ी कसना हराम कर दिया। जवाब में घुड़सवारों को गुस्सा आया तो उन्होंने उसे, ठौर-की-ठौर गोली से उड़ा दिया।···और, अब मेरी समझ में नहीं आता कि करूँ तो उसका करूँ क्या ? उसके लिए एक ताबूत चाहिए, और ताबूत मुहय्या करना औरत का काम तो है नहीं।"

"दो फ़ावड़े और थोड़ी-सी किरमिच ला दो।" ग्रिगोरी बोला।

प्रोखोर ने पूछा—"तुम उसे दफ़न करना चाहते हो क्या ?"

"हाँ।"

"बहुत अच्छी बात है कि यह ज़िम्मेदारी तुम खुद ले रहे हो, ग्रिगोरी-पेन्तेलेयेविच ! मैं फौरन ही जाकर थोड़े-से कज्ज़ाकों को बुला लाऊँ। वे ताबूत बना देंगे और उसके लिए क़ायदे की क़ब्र खोद देंगे।"

साफ़ है कि प्रोखोर ने किसी अनजाने बूढ़े के दफ़नाए जाने की परेशानी मोल लेना ठीक न समझा। लेकिन ग्रिगोरी ने उसकी बातें टाल दी और अपनी जिद पर अड़ा रहा। बोला—"हम क़ब्र खोदकर उसे खुद दफ़नाएँगे। बूढ़ा साश्का अच्छा और नेक आदमी था। तुम बगिया में जाओ और झील के किनारे मेरा इन्तज़ार करो। मैं ज़रा जाकर एक निगाह साश्का को देख लूँ।"

और, जमीन पर छितरी जड़ों वाले जिस देवदार के नीचे सास्का ने कभी अकसीनिया और ग्रिगोरी की नन्ही-मुन्नी बच्ची को दफ़न किया था, वही आज स्वय उसकी चिर-निद्रा का सरजाम होने लगा।

कज्जाकों ने उसके शरीर को, समोर उठाने के सिलसिले में काम आने वाली साफ चद्दर मे लपेटकर कब्र में लिटाया और गढ़े को मिट्टी से पाटा। इस तरह उस नन्ही कली की समाधि की बग़ल में क़ब्र का एक दूसरा ढूह उठ गया। कज्जाकों ने बूटों से पिटाई कर दी तो ऊपर की ताजी, नरम मिट्टी अपने ढंग से चमकने लगी।

ग्रिगोरी को जाने कितनी बीती बातें एक साथ याद आ गईं। वह नन्ही समाधि के पास ही घास पर लेट गया और ऊपर के नीले आसमान के पसारे को देर तक एकटक देखता रहा। हवाएं अनन्त-आकाश में ऊँचाई पर चहलकदमी करती रही और शीतल घन धूप की चमचमाती किरणों पर उतराने लगे। मगर हंसोड़-शराबी सईस को हजम कर जाने वाली धरती पर जिन्दगी उसी ज़ोर-शोर से चालू रही। बगिया के सिरे तक लहलहाती हरियाली की बाढ़ और कदीमी खलिहानों की बाड़ों के चारों ओर लिपटे पटुए के उलझावों में *अभिव्यक्त स्तेपी की नब्ज* ग्रिगोरी के कानों में बजने लगी। सूर्यास्त के रंगों की छूट के बीच अबाबीलें कूकतीं, जगली मूसे सीटियां बजाते, बड़ी मधुमक्खियां भनभनाती, हवा की बांहों में कसी घास सरसराती और स्काईलार्क गाती रहीं। इनके साथ ही दूर घाटी की गहराई से कोई राइफल बराबर क्रोध से उमड़ती रही, जैसे कि इस बात पर मुहर मार रही हो कि कुदरत शानदार है मगर इन्सान उससे कही ज्यादा शानदार है।

: ७ :

जनरल सेक्रेतोव, कज्जाकों की एक व्यक्तिगत टुकड़ी के साथ व्येशेन्स्काया आया तो लोगों ने रोटी और नमक लेकर उसकी राह में पलकें बिछाईं और गिरजों के घंटों ने उसका स्वागत किया। दोनों गिरजों के घंटे सारे दिन यों टन-टन करते रहे, जैसे कि ईस्टर हो। निचली दोन के कज्जाक, मजबूत, लेकिन थकान से चूर घोड़ों पर

सवार सड़कों से गुज़रे। चुनौती देते-से नीले झण्डे उनके कन्धों पर चमके। बाद में जनरल व्यापारी के जिस मकान में ठहरा, उसके पास ही चौक में अर्दलियों की भीड़ लगी रही। वे सूरजमुखी के बीज कुटकुटाते, उधर से निकलती, इतवार की अच्छी-से-अच्छी पोशाकों से सजी-बजी गांव की लड़कियों से छेड़-छेड़कर बातें करते रहे।

दोपहर के समय तीन घुड़सवार कालमीक पन्द्रह बन्दी लाल सैनिकों को लेकर हैडक्वार्टर्स आये। उनके पीछे बाजों से भरी एक, दो घोड़ों वाली गाड़ी आई। लाल फ़ौजियों की वर्दी अजीब और ग़ैरमामूली लगी। उनके भूरे पतलून चौड़ी मोहरी के थे और उनकी ट्यूनिकों की आस्तीनों पर लाल पट्टियां थी।

सो, तीन में से एक कालमीक, फाटक के पास निकम्मे खड़े अर्दलियों के पास आया, घोड़े से उतरा और अपना, चिकनी मिट्टी का पाइप जेब में डालते हुए बोला—"हम लाल फौजियों के बैंड वालों को पकड़कर लाए हैं। समझे ?"

"तो, हम क्या करें ?" एक मोटे चेहरे वाले अर्दली ने, सूरजमुखी के बीजों के छिलके कालमीक के गर्द से भरे बूटों पर थूकते हुए पूछा।

"करो यह कि इन्हे अन्दर ले जाओ। तुम्हारा मोटे चेहरे वाला मुंह खुलता है तो उससे बेवकूफी बरसती है।"

"चल चल···बहुत हुआ···भेड़ की दुम कही का !" अर्दली ने नाराज होकर कहा। लेकिन, इसके बावजूद क़ैदियों के आने की सूचना देने के लिए अन्दर चला गया।

कसी कमर वाली भूरी 'बेशमेत' पहने एक, मोटा फपफसा-सा कैप्टन फाटक से बाहर निकला, पैर फैलाकर खड़ा हुआ और बहुत ही नाटकीय ढंग से सैनिकों पर निगाह डालने लगा। बोला—"तो, तुमने कमीसारों को खूब खुश किया···क्यों तामबोव-बजनियों ?······ये भूरी वर्दियां तुम्हें कहां मिलीं ?······जर्मनों से उड़ा दीं।"

"बिल्कुल नहीं।" ग्रुप के आगे के लाल-फ़ौजी ने, जल्दी-जल्दी

पलकें झपकाते हुए जवाब दिया। "हमारे बैंड को यह वर्दी तो कैसरशाही के जमाने में दी गई थी…हम इसे बराबर पहन रहे हैं, तब से…"

"और, तुम बराबर पहनते ही रहोगे…मैं देखूंगा कि तुम इसे ही पहनते रहो।" कैप्टन ने चौरस छत वाली कुबान टोपी सिर के पिछले हिस्से की तरफ़ ठेली, तो उसकी सफ़ाचट खोपड़ी का गुम्बदी-सा धब्बा चमका। अब वह कालमीक फ़ौजियों पर गरम हुआ—"तुम इन्हें यहाँ क्यों लेकर चले आये? सुअर कहीं के! तुमने रास्ते में ही इनका सफ़ाया क्यों नहीं कर दिया?"

कालमीक ने अलबेले ढंग से अपना बदन कसा, एड़ियाँ जोड़ीं और टोपी की चोटी तक सख्ती से हाथ ले जाकर जवाब दिया—"स्क्वैड्रन-कमांडर के हुक्म से हम इन्हें लाए हैं यहाँ।"

"हुक्म से हम इन्हें लाये हैं यहाँ!" छैला-से अफ़सर ने होंठ सिकोड़ते हुए मजाक बनाया और अपने चूतड़ हिलाता, पैर पटकता, क़ैदियों के मुआइने के लिए चल पड़ा। फिर बहुत देर तक वह उन्हें उस तरह देखता-समझता रहा, जैसे घोड़े का सौदागर किसी घोड़े को देखे-समझे।

अर्दली आपस में धीरे-धीरे जबानें चलाते रहे। कालमीकों के चेहरे बदस्तूर भावहीन बने रहे।

कैप्टन ने आदेश दिया—"फाटक खोलो और इन क़ैदियों को हाते में हाँक ले जाओ!"

"तुममें बैंडमास्टर कौन है?"…कैप्टन ने सिगरेट जलाते हुए पूछा।

"बैंडमास्टर हमारे बीच नहीं है।" कई आवाजों ने एक साथ जवाब दिया।

"कहाँ है वह? क्या भाग गया?"

"नहीं, मार डाला गया।"

"क्या अच्छा छुटकारा पाया! तुम्हारा काम उसके बिना भी चल जाएगा। तो, फिर चलो अपने बाजे तैयार करो।"

लाल फौजी गाड़ियों तक गये और फिर गिरजों के घण्टों की लगातार टन-टन में पीतल के बाजों की खनक घुल गई।

"तैयार हो गए ? बजाओ—'प्रभु कि बचाओ ज़ार को'।"

बैंड बजाने वालों ने मौन भाव से एक-दूसरे को देखा। किसी ने कुछ नहीं बजाया। एक क्षण तक तो भयानक सन्नाटा रहा, मगर इसके बाद नंगे पैर मगर चुस्त पट्टियों वाले एक आदमी ने धरती पर दृष्टि जमाते हुए कहा—"हम लोग यह पुराना ज़ार गीत नहीं जानते···"

"तुममें से कोई नहीं जानता ? क्या कहते हो···ऐ, आधे प्लैटून अर्दलियो···सुनते हो ? ··अपनी राइफ़लें सभालो ज़रा।"

कैप्टन अपने बूट के अँगूठे वाले हिस्से से ताल देने लगा। अर्दली, अपनी राइफ़लें खटखटाते हुए बरामदे में आ जमा हुए। बाड़ के पास के घने अकासिया झाड़ों में गौरैया चहचहाती रहीं। लोहे की तपती छतों और लोगों के तीखे पसीने के कारण अहाते में खासी उमस रही।

ऐसे में कैप्टन शेड में गया कि नंगे पैरों वाले संगीतज्ञ ने अपने साथियों की ओर मायूसी से देखा और शांत भाव से कहा—"सरकार, हम सभी नई धुनें जानते हैं, पुरानी धुनें हमने कभी नहीं बजाईं··हम तो ज़्यादातर मार्च की क्रान्तिकारी धुनें बजाते हैं।"

कैप्टन ने विचारों में खोए-खोए ही, अपना हाथ तलवार की मूँठ पर रखा और कोई जवाब नहीं दिया।

आधी-की-आधी प्लैटून बरसाती के बाहर कतार में खड़ी हो गई और हुक्म का इन्तजार करने लगी। अब बैंड का कंजी आँखों वाला, एक सयानी उम्र का सदस्य दल के आगे की ओर बढ़ा और अपना गला साफ़ करते हुए पूछने लगा—"मुझे इजाजत है, मैं बजा सकता हूँ ?" और इजाज़त का इन्तजार किये बिना धूप से काली बाँसुरी उसने अपने थरथराते हुए होंठों पर रख ली।

फिर बाँसुरी के स्वर व्यापारी के लम्बे-चौडे अहाते में धीरे-धीरे गूँजे तो कैप्टन की भौंहें क्रोध से तन गईं और वह अपना हाथ चमकाते हुए बोला—"बन्द करो···खत्म करो यह फ़कीरों की गिड़-गिड़ाहट से भरी अपनी धुन···इसी को तुम धुन कहते हो ?"

स्टाफ़-अफ़सर और ऐडजुटेंट मुस्कराते हुए खिड़कियों से झाँकने लगे।

"इन लोगों से कोई अच्छा मातमी मार्च बजाने को कहो ।" एक लेफ्टिनेन्ट ने खिड़की के दासे पर झुकते हुए तरुणाई से बजती आवाज़ में कहा ।

गिरजे के घण्टों की टनटन एक क्षण को रुकी और कैप्टन ने अपनी आँखें सिकोड़ते हुए, खतरनाक ढंग से कहा—"मेरा खयाल है कि 'इन्तरनेशनाल' तो तुम सब बजा ही लेते, होगे ? तो, वही बजाओ···डरो नहीं । बजाओ मेरे हुक्म की तामील होनी चाहिए ।"

और···पूरे अहाते में सन्नाटा छा गया । तो, फिर इस सन्नाटे और दोपहर की गर्मी के वातावरण को भेदता हुआ 'इन्तरनेशनाल' का पूरे स्वर-ताल में बँधा सिंहनाद सहसा ही चारों तरफ़ की हवा को झकझोरने लगा ।

कैप्टन अपने पैर फैलाये, बाड़ पर बेल की तरह झुका खड़ा 'इन्तरनेशनाल' सुनता रहा । उसकी मज़बूत गर्दन की नसों और अधमुंदी आँखों की निलहरी सफेदियों में खून छलक आया ।

उसकी नसों पर जो ज़ोर पड़ा, वह संभाल के बाहर हो गया । चीखलाते हुए गरजा—"बंद करो !"

बैंड ने किसी प्राणी की तरह दम तोड़ दिया । सिर्फ़ एक फ्रेंच भोंपू को रुकने में एक क्षण की देर लगी ।

बैंड बजाने वालों ने अपने खुश्क होंठ चाटे और आस्तीन और गंदी हथेलियों से उन्हें पोंछा । उनके उतरे हुए चेहरों से थकान टपकी । एक, गर्द से नहाये, गाल पर आँसू का निशान झलका ।

इस बीच जनरल सेक्रेतेव एक साथी अफ़सर के यहाँ दावत खाता रहा । इस अफ़सर ने उसके साथ ही कभी रूसी-जापानी लड़ाई में हिस्सा लिया था । इस समय जनरल अपने, नशे में धुत, एडजुटेंट के सहारे, लड़खड़ाता हुआ चौक में आया । नशे और गरमी की शिद्दत के कारण, हाई स्कूल की ईंटों वाली इमारत के ठीक सामने वाले कोने में पहुँचने पर उसके पैर काँपे और वह मुँह के बल गरम रेत पर भहरा पड़ा । एडजुटेंट ने उठाने की भरसक कोशिश की, मगर काम न चला । फिर थोड़ी दूर पर जमा लोगों ने एडजुटेंट की सहायता की ।

उनमें से दो जवानी उम्र के कज्ज़ाकों ने जनरल सेक्रेतोव को बड़ी इज्जत से हाथ पकड़कर उठाया और फिर उसे इस हालत में सभी ने देखा। लेकिन बीच-बीच में उसने कै की और यों हाथ चलाये जैसे लड़ाई के मैदान में हो। आखिरकार किसी तरह उसे अपने ठिकाने पर जाने को मजबूर किया गया।

दूर-दूर खड़े कज्ज़ाकों ने उसे घूर-घूरकर देखा और एक-दूसरे के कानों में फुसफुसाने लगे।

"अहा······कितने मज़े में हैं······ये है हमारे सरकार! जनरल है, मगर पैर तक ठिकाने से नहीं पड़ते!"

"जाहिल हैं······अपने ओहदे की ज़रा बराबर फ़िक्र नहीं है······ देखा।"

"अरे म्याँ, किसने कहा था कि मेज़ पर जितनी रखी हो, वह कुल की कुल ढाल डालो।"

"भाईजान, शराब पीना और बर्दाश्त कर लेना हर एक का काम नहीं। कितने ही लोग हैं जो बेशर्मी से ढालते हैं और फिर तौबा करते हैं कि दुबारा शराब हाथ से छुएँगे नहीं। वैसे बात यह है कि आस-पास खाने को कुछ न हो तो कोई भी सुअर रोज़ा रखने की कसम खा सकता है।"

"हाँ······यह तो है······मगर, लोगों को चिल्लाकर कह दो कि इस तरह भीड़ न लगायें। बदमाश, इस तरह घूरते हैं जैसे कभी किसी को नशे में धुत देखा ही न हो।"

······फिर गिरजाघरों में घण्टे बजाए गए और व्येशेन्स्काया में शाम होने तक शराब की नदियाँ बहीं। लेकिन, शाम ढले बाग़ियों की कमान ने, अफ़सरों के मेस के लिए निश्चित मकान में, नवागन्तुकों को दावत की।······

सेक्रेतेव, हट्टा-कट्टा, लम्बे क़द का आदमी था। रहने वाला क्रासनोकुत्स्क ज़िले के एक गाँव का था, और उसे घुड़सवारी का बेहद शौक था। खुद शानदार घुड़सवार और घुड़सवार-फौज का बहुत ही जिगरे वाला जनरल था। लेकिन वक्ता वह कोई खास न

था। फलतः दावत में उसने जो भाषण दिया, वह शराबियों की-सी बे सिर-पैर की बातों से भरा रहा। इस सिलसिले में उसने कभी दोन के कज्जाकों को बड़ी लानत-मलामत की और उन्हें बड़ी-बड़ी धमकियाँ दीं।

ग्रिगोरी ने भी दावत में हिस्सा लिया था, जनरल की बातें सुनकर वह गरम होता और गुस्से से उबलता रहा। जनरल अब तक पूरी तरह संतुलित न हो सका था। वह मेज पर हाथ रखे खड़ा रहा, उसके गिलास से घर की निकली, महकदार वोद्का रह-रहकर छलकती रही और वह अपने शब्द-शब्द पर बल देता रहा।

"······नहीं, सच तो यह है कि आपकी मदद के लिए हमें आपका शुक्रगुजार नहीं होना चाहिए, बल्कि आपको हमारा शुक्रगुजार होना चाहिए। आपको और सिर्फ़ आपको हमारा शुक्रिया अदा करना चाहिए······यह बात साफ़-साफ़ कही जानी चाहिए। अगर हम न होते तो लाल फ़ौजी आपका नाम-निशान मिटाकर रख देते। यह हकीक़त आप अच्छी तरह जानते हैं। लेकिन, जहाँ तक हमारा सवाल है, हम तो आपके बिना भी यह ग़लीज दूर कर ही देते। हम उन्हें कुचल रहे हैं, और हम उन्हें तब तक कुचलते रहेंगे जब तक कि पूरे रूस से उनका सफ़ाया न हो जाएगा।······बहार में आप लड़ाई के मैदान से पीठ दिखाकर चले आये। आपने बोलशेविकों को कज्जाकों के इलाके में घुस आने दिया। आप उनके साथ बनाकर आराम से रहना चाहते थे, पर यह मुमकिन न हुआ। इसलिए अपनी जान-माल के बचाव के नाम पर आपने सिर उठाए। दो टूक बात कहनी हो तो कहा जाएगा कि आपको फ़िक्र हुई अपनी और अपने जानवरों की खाल की। मैं ये बीती बातें आपके गुनाह गिनाने के लिए नहीं कर रहा। मैं ऐसी बातें कर आपको नाराज़ भी नहीं करना चाहता। लेकिन, सच्चाई को सच्चाई करके पेश करने से नुकसान कभी नहीं होता। हमने आपकी सारी गद्दारी के लिए आपको माफ़ कर दिया है। हम भाइयों की तरह, जरूरत पड़ने पर आपके दाहिने आये हैं और आपकी इमदाद करने के लिए आए हैं। लेकिन, अपनी बेहयाई से भरी सारी करतूतों को आपको आगे के

शानदार कारनामों से धोना चाहिए। यह बात आप सब समझते हैं न ? आपको दोन की खिदमत जी-जान से करनी चाहिए। समझे आप ?"

"तो, आइये, बेहयाई से भरी करतूतों को शानदार कारनामों से धोने के लिए पियें।" ग्रिगोरी के सामने बैठे एक बुज़ुर्ग-से कज्ज़ाक ने मुस्कराते हुए, जैसे अपने-आपसे ही, काफी धीरे से कहा और दूसरों की राह देखे बिना सबसे पहले अपना गिलास खाली कर दिया।

इस कज्जाक के मर्दाने चेहरे पर कहीं-कहीं चेचक के दाग़ थे और अपनी गहरी भूरी आँखों से खासा हँसोड़ मालूम होता था। सो, सेक्रेतोव के भाषण के बीच उसके होंठ कई बार मुस्कान से फड़के, लेकिन फिर उसकी आँखें गहरा गईं और स्याह-काली लगने लगीं। ग्रिगोरी ने इस अफ़सर की हरकतें देखी तो वह उसे जनरल का काफ़ी मुँहलगा मालूम हुआ और उससे मनमाने ढंग से पेश आया पर, दूसरे अफ़सरों के मामले में उसने खासी रोकथाम से काम लिया।

एक अकेले उसकी खाकी ट्यूनिक पर खाकी भब्बे दीखे और उसकी आस्तीनों पर कोरनीलोव निशान नज़र आए। ग्रिगोरी ने सोचा— 'बड़े उसूलों वाला आदमी है। शायद वालेंटियर है।'

उस कज्जाक अफ़सर ने शराब घोड़े की तरह पी, पर कुछ न खाने के बावजूद शराब उसे चढ़ी नहीं। सिर्फ अपनी चौड़ी अंग्रेजी पेटी बीच-बीच में खोलकर हाथों में लेता रहा।

"मेरे सामने कौन है वह······चेचक के दाग़ों वाले चेहरे का आदमी ?" ग्रिगोरी ने बग़ल में बैठे बोगातिरयोव के कानों में कहा।

"शैतान जाने कौन है वह!" बोगातिरयोव ने यों ही कहा। अब उसे नशा चढ़ चला था।

कुदिनोव ने मेहमानों के लिए वोदका नहीं छोड़ी तो कच्ची स्प्रिट मेज पर आ गई। सेक्रेतोव ने अपनी बात जैसे-तैसे, बड़ी मुश्किल से खत्म की और अपना खाकी कोट खोलते हुए आरामकुर्सी पर धम से गिर पड़ा। देखने-सुनने में बहुत ही साफ़-साफ़ मंगोलियन-से लगने वाले एक जवान स्क्वैड्रन-कमांडर ने उसकी ओर अपना मुँह बढ़ाया और उसके

कानों में कुछ कहा।

"शैतान ले जाए!" सेक्रेतेव ने आँखें मूँदे हुए जवाब दिया। कुदिनोव ने उस पर एहसान जताते हुए गिलास उँडेली तो उसने गिलास दूर खिसका दिया।

"और, ऐंठी-तनी मूँछों वाला यह कौन है?" ग्रिगोरी ने बोगातिरयोव से पूछा।

उसके साथी ने मुँह पर हथेली रखते हुए जवाब दिया—"वह सेक्रेतेव का मुँहबोला बेटा है। जापानी लड़ाई के दौरान वह उसे बेटा बनाकर मन्चूरिया से लाया। फिर उसने उसे कैडेटों के फ़ौजी स्कूल में भेजा। बाद में लड़के ने सारा नमक अदा कर दिया। बड़ा ही कलेजे वाला आदमी है। कल उसने मार्केयेवका के पास के ख़जाने पर कब्ज़ा कर लिया। बीस लाख रूबल हाथ लगे। देखो, इस वक्त भी नोटों के बंडल जेब से झाँक रहे हैं। बड़ा खज़ाना मार दिया।...लेकिन, गिलास खाली करो न, अपने आस-पास क्या देख रहे हो?"

कुदिनोव ने जवाबी-तक़रीर की, पर शायद ही किसी ने उसकी बातें सुनीं। शराबखोरों के जश्न का शोर-शराबा बराबर बढ़ता गया। सेक्रेतेव ने अपनी जेकेट उतार फेंकी और कमीज़ पहने बैठा रहा। उसकी सफाचट खोपड़ी पर पसीने की बूँदें झलकने लगीं। लिनेन की बेदाग़ कमीज़ से बाहर झलकती रही उसकी बैजनी हरी और जेतून के रंग की, धूप में सँवराई गर्दन। कुदिनोव ने उसके कान में कुछ कहा—लेकिन सेक्रेतेव ने उसकी ओर देखे बिना दुराग्रह से दोहराया—"नहीं...माफ़ कीजिये।...लेकिन, आपको माफ़ कर ही देना चाहिए। हम आपका यकीन करते हैं, लेकिन जहाँ तक...आपकी गद्दारी जल्दी भूली नहीं जाएगी। पतझड़ में लाल फ़ौजियों के चारों ओर नाचने वाले लोगों को यह बात अपने दिलों पर नक्श कर लेनी चाहिए।"

'खैर...हम तो जैसे थे वैसे ही रहेंगे...हम आपकी खिदमत वहीं तक करेंगे जहाँ तक...' ग्रिगोरी ने मन-ही-मन क्रुद्ध होते हुए सोचा और उठकर खड़ा हो गया।

वह बिना टोपी लगाये, निकलकर बरसाती में आया और चैन

की साँस लेते हुए रात की ताजी हवा में साँस ली।

दोन के निचले क्षेत्र में मेंढक टर्र-टर्र करते रहे और पनडाँस, बरसात के पहले के दिनों की तरह, भनभनाते रहे। बालू पर एक जगह चाहा-चिड़ियाँ एक-दूसरे को आवाजें देती रहीं। दूर कहीं, पानी के सरकंडों के बीच एक बछेड़ा अपनी माँ से बिछुड़कर जोर-जोर से हिनहिनाता रहा।

'जरूरत की बात है कि हमें एक-दूसरे से मिलना पड़ा है, नहीं तो तुम्हारी परछाईं तक का खयाल न आता···सुअर का बच्चा, सोंठ की टिकिया की तरह फूलता है और हम पर लानतें बरसाता है···एक हफ्ते में तो यह हमारी गर्दनों पर पैर रखना शुरू कर देगा···जो हो चुका सो हो चुका···ऐसा ही तो मैंने सोचा भी था···ऐसा ही तो होना भी था··· लेकिन अब कज्जाक नाक-भौंह सिकोड़ेंगे···इन्हें सैल्यूट झाड़ने और बड़े सरकारों के सामने अटेंशन मारने की आदत रही नहीं। ग्रिगोरी ने सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए सोचा और अंधेरे में बेंत के छोटे फाटक की ओर बढ़ा।

शराब ने अपना असर उस पर भी दिखलाया। उसका सिर घूमने लगा और शरीर की हरक़तों में खास भारीपन महसूस हुआ। फाटक से निकलते समय उसके पैर लड़खड़ा गए, उसने टोपी अपने सिर पर जमाई और वह घिसट-घिसटकर चलने लगा।

अकसीनिया की चाची के घर के पास पहुँचने पर वह क्षण-भर को ठिठका और फिर एक संकल्प से दरवाज़े की ओर बढ़ा। बरसाती को जाने वाला अंदर का दरवाज़ा खुला मिला। वह बिना खटखटाये, सोने के कमरे में दाखिल हुआ तो उसने अपने को और स्तेपान अस्ताखोव को आमने-सामने पाया। अकसीनिया की चाची स्टोव पर कुछ पकाने में व्यस्त रही। मेज़ पर बिछे साफ़-सुथरे मेज़पोश पर रखी दीखी एक बोतल में बची-बचाई घर की बनी थोड़ी-सी वोदका और एक तश्तरी में गुलाबी, सूखी मछली के कुछ टुकड़े।

स्तेपान ने अभी अपना गिलास खाली किया था और वह सिगरेट पीने जा रहा था। पर ग्रिगोरी को देखते ही उसने अपनी प्लेट एक

श्रोर को खिसका दी श्रौर दीवार से टिककर बैठ गया।

ग्रिगोरी ने, नशे में होने पर भी देखा कि स्तीपान का चेहरा भयानक ढंग से पीला पड़ा श्रौर उसकी श्रांखों से क्रोध की लपटें फूटने लगीं। इस श्रप्रत्याशित भेंट पर श्राश्चर्य से श्रवाक् रह जाने पर भी ग्रिगोरी ने शक्ति जुटाई श्रौर भर्राये गले से बोला—"खाना तुम्हें सेहत दे।"

"उस श्रासमान वाले का शुक्र है।" चाची ने चौंकते हुए कहा श्रौर ग्रिगोरी से अपनी भतीजी के सम्बन्धों का खयाल कर मन-ही-मन सोच गई कि इत्तिफ़ाक से इस वक्त खाविंद श्रौर श्राशिक की जो मुलाक़ात हो गई है उसका नतीजा कोई श्रच्छा न निकलेगा।

स्तीपान मुँह से कुछ नहीं बोला। उसने बायां हाथ अपनी गलमुच्छों पर फेरा श्रौर अपनी जलती हुई श्रांखें ग्रिगोरी पर जमाये रहा। पर ग्रिगोरी ड्योढ़ी पर पैर फैलाये खड़ा हलके-हलके मुस्कराता रहा। "हाँ, मैं यों ही चला श्राया···माफ़ करना।"

स्तीपान चुप ही रहा श्रौर यह सन्नाटा चलता रहा कि चाची ने हिम्मत बटोरी श्रौर ग्रिगोरी को श्रन्दर श्राने की दावत दी। बोली—"श्राश्रो, बैठो।"

श्रब ग्रिगोरी को छिपाने को कुछ न रहा श्रौर श्रक्सीनिया के यहाँ उसके श्राने के बाद स्तीपान को जानने को कुछ न बचा। उसने सीधे श्रन्दर की तरफ़ क़दम बढ़ाये—"लेकिन तुम्हारी बीबी कहाँ है?"

"यानी, तुम मुझसे मिलने श्राये हो?" स्तीपान ने शांत भाव से, स्पष्ट शब्दों में पूछा श्रौर अपनी फड़फड़ाती हुई बरौनियां श्रांखों पर गिरा लीं।

"हाँ!" ग्रिगोरी ने श्राह भरी।

वह इस वक्त हर परिस्थिति के लिए तैयार लगा। जरा गम्भीर हुआ श्रौर अपने बचाव के लिए कमर कस ली। इस बीच स्तीपान की श्रांखों की श्राग बुझ गई। उसने अपनी श्रांखें श्राधी खोली श्रौर बोला—"मैंने उसे थोड़ी वोदका लेने को भेजा है। अभी श्राई जाती है, बैठो।"

और, फिर तो उसने खड़े होकर उसका स्वागत तक किया और एक कुर्सी उसकी ओर बढ़ा दी। इसके बाद अकसीनिया की चाची की तरफ़ देखे बिना बोला—"चाची, ज़रा एक साफ़ गिलास ला दो।"··· और ग्रिगोरी से कहने लगा—"थोड़ी शराब तो चलेगी न ?"

"एक गिलास पी लूंगा।"

"खैर, तो, बैठो तो।"

ग्रिगोरी मेज़ के पास आ बैठा। स्तीपान ने बोतल की वोदका दो गिलासों में बराबर-बराबर डाली और अपनी अजीब, धुंधलाई आंखें ऊपर कर ग्रिगोरी पर नजर डाली।

"हर एक के लिए।"

"और उनकी सेहत के लिए।"

उन्होंने गिलास आपस में लड़ाये, वोदका गले के नीचे उतारी और चुप हो रहे। अकसीनिया की चूहे-सी फुर्तीली चाची ने मेहमान को एक तश्तरी और दांतेदार मूंठवाला एक कांटा दिया और बोली—"थोड़ी-सी मछली ले लो···बहुत नमकीन नहीं है।"

"शुक्रिया।"

"शुरू करो···थोड़ी-सी मछली ले लो···तुम्हें अच्छी लगेगी।" औरत ने अब खुशी से खिलते हुए आग्रह किया। उसकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा, क्योंकि वक़्त आराम से कटता गया। न हाथापाई हुई, न तश्तरी-प्याले चकनाचूर हुए और न शोर-शराबा हुआ। उनकी आपस की बातचीत खत्म हो गई। खाविंद, अपनी बीबी के आशिक की बग़ल में शांत मन से बैठा रहा। फिर उसी तरह, मुंह सिये-ही-सिये, बिना एक-दूसरे की तरफ़ देखे वे खाते रहे। घर की चलतापुर्जा मालकिन ने बक्से से हाथ पोंछने का साफ़ तौलिया निकाला और दोनों की ही जांघों पर इस तरह डाला जैसे कि उन्हें एक सूत्र में पिरो रही हो।

"तुम अपने स्क्वैड्रन के साथ न होकर इस वक़्त यहां कैसे नजर आ रहे हो ?" ग्रिगोरी ने मछली को गौर से देखते-समझते हुए पूछा।

"मैं भी घर के लोगों से मिलने-जुलने के लिए गांव आया हूं।" स्तीपान ने एक क्षण विसूरने के बाद कहा और उसके लहज़े से यह पता न चला

कि बात गम्भीर है अथवा व्यंग्य में कही गई है।

"मेरा खयाल है कि पूरे-का-पूरा लाम्रैंड्रन हो घर लौट आया है··· क्यों ?"

"हां, लोग गांव में मजे कर रहे हैं। तो, हम लोग अपना-अपना गिलास खत्म करें···क्यों ?"

"कर दें।"

"तुम्हारी सेहत के लिए।"

"तुम्हारी कामयाबी के लिए।"

इसी समय बरसाती में दरवाजा खड़का। इस बीच ग्रिगोरी पूरी तरह गम्भीर हो गया और अब उसने स्तीपान की ओर देखा तो उसे उसके चेहरे पर पीलापन एक बार फिर दौड़ता नजर आया।

अकसीनिया, कसीदे के काम का रूमाल सिर में बांधे, अन्दर आई। उसने ग्रिगोरी को नहीं पहचाना और मेज के पास पहुंचकर उसे कनखी से देखा। स्थिति समझ में आई तो उसकी काली, फटी-फटी आंखों से डर झांकने लगा। वह हांफने लगी और बहुत कोशिश के बाद बोली—"सलाम···ग्रिगोरी-पंन्तेलेयेविच।"

स्तीपान के मेज पर रखे बड़े-बड़े, गांठ-गठीले हाथ कांपने लगे। ग्रिगोरी मुंह से बिना कुछ कहे, अकसीनिया की ओर देखकर झुका।

अकसीनिया ने घर की बनी वोदका की दो बोतलें मेज पर रखीं, ग्रिगोरी पर चिन्ता के साथ-साथ प्रसन्नता से भरी नजर फिर डाली, मुड़कर कमरे के अंधेरे कोने में आई और कंपकंपाते हुए हाथों से बाल ठीक करने लगी। स्तीपान का गला फंसने-सा लगा। उसने कमीज़ का कॉलर खोला, गिलास ऊपर तक लबालब भरे और पत्नी से बोला—"तुम भी अपना गिलास ले आओ और हम लोगों के साथ आ बैठो।"

"मेरा वोदका पीने को मन नहीं।"

"आओ और बैठो यहां।"

"लेकिन मैं वोदका नहीं पीती, स्तीपान!"

"कितनी बार कहना पड़ेगा तुमसे ?" स्तीपान की आवाज़

काँपी।

"आओ, यहाँ आ बैठो अक्सीनिया!" ग्रिगोरी हिम्मत बँधाते हुए मुस्कराया। अक्सीनिया ने उसे मिन्नत-भरी आँखों से देखा और बर-तनों की अलमारी की तरफ लपकी। एक तश्तरी अलमारी से नीचे गिर पड़ी और चूर-चूर हो गई।

"उफ़···कितना नुकसान हुआ!" चाची ने मायूसी से हाथ मले। अक्सीनिया ने चुपचाप टूटे हुए टुकड़े बीन लिए। स्तीपान ने तीसरा गिलास भी ऊपर तक भरा और एक बार फिर उसका मन खीझ और नफ़रत से भर-उठा। बोला—"चलो···उठाओ गिलास।" और, फिर चुप हो रहा।

अक्सीनिया मेज के किनारे आकर बैठी तो मन की ऐंठने का संकेत देती-सी लम्बी-लम्बी साँसें साफ़-साफ़ सुन पड़ीं। स्तीपान बोला—"बीबी, अब पीयेंगे एक लम्बे अर्से की बिछुड़न के लिए···क्यों, यह जाम तुम नहीं पीना चाहतीं? पियोगी नहीं?"

"लेकिन, तुम तो जानते हो कि···"

"अब मैं सभी-कुछ जानता हूँ···ख़ैर तो किसी बिछुड़न के लिए न सही···अब हम पीयेंगे अपने प्यारे मेहमान ग्रिगोरी पेन्तेलेयेविच की सेहत का जाम।"

"हाँ ग्रिगोरी की सेहत का जाम मैं पिऊंगी।" अक्सीनिया ने बजती हुई आवाज़ में कहा और पूरा गिलास एक घूंटे में ही खाली कर दिया।

"उफ़···बेअक़्ल···बदजात कहीं की!" चाची दौड़कर बावर्चीखाने में जाती हुई बुदबुदाई। वहाँ वह एक कोने में दुबक गई और हाथों से सीना कसकर इन्तज़ार करने लगी कि अब सारी मेज चरमराकर टूटी और अब गोलियाँ चलीं कि कानों के पर्दे फटे।···लेकिन सोने के कमरे में क़ब्र का-सा सन्नाटा बना रहा। सिर्फ रोशनी से परेशान मक्खियाँ छत के नीचे भनभनाती रहीं। दूसरी ओर, खिड़की से बाहर मुर्गे एक-दूसरे को आवाज़ दे-देकर आधी रात का स्वागत करते रहे।···

: ८ :

दोन के इलाक़े की जून की रातें अँधेरी होती हैं। दम घोटने वाले सन्नाटे के बीच मिलेटी काले आसमान में सुनहरी बिजली कौंधती है, सितारे टूटते हैं और नदी की तेज धार में झिलमिलाते हैं। खुश्क, गर्म हवा के झोंके स्तेपी की ओर से फूलते हुए पुदीने की भीनी-भीनी महक घर-घर में लाते हैं। नदी के किनारे निचले इलाके की भीगी घास, पानी के साथ बहकर आई रेत-मिट्टी और एक तरह के कच्चेपन से महमह करती रही।

ऐसे में प्रोखोर आधी रात के समय जागा। उसने अपने क्वार्टर के मालिक से पूछा—"हमारा सूरमा घर आ गया?"

"अभी तक तो आया नहीं…जनरलों के साथ ऐश काट रहा होगा।"

"मेरा तो खयाल है कि शराब की नदियों में डूब-उतरा रहे होंगे ये लोग।" प्रोखोर ने जमुहाई लेते हुए कहा। ईर्ष्या से लम्बी आह भरी और कपड़े पहनने लगा।

"तुम कहाँ चले?"

"मैं घोड़ों को पानी पिलाने और दाना देने जा रहा हूँ… पन्तेलेयेविच ने कहा था कि सूरज उगते ही घोड़ों पर सवार होकर तातारस्की के लिए रवाना हो जाना है…दिन हम वहीं बितायेंगे और फिर अपनी यूनिटों से जा मिलेंगे।"

"सूरज उगने में तो अभी बड़ी देर है…तब तक थोड़ा-सा और सो क्यों नहीं लेते?"

प्रोखोर ने असन्तोष से भरी आवाज में कहा—"तुम्हें देखकर तो कोई आँखों का अन्धा भी कह देगा कि बूढ़े बाबा अपनी जवानी के दिनों में तुम फ़ौज में कभी नहीं रहे। हमारी नौकरी ऐसी है कि हम अगर घोड़ों को कायदे से न खिलायें-पिलायें और उनकी पूरी देख-रेख न करें तो हम ही जिन्दा बाक़ी न बचें। घोड़े का पेट न भरा होगा तो उसे दौड़ाओगे क्या खाक, तुम्हारा घोड़ा जितना अच्छा और ठीकठाक होगा, अपने दुश्मन से तुम उसी हिसाब से तेज़ी से भागकर जान बचा

सकोगे। मैं दुश्मनों को पकड़ने का दम नहीं भरता, लेकिन अगर कहीं घिराव में पड़ जाऊँगा तो सबसे पहले अपना घोड़ा मैं भगाऊँगा। यह है मेरी बात। गोलियों का सामना करते-करते जाने कितने साल हो गए हैं। मेरी तो जान ऊब गई। जरा रोशनी करना बाबा—ऐसे अँधेरे में तो कपड़े मिलने से रहे।···शुक्रिया···और हमारा ग्रिगोरी पेन्तलेयेविच··· हाँ वह अपने सारे क्रॉसों और वर्दी-ओहदे के नाम पर सिर के बल दोजख में फट पड़ा है। लेकिन मैं ऐसा बेवकूफ़ नहीं हूँ···मुझे इन चीजों का कोई लालच नहीं।···लो आ रहा है वह···मेरा खयाल है कि होश में नहीं है।"

इतने में दरवाजा धीरे से खटका। प्रोखोर ने जोर से कहा—"आ जाओ!"

पर, अन्दर आया एक कज्ज़ाक नॉन-कमीशंड अफ़सर। उसकी खाक़ी ट्यूनिक की बाँहों पर पट्टियाँ थीं, टोपी चोंचदार थी और उसमें तुर्रा लगा हुआ था।

उसने ड्योढ़ी पर खड़े होकर सैल्यूट दी, अटेंशन हुआ और बोला—"मैं जनरल सेक्रेतेव के स्टाफ़ से आया हूँ। क्या मैं मेलेखोव साहब बहादुर से मिल सकता हूँ?"

"मेलेखोव यहाँ नहीं है।" प्रोखोर ने जवाब दिया और अर्दली की ट्रेनिंग, तौर-तरीक़े और बोलने के ढंग से ताज्जुब में पड़ गया। फिर बोला—"लेकिन अपनी हड्डियाँ इस तरह न तोड़ो। अपनी जवानी के दिनों में भी उतना ही बेवकूफ़ था, जितने इस वक़्त तुम हो।···मैं मेलेखोव का अर्दली हूँ···क्या काम है तुम्हें उनसे?"

"मुझे जरनल-सेक्रेतेव ने मेलेखोव साहब के पास भेजा है, और दरख्वास्त की है कि वे अफ़सरों के मेस वाली इमारत में जल्दी-से-जल्दी पहुँच जाएँ।"

"मेलेखोव तो आज तीसरे पहर वहाँ गया था।"

"हाँ, गये थे, पर बाद में वापस आ गये।"

प्रोखोर ने सीटी बजाई और बिस्तरे पर बैठे कज्ज़ाक की तरफ़ देखकर आँख मारी।

"समझे, दादा! वहाँ से खिसक दिया। इसके मानी यह है कि अपनी माशूका के पास पहुँच गया।"

"तुम जाओ, म्याँ-फ़ौजी! मैं अभी उसकी तलाश कर उसे सीधे वहाँ भेजता हूँ।"

प्रोखोर ने बूढ़े से घोड़ों को पानी और चारा देने को कहा और खुद अक्सीनिया की चाची के घर की तरफ़ रवाना हुआ।

व्येशेन्स्काया अभेद्य अंधकार के बीच सोता रहा। दोन के किनारे दूर, कहीं जंगल में नाइटिंगल, एक-दूसरे से होड़ बद-बदकर, सीटियाँ बजाती रहीं। ऐसे में प्रोखोर ने आराम-आराम से जाने-पहचाने, छोटे घर तक की मंज़िल तय की। वहाँ गलियों में होकर दरवाज़े के हत्थे को हाथ लगाया ही कि स्तीपान की गहरी आवाज उसके कानों में पड़ी। प्रोखोर ने सोचा—अब मेरी जान फँसी। स्तीपान मुझसे यहाँ आने की वजह पूछेगा तो मेरे पास जवाब देने को कुछ न होगा। ख़ैर...बात बना ली जाएगी। कह दूँगा कि शराब ख़रीदने आया हूँ, पड़ोसियों ने तुम्हारे यहाँ भेज दिया है।

सो, वह हिम्मत कर सोने के कमरे में घुसा, पर वहाँ आश्चर्य से अवाक् हो गया और उसका मुँह खुले का खुला रह गया। चुपचाप खड़ा देखता रहा कि एक ही मेज़ के किनारे ग्रिगोरी और स्तीपान इस तरह बैठे गिलासों से बदलिया हरी, घर की बनी वोदका की चुस्कियों पर चुस्कियाँ ले रहे हैं, जैसे कि उनके बीच कभी कुछ न हुआ हो।

स्तीपान ने बरबस मुस्कराते हुए प्रोखोर की ओर देखा और कहा—"वहाँ मुँह फैलाये क्या खड़े हो? दुआ-सलाम तक का ख़याल नहीं रहा? कोई भूत यहाँ देख लिया क्या?"

"कुछ ऐसा ही है।" प्रोखोर ने एक पैर के बदले बल दूसरे पैर पर दिया। परन्तु, आश्चर्यचकित वह अब भी रहा। स्तीपान बोला—"ख़ैर, डरो मत...अन्दर आ जाओ...हमारे यहाँ आ बैठो।"

"मेरे पास बैठने का वक़्त नहीं है।...मैं आपके पास आया हूँ, ग्रिगोरी पेन्तेलेयेविच, आपको फ़ौरन ही जनरल सेक्रेतेव ने याद किया है।"

···प्रोख़ोर के आने के पहले ही ग्रिगोरी ने कई बार जाने की सोची थी, अपना गिलास एक ओर को खिसका दिया था और उठ खड़ा हुआ था। लेकिन फिर फ़ौरन ही बैठ गया था। उसे लगा था कि उसके इस तरह चले जाने को स्तीपान उसकी बुज़दिली समझेगा। साथ ही उसके स्वाभिमान ने यह भी गवारा न किया था कि वह अकसीनिया को छोड़ दे ताकि स्तीपान को मौका मिल जाए। नतीजा यह कि वह पीता गया था, पर वोदका का उस पर असर कुछ न हुआ था। उसने सारी परिस्थिति गम्भीरता से समझी थी और परिणाम की राह देखता रहा था। फिर, अकसीनिया ने उसकी सेहत का जाम पिया था तो उसे क्षण-भर को लगा था कि स्तीपान ने अकसीनिया को अब हाथ जमाया कि तब हाथ जमाया। लेकिन उसका अनुमान गलत निकला था। स्तीपान ने अपना हाथ उठाया, धूप से सँवराया माथा पोंछा और जरा देर शांत रहने के बाद प्रशंसा से भरकर कहा था—"बीबी, औरत तुम शानदार हो! तुम्हारी हिम्मत के लिए मैं तुम पर जान छिड़कता हूँ।"

ठीक इसी समय प्रोख़ोर घर में दाखिल हुआ था और ग्रिगोरी ने क्षण भर विसूरने के बाद वहीं रहने का इरादा किया था। सोचा था कि मौक़ा दूँगा···स्तीपान जो कहना चाहे, आज मुँह खोलकर कह ले।···

इसीलिए वह प्रोख़ोर की तरफ मुड़ा और बोला—"जाओ और कह दो कि मैं तुम्हें मिला ही नहीं। समझे?"

"सो तो मैं समझ गया···मगर बेहतर यही कि आप वहाँ चले जायें ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच।"

"यह फ़ैसला करना तुम्हारा काम नहीं···चलो जाओ यहाँ से।"

प्रोख़ोर दरवाज़े की तरफ़ बढ़ा, लेकिन इसी समय अकसीनिया ने अप्रत्याशित रूप से दखल दिया और ग्रिगोरी की ओर देखे बिना, खुश्क ढंग से बोली—"लेकिन, इसके मानी क्या हैं? अच्छा यही होगा कि तुम इसके साथ चले जाओ, ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच! शुक्रिया कि तुमने यहाँ आकर हमारी मेहमानी क़बूल की और अपना थोड़ा वक़्त यहाँ बिताया···मगर, काफ़ी वक़्त हो गया है···दूसरा मुर्ग़ा बाँग दे चुका

है···जल्दी ही सवेरा होगा···मुझे और स्तीपान को सूरज उगते ही घर भी तो जाना है···इसके अलावा, तुम काफ़ी पी चुके। अब और नहीं पीना।"

इसके बाद स्तीपान ने भी रोकने की कोशिश नहीं की और ग्रिगोरी उठ गया। दोनों एक-दूसरे से अलग होने को हुए तो स्तीपान ने ग्रिगोरी का हाथ अपने हाथ में यों लिया, जैसे कि आखिरकार कुछ कहना ही चाहता हो। लेकिन उसने कुछ नहीं कहा, और दरवाज़े की ओर बढ़ते ग्रिगोरी को चुपचाप देखता रहा। बाद में उसने बोतल की बची-खुची शराब की ओर इत्मीनान से हाथ बढ़ाया।

ग्रिगोरी को सड़क पर आते ही भयानक थकान का अनुभव हुआ। वह जैसे-तैसे पहले चौराहे तक पहुँचा और फिर अपने ठीक पीछे-पीछे आते प्रोखोर से बोला—"जाओ और घोड़े कसकर यहीं ले आओ। मैं पैदल वहाँ तक पहुँच नहीं पाऊँगा।"

"मैं वहाँ जाकर पहुँच की इत्तिला दे दूँ?"

"नहीं।"

"ख़ैर···तो, मैं अभी-अभी आया।"

हमेशा का सुस्त और क़ाहिल प्रोखोर इस समय बिल्कुल दुलकी चाल से क्वार्टर की ओर लपका।

ग्रिगोरी ने बाड़ के पास बैठकर सिगरेट जलाई, और स्तीपान से मुलाकात की पूरी बात का ध्यान कर मन-ही-मन सोचा—'यानी, अब स्तीपान को सभी कुछ मालूम हो गया है। ख़ैर···क्या फ़र्क पड़ता है इससे···सिर्फ यह है कि वह उसे कहीं मारे-पीटे नही।'···इसके बाद तन की थकान और मन की बेकली से त्रस्त होकर वह वहीं लेट गया और औंधा गया।

जल्दी ही प्रोखोर घोड़े लेकर आ गया तो दोनों ने नदी पार की और उधर पहुँचते ही घोड़े पूरी रफ्तार से छोड़ दिए। सुबह होते-होते तातारस्की पहुँच गये। यहाँ ग्रिगोरी अपने अहाते के पास घोड़े से उतरा और रासें प्रोखोर की तरफ फेंककर, उत्तेजित मन से, हड़बड़ाता हुआ घर के अन्दर घुसा।

इसी समय नताल्या, सारे कपड़े पहने, किसी काम से बाहर आई और पति को देखते ही उसकी नींद से भरी आँखें खुशी से इस तरह चमकीं कि ग्रिगोरी का दिल धड़कने लगा। क्षण-भर को उसकी पलकें गीली हो उठीं। नताल्या ने उसे पुचकार सीने से लगाया और पूरी ताकत से कसा। उसके कंधों के काँपने से ग्रिगोरी को उसके रोने का पता चला।

वह घर के अन्दर दाखिल हुआ और बुजुर्गों और सोने के कमरे में सोते बच्चों को चूमकर बावर्चीखाने के बीचों-बीच आ खड़ा हुआ। हाँफते हुए बोला—"कैसी गुजरी? मुसीबत के दिन किस तरह कटे? सब ठीकठाक तो है?"

"आसमान वाले की मेहरबानी है, बेटे! हमें जो कुछ देखना पड़ा है वह हमारी हड्डी-हड्डी कँपा देने को तो काफी है। पर यह कहना गलत होगा कि हमें कोई गैर मामूली मुसीबत सहनी पड़ी है।" इलीनीचिना ने जल्दी-जल्दी कहा और रोती हुई नताल्या को कनखी से देखकर चीखी—"तुझे तो खुश होना चाहिये···और, तू है कि आँसू बहा रही है, बेवकूफ कहीं की। यह वक्त यहाँ इस तरह निकम्मे बनकर खड़ा रहने का नहीं। जा थोड़ी लकड़ी ले आ और आग जला ले।"

अब सास-बहू नाश्ता बनाने लगी कि पेन्तेली प्रोकोफियेविच एक साफ तौलिया ले आया और बेटे से बोला—"तुम हाथ-मुँह धो लो। मैं पानी डाले देता हूँ। तुम्हारे मुँह से वोदका की गंध आ रही है। मेरा खयाल है कल तुमने जमकर जश्न मनाया है। क्यों?"

"हाँ, हमने जी भरकर जश्न मनाया है। इस वक्त सिर्फ यह कहना मुश्किल है कि हमारा यह जश्न खुशी का रहा या मातम का।"

"इसके मानी क्या?" बूढ़े के आश्चर्य का ठिकाना न रहा।

"बात यह है कि सेक्रेतेव हम सबसे बहुत नाराज है।"

"खैर···तो, यह ऐसी परेशानी की बात नहीं···वैसे तुम लोगों के साथ पीने वालों में वह तो नहीं था न?"

"वह भी था······"

"सचमुच ! कितनी इज्ज़त उसने तुम्हें दी है, ग्रीशा ! मानो सच्चे जनरल की तरह वह भी उसी मेज़ के किनारे बैठा। ज़रा सोचने की बात है।" अपने बेटे पर स्नेह-भरी दृष्टि डालते हुए पैन्तेली ने ज़बान चटकारी।

ग्रिगोरी मुस्कराया और उसने अपने पिता के गँवारपन से भरी खुशी में ज़रा भी हिस्सा नहीं बँटाया।

फिर, उसने पिता से जानवर, माल और अनाज के नुकसान की बात तफ़सील में पूछी तो आज वह उसे पहले की तरह फार्म की बात-चीत में दिलचस्पी लेता नहीं लगा। इससे बड़ी कड़ी कोई चीज़ बूढ़े के दिमाग़ में नाचती और उसका मन मथती महसूस हुई।

पैन्तेली ने भी अपने मन की आशंका को तुरन्त ही वाणी दे दी। बोला—"ग्रिगोरी, अब क्या होगा ? अब हमें लड़ाई में और तो खटना नहीं पड़ेगा ?"

"किसे खटना नहीं पड़ेगा ?"

"हम बूढ़ों को···मिसाल के लिए मुझे।"

"अभी कुछ कहा नहीं जा सकता।"

"यानी हमें लाम पर जाना पड़ेगा ?"

"नहीं, तुम चाहो तो न जाओ।"

"सचमुच !" पैन्तेली ने गदगद होते हुए पूछा और उत्तेजना में बावर्चीखाने-भर में भचकता फिरा।

"बैठ जा, लंगड़े बुड्ढे ! घर-भर को अपने बूटों की गर्द से नहलाता मत फिर। तू तो खुशी से इस तरह फूला नहीं समा रहा है कि पागल कुत्ते की तरह इधर-उधर दौड़ता फिर रहा है।" इलीनीचिना चीखी।

लेकिन बूढ़े ने उसकी बात की तरफ़ ध्यान ही नहीं दिया। उसने मुस्कराते और हाथ मलते हुए मेज़ से स्टोव तक कई चक्कर काटे। लेकिन, फिर उसका मन संदेह की उंगलियाँ उठाने लगा—"लेकिन, मेरा नाम काट सकते हो ?"

"क्यों नहीं काट सकता ?"

"मुझे लिखकर दे दोगे ?"

"ज़रूर दे दूँगा ।"

आदमी कुछ निश्चय न कर पाया और हकलाने लगा । आखिरकार पूछा—"कैसा दस्तावेज़ होगा वह ?···उस पर मुहर नहीं होगी । या यह कि मुहर तुम्हारे पास नहीं है ?"

"मुहर के बिना भी काम चल जाएगा ।" ग्रिगोरी मुस्कराया ।

"अगर ऐसा हो ही सकता है तो बेकार की बातों से क्या फ़ायदा ?" बूढ़ा फिर खिल उठा—"नीली छतरी वाला तुम्हें हमेशा तन्दुरुस्त रखे !···तुम वापस कब जा रहे हो ?"

"कल जाऊँगा ।"

"तुमने अपने फ़ौजी क्या आगे भेज दिये ?"

"हाँ···लेकिन, तुम अपने बारे में परेशान न हो, पापा ! जो भी हो, तुम्हारी तरह के सभी बूढ़ों को घर जाने की इजाज़त जल्दी ही दे दी जाएगी । ज़रूरत पड़ने पर तुम सभी ने अपना फ़र्ज़ अदा किया, है···।"

"काश कि ऐसा ही हो !" पैन्तेली ने क्रॉस बनाया । साफ़ है कि ग्रिगोरी की बात पर उसे पूरी तरह विश्वास हो गया था और अन्तर नये सिरे से आश्वस्त हो उठा था ।

इस बीच बच्चे सोकर उठ गए तो ग्रिगोरी ने उन्हें गोद में उठाया, घुटनों पर बिठाया, बारी-बारी से चूमा और मुस्कराते हुए उनकी आनंद-भरी बातों का रस लेने लगा ।

इन बच्चों के बाल उसे किस तरह मह-मह करते लगे—धूप से, घास से, तकियों की गरमाहट से, और अपने अन्तरतम की किसी प्रियतम वस्तु से ! और ये बच्चे, उसके अपने ही अंश, उसे स्तेपी की नन्हीं-मुन्नी चिड़ियों-से प्रतीत हुए । दोनों बच्चों को हृदय से लगाते समय उसे अपने हाथ कैसे गंदे समझ पड़े, और इस चैन और अमन से भरे वातावरण में वह अपने-आपको किस तरह परदेशी लगा । वह तो एक घुड़सवार था, जो अपने घोड़े को अपने से अलग कर एक दिन को यहाँ खिसक आया था । वह तो सिर से पैर तक घोड़े के पसीने और

चमड़े के साज-सामान की तीखी बदबू में नहाया हुआ था।···

ग्रिगोरी की आँखें आँसुओं की धुन्ध से धुंधला उठीं और गलमुच्छों के अन्दर-ही-अन्दर उसके होंठ काँपने लगे। तीन बार तो उसने अपने पिता के सवालों के जवाब नहीं दिये और मेज़ के पास तभी आया जब पत्नी ने उसकी ट्यूनिक की आस्तीन पर अपना हाथ रखा···

और, सचमुच इस समय ग्रिगोरी अब तक वाला ग्रिगोरी न रहा, किसी विशेष भावना की बाढ़ में वह पहले कभी न बहा था और रोया तो वह बचपन में भी नहीं था। लेकिन, आज उसी आदमी की आँखों में आँसू थे, आज उसी का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था और आज उसी को यों लग रहा था, जैसे कि गले में छोटी-छोटी घंटियाँ बज रही हों, लेकिन उनमें आवाज़ न हो रही हो।···कहने को कहा जा सकता है कि इस सबका कारण था। कारण यह था कि उसने पिछली रात अंधाधुंध ढाली थी, और सोया वह बिल्कुल नहीं था।···

इसी समय दार्या चरागाह में ढोर हाँककर लौटी। ग्रिगोरी को देखते ही वह उसकी तरफ बढ़ी। मज़ाक में उसके गलमुच्छों पर हाथ फेरा और होंठ उसके होंठों पर रखे तो आँखें मूँद लीं। ग्रिगोरी को उसकी बरौनियाँ जैसे हवा में फड़फड़ाती दीखीं। साथ ही, औरत के खिले हुए गालों की बदबूदार क्रीम की बू ने उसे क्षण-भर को परेशान कर दिया।

यानी, दार्या जैसी-की-तैसी मिली। कहीं किसी तरह का कोई परिवर्तन नहीं। ऐसा लगा कि दुनिया का बड़े-से-बड़ा दर्द तोड़ना तो अलग इसे झुका भी नहीं सकता। उसकी ज़िन्दगी सरपत की एक पत्ती के-सी समझ पड़ी—उतनी ही लचीली, उतनी ही ख़ूबसूरत, उसी तरह पास से कहीं कड़ाई या सख़्ती का नाम नहीं।

"अब तक बहार बनी हुई हो?" ग्रिगोरी ने पूछा।

"बिल्कुल सड़क के किनारे उगे, नींद बुलाने वाले हेनबेन-पौधे की तरह।" दार्या अपनी चमकती हुई आँखों को आधा बन्द कर मुस्कराई तो जैसे बिजली-सी कौंध गई। दूसरे ही क्षण वह शीशे के सामने जा खड़ी हुई और रूमाल से झाँकते बाल अन्दर करते हुए, बाकी ठीकठाक

करने लगी।···

दारया···वह हमेशा ऐसी ही रही थी। इस क़िस्म की औरत के साथ कुछ और मुमकिन भी तो नहीं था। प्यार की मौत ने उसे एड़-सी दी थी और इस सदमे से उभरने के बाद उसमें ज़िन्दगी की प्यास और भी तीखी हो उठी थी। वह अपने रख-रखाव की तरफ़ ध्यान और भी ज़्यादा देने लगी थी।···

दुन्या··· मस्ती में सो रही थी। अब उसे जगाया गया। इसके बाद क्रॉस बनाकर परिवार के सभी लोग एक साथ मेज के किनारे आ बैठे। दुन्या रहम दिखलाती हुई बोली—"अरे तुम तो बूढ़े लगने लगे हो, भैया! तुम्हारे बाल भेड़िये के बालों की तरह सफ़ेद हो गए हैं।"

ग्रिगोरी ने उस पर गम्भीर दृष्टि डाली और फिर बोला—"अब बूढ़ा तो होना ही चाहिए। पर अब तो तुम्हें सयानी होना है और अपने लिए ख़ाविंद तलाश करना है।···लेकिन, तुमसे एक बात कह दूं··· मीशा कोशेवोइ को आज से तुम्हारे ख़्वाब में भी नहीं आना चाहिए··· अगर अब मैंने उसके लिए तुम्हारी तड़प की बात भी कानों-कान सुन ली तो तुम्हारा एक पैर दबाकर पीस दूंगा और दूसरा पकड़कर, मेढक की तरह, बीच से दो करके रख दूंगा। समझी?"

दुन्या का चेहरा गाजर की तरह लाल हो उठा और आंसुओं के बीच से ग्रिगोरी को एकटक घूरने लगी। ग्रिगोरी ने क्रोध से जलती निगाह उसकी तरफ़ से नहीं हटाई। गलमुच्छों के नीचे के भिंचे हुए दांतों और सिकुड़ी हुई आंखों से मेलेख़ोव ख़ानदान का असली रूप उभरकर सामने आया। वही जंगलीपन जैसे पूरी तरह साकार हो उठा।

लेकिन, दुन्या की रगों में भी तो आख़िर वही ख़ून बहता था। सो अपनी परेशानी और शर्म के पहले लहरे के गुजर जाने के बाद वह शांत स्वरों पर दृढ़ संकल्प की वाणी में बोली—"भाई, क्या तुम इतना नहीं जानते कि दिल पर किसी की हकूमत नहीं चलती?"

"जो दिल आदमी का कहा न माने, उसे काटकर फेंक देना चाहिए।" ग्रिगोरी भाव-हीन ढंग से बोला।

'लेकिन, तुम्हें इस तरह से बात नहीं करनी चाहिए, बेटे!'

इलीनीचिना ने सोचा। लेकिन, उसी बीच पैन्तेली प्रोकोफियेविच बात-चीत में टूट पड़ा और मेज पर मुट्ठी पटकते हुए बोला—"अपनी जबान क़ाबू में रख, कुतिया की बच्ची कहीं की, वरना इस तरह झोंटा पकड़-कर घसीटूंगा कि सिर पर एक बाल भी बाक़ी न बचेगा। रंडी कहीं की, मैं अभी जाकर रासें लिये आता हूं···"

"लेकिन, पापा, हमारे यहां तो रासें बाक़ी ही नहीं बची हैं। लोग सारी-की-सारी उठा ले गए हैं।" दार्या बीच में बोली और उसने दून्या पर सीधी-सादी नजर डाली।

पैन्तेली की निगाह ने उस पर आग बरसाई, और उसी तरह तेज आवाज़ में वह अपने दिल की भड़ास निकालता रहा। "मैं अभी घोड़े का तंग ले आता हूं और तुम सबके भूत झाड़ देता हूं···।"

"लाल फ़ौजी तो तंग भी उठा ले गए।" दार्या ने इस बार और तेज आवाज़ में दखल दिया, पर अपने ससुर की तरफ़ भोली निगाहों से देखती रही।

लेकिन, इतना पैन्तेली के लिए बहुत हो उठा। वह मौन रोष से नीले पड़ते हुए एक क्षण तक अपनी बहू को घूरता रहा। उसका मुंह पानी से बाहर तड़फ रही माइक मछली की तरह फैला रहा। आखिर-कार भर्राती हुई आवाज में बोला—"मुंह बंद कर···भाड़ में जा··· हज़ार शैतान ले जाएं तुझे···ऐसे लोग हैं कि मुझे एक लफ़्ज़ नहीं कहने देंगे।···कोई भला क्या कहेगा इसे ?···लेकिन, दून्या, तुम यह बात पूरी तरह समझ लो। यह हो नहीं सकता। मैं तुमसे तुम्हारे बाप की हैसियत से कहे देता हूं।···और, ग्रिगोरी ने बिल्कुल ठीक कहा है। अगर तुम ऐसे हरामज़ादे की बात भी सोचोगी तो तुम्हारी गरदन मरोड़ देना, ऐसा कुछ बुरा न रहेगा।···क्या आशिक खोजा है इसने ! खुद फाँसी के फन्दे में फँसी चिड़िया ने इसका दिल जीत लिया है। ऐसे ही आदमी को इन्सान कहते हैं ! क्या तुम्हारा खयाल है कि ऐसे जूडाज़ को मैं अपना दामाद बनाऊँगा ? अगर वह कभी मेरे हाथ लग गया, तो मैं खुद उसे मौत के घाट उतार दूंगा।···अब तुम एक जवाब उलटकर दो, फिर देखो कि मैं सरपत लाकर किस तरह तुम्हारी खाल खींचकर रख

देता हूँ।···"

"क्या कह रहे हो? तुम दिन में रोशनी लेकर पूरा अहाता मँझा आओ, तब भी तुम्हें सरपत की एक पत्ती नहीं मिलेगी।" इलीनीचिना ने आह भरकर कहा—"सारा अहाता झाड़ आओ, आग जलाने को एक पत्ती नहीं मिल सकती। यह हालत हो गई है हमारी!"

पैन्तेली को सीधी-सादी बात में भी बुराई दीखी। उसने बुढ़िया को घूरकर देखा, फिर पागल की तरह उछला और दौड़ता हुआ बाहर चला गया।

ग्रिगोरी ने अपना चम्मच नीचे रख दिया, चेहरा तौलिये से ढँका, और मुँह बंदकर हँसी से लोट-पोट होने लगा। इस बीच उसका गुस्सा उतर गया, और वह पुराने दिनों की तरह हँसा। फिर दून्या के अलावा सभी हँसी के ठहाके लगाने लगे और खाने की मेज के चारों ओर का तनाव कम हो गया। लेकिन बरसाती की सीढ़ियों पर पैन्तेली के पैरों की आहट हुई कि सभी चुप हो गए। बूढ़ा आल्डार का एक बड़ा पेड़ घसीटता, तूफ़ान की तरह, बेतहाशा कमरे में दाखिल हुआ।

"अब बोलो···यह एक शाख तुम सबके लिए काफ़ी होगी, सड़ी हुई लम्बी जबान वालो, लम्बी दुमों वाली सियारिनो···सरपत की एक पत्ती कहीं नहीं है न? तो फिर यह क्या है? और तुझे इसका मजा चखने का मौका मिलेगा, बुढ़िया चुड़ैल···तुझे मजा चखने को मिलेगा।"

पर शाख इतनी बड़ी निकली कि बावर्चीखाने में आसानी से आ नहीं सकी। एक बर्तन लाँघते हुए पैन्तेली ने एक धमाके के साथ उसे गलियारे में पटक दिया और हाँफते हुए मेज के किनारे आ बैठा।

पैन्तेली साफ-साफ बहुत बौखलाया हुआ था। सो, शूँ-शूँ करते हुए, बिना बोले खाता रहा। बाकी लोग भी चुप ही रहे। दार्या ने, हँस पड़ने के डर से, अपनी आँख मेज पर से नहीं उठाई। इलीनीचिना ने आह भरी और बहुत ही धीरे से बोली—"ओ नीले आसमान वाले, हमारे गुनाह बहुत भारी और दर्दनाक हैं।" सिर्फ़ दून्या का ही हँसने को जी न चाहा और बूढ़े के बाहर रहने पर अजीब ढंग से, कोशिश कर हँसने वाली नताल्या अब गम्भीर हो गई और विचारों में खो गई।

"ज़रा नमक देना··· रोटी उठाम्रो!" पैन्तेली ने अपनी निगाह परिवार वालों पर डालते हुए, धमकी-भरे लहजे में कहा।

और फिर परिवार का यह झगड़ा बड़े ग़ैर-मामूली ढंग से ख़त्म हुआ, यानी ग्राम सन्नाटे के इस वातावरण में मीशात्का ने कुछ ऐसा किया कि बाबा नये सिरे से भड़क उठा।···बच्चे ने बहुत बार बाबा और दादी के बीच झगड़ा होते देखा था। हर बार दादी ने बाबा को जाने कितनी-कितनी बातें सुनाई थीं। परन्तु आज वही बाबा हर एक को मार डालने की धमकी देता फिर रहा था। इस पर बच्चा तो बच्चा, उसका सन्तुलन गड़बड़ा गया, और वह अपने नथुने फड़काते हुए, गूंजती हुई आवाज़ में बोला—"बूढ़ा, भूत कहीं का! कैसी-कैसी बातें करता है! मुझे और मेरी दादी को डराता है। तेरे सिर पर एक लकड़ी ऐसी पड़नी चाहिए कि बस।"

"यह बात तूने मुझसे कही···यानी, अपने बाबा से कही?"

"हां, तुमसे कही।" मीशात्का ने बहादुरी से ऐलान किया।

"लेकिन, अपने बूढ़े बाबा के लिए ऐसे लफ़्ज इस्तेमाल करने की तेरी हिम्मत कैसे पड़ी?"

"तो, तुम इस तरह शोर क्यों करते हो? चिल्लाते क्यों हो?"

"हाथ-भर का है, मगर शैतान की ग्रांत है!" पैन्तेली ने दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए कमरे में चारों तरफ नज़र दौड़ाई "और, इतनी सारी बातें इसने तुमसे सीखी हैं, बुढ़िया···तू सिखलाती है उसे सभी कुछ।"

"कौन सिखलाता है उसे? अपने बाबा और अपने बाप की तरह ही वह खुद भी क्या कुछ क़ाबू में आने वाला है।" इलीनीचिना ने गुस्से से भरकर अपनी वकालत की।

नताल्या ने उठकर मीशात्का के चूतड़ों पर कई हाथ मारे और फिर हिदायत देती हुई बोली—"खबरदार जो बाबा से अब कभी इस तरह बात की! सुनता है कि नहीं?"

मीशात्का रोने लगा और उसने आकर ग्रिगोरी की गोद में अपना चेहरा छिपा लिया। इस पर बच्चों पर जान छिड़कने वाले पैन्तेली की

आँखों से आँसू बहने और गिर-गिरकर दाढ़ी पर आने लगे। पर, उसे उन्हें पोंछने का जैसे ख़याल ही न आया। वह तो खुशी से खिलकर बोला—"आँका बेटे, ऊपर वाला समझेगा मुझे!···बुढ़िया ने ठीक ही कहा। बच्चा सच्चे मानी में हमारा है। उसकी रगों में खालिस मेलेखोव खून बहता है। ऐसे ही मौक़ों पर खून की पहचान होती है, अब उसे कोई छुपा नहीं सकता।···मेरा नन्हा-मुन्ना, मेरा राजा···ले, मार ले। अपने बूढ़े बाबा को जिस चीज़ से चाहे मार ले। उसे दाढ़ी पकड़कर घसीट ले।" बूढ़े ने मीशात्का को ग्रिगोरी की गोद से घसीटा और सिर ऊँचा उठा लिया।

सब लोग नाश्ता खत्म कर मेज़ के पास से उठे। औरतें बरतन साफ करने लगीं। पर पैन्तेली एक सिगरेट जलाकर ग्रिगोरी से बोला—"तुम थोड़े-से वक्त के लिए घर आये हो। मुझे तुमसे इस तरह की बात कहनी नहीं चाहिए। पर सवाल यह है कि तुमसे न कहूँ तो फिर कहूँ किससे? अजनबियों से तो कहूँगा नहीं। फिर उनकी हालत हमसे कुछ बेहतर नहीं है। यानी कहना सिर्फ यह है कि सभी-कुछ ढहा और गिरा पड़ा है। अगर तुम थोड़ा हाथ लगा दो तो बाड़ ठीक कर दूँ और खलिहान के चारों तरफ छड़ लगा दूँ।"

ग्रिगोरी तुरन्त ही राजी हो गया और फिर दोनों खाने के समय तक अहाते में बाड़ दुरुस्त करते रहे।

बीच में बूढ़ा बोला—"कटाई का वक्त आ गया है, लेकिन समझ नहीं पाता कि थोड़ी-बहुत घास खरीदी जाए या न खरीदी जाए? तुम क्या सोचते हो फ़ार्म के बारे में? परेशानी उठानी भी चाहिए या नहीं? हो सकता है कि एक महीना भी न बीत पाए और लाल फ़ौजी हम पर फिर मेहरबान हो जाएँ और सारा कुछ उन शैतानों के हाथों फिर पहुँच जाए।"

"मैं नहीं कह सकता, पापा!" ग्रिगोरी ने सीधे-सीधे कहा—"मैं नहीं कह सकता कि ऊँट किस करवट बैठेगा और हार किसकी होगी और जीत किसकी। आजकल के-से जमाने में सब-कुछ बेकार ही होता है। मिसाल के लिए मेरे ससुर को ही ले लो। वे जिन्दगी-भर

खपते, रक़म भुनाते और अपना और दूसरों का खून-पसीना एक करते रहे, लेकिन बचा क्या आखिरकार ? बचे अहाते के अधजले ठूंठ और बस।"

"यही तो मैं भी सोचता रहा हूं, वेटे !" बूढ़े ने आह दबाते हुए वेटे की हां-में-हां मिलाई और फिर फ़ार्म की बात न उठाई। पर, ग्रिगोरी को खलिहान में फाटक जमाने की कोशिश में ग़ैर-मामूली ढंग से खटते देखकर उसने सिर्फ़ दोपहर के बाद मुंह खोला और खीभ और कटुता से भरे स्वर में बोला—"काम-भर का कर लो फाटक को। इतनी मशक्क़त बेकार में क्या कर रहे हो ? फाटक कोई ज़िन्दगी-भर तो ज्यों-का-त्यों खड़ा रहना नहीं है।"

ऐसा लगा जैसे कि केवल अब बूढ़े ने समझा कि पुराने ढंग से जीवन को व्यवस्थित करने की कोशिश कितनी बेमानी है।

ग्रिगोरी सूरज डूबने के जरा पहले काम खत्म कर घर लौटा। नताल्या सोने के कमरे में अकेली मिली और लिबास से जैसे किसी उत्सव या समारोह में हिस्सा लेने को तैयार दीखी। गहरी, नीली, ऊनी स्कर्ट और सीने पर कसीदेकारी वाली, हल्की नीली पॉपलीन की जैकेट खूब फ़िट नज़र आई।

नताल्या का चेहरा मोह से गुलावी और साबुन से धुलने के कारण कुछ-कुछ चमकदार रहा और वह बक्से में कुछ खखोरती रही। पर ग्रिगोरी को देखते ही उसने बक्से का ढक्कन गिरा दिया और मुस्कराती हुई सीधी हो गई। ग्रिगोरी बक्से पर ही बैठ गया और बोला—"आओ, जरा मेरे पास बैठ लो। बाद में एक साथ बैठकर बातें करने का वक्त शायद ही मिले। फिर, कल तो मैं चला ही जाऊंगा।"

नताल्या आजिज़ी से बगल में आ बैठी और थोड़ी घबराहट से भरी कनखी से पति को देखने लगी। पर, ग्रिगोरी ने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया और दुलार से बोला—"तुम तो ऐसी चिकनी-चिकनी लग रही हो, जैसे कि कभी बीमार रही ही नहीं।"

"बीमारी खत्म हो गई···उसकी कमज़ोरी भी दूर हो गई···हम औरतें बिल्लियों की तरह बदन की पोढ़ी और तकलीफ़ सहार जाने

वाली होती है।" नताल्या डरते हुए मन से मुस्कराते और सिर झुकाते बोली।

ग्रिगोरी ने बाल की लटों के बीच से उसके कान का निचला हिस्सा और गर्दन की पिलछरी-खाल देखी और पूछा—"तुम्हारे बाल गिर रहे हैं क्या ?"

"हाँ, गिर रहे हैं, जल्दी ही सिर एकदम गंजा हो जाएगा।"

"लाओ, मैं तुम्हारा सिर मूंड दूं ?" ग्रिगोरी ने सहसा ही कहा।

"क्या ?" नताल्या चौंककर बोल उठी, "लेकिन उस हालत में कैसी लगूंगी मैं ?"

"एकदम सिर मुंडवा लेना सबसे अच्छा रहेगा···नहीं मुंडवाओगी. तो फिर बाल नहीं उगेंगे।"

"माँ ने कैंची से बाल काटने का वायदा किया है।" नताल्या ने घबराहट के बीच भी मुस्कराते हुए कहा और बर्फ-सा उजला रूमाल फुर्ती से अपने सिर पर डाल लिया।

नताल्या, उसकी पत्नी, मीशात्का और पोल्युशका की माँ उसकी बग़ल में बैठी थी···उसके लिए ही तो उसने अपने को इस तरह सजाया था, साबुन से मुँह धोया था···जल्दी-जल्दी सिर पर रूमाल डाल लिया था ताकि पति को यह न दिखलाई पड़े कि बीमारी ने बाल किस तरह चौपट कर दिए हैं। उसने सिर एक तरफ़ को थोड़ा-सा इस तरह झुका रखा था कि जितनी ही दयनीय और भद्दी लग रही थी, उतनी ही खूबसूरत मालूम हो रही थी···चेहरा आन्तरिक सौन्दर्य की पावनता से जगमग कर रहा था; वैसे भी वह हमेशा ऊँचे कॉलर वाली जैकेट पहनती थी कि गर्दन को बदसूरत बनाने वाले दाग पर हमेशा पर्दा पड़ा रहे··· यह सब वह करती थी मात्र उसके लिए···ग्रिगोरी के अन्तर में स्नेह और ममता की बाढ़-सी उमड़ पड़ी। उसने कुछ प्यारी-प्यारी-सी बात उससे कहनी चाही, पर शब्द ही नहीं जुटे। बस, तो मुँह से बिना कुछ कहे, उसने उसे अपनी ओर घसीटा और उसकी चौड़ी भौंहें और उदासी-भरी आँखें चूम लीं।

आज के पहले ग्रिगोरी ने इतना दुलार उसे कभी नहीं दिया था। अक्सीनिया जिन्दगी-भर उसके रास्ते में खड़ी रही थी।

सो, नताल्या ग्रिगोरी के भाव-प्रदर्शन से हिल उठी और उत्तेजना से जलने लगी। उसने उसका हाथ उठाकर अपने होंठों पर रख लिया।

दोनों क्षण-भर मौन बैठे रहे। पश्चिम के सूरज की किरणें कमरे में उतरती रहीं और बच्चे सीढ़ियों पर खेलते रहे। पति-पत्नी के कानों में आवाज पड़ी। दार्या ने मिट्टी की कुल्हियां आवे में निकालीं और असन्तोष से भरकर सास से बोली—"तुम इतना भी नहीं कर सकतीं कि हर दिन गायों को ही दूह लिया करो? बूढ़ी गाय का दूध घटता मालूम होता है।"

इसी समय ढोर चरागाह से लौटे। गायें डकारीं। चरवाहों ने अपने रोमों से मढ़े चाबुक झटकारे। गांव का सांड बीच-बीच में फटी आवाज़ में डकारा। उसका रेशमी सीना और चिकनी सांचे में ढली-सी पीठ डांसों से लहू-लुहान लगी। उसने गुस्से से अपनी गर्दन रह-रहकर झटकी, आगे बढ़कर अपने सींगों से अस्ताखोव की सरपत की बाड़ तार-तार कर दी, ढहा दी और खुरों से रौंदकर रख दी। नताल्या ने खिड़की के बाहर नजर दौड़ाते हुए कहा—"जानते हो, यह सांड भी दोन के पार चला गया था। मां कहती थी कि गांव में आग लगते ही वह अपने ठिकाने से बाहर निकला, तैरकर सीधे दूसरे किनारे पहुंचा और बराबर नरकट की झाड़ियों के पीछे छिपा रहा।"

ग्रिगोरी कुछ न बोला। विचारों में डूबा रहा। मन-ही-मन सोचता रहा—'नताल्या की आंखों में इतनी उदासी भला क्यों और कहां से आई! कोई एक राज ऐसा है जिसे यह मेरी निगाहों से बचाना चाहती है, पर जो रह-रहकर इसकी आंखों में डूबता और उतराता है। उसकी खुशी तक में एक दर्द-सा घुला रहा है, और यह बात किसी भी तरह मेरी समझ में नहीं आई है। शायद इसे भनक मिल गई है कि मैं व्योशेन्स्काया में अक्सीनिया से मिलता रहा हूं।'···आखिरकार वह पूछ ही तो बैठा—"तुम्हारा मन इतना बुझा-बुझा-सा क्यों रहता है? किस

ग़म का पत्थर तुम्हारे सीने पर रखा रहता है, नताल्या ? बतला दो मुझे···क्यों ?"

और उसने सोचा कि वह आंसू बहायेगी, उसकी लानत-मलामत करेगी। लेकिन, यह सब-कुछ नहीं हुआ। नताल्या भय से भरे स्वर से बोली—"नहीं, नहीं, ऐसा कुछ नहीं है···तुम्हें महज लगता है ऐसा···मैं ठीक हूं···वैसे यह सच है कि मेरी तबीयत अभी पूरी तरह ठीक नहीं हुई है। मुझे चक्कर आता है और यों या कुछ उठाने के लिए झुकती हूं तो मेरी आंखों के आगे अंधेरा छा जाता है।"

ग्रिगोरी ने उत्सुकता से उसे भर-आंख देखा और फिर पूछा—"मेरी ग़ैरहाज़िरी में तुम यहां ठीक-ठाक तो रहीं ? किसी ने तुम्हें छेड़ा-छाड़ा तो नहीं ?"

"नहीं···यह तुम क्या कह रहे हो ? मैं तो बराबर बीमार ही रही हूं।" नताल्या ने ग्रिगोरी की आंखों में आंखें डालीं, हलके से मुस्करा दी और ज़रा देर चुप रहने के बाद पूछा—"तुम कल सवेरे जाओगे ?"

"तड़के ही चला जाऊंगा।"

"लेकिन, क्या एक दिन और नहीं ठहर सकते ?" एक अनिश्चित-सी आशा उसकी आवाज में बजी।

ग्रिगोरी ने जवाब में सिर हिला दिया तो पत्नी आह भरकर बोली—"अब क्या होगा···तुम्हें झब्बे लगाने पड़ेंगे ?"

"हां सो तो लगाने ही पड़ेंगे।"

"खैर, तो ट्यूनिक दे दो मुझे···मैं उजाला रहते टांक दूं।"

ग्रिगोरी ने ट्यूनिक खींच ली। वह अब भी पसीने से तर थी। पीठ और कन्धों पर जहां-जहां फ़ौजी पट्टों की रगड़ पड़ी थी, वहां-वहां पसीने के चमकदार धब्बे थे।

नताल्या ने बक्से से एक जोड़ा, बदरंग खाक़ी झब्बे निकाले और पूछा—"यही लगेंगे न ?"

"हां···यानी तुमने यह रख छोड़े थे ?"

"हमने बक्सा ज़मीन में गाड़ दिया था," सुई की आंख में तागा डालते हुए नताल्या बोली। उसने गर्द से भरी ट्यूनिक चोरों की तरह

ऊपर उठाई, नाक से लगाई और ग्रिगोरी के खारी पसीने की गंध ली। यह महक उसे बहुत ही प्यारी लगी थी।

"तुमने इसे इस तरह सूँघा क्यों ?" ग्रिगोरी ने अचरज से पूछा।

"इससे तुम्हारी महक आती है।" नताल्या ने कहा और उसकी आँखें लौ देने लगीं। उसने गालों पर सहसा ही खिलते गुलाबों को छिपाने के लिए गर्दन झुका ली और सधे हुए हाथों से सिलाई शुरू कर दी।...

ग्रिगोरी ने ट्यूनिक पहनी और कन्धे झटके। उसके चेहरे पर एक बादल-सा छा गया। नताल्या की निगाहें सराहना से भरकर उस पर जम गईं। बोली—"इन फ़ीतों को लगाने पर तो तुम और भी अच्छे लगते हो।"

लेकिन, ग्रिगोरी ने अपने बाँए कन्धे की तरफ़ कनखी से देखा और आह भरी—"मुझे ज़रा भी बुरा न लगे, अगर यह मुझे देखने को कभी न मिलें। एक बात तुम बिल्कुल नहीं समझतीं।"

दोनों, एक-दूसरे का हाथ अपने हाथ में लिये, अपने-अपने विचारों में डूबे, सोने के कमरे में सन्दूक पर चुपचाप बैठे रहे। फिर, जब साँझ का धुँधलका घिरना शुरू हुआ और इमारतों की बकाइनी परछाइयाँ ठंडाती धरती पर फैलने लगीं तो वे उठे और खाने के लिए बावर्चीखाने में आए।

और, फिर रात बीत गई। सूरज के उगने तक गरमी की बिजली आसमान में कौंधती रही। दिन के उजाले तक चेरी की बगिया की बुलबुलें रात के अँधेरे को अपनी चंचलता और कलरव से भरती रहीं। ग्रिगोरी जग गया लेकिन आँखें मूँदे उनके मधुर गीत सुनता रहा। इसके बाद, नताल्या की नींद खराब न करने के मामले में पूरी होशियारी बरतते हुए वह धीरे से उठा और कपड़े पहनकर बाहर अहाते में निकल आया।

पैन्तेली प्रोकोफ़ियेविच ने इस बीच ग्रिगोरी के घोड़े को दाना दिया और सैनिक-सुलभ कल्पना से काम लेते हुए बोला—"तुम कहो तो मैं इस पर सवार होकर चला जाऊँ और तुम्हारे रवाना होने से पहले-

पहले इसे नहला लाऊँ···क्यों ?"

"इसके बिना भी काम चल जाएगा।" ग्रिगोरी ने सुबह की ताज़गी में खिलते हुए कहा।

"नींद तो मज़े में आई ?" पिता ने पूछा।

"हाँ नींद मज़े की आई, लेकिन बुलबुलों ने जगा दिया। किस तरह इन्होंने सारी रात तूफ़ान बरपा किया ? हद है।"

पेन्तेली ने घोड़े के मुँह से थैला उतारा और मुस्कराया—"इन्हें और काम ही क्या है, बेटे ? इन आसमानी चिड़ियों को देखकर तो कभी-कभी डाह होती है···लड़ाई या बरबादी से तो बिल्कुल अनजान रहती हैं।"

प्रोखोर घोड़े पर सवार फाटक पर आया। उसका चेहरा खुशी से खिला और बातों की बरसात करने को सदा की तरह उत्सुक दीखा। उसने घोड़ा एक खम्भे से बाँधा और ग्रिगोरी की ओर बढ़ा। उसकी मोमजामे की कमीज़ पर क़ायदे का लोहा नज़र आया। कंधे पर लगे झब्बे नए-जैसे लगे। प्रोखोर पास आते हुए चिल्लाकर बोला—"तो तुमने झब्बे भी लगा लिये, ग्रिगोरी पेन्तेलेयेविच !" कम्बख्त जैसे कि हमारा इन्तज़ार करते रहे हैं···हम इन्हें इस्तेमाल कर सकते हैं लेकिन इनका कुछ बना-बिगाड़ नहीं सकते। यह तो ज़िन्दगी-भर चलते चले जायेंगे। मैंने अपनी बीवी से कहा—"बेवकूफ़ कहीं की, इस तरह मत सी कि ये कभी कहीं गिरें ही नहीं। तू तो इन्हें सिर्फ़ इस तरह टाँक कि ये कहीं हवा में उड़ न जाएँ, और बस।"···तुम तो हम लोगों की हालत अच्छी तरह जानते-समझते हो। अगर कहीं क़ैदी बनने की नौबत आई तो दुश्मन देखते ही समझ जायेंगे कि यह फ़ौजी अफ़सर भले ही न हो, मगर सीनियर नॉन-कमीशंड तो है ही। कहेगा—"क्या कहने हैं···अपनी तरक़्क़ी करवाना तो आपको खूब ही आता था···तो, अब ज़रा फाँसी का फन्दा भी अपनी गर्दन में डालना सीख लीजिए।··· ज़रा देखो कि मेरे झब्बे कैसे झूल रहे हैं। देखकर हँसी आती है।"

प्रोखोर के झब्बे इतने ढीले टँके हुए थे कि क्या कहिए। नतीजा यह कि अपनी जगह पर तो जैसे थे ही नहीं।

पैन्तेली ने हँसी का ठहाका लगाया। वक्त की झकझोर से अनजाने उसके दांत दाढ़ी के बालों के बीच दमके।

"तुम भी अपने को फ़ौजी कहते हो। यानी, अगर खतरे का कोई भी निशान तुम्हें नजर आएगा तो तुम झब्बे नोचकर फेंक दोगे, है न?"

"और, तुम क्या सोचते हो?" प्रोखोर हँसा। ग्रिगोरी मुस्कराते हुए अपने पापा से बोला—"देखा कैसा अर्दली मुहय्या किया है मैंने अपने लिए? अगर मैं मुसीबत में फँस जाऊँ तो भी इसके साथ मेरा बालबाँका नही होगा।"

"यह तो सब बहुत ठीक है, ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच! लेकिन, तुम जानते हो कि सूरत क्या है—आज तुम मरोगे तो कल मौत मुझे बुलायेगी।" प्रोखोर ने अपनी ओर से सफाई देते हुए कहा, देखते-देखते अपने झब्बे नोच डाले और लापरवाही से अपनी जेब में ठूँसते हुए बोला—"मोर्चे के पास पहुँचने पर फिर टाँक लूँगा इन्हें।"

ग्रिगोरी ने जल्दी-जल्दी नाश्ता किया और इसके बाद अपने परिवार से बिदा ली।

"माँ मेरी का हाथ हमेशा तुम्हारे सिर पर रहे।" इलीनीचिना ने अपने बेटे को चूमते समय बहुत भाव भरे ढंग से कहा—"अब एक तुम्ही तो बाक़ी रहे हो···"

"अच्छा, देखो···आँसू-वाँसू मत बहाओ···कौन जाने क्या अच्छा-बुरा हो···सफ़र लम्बा है।" ग्रिगोरी ने काँपती हुई आवाज में कहा और अपने घोड़े की ओर बढ़ा।

नताल्या, इलीनीचिना का काला तिकोना रूमाल सिर पर डालकर बाहर निकली और फाटक के पार तक गई। बच्चे उसकी स्कर्ट से लिपटे रहे। उनमे भी पोल्युश्का इस तरह सिसकने लगी कि धीरज बंधाना कठिन हो गया। होते-होते आँसुओं से उसका गला रुँधने लगा और वह माँ से मिन्नत करती हुई बोली—"पापा को मत जाने दो··· पापा को जाने मत दो, माँ···वे लड़ाई में मार डाले जायेंगे···पापा, तुम लड़ाई मे मत जाओ।"

मीशात्का के भी होंठ फड़के, पर वह रोया नहीं। उसने बड़ी हिम्मत से मन पर काबू रखा और नाराज होकर नन्हीं-मुन्नी बहन से बोला—"डरके मत बहा···पगली कहीं की। लड़ाई में हर आदमी नहीं मर जाता।"

बाबा के शब्द उसके अन्तर में गहराई से अंकित रहे। बाबा ने कभी कहा था कि कज्जाक कभी नहीं रोते और कज्जाकों की आँखों में आंसू आने से बड़ी शर्म की बात और कोई दूसरी नहीं।

इस पर भी जब ग्रिगोरी घोड़े पर सवार हुआ और उसने मीशात्का को ऊपर उठाकर चूमा तो बच्चे को पापा की गीली पलक देखकर बड़ा ही अचरज हुआ। इसके बाद उसके धैर्य का बांध ढह गया और आंसू आंखों से बरसात की बूंदों की तरह टपाटप चूने लगे। उसने पिता के सीने और सीने के चमड़े की पट्टियों में मुंह छिपा लिया और अधीरता से बोला—"बाबा जाएं और लड़ें···हमें उनकी जरूरत नहीं—पर, मैं नहीं चाहता कि तुम, पापा···।"

ग्रिगोरी ने बेटे को सावधानी से जमीन पर उतारा, अपने हाथ के पिछले हिस्से से उसकी आंखों के आंसू पोंछे और घोड़े को हलके से ललकारा।

अब तक जाने कितनी बार ग्रिगोरी घोड़े पर सवार होकर घर से विदा हुआ था और उसका घोड़ा हवा से बातें करता दूर चला गया था। अब तक जाने कितनी बार उसने बने-बनाये रास्ते और बिना रास्तों वाला स्तेपी मँझाया था। इस तरह जाने कितनी बार वह उस मोर्चे पर पहुंचा था, जहां मनहूस मौत कज्जाकों पर अपनी मुहर मारती थी और जहां कज्जाक गीत के अनुसार हर दिन, हर घंटे दहशत और दर्द का बाजार गर्म रहता था। लेकिन, उस दिन सुबह की सुहानी वेला में भी वह जिस भारी मन से गांव से विदा हुआ, वह उसके लिए एकदम नया अनुभव रहा।

उसके मन पर जाने कितनी धुंधली-धुंधली-सी अटकलों का बोझ रहा। उनके कारण वह जाने कितना चिंतित रहा और जाने कितनी-कितनी बातें पहले से ही सोचता रहा। इस तरह काठी पर

रासें टिकाए उसने पहाड़ी की चोटी तक की मंजिल तय की। परन्तु फिर जहां गर्द से नहाई सड़क हवा-चक्की की तरफ़ कटी, उसने गर्दन मोड़ी। केवल नतालया फाटक के पास खड़ी दीखी। समीर के ताजा झोंके काला मातमी रूमाल उसके हाथ से छीन-छीनकर भागते रहे।

हवा बादलों पर कोड़ों पर कोड़े जमाती रही। बादलों के मुंह झाग-झाग होते रहे। और वे आकाश के जमे हुए, नीलम के तालाब में आगे-ही-आगे बढ़ते गये। क्षितिज के चंचल चक्के पर धुंध थरथराने लगी। घोड़े क़दम-चाल से बढ़ते गये। प्रोखोर काठी पर हिलते-डुलते ऊँघा गया। ग्रिगोरी ने दांत भींचते हुए, बार-बार पीछे मुड़कर देखा तो सरपत के हरे झुरमुट, झटके से मोड़ लेती दोन का हवा में फड़फड़ाता रेशमी रिबन, और हवाचक्की के धीरे-धीरे घूमते पाल उसे थोड़ी देर तक नजर आते रहे। फिर रास्ता तेजी से दाईं ओर को मुड़ गया। इसके साथ ही झाड़-झाड़ियों से भरा किनारा, दोन और हवा चक्की आदि सभी कुछ अनाज के रौंदे हुए खेतों के पीछे अदृश्य हो गया।...ग्रिगोरी सीटी बजाने लगा। उसने घोड़े की पसीने की झलाझल बूंदों से भरी भूरी गर्दन पर नजर जमा ली और फिर एक बार भी पीछे मुड़कर नहीं देखा।......

उसे खयाल आया—'मौत ले जाए इस लड़ाई को! पहले लड़ाई चिर के किनारे-किनारे चली, फिर दोन के तटों पर बढ़ी, और अब यह बिजली कौंधेगी खोपर के ऊपर, मेदवेदित्सा के ऊपर और बुजुलुक के ऊपर। क्या फ़र्क पड़ता है! दुश्मन कहीं भी मुझे अपनी गोली का शिकार बना सकता है और मैं कहीं भी ढेर हो सकता हूं।"

: ९ :

लड़ाई उस्त-मेदवेदित्स्काया के जिला केन्द्र के आसपास चलती रही। ग्रिगोरी गर्मी वाली सड़क छोड़कर हेतमान की चौड़ी सड़क पर मुड़ा कि तोपों की गरज की हलकी-हलकी आवाज़ सबसे पहले उसके कानों में पड़ी।

इस चौड़ी-बड़ी सड़क पर जहां-तहां ऐसे निशान नज़र आए,

जिनसे लगा कि कम्यूनिस्ट हड़बड़ाकर पीछे भागे हैं। दो पहियों वाली गाड़ियाँ और चार पहियों वाली, एक-एक सीट की ब्रिस्काएँ बीच-बीच में पड़ी मिलीं। एक खास झोंपड़ी के पार खड्ड में एक तोप खड़ी दीखी। दूसरी तोप के गोले ने उसका धुरा तोड़ दिया और नली मोड़ दी थी। अगले भाग से जुड़े बम तिरछे होकर टुकड़े-टुकड़े हो गये थे। खड्ड से आधे वर्स्ट की दूरी पर खार से भरे दलदल की बोनी धूप से झुलसी घास पर फौजियों की लाशें पड़ी थीं। इनके बदनों पर खाकी कमीज और पतलून, पिंडलियों पर कसी हुई पट्टियाँ और पैरों में भारी नाल जड़े जूते थे। ये सारे लाल सैनिक थे, कज्जाक-घुड़सवारों की पकड़ में आ गये थे और उन्होंने इन्हें काटकर फेंक दिया था।

इन लाशों की बगल से गुजरते ही यह चीज ग्रिगोरी की समझ में फ़ौरन ही आ गई। फ़ौजियों की चिकटी कमीजों पर खून की धारें जम गई थीं। फिर यह कि पड़े वे यों थे जैसे कि हँसिये से कटी घास का ढेर लगा हो। हाँ, कज्जाकों ने लाल फ़ौजियों के कपड़े न उतारे थे। शायद उन्हें दुश्मन का पीछा करने की जल्दी थी और यह काम ज्यादा जरूरी था।

मगर, एक कज्जाक भी हॉथर्न की एक झाड़ी के पास पड़ा हुआ था। उसके पैर फैले हुए थे और उसके पतलून की लाल पट्टियाँ दूर से नजर आ रही थीं। थोड़ी दूर पर लाख के हल्के रंग का एक घोड़ा पड़ा था। उसकी काठी पुरानी और टूटी-फूटी थी और उसके उभरे हुए हिस्से गेरू से रंगे हुए थे।

ग्रिगोरी और प्रोखोर के घोड़े थकान महसूस करने लगे। चारे-दाने का समय हो चुका था फिर भी ग्रिगोरी ने इस जगह रुकना ठीक न समझा। क्योंकि कुछ ही दिन पहले वहाँ लड़ाई हो चुकी थी। एक वर्स्ट का फ़ासला तय करने के बाद उसने घोड़ा एक नाले में उतारा और रास खींची। पास ही एक ताल नजर आया। उसके बाँध की बुनियादें तक बह गई समझ पड़ीं। प्रोखोर ढहते और चटखते कगार की तरफ बढ़ा। लेकिन फिर अचानक ही लौट पड़ा।

"क्या बात है ?" ग्रिगोरी ने पूछा।

"जरा घोड़ा और पास लाओ और देखो।"

ग्रिगोरी ने अपना घोड़ा बांध की तरफ बढ़ाया तो एक मुर्दा औरत कीचड़ में पड़ी देखी। औरत का चेहरा उसकी गहरे रंग की स्कर्ट के निचले सिरे से ढका लगा। धूप से संवराई पिंडलियां और गढ़ों से भरे घुटनों वाले उसके पैर बड़ी ही बेहयाई और बेहूदगी से फैले दीखे। बायां हाथ पीठ के नीचे दबा और ऐंठा रहा।

ग्रिगोरी तुरन्त ही घोड़े से उतरा, अपनी टोपी उतारी और स्कर्ट से औरत का बदन ढक दिया। जवानी से भरपूर, सांवला चेहरा मृत्यु के बाद भी प्यारा लगा। दर्द से तनी भौंहों के नीचे अधमुंदी आंखों की पुतलियां हलके-हलके चमकती रहीं। कोमल चेहरे पर भिंचे हुए दांत सीपियों-से दमकते रहे। गाल पर झूलती बाल की एक गुच्छनुमा लट घास पर दबी रही। मौतगाजों पर, उड़ने वाली, केसरिया पीली झाइयां चुनने में व्यस्त दीखी और उतावली चीटियां वहां रेंगती मिली।

"कुत्ते के पिल्लों ने कैसा हुस्न खाक में मिलाकर रख दिया !" प्रोखोर धीमे से बोला, एक क्षण शांत रहा और फिर जोर से थूकते हुए कहने लगा—"आगे बढ़ो ईसा के लिए ! मुझसे यह नज़ारा अब और देखा नही जाता। मेरा दिल गड़बड़ाता है।"

"हम दफना दें इस औरत को…क्या खयाल है?" ग्रिगोरी ने पूछा।

प्रोखोर ने तड़ से कहा—"अभी रास्ते में जितने मुर्दे मिलेंगे उन सबको दफनाना हमारा काम होगा ?…कुछ बूढ़े खूसटों को यागोदनोये में दफनाया, और अब इस औरत को यहां दफनाना पड़ेगा ! …अगर हमने तमाम लाशें दफनाने का ठेका ले लिया तो हाथ में घट्टों के लिए जगह न रह जाएगी…वैसे, अगर यह इरादा हम कर ही लें तो सवाल यह है कि क़ब्र किस चीज़ से खोदें ? तलवार से तो क़ब्र खोदी नही जाती, मेरे भाई ! और, धूप से तपी हुई ज़मीन है कि दो फुट की गहराई तक पत्थर की तरह कड़ी है।"

यानी उसे वहां से भागने की ऐसी जल्दी रही कि उसने अपने

बूट तक रकाबों में मुश्किल से ही अटकाए।

वे दोनों एक बार फिर घोड़ों पर बैठे और फिर किसी विचार में डूबे-ही-डूबे प्रोखोर ने ग्रिगोरी से पूछा—"पैन्तेलेयेविच, क्या खयाल है, क्या अभी तक दुश्मन का खून इतना नहीं बहा कि काफ़ी कहा जाता?"

"काफ़ी बहा।"

"तो, तुम सोचते हो कि यह लड़ाई अब जल्दी ही खत्म हो जाएगी?"

"लड़ाई तो खत्म तभी होगी जब दुश्मन हमें चूर-चूर कर डालेगा।"

"क्या हँसी-खुशी से भरी जिन्दगी नसीब हुई है हमें! शैतान पर मौत टूटे! ऐसे में तो जी करता है कि जितनी ही जल्दी दुश्मन हमें चूर-चूर करें, उतना ही अच्छा। जर्मनी की लड़ाई में फ़ौजी गोली से अपनी एक उंगली उड़ा लेता था और उसे घर लौटने की इजाजत मिल जाती थी। मगर, आज अपना हाथ काटकर रख दो, तब भी कोई फर्क नहीं पड़ेगा। लड़ाई तो लड़नी ही पड़ेगी और भेजने वाले मोर्चे पर भेजकर ही दम लेंगे…कोई निकम्मा हो, लंगड़ा हो, लूला हो, अंधा हो, कोई फ़र्क नहीं पड़ता…सिर्फ़ यह है कि उसके दो पैर हिलने-डुलने चाहियें…यही तरीक़ा है लड़ाई खत्म करने का…इस तरह खत्म होगी लड़ाई! नेस्तनाबूद हो जायें वे सब-के-सब।" प्रोखोर ने मायूसी से कहा, सड़क से घोड़ा मोड़ा, नीचे उतरा, कुछ बुदबुदाया और घोड़े का तंग ढीला करने लगा।…

आधी रात होते-होते वे उस्त-मेदवेदित्स्काया के पास की झोंपड़ी पर पहुँचे तो गाँव की सरहद पर तैनात, तीसरी रेजीमेंट की एक टुकड़ी ने उन्हें रोका। पर दूसरे ही क्षण कज्जाकों ने अपने डिविजनल-कमांडर को पहचाना और कहा—"हुजूर, डिविजनल-स्टाफ़ ने इसी गाँव में पड़ाव डाल रखा है और कैप्टन कोपीलोव बड़ी ही बेताबी से आपका इन्तजार कर रहे हैं।" इसके साथ ही चौकी के बातूनी कमांडर ने पहुँचाने के खयाल से एक कज्जाक, ग्रिगोरी के साथ किया, और आखिरी बात कहता-सा बोला—"कम्यूनिस्टों ने अपने कदम

बड़ी मजबूती से जमा रखे हैं, ग्रिगोरी पेन्तेलेयेविच। मेरा ख़याल है कि उस्त-मेदवेदित्स्काया लेने में वक़्त लग जाएगा हमें···लेकिन, इस पर भी कौन कह सकता है कि···? सुना है कि मोरोज़ोव्स्काया से ब्रिटिश फ़ौजें आ रही हैं। आपने कुछ सुना है इस बारे में ?"

"नहीं।" ग्रिगोरी ने अपने घोड़े को आगे बढ़ने का इशारा देते हुए कहा।

ग्रिगोरी स्टाफ़ के पड़ाव वाली इमारत के पास पहुँचा तो उसे सभी झिलमिलियाँ पूरी तरह बन्द मिलीं। उसने घर खाली समझा। पर वह बरामदे में घुसा कि लोगों के काफ़ी ज़ोर-ज़ोर से बातें करने की आवाज़ उसके कानों में पड़ी। दूसरी ओर, सोने के कमरे की छत के बड़े लैम्प की रोशनी सामने पड़ी तो अभी-अभी बाहर के अँधेरे से आने के कारण उसकी आँखें चौंधिया गईं। साथ ही तम्बाकू की तेज़ और तीखी बास उसके नथुनों में गड़ने लगी।···

"आखिरकार लौट आए तुम !" कोपीलोव ने मेज़ के ऊपर उमड़ते नीले बादल को चीरकर बाहर आते और खुशी से खिलते हुए कहा—"वैसे तुमने बड़ा इन्तज़ार करवाया भाई !"

ग्रिगोरी ने सबका अभिवादन किया, टोपी और बरानकोट उतारा, मेज़ के पास पहुँचा और माथा सिकोड़ते हुए बोला—"सिगरेट के धुएँ से घर भरकर रख दिया है तुम लोगों ने। साँस लेना मुश्किल है। कोई एक खिड़की नहीं खोल सकते !"

कोपीलोव की बग़ल में बैठे खारलाम्पी येरमाकोव ने मुस्कराकर जवाब दिया—"हमारी नाक तो आदी हो गई है··· हमें तो अब महसूस तक नहीं होता।" इस पर ग्रिगोरी ने कोहनी से खिड़की और झिलमिली खोल दी। दूसरे ही क्षण रात की ताज़ा हवा का झोंका कमरे में बरबस घुस आया। लैम्प की लौ भड़की और ठंडी पड़ गई।

"वाह···यह धुआँ बाहर निकालने का अच्छा तरीक़ा है। तुमने इस तरह खिड़की क्यों खोल दी आखिर ?" कोपीलोव ने असंतोष से कहा—"दियासलाई है किसी के पास ?···ज़रा ख़याल से···नक़्शे के दायें स्याही-भरी दवात है।"

लोगों ने लैम्प जलाया और खिड़की की संध भरी। कोपीलोव जल्दी-जल्दी सारी स्थिति बयान करने लगा—"कॉमरेड मेलेखोव, इस वक्त दोनों की हालत यह: मालूम कि लाल फौजियों ने उस्त-मेदवेदित्स्काया अपने हाथों में कर लिया है और उसे तीन तरफ़ से कोई चार हजार संगीनबंद फ़ौजियों से घेर रखा है। तोपों और मशीनगनों की उनके पास कमी नहीं है। खाइयां कई जगह वे खोद चुके हैं। दोन के किनारे के ऊंचाई के इलाके उनके कब्जे में हैं। जहां तक उनकी अपनी बात है, वे सब पहुंच के बाहर तो नहीं हैं, लेकिन उन तक पहुंचना आसान जरूर ही नहीं है। जहां तक हमारी बात है, जनरल-फ़ितगालोरोव की कमान के डिविजन, और दो दूसरे अफ़सरों की एकाएक हमला करने वाली तूफ़ानी टुकड़ियों के अलावा बोगातिरयोव का छठा ब्रिगेड और हमारी पहली डिवीजन भी आ गई है। लेकिन डिवीजन पूरी नहीं है। पैदल रेजीमेंट गायब है। अब तक उस्त खोपरस्काया के पास कहीं बतलाया जाता है। पर, घुड़सवार-टुकड़ियां सभी आ गई हैं, हालांकि स्क्वैड्रनों में लोग पूरे नहीं हैं।

"मिसाल के लिए मेरी रेजीमेंट के तीसरे स्क्वैड्रन में इस वक्त सिर्फ़ अड़तीस कज्जाक हैं।" चौथी रेजीमेंट के कमाण्डर दुदारेव ने कहा।

"पहले कितने थे?" येरमाकोव ने पूछा।

"इक्यानवे।"

"आपने स्क्वैड्रन टूटने क्यों दिया? आप अपने को कमाण्डर कहते हैं?" ग्रिगोरी ने त्योरी चढ़ाते और उँगलियों से मेज़ पटपटाते हुए पूछा।

"यह तो ठीक है···लेकिन उन्हें रोककर कौन रखता? वे तो अलग-अलग गांवों में बिखरे और फिर घोड़ों पर सवार होकर अपने गांव-घर के लोगों से मिलने-मिलाने चल दिए। मगर, वे लोग वापस आ जायेंगे। तीन तो आज ही लौट आए।"

कोपीलोव ने नक्शा ग्रिगोरी की तरफ़ बढ़ाया। अपनी तर्जनी से सेनाओं की स्थिति दिखलाई और बोला—"हमने अभी तक कोई हमला नहीं किया है। दूसरी रेजीमेंट कल इस इलाके के खिलाफ़ पैदल बढ़ी, मगर उसे कोई कामयाबी नहीं मिली।"

"हमारे बहुत लोग मारे गए ?"

रेजीमेंट के कमाण्डर की रिपोर्ट तो यह है कि कल हमारे छब्बीस फ़ौजी या तो मारे गए या जख्मी हो गए। वैसे अब मैं अपनी फ़ौजों का दुश्मन की फ़ौजों से मुक़ाबला करूं तो कहना पड़ेगा कि गिनती में हमारे फ़ौजी ज्यादा हैं। लेकिन एक तो पैदल सेना की मदद के लिए हमारे पास मशीनगनें काफ़ी नहीं हैं, दूसरे तोप के गोलों की सप्लाई की हालत अच्छी नहीं है। हथियारों और लड़ाई के बाक़ी सामान के अफ़सर ने मिलते ही चार सौ गोले और डेढ लाख कारतूस हमारे पास भेजने का वायदा किया है। लेकिन, बात तो यह है कि जब उसे खुद मिलेगा तब वह हमें देगा। यानी तब की तब से है। लेकिन, हमें तो अभी कल ही हमला करना है, और इसीलिए जनरल फ़ितशालोरोव ने अपनी तरफ़ से हुक्म दे दिया है। उनकी तजवीज़ है कि तूफ़ानी टुकड़ियों की मदद के लिए एक रेजीमेंट अलग कर देना चाहिए। इन टुकड़ियों ने कल हमला बोला और इनके कितने ही फ़ौजी खेत रहे। लेकिन, यह तो कहना ही पड़ेगा कि लोगों ने दुश्मन के लोहे से लोहा बजाकर रख दिया। खैर, तो फ़ितशालोरोव का कहना है कि हमें मोर्चे का बायाँ बाज़ू मज़बूत बनाना चाहिए और हमला यहीं से करना चाहिए, समझे ! बात यह है कि यहाँ का इलाक़ा ऐसा है कि इस तरफ़ से दो सौ से तीन सौ क़दमों तक दुश्मन की क़तारों में घुसा जा सकता है। उसका ऐडजुटेंट अभी-अभी ही यहाँ से गया है। पैग़ाम लाया था कि जनरल ने कल सवा छः बजे हम दोनों को बुलाया है। बातचीत होगी कि लड़ाई की कार्रवाइयों के बीच तालमेल कैसे बिठाया जाए। वह और उसके अफ़सर इस वक़्त बोलशोइ-शेनिन नाम के गांव में हैं। फ़िलहाल, इस वक़्त तो सबसे जरूरी काम है, सेव्याकोवो से उसकी कुमुक आने के पहले दुश्मन को फ़ौरन ही पीछे ढकेलना और ठेलना। दोन के दूर के इलाके में हमारी फ़ौजें कोई खास बहादुरी दिखा नहीं रहीं।···चौथी डिविज़न ने खोपर पार कर ली है, लेकिन कम्यू-निस्टों ने सारी जगह लाल फ़ौज के मज़बूत फ़ौजियों से पाट दी है और स्टेशन को जाने वाले सभी रास्ते रोक रखे हैं। लेकिन, इसके साथ ही इसके बीच उन्होंने दोन पर पीपों का एक पुल बना लिया है और वे

लड़ाई का सामान और रिज़र्व फ़ौजें उस्त मेदवेदित्स्काया से जल्दी-से-जल्दी हटा रहे हैं।"

"कज्जाकों का कहना है कि हमारे दोस्त मुल्कों की फ़ौजें आ रही हैं और रास्ते में हैं···क्या यह बात ठीक है?"

"अफ़वाह है कि कई अंग्रेजी तोपखाने और टैंक चेरनीशेवस्की से इस जगह के लिए रवाना हो गए हैं। पर पूछा जाता है कि ये टैंक दोन के उस पार से, इस पार कैसे लाए जाएँगे। मेरा खयाल है कि इस तरह की बातें सिर्फ़ टैंकों के बारे में की जा रही हैं, और एक अर्से से हर तरफ़ चल रही हैं।"

कमरे में देर तक सन्नाटा रहा।

कोपीलोव ने अपनी अफ़सरी, भूरी ट्यूनिक के बटन खोले, अपने भरे हुए, दाढ़ी की खूँटियों से भरपूर गाल हाथों पर टिकाए और विचारों में डूबे हुए, बुझी हुई सिगरेट चबाने लगा। उसकी काली, गोल आँखें थकान के कारण अधमुँदी हो गईं। रातोंरात न सोने का असर खुशनुमा नाक-नक़्शे और चेहरे पर साफ़ नज़र आया।

एक ज़माने में यह व्यक्ति गिरजे से सम्बद्ध स्कूल में पढ़ाता था। उन दिनों, वह इतवारों को ज़िले के व्यापारियों का मेहमान होता और उनके और उनकी पत्नियों के साथ दाँव लगाकर ताश खेलता। बजाने पर आता तो गिटार बहुत अच्छा बजाता और खुशमिज़ाज सोहबत में चार चाँद लगाने वाला जवान माना जाता।···

फिर, उसने एक जवान अध्यापिका से शादी कर ली। उसकी ज़िन्दगी एक बँधे-बँधाए साँचे में ढलती रही, और वह उसी प्रकार ढलती चली जाती, यानी पेंशन के वक़्त तक वह पढ़ाने का काम एक ढंग-से करता चला जाता, परन्तु, विश्व-युद्ध छिड़ा तो उसका नाम फ़ौज में लिख लिया गया। फिर, कैडेटों के फ़ौजी कालेज में उसने ट्रेनिंग पाई और इसके बाद एक कज्जाक रेजीमेंट के साथ उसे मोर्चे पर भेज दिया गया। वैसे लड़ाई ने उसके चरित्र या नाक-नक़्शे में किसी तरह का कोई उलट-फेर न किया। उसके पूरे व्यक्तित्व, मधुर चेहरे, तलवार लगाने के ढंग और मातहतों से बात करने के लहजे में हमेशा कुछ

ऐसा रहा जिससे छोटे क़द के बावजूद वह लोगों को बड़ा ही प्यारा और बुनियादी तौर पर बातहज़ीब लगा।

वैसे उसकी आवाज़ में फ़ौजियों की कमान वाली आवाज़ का ज़ोर न था···वर्दी वह यों पहनता था, जैसे कि बोरा हो···और, मोर्चे पर तीन साल बिताने के बाद भी उसमें फ़ौजी रोबदाब कहीं से न आया था। देखने से लगता था कि सुयोग की बात है कि यह आदमी फ़ौज में आ गया है, और सच्चे फ़ौजी के मुक़ाबले फौजी लिबास से लैस कोई हट्टा-कट्टा शहरी ही ज्यादा है।···इस पर भी कज्जाक उसका बड़ा आदर करते थे और कान्फ्रेंसों में वह जो कुछ कहता था, उसे बड़े ध्यान से सुनते थे।

विद्रोही कज्ज़ाकों की कमान उसके गम्भीर मस्तिष्क, सहज-स्वभाव और सच्ची बहादुरी की बड़ी क़द्र करती थी। बहादुरी वह लड़ाई में एक से अधिक बार दिखला चुका था।

ग्रिगोरी का पूर्व चीफ़ ऑफ़ स्टॉफ़, एनसिग्न-क्रूज़ीलिन नाम का एक बे-पढ़ा-लिखा, ज़ाहिल फ़ौजी था और चिर की लड़ाई में मारा गया था। उसके बाद स्टाफ़ कोपीलोव ने सम्हाला और अपने कर्तव्यों का बड़ी ही समझ-बूझ के साथ पालन किया था। उसे अपने काम में बड़ी सफलता मिली थी। इस समय वह हमले की कारँवाइयों के नक़्शे उसी ध्यान से बनाता था, जिस मनोयोग से कभी विद्यार्थियों की कापियाँ सही करता था।···

इस पर भी ग्रिगोरी का मुँह खुलते ही और ज़रूरत महसूस करते ही उसने फ़ौजी दफ़्तर को उसकी अपनी किस्मत पर छोड़ा, घोड़े पर सवार होकर रेजीमेंट की कमान सम्हाली और अपने नेतृत्व में उसे लड़ाई के मैदान में ले गया।

ग्रिगोरी ने अपने नये चीफ़-ऑफ़-स्टॉफ़ के मामले में पहले तो अपने पहले के बने-बनाए विचारों का सहारा लिया। लेकिन, दो महीने के अन्दर-अन्दर वह उसे और अच्छी तरह जान गया। नतीजा यह कि एक दिन लड़ाई के बाद उससे दोटूक बात करते हुए बोला—"मैं तो तुम्हारे बारे में खासी बुरी राय रखता था, कोपीलोव! लेकिन, अब

समझता हूँ कि मैं ग़लती पर था। इसलिए चाहता हूँ कि अगर हो सके तो अब तक का मेरा व्यवहार भूल जाओ।"

कोपीलोव मुस्कराया। उसने कोई जवाब नहीं दिया, पर ग्रिगोरी के इस तरह अपनी गलती मान लेने पर थोड़ा फूल जरूर उठा।···

उसमें यश की प्यास न थी। राजनीति के मामले में उसकी धारणाएँ निश्चित न थीं। लड़ाई को वह 'लाज़िमी बुराई' मानता था और इसे जल्द-से-जल्द ख़त्म कर देना चाहता था। इसीलिए वह उस्तमेदवेदित्स्काया को हथियाने की योजनाओं पर अधिक विचार न कर रहा था। अपने परिवार के लोगों को इधर-उधर से घर बुला रहा था और ख़ुद भी सोच रहा था कि मौक़ा लगे तो महीना-डेढ़-महीना जाकर गाँव में बिताया जाए।

ग्रिगोरी कोपीलोव को बहुत देर तक एकटक घूरता रहा और फिर उठकर खड़ा हो गया। "अच्छा भाइयो और अतामानो, अब अपने-अपने क्वार्टर पर चलकर सोया जाए। उस्त-मेदवेदित्स्काया के लेने-न-लेने पर बैठकर दिमाग़ खपाना बिल्कुल बेकार है। यह काम जनरलों का है और वे करेंगे। हम कल फ़ितशालोरोव के पास जाएँगे कि वह हम अक्ल के मारों को थोड़ी अक्ल दे। लेकिन जहाँ तक दूसरी रेजीमेंट का सवाल है, मेरा तो ख़याल है कि अब भी हक़ हासिल है। हमें रेजीमेंटल कमांडर दुदारेव को नीचा ओहदा देकर, उससे तमगे, पट्टियाँ वग़ैरह सभी-कुछ छीन लेना चाहिए।···"

"और खीर का राशन ?" येरमाकोव ने बीच में बात काटी।

"नहीं, मैं मजाक नहीं कर रहा।" ग्रिगोरी कहता गया। "हमें उसे आज ही रेजीमेंटल कमांडर से स्क्वेड्रन कमांडर बना देना चाहिए, और खारलाम्पी को उसकी जगह दे देनी चाहिए। येरमाकोव, तुम फ़ौरन ही जाकर रेजीमेंट की कमान सम्हाल लो। और अगली कार्रवाई के लिए इन्तजार करो। कल सुबह तक तुम्हें हमारी हिदायतें मिल जायेंगी। और, कमान सम्हालने का हुक्म तुम कोपीलोव से लिखवाकर, इसी वक्त, साथ ही लेते जाओ। जहाँ तक मेरा दिमाग़ काम करता है, दुदारेव तो रेजीमेंट शायद ही कभी सम्हाल पाए। दिमाग़ नाम की चीज तो उसे जैसे मिली ही नहीं; और, मुझे डर यह है कि कहीं वह ऐसा न करे

कि रास्ता खुल जाए और दुश्मन कज्जाक पर नये सिरे से हमला कर दें। तुम तो जानते हो, पैदल लड़ाई किसे कहते हैं···लोगों की जानें योंही चली जाना कोई बड़ी बात नहीं है अगर कमांडर को यह पता न हो कि वह कर क्या रहा है।"

"यह बात ठीक है। मेरा भी खयाल है कि दुदारेव से यह ओहदा छीनकर उसे नीची जगह दे दी जानी चाहिए।" कोपीलोव ने ग्रिगोरी का समर्थन किया।

"लेकिन, येरमाकोव, तुम क्या इस फैसले के खिलाफ़ हो ?" ग्रिगोरी ने येरमाकोव के चेहरे पर असन्तोष की झलक देखकर पूछा।

"नहीं···ऐसी कोई बात नहीं···मैंने तो ऐसा कुछ कहा नहीं··· क्या भौंहें ऊपर उठाने तक की इजाज़त नहीं है यहां ?"

"यह तो और भी अच्छा है कि येरमाकोव इस तजवीज़ के खिलाफ़ नहीं है। फ़िलहाल, र्याबचिकोव इसकी घुड़सवार रेजीमेंट सम्हालेगा।···कोपीलोव, हुक्म लिख दो और फिर आराम कर लो। सुबह छः बजे उठकर चलेंगे और इस जनरल को ज़रा देखेंगे-समझेंगे। ···इस वक्त मैं चार अर्दली अपने साथ लिये जा रहा हूं।"

कोपीलोव ने अचरज से आंखें ऊपर कीं—"इतने अर्दलियों की तुम्हें भला क्या ज़रूरत ?"

"नुमाइश करनी है। आखिरकार हम कोई छोटे-मोटे लोग तो नहीं हैं···हम एक डिवीज़न की कमान सम्हालते हैं।" ग्रिगोरी ने हँसकर कन्धे सीधे किये, बरानकोट लटकाया और दरवाज़े की ओर बढ़ा।···

ग्रिगोरी ने न बूट उतारा और न बरानकोट। वह वैसे ही एक शेड के नीचे लेट रहा और घोड़े की पीठ पर बिछाया जाने वाला कपड़ा ओढ़ लिया। अर्दली अहाते में बहुत देर तक शोरगुल करते रहे। कहीं पास घोड़े हींसते और मुंह चलाते रहे। धरती दिन की गर्मी से अब भी गर्म रही और उससे ताज़े गोबर और मिट्टी की सोंधी-सोंधी बास उठती रही। ग्रिगोरी ने औंधानींदी के बीच अर्दलियों की आवाज़ और हँसी के ठहाके सुने और एक कमउम्र अर्दली के लहजे से ही सब-कुछ समझ

लिया। प्रर्दनो ने अपना घोड़ा कसा और आह भरकर बोला—"उफ··· भाइयो···जान परेशान हो गई···अभी देख लो···यह आधी रात का वक्त है, और मुझे एक लिफाफा लेकर कहीं जाना है। हमारे लिए नींद और आराम दोनों ही हराम हैं···और तू घोड़ा है कि शैतान की आंत···खड़ा रह बैठे हो···उठा, जरा पैरा उठा, फिर देख कि मैं आकर तेरी कैसी मरम्मत करता हूं।"

और, एक दूसरा आदमी, गहरी, भर्राई आवाज में बुदबुदाया—"और हम तुमसे परेशान हैं···तुम्हारी इस लड़ाई से हलाकान हैं। तुमने हमारे सभी अच्छे घोड़े अधमरे करके रख दिये···।" फिर, उसके स्वर में मिन्नत घुल उठी—"थोड़ी-सी तम्बाकू दे दो सिगरेट के लिए···क्या कहते हैं···क्या शानदार दोस्त हो तुम! भूल गये, वेलयावीन में मैंने तुम्हें लाल फौजियों के बूट दिये थे···भूल गये न? सुअर हो तुम! तुम्हारी जगह कोई दूसरा आदमी होता तो मुझे जिन्दगी-भर याद रखता और एक तुम हो कि एक सिगरेट के लिए तम्बाकू नहीं निकलती तुमसे।"

लगाम का दहाना घोड़े के मुंह में बजा और दांतों से लड़ा। घोड़े ने लम्बी गहरी सांसें खींचीं और दुलकी चाल से उड़ चला। उसकी नालों की आवाजें पत्थर-सी कड़ी, खुश्क जमीन पर गूंजी।

"हम तुमसे परेशान हैं···तुम्हारी इस लड़ाई से हलाकान हैं।" ग्रिगोरी ने मन-ही-मन दोहराया, मुस्करा उठा और फिर तुरन्त ही गहरी नींद में डूब गया। उसने एक सपना देखा···यह सपना वह पहले भी जाने कितनी बार देख चुका था—ठूंठों से भरे भूरे खेत···खेतों में लाल फ़ौजियों की चलती-फिरती कतारें···पहली क़तार वहाँ तक जहाँ तक नजर जा सके···उसके पीछे छः या सात दूसरी कतारें···मन को घोट देने वाले सन्नाटे में पास-ही-पास आते हुए लोग···आकार में बराबर बढ़ती हुई छोटी आकृतियाँ···

और, फिर ये आकृतियां, अपनी राइफ़ल घसीटती, कपड़े के हेलमेट पहने, अपने मुंह फैलाए, तेजी से और करीब आती दीखीं। ग्रिगोरी ने कम गहरी खाई में लेटे-ही-लेटे अपनी राइफ़ल का घोड़ा बार-बार दबाया

और गोलियाँ बरसाई। लाल फ़ौजी लड़खड़ाये और मुँह के बल भहरा-भहराकर गिरे। उसने कारतूसों का नया क्लिप राइफ़ल को सौंपा और क्षण-भर को इधर-उधर नज़र डाली तो कज्जाक आस-पास की खाई से उछल-उछलकर बाहर आते दीखे। इन कज्जाकों के चेहरे डर से पीले लगे। ये लोग मुड़े और भाग चले। ग्रिगोरी का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा। चीखा—"गोली चलाओ।···सुअर के बच्चो···जा कहाँ रहे हो? रुको, इस तरह भागो नहीं।" वैसे तो वह गला फाड़कर चिल्लाया, पर उसकी आवाज़ इतनी धीमी रही कि कुछ सुनाई ही नहीं पड़ा। ग्रिगोरी बुरी तरह सहम गया, उछला और खड़े होते-होते उसने अपनी ओर चुपचाप दौड़ते आते साँवले चेहरे वाले लाल सैनिक पर आख़िरी गोली चलाई। पर निशाना चूक गया।

···लाल सैनिक कम उम्र न था। उसके चेहरे पर गम्भीरता के साथ-साथ निर्भयता थी। वह हलके-हलके इस तरह दौड़ रहा था कि पैर ज़मीन से लग न रहे थे। भौंहें सिकुड़ी हुई थीं, टोपी सिरे के पिछले भाग पर टिकी हुई थी और बरानकोट के सिरे खुँसे हुए थे।

ग्रिगोरी ने दुश्मन को नजर गड़ाकर देखा तो उसकी निगाह उसकी चमचमाती हुई आँखों, घुँघराले, छोटे बालों वाली दाढ़ी, पीले गालों, चौड़े बूटों, ज़रा नीचे झुकी हुई राइफ़ल की नली के छोटे दहाने, और एक लय-तान के साथ उठती-गिरती काली संगीन की नोक पर पड़ी। वह शब्दों में न बँध पाने वाले डर से सिर से पैर तक भर उठा। उसने अपनी राइफ़ल का खटका दबाया पर वह तो जैसे जम गया। उसमें हरकत ही न हुई। इस पर उसने घबराकर खटका अपनी जाँघ पर दे मारा। पर नतीजा कुछ न निकला। दूसरी ओर, लाल सैनिक सिर्फ पाँच क़दम के फ़ासले पर रह गया, तो ग्रिगोरी मुड़ा और भाग निकला। सामने पूरे-के-पूरे खेत में जहाँ-तहाँ लाल फ़ौजी दीख पड़े। पीछा करने वाले की लम्बी साँसें और उसके बूटों की खोखली धमक पीछे से कानों में आई। उसने बड़ी कोशिश से अपने जवाब देते पैरों में ताक़त और तेजी भरी। आख़िरकार वह एक अधउजड़ी क़ब्रगाह में पहुँचा और कूदकर गिरी हुई बाड़ पारकर धँसी हुई क़ब्रों, ऐंठे हुए

झाँसों और छोटी-छोटी मूर्तियों के बीच दौड़ने लगा। उसे लगा कि थोड़ी हिम्मत और, और वह खतरे से बाहर। लेकिन, इस बीच पैरों की धमक बिल्कुल पास आ गई और तेज हो गई। लाल फौजी की गरम साँसें ग्रिगोरी की गरदन जलाने लगी। बरानकोट के सिरे कहीं फँसते, अटकते और उसे अपनी ओर खींचने लगे। उसके मुँह से एक अस्फुट-सी चीख निकल गई।

और, ग्रिगोरी की आँखें खुल गईं। उसने अपने को पीठ के बल लेटा पाया। कसे बूटों में पैर सुन्न मालूम हुए। बदन यों दर्द करने लगा जैसे कि किसी ने उसे उठा-उठाकर पटका हो। 'उफ, ऐसी-तैसी में जाए!' उसने भर्राये हुए गले से कहा, अपनी ही आवाज पर सन्तोष का अनुभव किया और अभी-अभी देखे सपने को चाहकर भी सपना न समझ पाया। फिर, उसने करवट ली, सिर तक बरानकोट खींचा और मन-ही-मन सोचने लगा—'मुझे चाहिए था कि मैं उसे पास आने देता, उसका वार बचाता, राइफ़ल के कुंदे से उस पर जवाबी हमला करता, और फिर भाग निकलता···।'

वह एक क्षण तक सपने के बारे में सोचता रहा और खुश होता रहा कि यह सब उसने सपने में ही तो देखा, सचमुच तो कोई खतरा सामने है नहीं। पर सोचने लगा—'कैसा अजब है कि सपने में हर चीज़ असलियत से दस गुना ज्यादा खूँखार नजर आती है। ऐसा डर तो मैंने जिन्दगी में कभी जाना ही नहीं—खतरनाक-से-खतरनाक हालतों में भी नहीं!'···

इसके साथ ही वह ओंघा गया, और उसने अपने सुन्न पैर आराम से फैला लिये।

: १० :

कोपीलोव ने सुबह उसे जगाया—"उठो···वक़्त हो गया···चलना चाहिये···हुक्म के हिसाब से तो छः बजे हमें वहाँ पहुँच जाना चाहिये था।"

······चीफ़-आफ़-स्टाफ़ ने अभी-अभी दाढ़ी बनाई, बूट साफ किए और क्रीज किया हुआ साफ पतलून पहना। साफ है कि

वह हड़बड़ी में था, क्योंकि दो जगह निशान थे और गाल दाढ़ी बनाते समय जल्दी में कट गए थे। वैसे आम तौर से उसके व्यक्तित्व से रोब-दाब टपक रहा था। इस चीज़ की पहले उसमें कमी रही थी।···

ग्रिगोरी ने उसे सिर से पैर तक देखा और सोचा—'क्या कहने हैं! कैसा बना-ठना है! हर तरह चुस्त लगना चाहता है। जनरल से मिलने जा रहा है न··'

पर कोपीलोव ने जैसे ग्रिगोरी के मन के भाव भांप लिए। बोला—"वहां ढीली-ढाली शक्ल बनाकर जाना ठीक नहीं। मेरी बात मानो तो तुम भी ज़रा ठीक-ठाक हो लो।"

ग्रिगोरी सीधा होते हुए बोला—"मैं जैसा हूं वैसा ही जाऊंगा। क्या कहा तुमने कि हमें छः बजे जाना चाहिए था? इसका मतलब यह है कि हम दोनों के नाम परवाना आ ही रहा होगा—है न?"

कोपीलोव ने हँसकर कंधे झटके—"भाई, नया ज़माना, नए तरीक़े! जनरल हमसे ओहदे में बड़ा है। उसका हुक्म मानना हमारा फर्ज है। फिtशालोरोव जनरल है। वे तो हमारे पास आयेंगे नहीं।"

"तुम ठीक कहते हो···हमने जो किया है, अब वही तो भरेंगे न!" ग्रिगोरी बोला और मुंह-हाथ धोने के लिए कुएं पर चला गया।

घर की मालकिन अन्दर दौड़ी आई। उसने कमर लचकाते हुए जल्दी-जल्दी एक साफ, कसीदेवाला तौलिया निकालकर ग्रिगोरी की ओर बढ़ाया। ग्रिगोरी ने तौलिये से ज़ोर-ज़ोर से रगड़ा तो चेहरा ठंडे पानी के कारण ईंट-सा लाल हो उठा। वह कोपीलोव से बोला—"तुम्हारी बात अपनी जगह बिल्कुल ठीक है। पर, इन जनरलों को एक बात हमेशा-हमेशा अपने दिमाग़ में रखनी चाहिए कि क्रांति के बाद लोग बदले हैं। कह सकते हो कि उन्हें नई ज़िन्दगी मिली है। लेकिन ये अफसर आज भी उसी गज़ से नापते हैं। पर, यह चलेगा नहीं। मुझे तो डर है कि इनका पुराना गज बीच से चटखकर कहीं दो न हो जाए!···इन अफसरों के जोड़ थोड़े कड़े पड़ गये हैं···इनमें थोड़ा तेल पड़ना चाहिए, वरना ये कड़कड़ाकर टूट जाएंगे।"···

"तुम कहना क्या चाहते हो?" कोपीलोव ने अपनी आस्तीन से

फूँककर गर्द उड़ाते हुए पूछा ।

"मैं कहना सिर्फ यह चाहता हूँ कि उनके काम करने के तरीके बड़े घिसे-पिटे हैं । मिसाल के लिए कहूँ, मैं जर्मनी की लड़ाई के पूरे जमाने में फ़ौजी अफ़सर रहा हूँ और मैंने अपना ओहदा खून-पसीना एक कर कमाया है । लेकिन मैं जब अफ़सरों के बीच होता हूँ तो मुझे ऐसा लगता है जैसे कि ठिठुरती सर्दी में सिर्फ पतलून पहने झोंपड़ी से बाहर निकल गया हूँ । उनके बरताव की खुश्की से मैं हिल-हिल उठता हूँ ।" ग्रिगोरी की आँखें क्रोध से धधकने लगीं । पर ग्रिगोरी, इसका अनुभव किये बिना, और जोर से बोलने लगा ।

कोपीलोव ने खीझकर इधर-उधर देखा और धीरे से बोला—"इतने जोर से न बोलो । अर्दली सुनेंगे ।"

"और, मैं तुमसे पूछता हूँ कि आखिर ऐसा क्यों है ?" ग्रिगोरी ने जरा धीमी आवाज में कहा—"इसकी वजह तो वे ही हैं कि मैं श्वेतगार्दों की काली चिड़िया बना हुआ हूँ । उनके हाथ हाथ हैं, पर मेरे हाथ कड़े पड़कर घोड़े के खुरों में बदल गये हैं···वे कमरे में दाखिल होते हैं तो क़ायदे से, मगर मैं कमरे में घुसता हूँ तो हर चीज से टकराता फिरता हूँ । उनके बदन एक-से-एक साबुनों और जनाने क्रीम-पाउडरों से महमह करते हैं, पर मेरे बदन से घोड़े के पेशाब और पसीने की बू आती है । वे सब लिखे-पढ़े और आलिम हैं, पर मुझे चर्च स्कूल तक की सूरत देखने का मौक़ा नहीं मिला । उनके लिए तो मैं सिर से पैर तक बाहरी और अजनबी हूँ । यही वजह है कि सही हालत यह है । फिर जानते हो, मैं उनसे अलग होता हूँ तो मुझे ऐसा लगता है जैसे कि मेरे चेहरे पर मकड़ी का जाला तना हुआ है और बदन का हिस्सा-हिस्सा कीचड़ से सना हुआ है । नतीजा यह कि मैं इस गंदगी को दूर करने के लिए बिलकुल बेचैन हो उठता हूँ । उसने तौलिया कुएँ के ऊपर लकड़ी के ढाँचे पर टाँगा और टूटी कंघी से बाल काढ़ने लगा । धूप की झुलसन से अछूता उसका माथा साँवले चेहरे के मुकाबले बड़ी गोरा लगा । वह शान्त और सधे स्वर में बोला—"लोग यह बात समझना ही नहीं चाहते कि पुरानी जिन्दगी आज तार-तार

हो गई···घूरे पर पड़ी सड़ रही है। वे समझते हैं कि हम किसी और मिट्टी के बने हुए हैं, और बेपढ़ा-लिखा, मामूली आदमी, आदमी न होकर जानवर होता है। उनका ख़याल है कि मैं या मेरे जैसे दूसरे लोग फ़ौजी मामले उनकी तरह समझ ही नहीं सकते। लेकिन सवाल यह है कि फ़ौजों के कमांडर कौन लोग हैं? बुदयोनी कहाँ का फ़ौजी अफ़सर है? लड़ाई के पहले सार्जेन्ट था, और उसने ऐसा किया कि स्टाफ़ के जनरलों के हाथों के तोते उड़ गए। गुसेलश्चिकोव से ज्यादा नाम बहादुरी के लिए कज्जाक जनरलों में और किसी का नहीं। लेकिन पिछले जाड़ों में पतलून समेटते हुए उस्त-खोपर्सकाया से जान छुड़ाकर भागना पड़ा उसे। और, जानते हो, उसे खदेड़ा किसने? मास्को के ताले बनाने वाले ने, लाल फौज के एक रेजीमेंट के एक मामूली-से कमांडर ने। बाद में क़ैदी जाने कब तक उसी की बातें करते रहे। कुछ समझे! और, अब ज़रा हम बेपढ़े-लिखे अफ़सरों की बात करो। क्या वक़्त आने पर कज्जाकों की रहनुमाई हमने गए-बीते ढंग से की? और, क्या जनरलों ने हमारी कोई बड़ी मदद की?"

"खासी मदद की जनरलों ने।" कोपीलोव ने बात पर ज़ोर देते हुए कहा—'खैर, हो सकता है कि उन्होंने कोपीलोव की मदद की हो··· लेकिन मुझे तो उनसे किसी तरह की कोई इमदाद मिली नहीं, और बिना दूसरों की सलाह सुने मैंने लाल फ़ौजियों के छक्के छुड़ा दिये।"

"माना, लेकिन इससे क्या? ···अच्छा, तुम यह बताओ कि तुम फ़ौजी मामलों में साइन्स को जगह देने में यक़ीन रखते हो या नहीं?"

"रखता हूँ···लेकिन, लड़ाई के मामले में यही खास बात नहीं है, मेरे भाई!"

"तो, खास बात क्या है, पैन्तेलेयेविच?"

'खास बात है वह मक़सद जिसके लिए लोग लड़ते हैं।"

"हाँ···यह एक दूसरी बात है···" कोपीलोव ने ज़रा हलके-हलके मुस्कराते हुए कहा—"यह तो है···लड़ाई में मक़सद तो खास चीज़ होती ही है। मगर जो जीतता है, मक़सद को समझने का दावा सिर्फ़ वही

कर सकता है और तुम्हें पीट-पीटकर कह सकता है कि इस चीज में मेरा यकीन है। यह एक सचाई है और इस सचाई की उम्र उतनी ही है, जितनी इस दुनिया की। इसलिए तुम यह साबित करने की कोशिश तो करो नहीं कि यह बात तुम्हारे अपने दिमाग की खोज है। वैसे मैं हर पुरानी चीज का हिमायती हूँ, शानदार पुराने जमाने का हिमायती हूँ। अगर ऐसा न हो तो न मैं अपनी जगह से हिलकर दूँ, और न लड़ाई वगैरा में अपना हाथ उठाकर दूँ। फिर, यह कि जो लोग हमारे साथ है, वे भी ऐसे हैं जो पुराने हक़ों की हिफ़ाजत के लिए लड़ रहे हैं और खिलाफ सिर उठाने वालों को हथियारों की मदद से कुचल रहे हैं। लोगों को इस तरह कुचलने वालों में तुम भी हो और मैं भी शामिल हूँ। ग्रिगोरी, मैं एक अर्से से तुम्हें समझने की कोशिश करता रहा हूँ मगर समझ नहीं पाता।"

"अच्छा, बाद में समझना···फ़िलहाल तो चलो।" ग्रिगोरी ने कहा और शेड की तरफ़ बढ़ा।

घर की मालकिन, इस बीच, ग्रिगोरी की हर हरकत देखती रही थी। इसलिए ग्रिगोरी को खुश करने की कोशिश करती हुई बोली—"थोड़ा-सा दूध ले आऊँ ?"

"शुक्रिया, माँ, मगर दूध पीने का वक़्त अब मेरे पास नहीं। बाद में देखा जाएगा।"

शेड के पास बैठा प्रोखोर-ज़िकोव प्याले का दही चम्मच से निकाल-निकालकर खाता नजर आया। सो ग्रिगोरी को घोड़ा खोलते देखा तो उसकी आँखें खुली-की-खुली रह गईं। उसने आस्तीन से अपने होंठ पोंछे और पूछा—"दूर जा रहे हो ? मैं साथ चलूँ ?"

ग्रिगोरी मन-ही-मन क्रोध से उबल पड़ा—"अबे, आखिर यह खिलवाड़ क्या कर रहा है तू ? तू अपना काम नहीं जानता ? तुझे नहीं पता कि मेरा घोड़ा कसा क्यों खड़ा है ? कौन लायेगा घोड़ा खोलकर यहाँ ? पेटू कहीं का, जब देखो तब मुँह चलाता रहता है, और, बस ! किनारे कर अपना यह दही और चम्मच ! सारे क़ानून-क़ायदे बेचकर खा गया !"

"लेकिन, तुम इस तरह गरम क्यों हो रहे हो ?" प्रोखोर ने काठी पर ज़रा आराम से जमते हुए, चोट खाए स्वरों में कहा—"उबलते ही चले जा रहे हो, लेकिन इससे फ़ायदा कुछ नहीं है। कहाँ के ऐसे लाट-साहब हो तुम! यानी, लम्बे सफ़र के पहले ज़रा मुंह जुठार लिया तो गुनाह हो गया ? इस तरह आसमान सिर पर क्यों उठा रहे हो ?"

"क्योंकि तू मुझसे क़ायदे से बात नहीं कर रहा, सुअर का बच्चा कहीं का! तेरी मुझसे इस तरह बात करने की हिम्मत कैसे पड़ती है ? हम अभी-अभी जनरल से मिलने जा रहे हैं, अपनी इन आंखों की खैर मना···निकाल ली जायेंगी। बड़े अफ़सरों के मुंह लगने का आदी हो गया है। होश है, मैं कौन हूं और तू कौन है ? सवार हो और अपना घोड़ा पांच क़दम पीछे रख!" ग्रिगोरी ने फाटक से बाहर निकलते हुए हुक्म दिया। प्रोखोर और दूसरे तीन अर्दली पीछे हो लिए। ग्रिगोरी ने घोड़ा कोपीलोव के बराबर लाते हुए बात फिर उठाई और हँसते हुए पूछा—"अच्छा, यह बतलाओ कि तुम समझते क्या नहीं ? मैं तुम्हारी कुछ मदद कर दूं ?"

ग्रिगोरी की बात के लहजे का मज़ाक और सवाल का ढंग कोपीलोव की समझ की पकड़ में नहीं आया। उसने मामूली ढंग से जवाब दिया—"मेरी समझ में यह नहीं आता कि इस पूरी बाज़ी में तुम्हारा अपना मुहरा कहां है। एक तरफ़ तो तुम पुराने निज़ाम के लिए लड़ते हो, दूसरी तरफ़ दोटूक बात कहने के लिए माफ़ करना—बोलशेविकों के सांचे में ढले-ढले-से नज़र आते हो!"

"मैं बोलशेविक किधर से हूं ?" ग्रिगोरी के चेहरे पर बादल घिर आये और वह काठी पर जमे-ही-जमे हिल उठा।

"मैं यह नहीं कहता कि तुम बोलशेविक हो···लेकिन, बोलशेविक से मिलते-जुलते तो हो ही।"

"यह कैसे ?"

"यह ऐसे कि एक मिसाल लो···तुम अभी अफ़सरों और उनके रुख की बात चला रहे थे। यह बतलाओ कि तुम उनसे चाहते क्या हो ? उन अफ़सरों को भी छोड़ो, तुम मोटे तौर पर चाहते क्या हो ?" कोपीलोव

ने मधुर ढंग से हँसने और अपने चाबुक से खिलवाड़ करते हुए पूछा। पीछे-पीछे आते और खासी जोर-जोर से बात करते अर्दलियों को मुड़कर देखा और आवाज़ ऊँची उठाई—"तुम्हें बुरा लगता है, क्योंकि वे तुम्हें अपने बराबर नहीं समझते··· तुम्हें बुरी निगाह से देखते हैं। लेकिन ज़रा सोचोगे तो तुम्हें लगेगा कि वे अपनी जगह बिल्कुल दुरुस्त हैं। यह सही है कि तुम एक बड़े अफ़सर हो। मगर, यह तो एक मौके की ही बात है कि तुम आज इस ओहदे पर हो। माफ़ करना, अफसरों की वर्दी पहनने पर भी हर तरफ़ से गंवार कज्जाक लगते हो। कोई तौर-तरीक़ा तुम्हें नहीं आता। बातचीत का ढंग तुम नहीं जानते। तुममें कुछ भी तो ऐसा नहीं है जो पढ़े-लिखे आदमी में अपने-आप होता है। मान लो कि सभी क़ायदे के लोगों की तरह तुम नाक रूमाल से नहीं पोंछते, बल्कि छिगुलिया और अंगूठे से पोंछते हो। खाते समय हाथ जूतों पर या बालों में पोंछ लेते हो। मुँह-हाथ धोने के बाद घोड़े पर बिछाये जाने वाले कपड़े के इस्तेमाल में तुम्हारा जी नहीं बिदकता। तुम अपने नाखून या तो दांत से कुतर लेते हो, या तलवार के सिरे से काट लेते हो! अब एक इससे भी बदतर मिसाल दूं—पिछले साल कारगिन्स्काया में मैंने देखा कि तुम एक पढ़ी-लिखी औरत से बात करते रहे और साथ-साथ उसी के सामने खड़े-खड़े पतलून के आगे के बटन बंद करते रहे।"

"यानी, तुम्हारी अक्ल से अच्छा यह होता कि मैं पतलून के आगे के बटन खुले-के-खुले रहने देता?" ग्रिगोरी ने उदास मन से मुस्कराते हुए पूछा।

दोनों के घोड़े बराबर-बराबर आगे बढ़ते रहे कि उसने कोपीलोव और उसके मधुर चेहरे को कनखी से देखा और खीझ से भर उठा।

"बात यह नहीं है।" कोपीलोव अपनी बात पर बल देते हुए बोला—"तुम सिर्फ़ पतलून पहने पैरों में जूते बिना डाले किसी औरत से बात ही कैसे कर सके? तुमने तो जैकेट तक बदन पर नहीं डाली। वैसे ये बातें छोटी और मामूली हैं, लेकिन इनसे यह तो पता चलता ही है कि तुम आदमी कैसे और किस तरह के हो···कैसे समझाऊँ

तुम्हें मैं यह बात ?"

"क्यों, आसान-से-आसान ढंग से समझा दो।"

"तो, यह समझो कि ये सारे काम गँवार-से-गँवार आदमी करता है। और, फिर, तुम बातें कैसे करते हो ? हद है ! 'क्वार्टर' को 'कुआ-रटर', 'निकासी' को 'निकाशी' और 'साफ़ है कि' को 'शाफ़ है कि' कहते हो। यही नहीं, सभी बेपढ़े-लिखे लोगों की तरह तुम्हें भी बाहरी ज़बानों के वजने वाले लफ़्ज़ों का ऐसा नशा है कि बस ! तुम उन्हें वक़्त-बेवक़्त रटते फिरते हो और ऐंठ-ऐंठकर बोलते हो ! स्टाफ़ कान्फ्रेंसों में जब 'संधिभंग,' 'प्रबंध' और 'केन्द्रीयकरण' जैसे बड़े-बड़े लफ़्ज इस्तेमाल किए जाते हैं तो तुम तारीफ़ से भरकर बोलने वाले की तरफ़ एकटक देखते रह जाते हो। मैं तो कहूँगा कि तुम्हें शायद उससे डाह तक होने लगती है।"

"अब तुम बकवास कर रहे हो।" ग्रिगोरी ने ज़ोर से कहा और उसके चेहरे से खुशी टपकने लगी। उसने घोड़े के कानों के बीच का हिस्सा थपथपाया, और अयाल के बालों में उँगलियाँ गड़ाकर उसकी गरम, रेशमी खाल सहलाई। बोला—"चालू रखो···अपने कमाण्डर को रगड़ने में किसी तरह की कोई कोताही न करो।"

"तुम भी खूब हो ! तुम्हें रगड़ने की भला मुझे क्या जरूरत ?" यह तो तुम्हे खुद ही समझना चाहिए कि इन सभी मामलों में तुम्हारी कोर खासी दबती है; और फिर तुम्हें अफ़सोस होता है कि अफ़सर तुम्हारे साथ बराबरी का बरताव नहीं करते। जहाँ तक तौर-तरीकों और लिखाई-पढ़ाई की बात है, तुम काठ के उल्लू हो।"

अंतिम शब्द अनजाने ही कोपीलोव के मुँह से निकल गए। वह फ़ौरन ही सिटपिटा गया, ग्रिगोरी के आपे से बाहर हो जाने की कल्पना से डरा, उसके क्रोध की भयंकरता से परिचित होने के कारण उसे तेज़ी से सिर से पैर तक देख गया और फिर एकदम आश्वस्त हो उठा। ग्रिगोरी काठी पर पीछे की ओर तनते हुए चुपचाप हँसता रहा और गलमुच्छों के नीचे उसके दाँत चमकते रहे। इस पर कोपीलोव को इतना आश्चर्य हुआ और ग्रिगोरी की हँसी ऐसी संक्रामक साबित हुई

कि वह मुंह भी उठाकर हँस पड़ा। कहने लगा—"यह तो तुम हो! दूसरा कोई समझदार आदमी होता तो ऐसी लानत-मलामत पर रो देता, लेकिन तुम हो कि घोड़ों की तरह हिनहिनाकर सारी बात हवा में उड़ाए दे रहे हो···तुम्हारा राज मेरी समझ में तो आता नहीं।"

"तो, तुम मुझे काठ का उल्लू समझते हो? ऐसा है तो तुम्हारी ऐसी-तैसी!" कोपीलोव के गम्भीर होते ही ग्रिगोरी बोला—"मुझे तुम्हारे तौर-तरीके और रस्म-रिवाज नहीं सीखने। बैल हांकते वक्त वे मेरे काम आने से रहे। अगर आसमान वाले ने मुझे काफ़ी उम्र तक जीता रखा तो वास्ता मेरा बैलों से ही पड़ेगा न। उस वक्त क्या मैं हज़ार बार सलाम दागूंगा, उनकी इज्जत में झुकूंगा और कहूंगा, 'सुनिए न मेरी बात मान लीजिए, गंजे साहब!···माफ़ कीजिए, चितकबरे जी!··· इजाजत दीजिए कि मैं आपका जुआ ज़रा सीधा कर दूं।···भाई, जनाब-बैल-साहब, बड़े ही अदब से अर्ज करना चाहता हूं कि आप मेहरबानी करें और लीकें न तोड़ें।'···बैलों के साथ तो कसाई से ही पेश आना पड़ता है—'हे···हट···हट उधर से···अबे ओ···आगे बढ़। तुम्हारे 'सेन्ट्रीयकरन' के बारे में बैल यहीं तक समझते हैं।"

"सेन्ट्रीयकरन' नहीं बल्कि 'केन्द्रीयकरण'" कोपीलोव ग्रिगोरी को सही करते हुए बोला।

"अच्छा, 'केन्द्रीकरन' सही। लेकिन, मैं तुम्हारी एक बात नहीं मानता।"

"वह कौनसी बात है?"

"वह यह कि मैं काठ का उल्लू हूं। मैं तुम्हारी निगाह में काठ का उल्लू हो सकता हूं। पर, तुम ज़रा ठहरो, मुझे वक्त दो और लाल फ़ौजियों से मिल जाने दो। फिर देखना। मैं उनकी निगाह में सीसे से ज्यादा वज़नी ठहरूंगा और फिर तुम तौर-तरीक़ों वाले, पढ़े-लिखे मुफ़्तखोरों की ख़ैरियत इसी बात में होगी कि तुम ग़लती से भी मेरे हाथ न पड़ जाओ, वरना मैं तुम्हारे कलेजे और अंतड़ियां-पंतड़ियां निकाल-कर ज़मीन पर रख दूंगा।" ग्रिगोरी ने आधी हँसी और आधी गम्भीरता से कहा। इसके बाद उसने अपने घोड़े पर हाथ रखा कि वह

दुलकी उड़ा चला और हवा से बातें करने लगा।

इस बीच दोन के किनारे, सन्नाटे के बारीक तानों-बानों के बीच सबेरा इस तरह आया कि हलकी-से-हलकी आवाज़ ने उसे चौंका दिया और गूंजों को हाथ झकझोरकर जगा-जगा दिया। मैदान में केवल बुलबुलों और बटेरों के स्वरों का राज्य रहा, पर आस-पास के गाँवों से उभरती आवाज़ें बड़ी-बड़ी फ़ौजों के इधर-उधर आने-जाने का पता देती रहीं। रास्तों की लीकों पर तोपगाड़ियां और लड़ाई के सामानों वाली गाड़ियों के पहिये खड़खड़ाते रहे। कुओं के पास घोड़े हिनहिनाते रहे। पैदल कज़्ज़ाक फ़ौजियों के पैरों की धमक धीमी रही। मोर्चे पर खाने की चीज़ों के साथ, दूसरी ज़रूरी चीज़ें पहुँचाने वाली ग़ैर-फ़ौजी सवारियां आवाज़ करते हुए आगे बढ़ती रहीं। फ़ौजी बावर्चीखानों से जुनरी के दलिये, लॉरेल के पत्तियों से भरे डिब्बाबंद गोश्त और अभी-अभी तैयार की गई रोटी की प्यारी-प्यारी-सी बास उमड़ती रही।

खुद उस्त-मेदवेदित्स्काया के नीचे दोनों तरफ़ की राइफ़लें गोलियां उगल-उगलकर सवाल-जवाब करती रहीं। तोपों की गरज जब-तब ही खोखले ढंग से गूंजती रही। पता चला कि लड़ाई अभी-अभी शुरू हुई है।

जनरल फ़ितशालोरोव नाश्ता करता रहा कि सयानी उम्र के, परेशान-से ऐडजुटेंट ने सूचना दी—'पहली बाग़ी-डिविज़न के कमाण्डर मेलेखोव और स्टाफ़ डिविज़न चीफ़ कोपीलोव···'

"उन्हें मेरे कमरे में बिठा दो।" फ़ितशालोरोव ने अंडों के छिलकों से भरी अपनी तश्तरी, अपने बड़े-बड़े, गाँठ-गँठीले हाथों से एक तरफ़ खिसकाते हुए कहा, इत्मीनान से गिलास का ताज़ा दूध पिया, नैपकिन की सफ़ाई से तह की और मेज़ से उठ खड़ा हुआ।

ग़ैर-मामूली कद और सयानी उम्र का भारी-भरकम शरीर का वह व्यक्ति, टेढ़े-मेढ़े कर गहने वाले दरवाज़े और धुंधली छोटी खिड़कियों के छोटे कज़्ज़ाक कमरे में बहुत ही ज़्यादा लम्बा-चौड़ा लगा। खोखले ढंग से खाँसते और अपने बुरी तरह चुस्त वर्दी के ऊँचे कॉलर ···ीक करते हुए जनरल दूसरे कमरे में गया, कोपीलोव और ग्रिगोरी उसे

देखकर खड़े हुए, तो उनके सामने अभिवादन में झुका और अपना हाथ आगे न बढ़ाते हुए, उसने उन्हें मेज के किनारे आकर बैठने का इशारा किया।

ग्रिगोरी, अपनी तलवार सीधी करते हुए, बड़ी ही सावधानी से स्टूल के कोने पर बैठ गया, और कनखी से कोपीलोव पर नजर डालने लगा।

फ़िलमानोरोव वियना की कुर्सी पर बैठा तो वह चरमराई और उसके लम्बे पाये लचके-से लगे। उसने अपने हाथ घुटनों पर रखे और मोटी, धीमी आवाज में बोला—"मैंने आप लोगों को चन्द मसलों को हल करने के लिए यहाँ बुलाया है···बागियों की पार्टीजान-मुठभेड़ खत्म हो गई है···यानी अब आपकी फ़ौजों की हैसियत एक आजाद यूनिट की नहीं रहेगी···वैसे सच पूछिये तो वह कभी रही भी नहीं··· यह बात एक दिमागी अफ़साना-भर रही है, और बस ! खैर, तो अब आपकी फ़ौजें दोन की फ़ौज में मिला दी जाएँगी और हम पहले सोच-समझकर, नक्शा बनाकर दुश्मन पर हमला करेंगे···अब वक्त आ गया है कि आप, पहले से सोच-समझकर, नक्शा बनाकर दुश्मन पर हमला करने का राज समझें और बिना शर्त के अपने को ऊपरी कमान की मातहत मान लें। अब जरा मुझे बतलाइये कि यह हुआ क्या कि कल हमलों के वक्त आपकी पैदल रेजीमेंट ने 'तूफानी बटैलियन' का साथ नहीं दिया ? मेरे हुक्म के बावजूद, रेजीमेंट ने हमला करने से आखिर इन्कार कैसे किया ? भला आपकी इस रेजीमेंट का कमांडर कौन है ?"

"मैं हूँ।" ग्रिगोरी ने धीमे से कहा।

"तो फिर, मेहरबानी कर आप ही मेरे सवाल का जवाब दीजिये।"

"मैं तो कल तक लौटा ही नहीं था।"

"और, इसके पहले आप गये कहाँ थे ?"

"मैं अपने गाँव गया था।"

"यानी, लड़ाई के दौरान कोई डिविजनल कमांडर जब चाहे तब मैदान छोड़कर घर चल दे, क्यों ? डिविज़न न हुई, हुल्लड़बाजों की

जमात हो गई ? कितना गिर गया है आदमी ! कैसी अजीब हालत है !" जनरल की आवाज़ और जोर से गूंजी। बाहर एडजुटेण्ट फुस-फुसाते और एक-दूसरे को देखकर मुस्कराते हुए पंजों के बल इधर-उधर टहलते रहे।

कोपीलोव का चेहरा जर्द पड़ गया। लेकिन ग्रिगोरी ने जनरल का चेहरा और फूली हुई मुट्ठियाँ देखी तो वह अन्दर-ही-अन्दर गुस्से से इस तरह उबलने लगा कि सम्हालना मुश्किल हो गया।

फ़ितशालीरोव एकाएक फुर्ती से उछला और कुर्सी का पुट्ठा हाथों से जकड़कर चीखा—"तुम फ़ौजी लोगों की कमानें नहीं सम्हालते, हुल्लड़बाज लाल-गार्दों की कमान सम्हालते हो। तुम्हारी फौज में कज्जाक नहीं इन्सानियत का कोढ़ जमा है। जनाब मेलेखोव साहब, आपको फौजी डिविज़न का कमांडर न होकर किसी का खानसामा होना चाहिए ···खानसामा ! आपको जूते साफ करने चाहिए···समझे आप ? बतलाइए कि मेरे हुक्म की तामील आखिर क्यों नहीं हुई ? इसीलिए नही हुई न कि आप मीटिंग नहीं कर सके, आपस में बातचीत नहीं कर सके ? जरा होश में आइए। यहाँ के हम सब लोग 'कॉमरेड' नहीं हैं, और बोलशेविक हथकंडे हम चलने नहीं देंगे। किसी सूरत से चलने नहीं देंगे।"

"आप मुझ पर इस तरह चीखिए नहीं।" ग्रिगोरी ने भरी हुई आवाज़ में कहा और स्टूल को पैर से एक तरफ को ठेलते हुए उठ खड़ा हुआ।

"क्या कहा आपने ?" फ़ितशालीरोव ने उत्तेजना से हाँफते और मेज़ पर झुकते हुए फटी-सी आवाज़ में चिल्लाकर कहा।

"मैंने आपसे कहा कि चीखिए नहीं मुझ पर !" ग्रिगोरी ने ज़रा और जोर से दोहराया—"आपने हमें बुलाया था तय करने के लिए···" वह क्षण-भर को चुप हो गया, अपनी निगाहें नीची कीं और जनरल पर निगाह जमाये-ही-जमाये बहुत ही धीमे स्वरों में बोला—"अगर आपने मेरी तरफ उँगली भी उठाई तो मैं ठौर-की-ठौर आपके टुकड़े-टुकड़े करके रख दूंगा।"

इस पर कमरे मे ऐसा सन्नाटा छागया कि जनरल की लम्बी-लम्बी साँसें

साफ़-साफ़ सुन पड़ने लगीं। मौन काफ़ी खिंचा कि दरवाज़ा थोड़ा-सा खड़खड़ाया और एक सहमे हुए एडजुटेंट ने संध से झाँककर देखा। फिर दरवाज़ा जमाकर बंद कर दिया। ग्रिगोरी अपनी तलवार की मूठ पर हाथ रखे खड़ा रहा। कोपीलोव के घुटने काँपने लगे और उसकी निगाहें दीवार पर नापने लगीं। सहसा ही फ़िट्सखालौरोव कुर्सी पर धम से ढह पड़ा, और बूढ़ों की तरह खाँसते हुए बुदबुदाया—"क्या तमाशा है!" इसके बाद ग्रिगोरी की ओर देखे बिना बिलकुल शांत भाव से कहने लगा—"बैठिये, बैठ जाइए! हम दोनों ही बेदम हो गए हैं। फिर अब तो बात आई-गई भी हो गई। अब मेहरबानी करिए और मेरी बात सुनिए।···आप अपनी घुड़सवार फ़ौजें फ़ौरन ही भेज दीजिए···लेकिन, बैठिए तो···बैठिए।"

ग्रिगोरी बैठ गया और सहसा ही पसीने से तर हुआ चेहरा अपनी आस्तीन से पोंछने लगा।

"आगे सुनिए···सभी घुड़सवार फ़ौजें फ़ौरन ही दक्षिण-पूर्व के इलाके की तरफ़ रवाना कर दीजिए। और बिना जरा भी वक्त खोये हमला बोल दीजिए। इसके लिए अपने दायें बाज़ू पर चुमाकोव की कमान से जा मिलिये।"

"मैं अपनी डिवीज़न को लेकर वहाँ नहीं जाऊँगा।" ग्रिगोरी ने थकी-सी आवाज में कहा, रूमाल निकालने के लिए पतलून की जेब में हाथ डाला, नताल्या का बेल की गोटवाला रूमाल निकालकर भौंहें पोंछी और अपनी बात दोहराते हुए बोला—"मैं अपनी डिवीज़न वहाँ नहीं ले जाऊँगा।"

"आखिर क्यों?"

"क्योंकि फौजों की नई टुकड़ियाँ बनाने में बहुत वक्त लग जाएगा।"

"इस सवाल से आपको कुछ भी लेना-देना नहीं। कार्रवाई के पूरे नतीजे की जिम्मेदारी मुझ पर होगी।"

"इस सवाल से मुझे लेना-देना है···और पूरे नतीजे की जिम्मेदारी सिर्फ एक आप पर ही नहीं होगी।"

"यानी, आप मेरे हुक्म की तामील करने से इन्कार करते हैं?" फ़ितशालोरोव ने बहुत ही कोशिश से अपने को काबू में रखते हुए भर्राए हुए गले से पूछा।

"जी हाँ।"

"अगर ऐसा है तो आप डिवीज़न की कमान फ़ौरन ही छोड़ दीजिए। अब मेरी समझ में आया कि कल मेरे हुक्म पर अमल क्यों नहीं हुआ?"

"अब आप चाहे जो समझें, पर मैं डिवीज़न की कमान छोड़ूंगा नहीं···"

"इसके मानी क्या हुए?"

"इसके मानी वही हुए जो मैंने कहा।" ग्रिगोरी होंठों-ही-होंठों मुस्कराया।

"मैं आपको कमान से अलग करता हूं।" फ़ितशालोरोव और ज़ोर से बोला। लेकिन ग्रिगोरी दूसरे क्षण झटके से उठ खड़ा।

"मैं आपका कोई मातहत नहीं हूं, जनाब!"

"मेरी नहीं तो आप किसकी मातहत है?"

"मैं बाग़ी फ़ौजों के कमांडर कुदिनोव को मातहत हूं। और, आपसे यह सब सुनकर मुझे खासी हैरत हुई है, क्योंकि इस वक्त तो आपमें और मुझमें कोई फ़र्क़ है नहीं। हम लोगों को बराबर हक़ हासिल हैं। एक डिवीज़न की कमान आपके हाथों में है तो एक डिवीज़न की कमान मेरे हाथों में है। इसलिए, फ़िलहाल बेहतर यही है कि आप मुझे आँखें न दिखलायें।···जब मैं स्क्वेड्रन-कमांडर बना दिया जाऊँगा, तब दिखलाइएगा तो आपकी आँखें देख लूंगा···लेकिन तब भी"···ग्रिगोरी ने अपनी छिगुलिया उठाई और क्रोध से जलती हुई आँखों के बावजूद मुस्कराकर बोला—"तब भी आपका चिल्लाना और आँखें दिखलाना मुझसे बर्दाश्त न होगा।"

फ़ितशालोरोव उठा और अपना कड़ा कॉलर ठीक करते हुए ज़रा झुककर बोला—"बात खत्म! आपका जो जी चाहे सो कीजिए। मैं आपके बरताव की रिपोर्ट अभी आर्मी स्टाफ़ से करने जा रहा हूं, और आपको

पूरा यकीन दिला सकता हूँ कि इसका नतीजा जल्दी ही आपको देखने को मिलेगा। हमारा मोर्चे का कोर्ट-मार्शल बड़ी ही चुस्ती से काम कर रहा है इन दिनों।"

ग्रिगोरी ने सारा कुछ सुना, कोपीलोव की आँखों से टपकती निराशा की ओर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया, टोपी सिर पर औंधाई और तेजी से दरवाजे की ओर बढ़ा। परन्तु ड्योढ़ी पर ठिठका और बोला—"आप जिससे चाहें, उससे रिपोर्ट करें…इस तरह आप मुझे डरा नहीं पायेंगे… मैं जल्दी से घबरा जाने वाला आदमी नहीं हूँ…और फिलहाल तो आप अपने हाथ मुझसे ज़रा फासले पर ही रखिये।" वह एक क्षण कुछ विसूरता खड़ा रहा और फिर बोला—"क्योंकि मुझे डर है कि मेरी डिवीजन के कज़्ज़ाक कहीं आपके पीछे न पड़ जाएँ…।"

उसने ठोकर से दरवाजा खोला और अपनी तलवार लहराता, लम्बे-लम्बे डग भरता बरसाती में आया।

उत्तेजित कोपीलोव सीढ़ियों पर उससे आ मिला और मायूसी से हाथ मलते हुए धीमे से बोला'—'तुम्हारा दिमाग़ खराब हो गया है, पेन्तेलेयेविच!"

"घोड़े लाओ।" ग्रिगोरी बजती हुई आवाज़ में चीखा और हाथ का चाबुक जैसे मसल-मसल डालने लगा।

प्रोखोर हवा की रफ़्तार से सीढ़ियों की तरफ बढ़ा। ग्रिगोरी घोड़े पर सवार होकर फाटक से निकला तो मुड़कर देखने लगा। तीन खानसामे जनरल फितशालीरोव को ऊँचे घोड़े की शानदार काठी पर बिठलाने में व्यस्त दीखे।

ग्रिगोरी और कोपीलोव कोई आधे वर्स्ट तक मुँह सिए रहे। कोपीलोव चुप रहा, क्योंकि ग्रिगोरी उसे बातचीत करने की मनःस्थिति में नहीं लगा। साथ-साथ इस समय उससे उलझना भी खतरे से खाली नहीं समझ पड़ा। आखिरकार ग्रिगोरी चुप न रह सका और झटके से बोला—"तुम्हें इस तरह साँप क्यों सूँघ गया है? आखिर तुम मेरे साथ आये ही क्यों? बाद में गवाही देने के लिए? वहाँ तो तुम जान-बूझकर चुप्पी साधे रहे, है न?"

"खैर, वहाँ की बात न चलाओ…वहाँ तो तुम बिल्कुल ही आपे से

बाहर हो गये थे।"

"और, तुम्हारा वह जनरल आपे से बाहर नहीं हुआ ?"

"मैं कह सकता हूं कि गलती उसकी भी थी। उसके बात करने का ढंग बहुत ही भद्दा था।"

"मैं तो कहूंगा कि उसने बात तो की ही नहीं। वह तो शुरू से ही इस तरह चिल्लाता रहा, जैसे कि किसी ने उसके चूतड़ में सुई चुभो दी हो।"

"इस पर भी तुमने कमाल ही कर दिया। अपने से बड़े अफ़सर की हुक्म-उदूली···सो, भी लड़ाई की हालत में, मेरे दोस्त···"

"यह कोई बात नहीं। बुरा बस इतना ही हुआ कि उसने मुझ पर हमला नहीं किया। अगर कहीं वह हमला कर देता तो मैं तलवार उसके भेजे के आरपार कर देता।"

"खैर, जो भी सूरत सामने है, उसमें तुम अपनी खैरियत मनाओ।" कोपीलोव ने असन्तोष से भरकर कहा और अपना घोड़ा धीमा कर कदम चाल में डाल लिया—"लगता यही है कि कानून-क़ायदे के मामले में अब हमें और कस दिया जाएगा। इसलिए अच्छा हो कि तुम खिसक दो।"

दोनों घोड़े, दुमों से डांस उड़ाते और हींसते हुए अगल-बगल चलते रहे। ग्रिगोरी ने मज़ाक-भरी निगाह कोपीलोव पर डाली और पूछा—"तुम ऐसे सज-बजकर किसलिए आये थे ? सोचा था कि जनरल तुम्हें चाय पीने की दावत देगा ? गुमान था कि वह अपने गोरे हाथ से,तुम्हारा हाथ पकड़कर तुम्हें चाय की मेज़ तक ले जाएगा···दाढ़ी बनाई, ट्यूनिक साफ़ की, अपने बूट चमचमाए···मेरे देखते-देखते अपने रूमाल पर थूक-थूककर घुटने के धब्बे साफ़ किए।"

"अच्छा, खत्म करो बकवास।" कोपीलोव लाल हो उठा।

"और,तुम्हारी सारी मेहनत बेकार गई।" ग्रिगोरी ने खिल्ली उड़ाई—"यानी, चाय की दावत तो दूर, उसने तो तुमसे हाथ तक नहीं मिलाया।"

"यह तो कम हुआ···तुम्हारे साथ आया था—होना तो कुछ और ही चाहिये था।" कोपीलोव ने जल्दी-जल्दी कहा, और फिर आश्चर्य

और प्रसन्नता से चीखा—"वह देखो···उधर हमारे साथी नहीं हैं··· दोस्त मुल्कों के लोग हैं।"

छः खच्चर एक अंग्रेज़ी तोप संकरी गली से उनकी ओर खींचकर लाते दीखे। तोप की बगल में एक अंग्रेज अफ़सर दुबकते, बादामी भूरे रंग के घोड़े पर सवार नज़र आया। सबसे आगे वाले खच्चर पर सवार आदमी के बदन पर भी अंग्रेज़ी पोशाक समझ पड़ी। लेकिन उसकी टोपी की पट्टी में रूसी अफ़सरों वाली कलगी और कंधे पर लेफ़्टिनेंट के फ़ीते लगे रहे।

ग्रिगोरी से कुछ कदम दूर से ही उस अफ़सर ने अपने कॉर्क के हेलमेट पर दो उंगलियाँ रखीं, सिर हिलाया और उससे रास्ता देने का अनुरोध किया। मगर जगह इतनी कम निकली कि कसे हुए घोड़ों को उधर से गुज़रने के लिए पत्थर की दीवारों से बिल्कुल सट-सट जाना पड़ा।

ग्रिगोरी के गालों की खाल काँपी, उसने अपने दाँत पीसे और अपना घोड़ा सीधे अफ़सर की ओर बढ़ाया। अफ़सर ने अपनी आँखें अचरज से ऊपर कीं और घोड़ा एक किनारे कर लिया। लोग कठिनाई से उधर से निकले। उसमें भी अंग्रेज को अपना दायाँ पैर, कसे हुए चमड़े के बंदों में रख लेना पड़ा।

तोपचियों के गिरोह का एक व्यक्ति साफ़-साफ़ रूसी लगा। उसने गुस्से से भरकर ग्रिगोरी को सिर से पैर तक देखा। बोला—"मेरा खयाल है कि तुम एक किनारे भी हो सकते थे। क्या जरूरी है कि तुम हर जगह अपनी जहालत की नुमाइश लगाते फिरो?"

"तू अपना घोड़ा आगे कर और मुंह बंद कर···कुतिया के बच्चे··· वरना मैं तुझे एक तरफ़ कर दूंगा।" ग्रिगोरी जोर से बोला।

अफ़सर अपनी सीट पर उचका, मुड़ा और चीखा—"ज़रा इस बदमाश को पकड़ तो लो।"

मगर ग्रिगोरी अपना चाबुक हवा में नचाते हुए अपना घोड़ा बहुत आराम से गली के बीच हाँकता रहा। सफ़ाचट मूँछों वाले, थकान से चूर, गर्द और धूल से भरपूर, सभी-के-सभी जवान अफ़सरों ने उस पर

दुश्मनी-भरी निगाह डाली, मगर उसे रोकने की कोशिश एक ने भी नहीं की।

फिर, छः तोपोंवाला तोपखाना मोड़ पर जाकर आँखों से ओझल हो गया। कोपीलोव होंठ काटते हुए, अपना घोड़ा ग्रिगोरी के घोड़े की बग़ल में लाया।

"तुम गधापन कर रहे हो, ग्रिगोरी पॅन्तेलेयेविच ! छोटे-छोटे बच्चों का-सा बरताव कर रहे हो।"

"क्यों, मुझे हर तरह की सीख देने का ठेका किसी ने आपको दे दिया क्या ?" ग्रिगोरी ने तड़ से उलटकर जवाब दिया।

कोपीलोव कंधे झटकते हुए बोला—"फितशालीरोव पर तुम्हारे बरसने की बात मेरी समझ में आती है। लेकिन उस अंग्रेज़ ने भला तुम्हारा क्या बिगाड़ा था ? तुम्हें उसका लोहे का टोप पसंद नहीं आया क्या ?"

"हाँ, यहाँ उस्त-मेदवेदित्स्काया के पास सचमुच उतना अच्छा नहीं लगा···उसे वह कहीं और पहन सकता था···मगर, याद रखो कि जब दो कुत्ते एक-दूसरे की तरफ झपट रहे हों, तो तीसरे कुत्ते को बीच में नहीं पड़ना चाहिए, समझे ?"

"हूँ···समझा···यानी तुम यह नहीं चाहते कि बाहर के मुल्कों के लोग बीच में पड़ें ? लेकिन मुझे लगता है कि गर्दन फँसी हो तो मदद कोई भी दे, अच्छी लगती है।"

"खैर, तुम खुश हो लो···मगर मैं उन्हें अपनी धरती पर कदम नहीं रखने दूंगा।"

"तुमने चीनियों को लाल फ़ौजियों के साथ लड़ते देखा है ?"

"मान लो देखा हो, तो ?"

"तो, क्या यह मामला भी बहुत-कुछ वैसा ही नहीं है ? तुम जानते हो कि वे भी बाहरी हैं, और वे भी मदद कर रहे हैं ?"

"उसका इस बात से कोई ताल्लुक नहीं। चीनी तो लाल फ़ौजियों की मदद को खुद आए।"

"और, तुम्हारा खयाल है कि इन तमाम बाक़ी लोगों को यहाँ

ज़बरदस्ती घसीटकर लाया गया है ?"

ग्रिगोरी की समझ में न आया कि वह जवाब दे तो क्या दे ? वह दिमाग़ मथता, बहुत देर तक चुपचाप रहा। इसके बाद खीझ-भरी आवाज़ में बोला—"तुम पढ़े-लिखे हमेशा एक ही तरह के होते हो। बर्फ़ में कलामुंडी खाते खरगोश की तरह ऐंठते और कलामुंडी खाते हो। मुझे तुम्हारी बात तो ग़लत लगती है; मगर यह समझ में नहीं आता कि तुम्हारी इसे काटूं तो काटूं कैसे ? ख़ैर, हटाओ···मुझे बेकार को उलझाओ नहीं···मेरा दिमाग़ यों भी कुछ कम परेशान नहीं है।"

कोपीलोव मन-ही-मन कुढ़कर चुप हो रहा और फिर रास्ते-भर उन दोनों में आपस में कोई बातचीत नहीं हुई। सिर्फ़ प्रोखोर अपना घोड़ा उन दोनों के बराबर लाया और उत्सुकता से भरकर पूछने लगा—"ग्रिगोरी पन्तेलेयेविच, सुनो, इन कैडेटों ने अपनी तोपों में कौनसे जानवर जोत रखे थे ? उनके कान गधों के-से थे, मगर बाकी सारा बदन घोड़ों का-सा था। मुझे तो फूटी आँखों नहीं सुहाए। क्या कहते हैं इन्हें ? बुरा न मानो···बतला दो···शर्त बद रखी है मैंने।"

फिर कोई पाँच मिनट तक प्रोखोर अपना घोड़ा पीछे-पीछे हाँकता रहा। पर उसे उत्तर कुछ न मिला, तो पीछे हो गया और बाक़ी अर्दलियों के बराबर आने पर फुसफुसाते हुए बोला—"उनके मुँह से तो बोल नहीं फूटता, साथियो ! शायद ख़ुद ही सोच रहे हैं कि ये बेहूदे जानवर दुनिया में आए कहाँ से ?"

: ११ :

कज्ज़ाक कम्पनियाँ चौथी बार अपनी उथली खाइयों से उभरीं। पर लाल फ़ौजियों की मशीनगनें इस तरह ताबड़तोड़ गोलियाँ बरसाती रहीं कि फिर लेट गईं। दूसरी ओर बाएँ किनारे के जंगल में छिपी लाल फ़ौजों की तोपें तड़के से ही कज्ज़ाक पोजीशनों और दरों में जमा रिज़र्वों पर बराबर आग उगलती रहीं।

दोन के किनारे की आसमानी ऊँचाइयों पर तोप के गोलों के टुकड़ों के दूधिया बादल पिघलते रहे और कज्ज़ाक खाइयों की टूटी

क़तार से गोलियाँ सर्राटे भर-भरकर भूरी धूल के पर लगाती रहीं।

दोपहर होते-होते लड़ाई और भयानक हो गई और पछुआ हवा के झोंके तोपों की गरज दूर-दूर ले जाने लगे।

ग्रिगोरी विद्रोही सेना के तोपखाने की एक चौकी पर चढ़ गया और दूरबीन से लड़ाई का रुख समझने लगा। उसने फ़ौजी अफ़सरों वाली कम्पनियों को जान-माल के भारी नुकसान के बावजूद, बार-बार हमले बोलते देखा। गोलियों या तोप के गोलों की मार घनी होते ही ये अफ़सर नीचे लेट गए और इन्होंने अपने मूड़ गड़ा लिए। पर मौक़ा मिलते ही उठे और तेजी से दौड़कर आगे जा जमे। परन्तु जरा और बाईं ओर, विद्रोही पैदल सेना बिलकुल निष्क्रिय और निकम्मी लगी। इस पर ग्रिगोरी ने येरमाकोव के नाम एक पत्र लिखा और एक आदमी से उसके पास भेज दिया।

आधे घण्टे बाद येरमाकोव गुस्से से उबलता घोड़ा दौड़ाता आया, तोपों के पास नीचे उतरा, हाँफते हुए उस खास चौकी की ओर बढ़ा, और दूर से ही हाथ चमकाते हुए बोला "कज्जाक हिलकर नहीं देते। वे अपनी जगह से टस-से-मस नहीं होंगे। हम तेईस कज्जाक तो इस तरह गँवा चुके, जैसे कि वे कभी इस दुनिया में आए ही न हों। तुमने देखा लाल फ़ौजियों ने उन्हें मशीनगनों की गोलियों से किस तरह भूनकर रख दिया?"

"अफ़सर आगे बढ़ रहे हैं, और तुम कहते हो कि तुम्हारे फ़ौजी अपनी जगह से हिलने को तैयार नहीं हैं···?"

"साथ ही यह भी याद रखने की बात है कि दुश्मन के हर प्लेटून के पास एक-एक हल्की मशीनगन है और कारतूस तो इतने हैं कि गिनती कौन करे! लेकिन हमारे पास क्या है?"

"ये सब बहाने जरा भी नहीं चलेंगे, अपने कज्जाकों को साथ लेकर फ़ौरन धावा बोलो, वरना तुम्हारा सिर धड़ से अलग कर दिया जाएगा, समझे।"

येरमाकोव ने बुरी-से-बुरी गाली दी, और भागता हुआ टीले से नीचे उतरा। ग्रिगोरी ने दूसरी पैदल रेजीमेंट का नेतृत्व स्वयं करने का फ़ैसला किया और येरमाकोव के पीछे-पीछे खुद भी दौड़ चला।

पर हाथर्न की शाखों में सावधानी से ढँकी किनारे की तोप के पास खड़े बैटरी-कमांडर ने टोका—"जरा आकर अंग्रेजों के हाथ का करिश्मा देखो, ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच ! ये लोग अभी-अभी पुल उड़ाने जा ही रहे हैं। आओ इस टीले के ऊपर चले चलें।"

फिर दोनों ने दूरबीन से पीपे का पुल देखा। पुल लाल सेना के इंजीनियरों ने दोन के इस पार से उस पार तक खींच दिया था। इस समय पुल पर गाड़ियों का तांता बँधा दीखा।

कोई दस मिनट बाद पत्थर के पुल के पार के एक खड्ड से अंग्रेजी तोपों ने गोले बरसाने शुरू कर दिए और चौथे गोले के साथ पुल बीच से फट गया। गाड़ियों की कतार थम गई। लाल फ़ौजी टूटी-फूटी गाड़ियों और मुर्दा घोड़ों को नदी में झोंकने के काम में लग गए।

इंजीनियरों से भरे चार बजरे दाएँ किनारे से रवाना हुए। पर, पुल के टूटे हुए तख्तों की मरम्मत पूरी होते ही अंग्रेजी तोपें फिर गोले बरसाने लगीं। एक गोले से पुल तक पहुँचने का बायाँ रास्ता उड़ गया। दूसरे से पानी की हरी दीवार पुल के ऐन ऊपर तक खिंच गई और गाड़ियाँ एक बार फिर जगह-की-जगह जमी रह गईं।

"सुअर के बच्चों के हाथ निशाने के मामले में ग़जब के सधे हुए हैं।" ग्रिगोरी के बैटरी कमांडर ने सराहना से भरकर कहा—"अब रात होने तक दुश्मन को पार जाने का मौक़ा न मिलेगा। पुल तो एक लमहा भी साबित बचा रहने से रहा।"

ग्रिगोरी ने दूरबीन लगाए ही पूछा—"लेकिन तुम्हारी तोपों ने साँस क्यों खींच रखी है ? तुम्हें तो अपनी पैदल फ़ौज के हाथ मजबूत करने चाहिएं। लाल फ़ौजी मशीनगनों के ठिकाने यहाँ से बिल्कुल साफ़ नजर आ रहे हैं।"

"हम अगर इस वक्त अपनी पैदल फ़ौज के हाथ मजबूत कर सकते तो हमें बड़ी खुशी होती, मगर हमारे पास तो एक गोला भी बाक़ी नहीं है। आखिरी गोला कोई आधे घण्टे पहले दाग दिया गया, और इसके बाद हम पूरी तरह छूँछे हो गए।"

"मगर ऐसा है तो यहाँ जमे क्यों हो ? अपनी तोपें कसो और हवा

साफ़ करो।"

"मैंने कैडेटों से गोले मँगवाए हैं।"

"वे तुम्हें तोप का गोला नहीं देंगे।" ग्रिगोरी ने जैसे फ़ैसला दिया।

"एक बार वे इन्कार कर चुके हैं। पर मैंने दुबारा माँग पेश की है। हो सकता है कि इस बार उन्हें रहम आ ही जाए और इन मशीन-गनों को तार-तार करने के लिए वे हमें दर्जन-दो दर्जन गोले दे ही दें। कोई मजाक तो है नहीं। हमारे तेईस साथियों की जानें जा चुकी हैं। अभी पता नहीं कितनी जानें और जाएँगी। वे तो सचमुच बखिया-सी उधेड़ रहे हैं।"

ग्रिगोरी ने मुड़कर कज्जाक खाइयों की ओर देखा तो पास के ढाल पर सूखी मिट्टी रह-रहकर उछली-सी लगी। मशीनगनों की गोलियाँ जहाँ भी गिरीं, गर्द उमड़ चली, जैसे कि कोई अनदेखा हाथ खाइयों के ऊपर एक भूरी रेखा-सी खींच रहा हो। खाइयाँ इस सिरे से उस सिरे तक धुआँ उगलने लगं, और धूल के बादल उनके ऊपर लटकने-से लगे।

ग्रिगोरी ने अंग्रेजी तोपों की मार और अधिक नहीं देखी। वह क्षण-भर मशीनगनों और तोपों की अटूट गरज सुनता रहा, फिर ढाल से नीचे उतरा और उसने येरमाकोव को जा पकड़ा। बोला—"जब तक मैं हुक्म न दूँ, तुम हमला न बोलना। तोपों के बिना दुश्मन को मार भगाना मुमकिन नहीं है।"

"मैंने भी तो यही कहा था न ?" येरमाकोव ने अपने बिदकते घोड़े की पीठ पर जमते हुए, भर्त्सना-भरे स्वर में कहा, और आग की बौछारों के बीच बेधड़क उड़ चला। ग्रिगोरी ने सब-कुछ देखा और चिन्ता से सोचने लगा—'इस शैतान की आंत ने सीधी सड़क भला क्यों पकड़ी ? वे लोग मशीनगन की गोलियों से उसे भून डालेंगे। इसे तो यह चाहिए था कि यह खड्ड में उतरता, पानी के किनारे-किनारे आगे बढ़ता और पहाड़ी का चक्कर काटकर अपने साथियों से जा मिलता।'

उधर येरमाकोव हवा की रफ़्तार से घोड़ा दौड़ाता नदी की ओर बढ़ा, उसमें पैठा और फिर दूसरी तरफ़ दूर-दूर तक नज़र नहीं आया।

'लो, बात सही ढंग से उसकी समझ में आ गई। अब तो वह मंज़िल तक पहुँच ही जाएगा।' ग्रिगोरी ने चैन की साँस ली और टीले के नीचे लेटकर आराम से सिगरेट रोल करने लगा।

उसके मन में एक अजीब तरह की अन्यमनस्कता लहरें लेने लगी—"नहीं, मशीनगनें इस तरह मौत बरसा रही हैं। ऐसे में कज़्ज़ाकों को लेकर मैं नहीं जाऊँगा। करें, करना हो तो फ़ौजी अफ़सरों की तूफ़ानी-कम्पनियाँ हमला करें। उन्हीं को वस्त-मेदवेदित्स्काया हथिया लेने दो।"

इस समय ज़िन्दगी में पहली बार, लड़ाई में भाग लेने से सीधे-सीधे बचने की बात उसने सोची। इस फ़ैसले में न तो हाथ बुज़दिली का रहा, न मौत के डर का और न ज़िन्दगियों की बेकार बरबादी का। अभी हाल ही की तो बात है कि न उसने अपने जीवन के साथ किसी तरह की रू-रियायत बरती थी और न अपनी कमान के कज़्ज़ाकों के जीवन के साथ। लेकिन इस समय सहसा ही जैसा कि कोई तार कहीं टूट गया। चारों ओर घटती हुई घटना की निरर्थकता पहली बार उभरकर स्पष्ट रूप से सामने आ गई। शायद इसके पीछे कोपीलोव से हुई बातचीत रही···शायद फ़ितशालीरोव से हुई कहा-सुनी···शायद दोनों ही बातों ने एक साथ उसे एकाएक अपने पंजों में जकड़ लिया और उसका मन इस तरह बिगाड़ दिया। जो भी हो, लड़ाई की आग से दूर-ही-दूर रहने का उसने पक्का इरादा कर लिया। कुछ मोटे-मोटे ढंग से उसे यह भी लगा कि कज़्ज़ाकों और बोलशेविकों के बीच समझौता करना मेरे बस की बात नहीं है। वैसे समझौता तो मेरा ही उनसे नहीं हो सकता। मगर यह है कि इन लोगों को, इन फ़ितशालीरोवों को अब मैं बचा नहीं सकता। ये सारे लोग आत्मा से एक हैं और दुश्मन हैं। वे मुझसे बुरी तरह नफ़रत करते हैं और मैं भी उन्हें इतना ही बुरा समझता हूँ।···और, पुराने विरोधाभास एक बार फिर अपने बीभत्स

रूप में उसके सामने आ गए।

'लड़ें···लोग लड़ें···मैं दूर खड़ा रहूँगा और तमाशा देखूँगा। फिर डिवीज़न से छुटकारा मिलते ही माँग करूँगा कि मुझे पीछे की क़तारों में भेज दिया जाए···बहुत-कुछ देखा-सुना-सहा। बहुत हुआ··· भर पाया।' उसने सोचा। फिर कोपीलोव और अपने बीच की बहस याद आई तो लाल सैनिकों की ओर से अनजाने ही सफ़ाई देने लगा—'चीनी लाल फ़ौजियों के पास खाली हाथ आए। इस वक्त वे उनके कंधे-से-कंधे मिलाकर लड़ते हैं, और फ़ौजियों की कुछ नहीं-सी तनख़्वाह के बदले में अपनी जान हथेलियों पर लिये फिरते हैं, और फिर तनख्वाह भी क्या है? भला कोई क्या खरीदेगा उतनी रक़म में? ताश पर एकाध दाव लग सकता हो तो शायद लग सकता हो।···इस तरह यह सवाल रक़म का नहीं किसी और चीज़ का है। लेकिन दूसरी तरफ़ हमारे दोस्त मुल्क फ़ौजी अफ़सर, टैंक और तोपें भेजे चले जा रहे हैं। खच्चर तक भेज दिए हैं। बाद में कोठी-भर रूबल माँग लेंगे इसी सबके। फ़र्क यहाँ आता है।···ठीक है आज शाम को इस मसले पर हम सब फिर बहस करेंगे। स्टाफ़ के दफ़्तर में पहुँचते ही मैं उसे बुलाऊँगा, एक किनारे ले जाऊँगा और कहूँगा—"लेकिन कोपीलोव, फ़र्क बहुत बड़ा है···और तुम मुझे इस तरह बेवकूफ़ बनाने की कोशिश मत किया करो।"

मगर, नए सिरे से बहसा-बहसी जैसे क़िस्मत में ही न निकली। उसी दिन तीसरे पहर कोपीलोव घोड़े पर सवार होकर चौथी रिज़र्व रेजीमेंट के पड़ाव की तरफ़ रवाना हुआ। मगर, रास्ते में एक गोली कहीं से आ लगी और वह वहीं ढेर हो गया। ग्रिगोरी को इस मौत की सूचना दो घंटे के अन्दर-अन्दर मिल गई। अगले दिन सवेरे, जनरल फ़िज़खालोरोव ने कमान सम्हाली तो पाँचवीं डिवीज़न ने उस्त-मेदवेदित्स्काया देखते-देखते ले लिया।···

: १२ :

ग्रिगोरी की रवानगी के कोई तीन दिन बाद मीत्का-कोरशुनोव

तातारस्की आया और सैनिक दंड विभाग से सम्बन्धित दो साथी फौजियों को अपने साथ लाया—एक सयानी उम्र का काल्मीक तो दूसरा चालाक किस्म का, मामूली-सा नाटे क़द का दराबी कज्ज़ाक। नाम सोलान्ती पेत्रोविच। मीत्का काल्मीक से नफ़रत-भरे ढंग से बात करता, पर कज्ज़ाक के सामने में आदर बरतता।

जहाँ तक मीत्का का अपना सवाल है, उसने सैनिक-दंड-विभाग में रहकर दोन-सेना की कुछ यों ही-सी सेवा न की थी। जाड़े में वह सार्जेन्ट-मेजर बना दिया गया था, बाद में ध्वजधारी बन गया था और इस समय पूरे अफ़सरी ठाट-बाट में गाँव आया था। दोन के पार सेना के पीछे हटने के बाद वह आराम से रहा मालूम होता था। उसकी, हल्के खाकी रंग की ट्यूनिक कंधों पर खासी तंग हो गई थी। कसे हुए, ऊँचे कॉलर के ऊपर चिकनी, गुलाबी खाल दूर से दमकती थी। नीला पट्टियों वाला पतलून ऐसा चुस्त था कि चूतड़ों से दो हो गया मालूम होता था। ऊपरी तामझाम उसमें इतना था कि बदनसीबी से भरी क्रान्ति आड़े न आती। वह अतामान के लाइफ़गार्डों में होता, महल में रहता और महामहिमामय सम्राट् के पावन व्यक्तित्व की रक्षा करता। लेकिन, इतना सब न हो सकने पर भी उसे अपनी जिन्दगी से कोई शिकायत न थी। वह अफ़सरी तक तो पहुँच ही गया था—और उसके लिए न वह ग्रिगोरी मेलेखोव की तरह अपनी जान हथेली पर लिये फिरता था और न लड़ाई के मैदान में बहादुरी दिखलाने के लिए उसने अपने को लापरवाही से खतरों के मुँह में झोंका था। बात यह है कि सैनिक-दंड-विभाग की नौकरी के लिए जरूरत कुछ दूसरी चीजों की थी, और इन गुणों की उसमें भरमार थी। बोलशेविकों के साथ या प्रभाव का जिस पर संदेह हो जाता, उसका हिसाब-किताब वह खुद करता और इस दृष्टि से दूसरे कज्ज़ाकों पर विश्वास न करता। लड़ाई से पीठ दिखलाकर भागने वालों के मामले में वह अफ़सर जरा भी न बनता और चाबुक या बेंत से उनकी खाल खुद उधेड़ देता। क़ैदियों से पूछताछ करने या कुछ उगलवाने के मामले में तो उसका मुक़ाबला पूरी टुकड़ी में कोई न कर पाता, यहाँ तक कि कमांडर खुद कंधे

अटकता और कहता—"भाइयो, कहने को जो चाहे सो कहो, मगर कोरशुनोव का जवाब नहीं है···आदमी हातिम है।"

मीत्का में एक विशेषता और थी। जब किसी क़ैदी को गोली से उड़ाना उचित न माना जाता, मगर रिहा कर देना भी वाजिब न समझा जाता, तो उसे वर्च के बेंत की सज़ा दी जाती और यह काम मीत्का को सौंप दिया जाता। वह ऐसी सफ़ाई दिखलाता कि पचासवीं चोट पर आदमी खून थूक देता और सौवें बेंत के बाद कज़्ज़ाक दिल की धड़कन सुने बिना उसे पूरी तरह निश्चिन्त होकर बोरे में लपेट देते और चलता कर देते। मीत्का के हाथों में आकर एक आदमी भी बचकर निकल नहीं पाता। वह खुद हँसी का ठहाका लगाते हुए कहता, "जितने लाल फ़ौजियों की तकदीरों के फ़ैसले मैंने किये हैं, अगर उन सबके पतलून और ट्यूनिकें उतार ली जातीं तो पूरे-के-पूरे तातारस्की गांव के लोगों के बदन ढक जाते।"

मीत्का के स्वभाव में बचपन से जो निर्ममता थी उसे सैनिक-दंड-विभाग में बिना किसी रोक-टोक के पूरी तरह खुल-खेलने का उचित अवसर मिला और वह दिन-दूनी-रात-चौगनी बढ़ी। नौकरी उसकी ऐसी रही कि उसकी मुलाक़ात अफसर-वर्ग के गए-बीते लोगों, यानी शराबियों, बदचलन लुटेरों, डकैत और सभी तरह के गिरे हुए लोगों से होती। वे लाल सैनिकों के प्रति अटूट घृणा के नशे में उसे जो कुछ सिखलाते वह सभी कुछ कृषक-सुलभ सरलता से सीखता और पचाता था। दूसरों के खून और दुख-तकलीफ़ों से टूटा कमज़ोर दिल का फौजी अफ़सर जहां न जा सकता वहां मीत्का चला जाता, और अपनी पीली, चमचमाती आंख सिकोड़ते हुए मुश्किल-से-मुश्किल काम पूरा कर लाता।

ऐसा था मीत्का और ऐसे मीत्का को कज़्ज़ाक यूनिट छोड़ने के बाद लेफ्टिनेंट कर्नल प्रयानिशनीकोव की टुकड़ी के सैनिक-दण्ड-विभाग में आसानी और ऐश-आराम से भरी ज़िन्दगी बिताने का मौक़ा मिला।···

तो, यही अभिमान से चूर मीत्का गांव आया तो बग़ल से गुज़रती औरतों के अभिवादन-नमन का उत्तर देना तक उसे अपनी इज़्ज़त से

गिरा हुआ लगा। वह अपना घोड़ा, शान से, कदम चाल से बढ़ाता अपने घर पहुँचा। वहाँ अधजले धुएँ से काले फाटक के पास वह घोड़े की पीठ से नीचे उतरा, बाग कालमीक को थमाई, तिरछे क़दमों अहाते में दाखिल हुआ और सीलान्ती के साथ घर का चक्कर काटने लगा। उसने, आग के दौरान पिघले, खिड़की के फ़ीरोज़ी शीशे को चाबुक से छुआ और भावना से भर्राई आवाज़ में बोला—"लोगों ने राख करके रख दिया। गाँव का सबसे भरा-पूरा घर था। आग लगाई हमारे गाँव के ही मीशकोशेवोइ ने। उसने बाबा को भी मार डाला। ख़ैर, सीलान्ती-पेत्रोविच, अपने गांव-घर लौटने पर अजीब-अजीब महसूस हुआ है मुझे।" सीलान्ती ने तड़ से पूछा—"कोशेवोइ खानदान का कोई आदमी ज़िन्दा है क्या?"

"कोई-न-कोई तो ज़िन्दा होना चाहिए···लेकिन, ख़ैर बाद में देखा जाएगा···आओ नताल्या की ससुराल चला जाए।"

सो, वे मेलेख़ोव-परिवार की ओर बढ़े तो सड़क पर बोगातिर-योव की पुत्र-वधू से यों ही भेंट हो गई। मीत्का ने पूछा—"मेरी माँ दोन के पार से अभी लौटीं या नहीं?"

"मेरा ख़याल है कि अभी तो लौटीं नहीं, मीत्री गिरोनइच!"

"मेलेख़ोव घर पर है?"

"कौन, बूढ़े पैन्तेली?"

"हाँ।"

"वे घर पर ही हैं···ग्रिगोरी के अलावा सभी लोग घर पर हैं।··· प्योत्र पिछले जाड़े में मार डाला गया। तुमने सुना?"

मीत्का ने सिर हिलाया और घोड़े को दुलकी चाल में डाल लिया, फिर वह वीरान गली से गुज़रा तो उसकी सन्तोष से भरी, बिल्ली की तरह पीली आँखों से अभी ज़रा देर पहले की उत्तेजना का किसी तरह का कोई संकेत न मिला। अन्त में मेलेख़ोव का अहाता नियराया तो उसने, जैसे अपने किसी साथी को विशेष रूप से सम्बोधित न करते हुए भी, धीमी आवाज़ में कहा—"यह है मेरा गाँव और इस तरह यह गाँव मेरी अगवानी कर रहा है। यानी हालत यह है कि मैं किसी

नाते-रिश्तेदार के यहाँ जाऊँ तब पेट भरूँ?···खैर, कोई बात नहीं, फिर दिन फिरेंगे।"

दूसरी ओर अपने यहाँ शेड के नीचे, कटाई की एक मशीन की मरम्मत करते पेन्तेली प्रोकोफ़ियेविच ने घुड़सवारों को देखा और उनमें भी कोरशुनोव को पहचाना तो लपकता हुआ आया और मेहमानों के स्वागत में बेंत का फाटक खोलते हुए बोला—"आओ··· आओ···आ जाओ, भाई···हमारे यहाँ मेहमान आते हैं तो बड़ी खुशी होती है हमें···लौटने पर गाँव तुम्हारी राह में अपनी पलकें बिछा रहा है।"

"हलो, पापा···सब-कुछ ठीक-ठाक तो है···सभी लोग सही-सलामत तो हैं न?"

"आसमान वाले का लाख-लाख शुक्र···अभी तक तो सभी कुछ ठीक-ठाक है। लेकिन, यह तो अफ़सरों की वर्दी है न तुम्हारे बदन पर?"

"हाँ, सो तो है···मगर तुमने यह क्यों मान रखा है कि सफ़ेद झब्बे पहनने का हक़ सिर्फ़ तुम्हारे बेटों को है?" मीत्का ने आत्म-सन्तोष से भरकर कहा और अपना लम्बा हाथ बूढ़े की ओर बढ़ाया।

"मेरे बेटे इन झब्बों के लिए कभी ऐसे बेकल नहीं रहे!" पेन्तेली प्रोकोफ़ियेविच ने मुस्कराते हुए कहा और घोड़ों को बाँधने की जगह दिखलाने के लिए आगे बढ़ा।

मेहमान-नवाज इलीनीचिना ने मेहमानों को खाना खिलाया और फिर बातचीत शुरू हुई। मीत्का ने अपने परिवार का हाल चाल पूछा और चुप्पी साध गया। उसके चेहरे से न गुस्सा टपका और न अफ़सोस। सिर्फ़ मामूली ढँग से यह पूछा कि मीशा-कोशेवोइ के यहाँ कोई बाकी भी है या नहीं? मालूम हुआ कि मीशा की माँ और बच्चे घर में हैं। इस पर उसने, दूसरों की निगाह बचाकर, सीलान्ती को आँख मारी।

फिर मेहमान जाने को खड़े हुए तो पेन्तेली ने उन्हें दरवाजे तक पहुँचाया और पूछा—"अभी रहोगे?"

"हाँ, शायद दो-तीन दिन रहूँगा ।"

"अपनी माँ से मिलोगे ?"

"देखो···"

"और इस वक्त कहीं दूर जा रहे हो ?"

"हूँ···जरा यों ही गाँव में एकाध लोगों से मिलने जा रहा हूँ··· जल्दी ही लौट आऊँगा ।"

और, फिर मीत्का और उनके साथी पेन्तेली के यहाँ लौटे भी नहीं कि गाँव-भर में अफवाह फैल गई—कोरशुनोव कालमीकों के साथ गाँव आया है और उसने कोशेवोइ खानदान के एक-एक आदमी को तलवार के घाट उतार दिया है ।

पर यह बात पेन्तेली के कानों तक न पहुंची । वह लोहार के यहाँ गया, वहाँ से लौटा और कटाई की मशीन की मरम्मत में फिर जुटा कि इलीनीचिना ने अन्दर से आवाज दी—"प्रोकोफ़िवेविच···यहाँ आओ···जल्दी यहाँ आओ !"

बुढ़िया की आवाज से साफ़ घबराहट छलकी । पेन्तेली हैरान होकर घर की ओर लपका ।

नताल्या स्टोव के पास खड़ी दीखी और उसका पीला चेहरा आँसुओं से तर नजर आया । इलीनीचिना ने आँखों से अनीकुश्का की पत्नी की तरफ इशारा किया और दबी हुई आवाज में पूछा—"तुमने खबर सुनी ?"

"ग्रिगोरी को हो गया कुछ ? आसमान वाले, रहम कर···उसका बाल बाँका न हो !" पेन्तेली के दिमाग में एक विशेष विचार कौंध-सा गया । उसका चेहरा उतर गया और हर व्यक्ति के चुप बने रहने पर वह डर गया और एकदम उबल पड़ा—"मौत ले जाए तुम लोगों को···फ़ौरन बतलाओ न कि हुआ आखिर क्या है ! खबर ग्रिगोरी के बारे में है ?" फिर, जैसे कि अपनी चीख से निस्सहाय होकर बेंच पर वह पड़ा और अपने काँपते हुए पैर सहलाने लगा ।

दून्या ने फ़ौरन ही समझा कि पापा को डर है कि हो-न-हो ग्रिगोरी के बारे में कोई बुरी खबर आई है । वह हड़बड़ाती हुई

बोली—"नहीं, पापा, बात ग्रिगोरी की नहीं है। मीत्का ने कोशेवोइ के घर के सभी लोगों को मार डाला है।"

"यानी मार डाला।" पैन्तेली के मन के ऊपर से बोझ-सा हट गया। पर दून्या की बात अब भी उसने पूरी तरह समझी नहीं। पूछा—"कोशेवोइ के घर के लोगों को मार डाला? मीश्री ने मार डाला?"

अनीकुश्का की पत्नी ही सारी खबर लेकर ग्रिगोरी के यहाँ भागी-भागी आई थी। सो, हकलाती हुई बोली—"ब···ब···ब बाबा, मैं अपने बछड़े की खोज में कोशेवोइ के घर की बग़ल से निकली, तो मैंने देखा कि मीत्री के साथ दो घुड़सवार अहाते में घुसे और फिर घर में दाखिल हुए। मैंने सोचा कि बछड़ा दूर नहीं जाएगा·· बछड़ों को चराने की पारी मेरी थी···"

"तुम्हारे बछड़े की दास्तान से भला मुझे क्या लेना-देना?" पैन्तेली ने नाराज होते हुए कहा।

"तो वे लोग घर में घुस गये।" औरत सिसकती हुई कहती गई, "और मैं खड़ी रही कि देखूं, अब क्या होता है। मेरे मन ने कहा—इनके इरादे कुछ गड़बड़ मालूम होते हैं···फिर, तो अन्दर की चीखें और मारपीट की आवाज मेरे कानों पड़ी। मैं तो डर से जहाँ-की-तहाँ कील-सी उठी। फिर, मैंने भागना चाहा और बाढ़ में आगे कदम बढ़ाया ही कि पीछे पैरों की धमक हुई। मैंने मुड़कर देखा तो मीत्का बुढ़िया के गले में रस्सी डालकर उसे जमीन पर इस तरह घसीटता नज़र आया जैसे कि वह इन्सान न हो और महज कुतिया हो। फिर, मीत्का उसे घसीटकर शेड में लाया और उस बेचारी ने मुंह तक नहीं खोला। हो सकता है कि इस बीच बेहोश हो गई हो। दूसरी तरफ, काल्मीक एक धन्नी पर चढ़ गया, मीत्का ने रस्सी का सिरा उसकी ओर फेंका और चिल्लाकर कहा—'खींचो और गाँठ डालकर फंदा बना लो।'··· उफ़, मेरा दिल कैसा दुखा! मगर उन लोगों ने, मेरे देखते-देखते बेचारी बुढ़िया का काम तमाम कर दिया, उछलकर घोड़ों पर सवार हुए और शायद सरकारी दफ़्तर की तरफ भाग गए। मेरी डर के मारे घर में घुसने की तो हिम्मत न हुई, लेकिन मैंने खून दरवाज़े के नीचे से बह-बह-

कर सीढ़ियों पर आने देना । सोनी छाती वाला न करे कि यह सब ज़िन्दगी में दुबारा देखना पड़े मुझे ।"

"क्या शानदार मेहमान हमारे यहाँ आये थे···!" इलीनीचिना ने चुनौती-भरी दृष्टि से अपने पति की ओर देखते हुए कहा ।

पैन्तेली का रोम-रोम क्रोध से उबल उठा। फिर अनीकुश्का की पत्नी ने अपनी कहानी ख़त्म की तो होंठ सिए-ही-सिए वह बाहर निकलकर बरसाती में आया ।

थोड़ी देर बाद मीत्का और उसके साथी फाटक पर झलके तो पैन्तेली मचकते हुए उनकी ओर बढ़ा और दूर से ही चीखा—"खबरदार, घोड़े अन्दर मत लाना !"

"आखिर बात क्या है ?" मीत्का ने अचरज से पूछा ।

"लौट जाओ, उल्टे पैरों लौट जाओ ।" पैन्तेली, मीत्का के ऐन सामने पहुँचा और उसकी आँखों में आँखें डालते हुए दृढ़ता से बोला—"बुरा न मानना, मगर मैं नहीं चाहता कि तुम यहाँ ठहरो···बेहतर यही है कि अपना रास्ता लो ।"

"हूँ···।" मीत्का ने बात समझी और पीला पड़ गया—"यानी तुम मुझे अपने घर से बाहर निकाल रहे हो ?"

"मैं नहीं चाहता कि तुम मेरा घर नापाक करो ।" बूढ़े की वाणी में संकल्प तना—"और, आज के बाद फिर कभी मेरी ड्योढ़ी के अन्दर पैर रखने की हिम्मत न करना । हम मेलेखोव खानदान के लोग ख़ून करने वाले क़ातिलों से रिश्ते नहीं जोड़ा करते, समझे ।"

"समझा ! मगर, तुम तो बड़े रहमदिल हो, पापा !"

"और, मुझे लगता है कि तुम यह भी नहीं जानते कि रहम कहते किसे हैं, क्योंकि तुमने औरतों और बच्चों के गले में फंदा डालना शुरू कर दिया है।···उफ़···मीत्का, कैसा गलीज धन्धा शुरू किया है तुमने !···अगर तुम्हारे पापा मरे न होते और तुम्हें आज देखते तो सदमे से उनका कलेजा फट जाता ।"

"अबे बूढ़े-बुद्धू, तू चाहता है कि मैं उन्हें प्यार से गले लगाता ? उन्होंने मेरे पापा को मार डाला, मेरे बाबा को तलवार के घाट उतार

दिया और मुझे चाहिए था कि मैं बदले में उन्हें मोहब्बत से चूमता··· है न ? तुम जाओ···तुम खुद जानते हो कि कहाँ ।" मीत्का ने क्रोध से आपे से बाहर होकर घोड़े की रास खींची और खेत के फाटक से बाहर निकल गया ।

"इस तरह गालियाँ मत बको, मीत्का···तुम उम्र में मेरे बेटे के बराबर हो । और, मेरे-तुम्हारे बीच तो कोई तक़रार है नहीं···ठंडे दिल से जाओ यहाँ से ।"

पर, मीत्का का चेहरा और उतर गया और वह चाबुक से धमकाते हुए ज़ोर से चीखा—"मुझे गुनाह करने पर मजबूर न करो । मैं तो नताल्या का मुँह देखता हूँ, वरना तुम्हें दिखलाता···बड़े आए रहम का बाज़ार लगाने···मैं खूब जानता हूँ तुम्हें । मैं तुम्हारी रग-रग पहचानता हूँ । मुझे पता है कि किस तरह के आदमी हो तुम ! तुम यहाँ से भागकर दोनेत्स के पार नहीं गये थे···नहीं न ? तुम लाल फ़ौजियों से जा मिले थे···ठीक है न ? यह है तुम्हारी हक़ीक़त । कुतिया के बच्चे, तुम सबको तो कोशेवोइ के खानदान के लोगों की तरह काटकर फेंक देना चाहिए। चलो, साथियो !···खैर, लंगड़े, कुत्ते के बच्चे, तुझे चाहिए कि तू चौकन्ना रहे और कभी मेरे हाथों में न पड़े ! पर अगर कभी तू मेरे हाथ आ गया तो फिर तेरी खैर नहीं । और तेरी मेहमान-नवाज़ी और खातिरदारी मैं हमेशा याद रखूँगा । मैंने अभी थोड़े वक्त पहले ही खुद अपनों के खिलाफ़ हाथ उठाया था ।"

पेन्तेली ने काँपते हुए हाथों से फाटक बन्द कर अन्दर से चटखनी लगा दी, भचकता हुआ अन्दर आया और नताल्या की ओर देखे बिना बोला—"मैंने तुम्हारे भाई को घर से बाहर निकाल दिया ।"

नताल्या मुँह से कुछ नहीं बोली । पर, मन-ही-मन उसने पापा की कार्रवाई का समर्थन किया। मगर इलीनीचिना ने फ़ौरन ही क्रॉस बनाया और खुशी से भरी आवाज़ में बोली—"उस ऊपर वाले की शान हमेशा बनी रहे ! वह अब कभी इस दरवाज़े पर नहीं आएगा । नताल्या बेटी, मेरी इन बातों के लिए माफ़ करना मुझे, लेकिन तुम्हारा मीत्का एक नम्बर का बदमाश निकला है। क्या काम तलाशा है उसने ! ज़रा देखो

तो, दूसरे कज़्ज़ाकों की तरह अपनी फ़ौज में काम नहीं करता, फ़ौजियों को सज़ा देने वालों के साथ घूमता फिरता है। और बूढ़ी औरतों के गले में फंदा डालना और बच्चों को तलवार से काटकर फेंक देना, यह क्या कज़्ज़ाकों का काम है? ये औरतें और ये बच्चे, ये जिम्मेदार हैं ग्रीशा की हरकतों के लिए? अगर इस तरह देखो तो ग्रीशा ने जो कुछ किया, उसके लिए लाल फ़ौजियों को तुम्हें मुझे मीशात्का और पोल्युश्का को, यानी हम सभी को टुकड़े टुकड़े करके फेंक देना चाहिए था। लेकिन उन लोगों ने ऐसा नहीं किया। उनके दिल में रहम था। नहीं, मैं ऐसी हरकत करने वालों का साथ देने को तैयार नहीं हूँ।"

"मैंने भी तो अपने भाई की हिमायत में कुछ नहीं कहा, माँ!" नताल्या ने कहा और रूमाल के कोने से आँसू पोंछे।

······मीत्का उसी दिन गाँव से चला गया। बाद में पता चला कि वह वहाँ कारगिन्स्काया के पास सैनिक-दंड-विभाग के सदस्यों से मिला और उनके साथ दोनेत्स प्रदेश की बस्तियों को व्यवस्थित करने के लिए रवाना हो गया। इन इलाकों के लोगों पर ऊपरी दोन के बाग़ियों के दमन में हाथ बँटाने का इल्ज़ाम था।···

परन्तु, जाने के बाद मीत्का पूरे सप्ताह गाँव-भर की बातचीत का विषय बना रहा। अधिकतर लोगों ने कोशेवोइ परिवार के लोगों की हत्या के लिए उसकी निन्दा की। लाशें चंदे की रक़म से दफ़ना दी गईं। कोशेवोइ का छोटा मकान बेचने की कोशिश की गई, मगर उसे लेने को कोई राजी न हुआ। हाँ, गाँव के अतामान के हुक्म पर झिलमिलियों के आर-पार तख्ते जड़ दिये गए। इसके बाद एक जमाने तक बच्चे उस घर के आस-पास खेलने तक में डरते रहे और स्त्री-पुरुष उधर से निकलते समय क्रास बनाते और मृत आत्माओं की शांति के लिए प्रार्थना करते रहे।

फिर, स्तेपी की घास की कटाई का समय आया और हाल की सारी घटनाएँ भुला दी गईं।

गाँव एक बार फिर मशक़्क़त से महकने लगा। एक बार फिर लड़ाई के मोर्चे की झूठी-सच्ची खबरें पर लगा लगाकर वहाँ आने लगीं। जिन किसानों ने अपने काम के जानवर अब तक बचा रखे थे,

वे आम काम के लिए गाड़ियों के साथ-साथ उन्हें भी देने में कोसते, और माँगने वालों को पानी पी-पीकर कोसते। लगभग हर दिन बैल और घोड़े खेतों से हटाने पड़ते और जिला-केन्द्र भेजने पड़ते। बूढ़े कटाई की मशीनों से घोड़े खोलते समय लम्बी खिचती लड़ाई को जी-भर गालियाँ देते। लेकिन, इससे क्या, तोप के गोले, कारतूस, काँटेदार तारों की गरारियाँ, और खाने का सामान तो गाड़ी से मोर्चे पर पहुँचाना ज़रूरी ही होता, और सो वे पहुँचाते। लेकिन, जैसे कि इस सब विद्रोह में ऐसे शानदार दिन उगे कि लोगों के मन में केवल एक इच्छा रह गई कि वे तैयार, रसीली घास काटें और हेंगे से उठा-उठाकर गट्ठर-पर-गट्ठर बाँधें।

तो, पैन्तेली ने भी घास की कटाई की तैयारी की और दार्‌या पर गुस्से से एकदम उबल पड़ा। बात यह है कि वह कारतूसों को पहुँचाने के लिए बैल जोत ले गई थी और उसे जल्दी ही लौटना था। पर पूरा हफ़्ता गुज़र गया था और उसकी कोई खबर न मिली थी। दूसरी तरफ़ सधे हुए पुराने बैलों के बिना स्तेपी में कुछ भी होना मुमकिन न था।

सच पूछिये तो पैन्तेली को दार्‌या को भेजना नहीं चाहिए था···उसे बैल सौंपते समय उसका माथा ठनका भी था, क्योंकि वह तो अच्छी तरह समझता था कि राग-रंग में औरत आपे में नहीं रहती, फूली-फूली फिरती है और जानवरों को तो परवाह ज़रा नहीं करती। लेकिन सवाल यह है कि वह उसे न भेजता तो और भेजता किसे! दून्या भेजी नहीं जाती, क्योंकि अजनबी कज़्ज़ाकों के साथ लम्बा सफ़र करना कोई मजाक तो होता नहीं। नताल्या के बच्चे छोटे-छोटे थे, और बूढ़ा खुद कारतूस ढोकर ले नहीं जाता। दूसरी तरफ़ दार्‌या ने खुशी-खुशी काम पूरा कर देने की हामी भर ली थी।

वह फ़ार्म के काम से इसके पहले भी गाड़ी लेकर मिल और जाने कहाँ-कहाँ आ-जा चुकी थी और प्रायः बहुत गद्‌गद हुई थी, क्योंकि बाहर किसी तरह का कोई बंधन तो रहता नहीं था। यानी, इस तरह हर सफ़र में उसका जितना जी बहलता, उतना ही मजा आता। होता यह कि सास की रोकथाम से छुटकारा मिलता, दूसरी औरतों से गपशप करने

की छूट मिलती, और कोई टूटा हुआ कज़्ज़ाक कहीं आ टकराता तो लगे हाथों थोड़ी मोहब्बत भी हो जाती। पर पर तो प्योत्र की मृत्यु के बावजूद, इलीनीचिना कहीं से लाग न लेती, जैसे कि आदमी के जीते-जी दुत्कार पर भौंकने वाली वह औरत पति की मौत के बाद उसके प्रति वफ़ादार हो गई हो, और यह वफ़ादार रहना उसके लिए लाज़िमी हो उठा हो।

इस बार पैन्तेली जानता था कि दार्या से बैलों की क़ायदे की देख-भाल होने से रही। पर, चारा कोई दूसरा न था, अतएव उसने उसे भेज दिया। लेकिन फिर पूरे सप्ताह-भर वह बहुत ही अधिक चिंतित और बेचैन रहा। घर के बूढ़े बैलों का तो काम तमाम समझो! उसने कई बार सोचा, रातों को चौंक-चौंककर जाग-जाग उठा और लम्बी आहें भरता रहा।

दार्या ग्यारहवें दिन वापस आई। पैन्तेली उसी समय खेत से घर आया था। वह अनीकुश्का की पत्नी के साथ घास काटता रहा था, और उसे दून्या के साथ छोड़कर पानी और खाना वग़ैरह के लिए घर आया था। यहाँ परिवार के सभी लोग खाना खा रहे थे कि खिड़की के पास से गाड़ी खड़खड़ाती हुई गुज़री। नताल्या भागी-भागी खिड़की के पास गई और उसने आँखों तक चेहरा ढँके दार्या को थकान से चूर, थके बैलों को हाँककर लाते देखा।

"दार्या है?" बूढ़े ने फँसती हुई आवाज़ में पूछा। बूढ़े ने जो कौर मुँह में डाला था वह जल्दबाज़ी के कारण गले में फँस गया था।

"हाँ," नताल्या ने उत्तर दिया।

"मुझे तो उम्मीद नहीं थी कि बैल अब बहुरकर आयेंगे भी! ख़ैर नीली छतरीवाला बड़ा मेहरबान है। कमीनी, रंडी कहीं की! आख़िरकार इसे घर लौटने की याद आ गई!" बूढ़ा क्रॉस बनाते और सन्तोष की साँस लेते हुए बोला।

दार्या ने बैल खोले, बावर्चीख़ाने में आई, घोड़े वाला कम्बल तह कर ड्योढ़ी पर रखा और सबका अभिवादन किया।

बूढ़े ने आँखें नीची किये-ही-किये उसे क्रोध से देखा, अभिवादन की

अनदेखी की ओर बोला—"बड़ी जल्दी घर लौट आईं ? हफ़्ता-भर और मज़े कर आती ?"

"ऐसा ही था तो खुद क्यों नहीं चले गये ?" दार्‌या ने अपना गर्द-भरा रूमाल सिर से खोलते हुए तड़ से जवाब दिया।

"इतना वक़्त कहाँ लगा दिया तुमने ?" इलीनीचिना वातावरण का तनाव कम करने के विचार से बीच में बोल पड़ी।

"लोगों ने आने ही नहीं दिया… मैं करती क्या ?"

पैन्तेली ने अविश्वास से सिर हिलाया और पूछा—"क्रिस्तोन्या की बीवी को किसी ने नहीं रोका, सिर्फ तुम्हीं को रोक लिया ?"

"हाँ, उसको नहीं रोका !" दार्‌या की आँखें क्रोध से जलने लगीं—"अगर मेरी बात का यक़ीन न हो तो जाकर खुद पूछ आओ।"

"मैं भला पूछने क्यों चला जाऊँ ! लेकिन, आगे से तुम्हारा इस तरह कहीं जाना बंद ! अब तो सिर्फ मौत के नाम पर ही तुम जा सकती हो कहीं, वैसे नहीं।"

"तुम बेकार की धमकी दे रहे हो मुझे। बिलकुल बेकार की धमकी दे रहे हो। खैर, वैसे भी मैं कहीं नहीं जाऊँगी—भेजोगे तब भी कहीं नहीं जाऊँगी।"

"बैल तो ठीक-ठाक हैं।" बूढ़े ने जरा मुलायम पड़ते हुए पूछा।

"ठीकठाक हैं…तुम्हारे बैलों को कुछ नहीं हुआ।" दार्‌या ने बेमन से जवाब दिया और उसका चेहरा रात के अँधियारे में अधिक साँवला हो उठा।

'शायद रास्ते के अपने यारों से बिछुड़ना पड़ा है इसे। इसीलिए इतनी नाराज़ है।' नताल्या ने सोचा। दार्‌या और उसकी कामुकता के गंदे कारनामों से उसे उस पर जितना ही रहम आता था, उतनी ही घिन छूटती थी।…

फिर, नाश्ते के बाद पैन्तेली खेत लौटने को हुआ कि उसी समय गाँव का अतामान आ धमका।

बोला—"तुम्हारा सफ़र तुम्हें मुबारक ! जरा रुको, पैन्तेली प्रोकोफ़ियेविच…अभी कहीं नहीं जाओ !"

"फिर तो गाड़ी नहीं चाहिए ?" बूढ़े ने बहुत ही विनयपूर्ण स्वर में कहा, गोकि मन-ही-मन गुस्से से उबलता रहा।

"नहीं, इस बार कुछ और काम है। बात यह है कि पूरी दोन-फ़ौज के कमांडर जनरल सिदोरिन यहाँ आ रहे हैं। आई बात समझ में ? मुझे अभी-अभी ज़िला-अतामान का फ़रमान मिला है कि गाँव में एक जलसा होगा। उसमें गाँव का हर मर्द और औरत हाज़िर होगी।"

पैन्तेली चीख उठा—"कुछ अक्ल भी है उन लोगों को ! गाँव का हर आदमी इस वक्त काम में फँसा हुआ है। ऐसे में यहाँ जलसा कौन करेगा ? तुम्हारा यह जनरल सिरोदिन मुझे सूखी घास देगा जाड़े के लिए ?"

अतामान ने शांत भाव से उत्तर दिया—"तुम्हारे सामने वे उतनी ही सूखी घास डालेंगे, जितनी मेरे सामने, लेकिन इससे कुछ नहीं। मुझे जो हुक्म दिया गया है, वही मैं कर रहा हूँ। अपने ढोर मशीनों से खोलो ! हमें जनरल की शानदार अगवानी करनी चाहिये ! और हाँ, सुना है कि दोस्त-मुल्कों के जनरल भी उनके साथ यहाँ आ रहे हैं ?"

पैन्तेली सोच में डूबा क्षण-भर गाड़ी के पास खड़ा रहा। अतामान अपनी बात का भरपूर असर देखकर खुशी से खिल उठा। पूछने लगा—"तुम्हारी घोड़ी उधार मिल सकती है ?"

"घोड़ी की क्या ज़रूरत आ पड़ी ?"

"कार वाला उन्हें जंगली चूहा दे सवारी को···हुक्म आया है कि उनके लिए दो ओइका गाड़ियाँ दुरनोई की घाटी भेजी जानी चाहिए। लेकिन समझ में नहीं आता कि तारान्तास-गाड़ियाँ और घोड़े कहाँ से जुटाऊँ ? तड़का होने के पहले से ही भाग-दौड़ कर रहा हूँ। कमीज़ें पसीने से भीग चुकी हैं पाँच बार और घोड़े अब तक मिले हैं सिर्फ़ चार। हर आदमी घर के बाहर है, काम में लगा हुआ है···कोई कहे-सुने किससे ?"

इस पर पैन्तेली ने अतामान की खुशी के लिए न सिर्फ घोड़ी दे दी, बल्कि अपनी छोटी, कमानीदार तारान्तास तक देने की बात

अपनी तरफ़ से कह दी। आखिरकार कोई ऐरा-गैरा तो आ नहीं रहा था, कमांडर-इन-चीफ़ आ रहा था और विदेशी जनरल उसके साथ आ रहे थे। पैन्तेली के मन में जनरलों के लिए सदा ही असीम आदर रहा था।

तो अतामान की दौड़-धूप के परिणामस्वरूप दो ओइका-गाड़ियाँ मिल गईं और सम्मानित अतिथियों के लिए दुरनोइ घाटी भेज दी गईं। फिर लोग चौक में जमा होने शुरू हुए। कितने ही लोगों ने तो जलसे में हाज़िर होने की हड़बड़ी मे घास की कटाई जहाँ-की-तहाँ छोड़ दी।

पैन्तेली ने भी काम की चिन्ता छोड़ साफ़ कमीज़ और धारीदार पाजामा पहना और ग्रिगोरी से भेंट में मिली टोपी लगाई। फिर दार्या से दून्या के लिए पानी और खाना भिजवाने की बात अपनी पत्नी से कही और भचकते हुए बाज़ार वाले चौक की तरफ बढ़ा।

थोड़ी देर बाद गाँव के रास्ते पर गर्द का भारी बादल मँडराता दीखा। फिर बादल के बीच दूर धातु चमचमाती दीखी और मोटर का भोंपू सुनाई पड़ा। मेहमान दो नई चमकती हुई गहरी नीली मोटरों में आते नज़र आए। सड़क पर उछलती खाली ओइका गाड़ियाँ, घर लौटते घास काटने वालों की बग़ल से गुज़रीं। उनकी घंटियाँ होले-होले बजती रहीं। ये घंटियाँ, अतामान ने, इस मौके के लिए गाड़ियों में खास तौर पर लगवाई थीं।···

तो सवारियों के नियराने के साथ चौक में हलचल हुई। लोग आपस में बातें करने और बच्चे खुशी से चहकने लगे। अतामान भीड़ में इधर-उधर दौड़-दौड़कर, मेहमानों का रोटी और नमक से स्वागत करने के लिए गाँव के बड़े-बूढ़ों को जमा करने लगा। और पैन्तेली पर निगाह पड़ते ही, वह खुशी से खिलकर उससे आग्रह करता हुआ बोला—"ईसा के लिए, इस काम में मेरी मदद करो। तुम तजर्बेकार आदमी हो और सभी दाव-पेंच जानते हो···ऐसे लोगों से बातें करना और उन्हें खुश रखना, तुम्हें खूब आता है। फिर तुम क्षेत्रीय प्रशासन के सदस्य हो। उस पर तुम्हारा बेटा ग्रिगोरी है।···मेहरबानी करके रोटी और नमक सँभाल लो। मैं जल्दी से घबरा जाने वाला आदमी हूँ। मुझसे

यह काम होने से रहा। मेरे तो घुटने जवाब दे रहे हैं।"

"मेरे भाई, जब मैं सैनिक परिषद् में था तो मैंने खुद नायब अतामान से मेलों-मिलों बात की थी···" पैन्तेली ने कहना शुरू किया, लेकिन शब्द होंठों पर जमकर रह गए।

इसी बीच सबसे आगे वाली मोटर कोई एक दर्जन कदम के फ़ासले पर आकर रुकी। एक लम्बी चोंचवाली टोपी और गैर-रूसी पद्धति वाली ट्यूनिक पहने, एक सफाचट दाढ़ी-मूंछ का शोफ़र कूदकर बाहर आया और उसने मोटर का दरवाजा खोला, खाकी वर्दी पहने दो फ़ौजी अफ़सर गम्भीर भाव से नीचे उतरे और भीड़ की तरफ़ बढ़े। उन्होंने सीधे पैन्तेली की तरफ़ क़दम बढ़ाये और वह जल्दी से अटेंशन की मुद्रा में हो गया। उसने मन-ही-मन सादा लिबास वाले इन लोगों को जनरल, और शानदार कपड़ों में सजे-बजे पीछे आने वालों को इनके दल के साथ समझा। लेकिन फिर सवाल उठा कि जनरल तो शानदार झब्बे लगाते हैं। ये झब्बे कहाँ हैं? कंधे की गांठों वाली डोरियाँ और तमगे कहाँ हैं? फिर ये जनरल भी कैसे जब देखने में आम क्लर्कों से अलग कहीं से लगते ही नहीं?

बूढ़े ने पास आते इन मेहमानों को एकटक देखा और उसकी आँखें अधिक-से-अधिक आश्चर्य से फटती गईं। सहसा ही उसका सारा भ्रम टूट गया। उसने अपनी जगह अपमानित भी अनुभव किया, क्योंकि उसे अपनी सारी तैयारी बेकार लगी और ये जनरल कहलाने के हक़दार नहीं लगे। सोचने लगा—'ऐसी-तैसी में जाए। अगर मैं जानता कि ऐसे जनरल आएँगे यहाँ, तो ऐसे सम्हाल-सम्हालकर कपड़े कभी नहीं पहनता, इनके इन्तजार में इतना बेताब कभी नहीं होता और किसी नाक-बहनी बुढ़िया के हाथों की कच्ची-पक्की सेंकी रोटी थाल में रख-कर इस तरह बेवकूफ की तरह खड़ा बिल्कुल नहीं होता। पैन्तेली प्रोकोफियेविच ने दूसरों के सामने अपना मजाक अब तक कभी नहीं बनवाया, सो आज बन गया।'

और, सचमुच ही एक क्षण पहले उसके पीछे बच्चों ने क़हक़हा लगाया और उनमें से एक शैतान बच्चे ने पूरी आवाज़ से चिल्लाकर

कहा—"लड़को, ज़रा देखो कि बूढ़े पैन्तेली ने आज कितनी तकलीफ़ उठाई है। ऐसा लगता है जैसे कि सफ़ाई की कोशिश में पूरे-का-पूरा ब्रश निगल गया है।"

पैन्तेली ने सोचा कि इस तरह अपनी हँसी उड़वाने और अपने लँगड़े पैर के साथ ज़ब्र करने की कोई वाजिब वजह होती तो कोई बात न थी। मगर···पैन्तेली का पूरा अन्तर नफरत से उबलने लगा—"यह सारा गुनाह इसी बुज़दिल अतामान का है। यही आकर मेरा दिमाग़ चाट गया, मुझसे घोड़ी और तारान्तास ले गया और तारान्तास में लगाने के लिए घंटियों की तलाश में जीभ लटकाए गाँव-भर की दौड़ लगाता फिरा।

सच तो यह है कि जो आदमी जिन्दगी में देखने लायक कुछ नहीं देखता, वह मिट्टी को भी सोना समझता है और खुशी से उमड़ा-उमड़ा घूमता है। मिसाल के लिए शाही परेड को लो। उसमें आदमी तमग़ों से सीना मढ़े, सुनहरी ज़ंजीर पहने मार्च करता है। उसे देखो तो आँखें खुशी से खिल उठती हैं। जनरल जनरल नहीं, किसी देवता की मूरत-सा मालूम होता है। लेकिन, ज़रा काले कौओं-जैसे इन रँगरूटों को तो देखो। एक के सिर पर तो वर्दी के साथ की चोंचदार टोपी तक नहीं है। उल्टे जाल में ढका एक बाउलर जैसा टोप है। फिर, दाढ़ी-मूँछ ऐसी सफ़ाचट है कि चिराग लेकर ढूँढ़ो तब भी एक खूँटी न मिले।"··· पैन्तेली के चेहरे पर क्रोध के बादल घिर आए और वह नफ़रत से थूकते-थूकते रह गया। इसी समय किसी ने उसे पीछे से धक्का दिया और गरम होकर फुसफुसाते हुए बोला—"बढ़ो, रोटी लेकर आगे बढ़ो।"

पैन्तेली ने आगे कदम बढ़ाया। जनरल सिदोरिन ने चारों ओर निगाह दौड़ाई और गूँजती हुई आवाज़ में बोला—"इपद्रास्तविच, बड़े बुज़ुर्गो!'

"आप हमेशा सेहतमंद रहें, हुज़ूर!" गाँव के लोगों ने टूटे-फूटे स्वरों में एक साथ कहा।

जनरल ने नमक-रोटी बड़ी शोभा से पैन्तेली के हाथों से ली,

धन्यवाद दिया और माल अपने एडजुटेंट की तरफ़ बढ़ा दिया ।

अपनी आँखों तक गरमी का हेलमेट पहने, लम्बे कद, इकहरे बदन वाले अंग्रेज कर्नल ने भावहीन उत्सुकता से कज्जाकों पर नजर डाली । बोलशेविकों से मुक्त दोन-इलाक़े के मुआइने के दौरे पर सिदोरिन के साथ यहाँ आने का आदेश उसे काकेशस में स्थित ब्रिटिश सैनिक मिशन के प्रधान जनरल-ब्रिग्ज ने दिया था । इस समय यह कर्नल एक दुभाषिये की सहायता से एक ओर कज्जाकों के मन पढ़ने की कोशिश कर रहा था, तो दूसरी ओर मोर्चे की सही स्थिति का परिचय प्राप्त कर रहा था ।···

सो कहने को तो कर्नल सफ़र की दुश्वारियों, स्तेपी-मैदान के एक-से नज़ारों, उलटी-सीधी बातों और एक बड़ी सत्ता के प्रतिनिधि के नाते अपने साथ जुड़ी हुई ज़िम्मेदारियों के कारण लगभग टूटा-टूटा-सा रहा, तो भी अपने सम्राट् और अपने देश के हित को उसने सबसे ऊपर रखा । उसने स्थानीय वक्ता का भाषण पूरे मनोयोग से सुना और लगभग सभी कुछ समझ लिया । बात यह है कि वैसे तो उसने यह बात औरों से छिपाई थी, पर सच्चाई यह थी कि रूसी भाषा वह अच्छी तरह जानता था ।···

सो, सच्चे अंग्रेज की स्वभावगत विनय के साथ उसने स्तेपी के इन युद्ध-प्रिय सपूतों के तरह-तरह के चेहरों पर नजर दौड़ाई और कज्जाक लोगों को गहराई से देखने वाले हर व्यक्ति की तरह वह भी इनके जातिगत गुणों के घोलमेल से बहुत ही प्रभावित हुआ । स्लाव-मूलक, सुनहरे बालों वाले एक कज्जाक की बगल में एक पक्का मंगोल खड़ा दीखा और उसकी बग़ल में कौए की तरह काला एक कज्जाक नज़र आया । यह कज्जाक भूरे बालों वाले एक पादरी से बातें करता रहा और पादरी को देखकर ऐसा लगा जैसे कि वह सीधा बाइबिल से निकला चला आ रहा है । कोई कहता तो कर्नल बड़ी-से-बड़ी बाजी लेकर यह साबित कर देता कि अपनी छड़ी पर झुके पुराने डिज़ाइन का क़मर तक का कोट पहने, सफ़ेद दाढ़ी वाले कज़्ज़ाक की रगों से काकेशिया का पहाड़ी ख़ून लहरें लेता है ।

कर्नल इतिहास थोड़ा-बहुत जानता था। सो, कज्ज़ाकों पर नज़र दौड़ाते समय उसने मन-ही-मन सोचा—इन बर्बर लोगों का तो क्या, इनके नाती-पोते तक किसी नए प्लातोव की कमान में भारत की तरफ़ रुख न करेंगे। बोलशेविकों को हरा देने के बाद रूस को गृह-युद्ध का सामना करना पड़ेगा और यों इसका सारा ख़ून इस तरह पानी हो जाएगा कि एक जमाने तक दुनिया के बड़े मुल्कों में इसकी गिनती तक न की जाएगी, और ब्रिटेन के पूर्वी उपनिवेश कई-कई दशकों तक सुरक्षित बने रहेंगे।…

कर्नल को पूरा विश्वास था कि बोलशेविक हार जाएँगे। कर्नल स्वयं तर्क-प्रिय, गम्भीर व्यक्ति था और लड़ाई के पहले कितने ही वर्षों तक रूस में रह चुका था। इसलिए, इस लगभग बर्बर-से देश में कम्यूनिज़्म के विचारों की जीत की बात तक स्वभावतया न सोच पाता था।…

उसकी निगाह जोर-ज़ोर से बोलती औरतों की तरफ़ घूमी, तो बिना गर्दन मोड़े उसने उनके सर्दी-गर्मी-वर्षा से सँवराए चौड़े चेहरे देखे। एक नफ़रत से भरी अनदेखी मुस्कान उसके भिचे होठों पर दौड़ गई।

दूसरी तरफ़, नमक और रोटी देने के बाद पैन्तेली भीड़ में मिल गया और थोड़ी दूर पर खड़ी त्रोइका गाड़ियों की ओर बढ़ा। वह व्येशेन्स्काया के एक वक्ता की बातें सुनने को रुका नहीं। वक्ता व्येशेन्स्काया ज़िले के कज्ज़ाकों की तरफ़ से मेहमानों की राह में पलकें बिछाता रहा।

त्रोइका गाड़ियों के घोड़े झाग से नहाये नज़र आए। उनके पेट गढ़ों में धँसे समझ पड़े। बूढ़ा अपनी घोड़ी के पास पहुँचा और अपनी आस्तीन से उसके नथुने रगड़ने लगा। उसके मुँह से एक आह-सी निकल गई। उसे सारे-कुछ से इतनी मायूसी हुई कि वह बुरी तरह कोसने लगा और घोड़ी को खोलने के लिए फ़ौरन ही उसे घर ले चला।

इस बीच जनरल सिदोरिन ने तातारस्की के रहने वालों के बीच भाषण देना शुरू किया और लाल सेना के पीछे के मोर्चे में कज्ज़ाक

कारनामों की सराहना करते हुए बोला—"हम सबका मिला-जुला दुश्मन एक है, आपने उसके नाकों से लोहा चबाकर रख दिया है। देश बोल्शेविकों के खूंखार जुए से धीरे-धीरे छुटकारा पा रहा है। वह आपकी सेवाएं कभी भूल नहीं सकता। हमें पता है कि आपके इस गांव की औरतों ने इन हथियारबंद मुठभेड़ों में खास हिस्सा बँटाया है। हम इनका बड़ा आभार मानते हैं और इसके लिए इन्हें विशेष सम्मान देना चाहते हैं। जिन कज्जाक वीरांगनाओं के नाम पढ़कर सुनाये जाएँ वे एक क़दम आगे आ जाएँ।"

इस पर एक अधिकारी ने एक सूची पढ़कर सुनाई। पहला नाम दार्या मेलेखोव का था। बाक़ी नाम विद्रोह के शुरू में खेत-रहे कज्जाकों की विधवाओं के थे। इन सभी स्त्रियों ने दार्या की भाँति ही, तातारस्की में कम्यूनिस्ट क़ैदियों के रक्तपात में हिस्सा लिया था। कम्यूनिस्ट सेरदोब्स्की रेजीमेंट के हथियार डाल देने के बाद हाँककर तातारस्की लाए गए थे।

दार्या पैन्तेली के आदेशानुसार खेत न गई थी, बल्कि मेले-ठेले के ठाठ में चौक में आ गई थी। सो, अपना नाम सुनते ही दूसरी औरतों को एक ओर को ठेलती, सिर पर बँधा सफ़ेद रूमाल ठीक करती घबराहट के कारण हलके-हलके मुस्कराती, आँखें आधी मूँदे हिम्मत से आगे आई। औरत लम्बे सफ़र और शामों के 'मज़े' के बावजूद देखने-सुनने में खासी लगी। धूप से अछूते पीले गालों पर प्यास से तड़पती आँखों की चमक फिसलती दीखी। रँगी हुई भौंहों के बनावटी छल्लों और होंठों की मुस्कराहट की तहों के पीछे से एक चुनौती और एक गुनाह-सा झाँकता लगा।

दार्या का रास्ता एक फ़ौजी अफ़सर रोके खड़ा रहा। पर दार्या ने उसे धीरे से एक तरफ़ ढकेला। बोली—"एक फ़ौजी की बेवा को रास्ता दो न!" और, फिर सीधे सिदोरिन के पास जा पहुँची। सिदोरिन ने अपने एडजुटेंट के हाथों से संत-जार्ज-रिबनवाला तमग़ा लिया और काँपती हुई उँगली से दार्या की जैकेट के बाएँ सीने पर पिन कर दिया। इस बीच मुस्कराते हुए वह उसकी आँखों में आँखें डाले रहा। पूछा—

"तो तुम कॉरनेट-मेलेखोव की वेवा हो···वह तो मार्च में मारा गया था ?"

"जी हां।"

"अभी-अभी तुम्हें नक़द इनाम भी मिलेगा—पांच सौ रूबलों का···यह अफ़सर देगा तुम्हें।···फ़ौजी अतामान अफरीकन पैत्रोविच वोगायेव्स्की और दोन की सरकार तुम्हारी बहादुरी के लिए तुम्हें बहुत धन्यवाद देती है।···साथ ही तुम्हारे पति की मौत से तुम पर जो मुसीबत टूटी है, उसके लिए तुम्हारे साथ दिली हमदर्दी रखती है।"

दार्‌या ने सिदोरिन की पूरी बात न समझी। पर उसने सिर हिलाकर उसके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की, एडजुटैंट के हाथ से रूबल लिये और चुपचाप मुस्कराकर जनरल की आंखों में आंखें डालने लगी।

जनरल अब भी जवान था। क़द में दार्‌या के लगभग बराबर था।···औरत ने उसके हलके चेहरे पर बे-रोकटोक-भरपूर निगाह डाली। 'इन्होंने मेरे प्योत्र की क़ीमत एक जोड़ी बैल की क़ीमत से ज्यादा नहीं आंकी है···लेकिन···यह जनरल देखने-सुनने में बुरा नही है···चल जाएगा !' अपनी गंवारू धुन में दार्‌या ने सोचा। सिदोरिन उसके वहां से जाने की बाट जोहने लगा। पर वह अब भी वहीं बनी रही। इस पर एडजुटैंट और उसके पीछे खड़े दूसरे अफ़सरों ने निगाह उठाई और एक-दूसरे का ध्यान इस रंगीली वेवा की तरफ़ खींचा। उनकी आंखें खुशी से चमकने लगीं। और तो और, ब्रिटिश जनरल तक में जान आ गई। उसने अपनी पेटी सीधी की, एक पैर के बजाय दूसरे पैर पर बल दिया और उसके गम्भीर चेहरे पर भी मुस्कान-सी दौड़ गई।

"मैं जा सकती हूं ?" दार्‌या ने पूछा।

"हां, क्यों नहीं, जाओ···।" सिदोरिन हड़बड़ाते हुए बोला।

दार्‌या ने ब्लाउज के खुले कॉलर में भद्दे ढंग से हाथ डाला, रूबल अन्दर दबाये और वापस लौट दी। भाषणों और टीमटामों से परेशान फौजी अफ़सरों ने उसके हलके क़दमोंवाली चाल बड़े ग़ौर से देखी।

फिर मार्तिन शमील की पत्नी धीरे-धीरे सिदोरिन के सामने पहुंची। पर, उसके पुराने ब्लाउज में तमग़ा पिन किया गया तो एकदम फूट पड़ी। सब-कुछ ऐसा स्वाभाविक और नारी-सुलभ रहा कि अफ़सरों के

चेहरों की हँसी गायब हो गई और वे संजीदगी से गम्भीर हो उठे।

सिदोरिन के चेहरे पर भी उदासी के बादल छा गए। पूछा—"तो तुम्हारा पति भी मारा गया?"

औरत ने चेहरा दोनों हाथों से ढँक लिया और मुँह से कुछ नहीं कहा। केवल सिर हिला दिया। एक कज्जाक भारी आवाज में बोला—"इसके बच्चे इतने हैं कि भरने लगो तो गाड़ी के एक पूरे डिब्बे में न समावें।"

सिदोरिन पंथेत की तरफ घूमा—"हम उन स्त्रियों को सम्मानित कर रहे हैं, जिन्होंने बोलशेविकों से लड़ने में विशेष वीरता का परिचय दिया है। उनमें से कितनी ही स्त्रियों के पति आन्दोलन के आरम्भ में ही मर गए और उन्होंने उनकी मौत का बदला इस तरह लिया कि स्थानीय कम्युनिस्टों की टुकड़ी-की-टुकड़ी का नाम-निशान मिटा दिया। जिस औरत को सबसे पहले तमगा दिया गया, उसने अपने हाथों से एक कम्यूनिस्ट कमीसार को मारा है। कमीसार अपनी बेरहमी और जुर्म के लिए मशहूर रहा है।"

दुभाषिये ने जल्दी-जल्दी पूरी बात अंग्रेजी में कही। कर्नल ने सब-कुछ सिर झुकाए-ही-झुकाए सुना और बोला—"मैं इन औरतों की हिम्मत की दाद देता हूँ। लेकिन, जनरल, कृपया यह बतलाइये कि क्या इन औरतों ने भी उन्हीं परिस्थितियों में लड़ाई लड़ी है, जिन परिस्थितियों में मर्दों ने?"

"जी हाँ।" सिदोरिन ने कहा और तीसरी बेवा को आवाज दी।

थोड़ी देर बाद मेहमान जिला-केन्द्र के लिए रवाना हुए और भीड़ हटने लगी। लोग घास काटने की हड़बड़ाहट में अपने-अपने खेतों की तरफ लपके। यानी यह कि जब तक जोर-जोर से भूँकते कुत्तों से घिरी मोटरें आँखों से ओझल हुईं, तब तक चौक में सिर्फ तीन बूढ़े बाकी बचे। वे गिरजे की बाड़ के पास खड़े होकर आपस में बातें करने लगे।

एक व्यक्ति अपना हाथ नचाते हुए बोला—"क्या जमाना लगा है? पुराने वक्त में लड़ाई होती थी तो संत-जॉर्ज-क्रॉस या संत-जॉर्ज-तमगे सचमुच बड़े कामों के लिए, बड़ी-से-बड़ी बहादुरी दिखलाने के लिए दिए

जाते थे। और, सो भी मर्दों को मिलते थे। मर्द भी कैसे कि एक-से-एक हिम्मतवर और जान की बाजी लगाने वाले! और, ऐसे मर्द भी कोई सौ-दोसौ नहीं निकलते थे। न ही मौत या शोहरत की चर्चा इस तरह की जाती थी। लेकिन, आजकल तो लोग तमगे औरतों को देने लगे हैं। वैसे अगर औरतें कुछ बहादुरी करके भी दिखलातीं तो यह ऐसा कुछ बुरा भी न होता। लेकिन, कज्जाक कैदियों को गांव में हांक लाए, और गांव की औरतों ने उन मजबूर, निहत्थे लोगों को खूंटे-खूंटियां फेंक-फेंककर मार डाला। इसमें बहादुरी क्या है? मेरी तो समझ में ही नहीं आता। नीली छतरीवाला मुझे माफ करे!"

एक दूसरे कमज़ोर निगाहवाले, दुबले-पतले बूढ़े ने पैर एक तरफ़ को खिसकाया, धीरे से कपड़े का तह किया हुआ खलीता जेब से निकाला और बोला—"नोवोचेरकास्क के लोग मुझे खासे दूरन्देश मालूम होते हैं। मेरा खयाल है कि उन्होंने सोचा होगा कि लोगों के मन में और जोश भरने के लिए और लड़ने के मामले में उनमें और दिलचस्पी पैदा करने के लिए औरतों में कुछ-और खिचाव और दम पैदा किया जाना चाहिए। तो, यह रहा तमग़ा और ये रहे ऊपर से पांच सौ रूबल! भला कौनसी वह औरत है जो कह देगी कि नहीं, यह सब मुझे नहीं चाहिए। तमगा मिल गया और मिल गए रूबल। अब अगर कज्जाकों में ऐसे हों जो मोर्चे पर न जाना चाहें या कुछ ऐसे हों जो हाथ-पैर समेट-कर लड़ाई की आग से दूर-ही-दूर रहना चाहें, तो क्या ऐसा मुमकिन है? बीवियां कान उखाड़कर रख देंगी। रात मे जो चिड़िया बोलती है, उसकी आवाज़ सबसे ज्यादा गूंजती है। फिर यह भी है कि हर औरत अपनी जगह सोचने लगेगी कि कुछ करूं, शायद तमग़ा मुझे मिल जाए।"

"फ्योद्र, तुम बिल्कुल बेसिर-सिर पैर की बातें कर रहे हो।" तीसरे व्यक्ति ने आपत्ति की—"औरतें उस इज्जत की हक़दार थीं। उन्हें यह इज्जत मिली। बेचारी बेवाएँ है। रूबलों से फ़ार्म के कामकाज में मदद मिलेगी। तमगे उनकी बहादुरी के लिए दिये गए हैं और वे उनकी बहादुरी की कहानी कहेगे। सबसे पहले दार्‍या मेलेखोव ने कोतल्यारोव को दूसरी दुनिया में भेजा और ठीक

भेजा। ऊपरवाला सबका इन्साफ़ करता है, मगर तुम औरतों के सिर तोहमत नहीं मढ़ सकते। अपना हाड़-मांस अपना ही हाड़-मांस होता है···"

इस तरह बूढ़े बहस करते रहे और तब तक करते रहे जब तक कि शाम की प्रार्थना का समय नहीं हो गया। फिर, तो गिरजे का घंटा पहली बार बजा कि तीनों उठे, टोपियाँ उतारीं, क्रॉस बनाया और बाक़ायदा गिरजे के अहाते में दाखिल हुए।

: १३ :

मेलेखोव परिवार की ज़िन्दगी का नक़शा जिस तरह बदला, वह काफ़ी आश्चर्यजनक रहा।

···अभी कुछ समय पहले तक घर में पैन्तेली प्रोकोफ़ियेविच की तूती बोलती थी और परिवार का हर प्राणी बिना मुँह से उफ़ निकाले उसके हुक्म के आगे सिर झुकाता था। काम सब मिल-जुलकर करते थे, दुःख-सुख में एक-दूसरे के साझीदार होते थे और कोई गहरी भावना सबको स्नेह के एक मज़बूत, अटूट सूत्र में पिरोती थी। परन्तु, पिछली बहार के बाद से सब-कुछ बदल गया था। सबसे पहले सीमा दून्या ने तोड़ी थी। अब वह पिता की आज्ञा का उल्लंघन खुल्लमखुल्ला तो न करती, पर जो भी उसे करना पड़ता, काफी हीलाहवाली के साथ यूँ करती जैसे कि काम अपना न होकर किसी और का हो और वह मजदूरी-भर के लिए उसे कर रही हो। बाहर से वह दूसरों से काफ़ी कटी-कटी रहती और बहुत ही कम बोलती। उसकी हँसी के, मस्ती से भरे ठहाके कभी भूले-भटके ही सुन पड़ते।···

ग्रिगोरी के मोर्चे के लिए रवाना होने के बाद नताल्या के भी घर के बड़े-बूढ़ों से वे सम्बन्ध न रह गए। अब वह सारा समय अपने बच्चों के साथ बिताती, केवल उनसे खुलकर बातें करती, उन्हीं में उलझी रहती, और हर समय किसी बात को लेकर मन-ही-मन चुपचाप घुटती लगती। पर, घर के दूसरे प्राणी को अपने मन के संताप का संकेत भी न मिलने देती। अपने अन्तर का बोझ अपने तक सीमित

रखती। किसी से किसी तरह की कोई शिकायत न करती।···

जहाँ तक दार्या का सम्बन्ध है, वह तो अपने नये सफ़र के बाद बिल्कुल ही बदल गई और अपने ससुर का पग-पग पर विरोध करने लगी। इलीनीचिना की तरफ उसने हर तरह ध्यान देना बन्द कर दिया, अकारण हर एक से तनी-तनी रहने लगी, बीमारी के बहाने घास-कटाई में हिस्सा लेने से बचने लगी, और इस तरह व्यवहार करने लगी, जैसे कि मेलेखोव परिवार में उसके दिन इने-गिने ही हों।

इस तरह पैन्तेली के देखते-देखते परिवार का पूरा ढाँचा टूटने लगा। होते-होते पति-पत्नी जैसे निपट एकाकी रह गए। परिवार के बंधन, आशा के विपरीत, कट गए। सम्बन्धों की आग समाप्त हो गई। आम बातचीत में खीझ और विरोध नजर आने लगा। सब लोगों का पहले की तरह, एक परिवार और एक इकाई के रूप में खाने की मेज के किनारे जमा होना खत्म हो गया। अब ऐसा लगने लगा जैसे कि मात्र संयोग से सब लोग एक साथ बैठ जाते हों।

इस सबके मूल में रही लड़ाई। पैन्तेली ने यह बात बहुत ही साफ़-साफ़ समझी। दून्या अपने माँ-बाप से नाराज रहने लगी। उसे लगने लगा कि अपने क्वाँरे तन-मन की पूरी शक्ति से उसने जिस एक व्यक्ति को यानी मीशा कोशेवोइ को प्यार किया, उससे विवाह कर सकने की आशा इन लोगों ने तार-तार करके रख दी। नताल्या ने अपने सरल-सादे स्वभाव के अनुरूप ही अपने मन की कुढ़न को अपने मन तक सीमित रखा और अकसीनिया से ग्रिगोरी के नये सिरे से उलझाव के कारण मन-ही-मन बहुत ही दुखी और संतप्त रहने लगी। मुँह उसने कभी खोला नहीं। पैन्तेली ने सभी-कुछ लक्ष्य किया, पर हजार कोशिशों के बाद भी घर में पुरानी व्यवस्था नहीं ला सका। और वह करता भी तो करता क्या? किसी सीझे हुए बोलशेविक से अपनी बेटी को शादी करने की अनुमति कैसे दे देता? फिर अनुमति अगर दे भी देता तो उसका महत्त्व क्या होता? मीशा जान हथेली पर रखे कभी यहाँ तो कभी वहाँ मारे-मारे फिरने वाला आदमी था।

कुछ ऐसा ही ग्रिगोरी के साथ भी था। अगर उसके बदन पर

फ़ौजी अफ़सर की वर्दी न होती तो पैन्तेली उसे क़ायदे से समझता। वह तो उसका बुख़ार इस तरह उतार देता कि वह अक्सीनिया की कुत्ती सूँघना तक पसन्द न करता। पर लड़ाई ने सभी-कुछ चौपट कर दिया था और बूढ़ा मनमाने ढंग से अपना परिवार चलाने के अधिकार से वंचित होकर रह गया था। लड़ाई ने उसे कहीं का नहीं रखा था, काम करने की पुरानी खुशी छीन ली थी, बड़ा बेटा हड़प लिया था और परिवार में अव्यवस्था और कटुता के बीज बो दिए थे। लड़ाई उसकी जिन्दगी के ऊपर से यों गुजरी थी, जैसे तूफ़ान पके हुए गेहूँ के खेत के ऊपर से गुजरे। फ़र्क सिर्फ़ इतना था कि गेहूँ की बालें तूफ़ान गुजरने के बाद फिर सिर उठाकर तन जाती हैं, और धूप में नहाकर चमकने लगती हैं। पर बूढ़े के सामने कमर सीधी कर उठ खड़े होने की अब कोई सम्भावना न थी। उसके दिमाग़ और दिल ने सभी-कुछ स्वीकार कर लिया था कि हो, अब जो कुछ होना हो सो हो!···

तो, दार्या जनरल सिदोरिन के हाथ से तमगा और नक़द इनाम पाकर फूली न समाई। चौक से घर आई तो खुशी से उछलती। उसकी आँखें प्रसन्नता से चमकती रहीं। उसने अपना तमगा नताल्या को दिखलाया। नताल्या ने आश्चर्य से पूछा—"यह तमगा तुम्हें किस कारनामे के लिए मिला?"

"यह मिला है इवान-अलेक्सेयेविच को मारने के लिए। कुतिया का बच्चा कहीं का···नीली छतरी वाला उसकी रूह को चैन दे! और ये रूबल मिले हैं प्योत्र के न रहने पर दिन काटने के लिए।" और उसने दोन के नोटों का बंडल बड़े ही चाव से खोला।

पर, दार्या खेत पर इसके बाद भी नहीं गई, पैन्तेली ने उसे खाना लेकर बाहर भेजना चाहा, पर उसने साफ़ इन्कार कर दिया।

"मुझे घर में ही रहने दो, पापा···सफ़र से आई हूँ···सारा, बदन चूर-चूर है।"

बूढ़े के चेहरे पर उदासी के बादल घिर आए। इस पर दो-टूक जवाब देने की तुर्शी कम करने के लिए दार्या आधे मजाकिया ढंग से बोली—"यह तो सचमुच गुनाह होगा कि आज के दिन भी तुम मुझे

यहाँ से कहीं जाने पर मजबूर करो···आज तो मुझे छुट्टी मिलनी ही चाहिए।"

"अच्छा, तो खाना मैं खुद दे आऊँगा।" बूढ़े ने बहू से सहमत होते हुए कहा—"लेकिन, रूबलों का हिसाब-किताब क्या होगा ?"

"कैसे रूबल···कैसा हिसाब-किताब ?" दार्या ने अचरज से आँखें ऊपर उठाईं।

"मेरा मतलब है कि रूबलों का क्या करने का इरादा है तुम्हारा ?"

"यह मेरा निजी मामला है···मैं इसका जो चाहूँगी, सो करूँगी।"

"लेकिन···तुम करना क्या चाहती हो ? रुपये तो तुम्हें प्योत्र के नाम पर मिले हैं न ?"

"रूबल मुझे दिये गए हैं, और इनके बारे में सोचना तुम्हारा काम नहीं है।"

"लेकिन, तुम तो इसी घर में रहती हो न ! इसी घर की तो बहू हो न ?"

"और, घर की इस बहू से तुम क्या उम्मीद रखते हो, पापा ? उम्मीद रखते हो कि यह सारी रक़म तुम हथिया लोगे ?"

"नहीं, पूरी रक़म मैं नहीं चाहता···लेकिन इसका एक हिस्सा तो हमें यानी मुझे और तुम्हारी इस सास को मिलना ही चाहिए······ आखिर प्योत्र हमारा बेटा था या नहीं ? क्या खयाल है तुम्हारा ?"

बूढ़े ने तो अपना दावा यों ही सामने रख दिया था। लेकिन दार्या इस पर बौखला उठी। नफ़रत से भरी, सधी हुई आवाज़ में बोली—"मैं तुम्हें कुछ नहीं दूँगी···एक कोपेक नहीं दूँगी। तुम्हारा इसमें किसी तरह का कोई हिस्सा नही है···हिस्सा होता तो वे रक़म तुम्हारे हाथ पर रखते। और, अपने इस हिस्से को लेकर तुम इस तरह आसमान सिर पर क्यों उठा रहे हो ? तुम्हें हाथ फैलाने की कोई जरूरत नहीं। एक भी रूबल नही मिलेगा।"

इस पर पैन्तेली ने आखिरी ज़ोर लगाया—"तुम हमारे साथ रहती हो हमारे साथ खाती हो, तो हर चीज़ में हमारा भी तो साझा

होना चाहिए। यह भी क्या कि रहें तो सब घर में साथ, मगर हर आदमी ढेर खाने को अपनी खिचड़ी पकाए अलग ? यह मैं नहीं चलने दूंगा।"

पर, दार्या ने लगाम हथियाने की बूढ़े की आखिरी कोशिश भी नाकाम कर दी। अपनी स्कर्ट अपने सीने से लगाकर रखी। बेहयाई से मुस्कराती हुई बोली—"मेरी शादी तो तुमसे हुई नहीं है, पापा! आज मैं तुम्हारे साथ हूं, मगर कल किसी से शादी कर यहां से जा सकती हूं। फिर, यहां खाने की कीमत अदा करने जैसी भी कोई बात नहीं उठती है। मैं दस साल तुम्हारे इस खानदान के लिए खटी हूं। मैंने कभी कमर सीधी नहीं की है।"

"तू खटी है खुद अपने लिए, कमीनी, छिनाल कहीं की!" बूढ़ा नफ़रत से चीख़ा और उसने चिल्लाकर कुछ और भी कहा। पर, दार्या उसकी बात सुनने को ठहरी नहीं। अपनी स्कर्ट का सिरा लहराती और झमकती बूढ़े के ठीक आगे से गुजरी और सोने के कमरे की ओर चल दी। मज़ाक-भरे ढंग से मुस्कराती हुई फुसफुसाई—"हाथ आजमाने के लिए ग़लत औरत चुनी बूढ़े ने!"

और बातचीत यहीं ठप्प हो गई। सचमुच ही दार्या बूढ़े के रोब में आ जाने वाली औरत न थी। उसके तेहे का उसे कोई डर न था।

पेन्तेली खेत पर जाने को तैयार हुआ, पर जाने के पहले उसने इलीनीचिना से बातें कीं। बोला—"दार्या पर नज़र रखना तुम!"

"क्यों, उस पर नजर रखने की ऐसी क्या ज़रूरत आ पड़ी?" इलीनीचिना ने आश्चर्य से पूछा।

"ज़रूरत आ पड़ी है···देखना, कहीं ऐसा न हो कि वह बोरिया-बंधना बांधकर घर से चल दे, और कुछ हमारा माल-मता भी अपने साथ लेकर रफूचक्कर हो! मुझे लगता है कि वह अपने हाथ-पैर कुछ यों ही नहीं फैला रही···साफ़ है कि उसने कोई जवान खोज लिया है और एकाध दिन में ही शादी हो जाएगी उसकी।"

"तुम शायद ठीक कहते हो।" बुढ़िया ने बूढ़े की हां-में-हां मिलाई

और लम्बी आह भरी—"हर वक़्त गाँव के बाहर बनी रहती है। खोखोल की तरह···किसी चीज़ से ख़ुशी नहीं होती उसे···सब-कुछ बुरा-ही-बुरा नज़र आता है उसे···इन दिनों हम सभी से फिरंट रहती है···अब तुम चाहे जो करो···उसका पैर बाहर निकल गया है, वह अब तो ड्योढी के अन्दर आता नहीं···"

"और, कोई वजह भी नहीं है कि उसका पैर ड्योढ़ी के अन्दर करने की कोशिश की जाए। बेवकूफ़ कहीं की, अगर वह जाना चाहे तो तुम उसे रोकना भी नहीं। चला जाने देना घर से···हार गए हम उसे सँभालते-सँभालते!" पैन्तेली उचककर गाड़ी पर चढ़ा और बैल हाँकते हुए बोला—"वह काम से तो इस तरह दूर-दूर भागती है, जैसे कुत्ता मक्खियों से। मगर आराम तमाम चाहती है और अय्याशी में वक्त गुज़ारना पसंद करती है।···आसमानवाला उसकी रूह को चैन दे···प्योत्र हमारा रहा नहीं, और प्योत्र नहीं रहा तो दार्या जैसी औरतों को हमें घर में रखने की अब जरूरत नहीं है। औरत वह थोड़े ही है, वह तो छुतही बीमारी है ···छुतही बीमारी!"

पर, पति-पत्नी का खयाल ग़लत था। दार्या के तो दिमाग़ में भी दूसरी शादी की बात नहीं थी। वह जिन्दगी तो उसकी कल्पना से भी बाहर थी। उसके दिमाग़ पर तो बोझ कुछ दूसरा ही था······

दार्या दिन-भर प्रसन्नता से खिली और सबसे हिल-मिलकर बातें करने में लगी रही। रूबलों को लेकर होनेवाले झगड़े तक का उस पर जैसे कोई असर नहीं पड़ा। जाने कितनी देर तक तो वह शीशे के सामने तरह-तरह से मुड़ती, ऐंठती और हर तरफ़ से तमग़े को देखती रही। पाँच बार उसने कपड़े बदले कि देखे, किस जेकेट पर संत जार्ज वाला रिबन सबसे ज़्यादा फबता है। फिर हँसती हुई कहने लगी—"अब मुझे कुछ और क्रास जीतने चाहिये!" इसके बाद उसने इलीनीचिना को सोने के कमरे में बुलाया, बीस-बीस रूबल के दो नोट उसके हाथ पर रखे, अपने दहकते हुए हाथों से झटके से बुढ़िया के गांठों से भरे हाथ उसके सीने पर रखे और फुसफुसाती हुई बोली—"यह है प्योत्र की रूह के चैन के लिए···यह है इसलिए कि गिरजे में

प्रार्थना करवा दो···और वहाँ लोगों को बाँटने के लिए थोड़ी-सी खीर तैयार कर लो !"···और औरत फूट पड़ी। फिर, पलकें आँसुओं से तर रहीं और एक दम दार्या मीशात्का के ऊपर अपना रेशमी शॉल ओढ़ाकर उसके विलाप करने लगी। साथ ही इस तरह की हँसी के ठहाके लगाने लगी, जैसे कि कभी रोई ही न हो, जैसे कि खारी आँसुओं का स्वाद जीवन में कभी जाना ही न हो।

और दून्या गिरजे से लौटी तो दार्या खुशी से और खिल उठी। उसने उसे समारोह के जलसे की सारी कहानी सुनाई और गम्भीर आवाज में जनरल के बोलने की नकल की। फिर, नताल्या की ओर देखकर, आँख मारते हुए, शरारत से बोली—"मेरी दार्या, संत जार्ज का क्रास पाने वाली एक फ़ौजी अफ़सर की बेवा जल्दी ही अफ़सर बन जाएगी, और फिर बूढ़े कज्जाकों की कमांडर बना दी जाएगी।"

नताल्या बैठी, बच्चों के कपड़ों की मरम्मत करती, दार्या की बातें सुनती और होंठों-ही-होंठों में मुस्कराती रही। पर दून्या भौंचक्की रह गई और अपने हाथ बाँधकर मिन्नत-भरे लहजे में बोली—"दार्या···दार्या, सुनो···ईसा के लिए अपनी ये कहानियाँ बंद करो, क्योंकि मेरी समझ में यह नहीं आता कि तुम कब मनगढ़न्त कहानियाँ सुनाती हो और कब सच्ची कहानियाँ कहती हो! बतलाना हो तो जरा ठीक-ठीक बतलाओ सब-कुछ।"

"तुम्हें मेरी बातों का यक़ीन नहीं? अगर नहीं तो तुम बुद्धू हो! मैं तो तुम्हें सीधी-सादी बात सुना रही हूँ। सभी फ़ौजी अफ़सर मोर्चे पर हैं। अब बूढ़ों को फ़ौजियों की तरह मार्च करना और पेश आना सिखलाये तो सिखलाये कौन? जरा ठहर जा, इनकी कमान मेरे हाथों में आ जाने दे। फिर देख कि मैं इन बुड्ढे-शैतानों को किस तरह सीधा करती हूँ! इस तरह उनको कमान दूँगी···इस तरह!"

दार्या ने सास के न देखने के लिए बावर्चीखाने का दरवाजा बंद किया। फिर, अपनी स्कर्ट का सिरा फुर्ती से अपनी टाँगों के बीच दबाया और पीछे का हिस्सा एक हाथ से साधा तो चमचमाती हुई पिंडलियाँ लौ देने लगीं। इसके बाद सोने के कमरे के चारों ओर मार्च

करते हुए दून्या के सामने आकर रुकी और भरी हुई आवाज में कमान देती हुई बोली—"बुड्ढो···अ ट···टेंशन ! अपने चेहरे ऊपर करो···लेफ्ट···क्विक मार्च !"

दून्या से और अधिक न सम्हला और वह हाथों में चेहरा छिपाकर जोर-जोर से हँसने लगी। नताल्या चिढ़कर बीच में बोली—"उफ़···बहुत हुआ···इससे कुछ भला नहीं होने जाने का !"

"इससे कुछ भला नहीं होने जाने का ? और तुमने पूरी जिन्दगी में कभी कुछ भला जाना भी है ? तुम्हें कुछ भला लगा भी है ? अगर मैं तुम्हें हँसाऊँ नहीं, तो तुम इसी घर में सड़कर रह जाओ।···"

पर दार्या की हँसी-खुशी का ज्वार जिस तेजी से आया, उसी तेजी से उतर गया। आधे घण्टे बाद वह अपने छोटे कमरे में आई, तमगा सीने से नोचकर बक्से पर फेंक दिया और फिर हाथों पर गाल साधे बहुत देर तक खिड़की के पास बैठी रही। रात हुई तो वह चुपके से कहीं खिसक गई और फिर मुर्गे की बाँग के बाद ही लौटी।

इसके बाद उसने चार दिन तक मैदान में जीतोड़ मेहनत की।

···घास की तैयारी खासी ढीली रही। काम करने वाले कम ही रहे। एक दिन में चार एकड़ से ज्यादा जमीन की घास न कटी। कटी हुई घास बरसाती पानी से तर रही और इससे काम और बढ़ गया। ऐसी घास को धूप में उछाल-उछालकर सुखाना पड़ा। फिर, पचांगुर से उसे जगह-जगह इकट्ठा किया गया कि दुबारा मूसलाधार पानी बरसा, और रात से सुबह तक चलता रहा। इसके बाद आसमान खुला। मौसम सुहाना हो गया। पुरवा बहने लगी। कटाई की मशीनें फिर अपने गीत गाने लगीं। घास के सँवराए ढेरों से फफूँदी की सहती-सहती-सी बास आने लगी। स्तेपी का मैदान धुंध की लपेट में आ गया और टीलों की धुंधली-धुंधली रूपरेखाएँ, घाटियों के निलछरे कटाव और दूर के तालों के नरकुल के हरे सिरे इस नीली धुंध के बीच से हलके-हलके झलकने लगे।

चौथे दिन दार्या ने खेत से ही जिला केन्द्र जाने का मंसूबा बाँधा और दोपहर के आराम के बाद सब लोग खेमे में सुस्ताने को बैठे तो उसने

अपना इरादा सामने रखा।

येल्योनी ने उसका मजाक-सा उड़ाते हुए, दर्द भरी आवाज में पूछा—"ऐसी जल्दी क्या है ? तुम अपना जाना इतवार तक टाल नहीं सकतीं क्या ?"

"नहीं···मुझे कुछ काम है, और काम टल नहीं सकता।"

"एक दिन को नहीं टल सकता ?"

"नहीं।"

"अगर तुम्हें इतनी परेशानी है और इतना भी सब्र नहीं है, तो जाओ। मगर, ऐसा जरूरी काम क्या आ पड़ा ? क्या हमें नहीं बतला सकतीं ?"

"अगर तुम्हें सब-कुछ बतला दूँगी तो तुम कल के मरते आज ही मर जाओगे।"···

···दूसरे दिन ज़िला-केन्द्र से लौटने पर दार्या सीधे घर आई। सिर्फ़ इलीनीचिना और बच्चे नज़र आए। मीशात्का देखते ही ताई की तरफ़ दौड़ा, पर उसने उसे उदासीन भाव से एक ओर कर दिया और सास से पूछा—"माँ, नताल्या कहाँ है ?"

"नताल्या सब्जी वाले खेत में आलू खोद रही है। क्या बात है ? बूढ़े ने बुलाया है उसे ? वह कहीं नहीं जायेगी···बूढ़ा बिगड़ता हो तो बिगड़े···कह दो कि ऐसा मैंने कहा है।"

"किसी ने नहीं बुलाया उसे। मुझे उससे कुछ बात कहनी थी।"

"पैदल आई हो ?"

"हाँ।"

"लोग कब तक खाली हो जाएँगे ?"

"शायद कल तक।"

"लेकिन, रुको तो···तुम उड़ी कहाँ जा रही हो ? यह तो बतलाए जाओ कि बरसात से घास का बहुत नुकसान तो नहीं हुआ ?" बुढ़िया ने सीढ़ियों से नीचे उतरती दार्या से सवाल-पर-सवाल पूछ डाले।

"नहीं, ऐसा कोई खास नुकसान नहीं हुआ।···खैर, तो मैं जा रही

हूँ···मेरे पास वक़्त नहीं है ।"

"बाग से लौटते हुए इधर से निकल जाना और बूढ़े के लिए एक कमीज लेती जाना । सुना कि नहीं···?"

दार्या ने न सुनने का बहाना किया और तेज़ी से ढोरों वाले बाड़े की ओर बढ़ी । नदी के किनारे घाट पर पल-भर को ठिठकी, और उसने अधमुंदी आँखों से दोन के हरे फैलाव पर नजर दौड़ाई । लहरों के ऊपर की ताजा, नम हवा से औरत के बदन में झुरझुरी दौड़ गई और उसने धीरे-धीरे बाग़ की तरफ़ कदम बढ़ाए ।

हवा के हलके झोंके दोन की लहरियों को रह-रहकर छेड़ते रहे । समुद्री चिल्लियाँ जहाँ-तहाँ मँडराती रहीं । लहरें ढलवाँ किनारे पर काफ़ी दूर तक रेंगती रहीं । झलाझल बकाइनी धुंध में लिपटी खड़िया की पहाड़ियाँ धूप में हलके-हलके चमकती रहीं और दूर का बरसात से धुला जंगल बहार के शुरू-शुरू के दिनों की तरह नया, ताजा और हरा लगता रहा ।

ऐसे में दार्या ने जूते उतारे, दुखते पैर धोये और फिर काफ़ी देर तक किनारे, जलते पत्थर पर बैठी रही । उस समय उसने धूप से बचने के लिए आँखों पर हथेली की ओट की, समुद्री चिल्लियों के कलप से भरे स्वर सुने और पानी की नपी-तुली कलकल सुनी । सारा कुछ ऐसा सूना और वीरान लगा कि उसकी आँखें भर आईं । उस पर बे-बुलाये घर आई । मुसीबत ने दिल पर और भारी पत्थर रख दिया और अन्तर में दर्द घोल दिया ।···

नताल्या ने अपनी पीठ जैसे-तैसे सीधी की, अपनी कुदाल टट्टी की बाड़ से टिकाई और दार्या से मिलने को लपकी ।

"मेरे पास आई हो दार्या ?"

"हाँ, तुम्हारे पास आई हूँ, मुसीबत में पड़ गई हूँ ।"

दोनों अगल-बग़ल बैठ गईं । नताल्या ने सिर का रूमाल खोला, बाल ठीक किए और दार्या की ओर उत्सुक दृष्टि से देखा । पर पिछले कुछ दिनों में ही चेहरा इतना बदला समझ पड़ा कि वह अचरज में पड़

गई । गाल बैठ गए और सफ़ेद पड़ने लगे । माथे पर गहरी झुर्रियाँ दौड़ीं । आँखों में परेशानी और चिन्ता झांकती दिखी ।

नताल्या ने हमदर्दी दिखलाते हुए पूछा—"बात क्या है, तुम्हारा चेहरा बिल्कुल काला पड़ गया है ?"

"मेरी जगह तुम होतीं तो तुम्हारा भी चेहरा इसी तरह काला पड़ जाता ।" दार्‌या बरबस हँसी और फिर गम्भीर हो गई—"क्या अभी काम बहुत बाकी है ?"

"काम तो शाम तक खत्म हो जाएगा···मगर तुम्हें हुआ क्या है ?"

दार्‌या का गला फँसने लगा । उसने थूक निगला और जल्दी-जल्दी बोली—"बतला रही हूँ अभी बात यह है कि मैं बीमार हूँ और एक गन्दी बीमारी लग गई है मुझे···और यह तोता मैंने पाला है अपना पिछले सफ़र के दौरान···किसी ग़लीज फ़ौजी अफ़सर की देन है ।"

"यानी, अपने मज़े की कीमत अदा कर दी तुमने ।" नताल्या ने डर और दुख से हाथ पीट लिए ।

"हाँ, मैंने अपने मज़े की कीमत अदा की···और इस सिलसिले में न मुझे कहीं कुछ कहना है, न किसी से कोई शिकवा-शिकायत है···कमज़ोरी तो मेरी है···उस सुअर के बच्चे ने मुझे बड़ा वरगलाया, बहुत फुसलाया—दाँत उसके उजले थे, पर आदमी अन्दर से सड़ा हुआ था···और अब हाल यह है कि मैं कहीं की नहीं रही हूँ ।"

"मेरी दार्‌या, लेकिन, अब···अब क्या करोगी तुम ?" नताल्या ने फटी-फटी-सी आँखों से दार्‌या को देखा । दार्‌या नीची निगाहें किए अपने पैरों की तरफ़ देखती रही । फिर वह और सम्हली और सधे हुए स्वर में बोली—"आसार तो मुझे रास्ते में ही नज़र आने लगे···पहले तो मैंने सोचा कि होगा यों ही···तुम तो खुद जानती हो कि औरतों को हज़ार तरह की तकलीफ़ें होती रहती हैं···अभी पिछली बहार के दिनों में मैंने चावल का एक बोरा उठा लिया तो तीन हफ्ते खून जाता रहा···लेकिन खैर बाद में मुझे लगा कि इस बार ऐसा कुछ नहीं है···फिर तो और ही नक्शे नज़र आने लगे···और, कल मैं ज़िले के डॉक्टर से मिलने गई तो शर्म से ज़मीन में गड़ गई···लेकिन, अब तो सारा खेल खत्म

समझो···औरत बहुत बनती थी, उसे अपनी करनी का भरपूर फल मिल गया।"

"बड़ी शर्म की बात है···तुम इसका इलाज कराओ, जैसे भी हो। लोग कहते है कि इस बीमारी का इलाज हो जाता है।"

"नहीं, मेरी बीमारी का इलाज नही हो सकता।" दार्या मुस्कराई और बातचीत के बीच पहली बार नज़रें ऊपर उठाई—"मुझे गरमी हो गई है, और उसका इलाज नही होता···कभी-कभी तो नाक गलकर गिर जाती है···बुढ़िया अनद्रोनीखा के मामले में यही हुआ था···तुमने कभी देखा है उसे ?"

"अब यह बतलाओ कि तुम करोगी क्या ?" नताल्या ने रुआँसे स्वर में पूछा और उसकी आँखें भर आईं।

दार्या बहुत देर चुपचाप बैठी रही। उसने मकई के डंठल के चारों ओर लिपटा अश्कपेचां-बेल का एक फूल तोड़ा और अपनी आँखों से लगाया। गुलाबी किनारेवाले, उस छोटे-से फूल से धूप से नहाई धरती की महक आई। दार्या उसे इतने ग़ौर से इस तरह ऊबकर देखती रही, जैसे कि उसने उसे पहले कभी देखा ही न हो। फिर, उसने उसे नथुने फुलाकर सूंघा और हवा से खुश्क जमीन पर सावधानी से रख दिया। बोली—"तुम पूछ रही हो कि अब मैं क्या करूँगी ? यही बात ज़िले से लौटते वक्त मैं भी बराबर सोचती रही और तरह-तरह के नक़शे बनाती रही। लेकिन, और कुछ नही हो सकता···मैं अपनी जान दे दूंगी···बात बुरी है, लेकिन कोई दूसरा चारा नहीं है। मान लो कि मैं इलाज करवा लूं, तो उससे फ़र्क क्या पड़ेगा ? गांव के हर आदमी को मालूम तो हो ही जाएगा। हर आदमी मेरी तरफ़ उँगली उठाएगा, मेरे खिलाफ बातें करेगा और मेरी हँसी उड़ायेगा। इस हालत में मेरी बात भला कौन पूछेगा ? मेरा सारा हुस्न बरबाद हो जाएगा, मैं मुरझा जाऊँगी और जीते-जी मर जाऊँगी···और यह मैं नहीं चाहती।" और यह सारी बात उसने यों कही जैसे कि अपने-आपसे जिरह कर रही हो। उसने नताल्या के विरोध और मना करने की तरफ़ ध्यान ही नही दिया।

बताकर कहती गई—"इवेदिन्स्काया जाने के पहले मैंने सोचा था कि अगर कोई बुरी बीमारी होगी तो उसका इलाज करवा लूंगी। यही वजह है कि मैंने रूबल बापा को नहीं दिये। और सोचा कि डॉक्टरों को देने के काम आएँगे···लेकिन, अब मैंने अपना इरादा बदल दिया है···मैं हर चीज़ से ऊब गई हूँ···मैं अपना इलाज कराना नहीं चाहती।"

दार्या ने बहुत ही गंदी मर्दानी गाली दी, थूका और हाथ के पिछले हिस्से से नन्हीं बरौनियों में उलझा आँसू पोंछ डाला।

"सोचो तो कि तुम क्या कह रही हो! तुम्हें उस ऊपर वाले से डरना चाहिए···।" नताल्या ने शांत भाव से कहा।

"वह ऊपर वाला···उससे अब मुझे किसी फ़ायदे की उम्मीद नहीं···वह तो जिन्दगी-भर मेरे आड़े ही आता रहा है···।" दार्या मुस्कराई और उस शरारत-भरी मुस्कराहट में नताल्या को पुरानी दार्या की एक झलक मिली—"इन्सान यह न करे और इन्सान वह न करे हर आदमी को गुनाह का डर दिखाता है, और आसमानी फ़ैसले के दिन की बड़ी-बड़ी बातें करता है···लेकिन, मैं अपने-आपको जो फ़ैसला सुनाने जा रही हूँ, इससे खूंख़ार और कुछ भी नहीं हो सकता···हर चीज़ से मेरा जी ऊब गया है, नताल्या!···हर आदमी घिनौना और ख़तरनाक हो उठा है···ऐसे में अपनी ज़िन्दगी से छुटकारा पा लेना ही मेरे लिए ज़्यादा आसान होगा···मेरे आगे-पीछे कोई नहीं है···कोई नहीं है जिससे मेरा दिल तड़पे···यह सभी कुछ कितना सच है!"

नताल्या ने दार्या को हज़ार तरह से समझाया और अपने फ़ैसले पर फिर से विचार करने और आत्म-हत्या का विचार दिमाग़ से निकाल देने के लिए बार-बार कहा। लेकिन, दार्या ने पहले तो जैसे सुना ही नहीं। मगर, बाद में अपने को सम्हाला और गुस्से से बात काटती हुई बोली—"ख़त्म भी करो बेकार की बातें, नताल्या! मैं यहाँ इसलिए तो नहीं आई कि तुम मुझसे इस तरह की बातें और मिन्नतें करो। मैं तो तुम्हें अपनी बीमारी की ख़बर देने और तुमसे यह कहने आई हूँ कि आज से तुम अपने बच्चों को मेरे पास न आने देना। डॉक्टर कहते हैं कि यह बीमारी छूत की होती है और मैं नहीं चाहती कि यह किसी भी तरह

बच्चों को लग जाए। समझी बात बुद्ध, कहीं की ? और तुम माँ को भी बतला देना···उनसे खुद इसका ज़िक्र करने की हिम्मत मुझमें नहीं है। ···लेकिन, तुम बेकार परेशान हो, मैं कोई आज ही अपने गले में फन्दा डालकर लटकने नहीं जा रही···अभी उसके लिए बहुत वक्त है···मैं अभी जिऊँ-जागूँगी, जिन्दगी के मज़े लूँगी और उसे क़ायदे से अलविदा कहूँगी···तुम जानती हो कि हम लोग कैसे जीते हैं ? यानी, जब तक दिल खींचातानी में नहीं पड़ता, तब तक हम अंधों की तरह जीते चले जाते हैं···मिसाल के लिए, जरा देखो कि खुद मैंने कैसी जिन्दगी बिताई है···एक तरह से आँखें बिल्कुल बन्द कर जीती रही हूँ···लेकिन अभी व्येशेन्स्काया से दोन के किनारे-किनारे लौट रही थी कि मुझे लगा कि अब तो सब-कुछ छोड़ना ही पड़ेगा बस, यह महसूस करते ही जैसे मेरी आँखें खुल गईं—देखा तो नदी धूप में चांदी की लगी···उसकी कल-कल करती लहरें इस तरह नाचती नजर आईं कि मेरी आँखों में चकाचौंध पैदा हो गई···मैं मुड़ी और मैंने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई···उफ़ कैसा दिल खींचा हर चीज़ ने ! कितनी प्यारी हर चीज लगी !···मगर, यही इसके पहले कभी नहीं हुआ···" दार्या के होंठों पर शर्म से भरी मुस्कान दौड़ गई और वह चुप हो रही। उसने अपनी मुट्ठियाँ भींचीं, गले में फँसती सिसकी दबाई और ऊंचे स्वर में, और ज़ोर देते हुए बोली—"रास्ते में मुझे कई बार रुलाई आई पर मैं आँसू पी गई···मगर गांव के पास आई तो मैंने बच्चों को नदी में नहाते देखा और उन्हें देखते ही मेरा दिल कचोटने लगा। फिर तो मैं रोई, बेवकूफ़ की तरह फूट-फूटकर रोई और अपने मन पर क़ाबू पाने के लिए दो घंटे तक रेत पर पड़ी रही। यह न सोचना मेरे लिए आसान नहीं है कि···"

दार्या उठ खड़ी हुई और अपनी स्कर्ट झाड़कर सिर का रूमाल सधे हुए ढंग से ठीक करने लगी।

"मौत का खयाल आता है तो सिर्फ़ यह सोचकर खुशी होती है कि दूसरी दुनिया में प्योत्र से मुलाक़ात फिर होगी···उससे कहूँगी—जिगर, प्योत्र-पैन्तेलेयेविच, अपनी बदचलन बीवी को फिर अपनी बाँहों में कस लो।"

और, फिर हमेशा की तरह, सनकियों की भांति बोली—"लेकिन इस दुनिया में वह मुझ पर हाथ नहीं उठा पाएगा···मुझे मार नहीं सकेगा। भगवान् लोगों को वहां जगह नहीं दी जाती···ठीक है न?··· अच्छा अलविदा, नताल्या रानी! लेकिन, देखो मां से मेरी बीमारी का जिक्र करना न भूलना।"

नताल्या गर्द से भरी हथेलियों से अपनी आंखें ढके बैठी रही। उसकी उँगलियों के बीच आंसू ऐसे झिलमिलाते रहे, जैसे देवदार की छालियों के बीच राल चमकती है। पर, दार्या बांस की खपच्चियों के फाटक तक पहुंचने के बाद मुड़ी और फिर बोली—"आज से मैं अलग तश्तरी में खाऊंगी। मां से कह देना, और हां, एक बात और—उनसे कह देना कि वे पापा से इसका जिक्र न करें, नहीं तो बूढ़ा बौखलाकर मुझे घर से निकाल बाहर करेगा। अगर कहीं ऐसा हो गया तो डूबते को तिनके का भी सहारा न रहेगा।··· खैर इस वक्त मैं सीधे मैदान जा रही हूं···घास काटने के लिए···दोस्विदानिया।"

: १४ :

कज्जाक अगले दिन घास काटकर मैदान से घर लौटे। पैन्तेली ने खाने के बाद घास गाड़ी से लादकर लाने का निश्चय किया। दून्या बैलों को पानी पिलाने के लिए नदी ले गई और इलीनोचिना और नताल्या ने जल्दी-जल्दी खाने की मेज लगाई।

दार्या सबके बाद आई और मेज के किनारे जा बैठी। इलीनोचिना ने छोटी प्लेट में पातगोभी का शोरबा, एक चम्मच और एक टुकड़ा रोटी उसके सामने रख दी। बाक़ी के लिए शोरबा हमेशा की तरह एक बड़े कटोरे में भर लिया।

पैन्तेली ने अपनी पत्नी को आश्चर्य से घूरकर देखा, दार्या की प्लेट की तरफ़ आँखों से इशारा किया और पूछा—"यह सब क्या है? तुमने दार्या को शोरबा अलग से क्यों परोसा है? क्या वह हमारी जात में शामिल नहीं रही?"

"बेकार की बातों से तुम्हें क्या? तुम अपना खाना खाओ।"

बूढ़े ने दार्या की तरफ़ मजाक-भरी निगाहों से देखा और मुस्कराया—"ठीक, अब समझा···तमग़ा मिल गया, इसलिए दार्या रानी को अब सबके साथ खाना पसन्द नहीं।···क्या बात है दार्या ? एक ही कटोरे में सबका साथ देने में नाक पर मक्खी भिनकती है ?"

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं···नाक पर मक्खी क्यों भिनकेगी ?" दार्या ने रूखे ढंग से जवाब दिया।

"तो फिर अलग क्यों खा रही हो ?"

"मेरे गले में दर्द है।"

"इससे क्या फ़र्क पड़ता है ?"

"मैं डॉक्टर को गला दिखलाने व्येशेन्स्काया गई थी। उसने कहा है कि तुम्हें सबसे अलग खाना चाहिये।"

"मेरा भी गला एक बार खराब हुआ था, पर मैंने सबसे अलग बैठकर खाना नहीं खाया, और ऊपर वाले का लाख-लाख शुक्र कि किसी को कुछ नहीं हुआ। तो, अब तुम्हें कौनसी ऐसी नई सर्दी हुई है ?"

दार्या पीली पड़ गई। उसने अपने होंठ हाथ से पोंछे और चम्मच नीचे रख दिया। दूसरी तरफ़ पति की बेअक्ली पर इलीनीचिना आपे से बाहर हो गई और बूढ़े पर बरस पड़ी—"क्यों हाथ धोकर पीछे पड़े हो उसके ? तुम तो हमें खाने की मेज पर भी चैन की साँस नहीं लेने देते। चीमड़ की तरह लिपट जाते हो कि अब जाओ तो जाओ कहाँ ?"

"लेकिन, यह सब बकवास क्या है आखिर ?" पैन्तेली चिढ़कर चीखा—"वैसे मुझे कोई परवाह नहीं···तुम्हारा जो जी आए सो करो।"

और, बूढ़े ने गुस्से में चम्मच-भर गरमागरम शोरवा मुँह में डाल लिया। नतीजा यह कि सारा मुँह जल गया और शोरवा बाहर निकलकर दाढ़ी-भर में फैल गया। पैन्तेली पागलों की तरह गरज उठा—"तुम्हें खाना परोसने तक की तमीज नहीं·· ऐसी-तैसी में जाओ तुम सब। कोई आग से सीधे उतारकर शोरवा किसी को परोसता है !"

"अगर तुम खाते वक्त जबान ज़रा कम चलाते तो यह नौबत न

आती।" इलीनीचिना ने पति को धीरज बंधाते हुए कहा।

पैन्तेली का चेहरा नीला पड़ गया और वह पातगोभी और आलू के टुकड़े दाढ़ी के बालों के बीच से बीनने लगा। इस पर दून्या ठठाकर हँस पड़ी। लेकिन, बाकी लोग ऐसे गम्भीर रहे कि लड़की ने भी हँसी रोकने की कोशिश की और निगाहें उधर से हटा लीं।

खाने के बाद बूढ़ा अपनी दोनों बहुओं के साथ घास की ढोआई के लिए चला। मैदान में पैन्तेली ने पचांगुर भर-भरकर घास गाड़ी में डाली और नताल्या ने महक लेते हुए घास पैरों से दबाई। फिर वह और दार्या साथ-साथ खेत से लौटीं। पैन्तेली तेज चाल से घर लौटते बैलों के साथ काफ़ी आगे निकल गया।

···सूरज टूह के पीछे मुँह छिपाने लगा। घास की खाली स्तेपी की, चिरायते की-सी, तीखी गंध से शाम का पूरा वातावरण भर उठा। पर धीरे-धीरे गंध का यह तीखापन मधुर होता गया और उसमें दिन के समय की चुभन बाक़ी न रही। गर्मी घटने लगी। बैल बिना हाँके आगे बढ़ते गए। उनके पैरों से जो धूल उड़ी वह सड़क के किनारे की भटकटैया के पौधों पर बैठ गई। इन पौधों के सिरों पर रखे सुर्ख फूलों के ताज पूरे ज़ोर-शोर से दमकते रहे। आसपास शहद की मक्खियाँ मँडराती रहीं। टिटिहरियाँ, एक-दूसरे को आवाज़ देतीं, उड़-उड़कर दूर के ताल को जाती रहीं।

दार्या हिलती-डुलती गाड़ी में कुहनियों के सहारे पेट के बल लेट गई और बीच-बीच में रह-रहकर नताल्या पर नजर डालने लगी। नताल्या विचारों में खोए-ही-खोए डूबते हुए सूरज को एकटक देखने लगी। ताँबे के रँग की किरणें उसके शांत निर्मल चेहरे पर उतरती रहीं। सहसा ही दार्या ने सोचा—'नताल्या सुखी है···उसका आदमी है···बच्चे है···और क्या चाहिए उसे?···घर का हर आदमी उसे मुहब्बत करता है लेकिन मैं···मेरी दुनिया उजड़ चुकी है···मैं आज मर जाऊँ तो मेरे नाम कोई एक आँसू भी न बहाए।' और इन विचारों के साथ ही उसके मन में नताल्या के प्रति ईर्ष्या के भाव उग आए और किसी-न-किसी तरह उसका दिल दुखाने और उसे तकलीफ़ देने की

बात अचानक ही उसके दिमाग़ में नाचने लगी। उसे लगा—'आखिर मायूसी और बदनसीबी मुझ पर ही चोट-पर-चोट क्यों करे ? आखिर एक अकेले मैं ही यह सब क्यों सहूँ ? मैं एक ही अपनी ज़िन्दगी की बर्बादी की बात क्यों सोचूं ? एक मैं ही इस तरह क्यों घुटूं और घुलूं ?'

बस, तो उसने नताल्या पर एक तेज निगाह डाली और यों बोली, जैसे कि हृदय की पूरी ईमानदारी से बात कह रही हो—"आज तुम्हारे सामने अपना एक गुनाह क़बूल करना चाहती हूँ, नताल्या !"

नताल्या ने तत्क्षण कोई उत्तर नहीं दिया। डूबता सूरज एक जमाने पहले की याद में रंग भर रहा था। उस समय ग्रिगोरी से उसकी शादी की बात पक्की-भर हुई थी, और वह उससे मिलने उसके यहाँ आया था। लौटते समय वह उसे फाटक तक पहुँचाने उसके साथ गई थी। उस दिन डूबते सूरज ने अन्तिम लपटें छोड़ी थीं। सूरज डूबने के बाद पश्चिम का आसमान रसभरी-सा लाल हो उठा था और कौए नरकुल में काँव-काँव करते रहे थे। ग्रिगोरी अपने घोड़े पर सवार होकर आधा मुड़ा था और फिर चला गया था। वह सुख-दुख से भरे आँसुओं के बीच उसे एकटक देखती और अछूती, नुकीली छातियों पर हाथ रखे दिल की तेज धड़कनें सुनती रही थी।···

इसीलिए दार्या ने सहसा ही मौन तोड़ा तो उसे अच्छा नहीं लगा, और उसने बेमन से पूछा—"क्या बात है, कौन-सा गुनाह क़बूल करना चाहती हो तुम,?"

"मुझसे सचमुच एक गुनाह हो गया है···तुम्हें याद है, जब ग्रिगोरी छुट्टी पर मोर्चे से घर आया था, उसी दिन शाम को मैं गाय दुहकर घर लौटी तो अकसीनिया की आवाज मेरे कानों में पड़ी।··· फिर उसने मुझे दुबारा आवाज दी···और मैं बाहर गई तो उसने यह अँगूठी मुझे दी···दी क्या जबरदस्ती मेरी उँगली में डाल दी।" दार्या ने अपनी उँगली में पड़ी अँगूठी नचाई—"और, हजार बार मिन्नतें कर कहा कि ग्रिगोरी को जरा मेरे पास भेज दे···वैसे मुझे क्या था···

मैंने किशोरी से कह दिया···सारी रात उस दिन वह···तुम्हें खयाल है, तुमने उसने कुदिनोव के यहाँ जाने और उससे बातें करते रहने की बात कही थी ? वह सारा-कुछ झूठ था···सब-कुछ बहाना था, बकवास थी··· वह अकसीनिया के साथ रहा था।"

नताल्या का चेहरा जर्द पड़ गया और वह तिनपतिया घास का सूखा तिनका तोड़ती चुपचाप बैठी रही।

"नताल्या, मुझसे नाराज न हो···मुझे इसका बड़ा दर्द है··· इसीलिए तो मैंने यह बात तुमसे कही।" दार्‌या ने मीठे शब्दों में कहा और नतालिया की आँखों में आँखें डालने की कोशिश की।

नताल्या के आँसू गले में फँसकर रह गए। नए सिरे से सिर पर रहने वाला मुसीबत का यह पहाड़ इतना अप्रत्याशित रहा और इतना कष्टकर लगा कि उसमें दार्‌या को जवाब देने की शक्ति बाक़ी न रही। वह सिर्फ़ दूसरी तरफ़ मुड़ गई कि उसका रंजीदा चेहरा सामने न रहे।

परन्तु गाड़ी गाँव में दाखिल हुई तो दार्‌या ने अपने-आपसे लड़ते हुए मन-ही-मन सोचा—'जाने किस शैतान के बहकाए में आकर मैंने इस तरह चोंच चला दी इस पर ! अब पूरे एक महीने तक यह आँसू बहाती रहेगी। अच्छा होता कि यह बात मैं इसे बतलाती ही नहीं। यह तो ऐसी गाय है जिसकी आँखों की पट्टी कभी खोलनी ही नहीं चाहिए।'

तो, अपनी चोट का असर कम करने के खयाल से बोली—"लेकिन, नताल्या, तुम इस तरह परेशान न हो···इसमें आँसू बहाने और आहें भरने को ऐसा क्या है ? मेरे दिल पर कहीं पत्थर का बड़ा बोझ है। पर, मुझे देखो कि कभी मन मैला नहीं करती। और शैतान ही जाने कि सचमुच सच्चाई क्या है···हो सकता है कि वह अकसीनिया के साथ न रहा हो और कुदिनोव से ही मिलने गया हो। मैंने कोई उसका पीछा तो किया नहीं। फिर, यह है कि चोर तो सिर्फ़ वही होता है जो रँगे हाथों पकड़ा जाता है।"

"मैं तो समझ गई थी कि यह कहाँ गया है।" नताल्या ने शांत भाव से कहा और रूमाल के सिरे से आँखें पोंछीं।

"लेकिन, अगर तुम समझ गई थीं, तो तुमने उससे पूछा क्यों नहीं ?

उफ़···कैसी निकम्मी हो तुम ! तुम्हारी जगह मैं होती तो मेरे हाथ से निकलकर तो क्या कहीं चला जाता वह ! मैं तो उसे ऐसा नीचा दिखाती कि तवियत हलकी हो जाती ।"

"मैं दहशत खा गई और मैंने सच्चाई का सामना करना नहीं चाहा ।···तुम्हारा खयाल है कि इतना सब सहना आसान है कुछ ?" नताल्या बोली । भावना से उसकी आवाज फँसने लगी—"हो सकता है कि तुमने प्योत्र के साथ यही सब किया हो···और, उसने सब-कुछ सह लिया हो···पर, जब मुझे खयाल आता है कि मैंने कितने रंज देखे, कितने सदमे उठाये, तो आज भी सहना मुश्किल हो उठता है ।"

"खैर, हटाओ···अब भूल जाओ यह सब ।" दार्या ने भोले-भाले ढंग से सलाह दी ।

"ऐसी बातें कभी भूली नहीं जातीं ।" नताल्या ने अजीब-सी भर्राई आवाज़ में जवाब दिया ।

"मैं तो भूल जाती । वेकार का तिल का ताड़··· सिर-दर्द ।"

"तो, तुम अपनी बीमारी ही भूलकर दिखलाओ ।"

दार्या खुलकर हँसी—"मैं तो भूल जाऊँ, पर वह कम्बख्त भूलने भी तो दे ।···अच्छा सुनो नताल्या, मैं अकसीनिया से सच्चाई मालूम करूँगी ···वह मुझे सब-कुछ बतला देगी··· बात यह है कि दुनिया में एक भी ऐसी औरत नहीं है जो पी जाए और दूसरों को यह बतलाए कि उसे कौन प्यार करता है, कैसे प्यार करता है । मैं तो अपनी ही बात जानती हूँ···मेरी मिसाल तुम्हारे सामने है ।"

"मैं तुम्हारी कोई मेहरबानी नहीं चाहती । तुम तो मुझ पर पहले ही मेहरबानी कर चुकी हो ।" नताल्या ने रुखाई से कहा—"मैं अंधी नहीं हूँ···सब-कुछ देखती हूँ, और जानती हूँ कि यह सब तुमने मुझसे क्यों कहा । तुमने गुनाह मानने के लिए अपना गुनाह मेरे सामने नहीं रखा बल्कि मुझे और दुखाने के लिए यह सब किया है···"

"तुम ठीक कहती हो ।" दार्या ने आह भरते हुए अपराध स्वीकार किया—"लेकिन, तुम खुद ही फैसला करो···क्या दर्द सहने के लिए,

मुसीबतें झेलने के लिए दुनिया में एक मैं ही बनी हूं ?"

औरत खिसककर गाड़ी से नीचे आई और मकान से दूर बैलों को सम्हाल-सम्हालकर, सहारा देकर, ढाल से नीचे उतारने लगी। घर-वाली गली के मोड़ पर वह फिर नताल्या के पास गई और बोली—"नताल्या रानी, मैं एक बात पूछूं तुमसे…यह बतलाओ कि तुम ग्रिगोरी को बहुत प्यार करती हो ?"

"मैं पूरे मन से उन पर कुरबान हूं।" नताल्या ने जवाब दिया।

"यानी, तुम बहुत ही ज्यादा प्यार करती हो उसे !" दार्या आह खींचती हुई बोली—"लेकिन, मुझे कभी किसी को दिल से प्यार करने का मौका नहीं मिला…मैंने तो कुत्ते की तरह प्यार किया है…अभी यहां मुंह मारा तो अभी वहां और अभी वहां…काश कि यह जिन्दगी दुबारा मिलती ! अगर मिलती तो मैं शायद और ढंग से जीकर दिखलाती…"

गरमी का धुंधलका कितनी देर का ! बस, तो फिर जल्दी ही रात हो गई। दोनों ने अंधेरे में अहाते में घास की टालें लगाईं और नाम को भी मुंह नहीं खोला।

बाद में पैन्तेली दार्या पर चीखा तो दार्या ने उलटकर कुछ नहीं कहा।

: १५ :

दोन-सेना की मिली-जुली टुकड़ियां और ऊपरी दोन की विद्रोही सेनाएं उस्त-मेदवेदित्स्काया से पीछे हटते दुश्मन का पूरी ताक़त से पीछा करते हुए, उत्तर की ओर बढ़ीं। शाशकिन में नवीं लाल सेना की बिखरी हुई रेजीमेंटों ने कज्ज़ाकों को आगे बढ़ने से रोकने की कोशिश की। पर, उनके पैर उखाड़ दिए गए और फिर, बिना जमकर लोहा लिए, वे लगभग ज़ारीत्सिन स्टेशन तक पीछे हटते चले गए।

ग्रिगोरी और उसकी डिवीजन ने लड़ाई में हिस्सा लिया और सुतुलोव के पैदल ब्रिगेड की बड़ी मदद की। उस पर बाजुओं से हमला कर दिया गया था।

ग्रिगोरी ने येरमाकोव की घुड़सवार रेजीमेंट को धावा करने का हुक्म दिया और उस रेजीमेंट के फ़ौजियों ने कोई दो सौ लाल फौजी कैदी बनाये और चार मशीनगनें और लड़ाई के सामान से भरी ग्यारह गाड़ियाँ हथिया ली।

तीसरे पहर के बाद पहली रेजीमेंट के कज़्ज़ाकों के दल के साथ ग्रिगोरी शाशकिन आया। डिवीजनल-स्टाफ़ के मकान के बग़ल वाले घर में कैदियों की घनी भीड़ दीखी और आधे स्क्वैड्रन कज़्ज़ाक उनकी पहरेदारी करते नज़र आए। कैदियों के बदन पर सफ़ेद सूती कमीज़ें और पैंट थे। उनके बूट और बाकी कपड़े उनसे छीने जा चुके थे। सफ़ेदी के उस आम पसारे में कहीं कोई इक्का-दुक्का ट्यूनिक ही वाता-वरण में हरियाली घोलती थी।

"अरे, ये लोग तो कलहंसों की तरह सफ़ेद लग रहे हैं।" प्रोखोव-ज़िकोव ने कैदियों की तरफ़ इशारा करते हुए कहा। ग्रिगोरी ने घोड़े की रासें खींचीं और उसे एक ओर को मोड़ा। फिर, भीड़ में येरमाकोव नज़र आया तो उसे आवाज देते हुए बोला—"अपना घोड़ा पास लाओ न···दूसरों की पीठों के पीछे मुंह छिपाते क्यों फिर रहे हो?"

येरमाकोव खाँसते हुए पास आया। उसकी हलकी, काली मूंछों के नीचे और पिसे-से होंठों के ऊपर खून की पपड़ी पड़ी रही। दाहिना गाल सूजा और ताज़ी चोटों के कारण नीला लगता रहा।···

हुआ यह था कि हमले के दौरान उसका घोड़ा पूरी रफ्तार से दौड़ते-दौड़ते लड़खड़ा गया और गिर गया था। वह खुद काठी से फिसल-कर कोई पाँच कदम तक ढेले की तरह चला गया था और फिर कटे हुए खेत की ऊँची-नीची ज़मीन पर एकदम जा गिरा था। इसके बाद वह और उसका घोड़ा दोनों ही उछलकर खड़े हो गए थे और येरमाकोव एक बार फिर काठी पर जमकर बैठ गया था। उसकी टोपी गायब थी, और उसके चेहरे पर खून की धारें बह रही थीं। मगर, वह हाथ में नंगी तलवार साधे, ढाल पर उमड़ते कज़्ज़ाक घुड़सवारों को जा पकड़ने के लिए उड़ा चला जा रहा था।···

"और, भला मैं मुँह क्यों छिपाऊँगा ?" उसने ग्रिगोरी के घोड़े के बराबर अपना घोड़ा लाते हुए आश्चर्य से पूछा। उसकी आँखें अब भी लड़ाई की आग से रोशन और लड़ाई के खून से लाल लगीं। पर, उसने घबराहट के कारण ग्रिगोरी की निगाह बचाई।

"बिल्ली गोश्त खाती है तो जानती है कि किसका गोश्त खा रही है! मेरे पीछे-पीछे घोड़ा दौड़ाए क्यों चले आ रहे हो ?" ग्रिगोरी ने गुस्से से पूछा।

"किस-किसके गोश्त की बात कर रहे हो ? पहेलियाँ मत बुझाओ। मेरी समझ में कुछ नहीं आएगा। आज मैं सिर के बल अपने घोड़े के नीचे आ गिरा···"

"यह तुम्हारा काम है।" ग्रिगोरी ने चाबुक से क़ैदियों की तरफ़ इशारा किया।

येरमाकोव यों बना जैसे कि इसके पहले उसने उन क़ैदियों को देखा ही न हो। सो बड़े ही ताज्जुब से बोला—"अरे, इन सुअर के बच्चों, इन बदमाशों ने नंगा कर रखा है। लेकिन, इतना सब इन्होंने किया कब ? अभी एक मिनट पहले ही तो मैं इन्हें हुक्म देकर गया हूँ कि इन क़ैदियों को हाथ न लगाया जाए। और अब देखो जरा इन्हें! इनके सारे कपड़े-लत्ते छीन लिये हैं इन्होंने।"

"मेरी आँखों पर पर्दा डालने की कोशिश न करो। तुम यह ड्रामा क्यों कर रहे हो ? इनके कपड़े-लत्ते छीन लेने का हुक्म तुमने दिया कि नहीं ?"

"क्या कह रहे हो···अपने होश में हो तुम, ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच ?"

"तुम्हें मेरे हुक्म का खयाल है ?"

"तुम्हारा मतलब, उस मामले में ?"

"हाँ, उस मामले में।"

"याद है···भला याद क्यों नहीं होगा ? मुझे जबानी याद है। स्कूल से पढ़ी शायरी की तरह जबानी याद है।"

ग्रिगोरी स्वाभाविक ढंग से मुस्कराया और अपनी काठी पर झुकते हुए उसने येरमकोव की तलवार की पेटी थाम ली। इस बहादुर,

जीवट के कमांडर से उसे बड़ा स्नेह था।

"खारलाम्पी, बेकार बनो नहीं! तुमने यह सब क्योंकर होने दिया? कोपीलव की जगह काम करने वाला नया कर्नल इसकी रिपोर्ट कर देगा और इसके लिए जवाब और जिरह का तूफ़ान उमड़ेगा तो तुम्हें जरा भी अच्छा न लगेगा।"

"मेरे देखते यह हो नहीं सकता था, पैन्तेलेयेविच!" येरमाकोव ने गम्भीर भाव और सरल मन से उत्तर दिया—"हमारे फ़ौजियों के पास कपड़ों की कमी थी, मगर इन्हें उस्त-मेदवेदित्स्काया में नये कपड़े दिये गए थे, और इन सबने वही पहन रखे थे। इनका क्या, इनके वे कपड़े तो उतर ही जाते। आगे न उतरते तो पीछे की क़तारों में पड़ने पर उतर जाते। अब हम क्या अपने फ़ौजियों को इसलिए गिरफ़्तार करेंगे कि उन्होंने इन चूहों के कपड़े छीन लिए हैं? नहीं, ऐसा नहीं होगा। कहीं अच्छा है कि हमारे फ़ौजी इन कपड़ों को इस्तेमाल करें। मैं जवाब दे लूंगा इसके लिए। मगर वे लोग मुझे बहुत ज्यादा बदल नहीं पाएँगे। और जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, तुम मुझ पर बेकार में न बरसो। मैं इसके बारे में कुछ नहीं जानता, और मुझे कानों-कान इसकी खबर नहीं मिली।"

ये दोनों क़ैदियों के बराबर पहुंचे कि सारी बातचीत खत्म हो गई। किनारे के लोगों ने डर और उत्सुकता से घूरते हुए इन घुड़सवारों के लिए राह कर दी। एक लाल-फ़ौजी ने कमांडर के रूप में ग्रिगोरी को पहचाना और पास आकर उसके घोड़े की रक़ाब पर हाथ रखते हुए बोला—"साथी-कमांडर, अपने कज्ज़ाकों से कम-से-कम हमारे बरान-कोट तो दिलवा ही दें। हम पर इतनी कृपा तो करें ही। रात को ठंडक पड़ती है और हम किस तरह नंगे हैं, यह आप खुद ही देख सकते हैं।"

"मैं कुछ नहीं समझता···तुम तो भरी गरमी के दिनों में भी ठंड से ठिठुरने की बात करोगे।" येरमोकोव ने सख्ती से जवाब दिया और उस लाल फ़ौजी को अपने घोड़े से धकियाते हुए ग्रिगोरी से बोला—"तुम फ़िक्र न करो···मैं हुक्म देकर इन सबको कुछ फटे-पुराने

कपड़े तो दिलवा ही दूँगा। और अब हटकर खड़े हो ज़रा, हटकर खड़े हो सूरमाओ! तुम कज्जाकों से लड़ने की बजाय पहले अपने पतलूनों की जुएँ बीनो।"

···स्टाफ़-कमरे में बंदी कम्पनी के कमांडर से पूछ-ताछ की जा रही थी। नये चीफ़-ऑफ़-स्टाफ़ कर्नल अन्द्रेयानोव एक पुरानी फिर-मिच से ढकी मेज़ के पीछे बैठे हुए थे। अन्द्रेयानोव सयानी उम्र के आदमी थे। नाक छोटी और चपटी थी। बाल कनपटी पर सफ़ेद थे और कान बड़े और गैर-मामूली क़िस्म के थे। लाल सेना का कमाण्डर मेज़ के सामने दो क़दम के फ़ासले पर खड़ा था। एक स्टाफ़-अफ़सर कैप्टन सूलिन क़ैदी के बयान ले रहा था। सूलिन अन्द्रेयानोव के साथ डिविज़न में भेजा गया था।

लाल सेना का कमाण्डर क़द का लम्बा था। मूँछें लाल थीं। सिर के बाल राख की तरह सफ़ेद और बहुत ही छोटे कटे हुए थे। वह गेरू से रंगे फ़र्श पर कभी इस पैर के बल खड़ा होता तो कभी उस पैर के बल और बीच-बीच में कर्नल को सरसरी नज़र से देख लेता।···कज्जाकों ने उसके बदन पर सिर्फ़ एक पीली, कोरी, सूती बनियाइन छोड़ी थी, और उसके पतलून के बदले में उसे फटी-पुरानी, प्यादों से भरी, बदरंग धारियों वाली शारोवारी दे दी थी।

ग्रिगोरी मेज़ की ओर बढ़ा तो उसने क़ैदी को चूतड़ों पर फटे पत-लून को ऊपर खींचकर अपने बदन को ढकने की कोशिश करते देखा।

"ओरेल-प्रान्तीय-सैनिक-कमीसारियट···यही कहा न तुमने?" कर्नल ने चश्मे के ऊपर से आदमी पर निगाह डालते हुए पूछा। फिर, उसने आँखें दुबारा झुका लीं और आधी मूँदकर उसके हाथ के एक दस्तावेज़ का परीक्षण करने लगा।

"हाँ।"

"पिछले साल के पतझर में?"

'पतझर के अन्त में।"

"तुम झूठ बोल रहे हो?"

"मैं सच बोल रहा हूँ।"

"मैं फिर कहता हूँ कि तुम झूठ बोल रहे हो।"

आदमी ने अपने कन्धे झटके और मुँह से कुछ नहीं कहा। कर्नल ने ग्रिगोरी की ओर देखा, और क़ैदी की तरफ़ इशारा कर गर्दन हिलाते हुए बोला—"इधर आओ और तारीफ़ करो। शाही फ़ौज का पुराना अफ़सर है, लेकिन इस वक्त, जैसा कि देख रहे हो, बोलशेविक रंग में है। रंगे हाथों पकड़ा गया है तो हमें समझाना चाहता है कि यों ही मौक़े की बात है कि लाल फ़ौजियों के साथ आ गया था। फ़ौज से अलग किया हुआ अफ़सर है। दसवें दर्जे में पढ़ने वाली लड़की की तरह भोला-भाला बन रहा और सफेद झूठ बोल रहा है; और समझता है कि हम इसकी बात पर यक़ीन कर लेंगे। लेकिन इसमें यह मानने की हिम्मत नहीं है कि यह गद्दार है और इसने अपने मुल्क के साथ गद्दारी की है। ···डरता है···बदमाश कहीं का!"

आदमी ने कठिनाई से बोलते हुए कहा—"कर्नल, मैं समझता हूँ कि मुझमें तो नहीं है, पर तुममें काफ़ी हिम्मत है, और तुम किसी भी क़ैदी की खासी किरकिरी कर सकते हो।"

"मैं कमीनों और बदमाशों से बात नहीं करता।"

"लेकिन मुझे तो करनी है।"

"होशियार···मुझे मजबूर न करो, वरना मुझे तुम्हारी और ज़्यादा बेइज्जती करनी पड़ेगी।"

"तुम जिस ओहदे पर हो, उसे देखते हुए यह काम जरा भी मुश्किल नहीं···और, इससे भी बड़ी बात यह है कि इतना सब करके भी तुम किसी तरह का कोई खतरा मोल नहीं लेते।"

ग्रिगोरी बिना मुँह खोले मेज़ के किनारे बैठ गया और हमदर्दी से मुस्कराते हुए क़ैदी की तरफ़ देखने लगा। क़ैदी का चेहरा नफ़रत से सफ़ेद पड़ गया था। पर उसने निर्भीक भाव से जवाब दिया था।

'कर्नल के दिमाग़ ठिकाने लगा दिए इसने!' ग्रिगोरी ने सन्तोष से सोचा और अन्द्रेयानोव के भरे हुए, नीले, उत्तेजना से फड़कते गालों को देखकर उसका मन डाह-मिली खुशी से भर उठा।

ग्रिगोरी, पहली मुलाक़ात के बाद ही, नये चीफ़-ऑफ़-स्टाफ़ को

मालदार करने लगा था। अन्द्रेयानोव ऐसे अफ़सरों में था जिन्होंने सड़ाई के जमाने में मोर्चे की कभी शक्ल न देखी थी और जो बड़े अफ़सरों और अपने परिवारों से सम्बद्ध बड़े लोगों की खुशामद के सहारे बराबर ऊँचे चढ़ते रहे थे। वह भी अपनी पूरी ताकत से अपने सर्वथा सुरक्षित पद से चिपका रहा था। गृह-युद्ध के समय भी उसने मोर्चे के पार्श्व-भाग में, नोवोचेरकास्क में अपने लिए काम खोज लिया था और अतामान क्रास्नोव के हाथों से सत्ता छिन जाने के बाद ही मजबूरन मोर्चे पर गया था।

एक बार ग्रिगोरी लगातार दो रात अन्द्रेयानोव के साथ एक ही जगह रहा था। उससे खुद अन्द्रेयानोव ने कहा था—"मैं परमपिता में पूरी तरह विश्वास रखता हूँ। उसके ध्यान की बात सोचते ही मेरी आँखें भर आती हैं। मेरी बीवी अपने-आपमें एक अलबेली मिसाल है। उसका नाम सोफ़िया अलेक्सान्द्रोवना है और खुद डिप्टी-अतामान बॉन-ग्रेबी कभी उसके पीछे पागल था।"

इसके बाद अन्द्रेयानोव ने अपने मृत पिता की जागीर, कर्नल के पद तक पहुँचने के अपने अथक संघर्ष, और १९१६ में जिन-जिन बड़े लोगों के साथ शिकार किये थे, उनके बारे में कितनी ही दिलचस्प बातें बतलाई थीं।

उसने ग्रिगोरी से आगे कहा था—"मैं ह्विस्ट को सबसे अच्छा खेल, ज़ीरे की पत्तियों से बसाई कन्यक को सबसे अच्छी शराब और फ़ौजी कमीसारियट की नौकरी को सबसे फ़ायदेमन्द नौकरी मानता हूँ।"

कर्नल अन्द्रेयानोव 'आसपास कहीं भी' गोली दगने पर चौंक उठता और मैदे की तकलीफ़ का बहाना कर घुड़सवारी भी वाजिब-वाजिब ही करता। स्टाफ़-हेडक्वार्टर्स में गारद बढ़ाने की उसे बराबर फ़िक्र रहती थी, और कज़ाकों के लिए उसके मन में जो नफ़रत थी, उस पर मुश्किल से ही पर्दा डाल पाता। उसके खयाल से १९१७ में सभी ने ग़द्दारी की थी, और तभी से वह सभी नीचे ओहदेवाले अफ़सरों को एक तरह से घृणा करने लगा था। कहता—'केवल खानदानी लोग ही रूस को बचा सकते हैं।'"···इस तरह वह अपने को भी खानदानी सिद्ध करता और

अपने खानदान को दोन प्रदेश का सबसे पुराना और सबसे प्रतिष्ठित परिवार बतलाता।

यानी, जरूरत से कहीं ज्यादा बोलना उसकी सबसे बड़ी कमजोरी थी। बुर्जुगियत से बोझिल, सम्हाल में न आने वाली यह वाचालता एक खास क़िस्म के बातूनी और बेसमझ लोगों को ढलती उम्र में बड़ा दुख देती है। बात यह है कि जिन्दगी-भर हर चीज़ पर आसानी से, बनावटी फ़ैसले देते रहने के कारण इनकी आदतें, यहाँ तक आते-आते काफ़ी बिगड़ जाती है।

ग्रिगोरी अपनी जिन्दगी में इस तरह के कितने ही लोगों से मिला था, और वे उसे फूटी आँखों न सुहाते थे। सो, उसने अन्द्रेयानोव को बरकाने की पूरी कोशिश की और दिन में इसमें उसे सफलता भी मिली। पर रात होते ही अन्द्रेयानोव ने उसे खोजा और हड़बड़ाते हुए पूछा—"पर रात में हम लोग एक ही जगह, एक साथ रहेंगे न ?" और, फिर जवाब का इन्तज़ार किये बिना आगे बोला—"दोस्त, तुम कहते हो कि पैदल हमले के मामले में कज़्ज़ाकों पर भरोसा नहीं करना चाहिए। पर जब मैं महामहिम के आसपास रहने वाला एक अफ़सर था तो···अरे, बाहर कोई है···जरा ट्रंक और बिस्तर ले आओ!···" फिर ग्रिगोरी लेट गया और आँखें मूँदकर, दाँत भींचकर पूरी कहानी सुनता रहा। इसके बाद उसने अनादर से अथक-वक्ता की ओर पीठ कर ली। सिर पर बरानकोट डाल लिया, और मन-ही-मन क्रोध से सोचा—'तबादिले का हुक्म पाते ही मैं किसी भारी चीज से इसका सिर तोड़कर रहूँगा। उसी हालत में एकाध हफ़्ते के लिए इसकी जबान रुके तो रुके!···' परन्तु, दूसरे ही क्षण अन्द्रेयानोव ने पूछा—"सो गये, स्क्वैड्रन-कमाण्डर ?"

"हाँ।" ग्रिगोरी ने निंदासी आवाज़ में जवाब दिया।

"लेकिन, माफ करना···अभी तो मेरी बात खत्म हुई नहीं।"··· और फिर दास्तान चालू हो गई। ग्रिगोरी ने झपकी लेते हुए सोचा—"लोगों ने यह तोता यहाँ समझ-बूझकर भेजा है। फ़ितशालीरोव ने कुछ किया होगा। भला ऐसे सड़े हुए आदमी के साथ काम कौन कर

सकता है। और फिर वह सो गया! मगर, कर्नल की भारी, गहरी आवाज़ बराबर बजती रही—टीन की छत पर पटापट गिरती बरसात की बूंदों की तरह।···

इसीलिए, इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि ग्रिगोरी ने उस बड़ी लाल कमांडर को बातूनी कर्नल का मुंह इस तरह, इतनी सफ़ाई से बंद करते देखा तो उसे इतनी खुशी हुई।

अन्द्रेयानोव पूरे एक मिनट तक चुप रहा और आंखें मूंदे बैठा रहा। उसकी लम्बी-लम्बी आंखों में लाल डोरे पड़ गए, और उसका मेज पर टिका, सफ़ेद, भारी सोने की अंगूठी वाला हाथ कँपकपाने लगा। उत्तेजना से फटी-फटी-सी आवाज़ से बोला—"सुन बे, दोगले कुत्ते, इस तरह के सवाल-जवाब के लिए तो मैंने यहां बुलवाया नहीं। यह बात तुझे भूलनी नहीं चाहिए। दूसरे, तू यह नहीं समझता कि चाहे जो हो, इस तरह तेरी जान तो छूटेगी नहीं।"

"अच्छी तरह समझता हूं।"

"गनीमत है। फिर यह कि मुझे इस बात की ज़रा परवाह नहीं कि तुम लाल फ़ौज में अपनी तबीयत से आए या कैसे आए! इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। फ़र्क इससे ज़रूर पड़ता है कि तुमने इज्ज़त के बारे में एक गलत राय बना रखी है, और तुम इस राय की वजह से सही बातें बतलाने से मुकर रहे हो।"

"साफ़ है कि इज्ज़त क्या है और क्या नहीं है, इसके बारे में तुम्हारी अपनी राय है और मेरी अपनी······"

"यह सिर्फ़ इसलिए है कि तुममें इज्ज़त जैसी कोई चीज़ बाक़ी नहीं बची है···समझे!"

"और तुम मेरे साथ जिस तरह बरताव कर रहे हो, उसे देखकर मुझे शक है कि तुममें कभी भी इज्ज़त जैसी कोई चीज़ रही भी है···"

"लगता है कि तुम्हें मरने की कुछ जल्दी है।"

"मौत अगर आनी ही हो तो उसे टालने से फ़ायदा? मुझे डराने की कोशिश न करो···तुम डरा नहीं सकते।"

अन्द्रेयानोव ने कांपते हुए हाथों से सिगरेट केस खोला, एक सिगरेट

इसमें गोली एक भी नहीं थी। उस पर लगा कि सफ़ाई शायद दो महीने से नहीं हुई है···तुम अपनी निजी चीजों की कोई खास फ़िक्र करते नहीं लगते।"

अन्द्रेयानोव ने निगाहें नीची कर लीं, रिवाल्वर उँगली पर नचाने लगा और मुस्कराकर बोला—"ऐसी-तैसी···मगर, बात तुम ठीक कहते हो।"

कैप्टन सूलिन अब तक सारी बातें सुनता और रहस्यात्मक ढंग से मुस्कराता रहा था। पर, अब उसने क़ैदी के बयान के कागज की तह की और बड़े मधुर ढग से बोला—"सेम्योन-पोलीकारपोविच, मैंने तुमसे हजार बार कहा कि तुम अपने हथियारों को बहुत ही लापरवाही से रखते हो। आज इस बात की एक और मिसाल सामने आई और साबित हुआ कि मैं ठीक कहता हूँ।"

अन्द्रेयानोव ने भौंहें सिकोड़ीं और चिल्लाकर आवाज़ दी—"ऐ··· कोई है···?"

और, दो अर्दलियों के साथ गार्दों का मुखिया सामने के दरवाजे से अन्दर दाखिल हुआ। अन्द्रेयानोव ने क़ैदी की तरफ सिर हिलाकर इशारा किया—"ले जाओ इसे यहाँ से!"

लाल अफ़सर ग्रिगोरी की तरफ़ मुड़ा, मुँह से बिना कुछ बोले झुका और दरवाज़े की तरफ़ बढ़ा। ग्रिगोरी ने उसके होंठों की हलकी-हलकी मुस्कान में आभार की भावना पढ़ी।

फिर, जब आदमी के पैरों की आहट तक दूर चली गई तो अन्द्रेयानोव ने ऐसा चेहरा बनाया जैसे कि बहुत थक गया हो। उसने चश्मा उतारा, सांभर के चमड़े से शीशे साफ़ किये और टूटी हुई आवाज में बोला—"तुमने उस ग़लीज़ की बहुत ही शानदार वक़ालत की, गोकि यह तुम ही समझो कि तुमने किया क्या? पर, उसके सामने तुमने मेरे रिवाल्वर का ज़िक्र क्यों किया? मेरी बड़ी ही किरकिरी की।"

"यह ऐसी कोई बड़ी बात नहीं।" ग्रिगोरी ने समझौते के स्वर में जवाब दिया।

"हो सकता है कि कोई बड़ी बात न हो, लेकिन फिर भी रिवॉल्वर

का जिक्र उस शक्ल में तुम्हें करना नहीं चाहिए था। वैसे यह सच है कि मेरा बस चलता तो मैं उसे गोली से उड़ा देता। घिनौना आदमी है। मैं तो तुम्हारे आने के आधे घंटे पहले से उससे दिमाग़ लड़ा रहा था, और वह जिस ढंग से सफ़ेद झूठ बोलकर बचकर निकलना चाहता था, उससे हैरत होती थी। पर, फिर, जब मैंने उसे पकड़ लिया तो उसने मुंह खोलने से ही साफ़-साफ़ इन्कार कर दिया। बोला—'मैं फ़ौजी अफ़सर हूं, और मेरी अपनी इज्जत है। मैं दुश्मन को फ़ौजी राज़ नहीं दे सकता।'···मगर, कुत्ते के बच्चे ने जब अपने-आपको बोलशेविकों के हाथ बेचा तब इज्जत की बात नहीं सोची···मैं तो कहता हूं कि हम उसे और कमान के दो दूसरे लोगों को चुपचाप ठिकाने लगवा दें। जहां तक चीज़ों के सुराग पाने का सवाल है, हमें उन लोगों से कुछ भी मालूम होने से रहा। वे धराऊ बदमाश हैं और उन्हें रास्ते पर लाया ही नहीं जा सकता···इसलिए उन्हें जिन्दा रखना कोई मतलब रखता ही नहीं। क्या ख़याल है?"

"तुमने यह कैसे जाना कि वह कम्पनी-कमांडर है?" ग्रिगोरी ने सवाल का जवाब न देकर दूसरा सवाल कर दिया।

"एक लाल फ़ौजी ने ही उसके साथ दग़ा की और सब-कुछ बतला दिया।"

"मेरा तो सुझाव है कि हम कमांडरों को हाथ न लगायें और उस आदमी को गोली से मरवा दें···" ग्रिगोरी ने अन्द्रेयानोव की ओर यों देखा, जैसे कि चुनौती दी हो।

कर्नल ने अपने कंधे झटके और यों मुस्कराया जैसे कि किसी ने कोई बुरा मज़ाक कर दिया हो। "नहीं···लेकिन ठीक-ठीक बतलाओ कि क्या सोचते हो?"

"मैं वही सोचता हूं जो मैंने अभी-अभी कहा।"

"माफ़ करो, मगर यह बतलाओ कि हम उस आदमी को किस लिए गोली से उड़वा दें?"

"किस लिए? रूसी फ़ौज में क़ायदे-क़ानूनों और निज़ाम की जगह बनाए रखने के लिए। कर्नल, अभी कल हम सोने चले तो तुमने बड़ी-

बड़ी बातें कीं कि कल बोलशेविकों को चूर-चूर करने के बाद हम फ़ौज में कैसा निजाम क़ायम करेंगे और जवानों को लाल फ़ौजियों की छूत से कैसे बचायेंगे ! मैंने तुम्हारी हर बात को ठीक बताया। तुम्हें खयाल है?" ग्रिगोरी ने मूंछों पर हाथ फेरा, कर्नल के चेहरे के बदलते हुए भाव देखे और जैसे फ़ैसला देते हुए कहता गया—"लेकिन, तुम्हीं इस वक्त क्या कह रहे हो, क्या सुझाव दे रहे हो ? इस तरह तो फ़ौज के तमाम लोग चौपट हो जायेंगे। फ़ौजी समझेंगे कि अपने अफ़सरों के साथ गद्दारी करना कोई बुरी बात ही नहीं है। क्या अच्छा सबक देना चाहते हो तुम उन्हें ! दूसरे, अगर कल हम इन लाल कमांडरों की जगह क़ैदी बना लिये जायें तो क्या हो? तब कैसा लगे हमें ? माफी चाहता हूं, मगर मैं तुम्हारा सुझाव मानने को तैयार नहीं हूं।"

"जैसा तुम्हारा मन !" अन्द्रेयानोव ने ग्रिगोरी की ओर ग़ौर से देखते हुए, बेमन से कहा।

उसने यह तो सुन रखा था कि विद्रोही सेना के कमांडर के नैतिकता के अपने माप है, और वह अजीब-ग़रीब सौदे करता है, लेकिन इस पर भी इस तरह की उससे उसे कोई आशा न थी। फिर भी उसने अपनी तरफ़ से सिर्फ़ इतना कहा कि लाल फ़ौज के कमांडरों, और उनमें भी खास तौर पर पहले के अफ़सरों को हमने जब भी पकड़ा है, उनके साथ हमेशा यही और एकसा ही बरताव किया है। इसीलिए तुम्हारी बात मुझे खासी नई-नई-सी लग रही है···फिर यह कि यह मामला तो काफ़ी साफ़ है···इस मामले में तुम्हारा रवैया मेरी समझ में बहुत आ नहीं रहा।

ग्रिगोरी का चेहरा नीला पड़ गया। बोला—"मौक़ा पड़ने पर लड़ाई में हमने उन्हें तलवार के घाट उतारा है, लेकिन वैसे बिना किसी खास वजह के हमने कभी किसी को गोली से नहीं उड़ाया।"

"तो, ठीक है, हम उन्हें मोर्चे के पीछे भेज देंगे।" अन्द्रेयानोव ने कमांडर की हां-में-हां मिलाते हुए कहा—"लेकिन, अब एक दूसरा सवाल सामने है—सरातोव प्रदेश के कुछ किसान क़ैदियों ने हमारी फ़ौज में शामिल होकर लड़ने की बात कही है। जहां तक हमारी तीसरी पैदल

रेजीमेंट का सवाल है, उसमें तीन सौ से कम-ही-कम संगीन वाले फ़ौजी हैं। क्या कुछ स्वयंसेवक क़ैदियों को उस रेजीमेंट में भेजा जा सकता है? फ़ौज के स्टाफ़ के हुक्म तो इस मामले में हमें मिल चुके हैं, और बिलकुल साफ़ हैं।"

"मैं एक भी किसान को अपनी कमान में नहीं लूंगा। फ़ौजियों की कमी कज्ज़ाकों से पूरी की जानी चाहिए।" ग्रिगोरी ने दोटूक जवाब दे दिया।

पर, अन्द्रेयानोव ने उससे बहस करने की कोशिश की। बोला—"सुनो, मैं तुमसे झगड़ नहीं रहा, और यह समझता हूं कि तुम डिविज़न में सिर्फ़ कज्ज़ाक रखना चाहते हो। लेकिन, ज़रूरत की बात है, और उस वक्त हम क़ैदियों की तरफ़ से भी मुंह मोड़ नहीं सकते। स्वयंसेवक सेना ने भी क़ैदियों को शामिल कर कुछ रेजीमेंटों की ताक़त बढ़ाई है।"

"उस फ़ौज के लोग जैसा चाहें, वैसा करें, लेकिन मैं किसानों को लेने से इन्कार करता हूं। और, बस।" ग्रिगोरीने झटके से कहा और, ज़रा देर बाद वह क़ैदियों के पीछे की क़तारों में भेजे जाने के बारे में आदेश देने के लिए चला। खाते समय अन्द्रेयानोव उत्तेजित स्वर में बोला—"साफ है कि हम एक साथ तरीक़े से काम नहीं कर सकते···"

"यही बात तो मैं भी सोच रहा था।" ग्रिगोरी ने अन्यमनस्क भाव से कहा। फिर, सूलिन के मुस्कराने की तरफ ध्यान न देकर उसकी प्लेट से भेड़ के डबल गोश्त का एक टुकड़ा झटक लिया और भूख से टूटे भेड़िये की तरह इस तरह दांत गड़ा-गड़ाकर खाने लगा कि सूलियन के माथे पर दर्द के बल पड़ गये और उसने एक क्षण को आंखें तक मूंद लीं।

× × ×

दो दिन बाद—पीछे भागती लाल सेनाओं का पीछा करने की ज़िम्मेदारी जनरल सालनिकोव की टुकड़ी ने अपने हाथों में ले ली और ग्रिगोरी का हेडक्वार्टस से बुलावा आ गया कि फ़ौरन ही हाजिर हो। वहां चीफ़-ऑफ-स्टाफ़, देखने में भद्र, उम्र से सयाने, एक जनरल ने उसे दोन सेना के कमांडर का विद्रोही सेना के विघटन और पुनर्गठन से

सम्बन्धित आदेशपत्र दिखलाया और बिना भूमिका बांधे सीधे-सीधे बोला—"लाल फ़ौजियों के खिलाफ़ जो पार्टीजन-लड़ाई हुई, उसमें तुम्हारी कमान की डिवीजन को बड़ी कामयाबी मिली। लेकिन, हम अब रेजीमेंट तो रेजीमेंट, एक डिवीजन तक तुम्हारी कमान में नहीं दे सकते। तुम्हें फौजी तालीम नहीं मिली, इसलिए आज के लम्बे-चौड़े मोर्चे और लड़ाई के नये-से-नये तरीकों को देखते हुए तुम शायद किसी बड़ी फौजी यूनिट की कमान सम्हाल नहीं सकते। क्या खयाल है ?"

"ठीक है," ग्रिगोरी ने जवाब दिया—"मैं तो खुद भी डिवीजन की कमान से इस्तीफा देना चाहता था।"

"यह बड़ी ही अच्छी बात है कि तुम्हें अपने बारे में कोई गलतफ़हमी नहीं है और तुम अपनी ताक़त या अक्ल को घटा-चढ़ाकर नहीं आँकते। इन दिनों यह बात अफ़सरों में जरा कम-ही-कम पाई जाती है। तो, मोर्चे के कमांडर के हुक्म से तुम्हें उन्नीसवीं रेजीमेंट की चौथी स्क्वेड्रन का कमांडर बनाया जाता है। रेजीमेंट इस वक्त यहाँ से कोई पन्द्रह वर्स्ट के फ़ासले पर, ब्याजनिकोव नाम के गाँव के पास है। आज नहीं तो कल तो जरूर ही रेजीमेंट में जाकर रिपोर्ट कर दो। और हाँ, तुम अपनी तरफ़ से कुछ कहना चाहते हो ?"

"मैं चाहता हूँ कि मुझे कमीसारियट में भेज दिया जाए।"

"यह मुमकिन नहीं है···तुम्हारी जरूरत मोर्चे पर पड़ेगी।"

"दो लड़ाइयों में मैं घायल हो चुका हूँ और चौदह बार बमों से जख्मी हो चुका हूँ।"

"यह तो एक बिल्कुल ही दूसरी और बेमतलब बात है। तुम अभी जवान हो, हाथ-पैर दुरुस्त हैं। तुम अब भी लड़ सकते हो। जहाँ तक जख्मों का सवाल है, कितने अफसर हैं जिन्हें जख्म नहीं लगे ?···अब तुम जा सकते हो···खुश रहो।"

× × ×

उस्त-मेदवेदित्स्काया के हथियाए जाने के बाद विद्रोही सेना का विघटन हुआ तो ऊपरी दोन के कज्जाकों के मन का असन्तोष दूर करने

के लिए विद्रोह के सिलसिले में खास बहादुरी दिखलाने वाले कुछ आम कज्जाक फौजियों को नॉनकमीशन अफसर और सार्जेंटों को अलमबरदार बना दिया गया। साथ ही विद्रोह में भाग लेने वालों को इनाम दिये गए और उनके ओहदे बढ़ा दिये गए। यानी इस दृष्टि से ग्रिगोरी को छोड़ा नहीं गया। उसे कैप्टन बना दिया गया। एक खास फ़रमान में लाल सेनाओं से हुए युद्ध में उसके असाधारण पराक्रम-प्रदर्शन की चर्चा की गई और कमान की ओर से उसके प्रति आभार प्रकट किया गया।"

विद्रोही रेजीमेंटों के विघटन का काम कुछ दिनों के अन्दर-ही-अन्दर पूरा हो गया। डिवीजनों और रेजीमेंटों के अशिक्षित कमांडरों की जगह जनरल और कर्नल आ गये, अनुभवी अफसरों को स्क्वेड्रन-कमांडर बना दिया गया, तोपखाने और स्टाफ़ की कमानें पूरी तरह बदल दी गईं और साधारण कज्जाक सैनिकों को दोन प्रदेश की अलग-अलग रेजीमेंटों में भेज दिया गया। ये रेजीमेंटें दोनेत्स नदी की लड़ाई में बहुत हल्की पड़ गई थीं। इनके फ़ौजी बहुत बड़ी संख्या में मारे गये थे।···

ग्रिगोरी ने दोपहर के बाद अपनी डिवीज़न के कज्जाकों को जमा किया। उन्हें विद्रोही सेना के संघटन का समाचार दिया और उनसे विदा लेते हुए बोला—"भाई कज्ज़ाको, अपने मन में मेरे लिए किसी तरह का कोई कीमा न रखना। जागने से मजबूर होकर आज तक हम लोग साथ रहे। लेकिन, आज से तुम्हारे दुख-दर्द अलग होंगे और मेरे अलग। सबसे बड़ी बात यह है कि तुम अपनी खोपड़ियों का पूरी तरह बचाव करना और लाल फ़ौजियों को उन्हें छेदने न देना। हमारी खोपड़ियों के अन्दर भेजों की कमी हो सकती है, मगर बेवजह उनसे गोली रोकना अक्ल की बात नहीं होगी। अभी हमें भेजों की जरूरत पड़ेगी सोचने के लिए और यह सोचने के लिए कि अब हमारा अगला क़दम क्या हो।···

कज्ज़ाक टूटे हुए मन से चुपचाप सब-कुछ सुनते रहे और और ग्रिगोरी के चुप होते ही सब-के-सब एक साथ, बौखलाहट से भर्राई आवाज में बोलने लगे—"यानी, पुराना जमाना फिर वापस आ रहा है···।"

"अब कहाँ जायेंगे हम ?"

"आम लोगों के मामले में मनमानी-घरजानी कर रहे हैं, सुअर के बच्चे।"

"हम नहीं चाहते कि हमारे ट्रूप तोड़े जायें ! आखिर कौन-सा नया निज़ाम क़ायम कर रहे है ये लोग ?"

"खैर, भाइयो, हम एक इसलिए हुए हैं कि आप अपनी गरदनों पर पैर रखें।"

"ये बड़े-बड़े लोग हमें फिर चूसेंगे।"

"देखना, ये लोग हमारी हड्डी-हड्डी सीधी करके रख देंगे।"

ग्रिगोरी ने लोगों के शांत होने का इन्तजार किया और फिर बोला—"इस तरह गला फाड़ने से कोई फ़ायदा नहीं। वे मौज के जमाने अब गुज़र गए जब हम हुक्मों पर बहसें और कमांडरों के खिलाफ़ बातें करते थे। फ़िलहाल, अपने-अपने क्वार्टरों में जाओ और अपनी ज़बानें अपने क़ाबू में रखो, वरना देखते-देखते कोर्ट-मार्शलों और सज़ा देने वाली कम्पनियों के सामने पहुँचा दिए जाओगे।"

कज़्ज़ाक ट्रूपों के क्रम से, उसके पास आए, उससे हाथ मिलाए और बोले—"अलविदा, पैन्तेलेयेविच ! हमसे कुछ भूल-चूक बन पड़ी हो तो मन में न रखना, माफ़ कर देना।"

"अजनबियों के मातहत नौकरी बजाना हमारे लिए आसान न होगा।"

"तुम्हें हम लोगों को अपने हाथों से जाने नहीं देना चाहिए था। तुम्हें डिविज़न की क़मान से इस्तीफा देना चाहिए था।"

"मेलेखोव, हमें तुम्हारी बड़ी याद आएगी। नये कमाण्डर तुमसे ज़्यादा लिखे-पढ़े हो सकते हैं, मगर उससे हमारा बोझ हलका नहीं होगा, बोझ और बढ़ेगा···रोना तो यही है।"

लेकिन, स्क्वैड्रन के विदूषक, एक कज़्ज़ाक ने कहा—"इनकी बातों पर यक़ीन न करो, ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच ! अगर ईमान साथ न दे तो काम अपनो के साथ करो और चाहे अजनबियों के साथ, फ़र्क कोई नहीं पड़ता।"

उस रात ग्रिगोरी येरमाकोव और दूसरे कज्जाकों के साथ बैठा घर की बनी वोदका पीता रहा और अगले दिन सवेरे घोड़े पर सवार होकर, प्रोखोर जिकोव को साथ लेकर उन्नीसवीं रेजीमेंट के लिए रवाना हो गया।

पर जब तक वह स्क्वैड्रन सम्हाले-सम्हाले और स्क्वैड्रन के फ़ौजियों का कायदे से परिचय प्राप्त करे, तब तक उस रेजीमेंट के कमाण्डर का बुलावा मिल गया।

प्रातः का समय होने के कारण ग्रिगोरी घोड़ों का मुआइना करने लगा और कमाण्डर के पास आधा घण्टा देर से पहुँचा। वह मन-ही-मन डरा कि अब अफ़सरों के लिए हौआ वह अफ़सर जी भरकर बरसेगा मुझ पर। लेकिन, उसने उसका बड़े मित्रतापूर्ण ढंग से स्वागत किया और पूछा—"क्यों, क्या राय है तुम्हारी अपनी स्क्वैड्रन के बारे में ? शानदार लोग हैं न !" और, उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना, ग्रिगोरी को घूरते हुए कहता गया—"वैसे, दोस्त, मुझे तुम्हें एक बहुत ही दर्द की खबर देनी है···तुम्हारे घर के लोगों पर कोई मुसीबत टूटी है। कल रात व्येशेन्स्काया से तार आया है। मैं तुम्हें एक महीने की छुट्टी देता हूँ···तुम फ़ौरन ही जाओ और सब-कुछ ठीक-ठाक करो।"

"मेहरबानी कर तार दे दीजिए मुझे।" ग्रिगोरी बुदबुदाया और उसका चेहरा एकदम जर्द पड़ गया।

उसने मुड़ा हुआ कागज लिया, खोला, पढ़ा और मसल डाला। कागज इस बीच पसीने से भीग गया था।

उसने अपने को बहुत ही कठिनाई से सम्हाला और फिर जैसे-तैसे बोला—"खैर···मुझे इसकी उम्मीद न थी। अच्छा तो, मैं चला··· अलविदा !"

"देखो भाई, अपना पास लेना न भूलना।"

"नहीं···शुक्रिया···नहीं भूलूंगा।"

वह हमेशा की तरह मजबूती से तलवार साधे विश्वास से भरे जमे हुए क़दमों से बरसाती में आया। पर, सीढ़ियों से उतरने लगा तो अपने ही पैरों की आहट उसके लिए अनसुनी हो गई, और ऐसा अनुभव होने

लगा, जैसे कि दिल में किसी ने संगीन चुभो दी हो।

फिर, आखिरी सीढ़ी पर वह लड़खड़ा गया, तो उसने बायें हाथ से वारजा थाम लिया, और दायें हाथ से ट्यूनिक के कॉलर के बटन खोल लिए। एक क्षण तक उसकी सांसें तेज़ और भारी रहीं, पर इस बीच ही जैसे उसे दर्द का नशा हो गया। इसके बाद जब उसने जंगला छोड़ा और छोटे फाटक के पास बंधे अपने घोड़े की ओर बढ़ना शुरू किया, तो उसके पैर मन-मन के हो गए और डगमगाने लगे।···

: १६ :

दार्‌या से बातें करने के बाद नताल्या को कई दिन तक ऐसी यातना हुई, जैसी किसी ऐसे आदमी को होती है जो बुरा सपना तो देखता है, पर आंखें नहीं खोल पाता और सोता ही चला जाता है। उसने प्रोखोर ज़िकोव की पत्नी के यहां जाने के लिए एक बहाना खोजा और वहां जाकर जानना चाहा कि कज़्ज़ाकों के पीछे हटते समय ग्रिगोरी व्येशेन्स्काया में किस तरह रहा और वहां रहा तो अकसीनिया से मिला या नहीं? इस तरह औरत ने अपने पति की करतूतों की सच्चाई जाननी चाही, क्योंकि दार्‌या की बातों पर उसे विश्वास हुआ भी था और नहीं भी हुआ था।

सो, शाम होने के काफ़ी देर बाद, वह दुनिया से बेखबर, एक टहनी नचाती ज़िकोव के अहाते की तरफ़ बढ़ी। प्रोखोर की पत्नी दिन का काम खतम कर फाटक के पास बैठी मिली।

"कहां, फ़ौजी की बीवी?" नताल्या ज़ोर से बोली—"तुमने हमारा बछड़ा तो नहीं देखा?"

"ऊपर वाला तुम पर रहम करे, नताल्या···नहीं, मैंने तुम्हारा बछड़ा कहीं नहीं देखा।"

"ऐसा घुमक्कड़ है, भाड़ में जाए! घर पर तो ठहरता ही नहीं। समझ में नहीं आता कि कहां तलाश करूं उसको।"

"आराम कर लो···आ जाएगा।···थोड़े-से सूरजमुखी के बीज लाऊं तुम्हारे लिए?"

नताल्या जाकर उसके पास बैठ गई और फिर औरतों की पंचायत शुरू हो गई।

"तुम्हारे फ़ौजी की कोई खबर आई ?" नताल्या ने पूछा।

"बिल्कुल नहीं···जाने कहाँ गारद हो गया ईसा का दुश्मन ! पर, तुम्हारे ग्रिगोरी ने कोई पैगाम भेजा ?"

"नहीं···वैसे ग्रीशा ने खत लिखने का वायदा किया था, मगर अभी तक चिट्ठी नहीं आई। लोग कहते हैं कि हमारी फ़ौजें उस्त मेदवेदित्स्काया के आगे चली गई हैं। इसके अलावा और कुछ पता नहीं चला।" नताल्या ने बातचीत का रुख बदला, हाल में लोगों के पीछे हटकर दोन पार करने की चर्चा छेड़ी और बहुत ही सावधानी से पूछा—"व्येशेन्स्काया में हमारे फ़ौजी किस तरह रहे ? गाँव का कोई आदमी गया था वहाँ ?" मगर, प्रोखोर की औघड़ पत्नी ने नताल्या के आने का कारण समझ लिया, और जवाब बहुत ही रुखाई से दिए और नपे-तुले दिए।

उसके पति ने उसे ग्रिगोरी के बारे में सभी कुछ बतलाया था और उसकी जीभ में खुजली भी हो रही थी, पर पति की मनाही का खयाल कर मुँह से कुछ भी निकालने में उसका मन डरा। बोली—"देखो, मेरी बात सुन लो···अगर तुमने मेरे बताए में से एक लफ़्ज़ भी कहीं मुँह से निकाला तो तुम्हारा सिर पटरे पर रखकर कुचल डालूंगी, और जबान चिमटे से पकड़कर खींच लूंगी। अगर ग्रिगोरी को उसकी सुन-गुन भी मिल गई तो वह मुझे खड़े-खड़े मार डालेगा। मैं तुमसे ऊब गई हो सकती हूँ, पर जिन्दगी से अभी नहीं ऊबी हूँ। समझ में आई बात ? इसलिए मुँह बन्द ही रखना···"

"तुम्हारे प्रोखोर ने व्येशेन्स्काया में अकसीनिया को तो नहीं देखा ?" नताल्या ने अधीर होते हुए सीधे-सीधे पूछा।

"वह उसे कहाँ और क्यों देखता ? तुम्हारा खयाल है कि उसके पास इतनी फ़ुरसत थी ? ऊपर वाला गवाह है, मैं सचमुच नहीं जानती और, तुम्हें मुझसे कुछ पूछना भी नहीं चाहिए, मिरोनोवना ! फिर मेरे बुद्धू आदमी की बात का तुम कोई भी मतलब नहीं लगा सकतीं।

वह तो सिर्फ़ यह कह सकता है कि यह करो और वह करो, और बस।"

सो, नताल्या वहाँ से चली तो पहले से कहीं ज्यादा परेशान और चिन्तित हो उठी। लेकिन, अंधकार में रहना उसे नहीं रुचा, इसलिए उसने खुद अकसीनिया के पास जाने का इरादा किया।

अगल-बगल रहने के कारण इधर दोनों अक्सर ही मिलती थीं। ऐसे अवसरों पर या तो वे चुपचाप एक-दूसरे को देखकर झुक लेतीं, या दो-चार इधर-उधर की बात कर लेतीं। वे दिन कभी के हवा हो गए थे जब वे एक-दूसरी से दुआ-सलाम तक न करतीं और देखतीं तो निगाहों से एक-दूसरे पर सिर्फ़ नफ़रत बरसातीं।

उनके पारस्परिक विरोध की तेजी कभी की मर चुकी थी। इसीलिए नताल्या, अकसीनिया के पास गई तो उसने आशा की कि अकसीनिया उसे दरवाज़े से ही खदेड़ नहीं देगी बल्कि ग्रिगोरी के बारे में बातें चाव से करेगी। और, यही हुआ भी। नताल्या की उम्मीद बर आई।

अकसीनिया ने नताल्या को देखा तो उसे खासा ताज्जुब हुआ और इस आश्चर्य पर उसने किसी तरह का कोई पर्दा नहीं डाला। नताल्या को सोने के कमरे मे लिवा गई, पर्दे खींच दिए, चिराग़ जला दिया और पूछा—"कोई अच्छी खबर लेकर आई हो क्या ?"

"मैं अच्छी खबर कौन-सी लेकर तुम्हारे पास आ सकती हूँ···?"

"तो सुनाओ···बुरी ही खबर सही। ग्रिगोरी-पैन्तेलेयेचिव को कुछ हुआ तो नहीं ?"

पर, अकसीनिया के इस प्रश्न से सहज रूप में, गहरी चिन्ता झाँकने लगी और नताल्या ने सब-कुछ देखा और समझा। एक शब्द में यह कि अकसीनिया ने अपने-आपको, अपनी जिन्दगी के उद्देश्य को और अपने मन की शंकाओं को अनजाने ही मूर्त्त रूप दे दिया। इसके बाद ग्रिगोरी से उसके सम्बन्धों को लेकर पूछताछ करने की जरूरत रही नहीं। परन्तु नताल्या वहाँ से टली नहीं और जरा देर तक मन-ही-मन सकचाने के बाद बोली—"नहीं, मेरा ग्रिगोरी सही-सलामत है···

ख़ैरियत से है···घबराने की ज़रूरत नहीं।"

"मैं घबराती नहीं। ऐसा तुमने क्यों सोचा? उनके ठीक-ठाक रहने या न रहने की फ़िक्र तो तुम्हें होनी चाहिए। मेरी अपनी ही परेशानियाँ कौन कम हैं!" अकसीनिया ने सहज रूप से बात कही, पर दूसरे ही क्षण उसे अपने चेहरे की नसों में ख़ून उभड़ना लगा और वह तेज़ी से मेज की तरफ़ बढ़ गई। वहाँ मेहमान की तरफ़ पीठ किए वह बहुत देर तक खड़ी रही और क़ायदे से जलते चिराग की बत्ती में न जाने क्या ठीक करती रही।

"तुम्हारे स्तीपान के पास से कोई ख़बर आई?"

"अभी हाल में ही तो उसने ख़ैरियत कहला भेजी थी और प्यार कहलाया था।"

"ठीक तो है।"

"लगता तो ऐसा ही है।" अकसीनिया ने कन्धे झटके।

वह फिर अपने साथ छल न कर सकी और न अपनी भावना छिपा सकी। दूसरी ओर अपने पति के भविष्य की ओर से इतनी उदासीन लगी कि नताल्या को अपने-आप हँसी आ गई। बोली—"मैं देखती हूँ कि तुम्हें स्तीपान की कोई ख़ास फ़िक्र है नहीं।···लेकिन, ख़ैर यह तुहारा अपना मामला है। इससे मुझे कुछ भी लेना-देना नहीं। मैं तो एक दूसरे ही काम से आई हूँ। बात यह है कि गांव में बड़ी चर्चा है कि ग्रिगोरी तुमसे मेल-जोल फिर बढ़ा रहा है और वह जब यहाँ आता है तो तुम उससे बराबर मिलती हो। ठीक है यह?"

"तुम तो बहुत ही सही आदमी से पूछने आई हो यह बात।"

"अकसीनिया ने मजाक बनाते हुए कहा—"मान लो, मैं तुमसे पूछूँ कि सही है यह बात?"

"असलियत से डरती हो?"

"नहीं, बिल्कुल नहीं डरती।"

"तो फिर साफ़-साफ़ बतला दो मुझे ताकि मैं यह घुलना-घुटना खत्म करूँ। हर बात पर बौखलाती क्यों फिरूँ?"

अकसीनिया ने अपनी आँख सिकोड़ी तो उसके माथे पर बल पड़े।

रुखाई से बोली—"जो भी हो तुम मुझसे हमदर्दी की तो उम्मीद करो नहीं। मेरा-तुम्हारा कुछ यों है कि तुम दुखी होगी तो मैं सुखी होऊँगी और मैं दुखी होऊँगी तो तुम्हें सुख मिलेगा।···वजह यह है कि हम दो हैं मगर मोहब्बत एक ही से करती हैं···है न? खैर मैं तुम्हें असलियत बतलाए देती हूँ ताकि तुम कभी यह न कहो कि तुम्हें वक्त रहते हुए कुछ बतलाया नहीं गया। तो, यह सब सच है। लोग जो कुछ कहते हैं, सच ही कहते हैं। मैंने ग्रिगोरी को फिर जीत लिया है और इस बार मैं पूरी कोशिश करूँगी कि वह मेरे हाथों से निकले नहीं। अब यह बतलाओ कि ऐसे में तुम क्या करोगी? मेरे घर की खिड़कियाँ तोड़ोगी या छुरा लेकर मुझे कत्ल करोगी?"

नताल्या ने हाथ की टहनी को मोड़कर उसमें गाँठ लगाई, उसे स्टोव की तरफ़ लोकाया और कृत्रिम दृढ़ता के साथ बोली—"अब मैं तुम्हारा कोई नुकसान नहीं करूँगी। सिर्फ़ ग्रिगोरी के आने की राह देखूँगी और उसके आने पर उससे दोटूक बातें करूँगी। इसके बाद देखा जाएगा कि तुम क्या करोगी और मैं क्या करूँगी। मेरे दो बच्चे हैं। मैं उन दोनों के हकों के साथ-साथ अपने हक़ के लिए भी अड़ना जानती हूँ।"

अकसीनिया मुस्कराई और बोली—"यानी, फ़िलहाल मैं बेधड़क रह सकती हूँ?"

नताल्या ने उसके मजाक की अनदेखी की और पास जाकर उसकी आस्तीन पकड़ती हुई बोली—"अकसीनिया, तुम जिन्दगी-भर मेरे आड़े आती रही हो, लेकिन अब मैं तुमसे पहले की तरह मिन्नतें न करूँगी। कभी की थी। याद है तुम्हें? उस वक्त मैं कम उम्र थी···कम अक्ल थी···मैंने सोचा—मैं अकसीनिया को मनाऊँगी। वह मुझ पर रहम करेगी, उसका दिल पसीजेगा। वह ग्रिगोरी का दामन छोड़ देगी। मगर नहीं, इस बार यह सब नहीं होगा। वैसे एक बात मैं जानती हूँ कि तुम्हें उससे प्यार नहीं है। तुम सिर्फ़ आदत से मजबूर होकर उसके पीछे दौड़ती फिरती हो। तुमने कभी मेरी तरह प्यार किया है उसे? जो भी हो, ऐसा लगता तो नहीं। तुमने लिस्तनित्स्की

से खिलवाड़ किया और किससे तुमने खेल नहीं किया, छिनाल कहीं की। औरत किसी को मोहब्बत करती है न, तो ऐसा कभी नहीं करती।"

अक्सीनिया का चेहरा पीला पड़ गया और नताल्या को धक्का देते हुए वह बड़े बक्से पर से उठ खड़ी हुई।

"इस मामले में ग्रिगोरी ने मुझे कभी कुछ नहीं कहा, मगर तुम इतना भला-बुरा कह रही हो! कौन होती हो तुम इस तरह बात करने वाली? खैर, ठीक है···तुम बहुत अच्छी हो। और मैं बहुत बुरी हूँ···तो, तो क्या हुआ फिर?"

"बात खत्म करो···बेकार नाराज न हो···अब मैं जा रही हूँ··· असलियत साफ़ कर देने के लिए। शुक्रिया।"

"मेरा शुक्रिया अदा करने की जरूरत नहीं। असलियत तो तुम्हें वैसे भी मालूम हो जाती। रुको जरा···मैं तुम्हारे साथ बाहर चलती हूँ···झिलमिलियाँ बन्द करनी हैं।"

बरसाती में अक्सीनिया रुकी और बोली—"मुझे इस बात की खुशी है कि हम आपस में लड़े बिना, चैन से एक-दूसरे से अलग हो रहे हैं। लेकिन पड़ोसिन, सुन लो, जहाँ तक आगे की बात है, अगर तुममें ताक़त हो तो तुम ग्रिगोरी को मुझसे छीन लेना, पर अगर ताक़त न हो तो बुरा न मानना। मैं आसानी से उसी तरह उसे तुम्हें सौंप नहीं सकती, जैसे कि तुम मुझे सौंप नहीं सकतीं। मैं अब उतनी जवान नहीं रही, और तुम मुझे छिनाल-विनाल चाहे जो कुछ कहो। मैं कम-से-कम दार्या तो नहीं ही हूँ। इन मामलों में मैंने खिलवाड़ ज़िन्दगी में कभी नहीं किया। तुम्हारे बच्चे हैं, लेकिन मेरे लिए···" अक्सीनिया की आवाज़ काफी भारी और गहरी हो उठी। दुनिया में एक उसी की फ़िक्र करती हूँ मैं! वह मेरी मुहब्बत की पहली और आखिरी यादगार है। लेकिन, हटाओ, उसका ज़िक्र अब न करें। अगर वह जीता-जागता, सही-सलामत वापस आएगा तो अपने-आप चुनाव और फ़ैसला कर लेगा······"

···उस रात नताल्या को नींद नहीं आई। अगले दिन सवेरे वह

इलीनीचिना के साथ तरबूजों की बिनाई के लिए गई और काम में अपना दर्द काफ़ी हद तक भूल गई। बलुही, धूप में सूखी मिट्टी पर जमे हुए हाथों से कुदाल चलाते समय उसे ग्रिगोरी और अकसीनिया की चिन्ता ने इतना नहीं सताया। बीच-बीच में उसने सांस लेने, चेहरे से पसीना पोंछने या एक घूंट पानी पीने को कमर सीधी की।

नीले आसमान के आर-पार हवा से तार-तार बादल लहराते और पिघलाते रहे। सूरज की किरणें झुलसती हुई धरती पर सिर पटकती रहीं। पूर्व की ओर से पानी-भरे बादल पास आते दीखे। हवा की लहरियों पर उतराते बादलों ने जब-जब सूरज को ढँका, नताल्या ने बिना आँखें ऊपर किये भी जैसे सब-कुछ देख लिया। उसकी पीठ हर बार क्षण-भर को ठंडा उठी। उसने एक मटमैली छाया गरम, भूरी धरती और तरबूज़ की बेल के तानों-बानों के ऊपर तेज़ी से फिसलती देखी। छाया ने ढाल पर छितरे तरबूजों, गरमी से खुश्क घास की पत्तियों, हॉथर्न की झाड़ियों और चिड़ियों की बीटों से नहाई गोखरू की उदास पत्तियों पर अकसर ही अपनी चादर तान दी। लवा-पंछियों के कलष से भरे स्वर और तेज़ हो उठे। बुलबुलों के मधुर गीत और साफ़ सुन पड़ने लगे। घास की गरम पत्तियों से छेड़-छाड़ करती हवा में उतनी उमस न रही। एक बार फिर सूरज ने पश्चिम की ओर बढ़ते हुए बादल का, आंखों को चौंधाने वाला, सफ़ेद सिरा भेद दिया और जाल से उभरकर सुनहरी रोशनी की चमचमाती, सुनहरी किरणें धरती पर बरसाने लगा। पीछे भागता बादल कहीं दूर, दोन के किनारे की पहाड़ियों की नीली चोटियों के आस-पास दुबारा धरती पर झुकने लगा। लेकिन, तरबूजों के खेतों में दोपहर की मखमली धूप का ज्वार फिर आया, तरल धुंध काफी, क्षितिज पर नाची और उसके कारण घास से उभरती बू और तीखी हो उठी।

दोपहर के समय नताल्या चोटी के सोते से एक घड़ा, बर्फ़-सा ठंडा पानी ले आई। उसने और उसकी सास ने जी-भर प्यास बुझाई। इलीनीचिना ने रूमाल बिछाकर उस पर बड़ी ही सफ़ाई से रोटी काटी, थैले से चम्मच और प्याला निकाला और अपनी जैकेट

के नीचे से दही की सँकरे मुंह की सुराही निकाली।···

सुराही धूप से बचाने के लिए वहां रख दी गई थी।···

पर, नताल्या ने ढंग से खाया नहीं तो सास ने पूछा—"मैं इधर देख रही हूं कि तुम पता नहीं क्यों, कुछ बदल रही हो।···तुम्हारे और ग्रीशा के बीच कुछ झगड़ा-वगड़ा तो नहीं हो गया ?"

नताल्या के शुष्क होंठों में अजीब ढंग की हरकत हुई—"ग्रीशा, अकसीनिया से फिर मिलने-जुलने लगा है, मां···"

"क्या···कैसे पता तुझे ?"

"मैं कल गई थी उसके यहां···"

"और, उस रंडी ने बात मान ली ?"

"हां।"

इलीनीचिना विचारों में डूबकर चुप हो गई। उसका झुर्रियों से भरा चेहरा गम्भीर हो उठा और होंठों के सिरे फूल-से गए। फिर बोली—"हो सकता है कि यों ही बक रही हो···मौत ले जाए उसे।"

"नहीं, मां, बात सच है···भला वह क्यों···?"

"तुमने ग्रीशा पर नजर नहीं रखी···।" बुढ़िया ने फ़िलहाल समस्या का समाधान निकाला—"ऐसा आदमी हो तो उस पर से तो निगाह धोखे में भी हटानी नहीं चाहिए।"

"लेकिन, उस पर नजर कोई रखे तो रखे कैसे ? मैंने उसके ईमान पर भरोसा किया···मैं क्या उसे अपने ऐप्रन के बंदों में बांध लेती ?" नताल्या कटुता से मुस्कराई और बहुत ही धीरे से बोली—"वह कोई मीशात्का तो है नहीं कि उस पर बच्चों की तरह रोकथाम रखी जाए। सिर के बाल काफ़ी सफ़ेद हो गए हैं, मगर बीती बातें उसे भूलती नहीं हैं···"

इलीनीचिना ने चम्मच धोये और पोंछे, प्याले साफ़ किये, सारे बरतन थैले में भरे और तब झटके से पूछा—"यानी, तुम्हारी मुसीबत सिर्फ़ इतनी है ?"

"तुम भी अजीब हो, मां !···इतनी-सी मुसीबत आदमी की जिन्दगी को बरबाद कर देने के लिए काफ़ी है।"

"और, तुम करना क्या चाहती हो···अब सोच क्या रही हो ?"

"मैं भला कर भी क्या सकती हूँ ? बस बच्चों को लेकर मायके चली जाऊँगी। अब ग्रीशा के साथ रह नहीं सकती। वह ले आये अकसीनिया को और रख ले उसे घर में···काफ़ी भुगत चुकी मैं।"

"मैं जवान थी तो मैंने भी एक बार ऐसा ही सोचा था।" इलीनीचिना ने आह भरते हुए कहा—"मेरा आदमी भी तबीयत से ऐसा ही कुत्ता था···इस बात से बेकार को इन्कार करना क्या ? मैं तुम्हें बतला नहीं सकती कि कितना सहा मैंने ! सिर्फ़ यह है कि अपना आदमी आसानी से छोड़ा नहीं जाता···फिर यह कि उससे फ़ायदा ? तुम और सोच देखो। इसी नतीजे पर पहुँचोगी। फिर, बच्चों को बाप से अलग कैसे कर सकती हो ? नहीं, तुम बकवास कर रही हो···तुम्हें तो यह बात अपने दिमाग़ में भी नहीं लानी चाहिए···मैं यह सब किसी तरह होने नहीं दूंगी।"

"ख़ैर, माँ, मैं उसके साथ अब रहूँगी नहीं···तुम बेकार कोशिश न करो।"···

"बेकार कोशिश मत करो···क्या मतलब तुम्हारा ?" इलीनीचिना बिगड़ गई—"यानी, तुम मेरी बेटी नहीं हो ? तुम्हारा खयाल है कि मुझे तुम लोगों के लिए तकलीफ नहीं है ? और तुम मुझसे, अपनी माँ से, एक बुढ़िया से ऐसी बात कर रही हो ? मैंने तुमसे कह दिया कि ये सारी बातें दिमाग से निकाल दो, और बस ! फु···मैं घर छोड़कर मायके चली जाऊँगी···'लेकिन, कहाँ चली जाओगी ? तुम्हारे मायके में कौन है जो चाहता है तुम्हें ? बाप तुम्हारा रहा नहीं···घर तुम्हारा जलकर राख हो चुका···तुम्हारी माँ किसी और के घर में जा पड़ी है···इस पर भी तुम उसके पास जाने की सोच रही हो और मेरे पोते-पोती को अपने साथ खींच ले जाने की सोच रही हो ? नहीं··· बेटी, यह नहीं होगा। ग्रीशा को आने दो, तब उससे समझा-बूझा जाएगा। लेकिन, इस वक्त तुम इस मामले में मुँह न खोलो···मैं मुँह खोलने नहीं दूंगी···और, अब आगे मैं एक लफ़्ज सुनना नहीं चाहती।"

इस पर नताल्या के अन्तर में संचित सारी वेदना बांध तोड़कर

सिसकियों में ढल चली। उसने एक कराह के साथ सिर का रूमाल चीर डाला, मुंह के बल शुष्क, बेरहम जमीन पर ढह पड़ी और सीना धरती से सटाकर सिसकती रही, सिसकती रही···।

इलीनीचिना होशियार और बहादुर बुढ़िया थी। वह अपनी जगह से टस-से-मस न हुई। जरा देर बाद उसने सुराही में बचे-बचाए दही पर जैकेट लपेटी, उसे छांव में रखा, प्याले में पानी डाला और नताल्या की बग़ल में आ बैठी। वह जानती थी कि दर्द के ऐसे क्षणों में शब्द काम नहीं आते और रो लेने से दिल हलका हो जाता है। इसलिए उसने अपने होंठ सी लिए। नताल्या को जी भर रो लेने दिया और तब उसके सिर पर स्नेह से हाथ फेरती हुई सख्ती से बोली—"चलो···हो चुका! सारे आंसू एक साथ न बहा दो। थोड़े-से कभी और के लिए भी रख लो···लो, एक घूंट पानी पी लो!"

नताल्या शांत हो गई। अब भी उसके कंधे फड़कते और पूरा शरीर कँपकँपाता रहा। पर सहसा ही वह उछलकर खड़ी हुई, उसने इलीनीचिना को धकियाकर एक ओर किया, चेहरा पूर्व की तरफ़ मोड़ा, आंसू से तर हाथ जोड़े और ईश्वर से प्रार्थना करते हुए, सिसकियों के बीच जल्दी-जल्दी चीखी—"हे नीली छतरी वाले, उस आदमी ने मेरी रूह को सड़ाकर रख दिया है। अब मुझमें ताकत नहीं है इस तरह जीने की। हे ऊपर वाले, उसे सज़ा दो···उसको इसके लिए जी भर सज़ा दो! उसकी जान ले लो ताकि न वह और जिये, न मुझे और सताये।"

एक काला बादल पूर्व से रेंगता हुआ आगे-ही-आगे बढ़ा। कौंधा लपका और बिजली कड़की। बादलों के पहाड़ को भेदते हुए, दहकती बिजली ऐंठी और आसमान पर रेंगने लगी। हवा ने मर्मर करती
की पत्तियों को पश्चिम की तरफ़ मोड़ा। रास्ते पर तीखी
और बीजों से बोझिल सूरजमुखी के फूलों की टोपियां धर
उसने नताल्या के बिखरे हुए बाल उड़ाये, उसके
और उसकी कामवाली भूरी स्कर्ट का सिरा

अंधविश्वासी इलीनीचिना जाने कि
और कई क्षणों तक खड़ी अपनी बहू को

हुए काले बादल के साए में खड़ी नताल्या बहुत ही अजीब और भयानक लगी।

फिर बादल भर-भरकर घिरते चले आए। पर, आँधी-पानी के पहले जरा देर तक सन्नाटा रहा। गौरैया का शिकार करनेवाला छोटी जात का एक बाज तिरछे-ही-तिरछे गिरने और मायूसी से चीखने लगा। एक मूस अपने बिल के पास सीटी बजाने लगा। ऐसे में हवा के तेज़ झोंके ने इलीनीचिना के चेहरे पर रेत-भरी धूल उछाली और सरसराती स्तेपी मे निकल गई। बुढ़िया बड़ी कठिनाई से खड़ी रह सकी। उसका चेहरा ज़र्द पड़ गया और वह आने वाले तूफ़ान के हाहाकार के बीच पूरी आवाज से चिल्लाई—"तुम कह क्या रही हो? नीली छतरी वाले की मदद माँग रही हो! किसकी मौत मना रही हो तुम?"

"नीली छतरीवाले, सज़ा दे···तू उसे भरपूर सजा दे!" नताल्या, शान से जमा होते बादलों पर निगाह जमाए चीखी। हवा ने बादलों के पहाड़-के-पहाड़ खड़े कर दिए और बादल बिजली की रोशनी से इस तरह चमचमाने लगे कि आँखें चौंधिया उठीं।

बिजली खुश्क कड़क के साथ स्तेपी में गिरी। इलीनीचिना डर के मारे आपे मे न रही। उसने क्रॉस बनाया, डगमगाते क़दमों से नताल्या की ओर बढ़ी और उसके कंधे का सहारा ले लिया।

"झुको···नीली छतरीवाले के क़दमों में झुको! सुनती हो, नताल्या?"

नताल्या ने अनदेखती आँखों से अपनी सास की तरफ़ देखा और मजबूर होकर घुटनो के बल बैठ गई। इलीनीचिना ने सख्ती से आदेश दिया—"उस नीले आसमान वाले से माफ़ी माँग। भीख माँगो कि वह तेरी अरदास मंजूर न करे। तूने सोचा भी है कि किसके लिए मौत माँग रही है तू? अपने बच्चो के बाप की मौत मना रही है तू? उफ़···यह तो ऐसा गुनाह किया है कि···क्रॉस बना···सिर झुका और कह—'हे नीले आसमान वाले, मेरी बदनीयती के लिए मुझे माफ़ कर! गुनाहगार हूँ'।"

नताल्या ने क्रॉस बनाया, सफेद पड़ गये होंठों से कुछ बुदबुदाकर

कहा और दांत पीसते हुए भद्दे ढंग से एक ओर को मुड़ गई।

× × ×

स्तेपी बरसात की फुहारों से धुलकर ऐसा हरिया उठा, जैसे कि किसी ने जादू कर दिया हो। किसी ने दूर के ताल से ऐन दोन तक इन्द्रधनुष तान दिया। पश्चिम में बिजली अब भी कड़कती रही। पहाड़ी का गंदला पानी नालियों में बहने और हरहराने लगा। पानी की झाग उगलती धाराएँ ढाल और खरबूज-तरबूजों के खेत पार कर नदी की ओर उमड़ चलीं। वे बरसात से झरी पत्तियाँ, जड़-सहित जमीन से उखड़ आई घास और राई की बालें अपने साथ बहा ले चलीं। बालू-मिली बरसाती मिट्टी खरबूजों और तरबूजों की बेलों की नसों के चारों ओर रेंगने लगी। रास्तों पर पानी खुशी से कलकल करने और गहरी-से-गहरी लोकें खरोंचने लगा। दूर घाटी के सिरे पर जमा सूखी घास की टाल में बिजली से आग लग गई तो लपटें दूर से लौ देने लगीं। धुएँ की बकाइनी रेखा ऊंची उठी और क्षितिज पर तने इन्द्रधनुष की चोटी को छूने-छूने को हो गई।

इलीनीचिना और नताल्या गंदी फिसलन से भरी सड़क पर साव-धानी से पैर रखती, अपनी स्कर्टों के सिरे ऊपर उठाती गाँव की ओर बढ़ीं। रास्ते में इलीनीचिना बोली—"नीले आसमानवाला गवाह है कि तुम सब जवान लोग बहुत ही आसानी से हिल उठते हो। कोई मामूली-से-मामूली बात हुई कि तुम्हारा दिमाग बेकाबू और तुम आपे से बाहर। अपनी जवानी के दिनों में जैसे मुझे जीना पड़ा, अगर वैसे तुम्हें दिन काटने पड़ते तो तुम क्या करतीं? इतनी जिन्दगी बीतने को आई, पर ग्रीशा ने कभी तुम्हें उँगली से नहीं छुआ। इस पर भी तुम खुश नहीं हो, और दुनिया-भर की बातें करती फिरती हो! तुमने उसे छोड़ देना चाहा, तुम्हें दौरा पड़ गया और मुझे पता नहीं कि तुमने क्या नहीं किया···तुम तो ऊपर वाले तक को इस झगड़े में खींच लाईं···तो तुम मुझे सिर्फ़ यह बतलाओ कि अच्छा है यह सब? लेकिन, जब मैं जवान थी तो मेरा यही आदमी मारते-मारते मेरी जान निकालकर रख देता था, और सो

भी बेमतलब, बिना किसी बात के। मैं मार खाने के लायक़ ऐसा कुछ भी तो नहीं करती थी। वह खुद बेजा हरक़तें करता और उल्टे अपना सारा गुस्सा मुझ पर उतारता। तड़का होने पर, सवेरे घर लौटता। मैं चीखती-चिल्लाती, लानत-मलामत करती और वह अपनी मुट्ठियों को बरसाने की पूरी आज़ादी दे देता···एक-एक महीने तक मेरा पूरा बदन लोहे की तरह नीला पड़ा रहता···और इस सबके बावजूद मैं जीती रही, मैंने बच्चे पैदा किये और अपने आदमी को छोड़ने या घर से भाग निकलने की बात तक मैंने कभी नहीं सोची। मैं इस वक़्त ग्रीशा की कोई तरफ़दारी नहीं कर रही। लेकिन, इतना है कि इस तरह के आदमी के साथ कम-से-कम तुम रह तो सकती ही हो। अरे, अगर वह नागिन बीच में न होती तो ग्रीशा तो तुम्हें इतना मानता और ऐसा प्यार करता कि बस! उस औरत ने तो उस पर जादू कर रखा है···जादू!"

नताल्या बिसूरते हुए कुछ देर तक चुपचाप चलती रही, और फिर बोली—"मैं अब इस बारे में मुंह नहीं खोलना चाहती, माँ! ग्रिगोरी आ जाए तब देखा जाएगा। हो सकता है कि उस वक़्त मैं अपने-आप घर छोड़कर चली जाऊँ या वह खुद मुझे घर से निकाल बाहर करे। लेकिन, फ़िलहाल मैं कहीं नहीं जाती···जहाँ हूँ वहीं बनी रहूँगी।"

"यही बात तुम्हें बहुत पहले कहनी चाहिए थी।" इलीनीचिना खुशी से खिल उठी—"ऊपर वाला चाहेगा तो सब-कुछ ठीक हो जाएगा। वह तुम्हें घर से नहीं निकालेगा और खुद तुम्हें यह बात सोचनी नहीं चाहिए। वह तुम्हें और बच्चों, दोनों को ही बहुत प्यार करता है। तुम्हारा खयाल है कि वह इस तरह की बात भी दिमाग़ में ला सकता है? नहीं, कभी नहीं। अकसीनया के लिए वह तुम्हें नहीं छोड़ेगा···वह ऐसा कभी नहीं करेगा। और, बेटी, झगड़े तो अच्छे-से-अच्छे घरों में भी होते हैं···अब तो यह है कि वह पहले सही-सलामत घर आ जाए···"

"माँ, मैं नहीं चाहती कि वह मर जाए···वह बात तो गुस्से में मेरे मुंह से निकल गई थी। अब उसके तमाचे बार-बार मेरे चेहरे पर मत मारो···असलियत यह है कि मैं उसे अपने दिल से नहीं निकाल सकती,

मगर यह भी है कि जिन्दगी काटे नहीं कटती।"

"बेटी मेरी, तुम समझती हो कि यह बात मैं जानती नहीं ? मैं सब-कुछ जानती हूँ। चाहती सिर्फ़ यह हूँ कि तुम कोई क़दम जल्दबाज़ी या उतावली में न उठा लो। वैसे, तुम ठीक कहती हो, इस वक़्त इस बात का जिक्र छोड़ ही दें तो अच्छा। एक बात और, आसमानवाले के लिए, बूढ़े से कुछ भी न कहना। इन बातों को उससे क्या लेना-देना !"

"लेकिन एक बात मैं कह दूँ, माँ···फिलहाल यह बात तो साफ़ नहीं है कि आगे मैं ग्रिगोरी के साथ रहूँगी या नहीं रहूँगी, मगर एक बात जरूर है कि उससे बच्चे मैं और नहीं चाहती। जो दो बच्चे सामने हैं, यही बहुत हैं। नहीं जानती कि इन्हीं दो को लेकर कहाँ जाना पड़ेगा और कहाँ नहीं जाना पड़ेगा···मगर, मेरे पैर भारी हैं, माँ···"

"कब से ?"

"तीसरा महीना है।"

"तो, अब छुटकारा कैसे मिलेगा ? अब तो बच्चा होगा ही···तुम चाहो या न चाहो।"

"लेकिन मैं तो बच्चा नहीं होने दूँगी।" नताल्या ने दृढ़ शब्दों में कहा—"मैं आज ही कापीतोनोवना के पास जाऊँगी। वह मेरी मदद करेगी···उसने कितनी ही औरतों की मदद की है।"

"क्या कहा···पेट गिरवाओगी तुम ? बेशर्म कहीं की—तेरे मुँह से यह बात निकली कैसे ?" इलीनीचिना नफ़रत से भरकर सड़क के बीचों-बीच खड़ी हो गई और हाथ पीटने लगी। वह तो आगे कुछ और कहती, मगर इसी समय पीछे किसी गाड़ी के पहिए खड़खड़ाए, घोड़े की टापों से कीचड़ उड़ने की आवाज़ आई और कोई चिल्ला-चिल्लाकर घोड़े को हाँकता सुन पड़ा।

इलीनोचिना और नताल्या सड़क से हटकर एक किनारे हो गईं और उन्होंने अपनी स्कर्टें नीची कर लीं। जरा देर बाद गाड़ी पास आई तो मालूम हुआ कि बूढ़ा बेशलेबनोव खेत से लौट रहा है। वह पास आया तो उसने अपनी तेज, छोटे क़द की घोड़ी की रासें खींचीं। बोला—"गाडी पर आ जाओ तुम दोनों, मैं तुम्हें घर पहुँचा दूँगा।

कीचड़ में पैर खराब करने से कोई फ़ायदा नहीं।"

"शुक्रिया अगेविच, वैसे भी कीचड़ में फिसलते-फिसलते जान ऊब गई।" इलीनीचिना ने खुशी से खिलकर कहा और सबसे पहले खुद उस लम्बी-चौड़ी गाड़ी पर सवार हो गई।

इलीनीचिना ने खाने के बाद नताल्या से बातें करने का इरादा किया कि पेट गिरवाने की ऐसी कोई ज़रूरत नहीं। सो, तश्तरियाँ धोते समय नताल्या को समझाने को एक-से-एक तर्क सोचे और पैन्तेली तक की सहायता लेने के मंसूबे बांधे। सोचा, उससे कहूँगी कि वह काफ़ी दुखी और परेशान है, माना, पर उससे कहो कि वह यह बेहूदा क़दम न उठाए। लेकिन, खास घर के कामों में उलझी ही रही कि बहू तैयार हुई और चल दी।

थोड़ी साँस मिलने पर इलीनीचिना ने दून्या से पूछा—"नताल्या कहाँ है ?"

"वह तो बण्डल साथ लेकर गई है कहीं।"

"कहाँ गई है ? क्या कहा है उसने ? कैसा बण्डल ले गई है साथ ?"

"भला यह सब मैं कहाँ से जानूँ, माँ ? उसने साफ़ स्कर्ट पहनी, कुछ चीज़ें रूमाल में बांधी और मुँह से बिना कुछ कहे चले गई।"

"बदनसीब लड़की।" इलीनीचिना ने कहा, फूट-फूटकर रोने लगी और बेंच पर ढह पड़ी। दून्या के आश्चर्य का ठिकाना न रहा।

"क्या बात है माँ ? तुम आखिर रो क्यों रही हो ?"

"तुम अपना काम करो···तुम्हें इससे कोई मतलब नहीं···लेकिन, नताल्या ने कहा क्या ? और, तुमने उसे कहीं जाने को तैयार होते देखा तो मुझसे कुछ क्यों नहीं बतलाया ?"

दून्या परेशानी से बोली—"उफ़, तुम्हारा भी जवाब नहीं है। अजीब हो तुम। मैं कहाँ से जानती कि मुझे तुम्हें बतलाना चाहिए कि वह कहीं जाने को तैयार हो रही है ? वैसे अपनी माँ से मिलने को गई होगी। मगर, इतनी-सी बात पर तुम रो आखिर क्यों रही हो, यह मैं बिल्कुल नहीं समझी···।"

इलीनीचिना बहुत ही बेचैनी से नताल्या के लौटने की राह देखने लगी और पति की डांट-फटकार के डर से उसने इस मामले में उसके सामने मुंह न खोलने का फैसला किया।

सूर्यास्त के समय ढोर स्तेपी से लौटे। गर्मी का धुंधलका बहुत देर तो रहता नहीं, सो थोड़ी देर बाद खत्म हो गया। गांव में जहां-तहां चिराग चमकने लगे। पर नताल्या नहीं आई। फिर मेलेखोव-परिवार के सभी सदस्य खाने को बैठे तो इलीनीचिना ने प्याज-पड़ी नमकीन लपसी परोसी। इस बीच वह चिन्ता से बिल्कुल पीली पड़ी रही। बूढे ने अपना चम्मच उठाया, बासी रोटी के टुकड़े लपसी में डाले और सभी की ओर उत्सुक दृष्टि से देखते हुए प्रश्न किया—"नताल्या कहां है। उसे खाने के लिए क्यों नहीं बुलाया जाता ?"

"नताल्या कहीं गई है ?" इलीनीचिना ने बुझी हुई आवाज में कहा।

"कहां गई है ?"

"मां से मिलने गई होगी, और फिर वहीं रह गई होगी।"

"उसे इतनी देर बाहर नहीं रहना चाहिए और यह बात खुद ही समझनी चाहिए, वह कोई बच्ची तो है नहीं।" पैन्तेली ने असन्तोष से कहा। खाना उसने सदा की तरह टूटकर खाया। बीच में अपना चम्मच उलटकर रख दिया, बगल में बैठे मीशात्का को कनखी से देखा और बोला—"बेटा, इधर मुड़ो जरा···लाओ, तुम्हारे होंठ पोंछ दूं। तुम्हारी मां को घूमने से फुरसत नहीं है, और तुम्हारी फ़िक्र किसी दूसरे को है नहीं···" और, उसने अपने पोते के नन्हे-नन्हे कोमल, गुलाबी होंठ अपनी बड़ी काली खुरदरी हथेली से पोंछ दिए।

खाना चुपचाप खाने के बाद सभी लोग मेज से उठे तो पैन्तेली ने हुक्म-सा दिया—"बत्ती बुझा दो। घर में तेल बहुत नहीं है। जो है, उसे बरबाद करने के कोई मानी नहीं होते।"

"दरवाजा अन्दर से बन्द कर लूं ?" इलीनीचिना ने पूछा।

"हां कर लो।"

"लेकिन, अगर नताल्या आ गई तो···?"

"तो वह खटखटा लेगी, कौन जानता है, हो सकता है कि सुबह तक घूमती ही रहे। अच्छा तरीका सीखा है!···बुढ़ी, तूने उसे बहुत खुद-मुख्तार बना दिया है। रात में लोगों से मिलने की बात दिमाग़ में उठी है अब···मैं कल सवेरे खुद कह दूंगा उससे कि उसने दार्या के रास्ते पर क़दम रखना शुरू किया है···।"

इलीनीचिना कपड़े पहने-ही-पहने लेट गई और आधे घंटे तक आहें भरती और करवटें बदलती रही। फिर उठने और उठकर कापीतोनोवना के यहां जाने को हुई कि उसे पैरों की आहट मिली। बुढ़िया उस उम्र पर भी ग़ैर-मामूली फुर्ती से उठी, तेजी से गलियारे में आई और दरवाजा खोला।

नताल्या जंगले का सहारा लेती, बहुत ही धीरे-धीरे सीढ़ियों पर चढ़ती दीखी। चांदनी में उसका चेहरा एकदम पीला, गाल बिल्कुल बैठे हुए, आंखें धँसी हुई और भौंहें दर्द से बुनी लगीं। वह हर क़दम पर चोट खाए जानवर की तरह कांपी और जहां भी पैर रखा, वहीं खून का गहरा निशान छोड़ दिया।

इलीनीचिना ने, बिना कुछ कहे, नताल्या की कमर में हाथ डाला और उसे बरसाती में ले आई। नताल्या ने दरवाजे से पीठ टिकाई और भर्राए हुए गले से पूछा—"सब लोग सो गए? मां, पीछे जगह-जगह खून गिरा है, ज़रा साफ़ कर दो···"

"यह तुमने अपना हाल क्या किया है?" इलीनीचिना ने अपनी सिसकियां दबाते हुए, फुसफुसाते हुए कहा।

नताल्या ने मुस्कराने की कोशिश की, पर सहसा ही पीड़ा से उसका चेहरा बिगड़ गया।

"मां, रोओ नहीं, वरना घर के लोग जाग जाएँगे···हां मुझे उस मुसीबत से छुटकारा मिल गया···और मन का बोझ उतर गया···सिर्फ़ यह है कि खून बहुत जा रहा है···ऐसा लगता है जैसे किसी ने चाकू से काट दिया हो···ज़रा हाथ का सहारा देना, मां···सिर चक्कर खा रहा है।"

इलीनीचिना ने अंदर से दरवाजा बंद किया और फिर जैसे कि

किसी अजनबी पर में हो, बहुत देर तक अँधेरे में टटोलने के बाद भी अंदर के दरवाज़े का हत्था नहीं ढूंढ़ सकी। आखिरकार पंजे के बल नताल्या को बड़े सोने के कमरे में ले आई। फिर दून्या को जगाकर बाहर भेजा, दार्या को आवाज़ दी और लैम्प जलाया।

बावर्चीखाने वाले खुले दरवाज़े से पॅन्तेली के खर्राटों की तेज़ आवाज़ आती रही। नन्ही-मुन्नी पोल्युश्का बड़े ही प्यारे ढंग से होंठ चटकारती और नींद में जाने क्या-क्या बुदबुदाती रही। बच्चे की नींद तो बड़ी ही गहरी, और हर तरह के विघ्न से मुक्त होती है न।···

इस बीच इलीनीचिना तकिया झाड़ने और बिस्तर ठीक करने लगी तो नताल्या पास की बेंच पर बैठ गई और कमज़ोरी के कारण अपना सिर मेज़ के सिरे से टिका दिया। दून्या ने कमरे में आना चाहा, मगर इलीनीचिना ने उसे रोक दिया। सख्ती से बोली—"बेशर्म कहीं की···जा यहां से···तुझे यहां आने और हर जाने-अनजाने मामले में अपनी टांग अड़ाने की ज़रूरत नहीं।"

दार्या ने भौंहें चढ़ाते हुए एक भीगा हुआ कपड़ा लिया और बरसाती में आई। नताल्या ने बड़े ही कष्ट से सिर ऊपर उठाया और बोली—"साफ़ चादर नीचे से हटा लो···खराब हो जाएगी···उसकी जगह पलंग पर बोरे का एक टुकड़ा डाल दो।"

"बेकार बातें बंद करो।" इलीनीचिना ने आदेश के स्वर में कहा—"कपड़े उतारो और लेट रहो।···तबीयत बहुत गिर रही है? थोड़ा पानी ले आऊं?"

"बेतहाशा कमज़ोरी महसूस हो रही है···ज़रा एक दूसरी कमीज़ और पानी ले आओ···"

नताल्या जैसे-तैसे उठी और डगमगाते क़दमों से पलंग की तरफ़ बढ़ी। सिर्फ़ इस समय इलीनीचिना ने देखा कि उसकी स्कर्ट खून से तर है और उसके पैरों के चारों ओर लिपटी हुई है।

सास ने भय और आशंका से भरी दृष्टि से बहू को देखा। बहू ने अपनी स्कर्ट का सिरा यों झटकारा जैसे कि पानी में भीगती रही हो, और फिर स्कर्ट उतारने लगी।

"लेकिन, तुम तो खून में नहा रही हो।" इलीनीचिना ने सिसकी भरते हुए कहा।

नताल्या ने कपड़े उतारकर आँखें बंद कर लीं, और तेज़ी से, ज़ोर-ज़ोर से साँसें लेने लगी। बुढ़िया ने उस पर एक भरपूर नज़र डाली, मन-ही-मन कुछ फ़ैसला किया, बावर्चीखाने में दाखिल हुई, बड़ी ही कशमकश के बाद किसी तरह पैन्तेली को जगाया और बोली—"नताल्या की तबीयत खराब है···हालत खराब है··· मरने-मरने को हो रही है··· तुम 'गाड़ी जोतो और व्येशेन्स्काया जाकर फ़ौरन डॉक्टर को लिवा लाओ।"

"क्या खुशखबरी सुनाई है आकर? क्या हुआ उसे? क्या तबियत खराब है? उससे कहो कि रातों को जहाँ-तहाँ मँडराना बंद करे।"

बुढ़िया ने संक्षेप में पूरी दास्तान सुनाई। पैन्तेली आवेश में झटके से खड़ा हो गया और पतलून के बटन बंद करते हुए सोने के कमरे की तरफ़ बढ़ा—"उफ़···तू कमीनी···छिनाल कहीं की··· कुतिया की बच्ची···यह क्या किया है तूने? ज़रूरत से मजबूर हो गई बेचारी! खैर, मैं दिमाग़ ठीक करता हूँ अभी···"

"ऐसी-तैसी में जाओ···तुम बिल्कुल पागल हो गए क्या? वहाँ मत जाओ···वहाँ तुम्हारी कोई ज़रूरत नहीं···और चिल्लाओ मत। बच्चे जाग जाएंगे···तुम तो अहाते में जाकर गाड़ी जोतो फ़ौरन!" इलीनीचिना ने बूढ़े को रोकने की कोशिश की। पर बूढ़े ने एक नहीं सुनी, सोने के कमरे के पास पहुँचा, ठोकर से दरवाज़ा भड़ाक से मारा और ड्योढ़ी पर ठिठककर गरजा—"खूब काम किया है तूने! शैतान की बच्ची कहीं की!"

"यहाँ न आओ, पापा, तुम ईसा के लिए यहाँ न आओ!" नताल्या पूरी ताक़त से चीखी। उसने पास रखी समीज़ से सीना ढँक लिया।

पैन्तेली ने जीभर गालियाँ देने के बाद अपना कोट, टोप और साज तलाशना शुरू किया। मगर, इस काम में उसे इतनी देर लगी कि दून्या आपे से बाहर हो गई, बावर्चीखाने में भागी आई और रोते हुए अपने पिता पर बरसने लगी—"तुम गाड़ी लेकर फ़ौरन जाते क्यों नहीं?

वहाँ क्या नखोरा-तन्वारी कर रहे हो ? नताल्या का दम निकल रहा है और तुम्हें एक घण्टा तैयारी में लग रहा है ! और, तुम अपने को बाप कहते हो ! अगर नहीं जाना चाहते तो साफ़-साफ़ कह क्यों नहीं देते । मैं खुद गाड़ी लेकर व्येशेन्स्काया चली जाऊँगी ।"

"तुम बेवकूफ़ हो । इधर-उधर दौड़ती क्या फिर रही हो ? तुमसे हुक्म लेने कौन जा रहा है···यह लो···उन्हीं में से एक यह भी निकली ···अपने बाप को ही आँखें दिखला रही है, बदतमीज कहीं की ।" पैन्तेली ने कोट लपेटा और मन-ही-मन कोसा-काशी करता अहाते में आया ।···

उसके जाने के बाद घर के वातावरण का तनाव थोड़ा कम हुआ । दार्या ने, कुर्सियाँ और बेंचें, बेरहमी से इधर-उधर हटाते हुए फ़र्श धोया । इलीनीचिना ने दून्या को सोने के कमरे में आने की इजाजत दे दी । लड़की आई और नताल्या के सिरहाने बैठकर तकिया ठीक करने और उसे पानी पिलाने लगी । इलीनीचिना बीच-बीच में उठकर बगल के कमरे में सोते बच्चों को झाँक आई । फिर नताल्या को एकटक देखती रही । नताल्या हथेली पर गाल टिकाए चुपचाप लेटी रही । उसका सिर बुरी तरह काँपता रहा । पसीने से तर, एक-दूसरे से उलझे हुए बाल तकिये-भर में फैले रहे । हर आधे घण्टे पर इलीनीचिना ने उसे धीरे से उठाया, गीली चादर हटाई और साफ़ मलमल बिछा दी । पर नताल्या की ताक़त बराबर घटती गई । आधी रात के ज़रा बाद उसने अपनी आँखें खोलीं और पूछा—"सवेरा जल्दी ही होगा न ?"

"अभी तो कोई निशान नजर नहीं आता ।" बुढ़िया ने उसे धीरज बँधाया, पर मन-ही-मन सोचा—'इसका मतलब यह है कि अब यह बचेगी नहीं । डर ही रही है कि कहीं ऐसा न हो कि बच्चों को देख भी न पाए और दम निकल जाए ।"

और, जैसे कि सास के अनुमान की पुष्टि करने के लिए ही नताल्या ने धीरे से कहा—"माँ, मीशात्का और पोल्युशका को जगा दो ।"

"बेटी, बच्चों को परेशान करना क्यों चाहती हो ? आधी रात में उनकी नींद खराब करना क्यों चाहती हो ? वे तुम्हें इस हालत में देखेंगे

तो डर जाएँगे···रोने लगेंगे। बेकार को क्यों जगाना चाहती हो उन्हें ?"

"मै बच्चों को देखना चाहती हूँ···मेरी हालत बिगड़ रही है।"

"नीले आसमान वाला रहम करे···तुम कह क्या रही हो ? ग्रिगोरी के पापा डॉक्टर को लेकर आते ही हैं···और डॉक्टर के आते ही तुम ठीक हो जाओगी···तब तक थोड़ा सोने की कोशिश करो, क्यों ?"

"कहाँ से सोने की कोशिश करूँ ?" नताल्या ने क्रोध-भरी आवाज में जवाब दिया। इसके बाद कुछ देर तक वह कुछ नहीं बोली और उसकी साँस और ढंग से चलने लगी। अब इलीनीचिना चुपचाप सीढ़ियों पर निकल आई और सुबक-सुबककर रोने लगी। फिर, उषा के प्रकाश की पहली किरणें आसमान में छिटकने तक वह वहीं उसी हालत में बनी रही। इसके बाद लौटी तो उसका चेहरा लाल और रोने के कारण सूना रहा। और, जब दरवाजा चरमराया तो नताल्या ने आँखें खोल दीं।

"सवेरा अब जल्दी ही होगा न ?"

"उजियाला छिटकने लगा है।"

"मेरे पैर भेड़ की खाल से ढँक दो।"

दून्या ने भेड़ की खाल उसके पैरों पर डाल दी और कम्बल अगल-बगल दबा दिया। नताल्या ने उसकी ओर देखकर उसे धन्यवाद दिया, इलीनीचिना को और पास बुलाया और बोली—"माँ, आओ, मेरे पास बैठो जरा और दून्या, तुम दार्‌या को लेकर थोड़ी देर के लिए बाहर चली जाओ···मैं माँ से अकेले में कुछ बातें करना चाहती हूँ। चली गईं दोनों ?" नताल्या ने आँखें मूँदे-ही-मूँदे पूछा।

"हाँ, चली गईं।"

"पापा नहीं लौटे अभी तक ?"

"आते ही होंगे···क्यों, क्या तबीयत कुछ ज्यादा खराब मालूम होती है ?"

"नहीं···कोई बात नहीं···माँ, मैं तुमसे कहना यह चाहती थी कि मैं जल्दी ही मर जाऊँगी। मेरा दिल कहता है। बदन से इतना खून निकल गया है कि हद है। दार्‌या से कहो कि स्टोव जलाए तो खूब

सारा पानी गरम कर दे···श्रौर, पानी गरम हो जाए तो तुम खुद मुझे नहला देना, मैं नहीं चाहती कि किसी श्रौर···"

"नताल्या, क्रॉस बनाश्रो, बेटी ! तुम मरने-जीने की बात क्यों कर रही हो भला ? ऊपर वाला बड़ा रहमदिल है। तुम श्रच्छी हो जाश्रोगी।"

नताल्या ने कमज़ोर हाथों से सास को चुप रहने का संकेत दिया श्रौर बोली—"मेरी बात न काटो···बोलने में बहुत तकलीफ़ होती है···फ़िलहाल···मेरा सिर बुरी तरह चक्कर खा रहा है। मैंने तुमसे पानी के बारे में कह दिया न। कापीतोनोवना ने तो मेरे पहुंचने के बाद ही सब-कुछ कर दिया। लेकिन बाद में तो बेचारी के हाथ ही उड़ गए···इतना खून निकला, इतना खून निकला कि बस !···काश कि श्राज की सुबह जैसे-तैसे निकल जाती ! खूब सारा पानी गरम करवाना, मैं चाहती हूं कि मेरा दम निकले तो मैं बिल्कुल साफ़ रहूं···मां, फिर मुझे किनारों पर कसीदेकारी वाली वह हरी स्कर्ट पहना देना···ग्रीशा को मेरे बदन पर वह बहुत श्रच्छी लगती है···श्रौर पॉपलीन की जैकेट भी निकाल लेना ··· बक्से में ऊपर ही रखी है, शाल के बिल्कुल नीचे, कोने में··· हां, मेरे मर जाने पर चाहना तो बच्चों को मेरे मायके लोगों के पास भेज देना··· श्रौर सुनो, मेरी मां को बुलवा लो···कहलवा दो कि फ़ौरन ही श्रा जाए···श्राखिरी वक़्त उससे रुखसत तो हो लूं···नीचे से चादर निकाल लो···बुरी तरह तर हो गई है···"

इलीनीचिना ने पीठ को हाथ का सहारा देकर नताल्या को उठाया, खून से गीली चादर निकाली श्रौर किसी तरह दूसरी चादर बिछाई। नताल्या ने बड़ी कठिनाई से, बहुत ही धीरे से कहा—"मुझे करवट के बल कर दो।" श्रौर, फिर बेहोश हो गई।···

रुपहली-भूरी सुबह खिड़की से झांकी। दून्या ने एक बाल्टी धोई श्रौर गाएँ दुहने के लिए श्रहाते में श्राई। इलीनीचिना ने खिड़की पूरी खोल दी तो खून श्रौर पैराफ़िन की बास गरमी की सुबह के समीर के झोंकों की गहरी तरी से ताज़ा हो उठी। हवा, खिड़की के बाहर की, चेरी के पत्तियों के श्रोस के श्रांसू कहीं दूर उड़ा ले गई। चिड़ियों के पहले

गीत, गायों की डकार और चरवाहे के चाबुक की चटकार खिड़की से कमरे में आई।

नताल्या ने आँखें खोली, अपने पीले, रक्तहीन होंठ जीभ के सिरे से चाटे और पीने को पानी माँगा। अब अपने बच्चों या माँ को नहीं पूछा। उसके आसपास की हर चीज उसकी निगाहों से सरकने लगी और हमेशा-हमेशा के लिए सरकने लगी।

इलीनीचिना ने खिड़की बन्द की और चारपाई के पास पहुँची।

इस एक रात में ही नताल्या कितनी बदल गई थी! अभी कल ही तो ऐसी थी जैसे सेब का पेड़ अपनी पूरी बहार पर···हसीन, तन्दुरुस्त और ताक़त से भरपूर। पर, इस समय उसके गाल दोन के किनारे की पहाड़ी की खड़िया से ज्यादा सफ़ेद थे। नाक की नोक उभर आई थी। होंठों की चमक और ताजगी खत्म हो गई थी। वे और पतले पड़ गये थे और दाँतों से पीछे-ही-पीछे हटते मालूम होते थे। सिर्फ़ आँखों की चमक ज्यों-की-त्यों थी। पर भाव उनका भी बदल गया था। अब बीच-बीच में किसी अनजानी मजबूरी से नताल्या अपनी निलछरी पलकें उठाती, चारों ओर देखती और फिर निगाह क्षण-भर को सास पर टिका देती तो आँखों में एक नया अजनबीपन और घबराहट लहरें लेती नजर आती।···

···पैन्तेली सूर्योदय के समय लौटा। कई-कई रातों के जागरण और टाइफ़स और दूसरी बीमारियों के इलाज। अकूत परेशानी से भारी और कड़वी आँखों वाले डॉक्टर ने अपना बदन सीधा किया, कूदकर गाड़ी से नीचे आया, सीट के नीचे से एक बंडल निकाला और घर के अन्दर दाखिल हुआ। सीढ़ियों पर उसने किरमिच की अपनी बरसाती उतारी और जंगले पर झुककर बहुत देर तक हाथ साफ़ किये। दून्या ने उसके हाथों पर पानी डाला तो उसने नीची पलकें किये-ही-किये उसे देखा और आँख तक मारी। इसके बाद उसने कोई दस मिनट तक नताल्या को देखा; और पहले तो सबको कमरे से बाहर कर दिया।

पैन्तेली और इलीनीचिना बाहर निकलकर बावर्चीखाने की ओर बढ़े तो बूढ़े ने पत्नी से फुसफुसाते हुए पूछा—"क्यों, कैसी है नताल्या?"

"हालत बिगड़ती जा रही है···"

"यह पेट उसने अपने मन से गिरवाया?"

"बिलकुल अपने मन से!" इलीनीचिना ने सवाल टालने की कोशिश की।

"गरम पानी लाओ···जल्दी!" डॉक्टर ने अपना सिर दरवाज़े से बाहर निकालते हुए कहा। फिर पानी गरम होता रहा कि वह बावर्ची-खाने में आ गया और बूढ़े के सवाल के जवाब में हाथ हिलाते हुए बोला—"दोपहर के खाने के वक़्त तक खत्म हो जाएगी। खून बहुत निकल गया है। कुछ नहीं हो सकता। ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच को पैग़ाम भेज दिया या नहीं?"

पैन्तेली जवाब दिये बिना, बरसाती में आया। दार्‌या के देखते-देखते बूढ़ा शेड के नीचे होता हुआ कटाई की मशीन के पास पहुँचा और कंडों की टाल से सिर टिकाकर फूट-फूटकर रोने लगा।

डॉक्टर आधे घन्टे तक घर में और रहा। बीच में वह सीढ़ियों पर बैठ गया और थोड़ी देर तक ऊँघता रहा। फिर जब समोवार उबलने लगा तो सोने के कमरे में वापस जाकर उसने नताल्या को कैम्फ़र की सुई लगाई, बाहर आया, दूध माँगा, आती जम्हाई को टाला, पूरे दो गिलास दूध पिया और बोला—"मुझे फ़ौरन वापस पहुँचाओ। व्येशेन्स्काया में जाने कितने बीमार और जख्मी मेरा इन्तज़ार कर रहे हैं, और यहाँ मेरे करने को अब कुछ है नहीं। ऐसे मरीज़ के बचने की अब कोई उम्मीद नहीं है। वैसे मामला ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच का है। और मैं करना क्या नहीं चाहूँगा! पर साफ़ बात यह है कि मेरे बस का अब कुछ है नहीं। कभी-कभी हम ऐसे मजबूर हो जाते हैं कि लाख चाहने पर भी कुछ नहीं कर सकते। हमारे पास बीमारी का तो इलाज है, पर मौत का कोई इलाज नहीं है। और तुम्हारी इस बहू के बदन से खून इतना बह गया है कि अब जीने के लिए इसमें कुछ बचा नहीं है···बच्चेदानी बुरी तरह फट गई है···उसमें दम बाकी नहीं है। मेरे खयाल से बुढ़िया ने लोहे के हुक से काम लिया है। हम सब नीम-हकीम खतरयेजान हैं, और शायद हमेशा यही बने रहेंगे।"

पैन्तेली ने तारान्तास में सूखी घास डाली और दार्या से कहा—"तुम डॉक्टर को पहुँचा आओ। और देखो, नदी पर पहुँचना तो घोड़ी को पानी पिलाना न भूलना।" फिर उसने डॉक्टर को फ़ीस देनी चाही, पर उसने साफ़ इन्कार कर दिया—"यह आप कह क्या रहे हैं? आपको शर्म नही आती, पैन्तेली-प्रोकोफ़ियेविच! आप सब अपने लोग हैं और आप मुझे रूबल दिखला रहे है! नही, अपने यह रूबल अपने पास रखिये! आपको तो इसका खयाल भी नहीं आना चाहिये। अगर मैं आपकी बहू को बिस्तर से उठाकर खड़ा कर देता तो दूसरी बात होती। मगर ऐसे मे···"

मगर सवेरे के छः बजे नताल्या की हालत बहुत अच्छी लगी। उसने मुँह-हाथ धोया, दून्या शीशा लेकर सामने खड़ी हो गई तो उसने उसमें देख-देखकर बाल बाए और चारों तरफ़ नजर दौड़ाई। अपनों को आसपास देखकर उसकी आँखें खुशी से खिल उठी। बोली—"देखो, अब मैं पहले से कही अच्छी हूँ। वैसे मैं तो बहुत डर गई थी। मुझे लगा कि मैं तो गई···लेकिन, बच्चे अब तक सो क्यों रहे हैं? दून्या, जरा देखो तो कि अब तक जागे या नही?"

इसी बीच नताल्या की माँ, उसकी छोटी बहन एग्रीपीना के साथ आ गई और बेटी को देखते ही फूट-फूटकर रोने लगी। परन्तु नताल्या ने बार-बार खीझकर टोका—"माँ, तुम इस तरह रो क्यों रही हो? मेरी हालत अब उतनी खराब नही है···तुम मुझे दफ़नाने के इरादे से तो नही आई हो न?···उफ़, आखिर बतलाओ न कि तुम इस तरह रो क्यों रही हो?"

एग्रीपीना ने अपनी माँ को कुहनी मारी। लुकिनीचना ने कारण समझकर जल्दी से अपनी पलकें पोछ डालीं और धीरज-भरे स्वर में बोली—"अरे, तुम सोच क्या गईं, बेटी? मैं तो रो रही थी, क्योंकि मै खासी बेअक्ल हूँ। मुन्नी! तुम्हें देखते ही मेरा दिल एकाएक भर आया। कितनी बदल गई हो तुम!"

फिर मीशात्का की आवाज़ और पोल्युशका की हँसी सुनते ही नताल्या के गालों पर हलकी-सी लाली दौड़ गई। बोली—"यहाँ ले

आओ दोनों को। जल्दी बुला लो। ये कपड़े पीछे पहन लेंगे।"

पोल्युशका पहले आई, दरवाजे पर ठिठकी और अपनी नन्हीं-मुन्नी मुट्ठियों से नींद-भरी आँखें मलने लगी। नताल्या ने मुस्कराते हुए कहा—"देख तेरी माँ बीमार हो गई है···यहाँ आ जा मेरी रानी!"

पोल्युशका ने गम्भीरता से बेंचों पर बैठे बड़े-बूढ़ों को आश्चर्य से देखा, माँ के पास गई और परेशान होकर बोली—"तुमने मुझे जगाया क्यों नहीं? और ये इतने सारे लोग यहाँ क्यों आए हैं?"

"ये लोग मुझे देखने आए हैं···लेकिन, तुम्हें जगाती मैं क्यों? तुम क्या करतीं?"

"मैं तुम्हारे लिए पानी ले आती और तुम्हारे पास बैठती···"

"अच्छा अब जाओ। मुंह-हाथ धोओ, बाल बाओ, नीले आसमान वाले को सिर झुकाओ और फिर आकर यहाँ, मेरे पास बैठो।"

"लेकिन, तुम नाश्ते के लिए तो उठोगी न?"

"नहीं जानती···शायद नहीं उठूंगी।"

"अच्छा तो तुम्हारा नाश्ता मैं यहाँ ले आऊँगी···ठीक है न, माँ?"

"बिल्कुल अपने बाप की नक़ल है···सिर्फ़ दिल उसका जैसा नहीं है···इसका दिल कहीं ज्यादा मुलायम है···" नताल्या ने हलके से मुस्कराते हुए कहा, सिर फिर तकिये पर रख लिया और कम्बल पैरों तक इस तरह खींच लिया, जैसे कि बड़ी ठंड लग रही हो।···

लेकिन एक घण्टे के बाद नताल्या की हालत और गिर गई। उसने बच्चों को पास बुलाया, उन्हें सीने से लगाया, उन पर रक्षा का क्रास बनाया, चूमा और अपनी माँ से बोली—"माँ, इन्हें ले जाओ यहाँ से।"

लुकीनीचना ने बच्चों को एग्रीपीना को सौंपा और अपनी बड़ी बेटी के पास बनी रही।

नताल्या ने अपनी आँखें मूंद लीं और जैसे कि सन्निपात की स्थिति में बोली—"यानी मैं अब उसे नहीं देख पाऊँगी···" और फिर जैसे कुछ याद हो आया। उसने झटके से अपना सिर ऊपर उठाया और कहने लगी—"ज़रा मीशात्का को ले आओ यहाँ।···"

एग्नोपीना का चेहरा आँसुओं से तर हो गया। उसने लड़के को कमरे में कर दिया और खुद बावर्चीखाने में चुपचाप सिसकती रही।

मीशात्का की आँखों में उदासी घुलने लगी। वह डरते हुए माँ के पलंग की ओर बढ़ा। पर, चेहरे के एकदम बदल जाने के कारण माँ उसे एकदम अजनबी लगी, और जैसे कि उसे मुश्किल से पहचान पाया। नताल्या ने बेटे को पास खींच लिया तो उसे उसका दिल, जाल में फँसी गौरैया के दिल की तरह, ज़ोर-ज़ोर से उछलता लगा। बोली—"नीचे झुको ज़रा, मुन्ने बेटे! और पास आओ!"

इसके बाद उसने बच्चे के कान में कुछ धीरे से कहा, फिर उसे पीछे हटाया। सवाल-भरी निगाहों से उसकी आँखों में आँखें डालीं, और दर्द से टूटने पर भी मुस्कराते हुए पूछा—"बेटे, भूलोगे तो नहीं न! कह दोगे न पापा से?"

"नहीं, मैं नहीं भूलूंगा।" मीशात्का ने माँ की छिगुलिया कसकर पकड़ी। उसे अपनी नन्हीं, गरम मुट्ठी में क्षण-भर दबाये रहा और फिर हाथ छोड़ दिया। फिर, न जाने क्यों, हाथों से अपने को साधते हुए, पंजों के बल पीछे हटा।

नताल्या ने उसे दरवाज़े तक जाते देखा और इसके बाद चुपचाप दीवार की तरफ़ मुड़ गई।

दोपहर को उसका दम निकल गया।

: १७ :

ग्रिगोरी को मोर्चे से गाँव पहुँचने में दो दिन लगे, और इस बीच न जाने कितने तरह के विचार उसके दिमाग़ में आए, न जाने कितनी बातों का उसे खयाल आया। चलते समय उसे डर लगा कि स्तेपी के इस लम्बे-चौड़े पसारे में इस वेदना के साथ वह अकेला रह जाएगा और रह-रहकर उसे नताल्या का ही ध्यान आएगा। अतएव, उसने प्रोखोर-जिकोव को साथ ले लिया, और अपनी स्क्वैड्रन के पड़ाव वाले गाँव से बाहर निकलते ही लड़ाई की दास्तान छेड़ दी। पूरी कहानी सुना गया कि ऑस्ट्रियाई मोर्चे पर बारहवीं रेजीमेंट में रहकर उसने

किस तरह और कितना काम किया। कैसे रूमानिया में प्रवेश किया और कैसे जर्मनों को मुंह की दी। यानी वह बेरोक-टोक बराबर बातें करता गया। इस सिलसिले में उसने अपनी रेजीमेंट के साथियों के कई बार फँस जाने का भी ज़िक्र किया। कई बार तो वह हँसा भी···।

ग्रिगोरी की यह वाचालता भोले-भाले प्रोखोर-जिकोव को पहले तो बहुत ही असाधारण लगी और आश्चर्य से भरकर उसने उसे कई बार कनखी से देखा। उसे लगा कि ग्रिगोरी काफ़ी परेशान है और इस तरह थोती बातें कर उस परेशानी से छुटकारा पाना चाहता है—शायद इसीलिए जल्दी न होने पर भी कोशिश कर बातचीत खींचता जा रहा है। यही नहीं, ग्रिगोरी ने चेरनीगोव-अस्पताल में अपने रहने की चर्चा की और प्रोखोर ने उसे तिरछी नजर से देखा तो, उसे उसके साँवले गालों पर आँसू बहते नजर आए। इस पर प्रोखोर आदर के कारण कुछ क़दम पीछे हो गया और कोई आधे घंटे तक उसने अपना घोड़ा ग्रिगोरी के घोड़े के पीछे रखा। इसके बाद वह फिर उसके बराबर आया और यों ही किसी विषय पर बातें करने लगा। लेकिन ग्रिगोरी ने उसमें कोई दिलचस्पी नहीं ली और दोपहर तक वे दोनों अग़ल-बग़ल चुपचाप मंज़िल तय करते रहे।

ग्रिगोरी ने जल्दी-से-जल्दी घर पहुँचने के लिए, गरमी के बावजूद घोड़े को पहले तेज़ दुलकी में डाला, फिर सरपट दौड़ाया और सिर्फ़ बीच-बीच में ही रासें खींचकर क़दम चाल में आने दिया। फिर, आग बरसाती किरणों के ठीक सिर पर पड़ने पर ही उसने घोड़ा रोका, उस पर से काठी उतारी और चरने के लिए छोड़ा। वह खुद छाँव में गया, चेहरा नीचे कर ज़मीन पर पड़ रहा और गरमी घटने तक उसी हालत में बना रहा।

···घोड़ों को एक बार जई दी गई, पर ग्रिगोरी ने दाना देने के सही वक्त का कोई खास ख़याल न रखा। नतीजा यह कि लम्बी मंज़िलों का अभ्यास होने पर भी पहले दिन की शाम तक उनके पेट धँस गए और उनकी चाल में सुबह वाली बात न रह गई। प्रोखोर ने खीझकर सोचा—'हम घोड़ों को चौपट करने का रास्ता क़ायदे से अपना

रहे है। कौन सवारी करता है इस तरह ? इस शैतान के लिए तो यह तरीका भी ठीक ही है। यह अपना घोड़ा जबरदस्ती इस तरह दौड़ा रहा है तो दौड़ाए। यह तो जब चाहेगा, इसे दूसरा जानवर मिल जाएगा। लेकिन मुझे दूसरा घोड़ा कहाँ मिलेगा ? और अगर हम इसी तरह इन जानवरों को तावड़तोड़ भगाते रहे तो ये तो मरे समझो। उसके बाद बाक़ी रास्ता या तो पैदल पार करना पड़ेगा या कोई गाड़ी किराए पर लेनी पड़ेगी।'

अगले दिन सवेरे उससे चुप न रहा गया और वह आखिरकार ग्रिगोरी से बोला—"कोई तुम्हें इस तरह देखेगा तो यही समझेगा कि तुमने घोड़ा कभी रखा नहीं है। कौन दौड़ाता है घोड़ा इस तरह दिन-रात बिना सांस लिये ? देखो तो, जानवर थकान से किस तरह चूर हो गए है ! जो भी हो, अब शाम को इन्हें क़ायदे से खिलाना चाहिए।"

"बढ़ाए चलो···घोड़ा पीछे न रहे।" ग्रिगोरी ने अन्यमनस्कता से उत्तर दिया।

"मैं तुम्हारे बराबर से नहीं चल सकता। मेरा घोड़ा अधमरा हो गया है। क्यों न थोड़ा-सा आराम कर लें ?"

ग्रिगोरी ने कोई उत्तर नहीं दिया। आधे घंटे तक वे चुपचाप घोड़ों को दुलकी दौड़ाते रहे। पर उसके बाद प्रोखोर ने दृढ़ स्वर में कहा—"आओ जानवरों को ज़रा-सी सांस दे दें। मैं इस तरह अब एक क़दम आगे नहीं बढ़ूंगा। सुना तुमने ?"

"चाबुक जमाओ···चाबुक।"

"लेकिन, आखिर हम कब तक चाबुक जमाते जाएँगे ? यानी जब तक कि घोड़े टाँगें नहीं फैला देंगे ?"

"बेकार ज़बान मत लड़ाओ।"

"रहम करो, ग्रिगोरी-पैन्तेलेयेविच, रहम करो। मैं तुम्हारे मुँह लगना नहीं चाहता, मगर सूरत ही ऐसी हो गई है।"

"ऐसी-तैसी में जाओ तुम। वैसे रुकना ही चाहते हो तो घोड़ा रोक लो और देखो कि अच्छी घास कहाँ है।"

आदमी तार लिये ग्रिगोरी की तलाश में गोपर क्षेत्र में सभी जिले में झाता फिरा। इसीलिए तार देर में मिला, और यही वजह है कि ग्रिगोरी, नताल्या के दफ़नाए जाने के तीन दिन बाद गांव पहुंचा। घर पहुंचने पर वह छोटे फाटक के पास घोड़े से उतरा। दून्या बाहर भागी आई और फूट-फूटकर रोने लगी। ग्रिगोरी ने उसे हृदय से लगाया और भौंहें चढ़ाकर बोला—"घोड़े को जरा मजे से फिरा दो···टसुए बहाना बन्द करो।" फिर प्रोखोर की तरफ़ मुड़ा—"तुम अपने घर जाओ···जरूरत होगी तो कहला दूंगा।"

और, इसी बीच बेटे की अगवानी के लिए मीशात्का और पोल्युशका के हाथ पकड़े इलीनीचिना बाहर आ गई।

ग्रिगोरी ने झपटकर बच्चों को बांहों में भर लिया और कांपती हुई आवाज में बोला—"अच्छा, अब रोओ नहीं। आंसू पोंछो, प्यारे बच्चो! तो, तुम बिना मां के हो गए? यानी···यानी, तुम्हारी मां हम लोगों को बीच में छोड़कर चली गई···"

परन्तु ग्रिगोरी घर में घुसा और उसने पिता का अभिवादन किया, तो उसके भी आंसू गले में आ-आकर फँसने लगे।

"हम नताल्या को किसी तरह बचा नहीं पाए।" पैन्तेली बोला और भचकता हुआ फ़ौरन ही गलियारे में आ गया।

इलीनीचिना, ग्रिगोरी को सोने के कमरे में ले गई और फिर उसने पूरी कहानी सुनाई। बुढ़िया ने अपनी ओर से सच्चाई दबाई। पर, ग्रिगोरी ने पूछा—"आखिर पेट गिरवाने की बात उसके दिमाग में आई ही क्यों? पता है तुम्हें?"

"हां पता है।"

"क्या बात थी?"

"वह एक दिन पहले तुम्हारी······के यहां गई थी और उस अकसीनिया ने उसे सब-कुछ साफ़-साफ़ बतला दिया था।"

"ठीक, अब समझ में आई बात।" ग्रिगोरी का चेहरा तमतमा उठा और उसकी निगाहें झुक गईं।

वह कमरे के बाहर आया तो चेहरा पीला नजर आया। उम्र बढ़

गई लगी। निखरी भौंहें रह-रहकर कांपती और होंठ फड़कते रहे। उसने मेज के किनारे बैठकर बच्चों को घुटनों पर बिठा लिया और फिर उन्हें कितनी ही देर तक दुलारता रहा। फिर उसने अपने फ़ौजी थैले से सफ़ेद, गर्द से सना चीनी का एक टुकड़ा निकाला, हथेली पर रखकर चाकू से तोड़ा और अपराधी की भांति मुस्कराया।

"सिर्फ़ यह ला सका हूँ मैं तुम्हारे लिए···इस तरह का निकम्मा बाप पाया है तुमने···अच्छा, सुनो, भागकर अहाते में जाओ और अपने बाबा को बुला लाओ···"

"तुम नताल्या की क़ब्र पर चलोगे?" इलीनीचिना ने पूछा।

"बाद में···मौका मिलने पर देखा जाएगा···जो लोग यह दुनिया छोड़कर चले जाते हैं, वे बुरा-भला नहीं माना करते···मीशात्का और पोल्युश्का कैसे रहते हैं? रोते-राते तो नहीं?"

"पहले दिन तो दोनों बहुत ही रोये···खासतौर पर पोल्युश्का तो बहुत ही रोई···लेकिन, अब कुछ ऐसा है जैसे कि बच्चों ने मन-ही-मन कोई फ़ैसला कर लिया है···वे अब हमारे सामने कभी कुछ नहीं कहते··· पर, अभी कल रात मैंने मीशात्का को चुपके-चुपके रोते सुना···वैसे उसने मुँह तकिये में छिपा रखा था, ताकि आवाज़ कोई न सुने··· लेकिन, मैंने तो इस पर भी सुन लिया और जाकर पूछा—'क्या बात है, मुन्ने आओ, मेरे पास लेटोगे?' लेकिन वह बोला—'ठीक है, दादी··· कोई बात नहीं है···मैं शायद सपना देख रहा था···' तुम उनसे बातें करो···उन्हें थोड़ी ममता दो। कल मैंने दोनों को गलियारे में आपस में बातें करते सुना। पोल्युश्का अपने भाई से बोली—'माँ वापस आयेगी हम लोगों के पास···वह तो अभी बूढ़ी नहीं है, और जो लोग बूढ़े नहीं होते, वे मरा नहीं करते।' बच्चे हैं, उन्हें अक्ल ही अभी कितनी है। पर, दुखते इस तरह हैं जैसे कि बड़े-सयाने हों···मेरा ख्याल है कि तुम भूखे होगे···बैठ जाओ···मैं अभी कुछ पकाती हूँ तुम्हारे लिए···तुम इस तरह गुमसुम क्यों बैठे हो आखिर?"

ग्रिगोरी सोने के कमरे में गया और वहाँ उसके व्यवहार से ऐसा लगा जैसे कि पहली बार उसे ज़िन्दगी की राह मिल गई हो। उसने

ध्यान से दीवारों पर चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई और निगाह पलंग पर टिका दी। पलंग पर बिस्तर क़ायदे से लगा और तकिये ठीक-ठाक ढंग से रखे दीखे।···इसी पलंग पर नताल्या ने दम तोड़ा था···यहीं उसकी आवाज़ का तार टूटा था।···

ग्रिगोरी ने कल्पना की···नताल्या ने बच्चों से विदा ली, उन्हें चूमा और शायद उनके सिरों पर क्रॉस बनाया।···और, पत्नी की मौत का तार पढ़ते समय उसे जैसा लगा था, वैसा ही एक बार फिर लगा। उसके कलेजे में जैसे किसी ने छुरा मार दिया···कान सनसनाने लगे।

घर की छोटी-से-छोटी चीज़ उसे नताल्या की याद दिलाने लगी। ये यादें अजर-अमर लगीं और उसके मन को बुरी तरह कुरेदने लगीं। उसने, न जाने क्यों, एक-एक कर सभी कमरों के चक्कर काटे, फिर बाहर निकला और दौड़कर सीढ़ियों पर चढ़ गया। उसके दिल का दर्द बराबर बढ़ता गया। होते-होते माथे पर पसीना आ गया। उसने डरकर हाथों से सीना जकड़ लिया और सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए सोचा—'यह सफ़ेद, बूढ़ा घोड़ा दो-एक पहाड़ी ढाल तो सरपट पार कर ही चुका है।'

दून्या उसके घोड़े को अहाते में फिराती रही। अनाज की कोठी के पास जानवर ने लगाम को झटका दिया, ठिठककर ज़मीन पर नथुनों से हवा दौड़ी, गर्दन फैलाई और अपना ऊपरी होंठ फड़काते हुए दाँत निकाल दिए। फिर, वह हींसा और उसने अपने आगे के पैर भद्दे ढंग से मोड़े। इस पर दून्या ने लगाम खींची, पर घोड़े ने एक ध्यान नहीं दिया और ज़मीन पर पसरने लगा।

"इसे लोटने मत दो!" पेन्तेली अस्तबल से चीख़ा—"देखती नहीं कि उस पर काठी अभी तक कसी हुई है! तूने अभी तक उसे खोला क्यों नहीं? गधी कहीं की!"

ग्रिगोरी अब भी अपने दिल की धड़कनों की आहट लेते हुए घोड़े की तरफ़ बढ़ा, काठी उतारी और बरबस मुस्कराते हुए दून्या से बोला—"पापा अब भी चीखते हैं?"

"हमेशा की आदत है।" दून्या ने जवाब में मुस्कराते हुए कहा।

"कुछ देर और फिरा लो घोड़े को, दून्या !"

"वैसे तो पसीना सूख गया है, पर तुम कहते हो तो और सही ।"

"अगर चाहता हो तो लोट लगा लेने दो इसे···रोको मत !"

"अब···अब···भैया···दुखी हो रहे हो तुम ?"

"और, तुमने उम्मीद क्या की थी ?" ग्रिगोरी ने रुँधे गले से कहा ।

दून्या ने दर्द से भाई का कंधा चूमा, खुद भी भर आई, तेज़ी से मुड़ी और घोड़े को अहाते में ले गई ।

ग्रिगोरी अपने पिता के पास पहुँचा । वह बड़ी मेहनत से अस्तबल से लीद साफ़ कर रहा था ।

बूढ़ा बोला—"मैं तुम्हारे घोड़े के लिए जगह साफ़ कर रहा हूँ ।"

"तुमने मुझसे क्यों नहीं कहा ? मैं खुद ही साफ़ कर लेता ।"

"क्या बात कही है ! मैं क्या कुछ अपाहिज हूँ ? बेटे, मैं तो चकमक पत्थर की तरह हूँ । मुझमें कुछ कभी घिसता नहीं । अब भी थोड़ी बहुत दौड़-भाग कर लेता हूँ । कल मैं राई की बोआई की बात सोच रहा हूँ । क्या तुम कुछ दिनों तक ठहरोगे अभी ?"

"एक महीना रहूँगा ।"

"यह तो बहुत ही अच्छा होगा । खेत चलोगे मेरे साथ ? काम में लगे रहोगे तो ग़म उतनी चोट नहीं करेगा ।"

"मैंने खुद भी यही बात सोची थी ।"

बूढ़े ने फावड़ा रखा, आस्तीन से चेहरे का पसीना पोंछा और शांत मन से बोला—"चलो, घर चलें । तुम थोड़ा-बहुत खा-पी लो । यह··· मेरा मतलब दिल का दर्द अब तुम्हें कभी नहीं छोड़ेगा···इससे कोई छुटकारा नहीं···और···इससे बचने से कोई फ़ायदा भी नहीं । असलियत यही है···"

इलीनीच्निा ने खाने की मेज़ लगाई और एक साफ़ तौलिया ग्रिगोरी को दिया । और, फिर ग्रिगोरी ने मन-ही-मन सोचा—'इस तरह तो नताल्या सब-कुछ करती थी ।' पर, अपनी भावनाओं पर पर्दा डालने के लिए वह खाने पर टूट पड़ा । इस बीच बूढ़ा वोदका की, घास से मुँह-बन्द एक सुराही तहखाने से निकालकर लाया तो ग्रिगोरी ने उसे

कृतज्ञता-भरी दृष्टि से देखा। पैन्तेली जमे हुए लहजे में बोला—"हम लोग नताल्या के नाम पर पियेंगे···ऊपरवाला उसकी रूह को चैन बख्शे !"

दोनों ने एक-एक गिलास वोदका पी। इसके बाद बूढ़े ने इन्तजार किये बिना, गिलास फिर भर दिये और आह भरकर बोला—"एक साल में घर के दो-दो लोग चले गए···मौत को हमारे खानदान से इश्क हो गया है···"

"हटाओ···ऐसी बातें इस वक्त न करो, पापा !" ग्रिगोरी बोला। उसने एक बार में ही पूरा गिलास गले के नीचे उतार लिया, सूखी मछली का एक टुकड़ा धीरे-धीरे चबाना शुरू किया, और नशे का इन्तजार करने लगा कि तकलीफ़देह यादों से किसी तरह जान छूटे !

"इस साल राई की फ़सल खूब अच्छी है और हमने बोआई भी दूसरों से कहीं अच्छी की है।" पैन्तेली ने डींग मारते हुए कहा। पर, ग्रिगोरी ने सहज रूप से समझ लिया कि पापा जान-बूझकर ही इस तरह बातें कर रहे हैं···

"लेकिन, गेहूँ का क्या हाल है ?"

"गेहूँ ? गेहूँ पाले से थोड़ा मारा गया, पर हालत ऐसी कोई बुरी नहीं है। बीच की फ़सल होगी। जहाँ तक कड़े गेहूँ का सवाल है, दूसरों ने इससे काफ़ी फ़ायदा उठाया है। पर, किस्मत की बात कि हमने वह बोया ही नहीं। लेकिन, खैर, कोई बात नहीं। चारों तरफ़ जिस तरह की बरबादी का बोलबाला है, उसमें अनाज से ही क्या खास फ़र्क़ पड़ जाएगा ? अनाज हो भी तो न बेचा जा सकता है, और न कोठियों में भरकर रखा जा सकता है। लड़ाई के मोर्चे ने इस तरफ़ रुख किया नहीं कि लाल फ़ौजी आए और सारे-का-सारा उठाकर ले गये ! लेकिन, तुम इसकी फ़िक्र न करो। इस साल भी अपने यहाँ इतना अनाज हुआ है कि दो साल तक आराम से काम चल सकता है। ऊपरवाले का लाख-लाख शुक्र कि हमारी कोठियाँ ऊपर तक भरी हुई हैं और अनाज और कहीं भी रखा है···" बूढ़े ने होशियारी से आंख मारी और बोला—"दार्या से पूछ लो कि बरसात के दिनों के लिए कितना अनाज जमा कर

रखा है हमने ! खज़ाना गुनाहों ऊँचाई के बराबर गहरा और तुम्हारे फैले हुए हाथों की पापी चौड़ाई-भर फैलाव में है। इस गुनाहगार ज़िन्दगी ने हमें कंगाल बनाकर रख दिया है, वरना हमारी हालत तो एक ज़माने में अच्छी-खासी थी।"···बूढ़ा नशे में हँसा, पर पल-भर बाद ही ध्यान से दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए गम्भीर स्वर में बोला—"हो सकता है, तुम्हें अपनी सास का ख़याल आ रहा हो। इसलिए तुम्हें यह बतला दूं कि मुझे उनका ध्यान बराबर ही रहा है, और वक्त-ज़रूरत पर हमने भरसक मदद भी की है। यानी उन्हें मुँह खोलने का मौका भी नहीं मिला कि मैंने अनाज गाड़ी में ऊपर तक भरा, सोचा तक नहीं और उनके पास पहुंचा दिया। इससे तुम्हारी नताल्या खुशी से खिल उठी···उसने सुना तो उसकी आंखों में आंसू आ गए···तीसरा गिलास भरूँ, बेटे ? अब हमारी हँसी-खुशी को एक तुम्ही तो रह गये हो।"

"अच्छा···भर दो !" ग्रिगोरी ने कहा और अपना गिलास आगे बढ़ा दिया।

इसी समय मीशात्का आया और हिचकते-हिचकते मेज़ की तरफ़ बढ़ा। फिर वह उचककर पिता के घुटनों पर चढ़ गया और भद्दे ढंग से गर्दन में हाथ डालकर उसने उसे जीभर चूमा।

"यह किसलिए बेटे ?" ग्रिगोरी ने बुरी तरह द्रवित होते हुए पूछा, लड़के की आंसू-भरी आंखों में आंखें डालीं और मुंह दूसरी तरफ कर लिया ताकि उसकी सांस की वोदका की महक लड़के की नाक में जाए।

मीशात्का ने धीमे से जवाब दिया—"मां सोने के कमरे में पड़ी थीं न···जब ज़िन्दा थीं···तो उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया और कहा—'पापा आयें तो उन्हें मेरी तरफ़ से चूमना, और उनसे कहना कि तुम दोनों को खूब प्यार करें !' उन्होंने कुछ और भी कहा था, पर, वह तो मैं भूल गया···"

ग्रिगोरी ने अपना गिलास नीचे रख दिया और खिड़की की तरफ़ देखने लगा। कमरे में बहुत देर तक ऐसा सन्नाटा रहा कि आदमी का दिल सहज ही घुटने लगे।

"गिलास खाली करो न !" पैन्तेली ने धीरे से कहा।

"अब नहीं गिऊँगा।" ग्रिगोरी ने बेटे को घुटने से उठाया, खुद उठ खड़ा हुआ और तेजी से बरसाती की तरफ़ बढ़ा।

"ज़रा रुको तो···बेटे···गोश्त नहीं खाओगे ? उबला चूजा रखा है, टिकियाँ भी हैं।" इलीनीचिना स्टोव की तरफ़ लपकी, पर इस बीच ग्रिगोरी ने बाहर निकलकर दरवाज़ा भड़ाक से मार दिया।

फिर वह ढोरों के बाड़े से अस्तबल तक बेमतलब चक्कर काटता रहा। इसके बाद घोड़े पर नज़र पड़ी तो उसने सोचा, 'इसे नहला देना चाहिये।'

वह शेड में आया। यहाँ उसने तैयार रखी कटाई की मशीन के पास देवदार की लकड़ी की चैलियाँ और लकड़ी के कटे हुए टुकड़े देखे। पास ही एक टेढ़ा-मेढ़ा तख्ता ज़मीन पर पड़ा देखा।

'यहाँ पापा ने ताबूत तैयार किया होगा नताल्या के लिए।' उसने सोचा और तेज़ क़दमों सीढ़ियाँ पारकर घर के अन्दर चला गया।···

पैन्तेली ने अपने बेटे की ज़िद पर जल्दी-जल्दी सारी तैयारी की, कटाई की मशीन में घोड़े जोते और पानी से भरी एक पीपिया ऊपर रखी।···

रात होते ही बाप-बेटे खेत के लिए रवाना हो गए।

: १८ :

ग्रिगोरी को इतना संताप न सिर्फ़ इसलिए हुआ कि उसे नताल्या से प्यार था और दाम्पत्य-जीवन के अपने छः वर्षों में उसके साथ रहने का आदी हो गया था, बल्कि उसे इतना शोक इसलिए भी हुआ कि उसने उसकी मौत के लिए अपने को जिम्मेदार समझा। अगर नताल्या ने अपने बेईमान पति से नफ़रत की होती, उससे समझौता करने से इन्कार कर दिया होता, अपने बच्चों के साथ अपनी माँ के यहाँ चले जाने की धमकी पर अमल किया और वहीं दम तोड़ा होता, तो पति के दिल पर उसकी मौत का इतना बोझ न होता और पछतावे ने उसे इस तरह छेदा न होता। लेकिन उसकी माँ ने उससे कहा—"नताल्या ने

तुम्हें माफ़ कर दिया था। वह तुम्हें प्यार करती थी और आखिरी समहे तक तुम्हारा नाम लेती रही थी।"

इससे उसका कष्ट और बढ़ा, उसकी आत्मा पर भर्त्सना का बोझ और लदा और वह गुजरे जमाने की बातों और उसके अपने व्यवहार को एक बिल्कुल नई दृष्टि से देखने पर मजबूर हो गया।···

एक वक्त था जब उसके मन में अपनी पत्नी के प्रति केवल उदासीन विरोध का भाव था। लेकिन इधर सब-कुछ बदल गया था और उसके मन में उसके लिए और ही तरह की भावनाएँ उठने लगी थीं। खासतौर पर बच्चों के कारण चीज़ों में ज़मीन-आसमान का अन्तर हो गया था।

यानी, इधर बच्चों के लिए वह जो गहन पितृ-सुलभ स्नेह अनुभव करने लगा था, वह बिल्कुल नई अनुभूति थी। वैसे वह जब भी मोर्चे से थोड़े वक्त के लिए घर आया, उसने सिर्फ़ अपना फ़र्ज़ समझकर, पत्नी को खुश करने के लिए बच्चों को दुलराया। लेकिन इस बीच जब भी नताल्या ने उनके प्रति ममता दिखाई उसने उसे हमेशा ही अविश्वास से भरे आश्चर्य की दृष्टि से देखा। उसकी समझ में ही न आया कि इतने छोटे-छोटे, अपनी चीख-पुकार से आसमान को सिर पर उठाने वाले प्राणियों को कोई अपने को भूलकर इस तरह प्यार कर कैसे सकता है। यही कारण है कि बच्चे अभी माँ के दूध पर पल ही रहे थे कि उसने एक दिन रात को नताल्या का मज़ाक बनाते हुए कहा—"तुम इस तरह बोखलाकर उछलने क्यों लगती हो? बच्चे मुँह भी नहीं खोल पाते कि तुम उठकर खड़ी हो जाती हो। क्या बुरा है, ज़रा हाथ-पैर पटकने और चिल्लाने दो उन्हें। वे कोई सोने के आँसू तो बहाएँगे नहीं।"

और, इस वातावरण में बच्चे भी उसकी तरफ़ से काफ़ी खिंचे-खिंचे रहे। लेकिन उम्र के साथ उनमें पिता के प्रति लगाव बढ़ा। उस लगाव ने पिता के हृदय में प्यार जगाया और इस प्यार ने अपना हाथ नताल्या तक बढ़ा दिया।

अकसीनिया से कट जाने के बाद उसने नताल्या को छोड़ देने की बात

गम्भीरता से कभी नहीं सोची। फिर उस औरत के दुबारा पास आने पर भी उसे कभी नहीं खटका कि वह उसके अपने बच्चों की माँ की जगह ले लेगी। अगर बात आती तो, वह तो दोनों के साथ रहता और उनमें से हर-एक को अलग-अलग ढंग से प्यार करता। लेकिन पत्नी नहीं रही तो अब वह सहसा ही अक्सीनिया से कट-सा गया। उसका मन उसके प्रति क्रोध से भर उठा। उसे ऐसा लगा जैसे कि उसने अपने और उसके सम्बन्धों को भुनाकर नताल्या की जान ले ली है।'

ग्रिगोरी ने खेत में काम कर अपना ग़म भुलाने की भरसक कोशिश की, पर खयालों से उसकी जान नहीं छूटी। उसने जीतोड़ मेहनत कर अपने को चूर-चूर कर डाला, कटाई की मशीन पर वह घंटों नहीं बैठा, लेकिन नताल्या का ध्यान इस पर भी उसे आता ही रहा। आपस की मिली-जुली जिन्दगी की छोटी-छोटी बातें और घटनाएँ उसे बराबर याद आती रहीं। वह अपनी स्मृति की लगाम जरा भी ढीली करता कि मुस्कराती हुई नताल्या उसके सामने आकर खड़ी हो जाती। उसके दिमाग़ में ताजा हो उठता पत्नी का नाक-नक़्शा, चाल-ढाल, जूड़ा बांधने का ढँग, मुस्कान और आवाज़ का उतार-चढ़ाव।···

तीसरे दिन बाप-बेटे ने जौ की कटाई शुरू की। लेकिन तीसरे दिन दोपहर को पैन्तेली ने घोड़े रोके कि ग्रिगोरी कटाई की मशीन से नीचे कूद पड़ा और जमीन पर पड़े तख्तों पर हेंगा रखकर बोला—

"पापा, मैं एकाध घंटे को घर जाऊँगा जरा।"

"क्या बात है?"

"कुछ नहीं, ज़रा बच्चों को देख आऊँ।"

"ठीक है···देख आओ।" बूढ़े ने फ़ौरन अनुमति दे दी, बोला—"इस बीच हम टाल लगाने का थोड़ा काम कर लेते हैं।"

ग्रिगोरी ने फ़ौरन ही कटाई की मशीन से अपना घोड़ा खोला और उस पर सवार होकर उसे क़दम-चाल से कंकड़ों वाले रास्ते से बड़ी सड़क पर ले आया। उसके कानों में शब्द गूँजते रहे—'अपने पापा से कहना कि तुम दोनों को खूब प्यार करे।' उसने अपनी आँखें मूँद लीं, रासें ढीली कर दीं और यादों में डूब गया। घोड़ा अपने मन से

चलने को आजाद हो गया।

गहरे नीले आसमान में हवा से तितर-बितर बादल लगभग स्थिर-से लटक रहे। कौए अपने पर आधे फैलाए जहां-तहां फुदकते रहे। कुछ टालों पर इधर-उधर बैठे रहे और उनमें से सयाने अपने छोटे, अब मुश्किल से ही पर तोलने वाले बच्चों को चोंच-से-चोंच मिलाकर खिलाते रहे। दूसरी तरफ़ कटाई से खाली फैलाव के ऊपर उनकी कांव-कांव जमी हुई कराहों में घुलती रही।

ग्रिगोरी का घोड़ा मनमाने ढंग से सड़क के किनारे चलता और बीच-बीच में इधर-उधर उगी तिनपतिया घास में मुंह मारता रहा। बीच में दो बार दूसरे घोड़ों की झलक पाकर वह ठिठका और हिनहिनाया। इस पर ग्रिगोरी ने अपने-आपको झकझोरा, घोड़े को आगे बढ़ाया और अनदेखती आंखों से मैदान, धूल से नहाई सड़क, पीली टालों, हरे-भरे खेतों और पकी हुई जुआर पर निगाह जमाई।

और, फिर ग्रिगोरी के घर पहुंचते ही सजा-बजा क्रिस्तोन्या आ धमका। गरमी के बावजूद उसके बदन पर अंग्रेज़ी कपड़े की ट्यूनिक और चौड़ी, घुड़सवारी वाली बिरजिस नज़र आई। खुद ऐश के एक बड़े बेंत का सहारा लेता हुआ अन्दर आया और ग्रिगोरी का अभिवादन करने के बाद बोला—"तुम्हीं से मिलने आया हूं। मैंने सब-कुछ सुन लिया है। तुम पर तो मुसीबत ही टूट पड़ी है।···यानी, नताल्या-मिरोनोवना को दफ़नाया जा चुका है न ?"

"तुम मोर्चे से कैसे वापस आए ?" ग्रिगोरी ने उसके प्रश्न की अनसुनी करते हुए पूछा, और खुशी से खिलकर उसके भद्दे शरीर और ज़रा-सा झुके हुए बदन को नीचे से ऊपर तक देखा।

"मुझे गोली लग गई थी। सो, ठीक-ठाक होने के लिए घर भेज दिया गया हूं। दो गोलियां एक साथ मेरे पेट के आरपार हो गई थीं। लगता है कि वे अब भी अंतड़ियों के पास कहीं हैं···ऐसी-तैसी में जाएं। इसीलिए तो बेंत इस्तेमाल कर रहा हूं···"

"कहां यह सब हुआ ?"···

"बालाशोव के पास।"

"तो, बालाशोव ले लिया तुम लोगों ने ?"

"हमने हमला किया था···सो, बालाशोव भी ले लिया और पोवो-रीनो भी। मैं तो वहीं था।"

"खैर, तो अब यह बतलाओ कि इन दिनों तुम किस रेजीमेंट में हो, और गाँव के और कौन-कौन लोग तुम्हारे साथ हैं ? बैठो··· सिगरेट पिओगे ?"

ग्रिगोरी को एक नया चेहरा देखकर और परिवार के बाहर के किसी आदमी से बातें कर बड़ी खुशी हुई, क्योंकि उस आदमी का उसकी अपनी यातना से किसी तरह का कोई सम्बन्ध नहीं था। क्रिस्तोन्या ने स्थिति समझी और अपनी हमदर्दी गैर जरूरी मानी। इसीलिए उसने धीरे-धीरे विषय बदला और बालाशोव के लिए जाने और अपने जख्मी होने की कहानी कहने लगा।

फिर, एक लम्बी-चौड़ी सिगरेट के कश लेता हुआ, भारी, मोटी आवाज़ में बोला—"हम सूरजमुखी के पौधों के बीच से पैदल बढ़े। लाल फ़ौजी अपनी मशीनगनों और तोपों से हम पर आग बरसाते रहे। मशीनगनें तो उन्होंने इस्तेमाल कीं ही। वैसे मुझे पहचानना कोई मुश्किल तो है नहीं। मैं चाहे जितना झुकूँ। नज़र किसी को भी दूर से ही आ सकता हूँ। यही वजह है कि उन्होंने यानी गोलियों ने भी मुझे आसानी से खोज लिया और अपना निशाना बना लिया। कहने को कह सकते हैं कि पूरे क़द ने ख़ासी मदद की, वरना कहीं नाटा होता तो खोपड़ी छलनी हो जाती। पेट में लगी, तो अन्दर की हर चीज़ जैसे खौल उठी। दोनों गोलियाँ गरम ऐसी थीं, जैसे कि भट्ठी से निकली चली आ रही हों···भाड़ में जाएँ ! मैंने पेट पर ठीक जगह हाथ रखा, तो वे, खाल के नीचे, आस-पास लुढ़कती लगीं। मैंने उन्हें उँगलियों से टटोला और चल दिया। फिर सोचा—यह मजाक गंदा है। भाड़ में झोंको ऐसे मजाक को और एक जगह जम जाओ, नहीं तो कोई और तेज़ गोली सनसनाती आएगी और सीने के आर-पार हो जाएगी। सो, मैं वहीं लेट गया और उन पर—मेरा मतलब गोलियों पर रह-रह कर हाथ रखता रहा। वे अब भी जहाँ-की-तहाँ एक-दूसरे से सटी लगीं।

मैंने सांस ऊपर खींचनी शुरू की। खयाल आया—अगर ऐसा न किया, तो गोलियां पेट में घँसती चली जाएँगी—फिर—फिर क्या होगा ?… अगर वे अंतड़ियों के बीच जा फँसीं तो डॉक्टर कैसे निकालेगा उन्हें ?… फिर यह भी है कि उनसे मुझे कुछ आराम तो मिलेगा नहीं…हर आदमी के बदन के अन्दर पानी-ही-पानी होता है। और मेरे बदन के अन्दर भी पानी-ही-पानी है, इसका मतलब यह है कि गोलियां मेरे पेट-भर में उतराती फिरेंगी, और मैं चलूंगा तो खम्भे में लगे घण्टे की तरह कभी इधर को जाऊँगा तो कभी उधर को। इससे तो मेरा मामला ही गड़बड़ा जाएगा। …बस तो लेटे-ही-लेटे मैंने सूरजमुखी का एक फूल तोड़ा और उसके लिए कुटकुटाने लगा, पर मन का डर न निकला। इस बीच हमारी फ़ौज आगे निकल गई। खैर, तो…जब वालाशोव लिया गया तो मैं किसी तरह वहां पहुंच गया। उस वक्त मैं तीशान्का के अस्पताल में था। वहां का डॉक्टर गौरैया की तरह ऐंठू था। उसने मुझसे पूछा…'गोलियां काटकर निकाल दूं ?' पर मैं कुछ तय न कर पाया, सोचता पड़ा रहा और मैंने सवाल के बदले सवाल कर दिया—'हुजूर, क्या ऐसा मुमकिन है कि ये गोलियां अन्दर-ही-अन्दर गायब हो जाएँ ?' जवाब मिला—'नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।' उस पर मैंने मन-ही-मन इरादा किया—'तब कटवाकर इन्हें नहीं निकलवाऊँगा…ये सब चार सौ बीसियां मुझे पता हैं। इसके बाद वैरंग रेजीमेंट को भेज दिया जाऊँगा।'…बस, तो मैंने डॉक्टर से कहा—'नहीं, कटवाकर गोलियां मुझे नहीं निकलवानी…यह तो पेट के अन्दर ही अच्छी…मैं इन्हें घर ले जाकर अपनी बीवी को दिखला दूंगा… इनकी वजह से मुझे परेशानी नहीं है…इनमें कुछ वजन थोड़े ही है।' फिर तो डॉक्टर मुझ पर खूब बरसा। उसने मुझे जी भर गालियां दीं। मगर, एक हफ़्ते की बीमारी की छुट्टी देकर घर आने की इजाजत दे दी।"

ग्रिगोरी यह कला-हीन कहानी सुनते-सुनते मुस्कराने लगा। पूछा—"किस रेजीमेंट में हो ?"

"चौथी में।"

"गांव के और कौन-कौन लोग तुम्हारे साथ हैं ?"

"बहुत-से लोग हैं। अनीकुश्का, वेशलेवनोव, अकीम-कोलोवोदिन,

स्योमका मोरोशनिकोव, और तीखोन गोरवाचेव, वगैरा-वगैरा।"

"और, हाल क्या है इन कज्ज़ाकों का ? वे किसी तरह का शिकवा-शिकायत तो नहीं करते ?"

"लगता है कि वे सभी फ़ौजी अफ़सरों से ऊब गए हैं। ऐसे सुअर लोग रख दिए गए हैं हमारे साथ कि उनके साथ काम चलाना मुश्किल है। और, है भी सब-के-सब रूसी। उनमें कज्ज़ाक एक नहीं है।"

और बातें करते-करते क्रिस्तोनिया ने अपनी ट्यूनिक की छोटी आस्तीन खींची, उसे ग़ौर से देखा और अपनी अंग्रेजी बिरजिस पर इस तरह हाथ फेरा, जैसे कि अपने बदन पर ऐसे बेशक़ीमती कपड़े होने का उसे खुद यक़ीन न हो।

फिर, विचारों में डूबते हुए बोला—"तुम जानते हो, मुझे अपने पैर के लायक़ जूते नहीं मिले···ब्रिटेन में रहने वालों के पैर इतने बड़े नहीं होते।···हम लोग तो गेहूँ बोते और गेहूँ खाते हैं, मगर मुझे लगता है कि इंगलैंड में हालत रूस की-सी है। वहाँ सिर्फ़ राई खाई जाती है। और अगर लोग राई खायेंगे तो उनके पैर इतने बड़े कहाँ से होंगे ? उन्होंने हमारी पूरी स्क्वैड्रन के लिए जूते-कपड़े और महकदार सिगरेटें दीं···मगर यह है कि चीज एक अच्छी नहीं निकली।"

"उन चीजों में बुराई क्या है ?"

"बुराई यह है कि बाहर से देखने में तो हर चीज ठीक लगती है, पर अन्दर से चौपट होती है।" क्रिस्तोनिया मुस्कराया—"तुम्हें पता नहीं है, कज्ज़ाक फिर लड़ाई से छुटकारा पाना चाहते हैं। इसलिए इस लड़ने-भिड़ने से कोई ख़ास नतीजा निकलेगा नहीं। वे लोग खोपर के इलाके से आगे बढ़ने को तैयार नहीं हैं।"

और इस बातचीत के बाद ही क्रिस्तोनिया जाने को हुआ, और ग्रिगोरी ने उसे विदा करने के बाद मन-ही-मन फ़ैसला किया—"मैं एक हफ़्ते बाद मोर्चे पर वापस चला जाऊँगा, वरना यहाँ सदमे और घुटन से जान चली जाएगी···।"

ग्रिगोरी शाम तक घर में रहा। इस बीच अपने बचपन की याद कर उसने मीशात्का को सरकंडों की हवाई चक्की बना दी और घोड़े

के बालों से गौरैया फँसाने का जाल बुन दिया। बेटी के लिए उसने घूमने वाले पहियों की एक छोटी गाड़ी तैयार कर दी और उसको छुरी तरह-तरह के अजीबोग़रीब रंगों से रंग दी। उसने चिथड़ों से एक गुड़िया बनाने की भी कोशिश की। लेकिन बात कुछ बनी नहीं, और दून्या को हाथ लगाना पड़ा। तब कहीं जाकर गुड़िया तैयार हुई।

वैसे ग्रिगोरी ने बच्चों की तरफ़ इतना ध्यान तो अब तक कभी दिया था नहीं, इसलिए पहले तो बच्चों को उसके स्नेह पर विश्वास नहीं हुआ, परन्तु बाद में उसके लिए पल-भर को भी उनसे अलग होना दुश्वार हो गया। सो एक दिन शाम को ग्रिगोरी खेत जाने को बाहर निकला तो मीशात्का आँखें भरकर बोला—"तुम हमेशा ऐसा ही करते हो। यानी घर आते देर नहीं होती कि फिर हमें छोड़कर चल देते हो···अपना जाल, अपनी हवाचक्की और अपनी गाड़ी सब-कुछ ले लो···हमें नहीं चाहिये···।"

इस पर ग्रिगोरी ने अपने बेटे के नन्हे-मुन्ने हाथ अपनी बड़ी-बड़ी मुट्ठियों में कसे और बोला—"अगर तुम्हें ऐसा लगता है तो आओ समझौता हो जाए···देखो तुम हो कज्ज़ाक, इसलिए तुम मेरे साथ घोड़े पर सवार होकर खेत चलोगे। वहाँ हम लोग जो काटेंगे और जमा करेंगे और तुम बाबा के साथ कटाई की मशीन पर बैठोगे। घोड़ों को हाँकोगे और घास में टिड्डे ढूँढ़ोगे। तरह-तरह की चिड़ियाँ तुम्हें दर्रों में नज़र आयेंगी। लेकिन पोल्युशका दादी के साथ घर पर रहेगी। उसे बुरा नहीं मानना चाहिए। वह लड़की है न, तो उसका काम है फ़र्श साफ़ करना और दादी के लिए दोन से छोटी बाल्टी में पानी लाना। औरतें घर के काम के लिए बनी होती हैं। तो, तुम चलोगे?"

"हाँ···ज़रूर चलूँगा।" मीशात्का ने प्रसन्नता से भरकर कहा और खुशी से उसकी आँखें चमकने लगीं।

"तुम कहाँ ले जा रहे हो इसे?" इलीनीचिना ने अपनी ओर से आपत्ति की—"पता नहीं तुम्हारे दिमाग़ में है क्या? आखिर कहाँ सोएगा यह, और कौन वहाँ फ़िक्र करेगा इसकी? वहाँ मैदान में बच्चा

कहीं घोड़ों के बहुत पास चला गया तो वे दुलत्ती चलाकर इसे ढेर कर देंगे। और यह भी न हुआ तो कहीं-न-कहीं कोई साँप डस लेगा इसे।" फिर दादी पोते की तरफ़ मुड़ी—"बेटे, तुम पापा को अकेले जाने दो··· तुम साथ न जाओ···यहीं रहो।"

लेकिन मीशात्का की आँखें क्रोध से जलने लगीं और उनसे चिनगारियाँ फूटने लगीं। बिल्कुल यही हालत गुस्सा आने पर उसके बाबा पैन्तेली की होती थी। सो लड़के ने मुट्ठियाँ मींची और आँसू से भर्राए हुए गले से ऊँची आवाज में चीखा—"दादी, चुप रहो तुम! चाहे जो हो, मैं तो जाऊँगा···। दादी की बात मत सुनो, पापा!"

ग्रिगोरी ने हँसते हुए बेटे को गोद में उठाया और इलीनीचिना को ढाढस बँधाया—"फ़िक्र मत करो। मैं इसे अपने पास सुलाऊँगा। घोड़े को लगाम पकड़कर मैदान तक ले जाऊँगा। इसे गिरने नहीं दूँगा। बस तुम इसके कपड़े तैयार कर दो। और माँ, तुम डरो नहीं। इसे हर तरह ठीक-ठाक रखने और सही-सलामत कल शाम तक घर वापस ले आने का जिम्मा मेरा है।"

इस तरह ग्रिगोरी और मीशात्का में दोस्ती बढ़ी······।

इस बार ग्रिगोरी पन्द्रह दिन तक तातारस्की में रहा और इस बीच उसने अकसीनिया को सिर्फ़ तीन बार देखा। सो भी देखा तो क्या, झलक पाई। अकसीनिया ने अपने गँवारू दिमाग़ से भी चालाकी बरती और मुलाक़ात हर तरह बरकाई। उसने उसकी निगाह से दूर-ही-दूर रहना बेहतर समझा, औरत की तरह आदमी की मनःस्थिति का सही अनुमान लगाया और अनुभव किया कि जरा-सी भी असावधानी या असामयिक प्रेम-प्रदर्शन से वह उसका जानी दुश्मन बन सकता है और उनकी अपनी मोहब्बत पर गहरा काला बादल छा सकता है। उसने प्रतीक्षा की कि पहले खुद ग्रिगोरी उससे मुँह खोलकर बोले। और ग्रिगोरी के खुद मुँह खोलकर बोलने का क्षण आया अपनी रवानगी के एक दिन पहले।

वह अनाज से भरी गाड़ी हांकता काफी देर से घर लौट रहा था कि साँझ के धुँधलके में, स्तेपी के बिलकुल पास वाली सड़क पर उसकी

नज़र अकसीनिया पर पड़ी। अकसीनिया ने काफ़ी दूर से ही उसको नमन किया और हलके से मुस्कराई। मुस्कान चुनौती और गर्व से भरी लगी। ग्रिगोरी ने नमन का जवाब नमन से दिया और मुंह सिए-ही-सिए उसकी बग़ल से गुजरना उसके लिए कठिन हो गया। तो अनदेखे ढंग से रासें खींचते और घोड़ों की चाल धीमी करते हुए पूछा—"क्या हालचाल हैं ?"

"सभी-कुछ ठीक-ठाक है···शुक्रिया, ग्रिगोरी···पेंन्तेलेयेविच !"

"ऐसा भी क्या है कि कभी कहीं नज़र ही नहीं आतीं ?"

"बात यह है कि अकसर बाहर खेतों में ही रहना पड़ता है। काम बहुत है और करने वाली एक मैं हूं।"

पर, शायद मीशात्का के गाड़ी में बैठे रहने के कारण न ग्रिगोरी ने घोड़े रोके और न आगे बातचीत की। कुछ दूर निकल जाने के बाद पीछे से आवाज़ आई तो वह मुड़ा। अकसीनिया बाड़ के पास खड़ी दीखी।

"अभी तो रहोगे न ?" औरत ने गुलबहार की पंखुड़ियां परेशानी से नोचते हुए पूछा।

"अब तो चला-चली ही समझो। कभी भी जा सकता हूं।"

इस पर अकसीनिया क्षण-भर को ठिठकी, जैसे कि स्पष्टतः कुछ और पूछना चाहती हो। लेकिन, किसी कारणवश पूछा उसने कुछ नहीं। सिर्फ़ हाथ हवा में लहराया और एक बार भी मुड़कर देखे बिना, जल्दी-जल्दी साझेवाले खेत की तरफ़ बढ़ गई।

: १६ :

आसमान में बादल घिरे रहे। पानी ऐसा बरसा जैसे कि बूंदें किसी चलनी से छनकर ज़मीन पर चली आ रही हों। और फिर स्तेपी में चारों ओर बिखरे घास-पात और कांटों की झाड़ी-झाड़ों से एक तरह की जोत सी-फूटने लगी।

प्रोखोर को समय से पहले ही जो गांव से मोर्चे के लिए रवाना होना पड़ा तो उसका मन गुस्से और नफ़रत से भर उठा। वह रास्ते-

भर होंठ सिए रहा और ग्रिगोरी से भी मुश्किल से ही बोला।

एक खास गाँव के पार इन्हें नजर आए तीन घुड़सवार कज्जाक। ये कज्जाक एक कतार में, घोड़ों को एड़ लगाते बड़े जोश में आपस में बातें करते सुन पड़े। इनमें सयानी उम्र के लाल दाढ़ी और घर के बने भूरे किसानी कोटवाले एक व्यक्ति ने ग्रिगोरी को पहचाना और अपने साथियों से जोर से कहा—"लेकिन यह तो मेलेखोव है, भाइयो! फिर ग्रिगोरी के बराबर आने पर उसने अपने ऊँचे, कुम्मैत घोड़े की रास खींची और चिल्लाकर बोला—"सलाम ग्रिगोरी पेन्तेलेयेविच!"

"सलाम।" ग्रिगोरी ने जवाब दिया और याद करने लगा कि इस लाल दाढ़ी और उदास चेहरे वाले व्यक्ति को देखा है तो आखिर मैंने कहाँ देखा है? पर, याद उसे कुछ नहीं आया। परन्तु यह बात जल्दी ही साफ़ हो गई कि यह कज्जाक अभी-अभी कॉरनेट बना है और आम कज्जाक फ़ौजियों से अपने को अलग रखने के लिए इसने अपने किसानी वाले मामूली कोट के कंधों पर पट्टियाँ टाँक ली हैं।

"आप मुझे नहीं पहचानते?" उसने अपना घोड़ा ग्रिगोरी के घोड़े के ठीक पास तक लाते, अपना हाथ फैलाते और ग्रिगोरी के चेहरे पर वोदका की बास में बसी साँसें छोड़ते हुए पूछा। इसके साथ ही इस नए-नए अफ़सर का चेहरा बेवकूफ़ी से भरे आत्म-सन्तोष से चमक उठा, उसकी छोटी-छोटी नीली आँखें खुशी से चमकने लगीं और लाल मूंछों के नीचे होंठों पर हँसी दौड़ गई। ग्रिगोरी को इस सैनिक अधिकारी को इस बेहूदे किसानी कोट में देखकर खासा मजा आया और अपनी मुस्कान को छिपाने की कोई भी कोशिश न करते हुए उसने जवाब दिया—"नहीं, मैं तुम्हें नहीं पहचानता। शायद पिछली मुलाक़ात के वक़्त तुम आम फ़ौजी थे। क्या अभी इधर कॉरनेट बनाये गए हो?"

"आपका निशाना बिलकुल ही सटीक बैठा। अभी एक हफ़्ते पहले ही यह ओहदा मिला है मुझे! हमारी मुलाक़ात कुदिनोव की स्टाफ़-मीटिंग के वक़्त हुई थी·· मेरा खयाल है कि 'माँ मेरी दिवस'[1] के आसपास···।

१· ईसा की माता का दिवस-पर्व—२५ मार्च।

उस वक़्त आपने मुझे एक छोटी-सी मुसीबत से बचाया भी था… आपको याद आ रहा है कुछ…? ऐ…त्रिफ़ॉन…ज़रा धीरे ले चलो… मैं अभी पकड़ लेता हूँ तुम्हें।" उसने कुछ दूर पर रुके दूसरे दोनों कज्ज़ाकों से चिल्लाकर कहा।

ग्रिगोरी को बड़ी मुश्किल से इस लाल बालों वाले कॉरनेट से अपनी पिछली भेंट का ध्यान आया। उसे उस समय के कुदिनोव के वाक्यों की भी याद आई—"इसका निशाना चूकता कभी नहीं। यह कुलाचें भरते खरगोश को भी गोली मार सकता है…लड़ाई के मामले में बिलकुल शैतान समझो इसे…स्काउट भी शानदार है…मगर अक़्ल से बच्चा है बिलकुल…!" इस कॉरनेट ने विद्रोह के समय एक स्क्वैड्रन की कमान सम्हाली थी और उस सिलसिले में इससे कोई बहुत बड़ी चूक बन पड़ी थी। इस पर कुदिनोव ने सख़्त सज़ा देनी चाही थी। लेकिन ग्रिगोरी ने बीच में पड़कर इसे माफ़ करवा दिया था और वह स्क्वैड्रन-कमांडर बना रह गया था…।

"मोर्चे से आ रहे हो?" ग्रिगोरी ने पूछा।

"जी हाँ, नोवोखोपेरस्क से छुट्टी पर आ रहा हूँ। और अपने नाते-रिश्तेदारों से मिलने के लिए कोई सौ वर्स्ट का ग़ैर-ज़रूरी चक्कर काटा है मैंने। मेरी याददाश्त बुरी नहीं है। ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच…! बड़ी मेहरबानी होगी…मेरी मामूली-सी ख़ातिर मंज़ूर कर लें…इन्कार न करें। मेरे थैले में दो बोतलें सौ फ़ीसदी शराब की हैं। आइये, यहीं खोल लिया जाए उन्हें…क्या राय है?"

ग्रिगोरी ने बोतलें खोले जाने का प्रस्ताव तो बिलकुल अस्वीकार कर दिया, पर उस व्यक्ति की एक बोतल की भेंट स्वीकार कर ली।

"आपको होना चाहिए था वहाँ। कज्ज़ाकों और अफ़सरों को सामान से लाद दिया गया बिलकुल।" कॉरनेट ने डींग मारते हुए ऐलान किया—"मैं भी था बालाशोव में। हमने जगह ली और फिर सीधे रेलवे की ओर बढ़े तो हमें सारे रास्ते ट्रकों से भरे मिले। एक ट्रक में चीनी नज़र आई, तो एक ट्रक में वर्दियाँ ही वर्दियाँ, और एक ट्रक में तमाम तरह-तरह की चीज़ें। कुछ कज्ज़ाक तो चालीस जोड़े तक

कपड़े ले गये। और बाद में हम गए और हमने यहूदियों को झकझोरा ···आप होते तो हँसते···हमारी स्क्वैड्रन में यहूदियों का एक शिकारी निकला···उसने अट्ठारह घड़ियाँ जुटाईं। इनमें दस सोने की थीं। फिर, उसने कुल-की-कुल अपने सीने पर यों लटका लीं, जैसे कि वह उस इलाक़े का सबसे अमीर सौदागर हो। और अँगूठियाँ और ब्रैसलेट जितने उसके पास थे, कोई गिनता उन्हें। हर उँगली पर दो-दो या तीन-तीन···।"

ग्रिगोरी ने उस फ़ौजी के फूले हुए थैले की ओर इशारा किया और पूछा—"और उसमें क्या भर रखा है तुमने ?"

"इसमें···इसमें सभी तरह की चीज़ें हैं।"

"यानी लूट में हिस्सा तुमने भी लिया है ?"

"इसे लूट भला क्यों कहते हैं आप···हमने किसी को लूटा-खसोटा नहीं···हमने तो क़ानूनी तरीक़े से जीता सब-कुछ। हमारे रेजीमेंटल-कमांडर ने कहा—'शहर ले लो···और दो दिन तक यह हर तरह तुम्हारा रहेगा···।' तो क्या मैं दूसरों से उन्नीस हूँ कुछ ? बस तो, क़ानूनी ढंग से जो कुछ मेरे हाथ लग गया, मैंने ले लिया। दूसरों ने तो इससे कहीं बदतर किया।"

"क्या मुबारक उँगलियाँ हैं!" ग्रिगोरी ने उस कॉरनेट को नफ़रत से घूरकर देखा और बोला—"तुम्हारी तरह के लोग बड़ी सड़कों के पुलों के नीचे मारे-मारे फिरते हैं···मगर तुम तो लड़ते नहीं। तुमने लड़ाई को लूटमार का वसीला बना लिया है···उफ़···कमीने कहीं के! एक नया धंधा मिल गया है तुम्हें। लेकिन, तुम्हें खयाल नहीं आता कि एक-न-एक दिन तुम्हारी और तुम्हारे कमांडर की जिन्दा खाल खींच ली जाएगी ?"

"किसलिए ?"

"इसी सबके लिए।"

"मगर, कौन खींचेगा खाल ?"

"तुमसे बड़ा अफ़सर।"

व्यक्ति व्यंग्य से मुस्कराया और बोला—"लेकिन, उनमें कोई

किसी को कहने लायक नहीं है। हमने तो सिर्फ़ अपने थैलों या अपनी गाड़ियों में चीजें भरी हैं, मगर उन्होंने तो रेलगाड़ियों की रेलगाड़ियाँ दुनिया-भर के सामान से लाद-लादकर रवाना की हैं।"

"तुमने खुद देखा है उन गाड़ियों को ?"

"देखा है। सामान से लदी ऐसी ही एक रेलगाड़ी के साथ तो खुद मैं यारीजेन्स्काया गया हूँ। उसमें डिब्बे-के-डिब्बे भरे थे चाँदी की तश्तरियों, प्यालों और चम्मचों से। कुछ फौजी अफ़सर अपने घोड़े दौड़ाते आए और गरजकर बोले—'क्या है इन डिब्बों में ? दिखलाओ हमें !' पर, जब मैंने उन्हें बतलाया कि यह जनरल फलां का निजी सामान है तो वे चले गये हाथ झुलाते।"

"किस जनरल का सामान था वह ?" ग्रिगोरी ने आँखें सिकोड़ते और रासों के बीच बेसब्री से उंगलियाँ चलाते हुए पूछा।

फ़ौजी शरारत से मुस्कराया और बोला—"नाम तो मैं भूल गया। …क्या था भला ?…अरे भाई, आ न याद…! नहीं, उतर गया दिमाग़ से…खयाल नहीं आता ! मगर, आप बेकार ही उबल रहे हैं, ग्रिगोरी-पैन्तेलेयेविच ! ऊपरवाला जानता है कि सभी यही कर रहे हैं। जहाँ तक मेरा सवाल है, अगर दूसरे भेड़िये है, तो मैं तो मैमना हूँ सिर्फ़। मैंने तो नाम-भर को माल उड़ाया, पर दूसरों ने तो बीच सड़क में लोगों के कपड़े-लत्ते लूटे, उन्हें मादरजात नंगा किया, और जहाँ भी यहूदी लड़कियाँ हाथ लगीं, उनकी ज़बरदस्ती इज्जत ली। लेकिन, मैंने ऐसा कुछ नहीं किया। मेरी क़ानूनी बीवी है और क्या बीवी है ! औरत नहीं है, बिल्कुल स्टैलियन है !…नहीं, कोई वजह नहीं है कि आप मुझ पर नाराज़ हों। वैसे, रुकिए, जरा तो बतलाइए कि आप जा कहाँ रहे हो ?"

ग्रिगोरी ने उस फ़ौजी की तरफ़ झुककर उदास मन से विदा ली, अपने घोड़े को दुलकी में डाला और प्रोखोर से बोला—"आओ…बढ़ाओ घोड़ा।"

आगे बढ़ने पर ग्रिगोरी और प्रोखोर को एक-एक दो-दो या ज्यादा की गिनती में और कज्ज़ाक मिले। सभी घोड़ों पर सवार छुट्टियों पर जाते दीखे। अक्सर बगल से गुज़रीं गाड़ियाँ। इन गाड़ियों को दो-दो

घोड़े खींचते। इन पर लदा सामान तिरपाल या कम्बलों से ढंका और क़ायदे से बंधा-बंधाया रहता। इनके पीछे-पीछे रहते ख़ाकी ट्यूनिकों वाले घुड़सवार फ़ौजी। वे अपनी रक़ाबों के बल क़रीब क़रीब खड़े रहते। उनके गर्द से भरे और धूप से संवराए चेहरों से ज़िन्दादिली और खुशी टपकती। पर ग्रिगोरी पर नजर पड़ते ही वे घोड़ों को पूरी रफ़-तार से दौड़ाने लगते, सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाती, हाथ, जैसे कि किसी कमान पर, टोपियों के सिरों तक उठ जाते और फिर उनके और ग्रिगोरी के बीच काफ़ी फ़ासला हो जाने पर ही उनके मुंह से बोल फूटता।···

ऐसे में प्रोख़ोर की निगाह एक बार लूट के माल से लदी एक गाड़ी के साथ के घुड़सवारों पर पड़ी। दूर से ही मजाक के लहजे में बोला—"सौदागर चले आ रहे हैं।"

मगर, छुट्टी पर जाते जो भी लोग ग्रिगोरी को राह में मिले, वे सभी लूट का माल लादे जा रहे थे, यह कहना ग़लत होगा।···

ग्रिगोरी एक गांव के कुएं पर घोड़ों को पानी पिलाने के लिए रुका, तो बग़ल के अहाते से उभरते गाने के स्वर उसके कानों में पड़े। स्वरों के निखार, बहार और सफ़ाई से पता चलता कि गानेवाले जवान कज्ज़ाक़ हैं।

"लगता है, किसी फ़ौजी को रुख़सत किया जा रहा है!" प्रोख़ोर ने पानी से भरी बाल्टी कुएं से खींचते हुए कहा। पिछली शाम जो बोतल खाली हुई थी, उसने शराब की तलब जगा दी थी। इसलिए घोड़ों को जल्दी-जल्दी पानी पिलाते हुए प्रोख़ोर ने हँसते हुए तजवीज़ की—"क्या ख़याल है, पैन्तेलेयेविच? हम लोग भी चलें वहां? शायद रास्ते के लिए एक बोतल मिल ही जाए। झोंपड़ी पर छानी तो सरपत की है, मगर घर किसी अमीर आदमी का मालूम होता है।"

ग्रिगोरी राज़ी हो गया कि ठीक, चलो, देखा जाए कि जवान कज्ज़ाक को किस तरह अलविदा कही जा रही है! बस तो, बाड़ से घोड़े बांधने के बाद, वह प्रोख़ोर के साथ अहाते में घुसा। शेड के नीचे चार गोल नांदों के पास, चार कसे हुए घोड़े खड़े नजर आए। एक लड़का जई लेकर खत्ती से बाहर निकला। उसने ग्रिगोरी को एक निगाह

देखा और हिनहिनाते घोड़ों की तरफ़ बढ़ा। झोंपड़ी के कोने से संगीत के स्वर हवा की लहरों पर लहराते आए। कोई ऊँची, गूंजती आवाज में गाता लगा—

"राह कि उस पर कदम धरा था।
नहीं किसी ने···
नहीं किसी ने···

एक मोटी, घुर्राई-सी आवाज ने अंतिम शब्द दोहराये और फिर गाने वाले के स्वर में अपने स्वर मिलाये। इसके बाद और लोगों ने साथ दिया। इस तरह गीत का शानदार प्रवाह चलता रहा और अपना विस्तार करता रहा। वातावरण में उदासी घुलती रही। ग्रिगोरी ने गानेवालों के रस में विघ्न न डालने के विचार से प्रोखोर की आस्तीन पर हाथ रखा और धीरे से बोला—"ज़रा रुको···उनकी निगाह अभी तुम पर न पड़े···गाना खत्म हो जाने दो।"

"यहाँ कोई रुख़सत-वुख़सत नहीं हो रहा। येलान्स्काया के कज़्ज़ाक तो हमेशा इसी तरह गाते हैं। लेकिन, ये शैतान के बच्चे गा लेते हैं, यह कौन कमँ है!" प्रोखोर ने सराहना-से भरकर कहा, परन्तु साथ-ही-साथ क्रोध से ज़मीन पर थूका भी, जैसे कि शराब की अपनी उम्मीद उसे खाली जाती लगी हो।

दूसरी ओर, सुरीली आवाज ने एक खास कज़्ज़ाक की ज़िन्दगी की कहानी का अन्त स्वरों में बुन दिया। कज़्ज़ाक ने लड़ाई के मैदान में अपनी इज़्ज़त के साथ खिलवाड़ किया था—

राह कि उस पर क़दम धरा था नहीं किसी ने···
और, न घोड़े का साया ही कभी
वहाँ पर कहीं पड़ा था···
लेकिन, एक बार क्या हुआ कि कज़्ज़ाकों की
रेजीमेंट के लोग उधर से होकर निकले···
वे सब घोड़ों पर सवार थे,
और कि उनके पीछे-पीछे, सधा और मँजा हुआ भी, घोड़ा सरपट
दौड़ रहा था—

उसकी रग-रग में
बहता था खून न कोई मामूली-सा
बल्कि आग की आग रवाँ थी
और, झूलती थी बाजू से
शानदार, भड़कीली काठी
और रेशमी रासें उसकी
और लगाम तक लटक रही थीं···
उसके पीछे चला आ रहा था भागा कज़ज़ाक
जवानी का पुतला-सा
गला फाड़कर चीख रहा था
'रुको···जरा रुक जाओ···मेरे वफ़ादार, अलबेले घोड़े···
आज ज़रूरत मुझे तुम्हारी,
ऐसे में न मुझे छोड़ो तुम···
वरना इन चेचनों का यह गुस्सा मुझको निगल जायेगा···'

ग्रिगोरी झोंपड़ी की पुती हुई मुंडेर के पास, गीत के जादू से बँधा-सा खड़ा रहा। इस बीच न घोड़े की हिनहिनाहट उसके कानों में पड़ी और न सड़क से गुज़रती गाड़ियों की खड़खड़ाहट उसने सुनी।

गीत समाप्त हुआ तो एक गानेवाला खाँसा और बोला—

"यह हुआ गाना। पूरे मन से गाया हमने! औरतो, इसके बदले में तुम्हें फ़ौजियों के रास्ते के लिए कुछ और देना चाहिए। जहाँ तक खाने का सवाल है, यहाँ हमने भरपेट खाया···ईसा का लाख-लाख शुक्र··· मगर राह में मुँह में डालने को हमारे पास कुछ भी नहीं है···"

ग्रिगोरी ने संगीत का जादू काटा और टहलता हुआ नुक्कड़ पर आया। यहाँ दरवाजे के नीचे की आखिरी सीढ़ी पर बैठे दीखे चार कज़्ज़ाक और उनके चारों तरफ़ नजर आई आसपास की औरतों और बच्चों की भीड़।

ये सभी लोग आह भरते, सिसकते और रूमालों के सिरों से अपने-अपने आँसू पोंछते रहे। और ग्रिगोरी सीढ़ियों पर चढ़ा तो लम्बे क़द, काली आँखों और देव-मूर्ति-सुलभ सौन्दर्य के मुरझाये हुए ठस चेहरेवाली

एक बुढ़िया लम्बी-लम्बी सांसों के बीच कहती सुन पड़ी—"कैसा अच्छा गाते हो तुम ! कितना दर्द है तुम्हारे गाने मे, बेटो ! मेरा ख़याल है कि तुम सबकी माएँ होंगी और इनमें से हर मां लड़ाई के मैदान में अपनी ज़िन्दगी से खेल रहे अपने बेटे की बात सोच-सोचकर घुली जा रही होंगी ···रो-रोकर अंधी हुई जा रही होंगी।"

इसी बीच ग्रिगोरी ने भीड़ का अभिवादन किया तो बुढ़िया की पीली-सफेद आंखें बिजली की तरह कौंध उठीं। वह सहसा ही गुस्से से भर उठी। बोली—"और, हुजूर, आप इन फूलों को मौत का रास्ता दिखलाते हैं···है न ? आप इन्हें दूर-दूर ले जाते हैं और ले जाकर लड़ाई के मैदान में कटवा देते हैं।"

"हम खुद भी तो मारे जाते हैं, बूढ़ी-मां !" ग्रिगोरी ने भावों में डूबे-ही-डूबे कहा।

कज्ज़ाकों ने एक अजनबी अफ़सर को वहां देखा तो फुर्ती से उछल-कर खड़े हो गए, सीढ़ियों पर रखी तश्तरियां बचे-खुचे खाने-सहित एक तरफ़ खिसका दीं, ट्यूनिकें दुरुस्त कर लीं और राइफलों की पट्टियां और अपनी पेटियां कस लीं। वे तो राइफल कंधे पर चढ़ाए-ही-चढ़ाए गाते रहे थे। उनमें से सबसे सयाने कज्ज़ाक की उम्र पच्चीस साल से अधिक न थी···।

"कहां के हो तुम लोग ?" ग्रिगोरी ने फ़ौजियों के ताज़ा, जवानी से भरे चेहरों पर नज़र दौड़ाते हुए पूछा।

"हम लोग एक रेजीमेंट के हैं···" चपटी नाक वाले एक कज्ज़ाक ने यों ही ढीले-ढाले ढंग से जवाब दिया। उसकी आंखों से मज़ाक टपका।

"मेरा मतलब कि तुम पैदा कहां हुए थे···रहने वाले कहां के हो ? यहां के रहनेवाले तो नहीं हो न ?"

"हम लोग येलान्स्काया के हैं और इस वक्त छुट्टी पर जा रहे हैं, हुजूर !"

ग्रिगोरी ने गायक को आवाज़ से पहचाना और मुस्कराते हुए पूछा—"तुम्हीं तो गा रहे थे न ?"

"जा हाँ।"

"क्या कहने हैं···तुम्हारी आवाज बहुत ही अच्छी है। मगर, तुम गा क्यों रहे थे? खुशी के लिए? नशे में तो तुम मालूम होते नहीं!"

गर्द से नहाये, चौड़े माथे और तमतमाए हुए साँवले गालों वाले एक लम्बे, कम-उम्र फ़ौजी ने बुढ़िया की तरफ़ तिरछी नजर से देखा और परेशानी से मुस्कराते हुए, संकोच के साथ उत्तर दिया—"क्या खयाल है आपका? कौन-सी खुशी हो सकती है हमें? जरूरत है कि हमसे गवा भी लेती है। इन इलाकों में जिन्दगी कुछ यों ही है। लोग क़ायदे से खिलाते-पिलाते नहीं···एक टुकड़ा रोटी दे दी तो दे दी, और बस! इसलिए हमें गाने की सूझती है! गाना छेड़ते ही सभी औरतें दौड़ी चली आती हैं। फिर हम दर्द से भरी कोई तान छेड़ देते हैं और इस तान का औरतों के दिलों पर बड़ा असर पड़ता है। इसके बाद वे चरबी या हंडिया-भर दूध या कोई दूसरी अच्छी चीज खाने को ला देती हैं···

"हम तो एक तरह के फ़कीर है, कैप्टन···गाते है और खैरात जुटाते हैं!" गायक ने अपने साथियों की तरफ़ देखकर आँख मारते हुए कहा। आँखें परिहास से सिकुड़ उठीं।

एक कज्जाक ने एक चिकटहा कागज अपनी सीने वाली जेब से निकाला और ग्रिगोरी की तरफ बढ़ाते हुए बोला—"यह है हमारी छुट्टी का पर्चा।"

"मुझे भला इसकी क्या जरूरत?"

"शायद आपका खयाल हो कि हम भाग रहे है।"

"ठीक है···इसे तो मुठभेड़ होने पर सजा देने वाली फ़ौजी टुकड़ी को दिखलाना।" ग्रिगोरी ने थोड़ा खीजते हुए कहा। लेकिन इस पर भी उनसे अलग होने के पहले सलाह देते हुए बोला—"तुम्हें चाहिये कि तुम रात में मंजिल तय करो और दिन में "कहीं-न-कहीं" टिक रहो। यह क़ागज़ बिलकुल बेकार है। देखना कहीं ऐसा न हो कि इसकी वजह से कहीं किसी मुसीबत में फँस जाओ। इस पर मुहर लगी है?"

"हमारी स्क्वैड्रन के पास मुहर नहीं है।"

"खैर तो खयाल रखो और काल्मीकों के बेंतों से अपनी खाल उधड़वाने का इरादा न हो तो मेरी सलाह पर चलो।"

गांव के बाहर, कोई तीन वर्स्ट के फ़ासले पर, सड़क के सिरे तक फैले छोटे जंगल के पास ही ग्रिगोरी को फिर दो घुड़सवार अपनी ओर आते दीखे। ये लोग ठिठके, एक क्षण तक घूरते रहे और फिर तेज़ी से मुड़कर जंगल में घुस गये।

"लगता है कि इनके पास काग़जात नहीं हैं।" प्रोखोर ने दलील देते हुए कहा—"तुमने देखा कि ये लोग किस तरह मुड़े और कैसे पेड़ों के बीच ग़ायब हुए? शैतान के बच्चे, ये दिन में घुड़सवारी करते ही क्यों हैं?"

फिर तो ग्रिगोरी और प्रोखोर को दिन में कितने ही ऐसे लोग मिले, जिन्होंने इन पर नज़र पड़ते ही अपने घोड़े मोड़े और फिर कहीं छिप रहने की हड़बड़ी में अपने हाथ-पैर फुला लिये। होते-होते ऐसे ही एक सयानी उम्र का कज्ज़ाक पैदल, चोरी-चोरी. घर की तरफ बढ़ता मिला। वह तो ग्रिगोरी को देखते ही सूरजमुखी के एक खेत में धँस गया और सिरे पर खरगोश की तरह बैठ गया। ग्रिगोरी उधर से गुज़रा तो प्रोखोर रक़ाबों के सहारे तना और चीखा—"ऐ···देहाती··· इस तरह नहीं छिपा करते! तुमने सिर तो छिपा लिया है, मगर चूतड़ नज़र आ रहे हैं।"···और, फिर गरम होते हुए बोला—"सुनते हो···बाहर आओ निकलकर···ज़रा काग़जात तो दिखलाओ अपने!"

कज्ज़ाक उछलकर खड़ा हुआ और दोहरा होता हुआ सूरजमुखी के पौधों के बीच से भागा। प्रोखोर ठठाकर हँसा और उसने घोड़ा दौड़ाकर आदमी का पीछा करना चाहा, पर ग्रिगोरी ने उसे रोक दिया। "बेकार की बेवक़ूफ़ी न करो! भाड़ में झोंको उसे! वह तो तब तक दौड़ता जाएगा जब तक कि बेदम होकर गिर नहीं पड़ेगा! हो सकता है कि डर के मारे मर तक जाये···"

"तुम बिलकुल ग़लत कह रहे हो···भेड़िये के मेल से पैदा हुआ कुत्ता तक उसे पकड़ नहीं सकता। पूरे दस वर्स्ट तक वह सांस न

सेगा कहीं । तुमने उन्हें मूनगमूनी के बीच दौड़ते देखा ? पता नहीं कि ऐसे जमाने में आदमी में इतनी ताकत आती कहाँ से है ! इसके बाद ग्रोलोर ने इन भागने वालों को कुछ आम बुराई की और फिर बोला—"कैसे गिरोह बनाकर, घोड़ों पर सवार होकर चलते हैं ! जैसे कि मटर हों, और बोरे से भरभराकर निकले चले आ रहे हों । जरा हालत सुधारो, पैन्तेलेयेविच, वरना मोर्चा सम्हालने को तुम्हारे और मेरे सिवाय और कोई बचेगा नहीं ।"

फिर तो, ग्रिगोरी जितना आगे बढ़ा, उतने ही अधिक प्रमाण दोन-सेना की अनैतिकता के मिले और तब मिले जब विद्रोहियों की कुमुक की सहायता से सेना ने उत्तरी मोर्चे पर बड़ी-से-बड़ी सफलताएँ प्राप्त कीं । मगर, इसके बाद सेना दुश्मन पर कोई बड़ा हमला करने और उसकी कलाई मरोड़ने की स्थिति में ही न रही । और तो और, वह तो ऐसी भी न रही कि कोई बड़ा हमला हो तो उसका सामना तक कर सके ।

जिन ज़िला-केन्द्रों और गाँवों में अगले मोर्चे की रिज़र्व फ़ौजी टुकड़ियाँ पड़ाव डाले रहतीं वहाँ अफ़सर बराबर शराब के नशे में धुत मिलते । लूट के तरह-तरह के माल से लदी मालगाड़ियाँ बोझ से जैसे कराहतीं, पर अभी तक मोर्चे के पिछले हिस्से की तरफ़ रवाना न हो पातीं । किसी भी फ़ौजी टुकड़ी में साठ प्रतिशत से अधिक लोग न मिलते । कज्जाक बिना इजाजत लिये छुट्टियों पर चल देते और स्तेपी का चक्कर लगानेवाली सजा देने वाली फ़ौजी टुकड़ियाँ इस बाढ़ को किसी तरह रोक न पातीं । सरातोव प्रान्त के अधिकृत गाँवों में कज्जाक इस तरह व्यवहार करते, जैसे कि वे देश के बाहर हों और उन्होंने वे इलाके जीत लिये हों । वे आम लोगों को लूटते, औरतों की जबरदस्ती इज्जत उतारते, अनाज के भंडार बरबाद कर देते और ढोरों को काटकर फेंक देते । सिर मुड़े जवान और पचास साल से ऊपर की उम्र के लोग फ़ौज में शामिल किये जाते । आगे बढ़ने वाली फ़ौजों में लोग खुल्लमखुल्ला न लड़ने की बातें करते और वोरोनेज़ की तरफ़ बढ़ रही सेनाओं के लोग अफ़सरों का हुक्म मानने से साफ़-साफ़

इन्कार कर देते। मोर्चे पर अफ़सरों के मारे जाने तक की अफ़वाहें जहाँ-तहाँ सुनाई पड़ती।···

ऐसे में दोनों वक्त मिले कि ग्रिगोरी वालाशोव के पास के एक गाँव में रात काटने को रुका। जरा ज्यादा पुरानी भर्ती के कज्जाकों की चौथी रिज़र्व स्क्वैड्रन और तगानरोग-रेजीमेंट की इंजीनियरों की एक कम्पनी वहाँ के सभी रिहायशी मकानों में ठहरी मिली। नतीजा यह कि ग्रिगोरी को अपने लिए जगह खोजने में काफ़ी वक्त लगाना पड़ा। यों तो कई बार की तरह इस बार भी वह खेतों में ही रात गुज़ार देता, पर हुआ यह कि इस बीच पानी बरसने लगा और प्रोखोर मलेरिया के ज़ोर से सिर से पैर तक काँपने लगा। इस तरह कोई छायादार जगह और ज़रूरी हो उठी।

गाँव के नुक्कड़ पर देवदार के पेड़ों से घिरे एक बड़े मकान के पास तोप के गोले की शिकार एक बख्तरबन्द गाड़ी खड़ी नजर आई। ग्रिगोरी बग़ल से गुज़रा तो उसने उसके हरे बाज़ू पर अंकित, अब तक स्पष्ट, शब्द पढ़े—'मौत ले जाए गोरे गलीजों को' और नीचे गाड़ी का नाम 'तेहा'। अहाते से बँधे घोड़ो की हिनहिनाहट और लोगों की बातचीत की आवाज कानों में आई। घर के पीछे बाग़ में अलाव दहकता और पेड़ों के हरे सिरों के ऊपर धुआँ लहराता नज़र आया। आग की रोशनी में कज्जाक अलाव के चारों ओर इधर-उधर आते-जाते दीखे। फूस और सुअर के बालों की जलायँध हवा में लटकी-सी मालूम हुई।

ग्रिगोरी घोड़े से उतर, घर के अन्दर गया, और लोगों से भरे नीची छतवाले कमरे में घुसते हुए बोला—"कौन है इस घर का मालिक ?"

"मैं हूँ मालिक···क्या चाहिए आपको ?" स्टोव की टेक लगाकर बैठे, एक मोटे-से किसान ने मुड़कर ग्रिगोरी की ओर देखा, लेकिन अपनी जगह से टस-से-मस न हुआ।

"हम रात बिता सकते हैं यहाँ···दो आदमी है ?"

"तरबूज मे जैसे बीज भरे रहते हैं, वैमे ही यहाँ लोग पहले से ही भरे हुए हैं"। बेंच पर लेटे एक सयानी उम्र के कज्जाक ने जरा सख्ती

से जवाब दिया।

"मुझे तो कुछ नहीं, मगर यहाँ जगह बिल्कुल नहीं है।" मकान-मालिक ने क्षमा माँगते हुए कहा।

"जगह तो हम खुद बना लेंगे···मगर बरसात में बाहर तो नहीं रह सकते न!" ग्रिगोरी ने आग्रह किया—"मेरे साथ मेरा अर्दली है और वह बीमार है।"

बेंच पर लेटा कज्जाक बुदबुदाया और जमीन पर पैर गिराते और ग्रिगोरी की तरफ़ घूरकर देखते हुए, बिल्कुल दूसरे ही लहजे में बोला—"हुजूर, दो छोटे-छोटे कमरों में हम चौदह आदमी हैं। बाक़ी एक कमरा एक अंग्रेज अफ़सर ने ले रखा है और उसके साथ भी हमारा एक अफ़सर टिका हुआ है।"

"शायद आप उन लोगों के साथ रह सकें।" सफ़ेद बालों से भरी दाढ़ीवाले एक दूसरे नॉनकमीशन अफ़सर ने उसके कन्धे की पट्टियों से उसका फ़ौजी ओहदा समझा और मित्रतापूर्ण ढँग से कहा।

"नहीं, मैं यहीं रहना पसन्द करूँगा। मुझे ज्यादा जगह की जरूरत नहीं। फ़र्श पर ही पड़ रहूँगा। मेरी वजह से यहाँ किसी को तकलीफ़ नहीं पहुँचेगी।" ग्रिगोरी ने अपना बरानकोट उतारा, हथेली से सिर के बाल ठीक किए और मेज के किनारे बैठ गया। प्रोखोर घोड़ों के इन्तज़ाम के लिए बाहर चला गया।···

कहना न होगा कि यह सारी बातचीत बगल के कमरे में बाक़ायदा सुनाई पड़ी, क्योंकि पाँच मिनट बाद दरवाजा खुला और एक चुस्त-सा नाटे क़द का लेफ़्टिनेंट बाहर आया। पूछने लगा—"आप सोने के लिए जगह तलाश कर रहे हैं?" फिर ग्रिगोरी के कन्धे की पट्टियों पर तेजी से निगाह दौड़ाते हुए विनय से मुस्कराया और बोला—"आप मेरे कमरे में क्यों नहीं आ जाते, स्क्वैड्रन कमाण्डर साहब? मेरे साथ ब्रिटिश फ़ौज के लेफ़्टिनेंट कैम्पबेल भी आपको वहाँ ठहरने की दावत देते हैं। हमारे साथ आपको कहीं ज्यादा आराम रहेगा।···मेरा नाम श्चेग्लोव है···और आपका नाम?" उसने ग्रिगोरी से हाथ मिलाया और प्रश्न किया—"आप मोर्चे से आ रहे हैं?···हूँ आप छुट्टी पर

आ रहे हैं। आइए, आइए, अन्दर आइए···हमें आपके साथ से बड़ी खुशी होगी। आप शायद भूखे भी होंगे। कुछ-न-कुछ तो होगा ही हमारे पास आपके खाने के लिए।"

लेफ़्टिनेंट की बेदाग़, हरी वर्दी पर सन्त जार्ज-क्रॉस झूलता रहा। उसके बूट बहुत ही होशियारी से चमकाए गए लगे। उसके सफ़ाचट चेहरे, बने-सँवरे व्यक्तित्व और आसपास की हर चीज से सफ़ाई टपकती रही। उसके बदन से उभरने वाली यूडीक्लोन की खुशबू से हवा महमह करती रही।

वह ग्रिगोरी को रास्ता देने के लिए एक ओर को हटते हुए बोला—"दरवाजा बायीं तरफ है। खयाल से चलिए—रास्ते में एक बक्सा रखा हुआ है।"

कमरे में नज़र आया एक अंग्रेज़—गठीला, मजबूत बदन, भूरी आँखें, ऊपरी होंठ के गहरे दाग़ पर पर्दा डालती-सी घनी, काली मूँछें।

लेफ़्टिनेंट कैम्पबेल, ग्रिगोरी को देखते ही उससे मिलने को उठ खड़ा हुआ। रूसी लेफ़्टिनेंट ने दोनों का परिचय एक-दूसरे से कराया और कुछ अंग्रेजी में कहा। अंग्रेज ने ग्रिगोरी से हाथ मिलाया। अभी दुभाषिए की ओर देखते हुए कुछ शब्द कहे और उन्हें बैठने का इशारा किया।

कमरे के बीचों-बीच चार कैम्प-बेड एक क़तार में खड़े दीखे। कोने में बक्सों, किटबैगों और चमड़े के सूटकेसों का अम्बार लगा मिला। एक बड़े बक्से पर दूरबीन के केस, कारतूसों के बक्से और काले कुंदे और हलके-हलके चमकने वाली, नई नलीवाली कारबाइन राइफ़ल के साथ एक हलकी मशीनगन रखी नज़र आई। इस क़िस्म की मशीनगन ग्रिगोरी ने इसके पहले कभी न देखी थी।

लेफ़्टिनेंट ने धीमे मधुर स्वरों में कुछ कहा और मेहमान पर स्नेह-भरी नजर डाली। ग्रिगोरी ने अनजानी, विदेशी भाषा तो नहीं समझी, पर अपने को ही पूरी बातचीत का विषय अनुभव कर थोड़ा-सा अटपटा जरूर महसूस किया। रूसी-लेफ़्टिनेंट ने मुस्कराते हुए अंग्रेज

की बात सुनी और एक सूटकेस में हाथ डालते हुए बोला—"लेफ्टिनेंट कैम्पबेल का कहना है कि वे कज्जाकों की बड़ी इज्जत करते हैं। उन्हें घुड़सवार और शानदार लाजवाब सूरमा समझते हैं।···आप कुछ खाना पसन्द करेंगे ? पीते हैं आप ? लेफ्टिनेंट कैम्पबेल कहते हैं कि एक खास खतरा बराबर बढ़ रहा है···खैर···जाने क्या-क्या बकवास कर रहे हैं वे।"

लेफ्टिनेंट ने सूटकेस से कई टीन और ब्रैंडी की दो बोतलें निकालीं। फिर बक्से पर झुका। मगर, दुभाषिये का काम करता रहा—"कैम्पबेल कहते हैं कि उस्त-मेदवेदित्स्काया में कज्जाक अफ़सरों ने उनकी बड़ी खातिर की। उन्होंने दोन की शराब से लबालब लम्बे-चौड़े पीपे का पीपा खाली कर दिया। हर आदमी पीते-पीते लुढ़क गया। फिर कुछ स्कूली लड़कियों के साथ खासा रँग रहा। आप जानते हैं कि अब हालत क्या है ? अब यह उस मेहमान-नवाजी का बदला चुकाना अपना हसीन फर्ज समझते हैं। शिकार आप होंगे। खैर मुझे अफसोस है मगर हो क्या सकता है···आप पीते तो हैं ?"

"शुक्रिया···पीता हूँ।" ग्रिगोरी ने सड़क की गर्द और काठी के चमड़े की कालिख से काले अपने हाथों पर निगाह डालते हुए कहा।

लेफ्टिनेंट ने टीन मेज़ पर रखे और उन्हें सधे हुए हाथों से चाकू से खोला।

"आप जानते हैं, इस अंग्रेज सुअर के बच्चे ने हलाकान कर मारा मुझे। खुद सुबह से शाम तक पीता है। ढालता ही चला जाता है। वैसे पीना-वीना मुझे बुरा नहीं लगता, मगर इस तरह धुआँधार पीना मेरे बस की बात नहीं।" उसने पहले अंग्रेज की ओर देखा और फिर आश्चर्यचकित ग्रिगोरी की ओर—"यह तो खाली पेट भी ताबड़तोड़ पीता है।"

अंग्रेज लेफ्टिनेंट ने मुस्कराकर सिर हिलाया और टूटी-फूटी रूसी में बोला—"हाँ-हाँ···हमें आपकी सेहत का जाम तो पीना ही चाहिए।"

ग्रिगोरी हँसा और उसने माथे पर झूलते बाल पीछे झटके।

उसे दोनों अफ़सर पसंद आए। उस पर अंग्रेजी अफ़सर की अर्थहीन मुस्कराहट और रूसी बोलने का बेहूदा तरीक़ा तो उसे और भी प्यारा लगा।

गिलास पोंछते हुए लेफ़्टिनेंट बोला—"पिछले दो हफ़्तों से लटका रखा है साहब बहादुर ने मुझे अपने गले में···क्या ख़याल है? ये हमारे फ़ौजियों को, हमारी दूसरी कोर को मिले टैंक चलाना सिखलाते हैं, और इस सिलसिले में मुझे इनका दुभाषिया बना दिया गया है। मैं बिना अटके खटाखट अंग्रेज़ी बोलता हूं, यही मेरे गिरने की वजह है···हमारे यहां के लोग भी पीते हैं, लेकिन इस तरह नहीं पीते। आप खुद देखिए कि कितनी बर्दाश्त है इनकी। अगर यह धीरे-धीरे पिएं तो दिन-भर में ब्रैंडी की चार-पांच बोतलें खाली समझिए। मजा यह है कि नशा इन्हें कभी नहीं होता। इस तरह की पिलाई के बाद चाहिएगा तो क़ायदे से काम भी कर देंगे। मैं तो हार मान गया। मेरे पेट में कुछ गड़बड़ी हो गई है। मैं हर दिन सोकर उठता हूं तो मेरा दिमाग़ बहुत ही खराब रहता है···सारा तन-बदन शराब से इस तरह बसा रहता है कि जलते हुए चिराग़ के सामने बैठने में डर लगता है···शैतान ही जाने कि यह हुआ क्या?" इस बीच उसने दो गिलास तो ऊपर तक भर दिए, मगर अपना गिलास थोड़ा ही भरा।

गिलास की तरफ़ देखते और हँसते हुए अंग्रेज बड़ी जिन्दादिली से बातें करने लगा। रूसी लेफ़्टिनेंट ने ज्यादा न पिलाने की मिन्नत के लिए, अपना हाथ सीने पर जमाए-ही-जमाए उसे जवाब दिया और जब-तब ही क्षण-भर को उसकी काली, स्नेह-भरी आंखें बेचैनी से चमक उठीं।

ग्रिगोरी ने अपने मेहमान-नवाज मेजबानों के गिलासों से अपना गिलास लड़ाया और पूरी शराब एक घूंट में ही साफ़ कर गया।

'वाह!' अंग्रेज ने तारीफ़ की और अपना गिलास चाटते हुए, उतनी ही नफ़रत से अपने दुभाषिये की ओर देखा।

इस बीच अंग्रेज,लेफ़्टिनेंट के मेहनतकशों के-से बड़े-बड़े हाथ मेज पर रखे रहे। उसकी खाल के रंध्रों में जहां-तहां ग्रीज के निशान

दीखते रहे। खाल पेट्रोल के इस्तेमाल और पुराने दागों के कारण काफ़ी खुरदरी लगी। परन्तु उसका चेहरा भरा हुआ, चिकना और लाल नजर आया। यानी, उस आदमी के चेहरे और हाथों के रंग के बीच ग्रिगोरी को इतना अन्तर समझ पड़ा कि एक वार तो वह उसके चेहरे के ऊपर एक बनावटी मुखड़े तक की बात सोच गया।

"आप मेरी जान बचा रहे हैं।" रूसी लेफ़्टिनेंट ने साथियों के गिलास लबालब भरते हुए कहा।

"यह साहब अकेले नहीं पीते?" ग्रिगोरी ने पूछा।

"यही तो मुसीबत है। सबेरे तो वे अकेले पी लेते हैं, मगर शाम को इनसे गाड़ी अकेले नही चलती। अच्छा, तो उठाइए गिलास···"

"काफ़ी तेज़ है शराब···" ग्रिगोरी ने चुस्की ली, लेकिन इस पर अंग्रेज़ को ताज्जुब करते देखा, तो पूरा गिलास फिर एक वार में ही खाली कर दिया।

"लेफ़्टिनेंट आपको विचित्र आदमी बतला रहे हैं···आपके पीने का ढंग इनको बहुत पसंद है।

"आइए, आप चाहें तो हम आपस में अपने-अपने काम की अदला-बदली कर लें।"

"मेरा पूरा यकीन है कि उस हालत में आप पन्द्रह दिन में इन्हें छोड़-कर भाग खड़े होंगे।"

"लेकिन आपका काम तो बहुत ही मज़ेदार है, क्यों?"

"लेकिन मैं इस मजेदार काम से किसी भी लमहा छुटकारा ले सकता हूँ।"

"पर मोर्चे की हालत तो उससे भी बुरी है।"

"यह भी एक मोर्चा ही है···वहाँ आप गोली या तोप के गोले के किसी टुकड़े के शिकार हो सकते हैं, पर यह होना ऐसा कुछ तय नहीं है···मगर यहाँ मुझे तपेदिक होना बिल्कुल तय है···टीन से कुछ फल लीजिए न···जाँघ के गोश्त का टुकड़ा लेंगे थोड़ा-सा?"

"शुक्रिया···मेरे पास भी थोड़ा-सा है।"

"अंग्रेज़ इस मामले में अच्छा होता है···वे अपने फ़ौजियों को वैसे

नहीं खिलाते-पिलाते, जैसे हम खिलाते-पिलाते हैं।"

"यानी हम अपने फ़ौजियों को खिलाते-पिलाते हैं ? हमारी फ़ौज अपने गाँव-गिरांव से काफी दूर रहती है।"

"बदक़िस्मती की बात है, मगर बात बिल्कुल सच है। यह खिलाने-पिलाने का तरीक़ा ही तो है कि हमारे फ़ौजी बहुत दूर तक पहुँच नहीं पाते। और यह सूरत और खास ढँग से सामने आती है। ये मौक़ा भी देते हैं कि व जब चाहें, जैसे चाहें लोगों को लूटें-खसोटें।"

ग्रिगोरी ने रूसी लेफ़्टीनेंट को ग़ौर से देखा और पूछा—"क्या आपको दूर जाने की उम्मीद है ?"

"हम सबका रास्ता एक ही है······आप पूछते क्यों हैं ?" लेफ्टिनेन्ट ने नहीं देखा, पर इसी बीच अंग्रेज ने बोतल उठाई और उसका गिलास ऊपर तक भर दिया।

"अब तो आपको पीना ही पड़ेगा।" ग्रिगोरी मुस्कराया।

"हे भगवान् !" लेफ्टिनेन्ट ने अपना गिलास देखा और उसके मुँह से आह निकल गई। गालों पर हल्की लाली दौड़ गई।

तीनों ने, मुँह से बिना कुछ बोले, अपने गिलास आपस में लड़ाए।

"हाँ, यह ठीक है कि हम सबका रास्ता एक है, मगर रास्ते पर बढ़ने का ढंग बिल्कुल अलग है···" फिसलन से भरे आड़ू में अपना काँटा गड़ाने की बेकार कोशिश करते और त्यौरी चढ़ाते हुए ग्रिगोरी ने बात आगे बढ़ाई—"नतीजा यह है कि हममें से कुछ लोग मंजिल पहले पूरी करेंगे और कुछ लोग बाद में···सारा नक़्शा गाड़ियों के सफ़र जैसा है···"

"क्या आपका इरादा आखिर तक सफ़र करने का है ?"

ग्रिगोरी ने नशे का अनुभव तो किया, पर नशे में चूर होने की हद से अब भी काफ़ी दूर रहा। इसलिए मुस्कराते हुए बोला—"पूरे सफ़र के टिकट के लिए रकम कहाँ से लाऊँगा ! आपकी क्या हालत है ?"

"मेरी हालत···मेरी हालत जरा दूसरी है···यानी···अगर गाड़ी न मिली तो मैं बाक़ी मंजिल पैदल ही तय कर डालूँगा।"

"ठीक, तो आपकी मुराद पूरी हो ! आइए, पिया जाए !"

"चलेगा नहीं अब···"

अंग्रेज लेफ्टिनेन्ट ने ग्रिगोरी और दुभाषिए के गिलासों से अपना गिलास लड़ाया और चुपचाप पी गया। खाया लगभग कुछ नहीं। इस बीच उसका चेहरा ईंट की तरह लाल हो उठा, आँखें कहीं ज्यादा चमकने लगीं और हरकतों में जानी-समझी सुस्ती नजर आने लगी। फिर इसकी बोतल के खाली होने के पहले वह कोशिश से उठा, जमे हुए क़दमों से सूटकेसों तक गया, ब्रँडी की तीन बोतलें और निकाल लाया, होंठों-ही-होंठों मुस्कराया और भारी आवाज में कुछ बोला। दुभाषिये ने कहा—"लेफ्टिनेन्ट-कैम्पबेल कहते हैं कि यह लुत्फ़ अभी और चलना चाहिए। शैतान ले जाए इसे !···आपकी तबियत तो ठीक है ?"

"बिल्कुल ठीक है।" ग्रिगोरी ने जवाब दिया।

"क्या बर्दाश्त है इस शख्स की ! आदमी का बदन अंग्रेज का है, मगर रूह रूसी सौदागर की है। मेरा खयाल है कि मेरा चेहरा नशे से तमतमा रहा है···"

"आपको नशा-वशा कुछ नहीं मालूम होता।" ग्रिगोरी ने झूठ बात कही।

"सचमुच ! मगर इस मामले में तो मुझे आप कुँआरी लड़की समझिए। बिल्कुल कमजोर हूँ। लेकिन, अभी तक तो अपनी जिम्मेदारियाँ अदा करने लायक़ हूँ···जी हाँ, अपनी जिम्मेदारियाँ पूरी तरह अदा कर सकता हूँ।"···

रूसी लेफ्टिनेण्ट भरा हुआ गिलास खाली कर देने के बाद कुछ गड़बड़ा चला था। उसकी काली आँखों में चिकनाहट-सी आ गई थी, और पलकें रह-रहकर झपने लगी थीं। चेहरे की मांसपेशियाँ ढीली हो गई थीं और होंठ इशारे पर चलने से इन्कार करने लगे थे। चिकने गालों पर जहाँ-तहाँ बल पड़ गए थे। चेहरे से ऐसा लगता था, जैसे कि वह आदमी न होकर बैल हो, किसी ने अभी-अभी पंचसेरा हथौड़ा उसके सिर पर दे मारा हो।

"आप तो अब भी पूरी तरह ठीक हैं। शायद आपको पीने की आदत पड़ गई है और अब शराब आप पर असर करती नहीं।" ग्रिगोरी

अपना रंग दिखल। प
ने कहा। पर, अब तो खुद उस पर भी गिलास
थे। लेकिन, अनुभव वह यों कर रहा था, जैसे कि जाने कितनी ढालने
की ताब अब भी उसमें हो।

"आप यह बात मज़ाक में तो नहीं कह रहे हैं न ?" रूसी लेफ्टि-
नेण्ट ने खुशी से खिलते हुए कहा—"वैसे शुरू-शुरू में तो मुझे कुछ अट-
पटा लग रहा था, लेकिन अब तो मैं किसी भी हद तक जाने के लिए
तैयार हूँ। किसी भी चीज़ के लिए तैयार हूँ। यों मुझे आप पसन्द आए
कैप्टन साहब, आपमें कुछ है जिसके पैर मजबूत हैं, और जो अपने-
आपमें ईमानदार है। मुझे यह बात खूब भाई है। तो आइए, अब इस
पियक्कड़ गधे के मुल्क का जाम पी डालें। मैं जानता हूँ कि यह आदमी
जानवर है, मगर उसका मुल्क ताज्जुब में डाल देने वाला है। ब्रिटेन,
लहरों पर हुकूमत करो! हाँ, तो, फिर उठायें गिलास ? मगर एक बार
में ही पूरा गिलास खाली कर देने की नहीं रही!···यह जाम है आपके
मुल्क की सलामती का, मिस्टर कैम्पबेल!" रूसी लेफ्टिनेण्ट ने अपना
चेहरा मायूसी से सिकोड़ा, गिलास होंठों से लगाया और इसके बाद
घुटने के गोश्त का एक टुकड़ा मुँह में डाला—"अजीब मुल्क है ब्रिटेन,
स्क्वैड्रन कमांडर···आप सोच नही सकते, लेकिन मैं तो वहाँ रहा हूँ।
तो, पिया जाए फिर!"

"वह मुल्क चाहे जैसा भी क्यों न हो, पर अपनी माँ, हमेशा दूसरे
की माँ से ज्यादा प्यारी होती है।"

"इस बात की बहस में इस वक़्त मैं नहीं पड़ूँगा···आइए पिएँ।"

"आइए।"

"हमारे मुल्क में बहुत-कुछ ऐसा सड़ा-गला है जिसे हमें आग लगाकर
राख कर देना चाहिए···तलवार से तार-तार कर देना चाहिए। मगर
हम मजबूर हैं और ऐसा लगता है जैसे कि हमारा मुल्क हमारा मुल्क है
ही नही। भाड़ में जाए। कैम्पबेल समझते हैं कि हम लाल फ़ौजियों का
मुकाबला नहीं कर सकते हैं।"

"ऐसा ?"

"जी हाँ, उनका ख़याल यही है। उनकी राय हमारी फ़ौज के बारे

में काफ़ी बुरी है। मगर लाल फौजियों की वे तारीफ करते हैं।"

"इन्होंने लड़ाई में हिस्सा लिया है ?"

"जी हाँ, लिया है। यह तो लाल फौजियों के हाथों मे आ जाने से बाल-बाल बचे। आग लगे इस ग्रंडी को !"

"तेज़ चीज है···बिल्कुल स्पिरिट की तरह···है न ?"

"बिल्कुल वैसी तो नहीं है।···कैम्पबेल को घुड़सवार फौजियों ने बचाया, वरना तो दुश्मनों के हाथ आ गए थे। बात जुकोव-गाँव की है। लाल फौजियों ने हमारा एक टैंक हथिया लिया···आप कुछ उदास नजर आते हैं···बात क्या है ?"

"थोड़े दिन हुए कि मेरी बीवी मुझे छोड़कर इस दुनिया से चली गई···"

"यह तो बहुत ही बुरा हुआ···बाल-बच्चे हैं ?"

"बच्चे हैं।"

"तो, यह है आपके बच्चों की सेहत का जाम। मेरे तो बच्चे हैं नहीं···लेकिन शायद हैं···और···मगर हैं तो शायद गलियों में अखबार बेच रहे हैं कहीं···कैम्पबेल की एक माशूका है इंग्लैंड में···उसे बराबर खत लिखता है···हफ़्ते में दो बार···मेरा खयाल है कि दुनिया-भर की बकवास लिखता होगा उसे···मुझे तो क़रीब-क़रीब नफ़रत है इस आदमी से···जी, कुछ कहा आपने ?"

"नहीं, मैंने तो कुछ नहीं कहा। मगर, यह बतलाइए कि यह आदमी लाल फौजियों की इज्जत क्यों करता है ?"

"किसने कहा कि इज्जत करता है ?"

"आपने।"

"नामुमकिन है ! वह उनकी इज्ज़त नहीं करता···कर नहीं सकता ···आप गलती पर हैं। मगर मैं पूछता हूँ उससे।"

कैम्पबेल ने नशे में चूर पीले चेहरेवाले लेफ्टिनेण्ट की बात ध्यान से सुनी, और फिर अंग्रेजी में लम्बा-चौड़ा जवाब देना शुरू किया। पर, ग्रिगोरी ने उसकी बात बीच में ही काट दी। पूछा—"क्या बकबक कर रहा है यह ?"

"इसने लाल फौजियों को महज पेड़ों की छाल के जूतों से ही टैंक चलाते देखा है। भला इतना ही काफ़ी है क्या ? कहता है कि उन्हें हराना मुमकिन नही है। बेवकूफ है। आप उसकी बात का यक़ीन न कीजिए।"

"क्यों न करूँ ?"

"इसलिए कि पूरी बात ही ग़लत है।"

"लेकिन, क्यों ग़लत है ?"

"यह आदमी नशे में बेसिर-पैर की बातें कर रहा है। उन लोगों को हराना मुमकिन नही है···आखिर क्यों मुमकिन नहीं है ? उनमें से कुछ का नाम-निशान मिटाया जा सकता है, और बाक़ी को ज़बरदस्ती गुलाम बनाया जा सकता है।···अब तक कितनी बोतलें पी चुके हम ?" रूसी लेफ्टिनेण्ट जो अचानक ही मेज़ पर भहराया तो फल का एक टीन उलट गया। फिर वह कोई दस मिनट तक बाजुओं पर सिर रखे बैठा हाँपता रहा।

बाहर रात का अँधेरा घिरा रहा। बरसात की बूँदें झिलमिलियों पर अपनी उँगलियाँ चटकाती रहीं। ऐसे में दूर पर कुछ गरज-सी सुनाई पड़ी। परन्तु, ग्रिगोरी समझ न पाया कि यह बिजली की कड़क है या तोपों की गरज ? कैम्पबेल सिगार के धुएँ में लिपटा, ब्रँडी की चुसकियाँ लेता रहा। ग्रिगोरी ने दुभाषिये को झकझोरा और लड़खड़ाते हुए पैरों से खड़ा हुआ। बोला—"ज़रा पूछिए इससे कि लाल फौजियों से हम जीत क्यों नहीं सकते ?"

"ऐसी-तैसी में जाओ तुम !" रूसी लेफ्टिनेण्ट गरजा।

"मैं कहता हूँ कि पूछिए उससे।"

"भाड़ में जाओ ! शैतान ले जाए तुम्हें।"

"पूछिए इससे···मैं कहता हूँ।"

रूसी लेफ्टिनेण्ट, फटी-फटी-सी आँखों से एक क्षण तक ग्रिगोरी की ओर देखता रहा। फिर उसने, ध्यान से बात सुनते, कैम्पबेल से हकलाते हुए कुछ कहा और इसके बाद फिर सिर बाजुओं पर गिरा लिया। कैम्पबेल ने उसे नफ़रत से देखा, ग्रिगोरी की आस्तीन पर हाथ रखा और

इशारों-ही-इशारों कुछ समझाने की कोशिश की। उसने झटके से एक झाड़ू की मुठली मेज के बीचों-बीच रखी, उसकी बगल में अपनी बड़ी हथेली जमाई और जीभ चटकाते हुए सहसा ही उसे हथेली से ढक लिया।

"बड़े चालाक बनते हो न! यह बात तो मैं खुद तुम्हें बतला सकता था···" ग्रिगोरी, विचारों में डूबते हुए मन-ही-मन बुदबुदाया। फिर डगमगाते पैरों से उसने मेहमान-नवाज अंग्रेज को अपनी बाँहों में भरा, मेज पर हाथ लहराया और एक कमान बनाई—"खातिर के लिए शुक्रिया! अलविदा···मगर आप जानते हैं कि मैं क्या कहना चाहता हूँ आपसे? मैं कहना चाहता हूँ कि यहाँ आपका सिर कोई बीच से दो कर दे, इसके पहले ही जल्दी-से-जल्दी रफूचक्कर हो जाइए और अपने मुल्क को लौट जाइए। यह है ईमानदारी की बात। समझे? आपको हमारे घरेलू मामलों में टाँग अड़ाने की कोई जरूरत नहीं साहबजादे! आप अपने घर लौट जाइए वरना कहीं ऐसा न हो कि पैर टूट जाएँ और आपको बैसाखी इस्तेमाल करनी पड़े।"

लेफ्टिनेंट उठकर खड़ा हुआ, झुका और बेचारगी से दुभाषिये की ओर देखते और ग्रिगोरी की पीठ स्नेह से ठोंकते हुए, फिर कुछ जोर-जोर से कहने लगा।

ग्रिगोरी को दरवाज़े की कुंडी जैसे-तैसे मिली तो वह गिरता-पड़ता बरसाती में आया। यहाँ पानी की तिरछी फुहारें उसके चेहरे पर पटापट पड़ने लगीं। बिजली की रोशनी में लम्बा-चौड़ा अहाता, गीली बाड़ और बगिया के पेड़ों की चमकदार पत्तियाँ कौंध-कौंध उठीं। दूसरी ओर, सीढ़ियाँ उतरते समय ग्रिगोरी फिसलकर गिर गया और सँभलकर उठा कि बातचीत के स्वर उसके कानों में पड़े।

"ये अफ़सर लोग अब तक ढाल रहे हैं?" किसी ने गलियारे में दियासलाई जलाकर उजाला करते हुए पूछा। जवाब में एक भर्राई हुई आवाज गूँजी—"वे लोग ढालते जायेंगे और तब तक ढालते जाएँगे जब तक कि गले से आवाज़ का निकलना बंद न हो

जाएगा ···।"

: २० :

१९१८ की तरह इस बार भी खोपर जिले की हद पार होते ही दोन सेना का हौसला फिर पस्त हो गया और उसमें हमला करने की ताब न रह गई। ऊपरी दोन प्रदेश के कज्ज़ाक बाग़ियों के साथ-साथ खोपर प्रदेश के कितने ही कज्ज़ाकों ने भी जैसे दोन के इलाक़े के बाहर जाकर लड़ना नहीं चाहा। दूसरी तरफ़ लाल सेना दुश्मनों से और जमकर लड़ने लगी। बात यह हुई कि इस बीच उसे ताज़ी कुमुक मिल गई और लड़ने को इलाक़ा सुयोग से ऐसा मिला जहाँ लोगों की उसके साथ पूरी हमदर्दी रही। सो, कज्ज़ाक एक बार फिर आक्रमण की चिन्ता न कर, सिर्फ़ बचाव की बात सोचने लगे। फिर तो, श्वेत सेना की कमान अपनी तमाम चालाकी के बावजूद उनमें पहले की-सी लगन और आग न जगा सकी। वह लगन और वह आग तो जैसे उनके अपने क्षेत्र की मुठभेड़ों के लिए ही थी और अभी कुछ समय पहले अपना परिचय देकर कहीं उड़नछू हो गई थी। कहने को कज्ज़ाक सेना का पलड़ा वर्तमान क्षेत्र में दुश्मन के पलड़े से कहीं भारी था। परेशान नवीं लाल-सेना के पास थीं ग्यारह हज़ार संगीनें, पाँच हज़ार तलवारें और बावन तोपें; लेकिन कज्ज़ाक फ़ौजियों के पास थीं चौदह हज़ार चार सौ संगीनें, दस हज़ार छः सौ तलवारें और तिरेपन तोपें।

सबसे भयानक मुठभेड़ें किनारों पर, और खास तौर से कुबान की स्वयंसेवक दक्षिणी सेना की टुकड़ियों के अपने इलाकों में हुईं। इस सेना के एक हिस्से ने, जनरल व्रंगेल की कमान में, उक्रइन में आगे बढ़ने में कामयाबी पाने के साथ-ही-साथ दसवीं लाल सेना को दबाकर पीछे ढकेलना शुरू कर दिया और सरातोव की दिशा में बढ़ते हुए विरोध और शक्ति के बावजूद शुरू कर दिया।

अट्ठाईस जुलाई को कुबान की घुड़सवार सेना ने कामीशीन नगर ले लिया और बचाव करने वाले फ़ौजियों को बहुत बड़ी गिनती में क़ैद कर लिया। दसवीं लाल सेना ने हमले का जवाब हमले से

दिया तो उसके पैर उखाड़ दिए गए। लाल सेना ने दायें बाजू पर कुबान घुड़सवारों का ज़ोर बढ़ते देखा तो सही खतरा समझा और बोरज़ेन्कोवो-लातिदोवो-फ्रासनी यार-फामेन्का-बान्नोये-रेखा तक पीछे हट गई। इस समय इस सेना के पास रहीं १८, ००० संगीनें, ८,००० तलवारें और १३२ तोपें, जबकि कुबान की स्वयंसेवक-टुकड़ी के पास रहीं ७,६०० संगीनें, १०,७५० तलवारें और ६८ तोपें। परन्तु श्वेत सेना के पास इन चीज़ों के अलावा टैंकों की यूनिटों और लड़ाई के साथ-साथ जासूसी में भी काम आने वाले, कितने ही हवाई जहाजों का भी बल रहा। लेकिन इस पर भी रेंगल के दाएँ न फ्रेंच हवाई जहाज आ सके और न अंग्रेज़ी टैंक और तोपें। वह कामीशीन के आगे न बढ़ सका और इस इलाक़े में जो लड़ाई जमकर खिंची उसके कारण मोर्चे का नक़्शा जहाँ-तहाँ से थोड़ा बदला।

जुलाई के अधियाते-अधियाते लाल सेनाएं दक्षिणी मोर्चे के केन्द्रीय क्षेत्र पर बहुत बड़े पैमाने पर हमला करने की तैयारियाँ करने लगीं। फिर नवीं और दसवीं सेना एक हो गई, और कमान शोरीन के हाथों में आ गई। योजना बनाई गई कि रिज़र्व के लिए दो डिवीज़नें पूर्वी मोर्चे के कज़ान और सरातोव-रक्षा-क्षेत्रों से ली जाएँगी, पर हमला करने वाली फ़ौजों में टुकड़ियाँ मोर्चे की रिज़र्व फ़ौजों और ५६वीं राइफ़ल डिविज़न से आएंगी।···साथ ही यह भी सोचा गया कि आठवीं सेना की टुकड़ियाँ अलग से हमला करेंगी और इस सिलसिले में मदद दो अतिरिक्त डिविज़नों से लेंगी।···

हमले के लिए अगस्त के पहले दस दिनों का समय तय हुआ। लाल सेना की हाई कमान ने निश्चय किया कि आठवीं और नवीं सेनाओं के हमले के साथ ही फ़ौजें दुश्मन को बाजुओं से घेरना शुरू करेंगी···दसवीं सेना पर खास तौर पर बड़ी पेचीदा ज़िम्मेदारी होगी···उसे दुश्मन को दोन के बाएँ किनारे पर उलझाए रखना होगा और उत्तरी काकेशिया से आने वाली उसकी खास फ़ौजों से उसे काट देना पड़ेगा···पश्चिम में चौदहवीं सेना की कुछ टुकड़ियाँ चैपलीनो-लोज़ोवाया-रेखा की तरफ़ बढ़ने का बहाना करेंगी और इस काम में

लगी रहेगी···।

यानी, इधर नवीं और दसवीं सेनाओं के नए वर्गीकरण का प्रस्ताव चलता रहा कि उधर श्वेत-कमान ने हमले का मुंहतोड़ जवाब देने के लिए जनरल ममोनतोव की कोरों के संगठन का काम पूरा कर डाला। कमान इन कोरों की मदद से मोर्चा तोड़ने और लाल सेनाओं पर पीछे से पूरे ज़ोर-शोर से हमला करने के मंसूबे बांधती रही।

व्रेंगेल की सेना को ज़ारीतसिन की दिशा में मिली सफलता के कारण उसका मोर्चा बाईं तरफ़ बढ़ाना, दोन-सेना के पूरे मोर्चे की लम्बाई घटाना और इसके आधार पर उससे कई घुड़सवार डिविजनें ले लेना बिल्कुल सम्भव लगने लगा।

सात अगस्त को ६,००० तलवारें, २,८०० संगीनें और तीन चार-चार तोपों वाली बैटरियाँ उरूपिन्स्काया ज़िले में जुटाई गईं। दस अगस्त को जनरल ममोनतोव की टुकड़ियों ने आठवीं और नवीं लाल सेनाओं को बीच से अलगाना चाहा और ताम्बोव की तरफ़ से धावा बोल दिया।

श्वेत-कमान का इरादा शुरू-शुरू में यह था कि ममोनतोव की फ़ौजें पीछे से लाल सेना पर हमला करें। जनरल कोनोवालोव की घुड़सवार टुकड़ियाँ उनकी मदद करें। लेकिन ये टुकड़ियाँ जिस इलाके में थीं वहाँ ऐसी घमासान लड़ाई हुई कि इनका निकाला जाना बिल्कुल नामुमकिन हो गया। इससे ममोनतोव के आगे बड़ी सीमा आ खड़ी हुई। इसीलिए उसे हुक्म दिया गया कि पीछे से हमले के समय वह दुश्मन की क़तारों के बीच दूर तक न जाए, मास्को पर हमला करने की बात ख़याल में भी न लाए, और दुश्मन के मोर्चे के पीछे की सेवाएँ और संचार-व्यवस्थाएँ आदि बर्बाद कर जल्दी-से-जल्दी प्रमुख श्वेत सेना से आ मिले। परन्तु इसके पहले ममोनतोव और कोनोवालोव को आदेश दिया गया था कि केन्द्रीय लाल सेनाओं पर बाजू और पीछे से भरपूर वार करें, फिर ज़बरदस्ती राह बनाते हुए रूस की गहराइयाँ भेदें, सोवियत-विरोधी लोगों की भरती से अपने फ़ौजियों की गिनती बढ़ाएँ

और जैसे भी हो मास्को की तरफ बढ़ें।

आठवीं लाल सेना ने रिजर्व फ़ौजें बुलवा लीं और इनकी सहायता से बाएँ बाज़ू पर उसे फिर से अपने पैर जमाने में कामयाबी मिल गई। लेकिन नवीं लाल सेना के दाएँ बाज़ू पर काफ़ी गम्भीर चोट पड़ी। मुख्य हमलावर फौज के कमांडर शोरीन ने दोनों सेनाओं के बीच की खाई तो अन्दर-ही-अन्दर पाट दी, पर ममोनतोव की घुड़सवार फ़ौजों का आगे बढ़ना उसके रोके न रुका। इस पर उसने ५६वीं डिविज़न को ममोनतोव की राह रोक देने का हुक्म दिया। इस सिलसिले में उसकी जिस बटेलियन को गाड़ियों पर सवार पहले से सामपुर भेज दिया गया था, उसे सामना होने पर, ममोनतोव की टुकड़ियों ने पूरी तरह चूर-चूर कर दिया। यही दुर्गति ३६वीं राइफ़ल-डिवीज़न के घुड़सवार ब्रिगेड की हुई। इस ब्रिगेड को ताम्बोव-बालाशोव रेलवे के बचाव का काम सौंपा गया था। यानी ममोनतोव की तमाम घुड़सवार टुकड़ियों से लोहा लेने में पूरे-का-पूरा ब्रिगेड थोड़े समय में ही टूट गया।

१८ अगस्त को ममोनतोव एक लहर की तरह ताम्बोव में दाखिल हुआ। परन्तु इससे शोरीन की फ़ौजों के ज़ोरदार हमले में कोई अन्तर नहीं पड़ा। वैसे यह ज़रूर रहा कि उसे पूरी-की-पूरी दो पैदल डिवीज़नें ममोनतोव का बल तोड़ने के काम में लगानी पड़ीं। इसी समय दक्षिणी मोर्चे के उक्रइनी क्षेत्र पर भी आक्रमण कर दिया गया।

उत्तर और उत्तर-पूर्व में, स्तारी-ओस्कोल से बालाशोव तक फैलने और जारीत्सिन की ओर विशेष दबाव रखने वाला मोर्चा होते-होते बराबर होने लगा। इस बीच कज़्ज़ाक फ़ौजों ने जब-तब ही हमले का जवाब हमले से दिया और हर मज़बूत मोर्चे पर दुश्मन के आगे बढ़ने में बाधा डाली। इसके बावजूद विरोधी सेना कई दृष्टियों से उनसे कहीं ज़ोरदार साबित हुई और कज़्ज़ाकों को पीछे हटना पड़ा। परन्तु कज़्ज़ाक धरती पर क़दम रखते ही लड़ने की पहले जैसी क्षमता उनमें फिर जाग उठी। लोगों का लड़ाई को पीठ दिखाकर भागना तेज़ी से कम हो गया और मध्य-दोन प्रदेश के ज़िलों से कुमुक-पर-कुमुक आने

लगी। ग्रोरीन की सेनाएँ दोन के कज़्ज़ाक सेना के प्रदेश में जितनी ही आगे बढ़ीं, कज़्ज़ाकों का विरोध उतना ही बढ़ा, और उन्होंने दुश्मन के दाँत खट्टे करने की उतनी ही कोशिश की। गांवों की सभाओं में ऊपरी दोन के विद्रोही ज़िलों के कज़्ज़ाकों ने लाम पर जाने का आम ऐलान अपनी ओर से किया, गिरजों में प्रार्थनाओं का आयोजन करवाया और बिना समय खोए मोर्चे के लिए रवाना हो गए।

दूसरी तरफ़, ग्रोरीन की लाल सेनाएँ श्वेत सेनाओं से जूझते हुए ज्यों-ज्यों खोपर और दोन के इलाके की तरफ़ बढ़ीं, त्यों-त्यों उन्होंने जनता में अपने प्रति अधिक-से-अधिक स्पष्ट विरोध पाया। होते-होते उनमें शुरू का जोश न रहा और उनकी आगे बढ़ने की रफ़्तार घट गई। इस बीच दसवीं लाल सेना ने हमला करने की तैयारी पूरे ज़ोर-शोर से की। परन्तु, श्वेत कमान ने इसके पहले ही कचालिन्स्काया और कोतलुबान स्टेशन के बीच क्षेत्र में, तीन कुबान टुकड़ियों और छठी अपनी पैदल डिविज़न की सेना हर तरह मज़बूत कर ली और हमला बोलने के मंसूबे बांध लिए।

: २१ :

बारह महीनों के अन्दर-अन्दर मेलेखोव परिवार आधा रह गया। पैन्तेली ने एक दिन ठीक ही कहा कि हो-न-हो, इस घर पर ऊपरवाले की नजर गड़ गई है।

यानी नताल्या की कब्र अभी पूरी तरह सूख भी न पाई कि परिवार सोने का कमरा फिर महक और अनाज के साथ उगने वाले पौधों से भर उठा। ग्रिगोरी मोर्चे से लौटा कि उसके कोई दस मिनट बाद ही दार्‌या ने दोन में डूबकर अपनी जान दे दी।

शनिवार के दिन, खेत से लौटने के बाद वह दून्या के साथ नहाने गई। वहाँ बावर्चीख़ाने के बाग़ीचे के नीचे दोनों ने कपड़े उतारे और फिर वे दोनों बहुत देर तक मुलायम पैरों से रौंदी हुई घास पर बैठी रहीं।

वैसे सुबह-तड़के से ही दार्‌या उखड़ी-उखड़ी रही थी। वह सिर-

दर्द और कमज़ोरी की शिकायत करती रही थी और कई बार सुबक-सुबककर रो चुकी थी। सो, नहाने के पहले दून्या ने अपने बाल इकट्ठे किए, सिर पर तिकोनिया रूमाल बांधा और दार्या को कनखी से देखते हुए हमदर्दी से बोली—"तुम कितनी झटक गई हो, दार्या, तुम्हारे बदन की नस-नस नज़र आने लगी है।"

"जल्द ही सब-कुछ ठीक हो जाएगा···"

"तुम्हारा सिर-दर्द दुरुस्त हो गया ?"

"हां दुरुस्त हो गया···अच्छा तो चलो···नहाया जाए···काफ़ी देर हो चुकी है।" दार्या पहले पानी में उतरी, डुबकी लगाई, नाक और मुंह से पानी निकालते हुए सतह पर आई और मंझधार तक तैर गई। वहां तेज़ धार ने उसे अपनी लपेट में ले लिया और आगे-ही-आगे बहाती गई।

दून्या ने दार्या को मर्दों की तरह ताक़त से हाथ चलाते देखा, खुद कमर-कमर तक पानी में पैठी, मुंह धोया और अपने सीने और धूप से सँवराई, नाज़ुक गोल-गोल बांहें पानी से भिगोईं। ओबनिज़ोव की दोनों बहुएँ बग़लवाले बाग़ में पातगोभी को पानी देती रहीं। उनके कानों में दून्या की आवाज़ पड़ी। उसने हँसते हुए दार्या को आवाज़ दी—"लौट आओ दार्या···कहीं ऐसा न हो कि कोई जर्मन मछली तुम्हें खींच ले जाए।"

दार्या मुड़ी, थोड़ी दूर तक तैर आई, फिर पानी के बाहर कमर तक अपना बदन उभारा, सिर के पीछे हाथ बांधे, चीखकर कहा—"अलविदा सखियो !" और पत्थर की तरह नदी में पैठ गई।

कोई पन्द्रह मिनट बाद उतरा हुआ चेहरा लिए, सिर्फ़ कमीज़ पहने दून्या घर दौड़ी आई और हांफते हुए जैसे-तैसे बोली—"दार्या नदी में डूब गई, मां !"

फिर दूसरे दिन तक दार्या की लाश की खोज की गई। तड़के तातारस्की के सबसे पुराने और अनुभवी मछुए आरखीप-पेस्कोवात्स्कोव ने अपने जाल के छः कोने दार्या के डूबने की जगह, धार के आरपार बिछाए और बाद में देखने गया कि जाल ठीकठाक तो है। इस बीच

दून्या-सहित कितनी ही औरतें और बच्चे किनारे आ जमा हुए। आरखीप जाल के चौथे खूंटे को झटकते-झटकते कोई साठ फुट तक निकल गया। वहाँ से उभरते उसके स्वर लोगों ने सुने—"लगता है लाश आ गई जाल में।"

इसके बाद उसने जाल खींचना शुरू किया और गहराई में पैठे चौथे खूंट के मामले मे बड़ी ही होशियारी बरती। जल्दी ही दाएँ किनारे पर सफेद-सा कुछ चमका। दोनों बूढ़े पानी पर झुके। नाव ने अपने अगले हिस्से से पानी काटा, और भारी लाश खींचकर ऊपर लाई गई। सभी लोगों के बदनों में एक सिहरन-सी दौड़ गई। एक औरत सिसकने तक लगी। कुछ दूर पर खड़े क्रिस्तोनिया ने बच्चों से चिल्लाकर कहा, "अच्छा, अब तुम लोग भागो यहाँ से!" दून्या ने आंसुओं के बीच आरखीप को नाव के अगले हिस्से पर खड़े होते, और उसे सधे हुए हाथों से खेकर किनारे की तरफ लाते देखा। आखिरकार नाव एक आवाज़ के साथ खड़िया वाले साफ़ किनारे पर आ लगी।

नाव में दार्‌या अपने बेजान पैर सिकोड़े पड़ी हुई थी। उसका गाल गीले तल से सटा हुआ था। शरीर अभी-अभी नीला पड़ना शुरू हुआ था और माँस में कंटियों के गहरे छेद साफ़-साफ़ नजर आ रहे थे। वह शायद नहाने से पहले लेनिन का गेटिस उतारना भूल गई थी। सो, घुटने के नीचे, पतली, साँवली पिंडली पर, इसी गेटिस के पास ताजी खरोंच से जरा-ज़रा खून निकल रहा था। किसी कंटिया की नोक ने पैर पर अपना दाँत गड़ाकर एक टेढ़ी लकीर-सी बना दी थी।

तो, सबसे पहले दून्या पास गई और उसने उधड़ी हुई सिलाईवाले एक बोरे से उसका बदन ढँक दिया। पैन्तेली ने देखते-देखते अपना पतलून चढ़ाया और पानी मे हिलकर नाव खींचकर किनारे के ऊपर लाने लगा। एकाध मिनट बाद एक गाड़ी वहाँ आ पहुँची और उस पर रखकर दार्‌या की लाश घर ले आई गई।

दून्या ने अपने मन से डर और घिन की भावना निकाल फेंकी और दोन की गहरी धार की ठंडक से अब तक बर्फ़-सी ठंडी लाश को धोने में माँ का हाथ बँटाया। दार्‌या का थोड़ा-थोड़ा सूजा हुआ चेहरा

कुछ अनजाना और अजीब-अजीब-सा लगा। पूरे एक दिन पानी में रहने के कारण बुझी हुई आँखें कुछ चमकती-सी मालूम हुईं। बालू के सुनहले कण बालों में चमके और सेवार के हरे, गीले तार गालों से चिपके दीखे। बेंच से नीचे झूलते, फैले हुए हाथों की बेचारगी के अन्दाज में ऐसी दिल हिला देने वाली राहत नजर आई कि उन पर नजर डालते ही दून्या हड़बड़ाकर पीछे हट गई, स्तम्भित हो उठी और एकदम डर गई। इस मुर्दा औरत और जिन्दगी को प्यार करने वाली उस हँसती, इठलाती दार्‌या के बीच उसे कुछ भी एकसा न लगा। इसके बाद बहुत समय तक दून्या को जब भी दार्‌या के पत्थर-से सीने और पेट का लिसलिसापन और कमानी से हाथ-पैरों का कड़ापन याद आया, वह सिर से पैर तक काँप उठी और उसने उसे भुलाने की भरपूर कोशिश की। उसके मन में आशंका घर कर गई कि रात को वह मुझे सपनों में दिखलाई पड़ेगी। इसलिए एक सप्ताह तक वह इलीनीचिना के साथ सोई और हर दिन पलंग पर लेटने से पहले उसने प्रभु से बड़ी-बड़ी मिन्नत की—"ओ नीली छतरीवाले···मुझे उससे बचा···उसे मेरे सपनों में आने से रोक!"

अगर ओवनिजोव की पतोहुओं ने दार्‌या की 'सखियो अलविदा' की चीख न सुनी होती तो किसी को कानों-कान खबर भी न होती और दार्‌या दफ़ना दी जाती। लेकिन अब तो आत्म-हत्या के इरादे का पता देने वाली इस चीख की चर्चा होते-होते पादरी विसेरिओन तक पहुँची और उसने दृढ़ स्वर में फ़तवा दिया कि खुदकशी करनेवाली इस औरत का अंतिम संस्कार मैं तो करवाने से रहा। इस पर पैन्तेली बौखला उठा—"क्या मतलब? तुम इस तरह इन्कार क्यों करते हो? इसका बपतिस्मा नहीं हुआ था क्या?"

"मैं खुदकशी करनेवालों के अंतिम संस्कार नहीं करवाया करता। क़ानून इसकी इजाजत नहीं देता।"

"तो, तुम्हारे खयाल से किस तरह दफ़नाया जाए इसे? कुत्तों की तरह?···"

"यानी, तुम जहाँ चाहो और जैसे चाहो उसे दफ़ना दो···सिर्फ़

क़ब्रगाह में दफ़ना नहीं सकते··· वहां तो सच्चे ईसाइयों को ही जगह मिलती है।"

"देखो, थोड़ा रहम करो हम पर।" पैन्तेली ने गिड़गिड़ाकर मिन्नत की—"हमारे खानदान की इज्जत ऐसा अब तक कभी नहीं उछली।"

"मैं कुछ नहीं कर सकता, पैन्तेली, मैं कुछ नहीं कर सकता···मैं तुम्हें गिरजे और प्रभु का सच्चा सेवक समझता हूं···तुम्हारी मिसाल किसी के सामने रख सकता हूं। पर इस मामले में कुछ नहीं कर सकता। बात बड़े पादरी तक पहुंच जाएगी और तब मेरी अपनी जान के लाले पड़ जाएंगे।" पादरी अपनी बात पर जमा रहा।

बात बड़े अपमान की थी। पैन्तेली ने उस सुअर दिमाग़ वाले पादरी को समझाने-बुझाने की हर तरह कोशिश की, और ज्यादा रक़म देने की बात कही और सो भी खरे जारशाही रूबलों में अदा करने का वायदा किया। उसने उसे एक साल का एक मेमना तक भेंट किया। लेकिन पादरी किसी तरह न पसीजा तो पैन्तेली ने धमकियों का सहारा लिया।

"मैं दार्या को क़ब्रगाह के बाहर दफ़न नहीं करूंगा। वह कहीं मुझे पड़ी तो मिल नहीं गई है। मेरे अपने बेटे की बीवी है! उसका आदमी फ़ौजी अफ़सर था। लड़ाई के मैदान में लाल फ़ौजियों से लोहा लेते-लेते खेत रहा था, और खुद उसे संत-जार्ज मैडल दिया गया था, और तुम उसी के बारे में मुझसे बे-सिर-पैर की बातें करते हो! नहीं पादरी, यह नहीं चलेगा। तुम उसे दफ़न कराओगे और जैसे मैं कहता हूं, वैसे दफ़न कराओगे। फ़िलहाल उसकी लाश सोने के कमरे में पड़ी रहेगी। मैं फ़ौरन ही ज़िला अतामान को सारी इत्तिला दिए देता हूं। वह खुद तुमसे बातें कर लेगा।"

पैन्तेली विदा का एक शब्द कहे बिना पादरी के घर से बाहर निकल आया और तैहे में उसने दरवाजा भड़ाक से दे मारा। लेकिन, धमकी ने अपना असर दिखलाया। आधे घंटे बाद पादरी ने एक आदमी भेजा और कहलवाया कि मैं अंतिम प्रार्थना के लिए अभी-अभी

आता हूँ···।

दार्या को क़ब्रगाह में वाजिब तौर पर प्योत्र की बग़ल में दफ़ना दिया गया।

क़ब्र खोदी गई तो जगह खुद पैन्तेली को बहुत रुची। फावड़े से जमीन खोदते समय उसने चारों तरफ़ नजर दौड़ाई और मन-ही-मन सोचा—इससे बेहतर जगह मेरे लिए दूसरी हो नहीं सकती, और न इसके बाद किसी दूसरी जगह की बात सोचनी ही चाहिए।

प्योत्र की क़ब्र पर अभी-अभी उगे देवदार की कोमल-कोमल टहनियाँ हवा में सरसरा रही थीं। शरद् ने अपने आने का संकेत देते हुए उसकी ऊपर की पत्तियों को पीले रंग से नहला दिया था, जैसे कि यह रंग जिन्दगी की खिजा का गहरा रंग हो। बछड़ों ने टूटी बाड़ और क़ब्रों के बीच की जगह रौंद-रौंदकर एक रास्ता-सा बना दिया था। हवाचक्की को जाने वाली पगडंडी बाड़ की बग़ल से जाती थी। आसपास के मैपल, देवदार और बबूल के पेड़ मरने वालों के नाते-रिश्तेदारों के मेहनती हाथों ने लगाए थे। वे अपनी ताजगी और हरियाली से हर आने वाले का स्वागत करते थे। उनके चारों तरफ़ तरह-तरह की लताओं की बाड़ थी, देर से फूलने वाली सरसों के फूलों की बहार थी, और जई की बालों का पसारा था। क़ास एक सिरे से दूसरे सिरे तक अश्कपेचा-बेल को अपनी बाँहों में लपेटे खड़े थे। जगह सचमुच तबीयत खुश कर देनेवाली थी···

सो, बूढ़े ने क़ब्र खोदते समय बीच-बीच में फावड़ा जमीन पर फेंका और नम, चिकनी मिट्टी वाली धरती पर बैठकर धुआँ उड़ाया और मौत के बारे में जाने क्या-क्या सोचा। लेकिन अभी, वह समय दूर था जब बड़े-बूढ़े एक बार फिर अपने घरों में चैन से दम तोड़ सकते, और अपने पिताओं और उनके पिताओं की बग़ल में चिर-विश्राम कर सकते···

दार्या के मरने के बाद मेलेखोव परिवार में और वीरानगी छा गई। परिवार के लोगों ने गाड़ी भर-भरकर अनाज ढोया और उसकी ओसाई की। खरबूजे वाले खेत से खूब खरबूज़े तोड़े। हर दिन ही

ग्रिगोरी के समाचार की प्रतीक्षा की, पर मोर्चे पर जाने के बाद उसकी तरफ़ से किसी तरह की कोई ख़बर न आई। इलीनीचिना का दिल दुखा और उसने एक से अधिक बार भन्नाकर कहा—"शैतान कहीं का, अपने बच्चों तक की खोज-खबर नहीं लेता। बीवी मर गई है न, तो अब भला हम सबकी उसे क्या परवाह!"

इसके बाद कुछ ऐसा हुआ कि मोर्चे से अधिक-से-अधिक कज्जाक छुट्टी बिताने घर आने लगे। फिर अफ़वाहें उड़ने लगीं—बालाशोव के मोर्चे पर कज्जाक हार गए हैं। वे पानी की आड़ में अपने सिर छिपाते और जाड़े तक सिर्फ़ अपना बचाव करने के ख़याल से दोन की तरफ़ लौटे आ रहे हैं।···लेकिन जाड़े में क्या होगा, इस मामले में मोर्चे के लोग कोई राजदारी न बरतते और साफ़-साफ़ कहते—"दोन के सामने ही लाल फौजी हमें ऐन समन्दर तक पीछे खदेड़कर दम लेंगे।"

पन्तेली प्राय: अनाज की ओसाई में व्यस्त रहा और दोन प्रदेश में हवा की तरह सनसनाती अफ़वाओं की तरफ़ ध्यान देता न लगा। पर, चारों तरफ़ घटती घटनाओं से अछूता वह न रह सका। फिर, उसने मोर्चे के और नियराने की बात सुनी तो जैसे बौखला उठा। वह इलीनीचिना और दून्या पर और भी अधिक चीखने लगा, और भी ज्यादा चिड़चिड़ा हो उठा।

अब वह अकसर ही फार्म के काम की कोई-न-कोई चीज़ लेकर बनाने बैठता तो चीज हाथ लगाते ही चौपट हो जाती थी। इस पर वह उसे एक ओर फेंक देता और थू-थू करते, और गालियां बकते हुए खलिहान की ओर चल पड़ता कि वहां शायद मन बदले।

दून्या तो कई बार ऐसी बौखलाहटों की चश्मदीद गवाह रही।

पंन्तेली एक दिन जुआ लेकर बैठा और मरम्मत करने लगा। मगर काम मनमाना नहीं उतरा तो उसने क्या किया कि मारे तेहे के बेवजह कुल्हाड़ी उठाई और जुए के टुकड़े-टुकड़े करके रख दिये। ऐसा ही घोड़े के पट्टे की मरम्मत करते समय भी हुआ।

एक दिन शाम को आग के पास बैठे-बैठे उसने मोम का एक टुकड़ा ऐंठा और पट्टे के फटे हुए गद्दे को सीने लगा। पर शायद सूत

खड़ा हुआ था या शायद बूढ़े का चित्त जरूरत से ज्यादा परेशान था। नतीजा यह कि सूत दो बार बराबर टूट-टूट गया। बस, फिर क्या था, भागो तो जाओ कहां ! वह गालियों की बौछार करते हुए झटके से उठ खड़ा हुआ, स्टूल को ठोकर मारकर स्टोव की तरफ रवाना कर दिया और कुत्ते की तरह गुर्राते हुए पट्टे के चमड़े के गद्दे को दांत से चीरने लगा। इसके बाद उसने पट्टा फ़र्श पर लोका दिया और मुर्गे की तरह उछल-उछलकर उसे पैरों से रौंदने लगा। आज जल्दी सोने चली गई इलीनीचिना ने शोर-गुल सुना तो दहशत से उठकर पलंग पर बैठ गई। लेकिन, जब सारी बात समझ में आई और सारा तूफ़ान देखा तो उस पर लानतें बरसाती हुई बोली—"ऐसी-तैसी में जाओ, पागल हो गए हो ? सचमुच सठिया गए हो ? इस पट्टे ने भला तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ?"

पैन्तेली ने क्रोध से जलती आंखों से पत्नी को घूरकर देखा और गरजा—"तू मुंह बन्द कर···गधी कहीं की !" इसके बाद उसने फटे हुए पट्टे का एक हिस्सा उठाया और फेंककर बुढ़िया को मारा।

दून्या का हँसी से पेट फटने लगा। वह गोली की तरह उड़ती हुई बरसाती में निकल गई। पर बूढ़ा थोड़ी देर बाद शांत हो गया। अब उसने गाली-गलौज के लिए पत्नी से माफी माँगी और बदकिस्मत पट्टे के फटे हुए टुकड़ों की तरफ़ देख-देखकर सिर खुजलाना और सोचना शुरू किया कि इनका किसी तरह का कोई इस्तेमाल भी हो सकता है क्या, और हो सकता है तो क्या हो सकता है ?

पैन्तेली को उन्माद के ऐसे दौरे अकसर आए और इलीनीचिना ने होते-होते आड़े आने का एक दूसरा तरीका निकाल लिया। पति ने ज्यों ही कभी गालियों की बौछार शुरू की और घर की कोई चीज़ पटकी-फोड़ी, पत्नी ने बहुत ही विनय के साथ, पर जोर से कहा—"तोड़ डालो···इसे, चूर-चूर कर दो इसे, प्रोकोफ़ियेविच ! मैं और तुम यानी हम दोनों रक़म जुटाकर यह चीज़ फिर खरीद लेंगे।" यही नहीं, इलीनीचिना ने कई बार तो इस पटक-फोड़ में पैन्तेली का हाथ तक बँटाया। इसके बाद पैन्तेली हमेशा ही तुरन्त शांत हो गया, फटी-फटी-

सी आंखों से एकाध मिनट अपनी पत्नी को एकटक देखता रहा, फिर जेब में हाथ डालकर तम्बाकू की अपनी थैली निकाली और हैरान होकर किसी सूने कोने में बैठ गया और अपने मन को शांत करने लगा। ऐसे अवसरों पर उसने सदा ही ऐसे तेहे के लिए मन-ही-मन अपने को कोसा और चीज के नुकसान के लिए पछतावे के लिए हाथ मले।

एक बार तीन महीने का एक सुअर बाड़ में घुस आया और उसके गुस्से का शिकार हो गया। पैन्तेली ने डंडे से उसकी कमर तोड़ दी और उसे हलालने के बाद नाखून से उसके बाल नोचने लगा। लेकिन, पांच मिनट बाद ही उसकी निगाह अपनी बीवी की त्यौरियों पर पड़ी कि जैसे उसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया और उसे खुश करने की कोशिश करते हुए बोला—"तुम्हें तो पता है कि यह सुअर का बच्चा महज मुसीबत की जड़ था, और कुछ नहीं। और, मर तो वह वैसे भी जाता। इस मौसम में हर साल सुअर ताऊन के शिकार हो जाते हैं। अगर कहीं ऐसा हो जाता तब तो हमारे हाथ कुछ भी न आता। अब कम-से-कम गोश्त तो हमें खाने को मिल ही सकता है। बताओ, बात ठीक है कि नहीं ? लेकिन, तुम बिजली गिरानेवाले बादल की तरह क्यों देख रही हो आखिर ? मैं तो कहता हूं कि एक नहीं, तीन-तीन मौतें आएं उस सुअर के बच्चे को ! फिर, वह पूरा सुअर था भी तो नहीं ! नाम-भर को सुअर था ! उसे मारने के लिए डंडे तक की तो जरूरत पड़ी नहीं। था वह ऐसा कि कोई उस पर थूक-भर देता तो वह मर जाता। फिर, वह जगह-जगह अपना थूथुन पता नहीं क्यों घुसेड़ता फिरता था ! आलू के कोई चालीस पौधे जड़ से उखाड़कर फेंक दिए उसने।"

"अगर वह आलू के कुल-के-कुल पौधे उखाड़ फेंकता तो भी गिनती तीस से आगे न पहुँचती।" इलीनीचिना ने शांत भाव से जैसे उसकी बात सही कर दी।

"हो सकता है कि तुम्हारी बात ठीक ही हो ! मगर कुल गिनती चालीस होती तो वह तो चालीस के चालीसों को बरबाद कर डालता न ! सुअर था ही ऐसा। हम तो बच गए उस दुश्मन से !"

पैन्तेली ने बिना सोचे-समझे कहा।

× × ×

अपने पिता के लाम पर जाने के बाद बच्चे जहाँ-तहाँ भटकने लगे। इलीनीचिना घर के काम-काज में लगे रहने के कारण उनकी ओर काफ़ी ध्यान न दे सकी। सो मन-मुताबिक़ वे घंटों-घंटों बगिया के किसी सिरे पर या खलिहान में खेलते रहने लगे। मीशात्का एक दिन दोपहर के खाने के बाद ग़ायब हुआ तो दिन-ढले घर लौटा। दादी ने पूछा तो बोला—"कुछ नहीं, मैं दूसरे लड़कों के साथ दोन के किनारे खेलता रहा।" पर, पोल्युशका ने सारा राज़ खोल दिया—"यह झूठ बोल रहा है, दादी! यह तो अकसीनिया चाची के यहाँ गया था।"

इलीनीचिना को इस बात से जितना ही बुरा लगा, उतना ही ताज्जुब हुआ। पूछा—"लेकिन, तुझे कैसे पता?"

"मैंने खुद उसे अकसीनिया चाची के यहाँ से बाड़ पर इधर आते देखा है।"

"तो, वहीं गया था न तू, मीशात्का? बोल···बोल···तेरा चेहरा इस तरह लाल क्यों हो रहा है?"

मीशात्का ने दादी की आँखों में सीधी आँखें डालीं। जवाब दिया—"हाँ, मैं तुमसे झूठ बोल रहा था, दादी! मैं दोन के किनारे नहीं गया था···अकसीनिया चाची के यहाँ था।"

"तू क्यों गया था वहाँ?"

"अकसीनिया चाची ने मुझे बुलाया और मैं चला गया।"

"तो, तूने यह क्यों कहा कि तू लड़कों के साथ था?"

इस पर मीशात्का एक क्षण तक तो चुप रहा। फिर उसने भोले-पन से निगाहें ऊपर उठाईं और फुसफुसाते हुए बोला—"मैं डरा कि तुम बिगड़ोगी···"

"मैं भला क्यों बिगड़ूँगी तुझसे? नहीं···लेकिन, अकसीनिया ने क्यों बुलाया था तुझे? क्या करता रहा तू वहाँ?"

"कुछ नहीं···चाची ने मुझे देखा तो पुकारकर बोलीं—'यहाँ

आओ !' और, बस मैं चला गया। अक़सीनिया चाची ने मुझे घर के अन्दर ले जाकर कुर्सी पर बिठाया···"

"फिर ?" इलीनीचिना ने अपनी बढ़ती हुई उत्तेजना पर पर्दा डालने की कोशिश करते हुए बेमन्नी से पूछा।

"फिर, मुझे टिकियाँ खाने को दी और फिर यह दिया।" मीशात्का ने चीनी का एक टुकड़ा जेब से निकाला, घमंड से दिखलाया और फिर जेब में रख लिया।

"लेकिन, उसने तुमसे कहा क्या ? पूछा कुछ ?"

"मुझसे कहा··· मैं अकेली रहती हूँ···तुम जब मन करे तब चले आया करो। मैं तुम्हें अच्छी-अच्छी चीजें खाने को दूँगी···लेकिन, यह बात किसी से बतलाना मत—दादी से कहोगे तो बिगड़ेंगी वे।"

"यह कहा उसने ?" इलीनीचिना ने दबी हुई उत्तेजना के कारण हाँफते हुए कहा—"ठीक···और तुमसे पूछा कुछ ?"

"हाँ।"

"क्या पूछा तुमने ? बतला दो साफ़-साफ़···डरो नहीं, बेटे !"

"फिर, अकसीनिया चाची ने पूछा कि मुझे पापा की याद आती है या नहीं ? मैंने कहा आती है। फिर उन्होंने पूछा कि वे कब घर आएंगे और क्या ख़बर है उनकी ? मैंने कहा—मैं कुछ नहीं जानता। वे तो लाम पर हैं।···इसके बाद उन्होंने मुझे अपने घुटनों पर बिठा लिया और परियों की एक कहानी सुनाई।" मीशात्का की आँखें खुशी से चमकने लगीं—"कहानी बड़ी अच्छी थी। कहानी जिसके बारे में थी, उसका नाम था वान्या। उसे हंस अपने पंखों पर चढ़ाकर ले गए थे। चाची ने 'बाबा-यागा'[1] नाम की चुड़ैल के बारे में भी बतलाया था।"

इस तरह मीशात्का ने सब-कुछ कबूला तो इलीनीचिना ने अपने होंठ भींच लिए। आखिर में सख़्ती से बोली—"देखो बेटा, अब न जाना वहाँ और न अकसीनिया कुछ दे तो लेना, वरना कहीं बाबा ने सुन लिया तो बेंत से तेरी खाल उधेड़कर रख देंगे। अब न जाना वहाँ, सुना, बेटे !"

लेकिन इस मनाही के बावजूद मीशात्का दो दिन बाद फिर

१. घुटी हुई, बड़ी उम्र की औरत।

अकसीनिया के यहाँ जा पहुँचा। इलीनीचिना ने मीशात्का की कमीज का निकल गया हिस्सा क़ायदे से रफ़ू किया और कॉलर में सीप का छोटा-सा नया बटन लगा देखा तो तुरन्त ही सब-कुछ भाँप गई। उसे लगा कि दून्या तो दिन-भर खलिहान के काम में लगी रही है, उसे वक्त कहाँ मिला होगा···हो न हो, यह सब-कुछ अकसीनिया ने ही किया है। सो उसने लड़के को फटकारते हुए पूछा—"तू फिर पहुँच गया अकसीनिया के यहाँ ?"

"हाँ, गया था।" मीशात्का ने घबराहट में उगल दिया और बोला—"अब नहीं जाऊँगा, दादी ! इस बार माफ़ कर दो !"

इलीनीचिना ने मन-ही-मन तय किया—मैं सीधे अकसीनिया से बात करूँगी और उससे साफ़-साफ़ कह दूँगी कि देख, बच्चे को न तो मिठाइयों से फुसला और न कहानियों से परचा।···इस औरत ने नताल्या की जान ले ली और अपना रास्ता साफ़ कर लिया···अब ग्रिगोरी को नए सिरे से फँसाने के लिए बच्चों को हिला रही है। कैसी नागिन है ! अपना आदमी सही-सलामत है, मगर इस पर भी मेरे बेटे की बहू बनने के सपने देख रही है। खैर, इन कोशिशों से होना-जाना कुछ नहीं है। फिर, ऐसे तूफ़ान के बाद ग्रिगोरी ही भला उसे क्यों कबूल करेगा ?···

माँ की पैनी और डाही निगाहों से यह बात अनदेखी न रही थी कि ग्रिगोरी जब घर पर था तो अकसीनिया से मिलना उसने जान-बूझकर बरकाया था। इसका कारण उसने समझना चाहा तो लगा कि ग्रिगोरी लोगों की लानत-मलामत के डर से उतना नहीं बिदका, जितना अपनी बीवी की मौत का मुजरिम उसी को समझकर वह उससे कटा। इस तरह इलीनीचिना ने अपने-आपसे कहा—"नताल्या की मौत से ग्रिगोरी और अकसीनिया के बीच हमेशा-हमेशा को एक दीवार खड़ी हो गई है और अब ऐसे में अकसीनिया इस घर में बहू बनकर तो क्या ही आएगी।"···

सो उसी दिन शाम को वह अकसीनिया से दोन के घाट पर मिली और बोली—"इधर आओ···जरा मेरी बात सुनो···मुझे कुछ कहना है

तुमसे···।"

अकसीनिया ने शांत भाव से बाल्टियों की बहंगी नीचे रख दी और अभिवादन करते हुए इलीनीचिना की ओर बढ़ी। इलीनीचिना ने उसके खूबसूरत चेहरे पर नज़र डालते हुए कहना शुरू किया—"सुनो अकसीनिया, तुम दूसरों के बच्चे हथियाने में क्यों लगी हुई हो ? मीशात्का को अपने यहां बुला-बुलाकर उसे परचाना क्यों चाहती हो ? किसने कहा तुमसे कि तुम उसकी कमीज़ ठीक कर दो और उसे चीजें दिया करो ? आखिर तुम्हारे दिमाग़ में है क्या ? तुम्हारा खयाल है कि उस बच्चे की मां नहीं रही तो उसकी फ़िक्र करनेवाला कोई नहीं बचा ? यानी, तुम्हारे बिना हमारा काम चलेगा नहीं ? तुम्हारे पास रूह नाम की कोई चीज़ है या नहीं ? तुमने आंखों की सारी शर्म घोकर पी ली है क्या ?"

"लेकिन मैंने तुम्हारा बिगाड़ा क्या है ? तुम इस तरह बिगड़ क्यों रही हो, दादी ?" अकसीनिया ने क्रोध में आते हुए कहा।

"क्या मतलब है···यानी अभी यह भी है कि तुमने बिगाड़ा क्या है ? तुम्हें नताल्या के बच्चे को हाथ लगाने का क्या हक़ है, जब तुमने खुद उसे मौत के मुंह में ढकेला ?"

"ऐसा तुम कैसे कह सकती हो, दादी ? ज़रा होश की बातें करो। किसने ढकेला उसे मौत के मुंह में ? उसने तो अपनी जान आप दी।"

"और उसकी जड़ में तुम नहीं रहीं ?"

"मुझे उसके बारे मे कुछ भी पता नहीं।"

"लेकिन मुझे तो है।" इलीनीचिना आपे से बाहर होते हुए चीखी।

"चिल्ला मत, बुढ़िया···मैं कोई तेरी बहू नहीं हूं कि तेरी आंखें देखूंगी। आंखें दिखलाने को मेरा आदमी ही बहुत है।"

"मैं तुम्हारी नस-नस समझती हूं। मैं तो यह भी जानती हूं कि तुम मंसूबे क्या बांध रही हो। तुम मेरी बहू नहीं हो, लेकिन चाहती हो कि हो जाओ। पहले तुम्हारा इरादा बच्चों को अपने हाथ में ले लेने का है और फिर ग्रीशा को अपनी मुट्ठी में कर लेने का। ठीक है न ?"

"नहीं, तुम्हारे बेटे की बीवी बनने का मेरा कोई इरादा नहीं। तेरा दिमाग़ खराब है क्या, बुढ़िया ? मेरा अपना आदमी अभीज़िन्दा है।"

"यही तो सारा रोना है कि तुम अपने जिन्दा आदमी को छोड़कर एक दूसरे आदमी के गले बंधना चाहती हो।"

अकसीनिया का चेहरा एकदम उतर गया। बोली—"मेरी समझ में नहीं आता कि तुम क्यों हाथ धोकर मेरे पीछे पड़ी हुई हो, और क्यों इस तरह कोनाकानी कर रही हो! मैंने कभी किसी के गले में बंधना नहीं चाहा, और न आज चाहती हूं। जहां तक तुम्हारे पोते के साथ मेरी ममता का सवाल है, इसमें भला बुराई क्या है? तुम्हें अच्छी तरह पता है कि मेरी अपनी कोई आस-औलाद नहीं है, इसलिए दूसरों के बच्चों को देखकर मुझे खुशी होती है, और इसी नाते मैंने बच्चे को बुला लिया था। और चीजों के नाम पर मैंने उसे एक चीनी का टुकड़ा ही तो दिया···इसी को तुम चीजें कहती हो? फिर चीजें मैं उसे देने भी क्यों लगी? नीले आसमानवाला ही जाने कि तुम क्या बक-बका रही हो।"

"मीशात्का की मां जब तक जिन्दा थी, तब तक तुमने उसे कभी अपने यहां नहीं बुलाया। लेकिन उसकी आंखें मुंदते ही तुम्हारे दिल में उसके बच्चे के लिए ममता फूट पड़ी!"

"नताल्या थी तब भी वह जब-तब मेरे यहां आता था।" अकसीनिया ने हलके-से मुस्कराए बिना कहा।

"झूठ मत बोल, बेशर्म, रण्डी कहीं की!"

"तुम पहले उससे पूछ लो, तब मुझे जो चाहो सो कहो।"

"खैर अब तक कैसा क्या था, इसमें मैं नहीं पड़ती। लेकिन आज कहती हूं कि अब उस बच्चे को अपने यहां बुलाने की हिम्मत न करना। और यह बात तो अपने दिल से निकाल ही दो कि इस तरह तुम ग्रिगोरी का मन जीत लोगी। तुम उसकी बीवी कभी नहीं बन सकतीं, मेरी यह बात याद रखना!"

अकसीनिया का चेहरा गुस्से से ऐंठ उठा। भर्राए गले से बोली—"ज़बान बंद कर···वह मुझे बीवी बनाना चाहेगा तो तुझसे पूछने नहीं जाएगा···फिर, दूसरों के मामले में टांग अड़ाने की आदत छोड़!"

इलीनीचिना ने जवाब में कुछ और कहना चाहा, पर अकसीनिया

चुपचाप मुड़ी, अपनी बाल्टियों की बहँगी के पास आई, कराह के साथ बहँगी कंधे पर रखी, और पानी छलकाती तेज़ी से अपने रास्ते पर बढ़ चली।···

इस घटना के बाद मेलेखोव परिवार का कोई भी सदस्य जब भी आते-जाते राह मे अक़सीनिया को मिल जाता वह उसका अभिवादन तक न करती और अकूत स्वाभिमान से नाक फुलाती चुपचाप बग़ल से निकल जाती। लेकिन मीशात्का जब भी कहीं अकेला नज़र आता, वह कातर भाव से चारों तरफ़ निगाहें दौड़ाती और किसी को आसपास न देखती तो भागी-भागी उसके पास पहुँचती, झुकती, बच्चों को सीने से चिपटा लेती, एक साथ हँसते और रोते हुए, उसकी धूप से काली भौंहें और ग्रिगोरी की-सी उदासी से भरी, काली, नन्हीं-नन्हीं आँखें चूमती और अस्फुट स्वर में धीरे से कहती—"मेरे नन्हे-मुन्ने ग्रिगोरिएविच! मेरे राजा बेटे! मैं तुम्हारे लिए किस तरह कलपती रही हूँ! तुम्हारी अकसीनिया चाची बेवकूफ़ है···उफ़, कितनी बेवकूफ़ है!" और फिर बहुत देर तक उसके होंठों पर मुस्कान थिरकती रहती, और उसकी आँसुओं से डबडबाई आँखें इस तरह खुशी से चमकती रहतीं, जैसे कि अभी वह कम उम्र, जवान लड़की हो!

···अगस्त के अन्त में पेन्तेली को फ़ौज में बुला लिया गया, और उसके साथ ही हथियार सम्हालने लायक़ तातारस्की के सभी कज़्ज़ाक लाम पर चले गए। गाँव में मर्दों के नाम पर बाक़ी रह गए, सिर्फ़ लड़ाई के ज़ख्मी, नाबालिग बच्चे और अपाहिज बूढ़े। लूले-लंगड़े या अपंग लोग तक डॉक्टरी कमीशन के बाद ही इस तरह लहर से बच सके।···

पेन्तेली को गाँव के अतामान का आदेश मिला तो उसने जल्दी-जल्दी अपनी बूढ़ी पत्नी, अपने पोते-पोती और अपनी बेटी से विदा ली। वह कराहते हुए घुटने तोड़कर ज़मीन पर बैठा, दो बार धरती पर शीश झुकाया और देव-मूर्तियों के सामने क्रॉस बनाते हुए बोला—"अलविदा, अज़ीज़ो! लगता है, अब दुबारा हम एक-दूसरे को देख न पाएँगे। आखिरी वक्त आ गया है! तुम लोगों को मेरा हुक्म है कि रात को अनाज ओसाना, दिन को अनाज ओसाना, और बरसात शुरू होने के पहले

पहले यह काम खत्म कर लेना। जरूरत पड़े तो कोई मजदूर रख लेना। फिर अगर ख़िज़ाँ के वक्त तक मैं न आऊँ तो मेरे बिना ही काम चलाना। ख़िज़ाँ के खेत ताक़त-भर जोतना और उनमें राई बो देना। कम-से-कम दो एकड़ में तो राई बोना ही और बीबी, तुम अपने दिमाग पर सुस्ती मत छाने देना। काम कायदे से चलाना। हाथ-पैर चलाती रहना। ग्रिगोरी और मैं यानी हम दोनों लौटें और चाहे न लौटें, अनाज की तो तुम्हें जरूरत पड़ेगी ही, और सबसे ज्यादा पड़ेगी। लड़ाई लड़ाई है, मगर रोटी भी एक ऐसी चीज है कि न हो तो जिन्दगी काटे नहीं कटती।···अच्छा, ऊपरवाला तुम सबके सिरों पर हिफ़ाज़त का हाथ रखे!"

इलीनीचिना चौक तक अपने पति के साथ गई, उसे क्रिस्तोनिया के साथ भचक-भचककर तेजी से गाड़ी की ओर बढ़ते आखिरी बार देखा, एप्रन के सिरे से अपनी सूजी हुई आँखें पोंछीं और फिर, एक बार भी मुड़कर देखे बिना घर को लौट दी।

खलिहान में गेहूँ का अध-ओसाया अम्बार लगा था, स्टोव पर दूध रखा था और बच्चों ने सुबह से कुछ न खाया था, इसलिए इलीनीचिना राह में कहीं न रुकी। बग़ल से औरतें गुज़रीं तो उसने चुपचाप नमन-भर कर लिया, बातचीत किसी तरह की कोई न की। फिर जब एक परिचिता ने हमदर्दी से पूछा कि अपने सूरमा को रुखसत कर आई, तो सिर्फ़ सिर-भर हिला दिया कि हाँ।···

कई दिन बाद, एक दिन तड़के इलीनीचिना ने गायें दुहकर उन्हें बाहर निकाला और अहाते में लौटने लगी कि उसे एक गरज-सी सुनाई दी। उसने मुड़कर देखा तो आसमान में कहीं कोई बादल नजर न आया। पर गरज ज़रा देर बाद फिर हुई।

"यह गाना तुमने सुना, इलीनीचिना?" बूढ़े चरवाहे ने इधर-उधर की गायों को हाँककर एक जगह जमा करते हुए पूछा।

"कैसा गाना?"

"कैसा गाना···अरे, वही धीमे-धीमे सुनाई पड़नेवाला।"

"सुना तो, पर समझ में न आया कि आखिर यह है क्या?"

"समझ जाओगी···जल्दी ही समझ जाओगी···वह उधर से आकर जब यहाँ इस गाँव पर चोट करेगा, तो तुम्हारी भी समझ में आ जाएगा ···फ़ौरन ही आ जाएगा। यह तोप का धमाका था···वे लोग हमारे बड़े-बूढ़ों की हड्डी-पसली चूरा किए दे रहे है···"

इलीनीचिना ने क्रॉस बनाया और बेंत के छोटे फाटक में चुपचाप दाखिल हो गई।

फिर तो, तोपों के धड़ाके चार दिन तक बराबर होते रहे। वे रात-ढले और दिन-ढले खास तौर पर ज़ोर से सुनाई पड़ते। लेकिन हवा उत्तर-पूर्व की ओर से बहती तो दूर की घमासान लड़ाई का शोर-गुल दिन में भी सुन पड़ता। ऐसे में खलिहान का काम क्षण-भर को रुक जाता। औरतें क्रॉस बनाने लगतीं, लम्बी-लम्बी आहें भरने लगतीं और अपनों की याद कर ईश्वर से प्रार्थनाएँ करने लगतीं। लेकिन इसके बाद ही पत्थर के रोलर फिर गड़गड़ाने लगते, लड़के घोड़ों और बैलों को फिर तेजी से हाँकने लगते और कभी न हराई जा सकनेवाली मशक्क़त फिर अपने अधिकार अपने हाथों में ले लेती।

···अगस्त के अंतिम दिन आश्चर्यजनक रूप से सुहाने और खुश्क रहे। हवा भूसे का गर्दा गाँव-भर में उड़ाती फिरी। राई के भूसे की सोंधी-सोंधी महक हर जगह लटकी-सी रही, और धूप की बेरहमी के बावजूद जर्रे-जर्रे से आनेवाली खिज़ाँ का संकेत मिलने लगा। मुरझाया हुआ पेड़की के रंग का चिरायता कुछ-कुछ सफ़ेद दीखने लगा। दोन के पार देवदारुओं के सिरे पीले पड़ गए। बगीचों में खिज़ाँ के सेबों से उभरनेवाली महक और तेज़ हो उठी। दूर का क्षितिज और साफ़ हो उठा, और जाड़ा बिताने के लिए कहीं और जाने वाले पंछियों के पहले दल कटे हुए खेतों में नजर आने लगे।

फौजी सामान से भरी मालगाड़ियाँ पूर्व की ओर पश्चिम से हेत-मान की बड़ी सड़क पर लुढ़क-लुढ़ककर पार जाने के लिए दोन की ओर बढ़ने लगी। दोन के किनारे बसे गाँवों में शरणार्थी आने लगे। उनमें से कुछ ने बतलाया कि कज्जाक लड़ते हुए पीछे हट रहे हैं, मगर कुछ ने कहा कि कज्जाक जान-बूझकर पीछे हट रहे हैं, ताकि उसी झोंक में

लाल फ़ौजी भी पीछे चलते चले आएँ और फिर वे उन्हें घेरकर तलवार के घाट उतार दें।

इस पर तातारस्की के कुछ लोग भी लड़ने की तैयारी करने लगे। वे अपने बैलों और घोड़ों को खूब खिलाते और रात होने पर अनाज और क़ीमती माल-मते से भरे सन्दूक खाइयों में गाड़ते।···

फिर तोपों के शांत पड़ जानेवाले धड़ाके पांच सितम्बर को नए सिरे से और ज़ोर से गूंजे और इस बार कहीं साफ़ सुनाई पड़े। डर और दहशत बढ़ी। लड़ाई, दोन के पार तातारस्की के उत्तर-पूर्व में, कोई चालीस वर्स्ट के फ़ासले पर चलने लगी। अगले दिन तोपों के धड़ाकों ने पश्चिम को भी हिला दिया। मोर्चा बराबर नदी की ओर खिचता गया।

इलीनीचिना ने ज्यादातर लोगों के गाँव छोड़कर जाने की तैयारी की बात सुनी तो दून्या से बोली—"चलो, हम भी अपनी तैयारी कर।" पर वह परेशान हो गई और असमजस में पड़ गई। उसकी समझ में न आया कि फ़ार्म और घर का आखिर क्या किया जाए? बुढ़िया दुविधा में पड़ गई कि औरों की तरह ही सब-कुछ छोड़-छाड़कर चल दे या घर पर ही बनी रहे? पैन्तेली ने जाते समय ओमाई की और ढोरों की तो बात की थी, लेकिन यह बिल्कुल न बतलाया था कि लड़ाई तातारस्की तक खिच आए तो क्या हो!

आखिरकार इलीनीचिना ने निश्चय किया—दून्या और बच्चों को सारी कीमती चीजों के साथ गाँव के किसी आदमी को सहेज दूंगी, यहाँ से कहीं और भेज दूंगी और खुद घर पर ही बनी रहूँगी। और फिर लाल फौजियों के घुस आने पर भी यहीं बनी रहूँगी।

···१७ सितम्बर की रात को पैन्तेली एकाएक घर आया। पर कज़ान्स्काया जिला-केन्द्र के पास की किसी जगह से गाँव तक पैदल आने के कारण थकान से चूर-चूर और खीझा-खीझा लगा। मगर, आधे घंटे के आराम के बाद वह खाने की मेज के किनारे आकर बैठा तो उसका खाना देखकर इलीनीचिना को जीवन का एक नया ही अनुभव हुआ। पैन्तेली ने पातगोभी का कोई आधी बाल्टी शोरबा देखते-देखते साफ़

कर दिया और फिर जुआर की लपसी पर टूटा। बुढ़िया ने ताज्जुब से हाथ पीट लिए।

"हे नीली छतरीवाले!···कितना खा रहे हो तुम, प्रोकोफ़ियेविच! लगता है, जैसे कि तीन दिन के भूखे हो!"

"अच्छा, तो तुम्हारा ख़याल है कि मैंने कुछ खाया भी है···बेवकूफ़ कहीं की। पिछले तीन दिनों से तो एक बूंद पानी तक मुंह में नहीं गया।"

"तो फौजियों को वे लोग खाना नहीं देते क्या?"

"शैतान उन्हें भी वैसा ही खाना दे जैसा फ़ौजियों को लड़ते वक़्त देते है।" पैन्तेली ने बिल्ली की तरह घुरति हुए जवाब दिया—"जो कुछ तुम्हारे हाथ लग जाए, खा-पीकर खत्म कर दो!···पर चोरी करना मैंने अभी तक सीखा नहीं। फिर जवान करें यह सब! उनके पास रूह जैसी कोई चीज बची नहीं। इस गुनहगार लड़ाई ने उन्हें ऐसा उठाईगीरा बना दिया है कि मैंने देखा तो मुझे तो बहुत ही गहरा धक्का लगा। लेकिन बाद में मैंने अपने दिमाग़ का बोझ उतार दिया। वे तो जो कुछ देखते है, हड़प लेते है, और उसे खींच ले जाते हैं···यह लड़ाई नहीं है, बल्कि यह तो ऊपर वाले के इशारे पर ढहने वाली क़यामत है।"

"तुम्हें एक साथ इतना खाना नहीं चाहिए था। कहीं कुछ हो न जाए। ज़रा देखो तो कैसे फूल गए हो, बिलकुल मकड़े की तरह।"

"ज़बान बंद कर! थोड़ा-सा दूध ला दे···घर के बड़े-से-बड़े बरतन में ऊपर तक भरकर।"

इलीनीचिना ने अपने भूख से टूटे पति की हालत देखी तो उसकी आँखें भर आईं। आखिरकार जब पैन्तेली ने तश्तरी छोड़कर पीठ सीधी की तो पूछा—"अब तो नहीं जाना है?"

"देखा जाएगा।" बूढ़े ने बात टाली।

"मेरा खयाल है कि बड़े अफ़सरों ने तुम सब बड़े-बूढ़ों को घर आने की इजाजत दे दी है···है न?"

"उन्होने किसी को घर लौटने की इजाज़त नही दी है। और

इजाज़त वे दे भी कैसे सकते हैं, जब लाल फ़ौजी दोन की तरफ़ बढ़े चले आ रहे हैं ? मैं तो उड़ आया यों ही।"

"लेकिन इस तरह उड़ आने के लिए जवाबदेही नहीं करनी पड़ेगी तुम्हें ?"

"अगर पकड़ा जाऊँगा तो ज़रूर करनी पड़ेगी।"

"तो, क्या तुम अपने को छिपाकर रखोगे ?"

"और, तुमने क्या सोचा था कि मैं लोगों के यहाँ मेहमानियाँ खाता फिरूँगा या चौक में नाचता-गाता फिरूँगा ? उफ़, काठ की उल्लू ही रहीं तुम !" पैन्तेली ने गुस्से से जमीन पर थूका, लेकिन बुढ़िया अपना तार छेड़ती ही रही—"यानी, अभी दुख-दर्द जैसे हमने कुछ कम उठाए हैं, जो अब तुम्हारी गिरफ्तारी भी आँखों से देखनी पड़ेगी···"

"खैर, जेल में दिन काटना राइफ़ल लेकर पूरा स्तेपी मैदान मँझाते फिरने से कहीं बेहतर होगा।" पैन्तेली ने थकान से भरे स्वर में कहा—"मैं अब कोई जवान तो रहा ही नहीं हूँ कि एक-एक दिन में चालीस-चालीस वर्स्ट तय करता फिरूँ, खाइयाँ खोदता फिरूँ, डबल-मार्च कर दुश्मन पर हमला बोलता फिरूँ और सिर झुकाकर गोलियाँ बचाते हुए ज़मीन पर रेंगता फिरूँ।···एक गोली क्रिवाया रेचका के मेरे एक साथी के कंधे की हड्डी में ऐसी लगी कि उसने एक बार पैर तक नहीं पटका। इन सारी चीजोंमें कोई बहुत मजा नहीं रखा है।"

बूढ़ा अपनी राइफ़ल और कारतूसों की थैली लेकर बाहर गया और उसे भूसे के शेड में छिपा आया। पर जब बुढ़िया ने कोट के बारे में पूछा तो यों ही से ढंग से, ज़रा संकोच से बोला—"मैंने पहन-पहनकर फाड़ डाला; और जो ठीक-ठीक पूछो त मैंने फेंक दिया। बात यह है कि शुमिलिन्स्क के पार दुश्मनों ने ऐसा दबाया कि जिसके पास जो था उसने वहीं फेंक दिया और पागल की तरह भाग निकला। ऐसे में कोटों की फ़िक्र कौन करता ! कुछ लोगों के पास भेड़ों की खालें थीं। उन्होंने तो वे खालें तक फेंक दीं। ऐसी हालत में कोट तुम्हारे दिमाग़ में क्यों नाच रहा है ? फिर, अगर वह किसी लायक होता तो भी और बात थी···वह तो किसी फकीर तक को देने लायक़ नहीं रह गया था···।"

वास्तव में कोट ठीक-ठाक और अच्छा था, पर बूढ़े का स्वभाव था कि जो कुछ किसी भी स्थिति में उसे त्यागना पड़ता था, वह उसके लिए अच्छा न रह जाता था। यही कारण है कि उसने कोट के सिल-सिले में इस तरह की बातें कीं। इलीनीचिना ने बूढ़े की तबीयत की जानकारी के कारण कोट की अच्छाई-बुराई के बारे में आगे कुछ नहीं कहा।

···फिर रात को परिवार के सदस्यों की अपनी परिषद् बैठी और उसमें निश्चित हुआ कि जमीन-जायदाद की हिफ़ाजत और अनाज की गड़ाई के लिए पैन्तेली और इलीनीचिना आखिरी लमहेत क गाँव में ही रहेंगे। पर दून्या घर के सामान के बक्से गाड़ी पर लादकर नाते-रिश्ते-दारों के पास लातिशेव या चिर चली जाएगी।

लेकिन योजना पर पूरी तरह अमल हो नहीं पाया। अगले दिन सवेरे दून्या को रुख़सत कर दिया गया। पर दोपहर होते-होते ही काल्मीक-कज्जाकों की सजा देने वाली फ़ौजी टुकड़ी, घोड़ों पर सवार, तातारस्की आ धमकी। शायद गाँव के किसी कज्जाक ने पैन्तेली को घर जाते देख लिया था, क्योंकि आने के एक घण्टे बाद ही काल्मीक कज्जाक मेलेखोव के अहाते में नजर आए। पैन्तेली, घुड़सवारों को देखते ही ग़ैर-मामूली फुर्ती और तेजी से हाथों और घुटनों के बल ऊँची-से-ऊँची जगह पर चढ गया। इलीनीचिना मेहमानों की अगवानी के लिए निकलकर बाहर आई।

"कहाँ है तेरा बुड्ढा ?" सार्जेंट-मेजर की पट्टियों वाले, एक गठीले बदन और सयानी उम्र के काल्मीक ने घोड़े से उतरते और बुढ़िया को धक्का देकर बेंत के छोटे फाटक से अन्दर दाखिल होते हुए पूछा।

"मोर्चे पर है···और कहाँ होगा भला ?" इलीनीचिना ने मोटे ढंग से जवाब दिया।

"घर मे ले चल हमें···हम तलाशी लेंगे।"

"किसलिए ?"

"बूढ़े की तलाश के लिए···उफ़, शर्म नहीं आती तुझे···ऐसी और इतनी सयानी होकर झूठ बोलती है ?" एक जवान-से सार्जेंट ने

इलीनीचिना का सिर झकझोर दिया और अपने सेट हुए दांत पीसे।

"इस तरह दांत मत पीसो, समझे! मैंने कहा कि पैन्तेली घर पर नहीं है···इसका मतलब है कि वह घर पर नहीं है।"

"बेकार की बात बंद कर, घर में ले चल हमें···और अगर तू नहीं ले चलेगी, तो हम खुद घर के अन्दर घुस जाएंगे।" नाराज कालमीक ने सख्ती से कहा और अपने आगे की ओर मुड़े पैरों से लम्बे-लम्बे डग भरता बरसाती की ओर बढ़ा।

और, फिर फ़ौजियों ने कमरों की पूरी तलाशी ली और इसके बाद अपनी बोली में कुछ कहा। इस पर उनमें से दो आदमी पीछे के अहाते की ओर बढ़े और नाटे क़द, चेचक के दाग वाले, सांवले, लगभग काले चेहरे और बैठी हुई नाक के कालमीक ने अपनी चौड़ी, धारीदार शारोवारी उतारी और बरसाती में आया। इलीनीचिना ने खुले दरवाजे से देखा कि वह आदमी कूदा, उसने उछलकर धन्नियां पकड़ीं और अपने को ऊपर खींचा। पांच मिनट बाद ही वह कूदकर नीचे आया और उसके पीछे-पीछे सावधानी से नीचे कूदा, आहें भरता, धूल से नहाया, मकड़ी का जाला अपनी दाढ़ी में उलझाए पैन्तेली। उसने बुढ़िया को दांत भींचे खड़ा देखा तो बोला—"आखिरकार इन लोगों ने ढूंढ़ ही लिया मुझे! मौत ले जाए इन्हें। लगता है कि किसी-न-किसी ने बतलाया है···"

तो, पैन्तेली को पहरे में, कारगिन्स्काया के जिला केन्द्र में ले जाया गया। यहां बाद में उसका कोर्ट मार्शल हुआ। इलीनीचिना घर पर थोड़ी-बहुत रोई। पर इसी समय तोपों के धड़ाके और मशीनगनों की आवाज दोन के पार से नए सिरे से साफ़ सुन पड़ी तो वह खत्ती में गई कि कम-से-कम थोड़ा अनाज तो छिपा दे।

: २२ :

चौदह गिरफ़्तार भागने वालों को कोर्ट-मार्शल के दिन गिनने पड़े। कोर्ट-मार्शल में बहुत वक़्त नहीं लगा। फ़ैसले बेरहमी से किये गए। अदालत के प्रधान सयानी उम्र के कैप्टन ने हर अपराधी से नाम,

रेजीमेंट और रेजीमेंट से गायब रहने का समय पूछा, फिर अदालत के दूसरे सदस्यों यानी एक हाथ वाले एक लेफ्टिनेण्ट और आराम की जिन्दगी पर पले, दाढ़ी से मढ़े, फूले गालों वाले सार्जेन्ट से धीरे-धीरे कुछ बातें कीं और अपना फ़ैसला सुना दिया। ज़्यादातर भगोड़ों को वर्च के बेंत लगाए जाने की सज़ा दी गई और काल्मीकों ने इस काम के लिए निश्चित एक सूने घर में सजा को अमल में बदला।···इस समय १९१८ की तरह खुले आम बेंत लगाना सम्भव न था, क्योंकि हर दिन ही लड़ाकू दोन सेना के सदस्य फ़ौज से भाग खड़े होते थे। बीमारी खासी फैल गई थी···।

सो, अदालत में पेश किए जाने वालों में पैन्तेली का नम्बर छठा रहा। वह परेशानी से भरा, पीला चेहरा लिये जजों की मेज के सामने हाथ गिराकर आ खड़ा हुआ।

"तुम्हारा कुल नाम ?" कैप्टन ने अपराधी की ओर देखे बिना पूछा।

"मेलेखोव, हुजूर !"

"तुम्हारा नाम, पिता का नाम···पूरा पता ?"

"मेरा नाम पैन्तेली···बाप का नाम प्रोकोफ़ी···पूरा नाम पैन्तेली-प्रोकोफ़ियेविच—हुजूर ?"

कैप्टन ने आँखें सामने के कागजों से ऊपर उठाईं और बूढ़े को एकटक देखा, पूछा—"कहाँ के हो ?"

"व्येशेन्स्काया ज़िले के तातारस्की गाँव का हूँ, हुजूर !"

"तुम स्क्वैड्रन कमांडर ग्रिगोरी मेलेखोव के पिता तो नहीं हो?"

"हूँ, हुजूर !" पैन्तेली के बदन में फ़ौरन ही नई जान आ गई। उसे ऐसा लगा जैसे कि वर्च का बेंत उसके बूढ़े शरीर से दूर खिचता जा रहा है।

"अच्छा यह बताओ कि तुम्हें अपनी हरकत पर शर्म नहीं आती ?" कैप्टन ने दिल तक छेड़ देने वाली अपनी निगाहें पैन्तेली के बैठे हुए चेहरे पर जमाए-ही-जमाए पूछा।

इस पर बूढ़े ने सारे क़ानून-क़ायदे तोड़ते हुए अपना बायाँ हाथ

अपने बाएँ सीने पर रखा और रुआँसी आवाज में बोला—"कैप्टन बहादुर···सरकार···मुझे मौका दीजिए कि मैं ऊपर वाले से जिन्दगी-भर आपके लिए दुआ माँग सकूँ ! मुझे बेंत की सजा न दीजिए। मेरे दो बेटे थे···दोनों शादीशुदा, पर बड़ा लाल फ़ौजियों से लड़ते हुए लड़ाई में मारा गया···मेरे छोटे-छोटे पोते-पोती हैं···क्या जरूरी है कि मेरे जैसे टूटे हुए बूढ़े को भी बेंत लगाए जाएँ ?"

"हमें तो फ़ौज के बूढ़ों और जवानों दोनों को ही राह पर लाना है। तुम्हारा खयाल था कि तुम फ़ौज से भाग खड़े होगे तो तुम्हें क्रॉस इनाम में दिए जाएँगे ?" एक हाथ वाला लेफ़्टिनेंट बीच में बोला। उसके होंठों के सिरे फड़कने लगे।

"क्रॉस भला क्यों चाहूँगा मैं···? मुझे मेरी रेजीमेंट में वापस भेज दीजिए···अब मैं सच्चाई और ईमानदारी से अपना फ़र्ज अदा करूँगा···मैं खुद नहीं जानता कि फ़ौज से क्यों भागा···लगता है कि कोई शैतान मेरे सिर पर सवार हो गया।" फिर पैन्तेली अपने अन-ओसाए अनाज, अपने लँगड़े पैर और बुरी हालत में पड़े अपने फ़ार्म के गाने गा चला। परन्तु, कैप्टन ने हाथ के एक इशारे से उसे शांत कर दिया और फिर लेफ़्टिनेन्ट की तरफ़ झुककर उसके कानों में कुछ फुसफुसाने लगा। इस पर लेफ़्टिनेन्ट ने सिर हिलाया, तो कैप्टन पैन्तेली की ओर मुड़ा—"ठीक ! तो तुम्हें जो कहना था, तुम कह चुके न ? मैं तुम्हारे बेटे को जानता हूँ, और मुझे ताज्जुब है कि उसका बाप ऐसा है। तो, फौज से कब भागे तुम ?···एक हफ़्ता पहले ? यानी तुम क्या चाहते हो कि लाल फ़ौजी तुम्हारा गाँव हथिया लें और तुम्हारी खाल उधेड़कर रख दें ? जवान कज्जाकों के सामने यही मिसाल रखना चाहते हो तुम ? तो, क़ानून के मुताबिक तो हम [लोगों को तुम्हें बेंत लगाए जाने की सजा देनी चाहिए, लेकिन तुम्हारा बेटा अफसर है और हम उसकी इज्जत करते हैं, इसलिए तुम्हें बेइज्जती से बचाना चाहते हैं। तुम नॉन-कमीशन अफ़सर रहे हो ?

"जी, हुजूर !"

"क्या थे तुम ?"

"कारपोरल, हुजूर !"

"तुम्हें उस ओहदे से हटाकर मामूली फ़ौजी किया जाता है।" कैप्टन ने निगाह कार की ओर कड़ाई से आदेश दिया—"फ़ौरन जाओ अपनी रेजीमेंट में रिपोर्ट करो और अपने स्क्वैड्रन कमांडर को इत्तिला दो कि कोर्ट मार्शल ने अपना फ़ैसला देकर तुमसे कारपोरल का ओहदा छीन लिया है। इस लड़ाई या पहले की किसी लड़ाई में किसी तरह का कोई इनाम मिला है तुम्हें…? अच्छा, जाओ यहाँ से।"

पैन्तेली खुशी से फूला न समाया। उसने गिरजे के सामने खड़े होकर क्रॉस बनाया और पहाड़ियाँ पार कर हवा की रफ़्तार से घर की ओर उड़ चला। राह में घास का मैदान भचक-भचककर पार करते समय उसने सोचा—'खैर इस बार अपने को छिपाकर दिखला दूंगा मैं और इस तरह छिपा दूंगा कि शैतान भी हाथ मलकर रह जाएँगे। भेजें, चाहें तो काल्मीकों की तीन स्क्वैड्रनें भेज दें… अब की इन्हें मेरा पता मिलने से रहा।'

स्तेपी के मैदान में उसे खयाल आया कि आते-जाते घुड़सवारों की निगाह बचाने के खयाल से उसे सड़क-सड़क चलना चाहिए।

'अगर सड़क-सड़क न चलूंगा तो लोग अदबदाकर सोचेंगे कि मैं फ़ौज से भागकर आ रहा हूं। फिर कहीं फ़ौजियों से टक्कर हो गई तो इस बार बिना बहस-जिरह के वे बेंत से मेरी पीठ तोड़कर रख देंगे।' जुते खेत छोड़कर केले के पेड़ों से भरे एक वीरान रास्ते पर आते हुए उसने मन-ही-मन कहा और जाने क्यों अब उसे ऐसा लगने लगा जैसे कि फ़ौज से वह पहले कभी नहीं भागा।

पैन्तेली ज्यों-ज्यों दोन की ओर बढ़ा, त्यों-त्यों शरणार्थियों की गाड़ियाँ उसे राह में दीखीं। बसंत में लोगों के लड़ाई को पीठ दिखाकर पीछे भागने के समय जो दृश्य नजर आए थे, वे एक बार फिर सामने लगे। घरेलू चीजों से भरी गाड़ियाँ और मार्च के सिलसिले में बढ़ते घुड़सवार फ़ौजियों में डकारते मवेशी हर ओर फैले मिले। भेड़ों के रेवड़ धूल के बादल उड़ाते रहे। पहियों की चरमराहट, घोड़ों की हिनहिनाहट, इन्सानी चीखों, अनगिनत टापों की टपाटप, भेड़ों की

में-में और बच्चों की रुलाई से पूरा स्तेपी मैदान भरा रहा। उसकी
शांति का तार रह-रहकर टूटता रहा और वातावरण में हलचल पैदा
करने वाली आवाजें रह-रहकर उभरती रहीं।
"कहाँ जा रहे हो, दादा? लौट आओ···लाल फौजें हमारे ऐन
पीछे हैं।" बगल में गुजरती गाड़ी में बैठे एक कज्जाक ने कहा। उसके
सिर में पट्टी बँधी हुई थी।
"तुम अपने रास्ते जाओ। कहाँ हैं लाल फौजी?" पैन्तेली बेहद
घबरा गया और ठिठक रहा।
"लाल फ़ौजी दोन की दूसरी तरफ हैं। व्येशेन्स्काया के पास
"लाल फ़ौजी दोन की दूसरी तरफ हैं। व्येशेन्स्काया के पास
पहुँचते ही हैं। क्या तुम उनके हाथों नोच रहे हो अपने को?"
पैन्तेली ने अपने और लाल फौजियों के बीच नदी के दोन की बात
सुनी तो उसे नए सिरे से ढाढस बँधा और उसने अपना सफर बराबर
जारी रखा। शाम होते-होते वह तातारस्की के पास पहुँच गया।
पर पहाड़ी से उतरते समय चारों ओर निगाह दौड़ाई तो गाँव को
एकदम वीरान पाकर उसके अचरज का ठिकाना न रहा। गली-
सड़क पर कहीं कोई परिंदा पर भरता न समझ पड़ा। घरों की
झिलमिलियाँ बन्द रहीं और उनमें सन्नाटा उमड़ता रहा। न कहीं
किसी इन्सान की आवाज सुन पड़ी और न कहीं किसी जानवर
की। मगर नीचे नदी के किनारे जरूर कुछ जिन्दगी नजर आई,
पैन्तेली ने वहाँ के हथियारबन्द कज्जाकों को आसानी से पहचान
लिया। वे बजरे घसीट-घसीटकर गाँव में ले जाते लगे। अनुमान लगा
कि तातारस्की के कुल-के-कुल लोग जगह छोड़कर चले गए है। पैन्तेली
किनारे की गली में मुड़कर अपने घर की ओर बढ़ा। इलीनीचिना और
पोता-पोती बावर्चीखाने में बैठे मिले।
"अरे बाबा आ गए···बाबा" मीशात्का खुशी से चिल्ला पड़ा और
उसने बूढ़े के गले में हाथ डाल दिए।
इलीनीचिना की आँखें खुशी से भर आईं। आँसुओं के बीच
बोली—"मुझे नहीं उम्मीद थी कि तुम्हें दुबारा देख भी सकूँगी।
अब प्रोकोफ़िएविच, तुम जैसा चाहो करो, पर मैं यहाँ एक लमहा भी

रहने को तैयार नहीं। हर चीज़ जलकर राख होनी हो तो हो जाए, पर छूँछे घर की पहरेदारी मुझसे होने से रही। गाँव के करीब-करीब सभी लोग यहाँ से कभी के चले गए हैं, मगर मैं हूं कि बच्चों को लिये बेवकूफ़ की तरह जहाँ-की-तहाँ बैठी हूं। मैं तो कहती हूं कि तुम फ़ौरन ही घोड़ी गाड़ी में जोतो और हम जहाँ सींग समाएँ, वहाँ चले चलें। तुम्हें छोड़ दिया उन अफ़सरों ने ?"

"हां!"

"बिल्कुल ?"

"हां, बिल्कुल ही समझो जब तक कि दुबारा उनके हाथ न पड़ जाऊं।"

"लेकिन तुम्हारा यहां छिपा रह सकना मुमकिन नहीं। आज सवेरे सामने के किनारे से लाल फ़ौजियों ने गोली चलाना शुरू किया तो हालत बहुत ही नाजुक हो गई। मैंने बच्चों को पूरा वक्त तहखाने में रखा। पर फ़िलहाल वे अपनी जगह नहीं हैं। उन्हें पीछे ठेल दिया गया है। पर यहां कुछ कज्जाक दूध मांगने आए और उन्होंने हमें फ़ौरन ही यहाँ से चले जाने की सलाह दी।"

"कज्जाक आए? कहीं अपने गांव के तो नहीं?" पैन्तेली ने खिड़की के चौखटे में लगी गोली के निशान को ग़ौर से देखते हुए ज़रा दिलचस्पी से पूछा।

"नहीं···वे लोग यहाँ के नहीं थे···खोपर के थे···मेरा ख़याल है।"

"अगर ऐसा है तो हमें गांव छोड़ ही देना चाहिए।" पैन्तेली ने आह भरकर कहा।

तीसरे पहर के काफी बाद पैन्तेली ने कंडों के अम्बार में जगह की, उसमें गेहूँ के सात बोरे लुढ़काए, उसे होशियारी से भरा और उसके ऊपर कंडे पाट दिए। फिर सांझ का धुंधलका होते ही उसने घोड़ी गाड़ी में जोती, भेड़ की खालों के दो कोट, एक बोरा आटा, जई और एक भेड़ उस पर लादी, दोनों गायें पीछे बांधीं और इलीनीचिना और बच्चों को बोरों पर बिठाते हुए बोला—"अच्छा तो अब ऊपरवाले के सहारे छोड़ दें अपने को हम।"

पैन्तेली ने गाड़ी अहाते के बाहर निकाली, रासें अपनी बूढ़ी पत्नी के हाथों में दीं और पहाड़ी तक गाड़ी की बगल-बगल पैदल चलता रहा। इस बीच वह रह-रहकर नाक छिनकता और कोट की आस्तीन से अपने आँसू पोंछता रहा।

: २३ :

१८ सितम्बर को, तीस वर्स्ट की मंजिल मारकर कमाण्डर शोरीन की कमान में नवीं लाल फ़ौज की अगली टुकड़ियाँ दोन के किनारे पहुँचीं। १८ सितम्बर को सवेरे लाल फ़ौजों के तोपखानों ने मेदवेदित्सा के बहाने से कज़ान्स्काया जिले के पूरे इलाके तक आग बरसानी शुरू कर दी। फिर थोड़ी गोलाबारी के बाद पैदल सेना ने बाएँ किनारे के गाँवों और बुकानोव्स्काया, येलान्स्काया और व्येशेन्स्काया के जिला-केन्द्रों पर अधिकार कर लिया। दिन समाप्त होते-होते बाएँ किनारे के एक सौ पचास वर्स्ट के क्षेत्र से श्वेत सेना साफ़ हो गई। कज्जाक-स्क्वैड्रन पीछे हटकर पहले से तैयार मोर्चों पर पहुँच गए। नदी पार करने के सभी साधन उनके अपने अधिकार में रहे, पर व्येशेन्स्काया का पुल लाल फ़ौजों के हाथों में जाते-जाते बचा। वैसे कज्ज़ाकों ने काफ़ी पहले से पुल के चारों ओर पुआल जमा कर रखा था और तख्ते मिट्टी के तेल से भिगो रखे थे कि पीछे हटते समय उसमें आग लगा देंगे। और अब वे आग लगाने जा ही रहे थे कि दूत घोड़ा दौड़ाता आया और खबर लाया कि ३७वीं रेजीमेंट की एक स्क्वैड्रन पेरेवोज़नी गाँव से पीछे हटकर व्येशेन्स्काया के पुल की ओर बढ़ रही है। इस पर, लाल पैदल सेना के दाखिल होते-होते, कज्ज़ाक टुकड़ी वहाँ पहुँच गई और मशीनगनों की गोलियों की मार के बावजूद उसने पीछे से आग लगा दी। इसमें उसके अपने दस से ज्यादा फ़ौजी मारे गए और जख्मी हुए; और इतने ही घोड़े खत्म हो गए।

नवीं लाल सेना की बाईसवीं और तेईसवीं रेजीमेंटों ने दोन के किनारे के जो गाँव ले लिए थे, उन्हें सितम्बर के अन्त तक अपने अधिकार में बना रखा।···विरोधी सेनाओं को बीच से बाँटने वाली नदी

उन दिनों दो सौ गज से ज्यादा चौड़ी न थी, और कहीं-कहीं तो उसकी चौड़ाई ज्यादा-से-ज्यादा सत्तर गज थी। ऐसे में लाल फौजियों ने यहीं भी उसे पार करने की कोई कोशिश पूरे जोर से न की। यहीं-कहीं चट्टान के इस पार से उस पार जाने की चेष्टा की, पर हर जगह उन्हें पीछे ठेल दिया गया।

पूरे दो सप्ताह तक मोर्चे के पूरे इलाके में तोपों और छोटे हथियारों से आग बरसती रही। कज्जाक ऊँचाइयों पर बने रहे और दुश्मन की दोन की तरफ़ बढ़ने की दिन की हर कोशिश बेकार करते रहे। मगर इस इलाक़े के दूसरे स्क्वैड्रनों में प्रायः बूढ़े और सत्रह से उन्नीस साल के बीच कम उम्र लोग रहे; इसलिए, अपनी कमजोरी के कारण न उन्होंने अपने-आप दोन पार करने का यत्न किया और न बाएँ किनारे से हमला कर लाल सेनाओं को पीछे खदेड़ा।

पहले दिन पीछे हटकर दाएँ किनारे पर पहुँचने के बाद से ही कज्जाकों ने लाल सेना के अधिकारवाले गाँवों के जलकर राख हो जाने की आशा बराबर की। पर यह देखकर उनके ताज्जुब का ठिकाना न रहा कि बाएँ किनारे के एक गाँव से भी धुआँ न उठा। यही नहीं, रात को जो गाँववाले उनके पास आए, उन्होंने बतलाया कि लाल फ़ौज के लोग न सिर्फ़ यह कि किसी की किसी चीज को हाथ तक नहीं लगा रहे, बल्कि यह भी कि जो कुछ वे खाते हैं उसकी खासी क़ीमत अदा करते हैं, और तरबूज तक खाने पर इसी उदारता का परिचय देते हैं। इससे कज्जाक जितने ही असमंजस में पड़े, उतना ही आश्चर्य भी हुआ। उन्हें लगा कि बगावत के बाद तो लाल फ़ौजियों को विद्रोहियों के गाँवों और जिला-केन्द्रों को धूल में मिला देना चाहिए था, पीछे रह गई, लगभग पचास प्रतिशत पुरुषोंवाली आबादी को बेरहमी से नेस्तनाबूद कर देना चाहिए था। परन्तु इसके उल्टे सूचना उन्हें यह मिली कि उन्होंने किसी भी शान्तिप्रिय व्यक्ति को उँगली से नहीं छुआ और हर चीज से यह लगा कि बदला लेने का तो उनका किसी तरह का कोई इरादा ही नहीं है।

१९ तारीख की रात को व्येशेन्स्काया के सामने के पड़ाववाले

तोपर के कज्ज़ाकों ने दुश्मन के इस विचित्र व्यवहार की गहराई में जाने का फ़ैसला किया। तुरही की-सी तेज आवाजवाले एक कज्ज़ाक ने मुँह के दोनों ओर हाथ बाँधे और चीखकर कहा—"हे, घड़ों-सी लाल तोंद-वालो, तुम हमारे घर जला क्यों नहीं रहे? तुम्हारे बीच जोड़ के लोग हैं क्या? नहीं हैं तो इधर आओ, हम तुम्हारे साथ कर दें कुछ ऐसे लोग।"

एक ऊँची आवाज ने अंधकार भेदा और जवाब दिया—"तुम हमें मिले नहीं, वरना तुम्हारे घरों के साथ हम तुम्हें भी भूनकर रख देते।"

"गरीब हो तुम लोग···है न? आग जलाने तक को कुछ नहीं है तुम्हारे पास।" कज्ज़ाक उत्तर में चिल्लाया।

और शान्त, खिले हुए स्वर वापस आए—"इधर आ जरा, श्वेत दोगले, फिर देखें कि हम तेरे पतलूनों के अन्दर कैसे अँगारे रख देते हैं कि ज़िन्दगी-भर मजा मिलता रहे तुझे!"

चौकियों के बीच गालियों के सवाल-जवाब हुए, दो-चार-दस बार गोलियाँ चलीं और फिर सन्नाटा छा गया।

···अक्तूबर के आरम्भ में कजान्स्काया-पावलोन्स्क क्षेत्र में केन्द्रित दो फ़ौजी कोरों की दोन सेना की मुख्य सेनाओं ने हमला बोल दिया। ८,००० संगीनों और ६,००० से अधिक तलवारों की तीसरी दोन-सेना-कोर ने ५६वीं लाल सेना डिविजन को पीछे खदेड़ दिया और बड़ी ही सफलता से पूर्व की ओर बढ़ना शुरू किया। जल्दी ही जनरल कोनोवा-लोव की दूसरी सेना की कोर ने भी दोन नदी पार की। इस कोर में खास तौर पर घुड़सवार टुकड़ियाँ रहीं और उन्होंने दुश्मन की पंक्तियों में धँसकर उस पर ताबड़तोड़ कई चोटें कीं। दूसरी ओर अब तक रिज़र्व में रखी गई २१वीं लाल पैदल डिवीजन को मैदान में लाया गया। इस डिवीज़न ने तीसरी दोन-सेना-कोर का आगे बढ़ना रोका और कुछ समय तक उसे इसमें बड़ी कामयाबी भी मिली। पर बाद में दोनों सेनाओं ने मिल-जुलकर ऐसा दबाव डाला कि उसे मजबूर होकर पीछे हट जाना पड़ा। १४ अक्तूबर की भयानक लड़ाई में दूसरी फ़ौजी कोर ने, १४वीं लाल पैदल डिवीज़न को क़रीब-क़रीब काटकर फेंक दिया।

फिर एक सप्ताह के अन्दर-अन्दर लाल फ़ौजों को बाएँ किनारे के क्षेत्र से निकालकर श्येशेन्स्काया तक खदेड़ दिया गया। इसके बाद दोन सेना की दोनों कोरें नवी लाल सेना को बराबर पीछे-ही-पीछे ठेलती रहीं।

लगभग इसी समय जनरल कोनोवालोव की दूसरी फ़ौजी कोर की तरह ही, वलेत्स्काया-जिले में स्थित पहली दोन सैनिक टुकड़ी ने भी नदी पार की।

इस तरह नवी लाल सेना की बाईं बाजू की डिवीजनों के घिर जाने का खतरा पैदा हुआ तो दक्षिण-पूर्वी मोर्चे के कमांडर ने अपनी फ़ौजों को इकोन्त्स नदी के मुहाने से कुमील्जेन्स्काया तक फैली रेखा तक पीछे हट जाने का आदेश दिया। लेकिन नवी लाल सेना के पैर यहाँ भी जमे नहीं रह सके। आम फ़ौजी भर्ती के सिलसिले में ऊबड़खाबड़ ढंग से संगठित कई कज़्ज़ाक स्क्वैड्रनों ने दाहिने किनारे की ओर से नदी पार की और दूसरी ओर दोन फ़ौजी कोरों की नियमित टुकड़ियों में शामिल होकर लाल सेनाओं को निरन्तर उत्तर की ओर पीछे ठेलते रहे। फलस्वरूप २६ अक्तूबर तक श्वेत सेनाओं ने फ़िलनोवो और पोवोरीनो स्टेशन और नोवोखोपरस्क नगर ले लिया। किन्तु दोन सेना की अक्तूबर की महान् सफलताओं के बावजूद कज़्ज़ाकों में वह आत्म-विश्वास न जग सका जिसने वसन्त में उन्हें प्रेरणा दी थी, और जिसके सहारे वे प्रान्त की उत्तरी सीमा तक विजय-पर-विजय प्राप्त करते चले गये थे। सो मोर्चे की अगली पंक्ति के अधिकांश सैनिकों ने अपनी उप-लब्धि को अस्थायी समझा और सोचा कि जाड़े के बाद इस तरह आगे बढ़ते रहना मुमकिन नहीं होगा।

फिर दक्षिणी मोर्चे की स्थिति सहसा ही एकदम बदल गई। ओरेल क्रोमी मोर्चे की आम लड़ाई में स्वयसेवक सेना की हार और वोरोनेज क्षेत्र में बुदयोननी की घुड़सवार सेना के शानदार कार-नामों ने लड़ाई के नतीजे का फ़ैसला कर दिया। नवम्बर में स्वयं-सेवक-सेना को दक्षिण की तरफ़ पीछे हटना पड़ा। इस तरह दोन सेना का बायाँ पक्ष दुश्मन के वार के लिए बिल्कुल सामने आ गया और अंत में उसे भी पीछे हट जाना पड़ा।

: २४ :

पैन्तेली ढाई महीने तक लातीशेव गाँव में अपने परिवार के साथ सही-सलामत रहा। लेकिन, लाल सेनाओं के दोन से पीछे हट जाने की खबर पाते ही वह लौट पड़ा।

···तातारस्की से कोई पाँच वर्स्ट पहले वह एक संकल्प के साथ अपनी गाड़ी से उतरकर नीचे आया और बोला—"यह पैदल चाल अब अपनी बर्दाश्त के बाहर है और इन हरामजादी गायों के साथ गाड़ी दौड़ाना मुमकिन नहीं है। दून्या, बैल रोको और गायें अपनी गाड़ी से बाँध लो। कौन जाने हो सकता है कि घर अब तक जलकर राख हो चुका हो!"

बस, जो मन की बेसब्री से परेशान होकर उसने बच्चे अपनी गाड़ी से उठाकर दून्या की बड़ी गाड़ी में बिठाये। इनके साथ ही सारा फालतू सामान उसमें रखा और अपनी हलकी गाड़ी ऊँची-नीची सड़क पर दौड़ा चला। फिर तो पहले वर्स्ट का फ़ासला तय करने में ही घोड़ी पसीने-पसीने हो गई। उसके मालिक ने इतनी बेरहमी उसके साथ आज तक कभी न बरती थी। वह उसकी पीठ पर चाबुक पर चाबुक जमाता रहा। चाबुक क्षण-भर को भी उसने हाथ से नीचे रखा ही नहीं।

"तुम घोड़ी की जान लेकर छोड़ोगे! ऐसे पागलों की तरह गाड़ी क्यों दौड़ा रहे थे आखिर?" इलीनीचिना चीखी। इस बीच गाड़ी के डंडे उसने कसकर थाम लिए और हिचकोलों के कारण उसके माथे की नसें दर्द से तन गईं। "जो भी हो, तुम तो मेरी क़ब्र पर आँसू बहाने आओगी नहीं?···तू···तू घोड़ी की बच्ची, पसीने से भीग रही है··· क्यों? मैं अभी निकालता हूँ तेरा पसीना! कौन जाने घर की जगह सिर्फ़ खंडहर मिले हमें?" पैन्तेली ने दाँत पीसते हुए कहा।

परन्तु उसकी आशंका निराधार निकली। घर ज्यों-का-त्यों खड़ा मिला। वैसे हालत जरूर खराब थी। सभी खिड़कियाँ टूट गई थीं, दरवाजे कब्जों से अलग हो गए, और दीवारें गोलियों से छेदही हो गई थीं। अहाते की हर चीज से बेपरवाही और वीरानी टपक रही थी। अस्तबल का कोना तोप के गोले से झड़ गया था। दूसरे तोप के गोले से दीवार के पास सेंध हो गई थी। इससे चौखटा चूर-चूर हो गया और

कुएँ का लकड़ी का साँचा बीच से दो हो गया था। जिस लड़ाई से पेन्तेली भाग खड़ा हुआ था वह खुद उसके घर में घुस आई थी और बरबादी के रूप में अपने घिनौने निशान छोड़ गई थी। लेकिन इससे कहीं ज्यादा नुकसान, तातारस्की में पड़ाव डालने वाले खोपर के कज्जाकों ने फ़ार्म को पहुँचाया था। मवेशियों के अहाते में बाड़ें उखाड़ फेंकी थीं और आदमी के क़द के बराबर गहरी खाइयाँ खोद डाली थीं। ऊपर का काम बचाने के लिए खत्ती की एक दीवार ढहा दी थी और उसके लड़की के तख्ते अपनी खाइयों के किनारे-किनारे लगा लिए थे। मशीनगन के लिए एक आड़ बनाने की खातिर पत्थर की दीवार के पत्थर निकालकर फेंक दिए थे। सूखी घास की टाल आधी कर दी थी और घास बड़ी लापरवाही से अपने घोड़ों को खिला दी थी। बेंत की बाड़ों में आग लगा दी थी, और बाहर के बावर्चीखाने का स्टोव किसी काम का न छोड़ा था।

सो घर और घर के बाहर की चीज़ों को जो पेन्तेली ने देखा तो अपना सिर थाम लिया। नुकसानों को नुकसान न मानने की हमेशा की आदत ने इस समय उसका दामन छोड़ दिया। इस बार उसके मुँह से बिलकुल न निकला कि हटाओ भी···ऐसा नुकसान भी क्या हुआ है···तिनके के बराबर समझो···खत्ती न तो कोई मामूली फोट थी, और न उसके बनाने में कोई छोटी रक़म खर्च हुई थी।

"ऐसा लगता है जैसे कि खत्ती अपने यहाँ कभी थी ही नहीं।" इलीनीचिना ने आह भरकर कहा।

"खत्ती कोई ऐसी न थी···" पेन्तेली ने जल्दी-जल्दी कहा, पर वाक्य पूरा न कर सका। उसने अपना हाथ हवा में लहराया और खलिहान में चला गया।

घर की दीवारों में गोलियों और तोपों के गोलों के निशान चेहरे के चेचक के दाग़ों-से लगे। लगा कि दीवारों की किसी ने किसी तरह की कोई परवाह नहीं की। हवा कमरे में सरसराती रही और मेज़ों और बेंचों पर परत-की-परत गर्द जमी रही। जर्रे-ज़र्रे ने जैसे चिल्लाकर कहा कि अब नए सिरे से सब-कुछ ठीक-ठाक करने में वक्त लगेगा।

पैन्तेली दूसरे दिन ही घोड़े पर सवार होकर व्येशेस्काया चला गया और थोड़ी मुसीबत उठाकर अपने डॉक्टर-मित्र से एक सर्टिफ़िकेट ले आया कि कज्जाक पैन्तेली-प्रोकोफ़ियेविच मेलेखोव पैर की तकलीफ़ की वजह से चल-फिर नहीं सकता और उसे बाक़ायदा इलाज की जरूरत है। बस तो दुबारा मोर्चे पर जाने से उसकी जान छूट गई। उसने यह सर्टिफ़िकेट अतामान को दिखलाया और गांव के प्रशासकों के पास गया तो मामले पर मुहर मारने के लिए हाथ के बेंत पर और जोर दिया। और एक-एक पैर से पारी-पारी भचका।···

सेनाओं के पीछे हटने के अभियान के बाद कज्जाक जब तातारस्की लौटे तो उन्हें ऐसी तबालत उठानी पड़ी और ऐसी परेशानी का सामना करना पड़ा कि अब तक की जिन्दगी की सारी तबालतें और परेशानियां हल्की पड़ गईं। खोपर के कज्ज़ाकों ने उनकी सारी चीजें इस तरह इधर-उधर फेंक दी थीं कि लोग उन्हें अहाते-अहाते घूम-घूमकर पहचानते फिरे। वे अपनी गायों की तलाश में स्तेपी में जहां-तहां भटकते फिरे। मालूम हुआ कि गोलाबारी के तीसरे दिन ही तीनसौ भेड़ों का रेवड़ का रेवड़ गांव के ऊपरी सिरे से ग़ायब हो गया। गड़रिये के अनुसार, तोप का एक गोला चरती हुई भेड़ों के झुंड के सामने गिरा। उसके गिरते ही भेड़ें डरकर दुमें उठाती हुई स्तेपी में भागीं और जाने कहां लापता हो गईं। फिर वोरान गांव के लोगों के लौटने के एक सप्ताह बाद वे चालीस वर्स्ट के फ़ासले पर मिलीं। पर उन्हें हांककर गांव लाया गया और छांटा गया तो आधी भेड़ें बाहर की निकलीं और तातारस्की की पचास से ज्यादा भेड़ें ग़ायब मिलीं। बोगातिरयोव-परिवार की सिलाई की मशीन मेलेखोव के बाग में पाई गई। पैन्तेली की छत्ती की टीन की चादर अनीकुश्का के खलिहान में पड़ी मिली। यही हालत पास-पड़ोस के हर गांव में नज़र आई। फिर बहुत समय तक दोन के किनारे के इलाकों के पास-दूर के गांवों के लोग तातारस्की आते रहे और पूछते रहे—"तुमने हमारी गाय तो नहीं देखी? रंग लाल था···माथे पर एक जगह के बाल गायब थे···बायाँ सींग थोड़ा टूटा हुआ था।···हमारा बछड़ा कहीं घूमते-फिरते आपके गांव में तो

नहीं आ गया ? एक साल का था।"

और कोई सन्देह नहीं कि एक नहीं, जाने कितने एक-एक साल के बछड़े कज्जाक स्क्वैड्रनों के कड़ाहों और बावर्चीखानों में उबाल डाले गए थे, मगर उनके मालिकों ने आशा नहीं छोड़ी, और वे एकदम निराश हो जाने की स्थिति तक स्तेपी के मैदान में उन्हें ढूंढ़ते रहे—मारे-मारे फिरते रहे।

पैन्तेली ने फौज की झंझट से छुटकारा पाने के बाद बाहर की इमारतें ठीक-ठाक की और बाड़ें दुरुस्त कीं। खलिहान में अन ओसाये अनाज के अम्बार लगे रहे और भूख से टूटी चुहियाँ उनके बीच दौड़ लगाती रहीं। पर बूढ़े ने ओसाई के काम में हाथ नहीं लगाया। वैसे वह हाथ लगाता तो लगाता भी कैसे, जबकि फ़ार्म में बाड़ तक नहीं थी, खत्ती की नीव तक गायब थी, और फ़ार्म की हर चीज़ पर बरबादी के हाथों के काले निशान थे! फिर यह भी कि खिजाँ आई तो सुहाना मौसम अपने साथ लाई। ऐसे में ओसाई की ऐसी हड़बड़ी भी भला क्या होती!

दून्या और इलीनीचिना ने दीवारों पर फिर से पलस्तर चढ़ाया, पूरे घर की पुताई की और कामचलाऊ बाड़ खड़ी करने और दूसरे कामों में पैन्तेली का हाथ बँटाया। उन्होंने जाने कहाँ से शीशा हासिल कर लिया। खिड़कियाँ नए सिरे से चमका डालीं और गरमी का बावर्चीखाना और कुएँ की सफ़ाई का काम पूरा कर डाला। बूढ़ा खुद कुएँ मे उतरा और नीचे गहराई में सर्दी खा गया। फिर एक सप्ताह तक खाँसता और छींकता फिरा। पूरे सात दिन उसकी कमीज पसीने से नहाती रही। पर एक बार में ही घर की बनी वोद्का की दो बोतलें साफ़ करते ही और गरम स्टोव के ऊपर थोड़ी देर तक लेटते ही सारी बीमारी यों उड़नछू हो गई जैसे कि किसी ने जादू कर दिया हो।

परन्तु ग्रिगोरी की कोई खोज-खबर अब भी नहीं मिली। केवल अक्तूबर के अन्त में ही पैन्तेली को पता लगा कि वह बिलकुल ठीक है और अपनी रेजीमेंट के साथ कहीं वोरोनेज-प्रांत में है। यह सूचना भी सुयोग से ही मिली; गाँव से होकर गुज़रने वाले ग्रिगोरी की रेजीमेंट के

एक जख्मी कज्ज़ाक से। बूढ़ा खुशी से खिल उठा और इसी उमंग में लाल मिर्च-मिली वोदका की दवा की आखिरी बोतल ढाल गया। बाद में दिन-भर बकबकाता रहा और जवान मुर्गे की तरह ऐंठा-ऐंठा फिरता रहा। उसने बग़ल से होकर निकलने वाले हर व्यक्ति को रोका और बोला—"तुमने ख़बर सुनी? हमारे ग्रिगोरी ने वोरोनेज ले लिया। हमने तो यहाँ तक सुना है कि उसका ओहदा बढ़ा दिया गया है, और इस वक़्त एक डिवीजन या शायद एक कोर-की-कोर की कमान उसके हाथों में है। ऐसा फ़ौजी तो दूर-दूर तक ढूंढे नहीं मिलेगा। यह बात तो तुम खुद भी जानते हो······" इस तरह बुड्ढा अपना राग अलापता रहा और जरूरी समझता रहा कि दूसरे भी उसके मन को इस खुशी में हिस्सा बँटाएँ···।

"बेटा तुम्हारा सूरमा है···सूरमा!" गांव वाले बोले।

पैन्तेली ने खुशी से आंख मारी—"और, सूरमा भला वह होता कैसे नहीं? आखिर बेटा किसका है! मैं कोई डींग नहीं मारता··· लेकिन, अपनी जवानी के जमाने में उससे किसी तरह उन्नीस नहीं था। यह तो मेरा पैर है कि आड़े आता है, वरना मैं तो आज भी उसे अपने से आगे निकलने न दूं। पूरी डिविज़न न सही, पर एक स्क्वैड्रन तो मैं सम्हाल ही सकता हूँ। अरे, अगर मोर्चे पर मेरे जैसे बूढ़ों की गिनती ज्यादा होती तो हमने मास्को जाने कब का लेकर दिखला दिया होता। लेकिन फ़िलहाल तो हम सही वक़्त के इन्तजार में हैं···ये किसान तो हमारी सम्हाल में आते ही नहीं···"

उस दिन पैन्तेली ने जिस अंतिम व्यक्ति से बातें कीं, वह बेस्खलेबनोव रहा। वह पैन्तेली के अहाते की बग़ल से निकला तो बूढ़े ने बिना चूके उसे टोका—"ए···ठहरो जरा, फ़िलिप-अगेविच! क्या हालचाल है? इधर आओ न, थोड़ी गपशप हो जाए।"

बेस्खलेबनोव पास आया और उसने पैन्तेली का अभिवादन किया। पैन्तेली ने पूछा—"मेरे ग्रीशा के कारनामे सुने तुमने?"

"क्यों, ऐसा क्या किया उसने?"

"अरे, उसे एक पूरी-की-पूरी डिविज़न की कमान सौंप दी गई

है···यानी एक पूरी डिविजन उसको मातहत है।"

"एक पूरी डिविजन ?"

"हाँ, एक पूरी डिविजन !"

"सचमुच ?"

"सचमुच···और, किसी ऐरे-गैरे को तो कमान इस वक़्त लोग सौंप नहीं देंगे···है कि नहीं ?"

"हाँ, सो तो है।"

पेन्तेली ने अपने साथी के चेहरे पर निगाह टिका दी और अपने प्रिय विषय को लेकर बात खींच चला—"मेरे बेटा है एक और उसने सभी को ताज्जुब में डाल रखा है। इतने क्रास मिले हैं उसे कि पूरा एक बक्सा भर जाए ! अब भला क्या कहोगे तुम ? और, लड़का कई बार जख़्मी हुआ है···एक बार तो तोप के गोले का भी शिकार हो चुका है। मैं कहता हूँ कि उसकी जगह कोई दूसरा होता तो कभी का दुनिया छोड़कर चल दिया होता। मगर, वह है कि उसका बाल भी बाँका नहीं हुआ। सब-कुछ यों गुजर गया जैसे बत्तख की पीठ से पानी गुज़र जाए। नहीं, भाई, दोन के इलाक़े से सच्चे कज्ज़ाकों का नाम अभी नहीं मिटा।"

"यह तो तुम ठीक कहते हो, लेकिन पता नहीं क्यों, इनसे कोई ख़ास फ़ायदा मालूम नहीं होता।" कोई ख़ास बातूनी न होने पर भी, बेस्खलेबनोव ने विचारों में डूबते हुए कहा।

"यह बात कैसे कह सकते हो तुम ? ज़रा सोचो कि इन्हीं लोगों ने लाल फ़ौजियों को कहाँ तक ठेल दिया है···उन्होंने उन्हें ऐन वोरोनेज तक खदेड़ दिया है, और अब तो वे लोग मास्को के क़रीब पहुँच रहे हैं।"

"वह तो वे लोग एक ज़माने से पहुँचते रहे हैं···"

"हथेली पर तो सरसों उगाई जाती नहीं, फ़िलिप अगेविच ! फिर, तुम्हें यह भी समझना चाहिए कि लड़ाई में जल्दी में कभी कुछ नहीं किया जाता। जल्दी का काम शैतान का होता है। हर काम धीरे-धीरे किया जाता है नक़्शों के मुताबिक़···तमाम तरह की चीज़ों को सामने रखकर। रूस में किसानों की गिनती उतनी ही है जितनी कि टिड्डों

या पतिनों की, मगर हम कज्जाक भला गिनती में कितने हैं ? बस, मुट्ठी-भर ही तो है न !"

"यह सब सही है, मगर लगता यह है कि हमारे फ़ौजी बहुत वक़्त तक अपने पैर जमाए रह नहीं सकेंगे। जाड़े तक मेहमानों को फिर आया समझो। लोग कहते तो ऐसा ही हैं।"

"हां, अगर वे मास्को इस वक़्त, जल्दी से ले नहीं लेंगे तो लाल फ़ौजी यहां फिर आ जाएंगे। जहां तक इसका सवाल है, तुम्हारी बात बिलकुल ठीक है।"

"लेकिन, तुम्हारा ख़याल है कि मास्को वे लोग ले लेंगे ?"

"ले लेना चाहिए। वैसे जैसी ऊपर वाले की मर्जी। हमारे फ़ौजी इस मामले में भला क्या कर सकते हैं ! एक-एक कज्जाक लाम पर चला गया है, यानी बारह की बारहों कज्जाक कोरें वहां हैं। अब भी मास्को नहीं लेते बनेगा क्या ?"

"कौन क्या कह सकता है ! और तुम्हारा क्या हाल है ? लड़ाई से छुटकारा मिल गया क्या ?"

"यह टूटी टांग लेकर क्या करूंगा मैं ! पैर की यही मुसीबत न होती तो मैं दिखलाता कि दुश्मन से लोहा कैसे लिया जाता है ! हम बूढ़े लोग जुम्बिश नहीं खाते कहीं से ! बड़े मजबूत हैं।"

"और, यही जुम्बिश न खाने वाले मजबूत बूढ़े लाल फ़ौजों से घबराकर इस तरह सिरों पर पैर रखकर भागे कि एक के भी पास एक भेड़ की खाल नहीं बची। लोग नंग-धड़ंग हो गए और हर चीज उतारकर फेंक दी। कहते हैं कि स्तेपी का पूरा मैदान भेड़ों की खालों से पीला हो गया और फूलों के ग़लीचे-सा लगने लगा।"

पैन्तेली ने बेस्खलेबनोव को कनखी से देखा और रुखाई से बोला—"मेरे ख़याल से तो यह सब झूठ है। हो सकता है कि कुछ लोगों ने अपना बोझ हलका करने के लिए कुछ चीजें उठाकर फेंक दी हों, लेकिन इसी बात को लोग सौ गुना बढ़ा-चढ़ाकर क्यों पेश करते हैं ? कोई बहुत बड़ी चीज है—कोट या भेड़ की खाल ही सही। जिन्दगी इससे कहीं कीमती है। मैं पूछता हूं, तुम्हीं बतलाओ, है कि नहीं ?

इसके अलावा यह भी है कि हर बूढ़ा पूरे ताम-झाम के साथ क़ायदे से भाग भी तो नहीं सकता। इस बेहूदी लड़ाई में आदमी के पैर दौड़-जोई कुतिया के पैरों की तरह फुर्तीले होने चाहिएं। मगर, अब मेरी ही मिसाल लो···ऐसे पैर भला कहाँ मिलेंगे मुझे? और, इसे लेकर तुम इतने परेशान क्यों हो, फ़िलिप अगेविच?···ऊपरवाला मुझे माफ करे···मगर मैं पूछता हूँ कि उनका ऐसा इस्तेमाल भी क्या है किसी के पास···मेरा मतलब, भेड़ की खालों का? सवाल भेड़ों की खालों या कोट तक का नहीं है, सवाल है दुश्मन को मुँह की देने का। है कि नहीं? अच्छा, अलविदा···हम बातों में उलझ गए और मेरा काम सारा पड़ा हुआ है। अरे हाँ, तुम्हारा बछड़ा मिल गया? अभी भी तलाश जारी है? कोई खबर कहीं से मिली? मेरा तो खयाल है कि खोपर के लोग गटक गए उसे···हड्डियाँ फँसें उनके गलों में!··· लेकिन, तुम लड़ाई की फ़िक्र न करो। हमारे फ़ौजी उन किसानों को दबाकर दम लेंगे!" और पैन्तेली अकड़ता हुआ सीढ़ियों की ओर भचक चला।

परन्तु, साफ़ है कि 'किसानों को दबाना' इतना आसान न था। आखिरी हमले में भी कज्जाकों की जान-माल का नुकसान न हुआ हो, ऐसा नहीं था। एक घण्टे बाद ही पैन्तेली को ऐसा दुखद समाचार मिला कि उसकी खुशी का सारा नशा हिरन हो गया।

वह कुएँ के ऊपर का लकड़ी का साँचा बनाने में लगा रहा कि एक औरत के रोने और विलाप करने की आवाज उसके कानों में पड़ी। फिर, आवाज़ और पास आई तो हाथ की कुल्हाड़ी नीचे रखते हुए पैन्तेली दून्या से बोला—"दौड़कर जा और देखकर आ कि कौन मर गया है।"

दून्या ने जल्दी ही लौटकर बतलाया कि तीन कज्जाकों की लाशें ऊपरी दोन के मोर्चे से गाँव आई हैं—मरने वालों में एक है अनीकुश्का, दूसरा क्रिस्तोन्या और तीसरा गाँव के नुक्कड़ का सत्रह साल का एक लड़का।

पैन्तेली खबर सुनते ही जैसे गूँगा हो उठा। उसने अपनी टोपी

उर से उतारी और क्रॉस बनाया। कहने लगा—"ऊपर वाला उसे अपनी बाँहों में ले ले! क्या शानदार कज्जाक था वह!" उसे क्रिस्तोन्या की मौत से बड़ा धक्का लगा। याद आया कि अभी हाल में ही तो वह उसके साथ तातारस्की से मोर्चे पर गया था···

फिर, उससे काम करते न बना। अनीकुश्का की पत्नी इस तरह चीख-चीखकर रोती रही, जैसे कि कोई उसे हलाल कर रहा हो। उसके दर्द से पैन्तेली का हृदय सहज ही भर आया। फिर, इस हृदय-विदारक क्रंदन से छुटकारा पाने के लिए वह घर में चला आया और उसने दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया। सोने के कमरे में दून्या इलीनीचिना को हाँफते-हांफते सारी कहानी सुनाती मिली—"मैंने देखा माँ···माँ···मैंने देखा न, तो अनीकुश्का का सिर कहीं नजर ही नहीं आया, चिपचिपा-सा एक लोंदा दीखा सिर की जगह, और बस! उफ़·· देखने में सब-कुछ ऐसा खौफ़नाक था कि कुछ न पूछो। और, जानती हो, गँधा ऐसा रहा था कि एक वर्स्ट दूर से ही बू आने लगे। पता नहीं, लोग उसे घर क्यों ले आए। लेकिन क्रिस्तोन्या गाड़ी के ऐन किनारे, पीठ के बल पड़ा हुआ था···पैर बरानकोट के बाहर झूल रहे थे···देखने में ऐसा साफ-सुथरा और ऐसा सफ़ेद···ऐसा सफ़ेद लग रहा था, जैसे कि बर्फ का बना हो। सिर्फ़ दाईं आँख के नीचे एक छेद था···बस यही, कोपेक सिक्के के बराबर···और, कान के पीछे खून जमा हुआ था।"

पैन्तेली ने भयानक ढंग से थूका, बाहर निकलकर अहाते में आया, कुल्हाड़ी के साथ एक टाँड़ उठाया और भचकते हुए दोन की ओर बढ़ चला। रास्ते में गरमी के बावर्चीखाने के पास मीशात्का खेलता दीखा तो उसने चिल्लाकर उसे आवाज दी और बोला—"अपनी दादी से कह देना···मैं ब्रशवुड झाड़ी की लकड़ी काटने के लिए पार जा रहा हूँ··· सुनते हो···अरे, सुनते हो बेटे?···"

दोन के पार, जंगल में शरद की शांति का साम्राज्य था। उसकी अपनी एक शान थी। चिनार के पेड़ों से एक सरसराहट के साथ पत्तियाँ झर रही थीं। कँटीली झाड़ियाँ आग की लपट में लिपटी मालूम हो रही थीं और उनकी इनी-गिनी पत्तियों के बीच लाल-बेरी के फल आग की

जीभों की तरह चमक रहे थे। शाहबलूत की गली हुई छाल की सड़ायंध पूरे जंगल में भर रही थी। बिलबेरी की घनी झाड़ी ने जैसे जमीन को उलझा रखा था और उनकी रेंगती हुई शाखों के जाल के नीचे बेरियों के हलके नीले गुच्छे बड़ी ही कला से धूप से मुँह छिपाकर दुबके हुए थे। छाया में मुर्दा घास पर अब तक ओस के मोती थे और इसी ओस के कारण मकड़ी का जाला जैसे चाँदी का बना लग रहा था। सिर्फ़ कठफोड़वे की एक क़ायदे में बंधी···खटखट और गाने वाले खास पक्षियों की चहचहाहट से सन्नाटे का तार टूट रहा था।···

ऐसे जंगल के मौन सौन्दर्य से पैन्तेली को बड़ी राहत मिली। यहाँ झाड़ियों पर उसने क़दम रखे और गिरी हुई गीली पत्तियाँ चरमराईं तो वह अपने-आपसे बोला—"यह है जिन्दगी···इसे कहते हैं जिन्दगी! अभी थोड़े वक़्त पहले इनमें जान थी और आज इनकी क़ब्र सज रही है। कैसा शानदार कज़्ज़ाक दुनिया से उठ गया है! अभी कल की तो बात है कि वह हमारे यहाँ आया और हमने दार्या को जाल डालकर नदी से निकाला तो वह किनारे पर खड़ा रहा। उफ़···क्रिस्तोन्या! यानी, दुश्मन की एक गोली तुम्हारे इन्तजार में भी थी। और अनीकुश्का···कैसा खुशमिजाज आदमी था! उसे शराब ढालने और हँसी के ठहाके लगाने से कितना प्यार था और आज वह सिर्फ़ एक मुर्दा है। और कुछ नहीं!···पैन्तेली को दून्या के वर्णन का ध्यान आया और उसके दिमाग़ की आँखों के आगे एकदम आ गया अनीकुश्का का मुस्कराता हुआ बिना गलमुच्छों वाला, झटका हुआ चेहरा। उसे किसी तरह यक़ीन न हुआ कि वही आदमी आज बेजान पड़ा है और उसका सिर पिचनी हो गया है। फिर, बेस्खलेबनोव और अपनी बातों का खयाल आया तो उसे बड़ी ही ग्लानि हुई। उसने अपने ऊपर बड़ी लानत बरसाई—"ग्रिगोरी को लेकर मैंने जो बे-सिर-पैर की हाँकी है, वह एक गुनाह है और उससे मैंने ऊपर वाले को नाराज किया है। हो सकता है कि गोलियों से छलनी होकर ग्रिगोरी खुद भी इस वक़्त कहीं पड़ा हो। अगर कहीं ऐसा हो गया तो हम बुड्ढों की देखरेख और फ़िक्र भला कौन करेगा!"

इसी समय भाड़ी के नीचे से एक भूरा, जंगली मुर्गा बाहर आया तो पेन्तेली चौंक गया। उसने पता नहीं क्यों, उस छोटे-से पंछी की तिरछी, तेज उड़ान बड़े गौर से देखी और फिर आगे बढ़ गया। ताल के पास उसे जंगली भाड़ी के कुछ झुरमुट बड़े पसंद आए और वह उन्हें काटने में जुट गया। इस समय उसने हर तरह का खयाल बचाया। एक साल में ही उसके इतने सगे-सम्बन्धी और इष्टमित्र ईश्वर को प्यारे हो गए थे कि कल्पना-मात्र से उसे घबराहट होती थी। सारी दुनिया बदरंग और काले पर्दे से ढँकी लगने लगती थी।

"मुझे यह भाड़ी तो काटनी ही चाहिए। बड़ी ही अच्छी भाड़ी है। उसकी बाड़ बहुत ही बढ़िया बनेगी।" अपने दुखद विचारों से छुटकारा पाने के लिए वह अपने-आपसे जोर-जोर से बातें करने लगा।

फिर काफ़ी मेहनत कर चुका तो उसने जैकेट उतारी, भाड़ी की कटी हुई लकड़ी के ढेर पर बैठ गया और मुरझाई पत्तियों की तीखी गंध से साँसें बरसाते हुए बहुत देर तक देखता रहा, नीली-धुंध के सागर में डूबा क्षितिज और अंतिम लौ देते, शरद के सोने से मढ़े भाड़। पास ही नजर आया मेपल का एक पौधा। उसके रूप ने जैसे शब्दों में बंधने से इन्कार कर दिया। पौधा जड़ से सिरे तक पूरा-का-पूरा, शरद की चिलकन-भरी धूप में जगमगाता रहा और बैंजनी पत्तियों से लदी उसकी शाखें यों फैली रहीं जैसे कि कोई पौराणिक चिड़ियाघर ती से उड़ने के लिए अपने पर तोल रही हो।

पेन्तेली बैठा बहुत देर तक यह सभी कुछ सराहता रहा। पर, सहसा ही उसकी निगाह पास के ताल पर पड़ी तो भलाभल पानी में तैरती बड़ी-बड़ी कार्प-मछलियों की पीठें सतह के इतने पास नजर आईं कि उनके पर और तेजी से फड़फड़ाती दुमें तक बिलकुल साफ़ दीख पड़ीं। गिनती में वे कोई आठ लगीं। मछलियाँ जब-तब ही जलकुम्भी की हरी परतों के नीचे ग़ायब हो जातीं, फिर तैरकर साफ़ धारा में निकल आतीं और बेंत से टूटकर गिरी, पानी में डूबती पत्तियों पर फुदकती फिरतीं।···

पेन्तेली को लगा कि वर्षाहीन शरद के इस छिछले तालाब से इन

मछलियों को पकड़ना कोई बहुत दुश्वार न होगा। सो, थोड़ी दौड़-धूप के बाद उसने पास के दूसरे ताल के नज़दीक पड़ा, बिना तल्ले का एक बोरा ढूंढ निकाला, कार्पोवाले ताल को लौटा, पतलून उतारा, कराहते और ठंड से गनगनाते हुए पानी में हिला और बोरे का निचला हिस्सा ताल के तल से जमा दिया। फिर रह-रहकर अन्दर हाथ डालकर उसने देखा कि पानी की बौछार करती, बुलबुले छोड़ती, कोई जोरदार मछली फँसी भी या नहीं। और सचमुच ही उसकी मेहनत बेकार नहीं गई। दस-दस पौंड के वजन की तीन कार्पें उसके हाथ आखिरकार लग गईं। परन्तु इसके बाद ठंड से उसके लंगड़े पैर को तकलीफ़ पहुँचने लगी और शिकार फिर आगे न चला। इस पर भी, दिन-भर की मशक़्क़त का फल उसे कुछ कम न मिला था। हर एक की किस्मत में तीस पौंड वज़न की ऐसी तीन मछलियों का शिकार नहीं होता! उस पर यह कि मछली के शिकार से उसका चित्र बदल गया था, और मन की उदासी कट गई थी।…

अब उसने और मछलियाँ पकड़ने के लिए दुबारा आने की बात सोची और चिन्ता से चारों ओर नजर दौड़ाई कि मोटी सुनहरी, सुअर-सी मछलियाँ किनारे पर रखते उसे कोई देख तो नहीं रहा। सो, उसने शिकार का बोरा क़ायदे से हर ओर से मोड़ा, उसे जैसे-तैसे कंधे पर लटकाया, झाड़ी की लकड़ी का गट्ठर उठाया और जल्दी-जल्दी नदी की तरफ क़दम बढ़ाये।

घर पहुँचा तो उसने सन्तोष से मुस्कराते हुए इलीनीचिना को अपने शानदार शिकार की पूरी कहानी सुनाई और एक बार फिर कार्पो के लाल ताम्बे के रंग की तारीफ़ की, पर इलीनीचिना ने उसकी खुशी में कोई हिस्सा नहीं बँटाया। कारण यह कि वह लाशों को देखकर अभी-अभी लौटी थी। उसका मन दुखी और चेहरा आँसुओं से तर था।

पूछा—"अनीकुश्का को देखने जाओगे तुम?"

"नहीं, मैं नहीं जाऊँगा। मैंने कोई मुर्दा कभी देखा नहीं क्या? पहले ही इतनी लाशें देखी हैं कि अब ज़िन्दगी-भर देखने की ज़रूरत नहीं।"

"ऐसा नहीं···तुम्हें जाना चाहिए···दूसरे लोग भला क्या कहेंगे। कहेंगे कि तुमसे इतना भी न हुआ कि आखिरी बार उन्हें देख तो आते !"

"उफ़···ईसा के लिए मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो ! वह मेरे बच्चों का कोई मुँहबोला बाप तो था नहीं कि मैं उसे देखता फिरूँ !" बूढ़े ने गुस्से से तमककर जवाब दिया।

और वह सचमुच ही अन्त्येष्टि तक में सम्मिलित नहीं हुआ। तड़के ही नाव लेकर चला गया और फिर सारे दिन जंगल में बना रहा। वहाँ गिरजे के घंटे की टन-टन उसके कानों में पड़ी तो टोपी उतारने और क्रॉस बनाने को बरबस उसका जी हुआ। लेकिन इसी समय उसे पादरी पर गुस्सा आ गया—"इतनी देर तक घंटे टनटनाने की ऐसी भला क्या जरूरत थी ! घंटा बजाता और राग खत्म करता ! यह क्या कि एक घंटे तक टन-टन किये चला जा रहा है ! और इस टन-टन से भी कोई फ़ायदा ? इससे सिर्फ़ यह होता है कि लोगों के दिल टीसते हैं और उन्हें जरूरत से ज्यादा मौत का खयाल आता है। वैसे खिजाँ में तो यों भी हर चीज मौत का नाम दोहराती है····क्या पेड़ों से झर-झर झरते पात, क्या नीलम के आसमान में उड़ते और गला फाड़कर चिल्लाते कलहंस और क्या घास की मुंह लटकाए उदास पत्तियाँ !···"

और दुख के आघातों से बचने की तमाम कोशिशों के बावजूद जल्दी ही बूढ़े दिल पर एक नई चोट पड़ी। एक दिन खाने के बाद दून्या ने खिड़की से बाहर नजर दौड़ाई और बोली—

"लोग एक-दूसरे आदमी को मोर्चे से लिये चले आ रहे हैं। पीछे एक कसा हुआ घोड़ा बँधा है और गाड़ी बहुत धीरे-धीरे आ रही है··· एक आदमी के हाथों में गाड़ी के घोड़ों की रासें हैं और एक दूसरे आदमी की लाश बरानकोट से ढकी पड़ी है···हाँकनेवाले की पीठ इस तरफ़ है, इसलिए कह नहीं सकती कि वह इस गाँव का है या किसी दूसरे गाँव का !···" दून्या ने निगाह गड़ाई और उसके गाल लिनेन से भी ज्यादा सफ़ेद हो उठे—"वही है···वही है !" उसने अस्पष्ट ढंग से, धीरे से कहा और अचानक ही उसके मुँह से चीख निकल गई—"ग्रीशा को ला रहे

है लोग…घोड़ा उसी का है।"…और लड़की रोती-चिल्लाती बरसाती की तरफ़ दौड़ी।

इलीनीचिना ने अपनी आँखें हथेलियों से ढँक लीं और बहुत देर तक मेज के किनारे बैठी रही। पैन्तेली जैसे-तैसे बेंच से उठा और अंधे की तरह हाथ से टटोलते हुए दरवाज़े की तरफ़ बढ़ा।

प्रोखोर-जिकोव ने फाटक खोला, सीढ़ियों से दौड़कर उतरती दून्या पर निगाह डाली और उदास स्वर में बोला—"लो, एक मेहमान आया तुम्हारे यहाँ…तुम लोग हमारे आने की उम्मीद तो नहीं कर रहे थे न !"

"मेरे प्यारे भैया, मेरे दुलारे भैया !" दून्या हाथ मलते हुए कराही।

प्रोखोर ने आँसुओं से भीगी दून्या और सीढ़ी पर अवाक् खड़े पैन्तेली को देखा तो बोला—"घबराने की ऐसी कोई बात नहीं…ग्रिगोरी जीता-जागता है…सिर्फ़ टायफ़स का शिकार हो गया है।"

पैन्तेली ने दरवाजे की चौखट की टेक लगा ली। दून्या उसकी तरफ़ देखकर खुशी से चीखी—'ग्रिगोरी ज़िन्दा है…भैया मेरा ज़िन्दा है ! सुनते हो, सिर्फ़ बीमार है, इसलिए घर लाया गया है। जाओ और जाकर माँ को बतला दो ! अरे, तुम इस तरह पत्थर बने वहाँ खड़े क्यों हो ?"

पैन्तेली ने डगमगाते हुए एकाध क़दम बढ़ाए और फिर सीढ़ियों पर ढह पड़ा। दून्या माँ को ढाढस बँधाने के लिए आँधी की रफ़्तार से उसकी बग़ल से गुजरी। प्रोखोर ने गाड़ी सीढ़ियों के पास रोकी और पैन्तेली से बोला—"तुम इस तरह वहाँ बैठे क्यों हो ? जाकर एक कम्बल लाओ तो इसे अन्दर ले चला जाए।"

परन्तु, बूढ़ा ज्यों-का-त्यों, जहाँ-का-तहाँ बैठा रहा। उसके मुँह से एक बोल न फूटा। आँखों से आँसू जारी रहे, पर चेहरा बिल्कुल गम्भीर बना रहा। एक भी माँसपेशी में कहीं एक हरकत न हुई। दो बार उसने क्रॉस बनाने के लिए हाथ उठाया, पर माथे तक ले न जा सका तो गिरा लिया। उसके गले में जैसे कुछ अटकता और गड़गड़ाता रहा।

प्रोखोर ने हमदर्दी से कहा—"तुम जरूरत से ज्यादा सहम गए हो !

आखिर मैंने पहले से किसी से तुम्हें इत्तिला क्यों नहीं भिजवा दी ? मैं बेवकूफ़ हूँ, बिल्कुल बेवकूफ़ हूँ···अब इस बात में किसी तरह का कोई शक रहा ही नहीं। खैर, अब तो उठो, प्रोकोफ़िर्येविच ! बीमार को तो अन्दर ले ही चलना है। कम्बल कहाँ है ? या, कहो तो यों ही अन्दर ले चलें इसे।"

"रुको ज़रा।" पैन्तेली ने भर्राए हुए गले से कहा—"मेरे पैर जवाब देते मालूम होते हैं···मैं तो समझा कि मर गया यह ! ऊपरवाला बड़ा मेहरबान है···मुझे उम्मीद नहीं थी···" उसने अपनी पुरानी कमीज़ के गले के बटन नोचकर तोड़ डाले, कॉलर झटके से खोल लिया और मुँह फैलाकर लम्बी साँस ली।

"उठो···उठो···प्रोकोफ़िर्येविच !" प्रोखोर ने जल्दी की—"इसे अन्दर ले चलने को हम ही हैं या कोई और भी है अन्दर ?"

पैन्तेली बड़ी मुश्किल से उठा, सीढ़ियों से उतरा और बरानकोट फेंककर बेहोश ग्रिगोरी पर झुका। उसके गले में फिर कुछ अटका, लेकिन उसकी चिन्ता न कर वह प्रोखोर की ओर मुड़ा—"तुम पैर पकड़ लो···हम इसे अन्दर लिये चलते हैं।"

फिर वे दोनों ग्रिगोरी को सोने के कमरे में ले आए। यहाँ उन्होंने उसके जूते-कपड़े उतारे और उसे पलंग पर लिटा दिया। इसी समय बावर्चीखाने से दून्या की चिन्ता से भरी आवाज़ आई—"पापा ! जल्दी यहाँ आओ ! देखो, माँ कैसी हो रही है !"

इलीनीचिना बावर्चीख़ाने के फ़र्श पर पड़ी रही। दून्या घुटनों के बल, उसकी बग़ल में बैठी उसके राख के रंग के चेहरे पर पानी छिड़कती रही। पैन्तेली ने आते ही कहा—"दौड़कर जा और बुढ़िया कपीतोनोवना को बुला ला···जल्दी कर ! वह बदन में खून पहुँचाना जानती है। उससे अपनी माँ का सारा हाल बतलाना और कहना कि खून पहुँचाने की सारी चीज़ें अपने साथ लेती आए !"

लेकिन, दून्या के हाथ पीले होने की उम्र थी। वह गाँव के बीच से नंगे सिर तो निकल नहीं सकती थी, इसलिए उसने एक तरफ़ से एक रूमाल खींचा, सिर में बाँधते हुए लपकी और जाते-जाते बोली—

"बच्चे ऐसे डर गए हैं कि जान ही नहीं निकली है···हे नीली छतरी-वाले, एक दिन में इतना तूफ़ान, इतनी मुसीबतें !···पापा, ज़रा बच्चों को देखना, मैं अभी-अभी आई।"

शायद दून्या का बस चलता तो वह ठिठककर शीशे में एक नजर अपने को देख लेती। लेकिन, इस बीच सम्हल गए पैन्तेली ने उसे ऐसी कड़ी नजर से देखा कि वह सिर पर पाँव रख बावर्चीखाने से भागी और छोटे फाटक से बाहर निकलते ही उसकी निगाह अकसीनिया पर पड़ी। उसका चेहरा ऐसा सफ़ेद लगा, जैसे कि नसों में कहीं एक बूंद खून न हो। औरत बेंत की बाड़ से टिकी खड़ी रही और उसके हाथ बेजान-से झूलते रहे। धुंधलाई, काली आँखों में आँसू तो एक न झलका, लेकिन उनमें इतनी यातना और ऐसा मौन आग्रह लहरें लेता लगा कि दून्या एक क्षण को ठिठक गई और स्वयं अपने को आश्चर्य में डालते हुए, न चाहने पर भी बोली—"वह जिन्दा है···सिर्फ़ टायफ़स हो गया है।"

फिर लड़की अपनी नाजुक, उछलती हुई छातियों को दबाते हुए, किनारे की गली में पूरी रफ़्तार से दौड़ चली। इस बीच परेशान औरतें हर तरफ से मेलेखोव के अहाते में मुड़ चलीं। सबके देखते-देखते अकसीनिया बेंत के फाटक के पास से धीरे-धीरे हटी, फिर सहसा ही तेज क़दम बढ़ाए, सिर झुकाया और चेहरा अपने हाथों से ढँक लिया।

: २५ :

ग्रिगोरी फिर एक महीने में ठीक हो गया। वह नवम्बर के अन्त में पहली बार अपने बिस्तरे से उठा और डगमगाते कदमों से कमरे के इस पार आकर खिड़की के सहारे खड़ा हो गया। इस समय हड्डी-हड्डी रह जाने के कारण लम्बा और बहुत ही दुबला-पतला लगा।

धरती और फूस की छानियों पर नए बर्फ़ के फूल चमके और अपनी चाँदी से आँखों में चकाचौंध पैदा करने लगे। किनारे की गली में स्लेजों की लीकें नजर आने लगीं। बाड़ों और पेड़ों ने पाले के निलछरे पर लगा लिए और यह पर ढलते सूरज की धूप में इन्द्रधनुषी रंग बनाने लगे।

ग्रिगोरी अपनी लकड़ी-सी उँगलियों से मूंछों पर हाथ फेरता विचारों में डूबा रहा और खिड़की से बाहर देख-देखकर मुस्कराता रहा। इस समय कोई उसे देखता तो सोचता कि इतना शानदार जाड़ा इसने शायद पहले कभी नहीं देखा। उसे हर चीज गैर-मामूली और ताज़गी से भरी लगी। हर चीज से एक नया अर्थ उभरता दीखा, जैसे कि बीमारी से उसकी आँखों की तेज़ी बढ़ गई। उसे आसपास जाने क्या-क्या नया नज़र आने लगा और पुरानी चीजों में जाने कैसे-कैसे नए उलटफेर समझ पड़ने लगे।

वह अपने स्वभाव के प्रतिकूल और आशा के विपरीत गाँव और फ़ार्म की छोटी-से-छोटी घटना में दिलचस्पी लेने लगा। उसकी जिन्दगी से सम्बन्धित हर बात का एक नया और गुप्त महत्त्व हो उठा, और हर चीज़ उसे अपनी ओर खींचने लगी। इस तरह उसके सामने जो एक नई दून्या आई, उसे वह थोड़े आश्चर्य से भरकर देखता। चेहरे की सख्ती, आँखों की पाशविकता और होंठों के कोनों की भयानकता की जगह उसकी हर गतिविधि में एक कोमलता नजर आती और उसके होंठों पर बच्चों की-सी मुस्कान थिरकती रहती। वह अब-तब ही बचपन से सामने रहने वाली घर की कोई चीज़ उठा लेता और भौंहें सिकोड़-कर उसे यों देखता, जैसे कि वह खुद कोई अजनबी हो, किसी दूर देश से आया हो और उस चीज़ को उसने पहली बार देखा हो।

ऐसे-ही इलीनीचिना ने उसे एक दिन एक चर्खे की लाट को हर तरफ़ से परखते देखा तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। पर वह ज्यों ही कमरे में घुसी, ग्रिगोरी कुछ लज्जित-सा होकर लाट को एक तरफ़ रखकर दूर चला गया।

दून्या उसके हड्डी-हड्डी दुबले-पतले शरीर को देखती तो उसे बरबस हँसी आ जाती। वह केवल अन्दर के कपड़ों में कमरे में टहलता, अपना फिसलता पाजामा एक हाथ से साधे रहता, कमर झुकाए रहता। और चलता तो पतले पैर डगमगाने लगते। बैठता तो उसे गिर पड़ने का डर बना रहता और इसीलिए वह किसी-न-किसी चीज को हाथ से जकड़े रहता। बीमारी के दौरान काफ़ी बढ़ गए उसके काले बाल हर

दिन गिरते जाते। हमेशा माथे पर झूलने वाला घुंघराले बालों का छल्ला बराबर हलका पड़ता जाता।···

एक दिन उसने दून्या की सहायता से अपना सिर मूंडा। पर जब उसने अपना चेहरा अपनी बहन की तरफ़ मोड़ा तो उस्तरा लड़की के हाथ से छूटकर ज़मीन पर जा गिरा, उसने अपना पेट थाम लिया और पलंग पर गिरकर हँसते-हँसते लोट-पोट हो गई।

ग्रिगोरी ने उसे जीभर हँस लेने का पूरा मौक़ा दिया। पर आख़िर में उससे और न रुका गया और उसने कमज़ोर काँपती हुई आवाज़ में कहा—'ज़रा सम्हलो और अपनी हद में रहो। ऐसा न हो कि बाद में तुम्हें शर्म उठानी पड़े। अब लड़की नहीं बल्कि पूरी औरत हो तुम··· पता है तुम्हें···!" उसकी आवाज़ से खीझ टपकी।

"ओह···भैया···मेरे प्यारे भैया···अच्छा हो कि मैं चली जाऊँ यहाँ से। मुझमें अब हँसने की ताक़त बाकी नहीं है। अरे तुम ज़रा देखो तो कि लगते कैसे हो! खेत में खड़े कौओं को डराने वाले काकभगोड़ा लगते हो बिलकुल···!" दून्या ने यह शब्द जैसे-तैसे हँसी के बीच कहा।

"मैं देखना चाहता हूँ कि टाइफ़स के बाद खुद तुम कैसी लगती हो! अच्छा उठाओ उस्तरा···बहुत हुआ।"

इलीनीचिना ने बेटे का पक्ष लिया और ज़रा परेशानी से बोली—"लेकिन तू इस तरह हिनहिना भला क्यों रही है? तू बिलकुल बेवक़ूफ़ है, दून्या!"

"लेकिन माँ, ज़रा देखो तो कि भैया लगते कैसे हैं?" दून्या ने अपने आँसू पोंछते हुए कहा—"कैसा ऊँचा-नीचा, काला और तरबूज़ की तरह गोल सिर है इनका···उफ़···मैं और नहीं···!"

ग्रिगोरी ने कहा—"ज़रा शीशा तो देना मुझे!" फिर उसने शीशे के उस छोटे टुकड़े में आँख गड़ाकर देखा तो बिना आवाज़ किए, खुद भी बहुत देर तक हँसता रहा।

इलीनीचिना ने असन्तोष से कहा—"मगर तुमने अपना सिर मूंड़ क्यों डाला, बेटे? जैसा था वैसा ही रहने देते तो अच्छा होता!"

"यानी गंजा हो जाना तुम इससे बेहतर समझती हो?"

"ख़ैर छोड़ो···मगर इस तरह तो तुम बहुत ही भद्दे लगते हो।"

"उफ़·· लेकिन तुम भी हद करती हो !" ग्रिगोरी ने अपने ब्रश से ··बुन में झाग उठाते हुए गुस्से से कहा।

अब बाहर न जा सकने के कारण वह अधिकांश समय बच्चों के ··ाथ ही काटता। उनसे हर तरह की, हर चीज़ के बारे में बातें करता, ··गर नताल्या का ज़िक्र जान-बूझकर बरकाता। परन्तु पोल्युशका ने ··क दिन पूछ ही तो लिया—"पापा, अब ममी लौटकर हमारे पास नहीं ··ायेगी ?"

"नहीं मुन्नी, लोग वहाँ से आया नहीं करते।"

"कहाँ से···कब्रगाह से ?"

"बेटी, जो लोग मर जाते हैं न, वे फिर लौटकर नहीं आते।"

"लेकिन ममी क्या बिलकुल मर गई ?"

"और क्या ! मर तो गई ही हैं।"

"लेकिन मैंने सोचा कि शायद उन्हें हमारी याद आए और वे आ जाएँ···" पोल्युशका ने बहुत धीरे से कहा।

"बेटी, ममी की बात ही न करो···यही अच्छा है।" ग्रिगोरी ने ··खे ढंग से कहा।

"लेकिन बात कैसे न करूँ, याद जो आती है। लेकिन मरने-··ाले लोगों से मिलने-जुलने, उन्हें देखने नहीं आते ? थोड़ी देर को भी ··ही आते ? कभी नही आते ?"

"नहीं, बिलकुल नहीं आते···। अच्छा अब जाओ और मीशात्का ··के साथ खेलो।" और···ग्रिगोरी ने मुँह फेर लिया। साफ है कि ··ीमारी ने उसकी इच्छा-शक्ति समाप्त कर दी थी। सो उसकी आँखें ··र आईं तो बच्चों से आँसू छिपाने के लिए वह शीशे से चेहरा सटा-··कर बहुत देर तक खिड़की के पास खड़ा रहा।

ग्रिगोरी बच्चों से लड़ाई का जिक्र करना बिलकुल पसन्द न करता। ··र मीशात्का दुनिया की हर चीज़ से ज्यादा दिलचस्पी लड़ाई में लेता और अकसर ही पिता पर सवालों की बौछार कर देता—"लोग किस तरह लड़े ? लाल फ़ौजी कैसे थे ? उन्हें किस चीज से मारा गया ?

और क्यों मारा गया ?···" ऐसे में ग्रिगोरी का चेहरा धुंधला उठता। वह खीझकर कहता—"फिर वही पुराना राग छेड़ दिया ? यह···यह लड़ाई तुम्हारे दिमाग में हमेशा ही क्यों नाचती रहती है ? आओ बात करें कि गरमी आएगी तो हम दोनों कैसे चलेंगे और कैसे ताल में कंटियों से मछलियाँ फंसाएँगे ! मैं तुम्हारे लिए कंटिया बना दूं ? जरा बाहर निकलकर अहाते में जाने लायक हो जाऊँ तो घोड़े के बालों से तुम्हारे लिए एक बेसी बना दूंगा।"

यानी मीशात्का जब भी लड़ाई की चर्चा छेड़ता ग्रिगोरी अन्दर-ही-अन्दर शर्म से भर उठता। बच्चे के भोले-भाले सहज प्रश्नों के उत्तर उसे ढूंढे न मिलते···और कौन कह सकता है कि क्यों नहीं मिलते ? शायद उसने खुद इन सवालों के जवाब कभी नहीं पाए थे।···पर मीशात्का से छुटकारा पाना आसान न होता। पिता मछली के शिकार की बातें करता तो वह बड़े ध्यान से सुनता लगता, मगर फिर जल्दी ही एक नया सवाल कर देता—"पापा, तुमने लड़ाई में मारा है किसी को ?"

'अच्छा देख, मुझे परेशान करना बन्द कर···समझा !"

"पापा, लड़ाई में जब तुम लोगों को मारते हो तो डर लगता है ? और लोग मारे जाते है तो खून बहता है ? बहुत सारा खून बहता है ? मुर्गी के बच्चे या भेड़ के खून से ज्यादा खून बहता है ?"

"मैंने कहा न कि तुम इस तरह की बातें बन्द करो।"

मीशात्का क्षण-भर को चुप रहता, लेकिन इसके बाद ही कुछ सोचते हुए फिर पूछ बैठता—"बाबा ने एक बार एक भेड़ मारी थी··· मगर मैं नहीं डरा···हो सकता है कि थोड़ा-बहुत डर लगा हो, लेकिन मैं सचमुच डरा नही।"

इस पर इलीनीचिना गुस्से से कहती—"इसे हटाओ यहाँ से···बड़ा होकर यह दूसरा जल्लाद निकलेगा···लोगों को सिर्फ़ मारता ही फिरेगा। जब देखो तब लड़ाई की ही बातें करता रहता है, जैसे कि बात करने को और कुछ इसके पास है ही नही। भला किसी ने सुना है कभी कि इतना नन्हा-सा बच्चा और इस जालिम लड़ाई की बात

करे ? इधर आ···ले यह पैनकेक···इससे थोड़ी देर तो तेरा मुंह बन्द रहेगा ही।"

पर, उगने वाले हर नए दिन ने उन लोगों को लड़ाई की याद दिलाई। कज्जाक मोर्चे से लौटे, ग्रिगोरी को देखने आए और उन्होंने उसे बतलाया कि ओरेल की लड़ाई में कैसे कामयाबी नहीं मिली, कैसे बुदयोन्नी की घुड़सवार फ़ौज ने जनरल श्कूरो और ममोन्तोव की सारी ताकत तार-तार कर दी, और कैसे सभी मोर्चों से फ़ौजें पीछे हट रही हैं। बोले—"ग्रिआनोव्स्काया की लड़ाई में दो कज्जाक और मारे गए हैं। जेरासिम-अख्वात्किन जख्मी हालत में घर ले आए गए हैं और दिमीत्री गोलोदचोकोव टाइफ़स से मर गए हैं।"

ग्रिगोरी दोनों लड़ाइयों में काम आए अपने गांव के कज्जाकों की गिनती करने लगा तो तातारस्की में ऐसा एक भी घर न निकला जिसका कोई-न-कोई प्राणी लाम पर मौत का शिकार न हुआ हो।···

ग्रिगोरी अभी घर से बाहर निकलने के लायक भी न हुआ कि गांव का अतामान, जिला अतामान का आदेश लेकर आया। आदेश था कि स्क्वैड्रन कमांडर मेलखोव फौरन ही डॉक्टरी कमीशन के आगे पेश हो और अपनी डॉक्टरी फिर करवाए।

इस पर ग्रिगोरी क्रोध से बोला—"जवाब लिख दीजिए कि मुझे याद दिलाने की जरूरत नहीं। चलने-फिरने लायक होते ही मैं खुद ही लौट जाऊंगा।···"

फिर, मोर्चा बराबर दोन के पास आता गया। गांव में हटकर और पीछे चले जाने की बातें नए सिरे से होने लगीं। थोड़े समय बाद क्षेत्रीय अतामान का एक फ़रमान बाजार में पढ़कर सुनाया गया कि सभी वयस्क कज्जाक हटकर पीछे जाने वालों में शामिल रहें।

पैन्तेली चौक से घर आया और ग्रिगोरी से फ़रमान का जिक्र कर बोला—"अब क्या करेंगे हम लोग?"

ग्रिगोरी ने कंधे झटके—"हम कर ही क्या सकते हैं? हमें पीछे हटना पड़ेगा। इस हुक्म के बिना भी हर आदमी यहां से चला जाएगा।"

"मैं तो तुम्हारी और अपनी बात कर रहा हूं—हम साथ चलेंगे

या क्या होगा ?"

"हम साथ नही चल सकते। एकाध दिन मे मैं घोड़े पर सवार होकर व्येशेन्स्काया चला जाऊँगा। उधर से गुजरने वाली फ़ौजों का अता-पता करूँगा और एक-न-एक रेजीमेंट के साथ हो लूँगा। लेकिन तुम बेघरबार होकर भागोगे या तुम्हारा इरादा फ़ौज में शामिल होने का है ?"

"ऊपर वाला बचाए।" पैन्तेली ने घबराकर कहा—"इस हालत मे तो मैं बुड्ढे बेस्खलेबनोव के साथ चला जाऊँगा। अभी उसी दिन तो उसने मुझे साथ चलने की दावत दी थी। आदमी लड़ाई-बड़ाई पसंद नही करता और उसके पास घोड़ा भी अच्छा है। सो, हम अपने दोनों घोड़े गाड़ी मे जात लेंगे और चल देंगे। इस तरह अपनी घोड़ी की थोड़ी चरबी भी कम हो जाएगी। सुअर की तरह खाती रही है, और खड़े-खड़े लातें चलाती रही है, और बस।"

ग्रिगोरी ने प्रस्ताव का पूरे हृदय से समर्थन किया—"तो, ठीक… तुम उसके साथ चले जाओ…लेकिन इसके पहले अपना रास्ता तय कर लो, क्योंकि हो सकता है कि बिल्कुल वही रास्ता मुझे भी लेना पड़े।"

उसने अपने फ़ील्ड-केस से दक्षिणी रूस का एक नक्शा निकाला, बूढ़े का रास्ता तय किया और एक कागज पर राह के सारे गाँवों के नाम लिखने लगा। लेकिन पैन्तेली इस बीच बड़े अदब से नक्शे को देखता-समझता रहा। बोला—"छोड़ो, गाँवों के नाम इस तरह न लिखो। वैसे ये चीजें तुम मुझसे कही अच्छी तरह समझते हो। फिर नक्शा कोई मामूली चीज नहीं होता। वह झूठ कभी नही बोलता और राह सीधी दिखलाता है। लेकिन अगर सड़क मुआफिक न पड़ी तो हम करेंगे क्या ? तुमने कहा कि पहले हम कारगिन्स्काया से होकर निकलें, ठीक उधर की सड़क कही सीधी है, लेकिन इस पर भी चक्कर तो लगाना ही पड़ेगा।"

"लेकिन, आखिर क्यों ?"

"क्योंकि मेरा एक चचेरा भाई लातिशेव में रहता है और वहाँ

मुझे अपने लिए खाना और घोड़े के लिए दाना मिल सकता है। यों
अगर मैं अजनबियों के साथ टिकूँगा तो मुझे अपने खाने का इन्तजाम
आप करना पड़ेगा। फिर, तुम कहते हो कि मैं अस्ताखोव गाँव का रास्ता
लूँ। सड़क वह भी सीधी है, मैं जानता हूँ। पर मैं मालाखोवस्की से
होकर जाऊँगा। वहाँ भी मेरे दूर के नाते-रिश्तेदार रहते हैं और वहाँ
अपनी सूखी घास न खिलाकर, मैं दूसरों की सूखी घास घोड़े को आराम
से खिला सकता हूँ। देखो न, सूखी घास की टाल-की-टाल तो साथ ले
जाना मुमकिन है नहीं। और किसी अनजाने इलाके में यह भी हो सकता
है कि ऐसे पाना तो क्या, ख़रीदने जाओ तो भी सूखी घास कहीं न
मिले।"

"लेकिन दोन के दूसरे किनारे पर तुम्हारे कोई नाते-रिश्तेदार
नहीं हैं क्या?" ग्रिगोरी ने शरारत से पूछा।

"हैं तो।"

"तो, मेरा खयाल है कि तुम उस तरफ़ भी जाओगे?"

"बेकार बकवास न करो।" पैन्तेली गरम हो उठा—"काम की
बात करो, बेकार मज़ाक़ न बनाओ। क्या वक्त चुना है मजाक करने
का अपने खानदान में एक ही आदमी दिमाग़दार निकला है।"

"तो तमाम नाते-रिश्तेदारों के यहाँ चक्कर काटते फिरने की
आपको कोई जरूरत नहीं। लड़ाई के दौरान लोग पीछे हटते हैं तो
पीछे हटते हैं। तमाम रिश्तेदारों से मिलते नहीं फिरते। यह कोई
कारनीवाल का मौक़ा तो है नहीं।"

"ख़ैर, तुम मुझे तरीक़े न समझाओ···यह सब मैं तुम्हारे बिना
भी जानता हूँ।"

"अगर जानते हो तो जाओ, जिधर से जाना चाहते हो, जाओ।"

"मुझे अपने नक्शों के हिसाब से हाँकने से कोई फ़ायदा नहीं होगा।
सिर्फ़ एक मगपाई-चिड़िया ही ऐसी होती है जो सीधे उड़ती है···यह
कहावत तुमने सुनी है या नहीं? सीधे तो मैं जाने कहाँ निकल जाऊँ!
शायद वहाँ निकल जाऊँ जहाँ जाड़े में कहीं सड़कें ही नजर न आती
हों। तो ऐसी बकवास करते समय तुम्हारा दिमाग़ भी ठिकाने था या

नहीं ? और, तुम कहते हो कि तुमने एक डिविजन की कमान सम्हाली है।"

ग्रिगोरी अपने पिता के साथ बहुत देर तक उलझा रहा। फिर उसने अपने व्यवहार पर दुबारा विचार किया तो बूढ़े की बातों में उसे बड़ा सार लगा। उसे मानते हुए बोला—"पापा, नाराज न हो। मैं तुम्हें अपने मन के रास्ते से जाने को मजबूर न करूँगा। तुम जिस रास्ते चाहो, उस रास्ते जाना। मैं दोनेत्स के उस पार तुम्हें ढूंढ़ने की कोशिश करूँगा।"

"यही बात तुम्हें बहुत पहले कहनी चाहिए थी।" पैन्तेली खुश हो उठा। "तुम दुनिया-भर के नक्शे और रास्ते सुझाते फिरते हो, लेकिन एक बात तुम्हारी समझ में यह नहीं आती कि नक़्शा एक चीज़ है और मंजिल तय करना बिलकुल दूसरी चीज़। घोड़े वहाँ नहीं जा सकते जहाँ दाने-चारे का इन्तज़ाम न हो।…"

बूढ़ा ग्रिगोरी की बीमारी की हालत में भी अपने सफ़र का इन्तज़ाम करता रहा था। उसने घोड़ों को ग़ैर-मामूली परवाह से खिलाया-पिलाया था, स्लेज की मरम्मत की थी, नए फ़ेल्ट-बूट बनने को दे दिए थे, गीली सड़कों पर पानी बचाने के लिए खुद चमड़े के तल्ले दिए थे और काफ़ी पहले से जई बोरों में भरकर रख ली थी। यानी गाँव से हटकर पीछे जाने की तैयारी भी उसने घर के सच्चे मालिक की तरह की थी और रास्ते की जरूरत की हर चीज़ ठीक-ठाक कर ली थी। कुल्हाड़ी, हथआरा, छेनी, जूतों की मरम्मत के औजार, सूत के तल्ले, कीलें, हथौड़ा, फीतों की लच्छी, रस्सियाँ, घोड़े की नालें और सभी कुछ तिरपाल में होशियारी से बँधा रखा था और किसी क्षण स्लेज में जमाया जा सकता था। उसने तो एक इस्पात की तराज़ू और बाट साथ ले जाने की बात की और जब इलीनीचिना ने इसका कारण पूछा तो उसकी भर्त्सना करते हुए बोला—"बुढ़िया, तू जितनी कोशिश अक़्लमन्द बनने की करती है, उतनी ही बेवकूफ होती जाती है। तेरा मतलब है कि ऐसे आसान सवाल का जवाब तू खुद नहीं सोच सकती ? यानी, रास्ते में मुझे कुट्टी या घास खरीदते वक़्त उसे तोलने की जरूरत पड़ेगी या नहीं ? सूखी

घास लोग गज से नापकर बेचते हैं क्या ?"

"लेकिन, लोगों के पास अपने बाट नहीं होते ?" इलीनीचिना ने ताज्जुब से पूछा।

"किसी को क्या मालूम कि कैसे बाट होंगे उनके पास ?" पैन्तेली ने क्रोध और खीझ से कहा—"हो सकता है कि हम जैसों को ठगने के लिए उन्होंने झूठे बाट रख छोड़े हों। बात यह है। मैं जानता हूँ कि उधर किस-किस तरह के लोग बसते हैं। तीस पौंड सामान देते हैं, और छत्तीस पौंड के दाम वसूलते हैं। फिर, अगर हर पड़ाव पर ऐसे ही घाटे का खतरा हो तो इस्पात का अपना बटखरा मैं क्यों न ले जाऊँ अपने साथ ? इसके बोझ से हम दबकर मर तो जाएँगे नहीं। और यहाँ का काम तो बिना इसके भी चल सकता है। इसकी भला तुम्हें यहाँ ऐसी क्या जरूरत ? अगर फ़ौज यहाँ आएगी तो सूखी घास बिना तोले ही लेगी। सवाल उनके सामने सिर्फ़ गाड़ी पर लादकर ले जाने का होगा। बिना सींग के उन शैतानों को देखा है मैंने। मैं उन्हें अच्छी तरह जानता हूँ।"

और तो और, बसन्त में गाड़ी की खरीद में रक़म न बरबाद करने के खयाल से पहले तो उसने स्लेज पर एक छोटी-सी गाड़ी तक लाद ले जाने का इरादा किया। लेकिन बाद में कुछ सद्बुद्धि उपजी तो यह खयाल छोड़ दिया।···

फिर, ग्रिगोरी ने भी अपने जाने की तैयारी शुरू की। उसने अपनी मॉजर राइफ़ल की सफ़ाई की और तलवार ठीक-ठाक की। नीरोग होने के एक सप्ताह बाद वह अपना घोड़ा देखने गया और उसके चमकते हुए पुट्ठे देखकर उसने सन्तोष की साँस ली। उसे लगा कि बुड्ढे ने अपनी ही घोड़ी की नहीं, बल्कि उसके घोड़े की भी परवाह की है। वह बड़ी कठिनाई से आराम-पसंद घोड़े पर सवार हुआ और उसे काफ़ी दौड़ाकर घर लौटा तो उसने अकसीनिया की खिड़की से किसी को छोटा-सा सफ़ेद रूमाल हिलाते देखा या शायद उसे ऐसा लगा कि उसने देखा।···

गाँव की एक सभा में तातारस्की के सभी मर्दों ने एक निश्चित

दिन गाँव छोड़ देने का निश्चय किया और फिर दो दिन तक औरतें अपने कज्ज़ाकों के सफ़र के लिए तरह-तरह की चीज़ें पकाती और बनाती रहीं। रवानगी की तारीख़ बारह दिसम्बर तय हुई। ग्यारह की रात को पैन्तेली ने सूखी घास और जई स्लेज में रखी। अगले दिन सवेरे तड़का होते ही भेड़ की खाल का अपना बरानकोट पहना, पेटी कसकर बाँधी, गाड़ी हाँकने के काम के चमड़े के लम्बे-चौड़े दस्ताने पेटी में खोंसे, ईश्वर की प्रार्थना की और परिवार के लोगों से बिदा ली।

जल्दी ही गाँव से पहाड़ी तक सामान से लदी गाड़ियों का ताँता बँध गया। औरतें मिले-जुले चरागाह तक आईं, बहुत देर तक रूमाल हिला-हिलाकर अपने घर के मर्दों को रुखसत करती रहीं। लेकिन फिर धीमी-धीमी हवा चलने लगी और बर्फ़ीली धुंध के कारण न तो धीरे-धीरे पहाड़ी पर चढ़ती गाड़ियाँ नज़र आईं और न उनकी अगल-बगल आगे बढ़ते कज्ज़ाक।...

व्येशेन्स्काया के लिए रवाना होने से पहले ग्रिगोरी एक बार अकसीनिया से मिला। वह गाँव में चिराग़ जलने के बाद उसके यहाँ गया तो अकसीनिया कताई करती मिली और अनीकुश्का की विधवा बगल में बैठी मोज़े बुनती और कहानी कहती दीखी। ग्रिगोरी ने किसी और को भी वहाँ देखा तो रूखी आवाज़ में अकसीनिया से बोला—"ज़रा बाहर आना, तुमसे कुछ काम है।"

बरसाती में उसने औरत के कंधे पर हाथ रखा और पूछा—"हम लोग पीछे हट रहे हैं...मेरे साथ चलोगी तुम?" अकसीनिया कुछ देर तक चुप रहकर जवाब सोचती रही। फिर, शांत भाव से बोली—"लेकिन फ़ार्म का क्या होगा और घर का क्या होगा?"

"यह सब किसी दूसरे को सौंप दो...हमें पीछे तो हटना ही है।"

"लेकिन कब?"

अकसीनिया अँधेरे में मुस्कराई और बोली—"तुम्हें याद है, मैंने एक बार तुमसे कहा था कि मैं तुम्हारे साथ दुनिया के दूसरे सिरे तक जा सकती हूँ? और, मैं तो अब भी वही हूँ। तुम्हारे लिए मेरे दिल में सच्ची मोहब्बत है। मैं चलूँगी और एक बार पीछे मुड़कर न देखूँगी।

तो, कल किस वक़्त तुम्हारा इन्तजार करूँ ?"

"शाम को···और बहुत सामान साथ मत लेना···कपड़े··· ज्यादा-से-ज्यादा खाने की चीज़ें, और बस ! फ़िलहाल, मैं चला··· अलविदा !"

"अलविदा···लेकिन तुम अन्दर चलो न···वह तो अभी-अभी चली जाएगी। एक ज़माने से तुम्हें देखा नहीं मैंने, मेरे राजा···मेरे ग्रीशा ! मैं तो सोचने लगी थी कि तुम···लेकिन नहीं, मैं नहीं कहूँगी।"

"नहीं, मैं अन्दर नहीं चलूँगा। मुझे अभी-अभी व्येशेन्स्काया जाना है···अलविदा···कल मेरी राह देखना।"

ग्रिगोरी बाहर आया और उसने छोटा फाटक पार किया। पर, अक्सीनिया मुस्कराती और अपने सुलगते गालों को हथेलियों से रगड़ती बरसाती में जहाँ-की-तहाँ खड़ी रही।···

व्येशेन्स्काया में क्षेत्रीय कार्यालयों, क्षेत्रीय संगठनों और कमी-सारियट-स्टोरों के हटाए जाने का काम कभी से शुरू हो गया था।···

ग्रिगोरी ने क्षेत्रीय अतामान के दफ़्तर में मोर्चे की स्थिति के बारे में पूछाताछ की, तो एडजुटेंट का काम करने वाले एक नये रंगरूट ने कहा—"लाल फ़ौजें अलेक्सेयेव्स्काया के बिलकुल पास तक आ गई हैं। पता नहीं कि हमारी कौनसी फ़ौजें व्येशेन्स्काया होकर गुजरेंगी। गुज़रेंगी भी या नहीं, यह भी नहीं मालूम। आप खुद देख सकते हैं कि कोई कुछ नहीं जानता···हर आदमी यहाँ से निकल भागने की हड़बड़ी में है···मेरी सलाह मानिए तो यहाँ अपनी रेजीमेंट की तलाश न कीजिए, बल्कि अपने घोड़े पर मिलेरोवो चले जाइए। वहाँ आपको आसानी से पता लग जाएगा कि वह इस वक़्त कहाँ है। वैसे हर हालत में आपकी रेजीमेंट भी पीछे हटेगी और रेलवे लाइन के किनारे-किनारे पीछे हटेगी।···दुश्मन को क्या दोन पर रोका जा सकेगा ? व्येशेन्स्काया तो बिना किसी मुक़ाबले के दुश्मन के हाथ लग जाएगा···इतना तो तय है !"···

ग्रिगोरी काफ़ी रात गए घर लौटा। इलीनीचिना ने उसके लिए खाना तैयार करते हुए कहा—"तुम्हारा वह प्रोखोर आया था। कह

गया है कि फिर आएगा, लेकिन तब से अब तक तो आया नहीं है।"

ग्रिगोरी इस खबर से खुश हो उठा। उसने जल्दी-जल्दी खाना खाया और फिर प्रोखोर के यहां गया। प्रोखोर ने उसका उदास मन से मुस्कराते हुए स्वागत किया और बोला—"मैं तो सोच रहा था कि तुम व्येशेन्स्काया से ही सीधे पीछे हटने वालों के साथ हो लिए।"

"तुम कहां से फूट पड़े यहां ?" ग्रिगोरी ने हंसते और अपने वफ़ादार अर्दली के कंधे पर हाथ मारते हुए कहा।

"मोर्चे से ही आया हूं।"

"उड़ दिए वहां से ?"

"क्यों, ऐसा किस लिए सोचा तुमने ? मेरे क़िस्म का फ़ौजी इस तरह पीठ दिखाकर भाग भी सकता है क्या ? मैं आया हूं मगर मेरी तरफ़ कोई उंगली नहीं उठा सकता। बात यह है कि तुम्हारे बिना गर्म इलाक़ों को जाने का मेरा जी हुआ नहीं। गुनाह हम लोगों ने साथ-साथ कमाए हैं तो आखिरी फ़ैसला सुनने के लिए भी हम लोग साथ-ही-साथ चलेंगे। हमारे साथ कोई बड़ी पंचायत तो है नहीं, तुम जानते हो !"

"···हां, सो तो मैं जानता हूं. पर यह बताओ कि उन लोगों ने तुम्हें रेजीमेंट से आने कैसे दिया ?"

"वह तो खासी लम्बी दास्तान है। बाद में बतलाऊंगा तुम्हें।" प्रोखोर ने बात टाली और खिन्न हो उठा।

"रेजीमेंट है कहां ?"

"शैतान ही जाने कि रेजीमेंट इस वक़्त कहां है।"

"तो कब से रेजीमेंट से बाहर हो तुम ?"

"कोई दो हफ़्ते से।"

"यानी तब से अब तक कहां रहे ?"

"ऊपर वाला जानता है कि क्या मुसीबत हो तुम भी !" प्रोखोर ने असन्तोष से कहा और अपनी पत्नी की ओर कनखी से देखा—"कहां रहे···कैसे रहे···क्यों रहे···फ़िलहाल जहां भी रहा हूं इस वक़्त वहां नहीं हूं···मैंने कहा न कि मैं तुम्हें सब-कुछ बतला दूंगा···इसके माने

हूँ कि बतला दूंगा…ए, बीबी थोड़ी-बहुत शराब घर में है कहीं ? अपने कमांडिंग अफ़सर से मिला हूँ तो इसकी थोड़ी खातिर तो करनी ही चाहिये…गरज यह कि पीने को कुछ है ?…तो, भागकर… जाओ…कुछ-न-कुछ लेकर आओ…और खयाल रखो कि हवा की तरह ही आओ । तुम्हारा आदमी बाहर क्या रहा, तुमने सारे फौजी क़ानून-क़ायदे घोटकर पी लिए…हाथ से बेहाथ हो गई हो तुम…"

"मगर, तुम इस तरह बलबलाए क्यों जा रहे हो ?" पत्नी ने मुस्कराते हुए पूछा—"मुझ पर बहुत चीखो-चिल्लाओ नहीं । तुम यहाँ के असली मालिक नहीं हो । बारह महीनों में कहीं मुश्किल से दो दिन रहते हो तुम यहाँ ।"

"अरे बाबा, मुझ पर हर आदमी चिल्लाता है, मगर मैं तुम्हारे सिवाय और किसी पर नहीं चिल्लाता । रुक जाओ, थोड़ा इन्तज़ार करो…मैं ज़रा जनरल बन जाऊँ…फिर देखना कि मैं दूसरों पर किस तरह गरजता हूँ । लेकिन इस बीच तुम सब्र से काम लो और हँसो… जल्दी से अपनी वर्दी चढ़ाओ और एक-दो-तीन… ।"

और पत्नी बाहर जाने के कपड़े पहनकर चली गई तो प्रोखोर ने ग्रिगोरी को भर्त्सना-भरी दृष्टि से देखा । बोला—"तुम्हें समझ ज़रा भी नहीं है, पंतेलेयेविच ! मैं औरत के सामने तो तुमसे हर बात बतला नहीं सकता और तुम हो कि अपना कैसे, क्या-क्या, कहाँ दबाए जा रहे हो । खैर पहले तो यह बतलाओ कि टाइफ़स ने छोड़ दिया तुम्हें ?"

"हाँ, अब ठीक हूँ…अब तुम अपने बारे में सब-कुछ बतला जाओ ! तुम मुझसे कुछ छिपा रहे हो…अन्दर-ही-अन्दर घोट रहे हो कुछ…उगलो उसे ! किस उलझन में फँस गये तुम ? किस तरह भागे तुम ?"

"जो कुछ हुआ वह तो भागने से भी बेहतर रहा ।…हुआ यह कि तुम्हें घर पहुँचाने के बाद मैं रेजीमेंट को लौटा तो मुझे तुम्हारी स्क्वैड्रन के तीसरे ट्रूप में भेजा गया । लेकिन लड़ने के मामले में तो मैं सिकन्दर हूँ ही, उस पर मुझे दो लड़ाइयों में हिस्सा लेना पड़ा तो मैंने

सोचा—अब अपनी जिन्दगी खत्म ही समझो! प्रोखोर म्याँ, सिर छिपाने को जगह ढूँढो कहीं···वरना तुम्हारा काम तमाम हुआ! फिर तक़दीर की बात कि लाल फ़ौजियों ने हमें एकदम दबा दिया और लड़ाई ऐसी घमासान हुई कि हमारा दम मारना मुश्किल हो गया। उन्होंने जहाँ भी मोर्चा भेदा, हमें पीछे ठेला। जहाँ भी ज़रा-सी भी डगमगाहट देखी हमारी रेजीमेंट को पीछे ढकेला-पीसा। नतीजा यह कि एक हफ़्ते के अन्दर-अन्दर हमारी स्क्वैड्रन के ग्यारह कज़्ज़ाक इस तरह दुनिया से उठ गए, जैसे कि किसी गाय ने उन्हें अपनी जीभ से चाट लिया हो। तो मैं सचमुच ऊब गया और पूरी हालत से सचमुच घबरा उठा।" प्रोखोर ने सिगरेट जलाई, थैली ग्रिगोरी की ओर बढ़ाई और इत्मीनान से बोला—"फिर ऐसा हुआ कि जासूसी की गश्त के लिए मुझे कहीं लीस्की के पास जाना पड़ा। इसके लिए भेजे गये हम तीन, और रास्ते में हम तीनों ने अपनी आँखें पूरी तरह खुली रखीं। रास्ते में हमारे घोड़े हलकी दुलकी चाल से एक टीले पर चढ़े कि हमारी निगाह एक सोते से बाहर आते और किनारे पर हाथ रखते एक लाल फ़ौजी पर पड़ी। हम अपने घोड़े दौड़ाकर पास पहुँचे तो वह चिल्लाकर बोला—'कज़्ज़ाको, मैं तो तुम्हारी तरफ़ हूँ। मुझ पर अपनी तलवार का पानी न आजमाना। मैं तो तुममें से एक हूँ।" लेकिन मैं उसकी चपेट में आते-आते बचा, क्योंकि पता नहीं क्यों मैं गरम हो उठा और उसके बिल्कुल पास पहुँचकर बोला—'सुअर के बच्चे, तुमने जब एक बार लड़ने का फ़ैसला किया तो अब तुम्हें हथियार नहीं डालने चाहिए। तुम कमीन हो···सुअर हो! देखते नहीं कि आज अगर हमारे पैर किसी तरह जमे हुए हैं तो उसके लिए हमें अपने खून की आखिरी बूँद तक देनी पड़ रही है? और यहाँ तुम हथियार डाल रहे हो जैसे कि कुमुक ला रहे हो हमारे लिए।' और इसके साथ ही मैंने अपनी तलवार की म्यान उसकी पीठ के आर-पार जमा दी। फिर मेरे दूसरे साथियों ने भी उससे यही कहा—'इस तरह हर क़दम पर रंग बदल-बदलकर लड़ने से फ़ायदा? अगर तुम्हारी तरह तुम्हारे सभी साथी एक साथ हमसे आ मिलते तो

लड़ाई कभी की खत्म हो गई होती।'···लेकिन···ग्रिगोरी, मैं भला कैसे समझता कि जिस गिरगिट से हम बातें कर रहे हैं, वह अफसर है! इस पर भी निकला वह वही। मैंने उस पर अपनी तलवार की म्यान जमाई तो उसका चेहरा पीला पड़ गया। शांत भाव से बोला—'मैं अफ़सर हूँ। तुम्हारी हिम्मत कि तुम मुझ पर हाथ छोड़ो! एक अर्से पहले मैं हुस्सारों[1] के साथ था और फ़ौजी भर्ती के सिलसिले में लाल सेनाओं के हाथ पड़ गया था। तुम मुझे अपने कमांडर के पास ले चलो। वहाँ मैं सब-कुछ बतलाऊँगा।'···इस पर हमने कहा—'अच्छा अपने क़ागजात दो हमें!' मगर उसने ऐंठ से जवाब दिया—'मैं तुमसे बात नहीं करना चाहता···मुझे अपने कमांडर के पास ले चलो!'

"लेकिन, यह सारा किस्सा तुम अपनी बीवी के सामने सुनाना क्यों नहीं चाहते थे?" ग्रिगोरी ने आश्चर्य से पूछा।

प्रोखोर ने जवाब दिया—"इस 'क्यों, के जवाब तक अभी कहाँ आया मैं! देखो, बात बीच में न काटो। तो, हमने उसे स्क्वैड्रन में ले जाने का फ़ैसला किया और यही बेवकूफ़ी हो गई। हमें उसे जहाँ-का-तहाँ तलवार के घाट उतार देना चाहिए था और खेल खत्म कर देना चाहिये था। लेकिन, हम उसे अपने साथ ले गए और एक दिन बाद वह हमारे स्क्वैड्रन का कमांडर बना दिया गया। क्या शानदार खातिर हुई उसकी! फिर बैंड बजना शुरू हुआ। एकाध दिन बाद उसने मुझे बुलाया और बोला—'तो, तुम एक मिले-जुले, न बँट सकने वाले रूस के लिए लड़ रहे हो···है न सुअर के बच्चे? मुझे क़ैदी बनाते वक़्त क्या कहा था तुमने? याद है तुम्हें?' मैंने अपनी जान जैसे-तैसे छुड़ानी चाही, मगर उसने कोई रहम न दिखाया और मेरी तलवार की म्यान और अपनी पीठ की याद आते ही सिर से पैर तक काँप उठा। कहने लगा—'तुझे पता है कि मैं हुस्सार रेजीमेंट का कैप्टन हूँ और एक बड़े घर का लड़का हूँ···और तू···तू गँवार है···उजड्ड

---

१. हलके हथियारों वाले घुड़सवार फौजी।

देहाती है…तूने मुझ पर हाथ उठाया ?'…उसने मुझे एक बार बुलाया, दो बार बुलाया, मगर रहम दिखलाने का तो नाम तक न लिया। उसने ट्रूप कमांडर को बुलवाकर मुझे एक बाहरी चौकी पर भेजने और बिना पारी के रखवाली पर तैनात कर देने का हुक्म दिया। साथ ही मेरे सिर बेगार पर बेगार यों मारी जैसे किसी बाल्टी से मटर पर मटर निकलती चली आए। यानी यह कि सुअर के बच्चे ने मेरी जिन्दगी हराम कर दी। और, मेरी ही नहीं, बल्कि जासूसी की गश्त के वक़्त के मेरे दोनों साथियों के साथ भी उसने ऐसा ही बरताव किया। उन दोनों ने भरसक सब-कुछ कहा, लेकिन एक दिन मुझसे बोले—'आओ इसे मिल-जुलकर खत्म कर दें, वरना हम तो जीने लायक रह ही न जाएँगे।' लेकिन मेरी रूह ने उसके क़त्ल की गवाही न दी, इसलिए मैंने सभी कुछ रेजीमेंटल-कमांडर को बतला देने का फ़ैसला किया। बात यह है कि क़ैदी बनाते वक़्त तो मैं उसे मार सकता था, मगर उसके बाद मेरा हाथ उसके खिलाफ किसी भी तरह उठ न सकता था। मेरी बीवी चूज़े की गर्दन हलालती है तो मेरी आँखें सिकुड़ उठती है…यह तो एक इन्सान की जान लेने की बात थी !"

"लेकिन आखिरकार तुमने उसे मार डाला न ?" ग्रिगोरी फिर बीच में बोला।

"जरा रुको न…तुम्हें धीरे-धीरे सभी मालूम हो जाएगा। तो, मैं रेजीमेंटल-कमांडर के पास गया और मैंने उसे सब-कुछ बतलाया। पर, जवाब में वह सिर्फ़ हँसा और बोला—'एक बार तुम उस पर हाथ उठा चुके हो तो अब परेशान होने की ऐसी कोई बात नहीं, ज़िकोव ! वह कानून-क़ायदे के मामले में बहुत ही सही आदमी है। वैसे भी अच्छा और ईमानदार है।' उसके बाद मैं वहाँ से चला आया, पर मैंने मन-ही-मन सोचा—तुम चाहो तो क्रॉस की जगह उस ईमानदार और अच्छे आदमी को अपने गले में लटका लो, मगर मैं उसके स्क्वैड्रन में अब काम करने से रहा। फिर, मैंने किसी दूसरे स्क्वैड्रन में भेजे जाने की बात की। मगर, इसका भी कोई नतीजा न निकला।

तो मैंने बिल्कुल ही निकल भागने का इरादा किया। पर, कहना एक
बात है और करना दूसरी बात।

फिर, एक हफ़्ते के आराम के लिए हमें पीछे भेज दिया गया और
एक हफ़्ते के बाद उस शैतान के बच्चे ने आकर फिर मुझे हलाकान कर
मारा। मैंने अपने-आपसे कहा—'अब रास्ता सिर्फ़ एक है कि किसी
बुरी बीमारी वाली औरत को ढूंढ लो और हलकी बीमारी वाली
ड्यूटी ले लो। इस बीच लोग पीछे हटने लगेंगे और सब-कुछ दब-दबा
जाएगा।' सो, मैंने कुछ ऐसा किया जैसा जिन्दगी में कभी न किया
था। मैं पीछे दौड़-दौड़कर देखने लगा कि बुरी-से-बुरी औरत कौन
नजर आती है। लेकिन कैसे क्या होता? किसी औरत के चेहरे पर
तो लिखा होता नहीं कि उसे यह बीमारी है। यानी, सवाल उठा कि
अब करूँ तो करूँ क्या?" प्रोखोर ने पूरी ताकत से थूका और
आहट ली कि पत्नी आ तो नहीं रही है?

ग्रिगोरी ने मुस्कान छिपाने के लिए अपने मुँह पर हाथ रख लिया
और उसकी आँखें चमकने लगीं। हँसते हुए बोला—"तो फिर तुम्हें
कोई बीमार औरत मिली?"

प्रोखोर ने आँसू-भरी आँखों से उसे घूरकर देखा। निगाहों से
ऐसी शांति और उदासी टपकी जैसे कि वह कोई बूढ़ा कुत्ता हो,
जिसके दिन लद चुके हों। बोला—"तुम्हारा खयाल है कि ऐसी औरत
ढूंढ निकालना कोई बहुत आसान है? वैसे तुम्हें जिस चीज़ की गरज़ न
हो, वह हर कदम पर नज़र आती है, मगर उस वक़्त मैं गला फाड़कर
चिल्लाता तो भी कोई फ़ायदा न होता।"

ग्रिगोरी आधा मुड़ते हुए, अन्दर-ही-अन्दर हंसा, फिर चेहरे से
हाथ हटाया और फँसती आवाज में बोला—"ईसा के लिए मुझे तकलीफ़
न दो। तुम तो यह बतलाओ कि आखिर में कोई औरत तुम्हें मिली
भी या नहीं?"

"तुम्हें तो मज़ाक की बात लगेगी ही!" प्रोखोर आहत स्वर में
बोला—"दूसरों की मुसीबतों पर जो हँसते हैं, वे सिर्फ बेवकूफ होते
हैं। कम-से-कम मैं तो यही सोचता हूं।"

"लेकिन मैं तुम्हारा मजाक नहीं बना रहा···खैर, तो फिर हुआ क्या ?"

"तो मैंने यह किया कि जिस जगह ठहरा हुआ था, उसके मालिक की बेटी पर डोरे डालने लगा। औरत थी बिनव्याही, ऐसे ही कम-ज्यादा कोई चालीस साल की। चेहरा मुहासों से भरा हुआ था और ऐसी लगती थी कि····कुछ न पूछो···ऊपर वाला हमें बचाए ऐसी तमाम औरतों से! पड़ोसियों से मालूम हुआ कि इधर वह डॉक्टरों के पास दौड़ती भी रही है। मैंने सोचा—'हो-न-हो, यह तो बीमारी दे ही देगी मुझे!' बस, मैं नए मुर्ग़े की तरह उसके आस-पास मँडराने लगा, और उसे खुश करने के लिए तमाम तरह की बातें करने और कहने लगा। वैसे इतनी बातें मुझे आ कहाँ से गईं, मुझे खुद पता नहीं!" प्रोखोर अपराधी की भाँति मुस्कराया और सारी घटना याद कर कुछ खिल भी उठा—"मैंने उससे शादी का वायदा किया और हर तरह की बकवास की···आखिरकार मेरी जीत हो गई और बात गुनाह तक आ गई। इसी वक़्त वह एकाएक उठकर चलने और फूट-फूटकर रोने लगी। मैंने उसे चुप करने की कोशिश की। कहा—'तुम्हें कोई अच्छी-बुरी बीमारी है क्या···'लेकिन, इससे क्या··· कोई बात नहीं···ऐसा होगा तब तो और भी अच्छा होगा।' लेकिन मैं खुद ही डर गया। मुझे लगा—रात का वक़्त है, कहीं किसी ने हमारी आवाज़ सुन ली, और वह कुट्टी के इस शेड में चला आया तो?···इसीलिए मैं उससे बोला—'ईसा के लिए चीखो नहीं···यों अगर तुम्हें कोई बीमारी हो तो भी डरो नहीं। मैं तुम्हें इतनी मोहब्बत करता हूँ कि मैं हर अंजाम के लिए तैयार हूँ।' मगर, वह बोली—'मेरे प्यारे प्रोशेंका, मुझे किसी तरह की कोई बीमारी नहीं है। लेकिन मैं ईमानदार लड़की हूँ। यही वजह है कि डरती हूँ।'··· ग्रिगोरी-पैन्तेलेयेविच, मानो और चाहे न मानो, पर उसकी यह बात सुनते ही मेरा सारा बदन बर्फ़ हो गया और सिर से पैर तक पसीने से नहा उठा। मुझे लगा कि हे ईसा, यह क्या हुआ! यह तो तिनके का आखिरी सहारा भी गया!···फिर तो मैं उस पर बरस पड़ा···

अगर ऐसा है तो तुम डॉक्टरों के पास दौड़-दौड़कर क्यों जाती रही हो ? ऐसा मौका क्यों देती रही हो कि लोग तुम्हारे बारे में गलत गप्पें बनायें ?'...औरत बोली—'डॉक्टरों के पास तो मैं जाती रही हूँ चेहरे की सफ़ाई के लिए कोई मरहम लेने की खातिर !'...इस पर मैंने अपना सिर थाम लिया और उससे बोला—'उठ जा यहां से, फ़ौरन चली जा...मौत ले जाए तुझे...घिनौनी चुड़ैल कहीं की। मैं तुझे बिल्कुल नहीं चाहता और तुझसे शादी मैं हरगिज नहीं करूँगा !"

प्रोखोर ने और जोर से थूका और जरा रुक-रुककर बोला—"और इस तरह मेरी सारी मेहनत बेकार चली गई। फिर मैं लौटा और सामान समेट-समाटकर रातों-रात दूसरे क्वार्टर में चला गया। इसके बाद जवानों ने इशारा किया और एक खास खिड़की से मुझे मनमानी नेमत मिल गई। इसके लिए इस बार मैंने सीधे-सीधे काम की बात की। पूछा—'बीमार हो तुम ?' जवाब मिला—'हाँ, थोड़ी-बहुत हूँ तो !' मैंने कहा—'मुझे तुम्हारी बीमारी का साया भी नहीं चाहिए !'...बस, मैंने उसे बीस रूबल का एक नोट दिया, अपनी दिक़्क़त बताई और अगले दिन अपनी शेखी बघराते हुए हलकी ड्यूटी पर चालू हो गया। और, वहाँ से सीधे घर चला आया।"

"तुम अपना घोड़ा साथ नहीं लाए ?"

"घोड़ा नहीं लाए ? अरे, अपने घोड़े पर आया हूँ, और उसे पूरी रफ़्तार से इस तरह दौड़ाता लाया हूँ, जैसे कि लड़ाई के मैदान में हूँ। साथियों ने मेरा घोड़ा वहाँ भेज दिया था, जहाँ मैं बीमारी की छुट्टी बिता रहा था। लेकिन यह कोई बड़ी बात नहीं है। तुम तो मुझे अब यह बतलाओ कि बीवी से क्या कहूँ ! वैसे तुम कहो तो मैं मुसीबत टालूँ और तुम्हारे साथ रात बिताने के लिए चला चलूँ...क्या खयाल है ?"

"नहीं...बिल्कुल नहीं। तुम रात अपने घर में ही बिताओ। कह देना कि तुम जख्मी हो। कहीं पट्टी-वट्टी बँधी है ?"

"लड़ाई के मैदानवाली पट्टी बँधी है अब तक।"

"तो, बस, उसी से फ़ायदा उठाओ।"

"लेकिन, औरत मेरा यक़ीन नहीं करेगी।" प्रोखोर ने निराशा से कहा। परन्तु इस पर भी उठा, अपनी काठी के थैले में कुछ खखोरा-खखारी कर सोने के कमरे में घुसा और वहाँ से फुसफुसाते हुए बोला—"अगर इस बीच औरत आ जाए तो उसे बातों में लगा रखना, मैं अभी-अभी आया।"

दूसरी तरफ़, अपनी सिगरेट रोल करते हुए ग्रिगोरी अपनी रवानगी की योजना बनाने लगा—"स्लेज में दोनों ही घोड़े जोत लिए जाएँगे और शाम को गाँव से रवाना हुआ जाएगा। उस वक़्त गाँववाले अक-सीनिया को मेरे साथ देख न पाएँगे, हालाँकि बात मालूम तो उन्हें हो ही जाएगी।"

"मगर, स्क्वैड्रन कमांडर की बात तो मैंने पूरी की ही नहीं।" प्रोखोर लंगड़ाता हुआ सोने के कमरे से निकला और मेज़ के किनारे आ बैठा—"मेरे बीमार होकर चले आने के तीन दिन बाद हमारे साथियों ने उसे मार डाला।"

"सचमुच!"

"ऊपरवाला गवाह है···लोगों ने लड़ाई के वक़्त उसकी पीठ में गोली मार दी और वह इस दुनिया से कूच कर गया।"

"स्क्वैड्रन के अफ़सरों ने गोली मारनेवाले को पकड़ा नहीं?" ग्रिगोरी ने तातारस्की छोड़ने के खयालों में डूबे-ही-डूबे पूछा।

"गोली मारनेवाले की तलाश की बात ही कहाँ उठती है! सारे-के-सारे लोग इस तरह पीछे हटे कि किसी को किसी की बात सोचने का मौक़ा ही नहीं मिला।···लेकिन, वह मेरी बीवी नाम की मादा जाकर मर कहाँ गई। पीने का बड़ा जी कर रहा है···तुम कब यहाँ से जाने की बात सोच रहे हो?"

"कल।"

"एक दिन और नहीं टाल सकते तुम?"

"किसलिए?"

"जरा अपने जुएँ निकाल लेता···अपने साथ जुओं को भी घुड़-सवारी कराने में कुछ मजा नहीं।"

"जुएँ रास्ते में बीन लेना। यह टालमटोल का वक़्त नहीं है। लाल फ़ौज इस वक़्त जहाँ है, वहाँ से उसे व्येशेन्स्काया पहुँचने में दो दिन लगेंगे।"

"तो सुबह रवाना हो रहे हैं हम लोग ?"

"नहीं, रात को चलेंगे। बात कारगिन्स्काया तक पहुँचने की है। रात वहीं काटेंगे।"

"लेकिन लाल फ़ौजियों के हाथ तो नहीं आएँगे हम लोग ?"

"जो भी हो, हर सूरत में रवाना होने को तैयार रहना चाहिए।··· मेरा खयाल था···मैंने सोचा था कि अकसीनिया अस्ताखोव को भी अपने साथ ले चलूँगा। तुम्हें कोई एतराज़ तो नहीं न ?"

"इससे भला मुझे क्या लेना-देना ? तुम चाहो तो एक के बजाय दो-दो अकसीनियाएँ अपने साथ ले चलो !···वैसे मुश्किल घोड़ों की होगी।"

"अकसीनिया बहुत भारी नहीं है।"

"औरतों के साथ सफ़र करना बेहूदा लगता है···भला यह नई मुसीबत तुम क्यों पालना चाहते हो ? जैसे कि उसके बिना भी कुछ कम तूफ़ानों का सामना करना पड़ेगा हमें !" प्रोखोर ने दूसरी तरफ़ देखकर आह भरी—"मैं जनता था कि तुम उसे अपने गले में हिलगाए फिरोगे। हमेशा एक बीवी चाहिए तुम्हें अपने साथ ! उफ़······ग्रिगोरी पेन्तेलेयेविच···"

"इससे तुम्हारा कोई ताल्लुक़ नहीं।" ग्रिगोरी ने उदासीन भाव से कहा—"मगर, यह बात अपनी बीवी के सामने मत बड़बड़ा देना कहीं !"

"मैंने उसके सामने कभी कुछ उगला है क्या ? तुम्हें चाहिए कि तुम ज़रा और क़ायदे से जानो ! मगर अकसीनिया अपना घर किस पर छोड़ेगी ?"

इसी समय बरसाती की सीढ़ियों पर आहट हुई और प्रोखोर की पत्नी आ गई। उसके फूले हुए, भूरे रूमाल पर बर्फ़ के दाने चमचमाने लगे।

"बर्फ़ तेजी से गिर रही है क्या ?" प्रोखोर ने गिलास अलमारी से निकाले और तब खयाल आने पर पूछा—"कुछ लाई भी हो तुम ?"

पत्नी के गाल गहरे गुलाबी लगे। उसने सीने के पीछे से दो भाप छोड़ती बोतलें निकाली और मेज़ पर जमा दी।

"यानी एक बोतल हमें रास्ते में काम देगी।" प्रोखोर ने प्रसन्नता से भरकर कहा, वोदका की महक ली और बोला—"अव्वल दर्जे की है। और, तेज ऐसी है कि लुत्फ़ आ जाए !"

ग्रिगोरी ने छोटे-छोटे गिलास भर-भरकर वोदका ढाली, फिर थकान का बहाना किया और अपने घर चला आया।

: २६ :

"यानी, लड़ाई तो खत्म हो गई। लाल फ़ौजी हमें इतने ज़ोर से ठेल रहे हैं कि अब हम पीछे ही हटते जाएँगे।" प्रोखोर ने स्लेज पहाड़ी के ऊपर की तरफ हांकते हुए कहा।···

नीचे तातारस्की का गाँव निलहरी धुंध में लिपटा पड़ा रहा। सूरज क्षितिज के बर्फ़ानी बैंजनी हँसिए की धार के नीचे उतर गया। स्लेज के नीचे बर्फ़ चरमराती रही। दोनों घोड़े क़दम चाल से आगे बढ़ते रहे। ग्रिगोरी स्लेज के पिछले हिस्से में आराम से लेटा रहा। कंधे काठियों से टिके रहे। अकसीनिया बग़ल में बैठी रही। बदन पर फ़र की गोटवाली भेड़ की खाल की जैकेट रही। सिर के सफ़ेद, फूले हुए रूमाल के नीचे काली आंखें खुशी से चमकती रहीं और लौ देती रहीं। ग्रिगोरी की तिरछी निगाह रह-रहकर जमती रही। उसके तुषार के कारण हलके गुलाबी गालों पर, उसकी काली घनी भौहों पर और उसकी बरौनियों की लम्बी कमानों के नीचे के निलहरे सफ़ेद रंग पर। अकसीनिया अपने चारों ओर के वातावरण को बड़ी ही उत्सुकता से पीती रही। बर्फ़ के लबादे से ढँके स्तेपी के मैदान को, चाल की रगड़ से चिकनी सड़क को और दूर के क्षितिज की धुंध को नज़र गड़ा-गड़ाकर देखती। गांव-घर से पहली बार बाहर निकली थी, इसलिए उसे हर चीज़ नई और असाधारण लगी और सहज रूप से अपनी ओर खींचती रही। पर, वह बीच-

बीच में अपनी पलकें झुका लेती, आँख की बरौनियों पर जमी ओस की सहली-सहली गुदगुदी महसूस करती और कुछ सोच-सोचकर मुस्कराने लगती। उसे लगता कि एक ज़माने तक दिल और दिमाग़ को जकड़ रखने वाला सपना आख़िरकार सच बना और एकाएक सच बना। अब मैं अपने ग्रिगोरी के साथ तातारस्की से अपनी पैदाइश के घिनौने ज़िले से बहुत दूर जा रही हूँ···कहीं बहुत दूर जा रही हूँ। इस गाँव मे, इस ज़िले में कितना सहा है मैंने ! आधी जिन्दगी दिल मसोस-मसोसकर, बिना प्यार के भी एक आदमी के साथ रहकर गुजार दी है। यहाँ के ज़र्रे-ज़र्रे ने जो यादें उभारी हैं, उनने दिल में घुन-सा लगता रहा है।···

इसके साथ ही वह अपनी बगल में बैठे ग्रिगोरी को अपनी पूरी चेतना से सहेजती और मुस्कराती रही। उसे भूले से भी खयाल न आया कि कल के इस सुख के लिए उसने आज कितनी क़ीमत अदा की है। यह आने वाला कल स्तेपी प्रदेश के क्षितिज की भाँति ही धुंध की घनी परत में लिपटा रहा और दूर से इशारा कर उसे बराबर अपने पास बुलाता रहा।···

सहसा ही प्रोखोर मुड़ा तो उसने अकसीनिया के लाल, पाले से सूजे होंठों पर काँपती हुई मुस्कान देखी और दर्द से भरी आवाज में बोला—"तो···तो तुम दाँत क्या निकाल रही हो ? अपने को नई-व्याहता समझ रही हो। तुम्हें अपने घर से दूर जाने में बड़ी खुशी महसूस हो रही है।"

"और, तुम्हारा खयाल है कि नहीं हो रही है ?" अकसीनिया ने बजती हुई आवाज में पूछा।

"क्या बड़ा कारनामा है जिस पर तुम खुश हो रही हो !···औरत, तू है बेवकूफ···अभी तक तो यही पता नहीं कि यह सफ़र खत्म कहाँ और कैसे होगा, इसलिए इतनी जल्दी खुशी से न फूल ! फ़िलहाल, अपने दाँत होंठों के अन्दर ही रख।"

"आनेवाला कल गुजरे हुए कल से बेहतर ही होगा, बदतर तो होगा नही।"

"तुम दोनों को देखता हूँ तो मुझे तो जैसे कोई बीमारी घेरने लगती

है…" प्रोखोर ने घोड़ों की पीठ पर ज़ोर से चाबुक जमाया।

"तो हमें मत देखो, मुड़ जाओ और अपने होंठों पर ताला लगा लो!" अकसीनिया ने हँसते हुए सलाह दी।

"यानी फिर बेवकूफ़ी की बात कर दी तुमने? यानी मैं समन्दर के किनारे तक अपने होंठ सिये रहूँ? क्या शानदार बात कही है तुमने?"

"तो तुम्हें बीमारी आखिर क्यों घेर रही है?"

"तू आखिर थोड़ा-सा चुप नहीं हो सकती। पराए आदमी के साथ उड़ आई है, शैतान ही जाने कि कहाँ जा रही है, और ऊपर से ज़बान लड़ाती है!…अच्छा मान लो कि उसी वक़्त स्तेपान कहीं से लौट आया और उसने तुम्हें ग़ायब देखा तब क्या होगा?"

अकसीनिया बोली—"एक बात बतलाऊँ…प्रोखोर…देखो, तुम्हें शहर के अन्देशे से दुबला नहीं होना चाहिए…वरना क्या होगा कि कहीं तुम भी क़िस्मत की लपेट में आ जाओगे…समझे!"

"मैं तुम्हारे अन्देशे से दुबला नहीं हो रहा। तुम इस तरह मुझे आँखें मत दिखलाओ। जैसा और जो मुझे लगे। मैं कहने को आज़ाद हूँ…है कि नहीं…? क्या तुम्हारा खयाल है कि मैं सिर्फ़ कोचवान हूँ और मेरी बात के लिए सिर्फ़ घोड़े बने हैं? यह एक और बढ़िया बात हुई! अब तुम चाहो तो बिगड़ो और चाहो तो खुश हो…जो तुम्हारा जी चाहे सो करो, अकसीनिया! मगर, तुम्हारी खबर तो एक लपलपाये बेंत से ली जानी चाहिए और हुक्म ऊपर से दिया जाना चाहिए कि देखो, आँसू आँख से एक न निकले। और क़िस्मत-विस्मत का डर मुझे मत दिखलाओ! मैं जहाँ जाता हूँ, अपनी क़िस्मत अपने साथ ले जाता हूँ। खास साँचे में ढली है मेरी क़िस्मत! कहने को खुलकर नहीं गाती, मगर आँखें लगने भी नहीं देती…! और तुम शैतान की आँतो…तुम हर सूरत को हँसने-खेलने की चीज समझने की कोशिश करते हो…तुम्हारे कानों के पर्दों में किसी चीज से भनभनाहट पैदा नहीं होती।"

ग्रिगोरी मुस्कराते हुए पूरी बातचीत सुनता रहा। फिर दोनों को शांत करने की कोशिश करते हुए बोला—"अभी गाँव के बाहर भी हम

मुश्किल से ही निकल पाए हैं···तुम दोनों आपस की यह तू-तू मैं-मैं बन्द करो। बड़ा लम्बा रास्ता सामने पड़ा है। अपने मन की निकालने का तुम्हें पूरा मौक़ा मिलेगा।···और तुम अकसीनिया के पीछे हाथ धोकर क्यों पड़ गए हो, प्रोखोर ?"

प्रोखोर ने जरा रुखाई से जवाब दिया—"मैं इसके हाथ धोकर पीछे पड़ गया हूं, क्योंकि मैं चाहता हूं कि यह मेरी हर बात काटे नहीं। मुझे तो इस वक़्त ऐसा लग रहा है कि दुनिया में औरत से बुरी कोई चीज नहीं है। पूरी चिच्छूबूटी समझो। तुम्हें पता है मेरे भाई, कि बनानेवाले के नमूने में सबसे गई-बीती चीज औरत मानी गई है। अगर मेरा बस चले तो दुनिया में औरत का नाम-निशान न रह जाए। इस वक़्त ऐसा दिमाग़ खराब हो रहा है मेरा! और तुम यह खीसें क्यों बा रहे हो? सिर्फ़ बेवकूफ़ दूसरों की मुसीबतों की हँसी उड़ाते हैं।···अच्छा जरा रासें सम्हालो···मैं थोड़ी देर को उतरूंगा।"

प्रोखोर स्लेज से नीचे उतरा, कुछ देर तक पैदल चला। फिर स्लेज में आराम से आ जमा और शांत हो गया···।

तीनों ने रात कारगिन्स्काया में बिताई और दूसरे दिन सवेरे नाश्ते के बाद फिर रवाना हो गए। रात होते-होते वे तातारस्की से कोई चालीस वर्स्ट दूर पहुंच गए।

रास्ते में शरणार्थियों से भरी गाड़ियों का काफिले-का-काफिला दक्षिण की ओर बढ़ता मिला। मोरोज़ोव्स्की के पास उन्हें पहले कज्जाक-ट्रूप दीख पड़े। तीस-तीस चालीस-चालीस घुड़सवारों के स्क्वैड्रन बग़ल से गुजरे। उनके पीछे आईं उनकी मालगाड़ियां। मगर, ग्रिगोरी, अकसीनिया और प्रोखोर जितना आगे बढ़े रात गुजारने के लिए जगह खोजना उतना ही मुश्किल होता गया। शाम होते-होते गांवों के ठहरने लायक़ सभी स्थान ठसाठस भर गए और उनकी तो कौन कहे घोड़ों तक के खड़े होने की गुंजाइश कहीं नजर न आई। तावरीदा के एक जिले में ग्रिगोरी दर-दर दस्तक देता फिरा, मगर सारी कोशिश बेकार गई। सोने का ठिकाना कहीं न हुआ और उन्हें मजबूर एक शेड में रात गुजारनी पड़ी। बर्फ़ानी अंधड़ के कारण उनके कपड़े बुरी तरह भीग

गए और वे जमकर बिलकुल पत्थर हो गए। पूरी रात पलक झँपी तक नहीं। सिर्फ़ तड़का होने के ज़रा पहले उन्होंने अहाते में फूस का अलाव लगाया तो उन्हें थोड़ी गरमी मिली।

सवेरे अकसीनिया ने सकुचते-सकुचते कहा—"ग्रीशा, हम आज के दिन यहाँ रह लें···क्या ख़याल है? रात को ठंड की वजह से नींद बिलकुल नहीं आई। अच्छा हो कि दिन में थोड़ा आराम कर लिया जाए।"

ग्रिगोरी राज़ी हो गया, और बड़ी कठिनाई के बाद उसने कहीं से एक खाली कोना खोज निकाला···। सुबह दूसरे शरणार्थी तो आगे बढ़ गए, पर सौ घायल लोगों और टायफ़स के मरीज़ों के साथ मोर्चे का एक चल-अस्पताल दिन में भी गाँव में बना रहा।

एक छोटे कमरे में दस कज्ज़ाक गंदे कच्चे फ़र्श पर सोते रहे। प्रोखोर घोड़े वाला कपड़ा और खाने का बोरा लाया, दरवाज़े के पास फ़र्श पर थोड़ा फूस बिछाया, एक सोते हुए बूढ़े कज्ज़ाक को टाँग पकड़कर एक ओर को घसीटा और रूखे पर स्नेह-भरे स्वर में अकसीनिया से बोला—"लेट जाओ यहाँ···तुम तो इतनी थकी लगती हो कि इन्सान ही नज़र नहीं आतीं···।"

रात भीगते-भीगते गाँव फिर लोगों से ठसाठस भर गया। रात-भर किनारे की गलियों में अलाव जलते रहे और जगह लोगों की चीख-पुकार, घोड़ों की हिनहिनाहट और स्लेजों की रगड़ की आवाज़ से गूँजती रही। फिर तड़का होने पर उजाला भी क़ायदे से न हो पाया कि ग्रिगोरी ने प्रोखोर को जगाया और फुसफुसाकर कहा—"उठो और घोड़े जोतो···चलना है अब!"

"इतनी जल्दी क्यों चलोगे?" प्रोखोर ने जम्हाई लेते हुए कहा।

"मैंने जो कहा तुमने सुना···?"

प्रोखोर ने काठी से सिर उठाया तो दूर की तोपों की गड़गड़ाहट उसके कानों में पड़ी।

तीनों ने हाथ-मुँह धोया और सुअर के गोश्त की चर्बी का नाश्ता कर अहाते में आए तो वहाँ आवाजाही शुरू होती नज़र आई। स्लेजों

की कतारों के आस-पास लोगों की चहल-पहल नजर आई। ऐसे में तड़के के अँधेरे में एक भर्राई हुई आवाज हवा में बजी—"नहीं तुम खुद दफ़न करना इनको। छः लोगों के लिए क़ब्र खोदने में हमारा आधा दिन निकल जाएगा···।"

"इन्हें दफ़न करना हमारा काम है?" एक दूसरी आवाज ने शांत भाव से उक्रइनी में जवाब दिया।

"सो तो तुम करोगे ही।" भर्राए हुए स्वरवाला व्यक्ति चीखा—"न दफ़न करना चाहते हो तो पड़ा सड़ने दो इन्हें, यहीं इसी अहाते में! इस काम से मुझे कुछ लेना-देना नहीं।"

"मगर सुनो डॉक्टर, अगर यहाँ मरने वाले तमाम बेघरबार लोगों को हम दफ़न करने लगे तो हम तो इसी भर के हो जाएँगे। यह काम तुम खुद नहीं कर लोगे?"

"भाड़ में जा तू···उल्लू का पट्ठा कहीं का! चाहता है कि तेरे लिए मैं अपना पूरा अस्पताल लाल फ़ौजियों को सौंप दूं?"

ग्रिगोरी ने अपनी स्लेज से सड़क के बीचों-बीच खड़ी दूसरी स्लेजों का चक्कर काटते हुए कहा—"मुर्दों को कोई नहीं पूछता···।"

"जिन्दों की फ़िक्र कोई नहीं करता। मुर्दों की कौन कहे!" प्रोखोर ने जवाब दिया।

दोन के उत्तरी जिलों के सभी लोग दक्षिण की ओर उमड़ चले। बेघरबार लोगों के माल-असबाब से लदी गाड़ियाँ ज़ारीत्सिन से लिखाया जाने वाली रेलवे लाइन से मानीच पहुँचने लगीं। ग्रिगोरी ने पहले सात दिन हर पड़ाव पर तातारस्की गाँव के लोगों को पूछा, पर रास्ते के किसी गाँव में उसे अपने यहाँ का कोई कज्जाक नहीं मिला। साफ़ है कि पैन्तेली और उसके साथ के लोग उक्रइनी बस्तियों को बचाते हुए बाएँ-ही-बाएँ गए थे, और कज्जाक गाँवों के बीच से होते हुए ओबलिन्स्काया की तरफ़ बढ़े थे···।

ग्रिगोरी को सिर्फ़ तेरहवें दिन उनका कुछ अता-पता मिला। रात को पड़ाव डालने पर उसे यों ही मालूम हुआ कि व्येशेन्स्काया का एक

कज्जाक बग़ल की झोंपड़ी में टायफ़स का शिकार है। ग्रिगोरी ने जानना चाहा कि वह आदमी आखिर है कहाँ का! सो वह गया और नीची छतवाले छोटे कमरे में उसे बूढ़ा ओबनिज़ोव फ़र्श पर पड़ा दीखा। उसने बतलाया—"तातारस्की के बेघरबार लोग अभी दो दिन पहले ही यहाँ से गये हैं। उनमें से कितनों को टायफ़स हो गया है और दो आदमी तो रास्ते में ही मर गए हैं। मुझे वे मेरे कहने से यहाँ छोड़ गए हैं।

"अब अगर मैं अच्छा हो गया और लाल कॉमरेडों ने मुझ पर रहम कर मेरी जान बख्श दी तो किसी तरह घर लौट जाऊँगा। अगर अच्छा नहीं हो सका तो यहीं मर जाऊँगा। मौत अगर आनी है तो आए…कहाँ आती है इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता…वह कुछ भी साथ लाती हो, कोई मिठाई लेकर तो साथ आती नहीं।" ग्रिगोरी के अलविदा कहते समय बूढ़े ने कहा। ग्रिगोरी ने उसे अपने पिता के विषय में पूछा तो बोला—"मुझे उनकी कोई खबर नहीं क्योंकि मैं आखिरी स्लेज में था। वैसे मालाखोव्स्की गाँव के बाद में मैंने उन्हें देखा नहीं…"

अगले पड़ाव पर ठिकाने के मामले में क़िस्मत ने ग्रिगोरी का कुछ ज्यादा साथ दिया। पहले मकान में घुसते ही उसे बेरखने-चिर्सकोये गाँव के कुछ परिचित कज्जाक मिल गए। उन्होंने उसके लिए जगह कर दी और उसने अपने और अपने साथ के लोगों के लिए स्टोव के पास सुविधा कर ली। पन्द्रह कज्जाक पीपों में भरी मछलियों की तरह वहाँ पड़े दीखे। इनमें तीन टाइफ़स के बीमार मिले और एक पाले का शिकार नज़र आया। कज्जाकों ने सुअर की चर्बी से थोड़ी-सी लपसी बनाई और ग्रिगोरी प्रोखोर और अकसीनिया को भी खाने की दावत दी। लेकिन अकसीनिया ने लपसी में हाथ लगाने से इन्कार कर दिया।

"क्यों, तुम्हें भूख नहीं है क्या?" प्रोखोर ने पूछा। पिछले कुछ दिनों में उसका व्यवहार इस औरत के प्रति काफ़ी बदल गया था और अब वह उससे बात करता था तो रूखे ढंग से मगर हमदर्दी के साथ करता था।

"मेरी तबीयत ठीक नहीं है।" अकसीनिया ने अपना रूमाल सिर पर डाला और बाहर अहाते में निकल गई।

ग्रोखोर ने ग्रिगोरी से पूछा—"ग्रकसीनिया कहीं बीमार तो नहीं पड़ गई ?"

"कौन जाने कि क्या बात है।" ग्रिगोरी ने हाथ की लगमी की प्लेट नीचे रखी ग्रौर उसके पीछे-पीछे बाहर ग्राया। ग्रकसीनिया उसे हाथ से सीना जकड़े, सीढ़ियों के पास खड़ी मिली। उसने उसके गले में हाथ डाला ग्रौर चिन्ता से पूछा—"क्या बात है, रानी ?"

"मेरी तबीयत ठीक नहीं है···सिर भी दर्द कर रहा है।"

"तो झोंपड़ी में चलो ग्रौर लेट रहो।"

"तुम चलो, मैं ग्रभी ग्राई।"

उसकी ग्रावाज़ मोटी ग्रौर बेसुरी लगी। हरकतों में सुस्ती घुली नज़र ग्राई। वह गरमी से दम घोटने वाले कमरे में घुसी तो ग्रिगोरी ने उसे बहुत गौर से देखा। उसके गाल तमतमाए लगे ग्रौर ग्राँखें जलती हुई। ग्रिगोरी का दिल बैठने लगा कि यह तो सचमुच बीमार हो गई। उसे पिछले दिन की बदन की कँपकँपी ग्रौर मितली की उसकी शिकायत का ध्यान ग्राया। साथ ही यह भी याद ग्राया कि ग्राज सवेरे जब वह सोकर जागी तो उसे इतना पसीना ग्रा रहा था ग्रौर घुंघराले बाल गरदन में यों चिपके हुए थे जैसे कि वह ग्रभी-ग्रभी नहाकर उठी हो। फिर ग्रकसीनिया सोती रही थी ग्रौर वह उसे देखता रहा था। उसके ग्राराम में खलल डालने के डर से उसे जगाने तक की हिम्मत उसकी न पड़ी थी।···

ग्रकसीनिया ने सफ़र की सारी दुश्वारियाँ बड़ी बहादुरी से सही थी। एक से ग्रधिक बार तो उसने खुद प्रोखोर का दिल बढ़ाया था। प्रोखोर जब-तब ही कहने लगता था—"शैतान ही जाने कि क्यों होती है यह लड़ाई ग्रौर किसके दिमाग की उपज है यह ! बस यह है कि दिन में गाड़ी पर सवार चलते जाग्रो···चलते जाग्रो।·· रात हो तो कहीं टिकने तक को ठौर न पाग्रो···फिर यह भी तो पता नहीं कि यह तूफान चलेगा कब तक।"

लेकिन उस दिन ग्रकसीनिया में वह ताजगी ग्रौर वह बात नजर न ग्राई। फिर दोनों सोए तो ग्रिगोरी को ऐसा लगा जैसे कि वह

रही हो। सो, धीरे से पूछा—"क्या बात है ?"

"तय है कि मैं बीमार हो गई हूँ···अब क्या होगा ? अब तुम छोड़ दोगे मुझे ?"

"कुछ नहीं···पागल हो तुम। मैं तुम्हें छोड़ क्यों दूंगा ? रोओ मत···शायद तुम्हें रास्ते मे सर्दी लग गई है और अपनी तरफ़ से तुम कुछ डर गई हो।"

"ग्रीशा मेरे, टाइफ़स हो गया है मुझे।"

"बेकार बकवास न करो। टाइफ़स का कहीं कोई निशान नजर नहीं आता। तुम्हारा सिर बिल्कुल ठंडा है—तुम्हें टाइफ़स कहाँ से हो जाएगा ?" ग्रिगोरी ने उसे तसल्ली बँधाई। लेकिन मन-ही-मन वह सच्चाई समझता रहा और चिन्ता करता रहा कि अगर यह बिल्कुल पड़ गई तो क्या होगा ?

"उफ़···इस तरह गाड़ी पर चलते जाना बड़ा ही दुश्वार है।" अकसीनिया ने ग्रिगोरी से बिल्कुल सटकर धीरे से कहा। "ज़रा देखो तो कि हर रात क्वार्टरों में कितने आदमी आकर एक साथ भर जाते हैं। ऐसे में जुएँ तो खा डालेंगी, ग्रीशा ! मर्दों के सामने रहने की वजह से मुझे अपनी सफ़ाई का मौका ही नहीं मिलता।···कल मैं दौड में गई और वहाँ मैंने कपड़े उतारे तो मुझे अपनी कमीज़ में इतनी जुएँ नजर आईं कि कुछ न पूछो। हे नीली छतरीवाले ! जुओं की ऐसी भरमार तो मैंने ज़िन्दगी में पहले कभी देखी ही नहीं। अब भी जब खयाल आता है तो जी मिचलाने लगता है, और कुछ भी खाने को मन नहीं करता।··· लेकिन तुमने देखा था कि जो बूढ़ा कल बेंच पर लेटा हुआ था, उसके कपड़ों में कितनी जुएँ थी ? कोट-भर में रेंग रही थीं।"

"छोड़ो उनका खयाल, क्या चीज़ मिली है तुम्हें दिलचस्पी लेने को ! जुएँ सिर्फ़ जुएँ ही होती हैं और कुछ नहीं। और, लड़ाई में हिस्सा लेते वक्त कोई उनकी गिनती नहीं करता।" ग्रिगोरी ने ज़रा खीझ से कहा।

"मेरे तो बदन-भर में खुजली हो रही है।"

"तुम्हारे क्या हर एक के बदन में खुजली हो रही है। लेकिन इस

वक्त इस मामले में हो भी क्या सकता है ? चलती चलो। येकातेरीनोदार पहुंचने पर जमकर सफ़ाई की जाएगी।"

"लेकिन साफ़ कपड़े तो हम पहन ही नहीं सकते।" अकसीनिया ने आह भरकर कहा—"ये जुएँ तो हम सबको खा जाएँगी, ग्रीशा !"

"अच्छा अब तुम सो जाम्रो। कल सुबह तड़के ही चल देना है।"

मगर ग्रिगोरी को घण्टों नींद नहीं आई, और अकसीनिया की भी पलकें नहीं झँपीं। अपना मुँह भेड़ की खाल से ढककर वह कई बार अन्दर-ही-अन्दर सिसक-सिसककर रोई। फिर बहुत देर तक करवटें बदलती रही और आहें भरती रही। उसे औंघाई सिर्फ़ तब आई जब ग्रिगोरी उसकी ओर मुड़ गया और उसने उसके गले में बाँहें डाल लीं। पर रात में किसी ने दरवाजा जोर-जोर से खटखटाया तो ग्रिगोरी की आँख खुल गई। कोई बाहर दरवाजा पीटता और चीखता सुन पड़ा—"ऐ, कोई है ···दरवाजा खोलो, वरना इसे तोड़ डालेंगे हम। घोड़े बेचकर सो रहे हो··· शैतान के बच्चो !"

घर का मालिक एक कज्जाक था—उम्र से सयाना, स्वभाव से गम्भीर। सो, वह उठकर बरसाती में आया और बोला—"कौन हो ? क्या चाहते हो ? अगर रात बिताने को जगह की तलाश कर रहे हो, तो अन्दर आने से कोई फ़ायदा नहीं। लोग ठसाठस भरे हुए हैं। करवटें बदलने की गुंजाइश नहीं है।"

"दरवाजा खोलो, मैं कहता हूँ तुमसे।" फिर बाहर से ज़ोर की आवाज़ आई और दूसरे ही क्षण आधे दर्जन कज्जाक दरवाजा तोड़कर सामने के कमरे में घुस आए।

"कौन लोग ठहरे हुए है यहाँ ?" उनमें से एक ने पूछा। पूछने वाला पाले के कारण लोहे की तरह काला लगा और उसके जमे हुए होंठ मुश्किल से हिलते दीखे।

"यहाँ बेघरबार लोग ठहरे हुए हैं—लेकिन, तुम लोग कौन हो ?"

पर, सवाल का जवाब दिए बिना एक कज्जाक सोने के कमरे में पहुँच गया और चिल्लाने लगा—"ऐ···सुनते हो तुम लोग···बड़े

आराम से टाँगें फैलाए पड़े हो। उठो…उठकर बैठो। जल्दी करो, वरना हम तुम्हें कायदे से झकझोरकर उठा देंगे।"

"कौन हो तुम…चीख रहे हो इस तरह?" ग्रिगोरी ने भर्राई आवाज से पूछा और उठ बैठा।

"मैं अभी बतलाता हूँ तुम्हें कि मैं कौन हूँ।" कज्जाक ग्रिगोरी की तरफ बढ़ा और पैराफीन के छोटे लैम्प की मद्धिम रोशनी में उसकी पिस्तौल की नली चमकी।

"काफी तेज मालूम होते हो तुम…" ग्रिगोरी ने इत्मीनान से कहा—"खैर, जरा देखें तो तुम्हारा यह खिलौना।" और फुर्ती से कज्जाक की कलाई अपने हाथ से जकड़कर इस तरह ऐंठी कि आदमी के मुँह से कराह निकल गई और उसने अपनी उँगलियाँ ढीली कर दीं। पिस्तौल खट से जमीन पर गिर गई। ग्रिगोरी ने कज्जाक को एक ओर को ढकेला, बिजली की रफ़्तार से पिस्तौल उठाकर अपनी जेब में रखी और शान्त भाव से बोला—"अब आओ, कुछ बातचीत हो जाए। किस रेजीमेंट के हो तुम? तुम्हारे जैसे तेज कितने आदमी हैं इस रेजीमेंट में?"

कज्जाक अपने आश्चर्य की भावना से उभरते हुए चीखा—"साथियो, इधर आना जरा।"

ग्रिगोरी दरवाजे के पास पहुँचा, ड्योढ़ी के पास रुका और चौखट से टिकते हुए बोला—"मैं १९वीं दोन रेजीमेंट का कमांडर हूँ… जरा चुप रहो और इस तरह चीखना बन्द करो। कौन कुत्ते की तरह भौंक रहा है उधर? खैर, मेरे कज्जाक साथियो, यह तूफ़ान तुम लोगों ने क्या मचा रखा है? किसको झकझोरने जा रहे हो तुम? किसने तुम्हें दिया इतना और ऐसा हक़? क्विक मार्च…चलो यहाँ से।"

"और, तुम इस तरह बलबला क्यों रहे हो?" एक कज्जाक चिल्लाया—"हमने बड़े-बड़े स्क्वैड्रन कमांडर देखे हैं। हम क्या रात अहाते में काटेंगे? यहाँ का हर आदमी बाहर निकल जाए। हमें हुक्म है कि हम हर बेघरबार आदमी को यहाँ से बाहर निकाल दें… समझे? और, तुम इस तरह गड़बड़ी कर रहे हो। हमारा पाला तुम्हारे

जैसे सैकड़ों लोगों से पहले भी पड़ा है।"

ग्रिगोरी सीधे बोलने वाले के पास जा धमका, भिचे हुए होंठों से बोला—"नहीं, मेरा जैसा आदमी तुमने पहले कभी नहीं देखा होगा। तुम चाहते हो कि तुम्हारे जैसे बेवकूफ को बीच से दो कर दूं मैं? अभी करके रख दूंगा। पीछे मत हो! यह पिस्तौल मेरी नहीं है। यह तो मैंने तुम्हारे एक साथी से छीनी है। लाओ लौटा दो मुझे यह··· और फ़ौरन एक-दो-तीन हो जाओ यहां से, वरना इस पर उतर आया तो तुम्हारे बदन पर खाल नहीं बचेगी।" उसने धीरे से उस कज्ज़ाक को मोड़ा और धक्का दे दिया।

"मैं इसे खाने-भर को दूं?" एक लम्बे-चौड़े कज्जाक ने अपना चेहरा ऊँट के बाल के टोपे से ढके-ही-ढके कुछ सोचते हुए कहा। वह ग्रिगोरी के पीछे खड़ा उसे ग़ौर से देखने लगा, और एक पैर से दूसरे का सहारा लेते समय उसके चमड़े के तल्लेवाले किरमिच के बूट चरमराए।

ग्रिगोरी अपने आपे में न रहा और उसकी ओर मुड़कर मुट्ठियाँ भींच लीं। लेकिन कज्ज़ाक ने अपना हाथ उठा दिया और मिन्नत के लहजे में बोला—"मेरी बात सुनिए हुजूर, या जो कहिए, मैं आपको कहूं। ज़रा ठहरिए, मुझ पर मुट्ठी न चलाइए। हम किसी तरह का कोई झगड़ा किया नहीं चाहते। लेकिन आज के इस ज़माने में कज्ज़ाकों को इस तरह धक्का न दीजिए। १९१७ की तरह बुरा वक्त एक बार फिर आ रहा है। अगर किसी 'मरता क्या न करता' वाले आदमी से आप टकरा गए, तो वह बीच से दो नहीं, पाँच टुकड़े कर देगा आपके। यह तो देखने से ही साफ़ है कि आपमें दम खासा है और आपकी बात से यह समझते देर नहीं लगती है कि कज्ज़ाक आप भी हैं। इसलिए, आप ज़रा सोच-समझकर मुंह खोलिए, वरना बेकार की मुसीबत मोल लीजिएगा।"

ग्रिगोरी ने जिस आदमी से पिस्तौल ज़बरदस्ती छीनी थी वह बिगड़ते हुए बोला—"वहाँ खड़े-खड़े तक़रीर ही मत झाड़ते रहो। आओ हम दूसरा दरवाज़ा देखें।" फिर ग्रिगोरी की बग़ल से गुज़रा तो उसे कनखी

से देखते हुए बोला—"हम तुम्हें परेशान नहीं करना चाहते अफ़सर। वैसे तो हम तुम्हारा बपतिस्मा कर सकते हैं।"

ग्रिगोरी ने नफ़रत से होंठ सिकोड़े और जवाब दिया—'खुद मेरा बपतिस्मा करोगे तुम ? जाओ-जाओ यहाँ से, वरना तुम्हारा पतलून नीचे आ रहेगा। यानी यह काम भी कर लेते हो तुम ? खैरियत यही समझो कि तुम्हारी पिस्तौल लौटा दी मैंने…तुम्हारे जैसे हाकिम को तो पिस्तौल नहीं, भेड़ों के बाल ठीक करने का धन्धा रखना चाहिए अपने पास।"

"आओ साथियो…इससे कहो कि अपनी ऐसी-तैसी में जाए! कीचड़ में ढेला ही क्यों फेंको कि कपड़ों पर छींटें पड़ें!" बातचीत में हिस्सा न लेने वाले एक दूसरे कज्ज़ाक ने हँसते हुए कहा।

कज्ज़ाक ठड से अपने जूते खट-खट करते, गालियाँ बकते बाहर जाने को मुड़े। ग्रिगोरी मकान-मालिक से सख्त आवाज़ में बोला—"यह दरवाज़ा अब दुबारा न खोलना… वैसे अगर ये लोग दुबारा कोई गड़बड़ी करें तो मुझे जगाना।"

इसी बीच वेरखने-चिर्सकोए के कज्ज़ाक इस शोरगुल से जाग गए, और लेटे-लेटे आपस में धीरे-धीरे बातें करने लगे। एक सयानी उम्र का कज्ज़ाक आह भरते हुए बोला—"क़ायदा-कानून, अदब-लिहाज़ तो जैसे दुनिया से उठ ही गया। लोग अफ़सर से यों बात करते हैं जैसे कि वह कोई ऐरा-गैरा हो। पुराने ज़माने में ऐसा कहाँ मुमकिन था! इतने में ही दलेल बोल दी जाती कि दम निकल जाता।"

"बात ? बात क्या है ? तुमने देखा नहीं कि वे लोग तो हाथापाई के लिए तैयार थे ? तुमने उस ऊट के टोपे वाले चिनार के ठूंठ की बातें सुनी थीं ? कहने लगा—'मैं इसे खाने-भर को दूं ?' कैसे गुंडे हो गए हैं ये तमाम लोग!"

"तुमने उन्हें इतनी आसानी से निकल कैसे जाने दिया, ग्रिगोरी-पैन्तलेयेविच ?" एक कज्ज़ाक ने पूछा।

ग्रिगोरी ने स्नेह भरे ढंग से मुस्कराते हुए बात सुनी, और अपने बरानकोट से अपने को ढकते हुए बोला—"हटाओ भी, तुम्हें उनसे क्या

लेना-देना ? वे साफ़ निकल गए और आमतौर से किसी की सुनेंगे भी नहीं। गिरोह बनाकर इधर-उधर घूमते-फिरते हैं। कोई उनके ऊपर है नहीं। अब कौन फ़ैसला करे उनका और कौन कमाण्डर बने उनका ? जो आदमी अपने को उनसे इक्कीस साबित करे, वही उनका कमाण्डर। मेरा खयाल नहीं है कि उनकी पूरी टुकड़ी में एक भी अफ़सर बाकी बच रहा है। मैंने तो स्क्वैड्रन की स्क्वैड्रन देखी है ऐसी···यतीमों के झुंड लगे हैं बिलकुल···खैर चलो, सोया जाए।"

अकसीनिया, ग्रिगोरी से धीरे से बोली—"लेकिन तुम उनके पास दौड़कर क्यों पहुंच गए, ग्रीशा ? ईसा के लिए, ऐसे लोगों से मत भिड़ जाया करो ! जंगली हैं···तुम्हें मार डाल सकते हैं।"

"तुम सो जाओ, अकसीनिया ! कल सवेरे जल्दी उठना है। अब तुम्हारी तबीयत कैसी है ? पहले से अच्छी है न ?"

"वैसी ही है।"

"सिर में दर्द अब भी है ?"

"हाँ है···मुझे तो लगता है कि अब मैं उठकर ही नहीं दूंगी···।"

ग्रिगोरी ने उसके माथे पर हाथ रखा और आह भरते हुए बोला—"माथा भट्ठी की तरह जल रहा है। खैर छोड़ो···फिक्र मत करो। तन्दुरुस्त औरत हो। सब-कुछ ठीक हो जाएगा।"

अकसीनिया ने कोई जवाब नहीं दिया। प्यास से उसका तालू सूखता रहा। उसने बावर्चीखाने में जाकर कई बार गरम-गरम पानी पिया और सर्दी और मिचली को दबाते हुए घोड़े के कपड़े पर लेट रही।

रात में चार टोलियाँ और भी सोने की जगह खोजती आईं। उन्होंने अपनी राइफ़लों के कुन्दों से दरवाज़ा खटखटाया, खिड़की की झिलमिलियाँ खोलीं, खिड़कियाँ खटखटाईं और गईं तभी जब मकान-मालिक ने ग्रिगोरी के कहने पर चिल्लाकर कहा—"चले जाओ यहाँ से···यहाँ ब्रिगेड के हैडक्वार्टर्स के लोग हैं।"

सुबह प्रोखोर और ग्रिगोरी ने घोड़े जोते। अकसीनिया ने जैसे-तैसे बाहर के कपड़े पहने और निकलकर अहाते में आई।

इस समय पूर्व में सूरज उगता रहा। चिमनियों से भूरा धुआँ

उमड़कर नीले आसमान में घुलता रहा। ऊपर उड़ता एक गुलाबी बादल नीचे के सूरज के प्रकाश से दमक उठा। बाड़ों और शेडों की छतों पर पाले की परत-पर-परत जमी दीखी। घोड़ों के बदन से भाप उठती रही।

ग्रिगोरी ने मदद देकर अकसीनिया को स्लेज में बिठाया। बोला—"तुम लेट जाओ···ज्यादा आराम मिलेगा।" अकसीनिया ने सिर हिलाया, ग्रिगोरी के पैर ढक देने पर उसकी ओर आभार से भरकर देखा और फिर आँखें मूंद लीं।···

दोपहर को खास सड़क से कोई दो वर्स्ट के फ़ासले पर जब स्लेज रुकी तो अकसीनिया उतरकर नीचे न आ सकी। ग्रिगोरी उसे हाथ पकड़कर घर के अन्दर ले गया, मकान-मालकिन के बिस्तर तैयार कर देने पर उसने उसे पलंग पर लिटा दिया और अकसीनिया के पीले चेहरे को देखते हुए बोला—"तबीयत बहुत खराब है, मेरी रानी ?"

अकसीनिया ने बरबस आँखें खोलीं, धुंधलाई पलकों से उसकी ओर देखा और फिर यों पड़ रही, जैसे कि आधा होश न रहा हो। ग्रिगोरी ने काँपते हाथों से सिर से रूमाल हटाया। औरत के गाल बर्फ-से ठंडे लगे, मगर माथा जलता रहा। कनपटियों पर जमे हुए बर्फ के दाने पसीने की शानदार बूंदों में घुल-मिल गए।

शाम होते-होते वह पूरी तरह अचेतन हो गई। लेकिन इस स्थिति के एक क्षण पहले उसने धीरे से पानी माँगा—"थोड़ा-सा पानी दे दो···नहीं तो पिघली हुई बर्फ ही दे दो।" और फिर, एक क्षण मौन रहने के बाद बोली—"ग्रीशा को बुला दो जरा।"

"मैं हूं न यहाँ···क्या चाहिए तुम्हें अकसीनिया रानी ?" ग्रिगोरी ने उसका हाथ अपने हाथ में लिया और उसे भद्दे ढंग से सहलाता रहा।

"मुझे छोड़कर चले मत जाना, मेरे राजा !"

"मैं तुम्हें छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगा···तुम क्यों सोचती हो कि मैं तुम्हें छोड़कर चला जाऊँगा।"

"अजनबी जगह है···यहाँ मत छोड़ना मुझे··· यहाँ तो मैं मर

जाऊँगी।"

प्रोखोर ने पानी दिया। अक्सीनिया ने बहुत ललककर तांबे के मग के सिरे पर खुश्क होंठ जमाए, थोड़ा-सा पानी पिया और कराह के साथ सिर दुबारा तकिए पर रख लिया। फिर, पांच मिनट के अन्दर वह जाने क्या-क्या बकने लगी कि समझना मुश्किल हो गया। फिर भी सिरहाने बैठे ग्रिगोरी ने थोड़े-से शब्द समझ ही लिए—"मुझे मुंह-हाथ धोना है···थोड़ा-सा नीला···जल्दी।" फिर उसके अस्पष्ट शब्द फुस-फुसाहट में बदल गए, तो प्रोखोर ने सिर हिलाया और ग्रिगोरी की भर्त्सना करते हुए बोला—"मैंने कहा था कि इसे इस बार साथ न ले चलो···अब क्या किया जाए? सजा है यह···ऊपर वाला जानता है कि सजा है यह! हम लोग रात क्या यहीं बिताएँगे?··· तुम बहरे हो गए या कुछ और हो गया है तुम्हें? मैं पूछता हूँ कि रात में हम यहीं रहेंगे क्या?"

ग्रिगोरी ने कोई जवाब नहीं दिया। वह गुड़ी-मुड़ी बना बैठा रहा और उसने क्षण-भर को भी अकसीनिया के चेहरे पर से निगाह नहीं हटाई। मेहमान-नवाज़, दया-मायावाली मकान-मालकिन ने आंखों से अकसीनिया की तरफ़ इशारा किया और प्रोखोर से धीरे से पूछा—"यह इसकी बीवी है? बाल-बच्चे हैं?"

"हाँ, बीवी है···बाल-बच्चे भी हैं···बाक़ी सब-कुछ है···किस्मत-भर साथ नहीं है।" प्रोखोर ने बुदबुदाकर जवाब दिया।

ग्रिगोरी अहाते में आया और स्लेज पर बैठकर सिगरेट-पर-सिगरेट फूंकता रहा। सोचता रहा—'अकसीनिया को यहीं, इसी गांव में छोड़ना पड़ेगा। इसे आगे ले चलने का मतलब मौत को दावत देना होगा।'

पूरी तस्वीर उसकी आंखों के आगे साफ़ हो उठी। वह उठकर अन्दर गया और अकसीनिया के पलंग के पास जा बैठा। प्रोखोर ने फिर पूछा—"रात हम यहीं बिताएँगे न?"

"हां···और, शायद कल भी यहीं रहेंगे।"

थोड़ी देर बाद ही घर का मालिक आ गया। आदमी का क़द

छोटा था। आँखें चालाकी से भरी और तेज थीं। एक पैर घुटने से कटा हुआ था।

सो, अपना लकड़ी का पैर खट-खट करता, गचकता वह मेज के पास आया, बाहर के कपड़े उतारे, प्रोखोर को कनखी से देखा और बोला—"सो, आसमान वाले ने मेहमान भेज दिए हैं हमारे यहां?··· कहाँ के हैं आप लोग?" और, जवाब का इन्तजार किए बिना, पत्नी को हुक्म देते हुए बोला—"जल्दी करो···मुझे जो कुछ हो, खाने को दो। पेट में चूहे कूद रहे हैं।"

फिर वह खाने पर टूट पड़ा और बहुत देर तक खाता रहा। उस बीच उसका चकमक दीदा कभी प्रोखोर पर जा टिका तो कभी अक्सीनिया के जड़-से शरीर पर। ग्रिगोरी ने सोने के कमरे से बाहर आकर उसका अभिवादन किया। मकान-मालिक ने जवाब में सिर हिलाया—"पीछे हट रहे हैं?"

"हाँ।"

"तो, लड़ाई से जी भर गया, सरकार?"

"थोड़ा-बहुत भर ही गया।"

"यह कौन है···बीवी है, आपकी?" अकसीनिया की ओर देखते हुए सिर हिलाकर उसने पूछा।

"हाँ।"

"तुमने इस औरत को पलंग पर क्यों सजा दिया है? अब हम लोग कहाँ सोएँगे?" मकान-मालिक असन्तोष से अपनी पत्नी की ओर मुड़ा।

"औरत बीमार है, वान्या···मैं क्या करती मुझे रहम आ गया।"

"रहम आ गया! सब पर रहम करना तो मुमकिन भी नहीं है। फिर, कितने लोग हैं जो गुज़र रहे हैं इधर से। यहाँ तो मेला हो जाएगा, हुजूर!"

ग्रिगोरी मेज़बान और उसकी बीवी की ओर मुड़ा और हाथ सीने पर रखते हुए बोला तो उसकी आवाज़ में आग्रह तो क्या, मिन्नत तक घुल उठी। बोला—"आप भले लोग हैं। मैं मुसीबत में पड़ गया हूँ। ईसा के लिए मेरी मदद करें। अगर हम इसे अपने साथ आगे ले जाएँगे

तो यह मर जाएगी। हम छोड़ देना चाहते हैं। मेहरबानी कर इसे यहीं रहने दें। देख-रेख के लिए आप जितना चाहेंगे, मैं आपको दूंगा। और ज़िन्दगी-भर आपका एहसान नहीं भूलूंगा···और कुछ न कहें···इतना रहम करें मुझ पर।"

इस पर पहले तो मकान-मालिक ने साफ़ इन्कार कर दिया। बोला—"बीमार की तीमारदारी के लिए वक़्त हमारे पास कहां! फिर, इसके लिए जगह भी तो नहीं है यहां।" लेकिन खाना खाने के बाद आखिरकार बोला—"खैर···यह तो है ही, किसी की देख-रेख कोई बिना कुछ लिए-दिए तो करेगा नहीं···है कि नहीं? मगर, आप हमें इस काम के लिए देंगे कितना? कितना दे सकते हैं आप?"

ग्रिगोरी ने पूरी रक़म अपनी जेब से निकाल ली और मकान-मालिक की तरफ़ बढ़ा दी। किसान ने ढीले-ढाले ढंग से दोन सरकार के नोटों का बंडल लिया, उंगलियों पर थूककर गिना और पूछा—"ज़ार के नोट नहीं हैं आपके पास?"

"नहीं।"

"तो, केरेंस्की के रूबल हैं? ये नोट तो खतरे से खाली नहीं हैं।"

"मेरे पास केरेंस्की के नोट नहीं हैं···यों आप कहें तो मैं अपना घोड़ा छोड़ दूं?"

आदमी ने कुछ देर तक सोचा और फिर विचारों में डूबे-डूबे ही बोला—"नहीं, घोड़ा नहीं चाहिए। वैसे तो हम किसानों की निगाहों में घोड़े की खास क़ीमत होती है, मगर आजकल के तूफ़ानी दिनों में इससे हमें कोई फ़ायदा नहीं। अगर श्वेत फ़ौजी न लेंगे तो लाल फ़ौजी हमसे इसे छीन लेंगे और हमारे हाथ कुछ न लगेगा। मेरे पास एक बेकाम घोड़ी है, पर इसे भी लोग न छोड़ेंगे और देखते-देखते अहाते से हांक ले जाएंगे।" फिर वह चुप हो गया और कुछ देर सोचने के बाद जैसे अपनी सफ़ाई देते हुए बोला—"यह न समझिएगा कि मैं कंजूस हूं···ऊपरवाला बचाए कंजूसी से! हुजूर आपकी बीबी एक महीना क्या, इसके बाद भी यहां रह सकती है, हमारा कोई नुकसान नहीं। लेकिन, इसे कभी यह देना होगा, कभी वह देना होगा। रोटी, दूध और अंडा वगैरा तो

चाहिए ही, और इस सबमें रक़म लगती है...है कि नहीं ? फिर इसके कपड़े धुलने चाहिए, खुद इसके नहाने-धोने का इन्तज़ाम होना चाहिए। और दुनिया-भर की दूसरी चीज़ें चाहिए।...मेरी बीवी के पास घर और फ़ार्म का काम रहता है। लेकिन उसे यह सब छोड़-छाड़कर इसकी देख रेख करनी होगी। यह सब-कुछ बहुत आसान नहीं है, इसलिए रक़म देने का बुरा न मानिए और हो सके तो इसमें कुछ और जोड़ दीजिए। मैं अपाहिज आदमी ठहरा। मेरा एक पैर ग़ायब है। आप खुद ही देख सकते हैं। मुझसे तो घर को किसी तरह की कोई आमदनी होती नहीं। हम तो ऊपरवाला जिन्हें यहाँ भेज देता है, उनके सहारे रहते हैं, और रोटी खाकर और क्वास पीकर ज़िन्दगी बसर करते हैं..."

ग्रिगोरी क्रोध से अन्दर-ही-अन्दर उबलते हुए बोला—"मैं तो किसी भी बात का बुरा नहीं मानता, मेहरबान ! जहाँ तक रक़म का सवाल है, मैंने अपने पास का एक-एक रूबल आपको दे दिया। मेरा बिना रूबलों के भी काम चल सकता है। अब आप मुझसे और क्या चाहते हैं?"

"तो, आपने अपने पास का एक-एक रूबल दे दिया मुझे ?" आदमी अविश्वास से हँसा—"आपकी तनख्वाह तो इतनी होगी कि आप चाहें तो अपने घोड़े की काठीवाला थैला भर लें नोटों से !"

ग्रिगोरी का चेहरा पीला पड़ गया। बोला—"आप सीधे-सीधे बतलाइए कि इस बीमार को आप अपने यहाँ रखेंगे या नहीं ?"

"नहीं...अगर आप इस तरह हिसाब-किताब करेंगे तो हम इसे यहाँ भला क्यों रखेंगे !" आदमी चोट खाई आवाज में बोला—"यह सब-कुछ इतना आसान तो है नहीं...आप तो खुद ही जानते हैं।...एक फ़ौजी अफ़सर की बीवी है...साथ तमाम पंचायत है...पड़ोसी जानने से तो रहेंगे नहीं। उस पर लाल फ़ौजी दरवाज़े पर दस्तक दे रहे हैं...उन्हें मालूम हो जाएगा तो वे हमारे गले पड़ जायेंगे। नहीं, आप इसे यहाँ से ले जाएँ। मगर, पूछ देखें, शायद कोई और पड़ोसी इसे अपने पास रखने को राज़ी हो जाए !" और, कलख के साथ उसने रूबल ग्रिगोरी को थमा दिए, तम्बाकू की थैली निकाली और अपने लिए एक सिगरेट रोल

करने लगा।

ग्रिगोरी ने अपना बरानकोट पहना और प्रोखोर से बोला—"तुम अकसीनिया के पास रहो···मैं जाता हूँ और जाकर कोई और ठिकाना तय करता हूँ।"

फिर, वह दरवाज़े की कुंडी खोलने लगा कि मालिक ने उसे रोका। बोला—"जरा ठहरिए···हुजूर! ऐसी जल्दी क्या है? आपका खयाल है कि इस बीमार औरत के लिए मेरे दिल में कोई दर्द नहीं? मुझे उसके लिए बहुत अफ़सोस है। इसके अलावा, मैं खुद फ़ौज में रहा हूँ, और आपकी जगह और ओहदे के लिए मेरे दिल में बड़ी इज्ज़त है।···लेकिन आप इस रक़म के साथ कुछ और नहीं जोड़ सकते क्या?"

इस पर प्रोखोर अपने ऊपर नियंत्रण न रख सका और नफ़रत से उसका चेहरा नीला हो उठा। गरजा—"अबे लँगड़े, इसमें हम और क्या बढ़ा सकते हैं? तेरे रंग-ढंग तो ऐसे हैं कि तेरा दूसरा पैर भी काट दिया जाना चाहिए। ग्रिगोरी-पैन्तेलियेविच, जरा मैं इसका बुखार उतार दूँ। फिर हम अकसीनिया को स्लेज में बैठा लेंगे और आगे चलेंगे। मौत ले जाए इस शैतान के बच्चे को!"

मकान-मालिक ने बिना बीच में बोले प्रोखोर की पूरी बात सुनी और फिर बोला—"कोई वजह नहीं कि आप मेरी इज्ज़त उतारें। यह तो सौदा तय करने की बात है ताकि आप भी खुश रहें और मैं भी खुश रहूँ। इसमें गुस्से से उबलने और लड़ने-झगड़ने की ऐसी कोई बात नहीं।···तुम इस तरह बौखला क्यों रहे हो, कज्ज़ाक? तुम्हारा खयाल है कि मैं और रूबल चाहता हूँ? इसका तो मुझे खयाल भी नहीं आया।···मेरा मतलब था कि शायद हुजूर के पास कोई फालतू राइफ़ल या रिवॉल्वर हो और वह आप हमें दे सकें। आपके लिए उसकी कोई ऐसी खास क़ीमत नहीं, लेकिन आज की इन मुसीबतों में हमारे लिए वह बहुत बड़ी चीज़ होगी···हमें तो अपने घर तक की रखवाली के लिए हथियार चाहिए। इसीलिए मैंने वह बात कही थी। बस, तो आप रूबल मुझे लौटा दें और एक राइफ़ल ऊपर से दे दें और सौदा खत्म। फिर हाथ मिलाकर जहाँ जाना हो चले जाइए और अपनी बीवी को पूरे

इत्मीनान से यहां छोड़ जाइए। हम उसे अपने घर का ही आदमी समझेंगे। उसकी पूरी देखरेख करेंगे, हर तरह फ़िक्र रखेंगे। मैं क़सम लेकर आपको इस बात का यक़ीन दिला सकता हूं।"

ग्रिगोरी ने प्रोखोर की तरफ़ देखा और शांत भाव से बोला—"मेरी राइफ़ल और कारतूस इसे दे दो···और फिर चलकर स्लेज जोतो।··· अकसीनिया यहीं रहेगी···ऊपरवाला गवाह है कि उसे साथ ले चलना मौत को दावत देना होगा।"

: २७ :

आगे आनेवाले दिन नीरस और वीरान हो उठे। ग्रिगोरी ने अकसीनियाको उस गांव में क्या छोड़ा, उसे किसी चीज में किसी तरह की कोई दिलचस्पी ही न रही। हर दिन सवेरे वह स्लेज पर सवार होता और बर्फ से मढ़े, स्तेपी मैदान में आगे-ही-आगे बढ़ता चला जाता। हर दिन शाम को वह ठहरने की कोई-न-कोई जगह खोजता पड़ रहता और सो जाता। इसी तरह दिन-पर-दिन बीतते गए। इस बीच मोर्चा बराबर, एकसी गति से दक्षिण की ओर बढ़ता रहा। पर, ग्रिगोरी के मन में उसके बारे में कुछ भी जानने की उत्सुकता न रही। उसने अनुभव किया कि सच्चाई और ईमानदारी से दुश्मन से लोहा लेने का जमाना लद गया···कज्जाकों में अब अपने ही जिलों का बचाव करने की ख्वाहिश नहीं रही···हर चीज से साफ़ है कि गोरी फ़ौजें अब अपना आखिरी दम लगा रही हैं···और जैसे दोन के इलाक़े में वे लाल फ़ौजों का आगे बढ़ना रोक नहीं सकीं, वैसे ही कुबान के इलाक़े में भी अब वे अपने क़दम जमा न सकेंगी···

लड़ाई खात्मे पर आने लगी। अन्त तेजी से यों पास आता रहा, जैसे कि ऐसा ही होना लाजिमी हो। कुबान के कज्जाक हजारों की संख्या में मोर्चा छोड़-छोड़कर अपने-अपने गांव-घरों की ओर उमड़ चले। दोन के कज्जाक तार-तार कर दिए गए। स्वयंसेवक सेना के सदस्यों की रगों का खून लड़ाई और टायफ़स ने सोख लिया और उनकी शक्ति य भी एक-चौथाई रह गई। इसलिए सफलता के पंखों पर सवार लाल

सेना की बाढ़ को सम्हालना और रोकना उनके बस की बात न रही।
शरणार्थियों के बीच अफ़वाहें सुन पड़ने लगीं कि जनरल देनीकिन ने
कुबान रादा के सदस्यों को जैसे गाजर-मूली की तरह काटकर फेंक दिया
है, उससे लोगों में नफ़रत दिन-दूनी, रात-चौगुनी बढ़ती जा रही है।···
कहा गया कि कुबान में स्वयंसेवक सेना के खिलाफ़ बग़ावत के बीज
बोए जा रहे हैं और बिना किसी तरह की बाधा डाले सोवियत सेना को
काकेशस का रास्ता देने के लिए लाल सेना के सदस्यों से बातचीत चल
रही है।···यह भी बार-बार सुनाई पड़ा कि कुबान और तेरेक के लोग
दोन के कज़्ज़ाकों और स्वयंसेवक सेना के जानी दुश्मन हो गए हैं और
दोन डिवीज़न और कुबान की कज़्ज़ाक पैदल फ़ौज के बीच मुठभेड़
कभी की हो चुकी है।···

ग्रिगोरी जहाँ भी ठहरा उसने आसपास के हर आदमी की बातचीत
बड़े ही ध्यान से सुनी और श्वेत सेनाओं की अन्तिम और अनिवार्य परा-
जय में उसका विश्वास बराबर बढ़ता गया। लेकिन इस पर भी उसे
कई बार आशा बँधी कि फूट की शिकार चरित्र की दृष्टि से टूटी हुई
और आपस में एक-दूसरे को फूटी आँखों न सुहानेवाली गोरी फ़ौजें
शायद इस मुसीबत के धक्के से मजबूर होकर एक हो जाएँ, नए सिरे
से दुश्मन के लोहे से लोहा बजाएँ और लाल फ़ौजों की फ़तहों को हार
में बदलकर उन्हें पीछे ठेल दें···! लेकिन रोस्तोव के समर्पण के बाद
उसकी यह उम्मीद टूट गई और उसने लोगों की इस तरह की बातों पर
यक़ीन करना बन्द कर दिया कि बताइस्क की घमासान लड़ाई के बाद
लाल फ़ौजें पीछे हटने लगी हैं···।

ग्रिगोरी अपने निकम्मेपन से ऊब उठा और उसने किसी-न-किसी
फ़ौजी टुकड़ी में शामिल हो जाना चाहा। लेकिन यह बात सुनते ही
प्रोखोर ने उसका पूरी शक्ति से विरोध किया। घृणा से भरकर बोला—
"तुम्हारा दिमाग़ बिलकुल खराब हो गया है, ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच!
उस दोज़ख में हम अपनी टाँगें कहाँ लटकाते फिरेंगे? ऊँट एक खास
करवट बैठ चुका है, यह बात तो तुम भी साफ़-साफ़ देख सकते हो।
इसलिए अब हम अपनी जानें बेकार में क्यों दें? वैसे भी यह बतलाओ

कि क्या हम दो आदमी ही कौन-सी ज़मीन उलट देंगे ? हमें कोई लड़ाई में तो जवरदस्ती झोंक रहा नहीं है। ऐसे में हमें तो जल्दी-से-जल्दी मुसीवत के रास्ते से हट जाना चाहिए। और तुम हो कि यह वकवास तुम्हारे दिमाग़ में आ रही है। नहीं, वस सयाने लोगों की तरह तुम भी अव जल्दी-से-जल्दी पीछे हटो। तुम और मैं यानी हम दोनों पिछले पांच वर्षों में काफी लड़ाई देख चुके···लड़ाई में हिस्सा ले चुके। इसीलिए एक वार अपनी जान छुड़ाई थी मैंने कि दुवारा फिर मोर्चे के नाम पर जिवह कर दिया जाऊँ! शुक्रिया! वड़ी मेहरवानी है तुम्हारी! मैं तो इस लड़ाई से इतना ऊव गया हूँ कि इसका खयाल आते ही हौलदिली होने लगती है। तुम चाहते हो तो हो जाओ शामिल किसी फ़ौजी टुकड़ी में। जहाँ तक मेरा सवाल है मै तो तुम्हारे साथ जाने से रहा। ऐसी नौवत आएगी तो मैं अस्पताल चला जाऊँगा। वहुत हुआ।"

ग्रिगोरी वहुत देर तक चुप रहा। फिर वोला—"ठीक है, जैसा तुम कहो। फ़िलहाल हम यहाँ से कुवान चलेंगे, और वहाँ जैसा कुछ होगा, देखा जाएगा।"

फिर प्रोखोर ने अपने खास तरीकों का परिचय दिया। जहाँ भी आवादी वाली जगह रास्ते में नज़र आई उसने डॉक्टर की खोज की और तमाम सूखी-गीली दवाएँ ले आया। लेकिन अपनी वीमारी को खतम करने की उसमें कोई विशेष इच्छा न दीखी और उसने एक पाउडर खाने के वाद वाक़ी सभी दवाएँ वर्फ़ पर फेंककर पैरों से रौंद दीं। ग्रिगोरी ने इस नाटक का कारण पूछा तो वोला—"मैं पूरी तरह ठीक होना नहीं चाहता, सिर्फ़ वीमारी को वढ़ने से रोकना चाहता हूँ। ऐसा रहेगा तो मौक़ा पड़ने पर कभी भी अपनी डॉक्टरी करा लूंगा और फ़ौज में वापस भेजे जाने से वच जाऊँगा···।"

वीच में किसी गाँव में एक दुनियादार कज़्ज़ाक ने उसकी वीमारी जानी तो उसे वत्तखों के पैरों से तैयार किया गया सत लेने की सलाह दी। इसके वाद प्रोखोर जिस नए गाँव में पहुँचा उसने सामने आने वाले पहले आदमी से पूछा—"सुनो, इस गाँव में लोग वत्तखें रखते हैं ?" इस पर आदमी अकसर ही ताज्जुव में पड़ गया और वोला—"आसपास

कहीं पानी नहीं है, इसलिए यहां वत्तख रखने का सवाल ही नहीं उठता···।" वस फिर क्या था, प्रोफ़ेसर नफ़रत से फुफकार उठा—"तुम लोग भी इन्सान कहते हो अपने को! तुम्हारी भी कोई जिन्दगी है! मेरा खयाल है कि तुमने जिन्दगी में कभी वत्तख की आवाज तक न सुनी होगी! स्तेपी में रहने वाले काठ के उल्लू हो तुम लोग!···" फिर ग्रिगोरी की तरफ़ मुड़ा, "कोई पादरी गुजर गया मालूम होती है हमारे रास्ते से। तक़दीर साथ दे नहीं रही। यहां वत्तखें होतीं तो मैं मुंहमांगी क़ीमत अदा कर एक वत्तख खरीद लेता, या ऐसे न मिलती तो उसे उड़ा देता। फिर···फिर तो मेरा हिसाब-किताब बिलकुल ठीक हो जाता। इधर वीमारी कुछ ज्यादा परेशान करने लगी है। पहले तो रास्ते में पलकें भी न झपा पाने के बावजूद मैं इसे बराबर टालता रहा। मगर अब तो जैसे उसी की सजा मिल रही है। स्लेज में बैठने में भी तकलीफ़ होती है।"

पर ग्रिगोरी से हमदर्दी का एक शब्द न सुनकर वह चुप हो गया और घंटों होंठ सिए-ही-सिए स्लेज हांकता रहा।···

इस तरह एक जगह से दूसरी और दूसरी से तीसरी जगह जाते-जाते जो दिन बीते वे बहुत ही लम्बे और थकान से भरे लगे। लेकिन जाड़े की रातें तो उनसे भी आगे निकल गईं, और काटे नहीं कटती लगीं, पर ग्रिगोरी को अपने अतीत और वर्तमान के विषय में सोचने के लिए सहज ही बड़ा समय मिला। वह कई-कई घंटों तक अपनी अजीबो-गरीब उल्टी-सीधी जिन्दगी को लेकर उलझता और पुरानी यादें ताजा करता रहा। वह मन को घोटने वाले स्तेपी की बर्फ़ पर निगाहें जमाये स्लेज में बैठा होता या लोगों से ठसाठस भरे किसी कमरे में आंखें बन्द कर दांत भींचकर लेटा होता, तो उसे या तो एक छोटे-से अनजाने गांव में पीछे छूट गई, बेहोश अकसीनिया का ध्यान आता या तातारस्की में रह गए अपने घर के लोगों का खयाल आता। दोन क्षेत्र में सोवियत-शासन की स्थापना के समाचार से वह एकदम चिंतित हो उठता और बार-बार अपने-आपसे पूछता—"मेरी वजह से लाल फ़ौजी मेरी मां या दून्या को सताएंगे तो नहीं?···" फिर वह अपने मन को धीरज

बँधाता और बार-बार राह में सुनी बातें दोहराता कि लाल सेना बड़े ही क़ायदे से मार्च करती है और जिन कज़्ज़ाक ज़िलों पर उसका हक़ हो जाता है, वहाँ के लोगों के साथ बहुत ही अच्छा बरताव करती है। धीरे-धीरे उसका मन हलका हो उठता और अपने व्यवहार के लिए अपनी माँ के ज़िम्मेदार ठहराए जाने की बात उसे अकल्पनीय, पाशविक और बिलकुल अनुचित लगने लगती। फिर जब उसे बच्चों की याद आती तो उसका दिल क्षण-भर को कचोट उठता, और लगता कि हो-न-हो, उन्हें भी टायफ़स हो जाएगा। लेकिन बच्चों के लिए इतना मोह होने पर भी वह अनुभव करता कि नताल्या की मौत ने जितना झकझोरा उतना अब कोई भी दूसरा सदमा उसे झकझोर नहीं सकता···

घोड़ों को थोड़ा आराम देने के खयाल से ग्रिगोरी और प्रोख़ोर चार दिन तक साल्स की एक झोंपड़ी में रहे। इस बीच एक से अधिक बार उन्होंने आगे के कार्यक्रम पर विचार किया। इसके पहले उनके वहाँ पहुँचते ही प्रोख़ोर ने पूछा—"हमारी फ़ौजें कुबान में मोर्चे सम्हालेंगी या काकेशिया चली जाएँगी ? क्या खयाल है तुम्हारा ?"

"मैं नहीं जानता···मगर इससे तुम्हारे लिए क्या फ़र्क़ पड़ेगा ?"

"क्या शानदार बात कही है ! अरे फ़र्क़ क्यों नहीं पड़ेगा···? ज़रूर पड़ेगा। इस रफ़्तार से तो लाल फ़ौजी हमें हाँककर कहीं-का-कहीं, शायद तुर्कों की रियासत के किसी हिस्से में पहुँचा देंगे···और तब···"

"मैं देनीकिन नहीं हूँ। मुझसे न पूछो कि वे हमें हाँककर कहाँ पहुँचा देंगे और कहाँ नहीं।" ग्रिगोरी ने जवाब दिया।

मैं तो यह सवाल तुमसे इसलिए पूछ रहा हूँ कि मैंने एक अफ़वाह सुनी है। अफ़वाह यह है कि कुबान नदी पर वे अपने बचाव के लिए फिर क़दम जमाएँगे और वसन्त आने पर घर के लिए रवाना होंगे।"

"कौन बचाव के लिए क़दम जमाएगा ?" ग्रिगोरी ने मज़ाक बनाते हुए पूछा।

"···वही अपने कज़्ज़ाक और कैडेट···और कौन ?"

"बकवास कर रहे हो तुम ! देखते नहीं कि चारों तरफ़ हो क्या रहा है ? हर आदमी जल्दी-से-जल्दी खिसक निकलने की कोशिश में

है। ऐसे में बचाव के लिए क़दम भला कौन जमाएगा ?"

"साहबजादे, यह सब तो मैं अच्छी तरह देख रहा हूँ, और समझ भी रहा हूँ। मगर इस पर भी यकीन नहीं जमता।" प्रोखोर ने आह भरी—"मगर मान लो कि सवाल सामने आ जाए जहाज में बैठकर किसी दूसरे मुल्क को जाने का और वहाँ केकड़े की तरह रेंगने का, तो क्या फ़ैसला करोगे तुम ? जाओगे ?"

"पहले तुम बतलाओ कि तुम क्या करोगे ?"

"मेरी हालत तो यह है कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। तुम जहाँ भी जाओगे मैं जाऊँगा। सभी लोग जाने लगेंगे तो एक अकेला मैं ही तो छोड़ नहीं दिया जाऊँगा···?"

"बिलकुल यही बात मैं सोच रहा था। भेड़ों के बाड़े में एक बार घुस-भर जाओ फिर तो जो हाल दूसरी भेड़ों का वही तुम्हारा !"

"भेड़ों की क्या ? उनके पास दिमाग़ तो होता नहीं। वे तो कहीं भी जा सकती हैं। नहीं, यह बेकार बात है। बात अक्ल की करो।"

"अच्छा, बेकार सिर न धुनो। वहाँ पहुँचेंगे तो देखी जाएगी। यहीं से मुसीबतों का हिसाब-किताब क्यों करना चाहते हो ?"

"ठीक ऐसा ही सही···अब तुमसे मैं कुछ नहीं पूछूँगा।" प्रोखोर ने ग्रिगोरी के प्रस्ताव का समर्थन किया।

लेकिन अगले दिन वे घोड़ों को लेने गए तो उसने बातचीत फिर शुरू की। "तुमने हरे फ़ौजियों के बारे में सुना कुछ ?" एक हंगे को देखने का बहाना करते हुए उसने यों ही पूछा।

"हाँ···क्या खबर है उनके बारे में ?"

"मगर यह हरे फ़ौजी उग कहाँ से आए ? किसकी तरफ़ हैं वे ?"

"लाल फ़ौजों की तरफ़।"

"लेकिन उनको हरा क्यों कहा जाता है ?"

"शैतान ही जाने। शायद इसलिए कि वे जंगल में छिपे रहते हैं।"

"क्या खयाल है ? हम दोनों उनकी फ़ौजों में शामिल हो जाएँ ?" प्रोखोर ने बहुत देर तक सोचने के बाद सकुचते हुए कहा।

"मेरी तो ऐसी कोई खास तबीयत नहीं।"

"लेकिन हरे फौजियों का साथ देने के अलावा जल्दी घर पहुंचने का कोई दूसरा रास्ता ही नहीं है क्या ? मेरे लिए सभी बराबर हैं। शैतान के बच्चे हरे हों, नीले हों, अंडे की तरह पीले हों…बस मैं तो एक बात चाहता हूँ कि वे लड़ाई के खिलाफ हों और फ़ौजियों को घर जाने की इजाज़त दे दें…।"

"तो, थोड़ा इन्तजार करो…शायद आगे-पीछे ऐसा कुछ मुमकिन हो ही जाए।" ग्रिगोरी ने सलाह-सी दी।

जनवरी के अन्त में एक दिन धुंध छाई रही और बर्फ़ बाक़ायदा गलती रही कि ग्रिगोरी और प्रोखोर बेलयाग्लिना नाम के गांव में पहुंचे। वहाँ कोई पन्द्रह हज़ार शरणार्थियों की भीड़ नज़र आई और उनमें से आधे टाइफ़स के रोगी मिले। कज्ज़ाक छोटे अंग्रेजी ओवरकोट, छोटी भेड़ की खालें और लम्बे काकेशियाई कोट पहने गलियों में जहाँ-तहाँ ठहरने की जगह खोजते दीखे। घुड़सवार और स्लेजें सभी दिशाओं में आती-जाती रहीं। हर अहाते में नांदों के पास दर्जनों हड्डी-हड्डी रह गए घोड़े खड़े पुआल चबाते रहे। सड़कों और किनारे की गलियों में स्लेजें, फ़ौजी गाड़ियां और लड़ाई के सामान से भरे बक्से अपनी रक्षा अपने-आप करते रहे।…सड़कों से गुज़रते समय प्रोखोर ने बाड़ से बंधे एक कुम्मैत घोड़े को बहुत ग़ौर से देखा और बोला—"अरे यह तो अन्द्रेइ का घोड़ा मालूम होता है। इसका मतलब यह है कि हमारी तातारस्की के लोग यहाँ है…।" इसके साथ ही वह स्लेज से नीचे कूद पड़ा और पता लगाने के लिए सामने के घर में घुस गया।

कुछ ही क्षणों बाद प्रोखोर का चचेरा भाई और पड़ोसी अन्द्रेइ-तोपोल्स्कोव अपना बरानकोट कन्धे पर लटकाए झोंपड़ी से बाहर आया, प्रोखोर के साथ गम्भीर भाव से स्लेज की ओर बढ़ा और अपना कालिख से सना हाथ ग्रिगोरी की तरफ़ बढ़ाया।

ग्रिगोरी ने पूछा—"गांव के और लोग भी हैं तुम्हारे साथ ?"

"हम सब साथ ही दुख-सुख झेल रहे हैं।"

"खैर, सफ़र कैसा रहा ?"

"हर आम सफ़र की तरह…जहाँ भी रात को पड़ाव डाला वहीं

अपने साथ के कुछ लोगों और घोड़ों को छोड़ना पड़ा···।"

"मेरे पापा तो ठीक-ठाक और सही-सलामत हैं ?"

तोपोल्स्कोव ने ग्रिगोरी को नजर गड़ाकर देखा और आह भरकर बोला—"बहुत बुरी खबर है, ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच···बहुत बुरी खबर है···अपने पापा की रूह के लिए ऊपर वाले से मिन्नत करो—वे कल शाम को आसमान वाले को प्यारे हो गए···कल शाम को मर गए···"

"दफ़न कर दिया गया ?" ग्रिगोरी ने पूछा। वह पीला पड़ गया।

"मैं नहीं जानता···तब से मैं उधर गया नहीं···मैं तुम्हें घर दिखला दूंगा···दायाँ पकड़े चले जाओ···नुक्कड़ से चौथा मकान है··· दाईं तरफ़।"

प्रोखोर ने घोड़े हाँके और फिर टीन की चादर की छत वाले बड़े मकान के बाहर, बाड़ के पास घोड़े रोके। लेकिन तोपोल्स्कोव ने स्लेज अहाते में ले जाने की सलाह दी।

"यहाँ भी काफ़ी लोग हैं···कोई बीस···लेकिन तुम्हें जगह कहीं-न-कहीं मिल जाएगी।" उसने स्लेज से कूदकर फाटक खोलते हुए कहा।

सबसे पहले ग्रिगोरी उस तवे से तचते कमरे में घुसा, तो गाँव के अपने जान-पहचानी उसे लेटे या एक-दूसरे से सटकर फर्श पर बैठे मिले। कुछ जूतों या घोड़ों के साजों की मरम्मत करते दीखे। पैन्तेली के साथ आने वाले बेस्खलेबनोव-सहित तीन आदमी मेज़ पर शोरवा खाते नज़र आए। ग्रिगोरी को देखते ही कज़्ज़ाक उठ खड़े हुए और उसके अभिवादन के उत्तर में उन्होंने उसका एक साथ अभिवादन किया।

"मेरे पापा कहाँ हैं ?" उसने भेड़ की खाल की अपनी टोपी उतारते और कमरे के चारों ओर निगाह दौड़ाते हुए कहा।

"पैन्तेली प्रोकोफ़ियेविच···नहीं रहे !" बेस्खलेबनोव ने शांत भाव से जवाब दिया। उसने हाथ का चम्मच नीचे रख दिया। मुंह कोट की आस्तीन से पोंछा और क्रॉस बनाया। "वे कल रात गुजर गए···ऊपरवाला उन्हें अपने रहम के साए में रखे !"

"मुझे पता है···उन्हें दफ़न कर दिया गया ?"

"अभी नहीं। हम आज उन्हें दफन करने वाले थे, पर अभी तक उनकी लाश यहीं है। सोने के कमरे में रखी है। वहाँ काफ़ी तरी है। इस तरफ···" वेस्खलेवनोव ने बग़ल के कमरे का दरवाज़ा खोला और जैसे कि क्षमा माँगते हुए बोला—"कज़्ज़ाकों ने एक ही कमरे में रहना नहीं चाहा···बड़ी बदबू है···फिर यहाँ वैसे भी बेहतर है··· यह कमरा गरम नहीं रखा गया है।"

लम्बे-चौड़े कमरे में हर तरफ़ से सनई के बीज और चुहियों की गंध उठती मिली। एक बेंच पर आटे और मक्खन के पीपे रखे दीखे। पैन्तेली-प्रोकोफ़ियेविच का शव कमरे के बीचों-बीच घोड़े वाले कपड़े पर रखा नजर आया। ग्रिगोरी ने वेस्खलेवनोव को खींचकर एक तरफ़ किया और कमरे में जाकर अपने पिता के पास खड़ा हो गया।

वेस्खलेवनोव ने धीमे स्वर में कहा—"तुम्हारे पापा दो हफ़्ते बीमार रहे। लौटते वक़्त मेचेत्का में उन्हें टायफ़स हो गया और यहीं उनकी आँखें हमेशा-हमेशा के लिए मुंद गईं···यह है हमारी ज़िन्दगी !"

ग्रिगोरी ने झुककर अपने पिता के चेहरे पर निगाह गड़ाई। चेहरा बीमारी के कारण काफ़ी बदला हुआ, अजीब और अनपहचाना-सा लगा।···पैन्तेली के पीले, बैठे हुए गालों पर सफ़ेद दाढ़ी उग आई थी। मूँछ चेहरे पर झूल आई थी। आँखें अधमुंदी थीं और आँखों की चमक खत्म हो गई थी। बूढे के निचले जबड़े के चारों तरफ़ लाल रूमाल बँधा हुआ था और रूमाल की लाली के कारण उसकी दाढ़ी के घुंघराले बाल और भी सफ़ेद और रुपहले लग रहे थे।

अपने पिता का चेहरा एक बार जी-भर देख लेने और उस मनोहर छवि को सदा-सदा के लिए अपने अन्तर में अंकित कर लेने के लिए ग्रिगोरी झुका, तो भय और घिन से सिर से पैर तक काँप उठा। पैन्तेली के सफ़ेद, मोम-से चेहरे, आँखों के गढ़ों और बैठे हुए गालों पर जुएँ-ही-जुएँ रेंगती रहीं। उन्होने उसके चेहरे पर एक जीता-

जागता, चलता-फिरता पर्दा-सा डाल रखा। वे दाढ़ी में जमा रहीं, बरौनियों में चलती-फिरती रहीं और लम्बी, नीली जैकेट के कड़े कॉलर की पट्टी के पास बहुत बड़ी गिनती में घिरी रहीं।

ग्रिगोरी ने दो दूसरे कज्जाकों की सहायता से जमी हुई, लोहे-सी कड़ी चिकनी ज़मीन गदालों से खोदकर एक क़ब्र तैयार की। प्रोखोर ने लकड़ी के टुकड़ों से एक खुरदरा-सा ताबूत बनाया। फिर दिन ढलते-ढलते उन्होंने पेन्तेली को बाहर निकाला और स्तावरोपोल की धरती को सौंप दिया। और, एक घंटे बाद, गाँव में दीये टिमटिमाए कि ग्रिगोरी स्लेज पर सवार होकर वेलयाग्लिना से बाहर निकला और नोवोपोकरोव्स्काया की दिशा में बढ़ चला।

मगर, कोरेनोव्स्की गाँव में वह खुद बीमार हो गया। प्रोखोर ने आधा दिन किसी डॉक्टर की तलाश की। तब कहीं उसकी मुलाकात नशे में अधमस्त फ़ौजी सर्जन से हुई। वह भी बड़ी मुश्किल से झोंपड़ी तक आने को राजी हुआ। उसने अपना बरानकोट उतारे बिना ही ग्रिगोरी की डॉक्टरी परीक्षा की, नब्ज़ देखी और विश्वास के साथ बोला—"टायफ़स है···मेरी सलाह मानिए, कैप्टन, तो आगे बढ़ने का खयाल छोड़ दीजिए, वरना रास्ते में ही खत्म हो जाइयेगा।"

"यानी यहीं रुकूँ और लाल फ़ौजियों का इन्तजार करूँ?" ग्रिगोरी मुस्कराया।

"खैर···अभी तो वे लोग यहाँ से काफ़ी दूर हैं।"

"लेकिन, इससे क्या, आज दूर हैं, कल पास आ जाएँगे।"

"इस बात में मुझे कोई शक नहीं। लेकिन, आपके लिए ज्यादा अच्छा यही होगा कि आप यहीं बने रहें। आगे बढ़कर मौत का सामना करने और यहाँ बने रहकर लाल फ़ौजियों का इन्तज़ार करने के बीच अगर मुझे एक का चुनाव करना हो तो मैं तो दूसरा फ़ैसला ही मानूँ।"

"नहीं, जैसे भी होगा, मैं यहाँ से चला जाऊँगा।" ग्रिगोरी ने हठ से कहा और अपनी ट्यूनिक पहनी—"कुछ दवा दे दें आप··· देंगे न?"

"जाइए···अगर आप चाहते हैं तो जाइए। आपका मामला है, आप ही तय कीजिए। मेरा काम सलाह देना था, सो मैंने दे दी। अब आप जानें और आपका काम जाने। जहाँ तक दवा का सवाल है, सबसे बड़ी दवा होगी आराम और देख-रेख। मैं दवा का पर्चा लिखकर तो आपको दे सकता हूँ, पर दवा तैयार कहाँ से होगी! केमिस्ट यहाँ से कही और चला गया है, और मेरे पास है सिर्फ़ क्लोरोफ़ार्म आयोडीन और सर्जिकल-स्पिरिट!"

"तो, मुझे थोड़ी-सी स्पिरिट ही दे दीजिए।"

"बड़ी खुशी से ले लीजिए···मगर इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ेगा। आप रास्ते मे ही खत्म हो जाएँगे। फ़िलहाल, अपना अर्दली मेरे साथ भेज दीजिए। मैं एक हजार ग्राम स्पिरिट अभी-अभी भेजे देता हूँ। मैं तबीयत से आदमी भला हूँ······" डॉक्टर ने सैल्यूट किया और लड़खड़ाते हुए बाहर निकल आया।

प्रोखोर दवा ले आया, किसी की दो घोड़ों वाली गाड़ी कहीं से उड़ा लाया, घोड़े जोते और कमरे में आते हुए गम्भीरता से बोला—"गाड़ी तैयार है, सरकार!"

और फिर उदासी-भरे दिन एक-एक उगने और ढलने लगे।···

कुबान में काकेशिया की तलहटी से वसंत हड़बड़ाता हुआ आता लगा। स्तेपी की बर्फ़ सहसा ही पिघल चली और जहाँ-तहाँ जमीन के काले चप्पे उभर आए। नद-नदियाँ रुपहले स्वरों में गाने लगीं। सड़क पर बर्फ़ के गढ़े-गढ़ैया चमचमाने लगे। दूर का नीलम चमककर बहार का नाम दोहराने लगा, और कुबान का विस्तृत आकाश और गहरा, और नीला और-और गरम हो उठा।

दो दिन के अन्दर-अन्दर जाड़े के गेहूँ ने बर्फ़ की चादर उतार फेंकी और धूप में अपना बदन सुखाने लगा।···

घोड़े दलदल से भरी सड़क पर फचफच करते हुए आगे बढ़े। कही कीचड़ में धँस गए तो कहीं पानी मे फँस गए। उन्हें अपने पुट्ठों पर बड़ा जोर देना पड़ा। वे पसीने से नहा उठे और भाप हवा में उड़ने लगी। प्रोखोर ने सोच-समझकर उनकी दुमें बाँध दीं, अफ़सर

गाड़ी से उतर पड़ा और बग़ल-बग़ल चलता रहा। इस सिलसिले में कई बार उसके पैर दलदल में फँसकर घिसट गए और वह मन-ही-मन बुदबुदा उठा—"यह तारकोल है, कीचड़ नहीं···ऊपरवाला गवाह है! ऐसे में रास्ते-भर घोड़े पसीने-पसीने होंगे।"

ग्रिगोरी लिपटा-लिपटाया, चुपचाप गाड़ी में पड़ा रहा। उसे रह-रहकर कँपकँपी छूटती रही। दूसरी तरफ़ मुँह किए हुए सफ़र करना प्रोखोर के लिए दुश्वार हो उठा। उसने बीच-बीच में ग्रिगोरी के पैर या आस्तीन में हाथ लगाया और बोला—"यहाँ हद का दलदल है! ज़रा नीचे उतरकर चलो तो मालूम हो! क्या शानदार आदमी हो! और कुछ न हुआ तो बीमारी का ही तोता पाल लिया!"

"शैतान ले जाए तुम्हें!" ग्रिगोरी ने कहा, पर इतने धीरे से कहा कि सुनाई ही न पड़ा।

फिर रास्ते में जो भी कहीं कोई मिला, प्रोखोर ने उसी से पूछा—"आगे कीचड़ कुछ ज्यादा है, या ऐसा ही है?"

राहगीर जवाब में हँसा और एकाध मज़ाक की बातें कहकर आगे बढ़ गया। प्रोखोर को किसी जीते-जागते आदमी से एकाध बातें कर खुशी हुई। फिर वह कुछ देर तक चुपचाप चलता रहा। बीच-बीच में घोड़े रोक देता और अपने माथे पर से झलकती पसीने की बड़ी-बड़ी बूँदें पोंछ डालता। कई बार घुड़सवार बग़ल से गुज़रे तो प्रोखोर का मन हुआ कि उन्हें रोक ले, उनसे एक-दो बातें कर ले। पूछ ले—"क्यों भाई, कहाँ से आ रहे हो और कहाँ जा रहे हो?"···तो, उसने यह सब किया और आखिर में कहा—"आगे बढ़ना वक़्त बरबाद करना है···घोड़े पर सवार होकर जाना तो मुमकिन ही नहीं है···तुम पूछोगे—क्यों? इसलिए कि उधर से आने वालों का कहना है कि वहाँ दलदल बड़ा गहरा है···घोड़ों की पीठ तक का डुबान है। गाड़ी के पहिये घूम नहीं पाते···और छोटे कद के पैदल चलने वाले लोग लुढ़कते है तो सड़क पर ही डूब जाते हैं। वहाँ कोई दुमकटी कुतिया पड़ी रहे तो पड़ी रहे, हम-तुम तो पड़े रह नहीं सकते। फिर सवाल होता है कि हम लोग जान-बूझकर उधर जा ही क्यों रहे हैं आखिर? इसलिए

कि हमारे पास कोई और काम नहीं है। मैं तो एक बीमार पादरी को लिये जा रहा हूँ···साफ़ है कि लाल फ़ौजियों की और उसकी पटकी आपस में बैठने से रही···"

लेकिन ज्यादातर घुड़सवारों ने हँसकर उसे कुछ बुरा-भला कहा और अपने घोड़े आगे बढ़ा दिए। वैसे कुछ ऐसे भी निकले जो ठिठके जिन्होंने उसे घूरकर देखा और उसका खासा अपमान किया। बोले—"यानी बेवकूफ़ दोन से भी पीछे हट रहे है? तुम्हारे ज़िले के सब लोग तुम्हारे जैसे ही हैं क्या?"

···कुबान का एक कज्ज़ाक अपने गिरोह से पिछड़ गया था। प्रोखोर ने देखा तो उसे भी रोकना चाहा, और उससे भी दो-चार बातें करनी चाहीं। पर वह एकदम बिगड़ गया, आपे से बाहर हो गया, और उसने उसके चेहरे पर भरपूर चाबुक जमाना चाहा। मगर प्रोखोर उछलकर खड़ा हो गया और नीचे से कारबाइन बन्दूक खींचकर उसने उसके घुटनों पर टिका दी। कुबान का कज्ज़ाक भद्दी-भद्दी गालियाँ देता, अपना घोड़ा दौड़ाता भागा। प्रोखोर ने हँसी के ठहाके लगाते हुए चिल्लाकर कहा—"यह कोई ज़ारीत्सिन तो है नहीं कि तू मकई के खेत में छिप रहेगा। गधा कहीं का···उल्लू का पट्ठा। ज़रा लौटकर आ तो बतला दूँ तुझे। अबे अपना चारजामा तो समेट ले वरना कीचड़ में लथड़ता फिरेगा। भाग दिया···मुर्गी के बच्चों से पाला पड़ा होगा अब तक। हिजड़ा कहीं का। मेरे पास कोई कारतूस गन्दा करने को नहीं है वरना तुझे अभी उड़ा देता। तेरा चाबुक गिर गया··· सुनता है बे?"

प्रोखोर अकेलेपन और बेकारी से आधा सनक गया और अपने ढंग से दिलबहलाव का सरंजाम करने लगा।···

ग्रिगोरी बीमारी के पहले दिन से ही जैसे किसी स्वप्न-देश में था रहा। बीच-बीच में कई बार बेहोश हुआ और फिर होश में आ गया। एक बार बहुत देर तक अचेतन रहने के बाद होश में आया तो प्रोखोर उसके ऊपर झुका, और उसकी धुंधलाई आँखों में हमदर्दी से आँखें डालते हुए बोला—"अभी तक जिन्दा हो तुम?"

सूरज आसमान में दमकता रहा। गहरे रंग के पंखों वाले कलहंस पूरी आवाज़ से किकियाते हुए आसमान के नील सागर की गहराई थाहते रहे। वे उड़ते-उड़ते कभी एक जगह जमा हो गए तो कभी उन्होंने टूटी-फूटी मखमली काली रेखा खींच दी। उष्ण धरती के वक्ष पर जहाँ-तहाँ नई घास के कल्ले फूट आए। उसकी सोंधी-सोंधी उसाँस वातावरण में एक बेहोशी-सी घोलने लगी।

ऐसे में ग्रिगोरी ने वसन्त के जीवनदायी मंद-पवन से साँसें खींचीं। प्रोखोर की आवाज़ नाम-भर को ही उसके कानों तक पहुँची। आसपास की हर चीज उसे काल्पनिक और बहुत दूर की लगी। पीछे कहीं दूर, बहुत दूर तोपें गरजीं, और उनके धड़ाके पास आते-आते काफ़ी हलके पड़ गए। गाड़ी के लोहे की हालवाले पहिये कहीं पास ही, एक लय-तान के साथ खड़खड़ाए, घोड़े हींसे-हिनहिनाए और इन्सान की बोली गूँजी। ग्रिगोरी को यह सब किसी दूसरी दुनिया से आता लगा। उसने अपनी पूरी ताक़त लगाकर प्रोखोर की आवाज़ सुनी। बात समझी तो लगा कि वह पूछ रहा है—"थोड़ा-सा दूध ले आऊँ···पियोगे?"

फिर ग्रिगोरी ने जैसे-तैसे अपनी जीभ चलाते हुए खुश्क होंठ चाटे और अनुभव किया कि कोई गाढ़ा तरल पदार्थ मुँह में डाला जा रहा है। जायका ताज़ा होने पर भी जाना-समझा लगा। मगर थोड़ी-सी चुस्कियों के बाद उसने दाँत भींच लिए। प्रोखोर ने फ्लास्क नीचे रख दिया और झुककर कुछ पूछा। ग्रिगोरी ने बात तो नहीं समझी पर उसके होंठों की हरक़त से सवाल का अन्दाज़ लगाया।

"अब तुम्हें यहाँ छोड़ दूँ मैं···क्या खयाल है? आगे सफर सफरेगा नहीं तुमसे···है कि नहीं?"

ग्रिगोरी के चहरे पर यातना और चिन्ता के बादल घिर आए। एक बार फिर उसने पूरी इच्छा-शक्ति जुटाई और फुसफुसाकर बोला—"मेरा सफ़र तब तक जारी रखो, जब तक कि मैं मर न जाऊँ।···"

प्रोखोर के चेहरे से लगा कि उसने बात सुन ली। ग्रिगोरी ने अपने को एक बार फिर इस चीज़ का यकीन दिलाया और आँखें मूँद लीं, जैसे कि बेहोशी को राहत समझा।

धीरे-धीरे वह अन्धकार की गहन परतों में खो गया और आसपास की हर चीज़ों से बेखबर हो गया।...चीख़-चिल्लाहट और शोर-गुल से भरी दुनिया कहीं पीछे छूट गई।...

: २८ :

फिर, अविन्स्काया नाम के गाँव तक ग्रिगोरी को केवल एक घटना याद बनी रही।...एक दिन घुप अन्धेरी रात में, हड्डी-हड्डी जमा देने वाली सर्दी ने उसे झकझोरकर जगा दिया। सड़क पर आगे-आगे कई गाड़ियाँ जाती लगीं। लोगों की आवाजों और पहियों की मिली-जुली खड़खड़ाहट से गाड़ियों का काफ़िला काफ़ी लम्बा प्रतीत हुआ।...

ग्रिगोरी की गाड़ी काफ़िले के बीच में रही और घोड़े क़दम चाल से आगे बढ़ते रहे। प्रोखोर ने बीच-बीच में जबान चटकाई, घोड़े को हांका और चाबुक नचाया। ग्रिगोरी ने चमड़े के चाबुक की सनसनाहट सुनी और महसूस किया कि घोड़ों ने जुए पर जोर दिया। इससे राह के इक्के-दुक्के पेड़ बज उठे और गाड़ी और ज़ोर से दौड़ने लगी। बहुत बार बीच का बांस सामने की गाड़ी के पिछले हिस्से से टकरा गया।

ग्रिगोरी ने बड़ी कोशिश से भेड़ की खाल के सिरे खींचकर अपना बदन पूरी तरह ढंका और पीठ के बल लेट गया।

काले आसमान में हवा भारी-भारी बादलों को दक्षिण की ओर लुढ़काने लगी। केवल कभी-कभी ही बादलों की किसी छोटी संध से कहीं कोई सितारा आग की चिनगारी की तरह लौ दे उठा। इसके बाद फिर घटाटोप अँधेरे ने मैदान पर अपनी चादर डाल दी, उदास हवा टेलीग्राफ के तारों के बीच घूम-घूमकर सीटियाँ बजाने लगी और पानी की बूंदें, पानीदार मोतियों की तरह झमाझम बरसने लगीं।

घुड़सवारों की एक क़तार सड़क के दाहिने किनारे से आगे बढ़ती रही। ग्रिगोरी ने कज्ज़ाक घोड़ों के साजों की चिर-परिचित, स्वर-लय-तान में बँधी झनझनाहट सुनी। साथ ही घोड़ों के अनगिन खुरों की छप-छप भी उसके कानों में पड़ी। इस तरह कम-से-कम दो स्क्वैड्रन

उधर से गुज़रे, पर खुर दलदल से उसी तरह लड़ते रहे। लगा कि हो-न-हो सड़क के किनारे एक पूरी-की-पूरी रेजीमेंट घोड़ों पर सवार चली जा रही है।···

सहसा ही किसी गानेवाले का स्वर, सुनसान मैदान के ऊपर, चिड़िया की तरह पर तोलने लगा—

अरे, नदी के तीर पर
कामीशिन्का तीर पर···
हरे मैदान में—
सरातोव के स्तेपी में···
शानदार उस स्तेपी में···
मेरे भाई रहते थे···

कई सौ स्वर हवा में गूंजे और गाने के साथ कोई बड़ी ही खूबसूरती से नाचने लगा। फिर मोटी आवाज़ें बुझीं, पर वह बजता हुआ स्वर इसके बाद भी कहीं अँधेरे में अपने पर फड़फड़ाता और दिल को रह-रहकर कुरेदता रहा। इस बीच गायक ने अगली पंक्तियाँ छेड़ दीं—

रहते वे कज़्ज़ाक थे···
जैसे दुनिया में रहते हैं···
लोग कि जिनको अपनी आज़ादी प्यारी है···
दोन और ग्रिवेन और याइक के वे कज़्ज़ाक सभी···

ग्रिगोरी के अन्तर पर किसी चीज ने जैसे भरपूर हथौड़ा जमाया। उसके गले में आँसू लटकने लगे और बदन बुरी तरह काँपने लगा। वह बड़ी ही उत्सुकता से गायक के फिर से स्वर छेड़ने की राह देखने लगा। और जब फिर तान छिड़ी तो उसने बहुत ही धीमे स्वरों में गीत के अगले शब्द जैसे गाने वाले को याद दिलाए। उसे तो वे बचपन से याद थे—

नाम कि उनके अतामान का येरमाक था—
बेटा तिमोफ़ी का था वह—
और, कैप्टन उनका लाथरेंती का बेटा···
था अस्ताशका नाम का।

गायक के मुँह से पहले शब्द उभरते ही गाड़ियों में सवार कज्जाकों ने अपनी बातचीत खत्म कर दी, गाड़ियाँ चलाने वालों ने घोड़ों को हाँकना बन्द कर दिया और हज़ार गाड़ियों के उस काफ़िले के आसपास ऐसा सन्नाटा हो गया कि बस। गायक ने पंक्तियों के वर्ण-वर्ण में स्पष्ट स्वर भरे तो गाड़ियों के पहियों की आवाज़ और घोड़ों के क़दमों की कीचड़ में छप-छप-भर बाकी रह गई। युगों-युगों की सीमा चीरकर अजर-अमर रहने वाले उस पुरातन गीत का पूरे स्तेपी में जैसे साम्राज्य स्थापित हो गया। गीत में सीधे-सादे शब्दों में बतलाया गया था कि कैसे किन्ही कज्जाकों के पुरखों ने कभी ज़ारशाही सेनाओं को तार-तार कर दिया था, हाथ की बनाई नावों पर सवार होकर दोन और वोल्गा में ज़ारों के जहाजों को बार-बार लूटा था, व्यापारियों, राव-रईसों और गवर्नरों को चूसा था और दूर के साइबेरिया को अपने क़दमों पर झुकाकर छोड़ दिया था। और आज उन्हीं कज्जाकों के हाड़-मांस, यह लोग रूस के लोगों से मुँह की खाकर, हारकर शर्मनाक ढँग से पीछे भाग रहे थे।···

वे सभी जोरदार गाने की हर पँक्ति साँस खींचकर सुनते रहे। फिर रेजीमेंट आगे निकल गई और गानेवाले शरणार्थियों को पीछे छोड़ गए। लेकिन, इसके बाद भी गाड़ियों के आसपास ऐसा मौन रहा जैसे कि किसी ने पूरी तरह जादू कर दिया हो। इस बीच न किसी के मुँह से आवाज़ फूटी और न कोई थकान से चूर किसी घोड़े पर चीखा-चिल्लाया। दूर से गानों के स्वर हवा की लहरों पर बह-बहकर पीछे आते रहे और बढ़ी हुई दोन की तरह दूर-दूर तक अपने हाथ पसारते रहे—

> और, दिमागों में उनके बस एक खयाल था
> गरमी बीत जाएगा,
> रीतेगी उसकी यह गरमी भी तो···
> फिर आएगी जाड़ा सर्दी, ठिठुरन लेकर
> अरे, भाइयो, अब सवाल है
> जाड़ा कहाँ बिताएँगे हम ?

माना याइक पर सवार हो जाएँगे हम,
लेकिन लम्बी मंज़िल तय करना भी बस की बात नहीं है
अगर वोल्गा फिरे मँझाते
तो चोरों में शामिल हमको सभी करेंगे
अगर कज़ान शहर को जाएँ
तो डर बड़ा ज़ार का होगा···
ज़ार ज़ुल्म का पुतला-सा है···
वह इवान-वैसिलेइच जो है !···

···फिर गायकों के स्वर दूरी में खो गए। लेकिन प्रमुख गायक की आवाज़ रह-रहकर बजती, गूँजती और डूबती और फिर ऊपर उतराती रही। सारे-के-सारे कज्जाक भावों में डूबे हुए बिना मुँह खोले, उसकी गहराइयों में डुबकियाँ लगाते रहे।···

और, ग्रिगोरी भी जैसे किसी सपने से जागा तो उसने अपने को गरमाहट से भरे कमरे में पाया। उसने आँखें मूँदे-ही-मूँदे, पलंग की साफ़ चादर की ताज़गी हाथ-पैर के जोड़-जोड़ में महसूस की। दवा की तेज़ी नथुनों में पैठने लगी। पहले तो उसने अपने को अस्पताल में समझा पर फिर अपनी राय बदली। बग़ल के कमरे से मर्दों की हँसी के ठहाके, तश्तरियों की झनाझनाहट और शराब के नशे से बसी आवाज़ें आईं। एक जानी-पहचानी, भारी आवाज़ में कोई बोला—"और, तुम भी कुछ कम चघड़ आदमी नहीं हो ! तुम हमारी रेजीमेंट का पता चला लेते तो तुम्हारी अपनी मदद हो जाती। खैर···गिलास खाली करो ! तुम शैतान की आँत, अब इस तरह क्या झाँक रहे हो !"

नशे में धुत प्रोखोर रुआँसा हो गया। बोला—"ऊपर वाला गवाह है···मैं भला कहाँ से जानता ! तुम्हारा खयाल है कि उसकी तीमारदारी करना मेरे लिए कुछ आसान रहा ? मैंने उसे घूंट-घूंट पानी पिलाया, खुद चबाकर उसके मुंह में खाने की चीज़ें दीं, जैसे कि वह कोई नन्हा-सा बच्चा हो···उसे दूध पिलाया···सच कह रहा हूँ···ईसा देखने वाला है···हाँ, मैंने रोटी खुद चबा-चबाकर उसके मुंह में ही डाली ···ऊपरवाला झूठ न बुलवाए···मैंने यह सब किया।···मैंने अपनी

कटार की नोक से उसकी भिची हुई दाँती खोली···एक बार तो ऐसा भी हुआ कि पिलाते वक़्त दूध उसके गले में अटक गया और वह मरते-मरते बचा···ज़रा सोचो तो···"

"तुमने कल नहलाया था उसे ?"

"हाँ, नहलाया·· उसके बाल सुलझाए···और दूध पर जेब का हर कोपेक खर्च कर दिया।···मुझे अपनी गाँठ की रकम निकल जाने का कोई कलख नही ··मुझे ज़रा-भर परवाह नहीं। लेकिन उसका खाना खुद चबाना और फिर उसे खिलाना···उफ़, कुछ न पूछो ! तुम्हारा खयाल है कि यों ही हो गया इतना सब ? ऐसा कहीं भूल से कह भी न देना, वरना तुम्हारे ओहदे-वोहदे को एक न सेठूंगा और तुम्हें वह भरपूर हाथ जमाऊँगा कि तुम भी याद रखो।"

फिर, प्रोखोर, खारलाम्पी, येरमाकोव, प्योत्र-बोगातिरयोव और प्लातोन-र्‌यावचिकोव, ग्रिगोरी के कमरे में आए। प्योत्र-बोगातिरयोव की कराकुल की फ़र-टोपी खोपड़ी के पिछले हिस्से पर औंधी रही और उसका चेहरा चुकन्दर की तरह लाल दीखा।

"यह तो आँखें खोले हुए है !" येरमाकोव ने पागलों की तरह चीख-कर कहा और डगमगाते क़दमों से ग्रिगोरी के बिस्तर की तरफ़ बढ़ा।

मोटा-तगड़ा प्लातोन र्‌यावचिकोव बोतल हिलाते और रोते हुए बोला—"ग्रीशा प्यारे, तुम्हें याद है, चिर के किनारे हम लोगों ने वक़्त कितनी हँसी-खुशी से बिताया था और कैसे लड़े थे हम ! वह खुशी कहाँ चली गई हमारी ? ये जनरल कैसा खिलवाड़ कर रहे हैं हमारे साथ, और हमारी फ़ौज को इन्होंने क्या-से-क्या बनाकर छोड़ दिया है ! ऐसी-तैसी मे जाएँ ये लोग ! नई ज़िन्दगी हुई तुम्हारी···है न ? यह लो, पिओ इसे···फ़ौरन ही तबीयत कहीं अच्छी महसूस करोगे ! खालिस शराब है !"

"तो आखिरकार हमने तुम्हें ढूँढ़ ही निकाला !" येरमाकोव ने धीरे से कहा। उसकी आँखें खुशी से चमक उठीं। फिर वह ढह पड़ा तो ग्रिगोरी का बिस्तर उसके बोझ से दब-सा गया।

"कहाँ हैं हम लोग ?" ग्रिगोरी ने धीमे स्वर में पूछा और बड़ी

कठिनाई से कज्जाकों के जाने-पहचाने चेहरे पर निगाह डाली।

"हम लोगों ने येकेनेरिनोदार ले लिया है। अब हम लोग जल्दी ही और पीछे हटेंगे। पिओ ग्रिगोरी-पैन्तेलेयेविच···पिओ इसको। मेरे यार आसमानवाले के नाम पर किसी तरह उठकर खड़े हो जाओ! तुम्हारा इस तरह पड़ा रहना मुझसे नहीं देखा जाता।" र्‍याबचिकोव ग्रिगोरी के पैरों पर गिर पड़ा। लेकिन बोगातिरयोव और साथियों से कहीं अधिक गम्भीर लगा। चुपचाप मुस्कराता रहा। उसने ग्रिगोरी को पेटी पकड़कर हलके से उठाया और सावधानी से फ़र्श पर लिटा दिया।

"बोतल ले लो इसके हाथ से ··सारी शराब बिखरा देगा!" नशे में चूर येरमाकोव ने घबराकर कहा और खिलखिलाकर हँसते हुए ग्रिगोरी की तरफ़ मुड़कर बोला—"तुम जानते हो कि कैसे पी रहे हैं हम लोग? शराब की एक बूंद को भी तरस रहे थे कि किसी दूसरे का माल हाथ लग गया और हमारे जश्न मन चले। हुआ यह कि हमने चाहा कि लाल फ़ौजियों के हाथ न लगे, इसलिए हमने खुद शराब का एक गोदाम लूट लिया। और क्या-क्या माल हाथ लगा···तुम यक़ीन नहीं करोगे! ···हमने रायफ़ल से गोली चलाकर एक टंकी में सूराख किया तो शराब ऐसे बह चली, जैसे बम्बे की टोंटी से पानी बहे। फिर तो हमने टंकी गोलियों से छलनी कर दी, और एक-एक आदमी एक-एक सूराख से टोपी, बाल्टी या फ़्लास्क सटाकर जम गया। कुछ लोगों ने तो अंजुली-अंजुली वहीं खड़े-खड़े ढाल ली।···हमने गोदाम के दो रखवालों को काटकर फेंक दिया, शराब हथिया ली और फिर तो मज़ा आ गया!··· मेरे देखते-देखते एक कज्जाक टंकी के ऊपर चढ़ गया और उसने घोड़े की बाल्टी डालकर ऊपर से शराब निकालने की कोशिश की। लेकिन वह खुद ही गिर गया और ग़ोते लगाने लगा। शराब जो उमड़ी तो कंकरीट के फ़र्श पर हमारे घुटनों-घुटनों तक भर गई। कज्जाक उसमें हिल-हिलकर झुक-झुककर नीचे से उठा-उठाकर पीने लगे; और पी-पीकर वहीं-के-वहीं गिरने लगे।···नज्जारा अजीब था, लेकिन तुम होते तो तुम्हें भी हँसी आए बिना न रहती! हमें और ज्यादा की क्या जरूरत ···हमने पांच बाल्टी भर शराब का एक पीपा लुढ़का लिया और हमारे

लिए काफ़ी हो गया ! हमने कहा, जी भर पियो, मेरे भाई ! दोन के इलाक़े के लोगों के दिन भी जैसे-तैसे फिर ही गए, प्लातोन तो डूबते-डूबते बचा ! लोगों ने इसे ढकेल दिया और फिर इसे रौंदकर रख दिया। उसने दो बार मुंह भर-भरकर गटकने की कोशिश की, मगर वह भी नाक से बाहर निकल-निकल आने लगी…मैं जाने कैसे-कैसे इसे खींच-खांचकर वहां से बाहर लाया…"

हर कज़्ज़ाक के बदन से शराब, प्याज और तम्बाकू का भभका उठता रहा। ग्रिगोरी का जी मिचलाने और सिर चक्कर खाने लगा। कमज़ोर होने के बावजूद वह मुस्कराया और उसने आखें मूंद लीं।

फिर एक सप्ताह तक वह येकेतेरिनोदार में बोगातिरयोव के एक परिचित डॉक्टर के घर में पड़ा रहा। उसके स्वास्थ्य में धीरे-धीरे सुधार होता रहा। इसके बाद प्रोखोर के शब्दों में वह 'दुरुस्त होने लगा', और पीछे हटने का सिलसिला शुरू होने के बाद पहली बार अबिन्स्काया नाम के गांव में घोड़े की पीठ पर सवार हुआ।

नोवोरोस्सिइस्क खाली किया जा रहा था। स्टीमर रूसी धन से भरे थैलों, ज़मींदारों, जनरलों के परिवारों और प्रभावशाली राजनीतिज्ञों को तुर्की पहुंचा रहे थे। सभी घाटों पर जहाज़ों पर माल दिन-रात लादा जा रहा था। कैडेट दल बनाकर जहाज़ी कुलियों का काम कर रहे थे और फ़ौजी साज-सामान और शरणार्थी-रईसों के ट्रक और बक्से स्टीमरों के मालखानों में भर रहे थे।…

दोन और कुबान के कज़्ज़ाक पिछड़ गए थे। स्वयंसेवक सेना आगे निकल आई थी, और सबसे पहले नोवोरोस्सिइस्क पहुंची थी। सेना के सभी लोग जहाज़ों पर जमा हो गए थे। स्टाफ़ ने दूरदर्शिता से काम लेकर 'दि एम्परर ऑफ़ इंडिया' नाम के ब्रिटिश जहाज़ में शरण ग्रहण कर ली थी। जहाज़ ने पहले से खाड़ी में लंगर डाला। लड़ाई तोन्नेलनाया के पास हो रही थी। शहर की सड़कों पर दसियों हज़ार शरणार्थियों की भीड़ थी। फ़ौजें बराबर चली आ रही थीं, घाटों पर हर तरफ़ लोग ही लोग उमड़ रहे थे। छुट्टा-घोड़े, हज़ारों के दल में, नोवोरोस्सिइस्क के चारों ओर की पहाड़ियों के चूने वाले ढालों पर जहां-तहां भटक रहे

थे। बन्दरगाह के आस-पास की गलियों में घोड़ों की काठियों, लड़ाई के साज-सामान और फ़ौजी स्टोर की चीजों के अम्बार लगे हुए थे। यह सभी सामान लोग छोड़-छाड़कर चले गए थे। शहर में अफ़वाह थी कि सिर्फ़ स्वयंसेवक-सेना की टुकड़ियाँ ही जहाजों का इस्तेमाल कर सकेंगी—दोन और कुबान की कज्जाक टुकड़ियों को जबरदस्ती पैदल मार्च करा कर जॉर्जिया भेजा जाएगा।···

ऐसे में १९२० की २५ मार्च के दिन सवेरे ग्रिगोरी और र्‌यावचिकोव घाट पर यह जानने के लिए पहुँचे कि दूसरी-दोन-कोर के फ़ौजियों को जहाजों में जगह मिलेगी या नहीं? इसी के एक दिन पहले शाम को कज्जाकों ने उड़ा दिया था कि देनीकिन ने एक नया फ़रमान जारी किया है, और इस फ़रमान के मुताबिक अपने-अपने घोड़े और साज-सामान बचा रखने वाले सभी कज्जाकों को क्रीमिया वैरंग कर दिया जाएगा।

पूरा घाट साल्स्क-प्रदेश के कालमीकों का अखाड़ा नजर आया। वे अपने घोड़ों और ऊँटों के साथ लकड़ी की झोंपड़ियाँ तक मानीच और साल से समुद्र तक ले आए थे।···

सो, ग्रिगोरी और र्‌यावचिकोव के नथुने भेड़ों की चरबी से भर गए। वे लोगों को धकियाते हुए, घाट पर एक किनारे खड़े, एक बड़े माल-जहाज के गैंगवे की तरफ़ बढ़े। मारकोव-डिविज़न के अफ़सरों का एक रक्षक गैंगवे की पहरेदारी करता दीखा। दोन-सेना के कज्जाक-तोपची, जहाज में जगह पाने के इन्तजार में पास ही खड़े मिले। जहाज के पिछले हिस्से में खाकी तिरपालों से ढकी तोपें भरी नजर आईं। भीड़ को कोहनियाते हुए ग्रिगोरी ने एक तेज-से, काली मूँछ वाले सार्जेंट से पूछा—"ये सब किस तोपखाने के लोग हैं, दोस्त?"

सार्जेंट ने ग्रिगोरी को कनखी से देखा और लापरवाही से जवाब दिया—"छत्तीसवीं रेजीमेंट के!"

"कमाण्डर इसके कारगिन हैं?"

"हाँ।"

"लोगों को जहाज पर सवार कराने का काम किसके ज़िम्मे है?"

"उस आदमी के जिम्मे है···वह जो रेलिंग के पास
शायद कोई कर्नल या ऐसा ही कुछ है ।"

र्‌यावचिकोव ने ग्रिगोरी की आस्तीन खींची और गुस
"इन्हें झोंको भाड़ में···आओ, यहाँ से चलें । तुम्हारा ख
इस जमघट से कोई मतलब हल हो सकेगा ! इन्हें तो हम
लड़ाई के वक़्त थी, अब इन्हें हमसे क्या लेना-देना···!"

सार्जेंट मुस्कराया और एक क़तार में खड़े तोपचियों की तरफ़
कर आँख मारी—"बड़ी किस्मतवाले हो, यार···ये लोग तो अफ़सर
को नहीं छोड़ते !"

इतने में लोगों को जहाज़ पर चढ़ाने का जिम्मेदार अफ़सर फुर्ती से गैंगवे से नीचे आया। उसके पीछे तेज़ी से उतरा एक गंजा अफ़सर। उसने अपने फ़र-कोट के बटन खोल रखे, सील मछली की खाल की टोपी सीने से चिपका रखी और कुछ कहा। पर, उसके पसीने से तर चेहरे और कमजोर निगाहों वाली आँखों में ऐसी ज़िद रही कि कर्नल मुड़ा और चीखा—"मैंने एक बार कह दिया तुमसे ! मुझे परेशान न करो, वरना मैं हुक्म देकर तुम्हें जहाज़ से बाहर निकलवा दूंगा। तुम्हारा दिमाग़ खराब है। यह तुम्हारा कूड़ा-कबाड़ कहाँ रख सकते हैं हम ? अंधे हो तुम ? देख तो रहे हो कि हालत क्या है ! उफ़···जाओ यहाँ से···नीली छतरी वाले के लिए, जाओ यहाँ से और तुम्हारा जी करे तो जनरल देनीकिन से शिकायत कर दो ! मैंने कहा कि मैं कुछ नहीं कर सकता···इसका मतलब है कि मैं कुछ नहीं कर सकता। तुम रूसी तो समझते हो न ?"

कर्नल इस हठधर्मी अफ़सर से पिंड छुड़ाने के लिए मुड़ा और ग्रिगोरी की बगल से गुजरा। ग्रिगोरी उसका रास्ता रोककर खड़ा हो गया और अपनी टोपी की चोंच पर हाथ रखते हुए खीझ से बोला—"अफ़सर उम्मीद करें कि उन्हें इस जहाज़ में जगह मिल जाएगी ?"

"नहीं, इस जहाज़ में नहीं···इसमें बिलकुल गुंजाइश नहीं है।"

"लेकिन फिर, दूसरा जहाज कौन-सा मिलेगा ?"

"यह आप लोगों को हटाने का इन्तज़ाम करने वाले लोगों से

थे। बन्दरगा् ।"
साज-सामान' हो आए हैं, लेकिन वहाँ भी कोई कुछ नहीं जानता।"
सभी सामान मैं भी कुछ नहीं जानता···मुझे निकलने दीजिए।"
सिर्फ स्वयंसेवक आप ३६वीं बैटरी को तो जहाज़ में जगह दे रहे हैं···
दोन और ही गुंजाइश भला क्यों नहीं है ?"
कर मुझे निकलने दीजिए, मैंने कहा न ? मैं इत्तिला देने वाला दफ़्तर
हीं हूँ न !" कर्नल ने ग्रिगोरी को धकियाकर एक ओर करने की कोशिश की, मगर उसने दोनों पैर कसकर जमा लिए और फिर उसकी आँखों में निलहरी चिनगारियाँ दहकने और बुझने लगीं।

"यानी अब आपको हमारी ज़रूरत नहीं रही ? लेकिन इससे पहले आपको हमारी दरकार थी···है न ? अपना हाथ दूर कीजिए···आप मुझे इस तरह हटा नहीं पाएँगे।"

कर्नल ने ग्रिगोरी की आँखों में गहराई से आँखें डालीं और मुड़कर देखा। गैंगवे के पास राइफ़लें अड़ाकर खड़े मारकोव के लोग उमड़ती भीड़ के जोर को सम्हालने में असमर्थ लगे। ग्रिगोरी को सिर से पैर तक देखते हुए कर्नल ने हारकर पूछा—"किस रेजीमेंट के हैं आप ?"

"मैं उन्नीसवीं दोन-रेजीमेंट का हूँ···बाक़ी लोग दूसरी रेजीमेंट के हैं।"

"आप लोग गिनती में कुल कितने हैं ?"

"दस।"

"मैं कुछ नहीं कर सकता···गुंजाइश बिलकुल नहीं है।"

र्‌यावचिकोव ने ग्रिगोरी के नथुने क्रोध से फूलते देखे। ग्रिगोरी उस कर्नल से धीमे से बोला—"खिलवाड़ कर रहा है तू कुत्ते के बच्चे ! हमें फ़ौरन जहाज़ पर चढ़ने की इजाजत दे, नहीं तो···।"

'ग्रीशा देखते-देखते इस कर्नल के टुकड़े-टुकड़े करके रख देगा।' र्‌यावचिकोव ने क्रोध और सन्तोष से मन-ही-मन सोचा। पर, इसी समय उसने कर्नल की हिफ़ाजत के लिए, मारकोव के दो फ़ौजियों को अपनी बन्दूकों के कुन्दों से भीड़ चीरकर आगे बढ़ते देखा, तो ग्रिगोरी की आस्तीन पर हाथ रखते हुए बोला—"इन लोगों से उलझो मत,

ग्रिगोरी···आओ···चलो चलें···।"

"तुम बेवकूफ़ हो···और अपनी इस बदतमीज़ी के लिए उठाना पड़ेगा तुम्हें !" कर्नल ने कहा। उसका चेहरा एकदम पीला पड़ गया। वह मारकोव के फ़ौजियों की तरफ़ मुड़ा और ग्रिगोरी की ओर इशारा करके बोला—"ज़रा इस मिरगी के मरीज़ का इलाज करो। यहाँ से बदअमनी खत्म करो···जैसे भी हो। मुझे कमांडेंट से जल्दी करनी है और लोग हैं कि मेरी राह रोककर तमाम उलटी-सीधी बातें कर रहे हैं।" वह तेज़ी से ग्रिगोरी की बग़ल से निकल गया।

लम्बे क़द, क़ायदे से तराशी मूँछों और गहरी-नीली ट्यूनिक के कन्धों पर लेफ्टिनेन्ट की पट्टियों वाला, मारकोव रेजीमेंट का एक अफ़सर ग्रिगोरी के पास आया और बोला—"क्या चाहते हो ? गड़बड़ी क्यों कर रहे हो ?"

"स्टीमर में जगह चाहता हूँ और बस !"

"तुम्हारी रेजीमेंट कहाँ है ?"

"नहीं जानता।"

"अपने कागज़ात दिखलाओ।"

फूले हुए गालों और बिना कमानी के चश्मे वाले एक दूसरे कम-उम्र फ़ौजी ने जोश में भरी, भारी आवाज़ में कहा—"इन्हें गारद के कमरे में ले चलना चाहिए···यही बेहतर होगा···वक़्त खराब न करो, वीसोत्स्की !"

लेफ्टिनेन्ट ने ग्रिगोरी के कागज़ात सावधानी से पढ़े और लौटाते हुए बोला—"आप अपनी रेजीमेंट तलाशिए।···मेरी सलाह मानिए तो यहाँ से दफ़ा हो जाइये और लोगों को जहाज़ पर चढ़ाने के काम में टाँग न अड़ाइए।" लेफ्टिनेन्ट ने अपने होंठ सिकोड़े, र्याबचिकोव को तिरछी निगाह से देखा और ग्रिगोरी के कान के पास मुँह लाकर धीरे से बोला—"सुनिए···आप ३६वीं बैटरी के कमांडर से बातें कर लीजिए। यानी, उन फ़ौजियों के साथ खड़े हो जाइए···जहाज़ में जगह हो जाएगी।"

र्याबचिकोव ने लेफ्टिनेन्ट की फुसफुसाहट सुन ली और खुशी से

ते हुए बोला—"तुम कारगिन के पास जाओ···मैं दौड़कर दूसरे थियों को लिये आता हूँ···तुम्हारे किटबैग के अलावा और भी कुछ ना है क्या ?"

"हम लोग साथ चलेंगे।" ग्रिगोरी ने तटस्थ भाव से कहा। दोनों टे तो उन्हें राह में सेम्योनोव्स्की गाँव का एक परिचित कज़ाक ला। वह तिरपाल से ढँकी रोटियों से भरी गाड़ी घाट को लिये जा हा था।

र्याबचिकोव ने आवाज़ लगाई—"हलो फ़ियोद्र···कहाँ जा रहे हो ?"

"ओह···प्लातोन···ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच···प्रीवियत[1] ! मैं अपनी रेजीमेंट के रास्ते के लिए रोटियाँ लिये जा रहा हूँ। बड़ी दिक़्क़त से तैयार हुई हैं। वैसे ये रोटियाँ न होतीं तो सफ़र में सिर्फ़ लपसी से काम चलाना पड़ता।"

ग्रिगोरी ने गाड़ी के पास पहुँचकर पूछा—"तुम्हारी ये रोटियाँ तोल की हैं या गिनती की ?"

"कौन आसमान से उतरकर गिनती करता इनकी !···क्यों, तुम्हें रोटियाँ चाहिए क्या ?"

"हाँ।"

"तो, ले लो।"

"कितनी ले लूँ ?"

"जितनी ले जा सको···यहाँ कोई कमी थोड़े ही है।"

इस पर ग्रिगोरी रोटी पर रोटी निकालने लगा तो र्याबचिकोव के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। फिर, उत्सुकता सीमा में न रही तो आखिरकार पूछा—"इतनी रोटियों का क्या अचार डालोगे तुम ?"

"ज़रूरत है।" ग्रिगोरी ने रुखाई से जवाब दिया।

उसने उस आदमी से दो बोरियाँ माँगी, रोटियाँ उनमें भरीं, उसे धन्यवाद देने के बाद उससे विदा ली और र्याबचिकोव को आदेश

---

१. अभिवादन।

दिया—"एक बोरी मैं उठाता हूँ···दूसरी तुम उठा लो···हम इन्हें ले चलेंगे।"

"यहीं जाड़ा बिताने का खयाल है क्या ?" बोरी कन्धे पर लादते हुए र्‌याबचिकोव ने हँसकर कहा।

"मैंने ये रोटियाँ अपने लिए नहीं ली हैं।"

"फिर किसके लिए ली है ?"

"ये मेरे घोड़े के लिए हैं। "

र्‌याबचिकोव ने सफ़ाई से बोरी नीचे रख दी और ताज्जुब से पूछा—"मजाक कर रहे हो क्या ?"

"नहीं, सचमुच ये रोटियाँ मैंने घोड़े के लिए ली हैं।"

"तो, तो···तुम्हारा इरादा क्या है, पॅन्तेलेयेविच ? तुम पीछे रह जाना चाहते हो क्या ? क्या बात है ?"

"तुमने बिल्कुल ठीक समझा। अब बोरी उठाओ और चलो। घोड़े को तो खाने को कुछ-न-कुछ चाहिए ही। घोड़ा बड़े काम की चीज़ है। पैदल आदमी कहाँ-कहाँ जाएगा ?"

फिर, ठहरने के ठिकाने तक र्‌याबचिकोव ने नाम को भी मुँह नहीं खोला। वह केवल कराहता और बोरी को एक कंधे पर रखता रहा। परन्तु घर के फाटक पर पहुँचने पर उसने पूछा—"दूसरे साथियों से इन रोटियों का ज़िक्र करोगे या नहीं ?" फिर, जबाव का इन्तजार किए बिना, उदास होकर बोला—"खयाल तो तुम्हारा ठीक है···मगर हम लोगों के बारे में भी कुछ सोचा ?"

"अपना इन्तज़ाम तो लोगों को आप करना चाहिए।" ग्रिगोरी ने थोड़े अभिमान और अन्यमनस्कता से कहा—"अगर वे हमें ठहरने की जगह न दें तो न दें···कोई जरूरत नहीं···हम उन्हें अपने गले में लटकाए रहना क्यों चाहेंगे ? हम वहाँ न जाएँगे और कहीं और तक़दीर आज़माएँगे। बढ़ो···आगे बढ़ो···तुम वहाँ फाटक में जमे क्यों खड़े हो ?"

तुम्हारी बात किसी को भी जहाँ-का-तहाँ कील देने को काफी है।·· क्या बात है ? तुमने मुझे अच्छा सबक दिया है, ग्रीशा ! उँगली के पोर को छूकर चारोंखाने चित कर दिया। यही तो मैं कहूँ कि इतनी

रोटियों का भला यह क्या करेगा ? अब यह है कि दूसरे कज्ज़ाकों को मालूम होगा तो तूफ़ान मच जाएगा।"

"ख़ैर···तुम अपनी बात करो···यह बतलाओ कि तुम मेरे साथ ठहरोगे या नहीं ?"

"क्या ?" र्‌याबचिकोव एकदम चौंक उठा।

"एक बार फिर सोच लो।"

"इसमें सोचने को क्या है ! मैं चला···अभी मौक़ा है···कारगिन की बैटरी के साथ चिपक जाऊँगा और यहाँ से निकल जाऊँगा।"

"पीछे पछताओगे।"

"सचमुच यह ख़याल है तुम्हारा ? ख़ैर···अपनी खोपड़ी को मैं ज्यादा कीमती समझता हूँ, मेरे भाई ! मैं नहीं चाहता कि लाल फ़ौजी अपनी तलवारें मेरी गर्दन पर आजमाएँ।"

"तुम्हें एक बार और सोचना चाहिए, प्लातोन ! इस वक्त जो हालत है···"

"मैं सारी हालत पूरी तरह समझता हूँ, और इसके बाद भी फ़ौरन ही जा रहा हूँ यहाँ से।"

"ख़ैर···जैसा चाहो वैसा करो···मैं तुमसे बहस नहीं करूँगा।" ग्रिगोरी ने नाराज़ होकर कहा और बरसाती की पत्थर की सीढ़ियों पर चढ़ा।···

येरमाकोव, प्रोख़ोर और बोगातिरयोव आदि सभी घर से ग़ायब मिले। उम्र से सयानी और पीठ से कुबड़ी, घर की आर्मीनियाई मालकिन ने बतलाया कि वे लोग कहीं गए हैं···जल्दी ही आते होंगे।

ग्रिगोरी ने एक रोटी के बड़े-बड़े टुकड़े काटे और अस्तबल की ओर बढ़ा। वहाँ उसने टुकड़ों के दो हिस्से किए। एक हिस्सा अपने घोड़े को खिलाया और दूसरा हिस्सा प्रोखोर के घोड़े को। फिर उसने पानी लाने के लिए बाल्टी उठाई कि र्‌याबचिकोव अस्तबल के दरवाजे पर आया। उसने अपने बरानकोट के अन्दर रोटी के बड़े-बड़े टुकड़े छिपा रखे। दूसरी तरफ़ अपने मालिक की महक पाते ही उसका घोड़ा हल्के से हींसा। ग्रिगोरी मुस्कराने लगा। र्‌याबचिकोव बिना कुछ बोले बग़ल

से गुजरा और रोटी के टुकड़े नांद में उछालते हुए बोला—"इस तरह दांत मत निकालो। आखिर मुझे भी तो अपने घोड़े को खिलाना चाहिए। तुम्हारा खयाल है कि मैं यहां से खुशी-खुशी चला जाऊंगा? इसके लिए मुझे आप अपनी गर्दन पकड़कर अपने को उस कमबख्त स्टीमर तक दौड़ाना पड़ेगा। वहां कोई दूसरा रास्ता मेरे सामने न रहेगा। सच पूछो तो डर मुझे घोड़े की तरह हांक रहा है···मेरे पास सिर तो एक ही है न? आसमान वाला न करे कि यह ग़ायब हो जाए, वरना मिकायलमास पहुंचने तक दूसरा तो उग नहीं आएगा।"

दूसरी तरफ़ प्रोखोर और बाक़ी लोग शाम होने के क़रीब लौटे। और, जब लौटे तो येरमाकोव के हाथ में शराब की एक बड़ी बोतल दीखी, और प्रोखोर का किटबैग गाढ़े पीले द्रव के मुहरबन्द फ़्लास्कों से भरा मिला।

प्रोखोर अपनी बोतल की तरफ़ इशारा करते हुए काफ़ी ऐंठा और बोला—"आज की कमाई खासी शानदार रही। सारी रात के लिए काफ़ी समझो···हुआ यह कि हमें इत्तफ़ाक से योंही मिल गया एक डॉक्टर। कहने लगा—'घाट के एक गोदाम से दवादारू की कुछ चीज़ें निकालने में ज़रा हमारी मदद कर दो'···यानी हम घाट पर गये। हमने देखा कि जहाज़ी मज़दूरों ने काम करने से इन्कार कर दिया है, और सिर्फ़ कैडेट गोदाम से माल खींच-खींचकर ला रहे हैं। बस ये तो भी कैडेटों के साथ शामिल हो गए। डॉक्टर ने हमारी मेहनत के बदले में हमें खालिस शराब दी और प्रोखोर ने ये फ़्लास्क बट्टेखाते में उड़ा दिए। ऊपर वाला जानता है···मैं मज़ाक ज़रा भी नहीं कर रहा हूं।"

"लेकिन, उनमें है क्या?" र्‌याबचिकोव से उत्सुकता से पूछा।

"यह चीज तो खालिस शराब से भी ज्यादा खालिस है, भाई मेरे!" प्रोखोर ने फ़्लास्क हिलाए और रोशनी के सामने किए, तो गहरे रंग के शीशे के अन्दर कोई गाढ़ा तरल पदार्थ चमका। वह आत्म-सन्तोष की लम्बी सांस लेते हुए बोला—"यानी यह है बाहर के मुल्क की एक ऐसी शराब जो बहुत ही मुश्किल से मिलती है और आदमी का सारा दुख-दर्द छू-मन्तर कर देती है। इसीलिए तो अंग्रेज़ी जानने

वाला एक कैडेट मुझसे बोला—'हम स्टीमर पर सवार होने के बाद इसे पीएँगे, जी हल्का करेंगे, 'मेरा प्यारा-प्यारा' देश छेड़ेंगे और ऐन क्रीमिया तक ढालेंगे। फ़्लास्क समुन्दर में फेंक देंगे।"

"जल्दी भागो और किनारे पहुँचो···उन लोगों ने तुम्हारे लिए जहाज़ रोक रखा है···तुम्हारे बिना उनसे जाते ही नहीं बन रहा है···कह रहे हैं कहाँ है हमारा सूरमाओं का सूरमा···प्रोखोर ज़िकोव ? उसके बिना जहाज़ बन्दरगाह से हिल नहीं सकता।" र्याबचिकोव ने मज़ाक बनाते हुए कहा। फिर धुएँ से पीली पड़ी उँगली से ग्रिगोरी की तरफ़ इशारा कर बोला—"ग्रिगोरी का और मेरा इरादा बदल गया है, यानी अब हम दोनों फ़िलहाल नहीं जाएँगे।"

"सचमुच !" प्रोखोर के मुंह से कराह निकल गई और आश्चर्य ने ऐसा बौखलाया कि एक फ़्लास्क हाथ से गिरते-गिरते बचा।

"क्या है यह सब ? तुम्हारे दिमाग़ में आखिर है क्या ?" येरमाकोव ने भौंहें चढ़ाते और ग्रिगोरी की तरफ़ एकटक देखते हुए पूछा।

"हमने यहाँ से जाने का खयाल छोड़ दिया है।"

"लेकिन आखिर क्यों ?"

"क्योंकि हमारे लिए जहाज़ में जगह नहीं है।"

"जहाज़ में जगह आज न सही, कल तो होगी।" बोगातिरयोव ने विश्वास के साथ कहा।

"किनारे गये हो तुम ?"

"क्यों, क्या हुआ ?"

"मेरा मतलब तुमने वहाँ की हालत देखी है ?"

"हाँ देखी है, तो फिर ?"

"फिर···फिर। अगर तुमने वहाँ की हालत देखी है तो कहने को क्या रह जाता है ? वे सिर्फ़ मुझे और र्याबचिकोव को लेने को तैयार थे। इस पर भी एक स्वयंसेवक बोला—'आप कारगिन-बैटरी के लोगों के साथ खड़े हो जाएँ, वरना जगह न मिलेगी।' "

"अभी जहाज़ पर सवार नहीं हुए उसके लोग···मेरा मतलब है बैटरी के लोग ?" बोगातिरयोव ने जल्दी-जल्दी पूछा। जवाब में उसे

बतलाया गया कि लोग खड़े हैं और जहाज़ पर चढ़ने के इन्तज़ार में हैं। बस, तो वह खुद भी वहाँ पहुंचने के लिए तैयार हो गया। उसने अपना लिनेन, फालतू शरोवारी और ट्यूनिक किटबैग में रखी, थोड़ी रोटी ली और सबसे विदा लेने लगा।

"कहाँ जा रहे हो, प्योत्र ?" येरमाकोव अपनी ओर से बोला—"पार्टी को इस तरह तोड़कर जाना बेकार है।" बोगातिरयोव ने कोई जवाब दिए बिना, हाथ आगे बढ़ाया, दरवाज़े के पास एक बार और ठिठका और बोला—"ठीक-ठाक रहना! अगर ऊपर वाले ने चाहा तो फिर मुलाक़ात होगी।" और वह दौड़ चला।

उसके जाने के बाद कमरे में सन्नाटा हो गया। सन्नाटा जैसे काटने लगा। येरमाकोव बावर्चीखाने में गया, मालकिन से चार गिलास ले आया और उनमें शराब भर दी। फिर उसने ठंडे पानी से भरी ताम्बे की चायदानी मेज़ पर रखी, सूअर की चर्बी काटी, मुँह सिए-ही-सिए मेज़ के किनारे बैठा, उस पर कुहनियाँ टिकाईं। कुछ देर तक उदास मन से अपने पैरों पर निगाह टिकाए रहा, और सीधे चायदानी की टोंटी से थोड़ा-सा पानी पीने के बाद भर्राई आवाज़ में बोला—"पानी से हमेशा पैराफ़ीन की-सी बू क्यों आती है ?"

कोई कुछ नहीं बोला। र्‌यावचिकोव भाप छोड़ती तलवार को साफ़ कपड़े से पोंछने लगा, ग्रिगोरी अपने थैलों में कुछ खंखोरने लगा, और प्रोखोर खिड़की से पहाड़ियों के वीरान ढालों पर दृष्टि दौड़ाने लगा। ढालों पर जहाँ-तहाँ ही घोड़े नज़र आते रहे।

"आओ···मेज़ के किनारे आकर बैठो···थोड़ा पिया जाए।" और येरमाकोव ने, दूसरे की राह देखे बिना, एक गिलास शराब एक झटके में गटक ली और फिर थोड़ा-सा पानी पिया। इसके बाद सूअर के गोश्त का एक टुकड़ा चबाते हुए, खुशी से खिली हुई आँखों से ग्रिगोरी की ओर देखकर बोला—"ये लाल कॉमरेड हमें काटकर तो नहीं फेंक देंगे न ?" ग्रिगोरी बोला—"वे हम सबको तलवार के घाट नहीं उतार पाएँगे···हज़ार से ज्यादा लोग तो यहाँ फिर भी रह ही जायेंगे।"

"मुझे सबसे क्या लेना-देना ?" येरमाकोव हँसा—"मुझे तो फ़िक्र

अपनी खाल बचाने की है।"

और, जब काफ़ी ढल चुकी तो बातचीत ने और मजेदार मोड़ ले लिया। लेकिन जरा देर बाद ही, आशा के विपरीत, बोगातिरयोव लौट आया। उसकी भौंहें चढ़ी रहीं और चेहरा ठंडक से नीला लगा। उसने नए-से अंग्रेजी बरानकोटों की गाँठ-की-गाँठ जमीन पर फेंकी और चुपचाप अपना कोट उतारने लगा।

"लौट आए···तुम्हारा लौटना मुबारक!" प्रोखोर ने अभिवादन में झुकते हुए व्यंग्य से कहा।

बोगातिरयोव ने उस पर गुस्से से भरी नजर डाली और आह भर-कर बोला—"अब अगर देनीकिन के कुल-के-कुल फ़ौजी और ये तमाम-के-तमाम दोगले आकर मेरे सामने घुटने टेकें, तो भी मैं न जाऊँ! मैं क़तार में खड़ा रहा, ठंड से जमकर बर्फ़ हो गया और सारी मेहनत बेकार। लोग ऐन मेरे पास आकर रुके और मेरे आगे के दो आदमियों में से एक को ले लिया, दूसरे को छोड़ दिया। बैटरी के आधे लोग किनारे छूट गए हैं। क्या कहोगे तुम इसे?"

"इस किस्म के लोगों के साथ इसी तरह का बरताव करते हैं वे लोग।" येरमाकोव हँसते-हँसते लोटपोट हो गया और बोतल से शराब छलकाते हुए उसने बोगातिरयोव के लिए एक गिलास ऊपर तक भर दिया—"लो, अपने कलख का जाम पियो। शायद उनका इन्तजार है कि आयेंगे और आकर तुम्हें ले जाएँगे, क्यों? देखो···खिड़की से झाँक-कर देखो। खुद जनरल रैंगेल चला आ रहा है तुम्हें बुलाने के लिए··· आ रहा है न?"

बोगातिरयोव ने बात का जवाब दिए बिना शराब की भरपूर चुस्की ली और मजाक करने-कराने को तैयार न लगा।

अब तक येरमाकोव और र्‌याबचिकोव दोनों के आधे होश नशे के हाथों में आ गए थे। उन्होंने उस आरमीनियाई बुढ़िया को इतनी पिलायी, इतनी पिलायी कि एक बूँद भी पीने की ताब उसमें न रही। फिर दोनों कहीं-न-कहीं से अकारदीयन बजाने वाले को लाने की बातें करने लगे।

बोगातिरयोव बोला—"अच्छा हो कि तुम स्टेशन चले जाओ···

किराए की ले आओ···यहां गाड़ी-भर वर्दियां मारी-मारी फिर रही हैं।"

"तुम्हारी इन वर्दियों का हमें भला क्या करना ?" येरमाकोव चीखा—"तुम जो बरानकोट लाए हो, वे ही हमारे लिए काफ़ी हैं··· और, बाक़ी वर्दियों का होगा ही क्या ? लाल फ़ौजी तो जो कुछ फालतू देखेंगे, वही उतार ले जाएंगे।···अवे प्योत्र नाम के ताजी कुत्ते, हमने लाल फ़ौजियों से जा मिलने का फ़ैसला किया है···समझ में आई बात ? हम कज्ज़ाक हैं या कुछ और है ? अगर लाल फ़ौजी हमें जीता-जागता रहने देंगे तो हम उनकी खिदमत करेंगे। हम दोन के कज्ज़ाक हैं। हमारी रगों में कज्ज़ाकों का खालिस खून बहता है। हमारा काम लड़ना है ? तुम्हें पता है कि मैं तलवार किस शान से चलाता हूं। दुश्मन को यों काटकर रख देता हूं, जैसे कोई पातगोभी के टुकड़े करके रख दे ! खड़ा हो जा और देख···मैं दिखला दूं तुझे अपना हाथ ! क्यों, कमजोरी कुछ ज्यादा महसूस हो रही है क्या ? किसी को तलवार के घाट उतरना चाहिए···फिर हमें इसकी परवाह नहीं कि तलवार के घाट कौन उतरता है···क्यों मेलेखोव, मेरी बात ठीक है न ?"

"जबान बन्द करो।" ग्रिगोरी ने थकान से भरे स्वर में जवाब दिया।

येरमाकोव ने लाल-सुर्ख आंखें झपकाते हुए बक्स पर पड़ी अपनी तलवार की तरफ़ हाथ बढ़ाया। मगर, बोगातिरयोव ने हंसते हुए उसे एक तरफ़ को ढकेल दिया और बोला—"सूरमा अनीका, आपे के बाहर न हो, वरना देखते-देखते दिमाग़ ठंडा कर दूंगा—नशे को सम्हाल में रखो, और यह न भूलो कि अफ़सर हो तुम।"

"मैं अपने कन्धे की पट्टियों के साथ-साथ अपनी अफ़सरी का भी इस्तीफ़ा दे दूंगा। इस वक़्त इस अफ़सरी की मुझे उतनी ही दरकार है, जितनी रस्सी के फंदे की सूअर को। बेकार इसकी याद न दिलाओ फ़िलहाल ! कहो तो मैं तुम्हें तकलीफ़ से बचा दूं और तुम्हारे कंधे की पट्टियां काटकर तुम्हें नज़र कर दूं···क्यों ?···पोत्र···मेरे जिगर··· रुको ज़रा···अभी एक झटके में तुम्हारी ये पट्टियां कन्धे से अलग

करता हूँ।"

"अभी नहीं···अभी बड़ा वक़्त पड़ा है इसके लिए।" वोगातिर-योव ने अपने बेक़ाबू दोस्त को दूर ढकेलते हुए हँसकर कहा।

इस तरह वे लोग सुबह-तड़के तक शराब ढालते रहे। शाम को ही बाक़ी कज्जाक भी आ गए थे। उनमें से एक के पास अकारदीयन था। सो, येरमाकोव तब तक कज्ज़ाक-नृत्य करता रहा, जब तक कि जमीन पर ढह नहीं पड़ा। फिर साथी उसे घसीटकर एक किनारे ले गए तो पैर फैलाकर और सिर भद्दे ढंग से पीछे की तरफ़ झुलाकर वह वहीं नंगे फ़र्श पर सो गया।

हंगामा बराबर चलता रहा।

एक सयानी उम्र का अजनबी कज्जाक पीते-पीते नशे में धुत हो गया तो सिसकियाँ भरते हुए बोला—"कभी हमारे यहाँ ऐसे ऊँचे बैल थे कि आदमी का हाथ उनके सींगों तक न पहुँचता था। घोड़े हमारे यहाँ क्या थे, शेर थे! मगर अब क्या बचा है उसी फ़ार्म में? बची है सिर्फ़ एक खौरही कुतिया। और वह भी जल्दी ही मर जाएगी, क्योंकि उसके खाने को कुछ भी नहीं है।"

लेकिन फटा-पुराना सरकाशियन कोट पहने कुबान के एक कज्ज़ाक ने अकारदीयन-वादक को नौसँकाया-नाच की धुन निकालने को कहा और हाथ नचा-नचाकर उचक-उचककर कमरे-भर में इस तरह थिरकता फिरा कि क्या कहिए! उसके पैरों को देखकर ग्रिगोरी को ऐसा लगा जैसे कि उसके बूटों के तल्ले उस कटे-फटे गंदे फ़र्श से लग ही नहीं रहे।···

आधी रात होते-होते एक कज्ज़ाक जाने कहाँ से दो बड़े सँकरे मुँह वाले घड़े ले आया। उनके बाहर एक तरफ़ अधमले, बदरंग लेबिल लगे दीखे, कार्गों पर मुहर नज़र आई और उसके चेरी से लाल मोम से सीसे के बड़े-बड़े मार्क लटके लगे। घड़ों में शायद एक-एक बाल्टी शराब थी। प्रोखोर ने एक घड़ा उठाया और बड़ी मेहनत से लेबिल के विदेशी शब्द पढ़ने की कोशिश की। इस बीच येरमाकोव सोकर जाग उठा। उसने घड़ा प्रोखोर के हाथ से छीनकर नीचे रख

दिया, अपनी तलवार म्यान से खींचकर तिरछे वार से घड़े की गर्दन उड़ा दी और चिल्लाया—"लाओ अपने-अपने गिलास !"

गाढ़ी, अलबेली महकवाली, तेज़ शराब कुछ ही क्षणों में बँट गई। र्याबचिकोव ने मजे में आकर बार-बार जीभ चटकाई और बुदबुदाते हुए बोला—"यह शराब नहीं है। यह तो आसमानी नेमत है।··· मरने के ठीक पहले पीने की चीज़ है। फिर पीना भी इसे सिर्फ़ उन लोगों को चाहिए जिन्होंने ज़िन्दगी में कभी ताश न खेला हो, तम्बाकू की महक न जानी हो और औरत के बदन को हाथ तक न लगाया हो !···यानी, यह समझो कि यह मामूली लोगों के लिए नहीं, पादरियों जैसे पाक-साफ़ लोगों के लिए बनी है।"

इसी समय प्रोखोर को अपनी किटबैग में पड़ी दवाई वाली शराब के फ़्लास्कों का ध्यान आया और वह एकदम चिल्लाया—"रुको··· प्लातोन···मेरे पास इससे अच्छी शराब है···गोदाम से जो चीज़ मैं लाया हूँ, उसके सामने यह कूड़ा है···अभी देता हूँ यह शराब···उसमें महकदार शहद का मज़ा है···और हो सकता है कि पीने में इससे भी बेहतर लगे···यह पादरियों वाली शराब नहीं है मेरे भाई, यह तो ज़ारों के पीने की शराब है···एक जमाने में ज़ार पीते थे इसे··· और आज क़िस्मत से यह हमारे हाथ लग गई है।" वह डींग मारते-मारते एक फ़्लास्क खोलने लगा।

शराब के मामले में हमेशा तैयार र्याबचिकोव ने उस गाढ़े द्रव का गिलास-का-गिलास एक साँस में ही गले के नीचे उतार लिया। इसके साथ ही उसका चेहरा पीला पड़ गया और आँखें फटी-फटी-सी रह गईं।

"यह शराब नहीं है···यह तो कारबोलिक है।" वह भर्राए गले से चीखा। उसने गिलास के बचे-खुचे द्रव का कुल्ला प्रोखोर की कमीज़ पर कर दिया और लड़खड़ाते हुए गलियारे की ओर दौड़ा।

"झूठ बोलता है, गधा। यह तो अंग्रेज़ी शराब है। अच्छी-से-अच्छी क़िस्म की ! इसकी बात का यक़ीन न करो, भाइयो !" प्रोखोर दूसरी आवाजों को दबाने की कोशिश में चिल्लाया। साथ ही उस

द्रव से गिलास भरा और गटक गया। फिर क्या था, देखते-देखते उसका चेहरा र्‌याबचिकोव के चेहरे से भी ज्यादा पीला पड़ गया।

"क्यों, क्या बात है ?" येरमाकोव ने नथुने फुलाते और प्रोखोर की धुंधलाई आंखों-में-आंखे डालते हुए पूछा—"ज़ार के पीने की शराब है न ? तेज···मीठी ? अब बोल शैतान कहीं का···वरना यही फ़्लास्क तेरे सिर पर तोड़ डालूंगा !"

प्रोखोर को बड़ी तकलीफ़ हुई, पर वह बोला कुछ नहीं। उसने सिर हिलाया, हिचकियों पर हिचकियां लेते हुए झटके से उठकर खड़ा हुआ, और र्‌याबचिकोव के पीछे लपक चला। येरमाकोव के पेट में हँसते-हँसते बल पड़ने लगे। उसने ग्रिगोरी की तरफ़ देखकर आंख मारी और बाहर निकलकर अहाते में आया। पर, एकाध मिनट बाद ही इस तरह ठठाकर हँसता हुआ लौटा कि बाक़ी आवाजें उन ठहाकों में डूब गईं।

"आखिर हुआ क्या ?" ग्रिगोरी ने खीझते हुए पूछा—"तुम इस तरह हिनहिना क्यों रहे हो बुद्धू कहीं के ?"

"अरे प्यारे, जरा जाओ और देखो कि दोनों किस तरह जमीन पर लोट लगा रहे हैं। तुम्हें पता है कि शराब के धोखे में क्या पिया उन्होंने ?"

"क्या था ?"

"जुओं को मारने की कोई अंग्रेज़ी दवा थी।"

"झूठ बात है।"

"ऊपर वाला गवाह है जो मैं गलत कह रहा हूं। गोदाम में मैंने भी इस चीज़ को पहले-पहल शराब ही समझा था। पर मैंने डॉक्टर से पूछा—'यह क्या चीज है, डॉक्टर ?'···वह बोला—'दवा है।···' मैंने कहा—'कहीं तमाम दुख-दर्दों की एक दवा तो नहीं है यह ? शराब है क्या ?' उसने जवाब दिया—'शराब का नाम न लो··· यह तो जुओं को मारने का एक तरह का लोशन है—किसी दोस्त मुल्क ने भेजा है···बाहरी इस्तेमाल की चीज़ है—पीने-पिलाने की नहीं ?"

"बेवकूफ हो तुम, अगर तुम्हें यह बात पता थी, तो तुमने उन लोगों को रोका क्यों नहीं…?" ग्रिगोरी गरम हो गया।

"शैतानों को हथियार डालने के पहले अपनी सफ़ाई कर लेने दो। मैं नहीं समझता कि इससे कोई भी मर जाएगा।" येरमाकोव ने हँसी के अपने आँसू पोंछे और ज़रा दूसरी तरह बोला—"एक बात और भी है कि अब जब पीने बैठेंगे ये लोग तो ज़रा समझ-बूझकर पिएँगे…अब तक तो इनके साथ पीना नामुमकिन रहा है…ऐसे धुआँधार पीने वालों को तो सबक़ मिलना ही चाहिए था। ख़ैर, तो हम-तुम शराब चालू रखेंगे या अब थोड़ा रुकेंगे? मेरा तो खयाल है कि पी-पाकर खत्म ही किया जाए!"

…फिर दिन निकलने के ज़रा पहले ग्रिगोरी सीढ़ी पर आया, काँपती उँगलियों से अपने लिए सिगरेट रोल की और धुंध के बीच नम दीवार से पीठ सटाकर खड़ा हो गया।

घर के अन्दर नशे में धुत लोगों की चीख-पुकारों, अकारदीयन की सिसकियों और सीटियों की लम्बी खींचों ने आसमान सिर पर उठा रखा। अपनी धुन में मस्त नर्तक अपनी एड़ियों के सहारे नाचते रहे और थकने का जैसे उन्होंने नाम ही नहीं लिया। लेकिन दूसरी ओर खाड़ी से किसी स्टीमर के भोंपू की आवाज़ आती रही। घाटों पर शोरगुल कभी-कभी ठोस गरज का रूप लेता रहा और बीच-बीच में रह-रहकर गूँजती रहीं तेज़ कमानें, घोड़ों की हींसें और इंजिनों की सीटियाँ। रेलवे-लाइन के किनारे-किनारे कहीं लड़ाई चलती रही, तोपों के मिले-जुले धड़ाके होते रहे और धड़ाकों के बीच मशीनगनों की खड़ाखड़ सुनाई पड़ती रही। सहसा ही पहाड़ के एक दर्रे के ऊपर एक रॉकेट ने आसमान की ऊँचाइयों को दहकाया, और चारों तरफ़ रोशनी छिटकाई। कुछ क्षणों तक पहाड़ों की कुबड़ी चोटियाँ हरे प्रकाश में लौ देती रहीं। इसके बाद दक्षिण की वसंती रात के अँधेरे ने फिर पहाड़ों को घेर लिया और तोपों की गरज ने और ज़ोर पकड़ लिया।

: २६ :

समुद्र की तरफ़ से ठंडी, खारी और भारी हवा के झोंके आते रहे और विचित्र अनजाने देशों की महक अपने साथ किनारे तक लाते रहे। लेकिन समुद्र-तटवर्ती उस बेजान, सूखे के शिकार नगर में कज्ज़ाकों को न सिर्फ़ हवा, बल्कि हर चीज़ पराई और बिरानी लगी। वे जहाज़ पर जगह पाने के इन्तज़ार में, भीड़ लगाए, घाट पर खड़े रहे। हरी, झाग से नहाई लहरें आ-आकर किनारे पर उमड़ती रहीं। ठंड से ठिठुरते सूरज की किरणें बादलों से झांक-झांककर धरती को देखती रहीं। ब्रिटिश और फ्रेंच बमबार-जहाज़ एक तरफ़ खड़े धुआं देते रहे। एक लड़ाकू जहाज़ का सफ़ेद, डरावना पेंदा पानी के ऊपर उतराता रहा और उसके ऊपर यहां से वहां तक धुएं की चादर तनी रही। घाटों में हर तरफ़ सन्नाटा किसी अपशकुन-सा मँडराता रहा। अभी-अभी जहाँ एक मालजहाज़ ने लंगर डाल रखा था, वहाँ गैंगवे से जल्दी-जल्दी लुकाई गई चीज़ें पानी पर लहरती रहीं। इनमें रहीं अफ़सरों के घोड़ों की काठियां, सूटकेस, कपड़े, भेड़ की खाल के कोट, लाल फ्लश के गद्दोंवाली कुर्सियां और लकड़ी के दूसरे सामान।

सो, सुबह तड़के ही, ग्रिगोरी घोड़े पर सवार होकर घाट पहुँचा। यहाँ अपना घोड़ा प्रोखोर को सौंपने के बाद वह बहुत देर तक भीड़ में घूम-घूमकर जान-पहचानियों की तलाश करता, और लोगों की चिन्ता से भरी तरह-तरह की बातें सुनता रहा। सहसा ही उसने सयानी उम्र के, एक रिटायर्ड कर्नल को देखा। कर्नल हवा की रफ़्तार से गैंगवे पर पहुँचा।···उसे आखिरी जहाज़ में भी जगह देने से इन्कार कर दिया गया था।···

इस छोटे क़द के, पंचायती कर्नल के गालों पर खरोंच के निशान थे और थैलियों-सी आंखों में आंसू की बूंदें थीं। इसने अभी कुछ मिनट पहले ही गारद के अफ़सर को तलवार वाली पेटी पकड़कर घसीटा था, कुछ फुसफुसाकर कहा था, और गंदे रूमाल से तम्बाकू के धुएं से काली अपनी मूंछें और कांपते हुए होंठ पोंछे थे। फिर, सहसा ही वह अपने-आपमें आता लगा था।···परन्तु, इस घटना के

एक क्षण बाद ही किसी तेज़ उंगलियों वाले कज्ज़ाक ने चम-चम करते 'ग्राउनिंग को उसके खूंखार पंजों से दूर खींचा था, और उसे पैर पकड़ कर, अफ़सरों वाले हल्के-भूरे बरानकोट सहित, बक्सों के अम्बार पर ढकेल दिया था।…

और, फिर गैंगवे के चारों ओर लोगों का रेला और जोरों से उमड़ पड़ा था। घाटों पर गुत्थमगुत्था मच गई थी और कुछ शरणार्थियों की भर्राई हुई आवाज़ों ने तूफ़ान खड़ा कर दिया था।…

फिर आखिरी स्टीमर ने घाट छोड़ा तो औरतों की सिसकियों, बौखलाहट से भरी चीख-पुकारों और कोसा-कासियों से पूरा वातावरण भर उठा। मगर जहाज के भोंपू की गूंज बुझ भी न पाई कि लोमड़ी की खाल की टोपी वाला एक जवान कज्ज़ाक पानी में कूद पड़ा और, तैरते हुए स्टीमर की ओर बढ़ने लगा।

"यानी, इन्तज़ार करते नहीं बना!" एक कज्ज़ाक आह भरकर बोला।

ग्रिगोरी के पास खड़े एक दूसरे कज्ज़ाक ने अपनी तरफ़ से कहा—"साफ़ है कि पीछे छूट जाना इसके लिए खतरे से खाली नहीं है…लगता है कि लाल फ़ौजियों को इसने खासा नुकसान पहुँचाया है……"

ग्रिगोरी दांत भींचकर तैरते काल्मीक को घूरता रहा। काल्मीक के हाथों की हरक़त ज्यों-ज्यों धीमी हुई, त्यों-त्यों उसके कंधे पानी में हिले। उसका बरानकोट पानी से भीगकर भारी हो उठा और उसे नीचे की तरफ़ खींचने लगा। सहसा ही एक लहर ने लोमड़ी की खालवाली उसकी लाल टोपी सिर से हटाकर अलग कर दी।

"यह पानी में डूबकर रहेगा!" लम्बा काकेशियाई कोट पहने किसी बूढ़े ने हमदर्दी से कहा।

ग्रिगोरी तेज़ी से मुड़ा और अपने घोड़े की तरफ़ बढ़ा। उसने प्रोखोर को र्‌याबचिकोव और बोगातिरयोव से काफ़ी गरम होकर बातें करते देखा। इस बीच वे दोनों भी घोड़ों पर सवार होकर वहाँ आ गए थे।…

र्यावचिकोव, ग्रिगोरी को देखते ही, काठी पर घूमा, बेसब्री से घोड़े को एड़ लगाई और चिल्लाकर बोला—"जल्दी करो, पैन्तेलेयेविच !" ···फिर, ग्रिगोरी के पास आने की राह देखे बिना चीखा—"आओ, हम लोग वक़्त रहते पीछे हट चलें। हमने कोई आधी स्क्वैड्रन कज्जाक जमा कर लिए हैं और हम पहले ग्लेंदजिक और फिर वहाँ से जॉर्जिया जाने की बात सोच रहे हैं। तुम्हारा इरादा क्या है ?"

ग्रिगोरी, हाथ अपने बरानकोट की जेबों में डाले, बेमतलब भीड़ लगानेवाले कज्जाकों को चुपचाप एक ओर करता, उन तीनों की तरफ़ बढ़ा।

"अच्छा, तो तुम हमारे साथ चल रहे हो या नहीं ?" र्यावचिकोव ने अपना घोड़ा ग्रिगोरी के पास लाते हुए आग्रह से पूछा।

"नहीं, मैं नहीं चलूंगा।"

"एक कज्जाक फ़ौजी कमांडर भी हमारे साथ चल रहा है। उसे इंच-इंच रास्ता पता है और वह हमें आँख मूंदकर तिफ़लिस तक ले जा सकता है। चलो ग्रीशा, साथ चलो ! वहाँ से हम जाकर तुर्कों से मिल जाएँगे। क्या कहते हो तुम ? आखिर हमें अपने को, जैसे भी हो, बचाना ही है। सारा खेल अब खत्म होने-होने को हो रहा है, लेकिन तुम तो जैसे अधमरी मछली हो रहे हो।"

"नहीं, मैं नहीं चलूंगा।" ग्रिगोरी ने घोड़े की रासें ओखोर से लीं और घोड़े की पीठ पर यों सवार हुआ जैसे कि कोई बूढ़ा हो—"मैं नहीं जाऊँगा—कोई फ़ायदा नहीं। फिर वैसे भी काफ़ी देर हो चुकी है··· समझे !"

र्यावचिकोव ने मायूसी और गुस्से से चारों ओर निगाह दौड़ाई और अपनी तलवार की अफ़सरीवाली गाँठ तोड़ गिराई।

इस बीच पहाड़ियों की तरफ़ से लाल फ़ौजियों की क़तारें उमड़ चलीं और सीमेंट के एक करखाने के पास मशीनगनें एकदम खड़खड़ाने लगीं। बख्तरबन्द गाड़ियों से लोगों की क़तारों पर गोलियां बरसने लगीं। तोप का पहला गोला एक हवाचक्की के पास आकर गिरा।

"चलो, क्वार्टर चलो···साथियो···बिल्कुल मेरे पीछे-पीछे चले

आओ !" ग्रिगोरी ने तनते हुए आदेश दिया । उसमें सहसा ही जैसे नई जान आ गई । लेकिन, र्याबचिकोव ने लपककर ग्रिगोरी के घोड़े की लगाम थाम ली और भयभीत स्वर में चीखा—"यहां से जाओ मत ! फ़िलहाल, यहीं बने रहो···अरे भाई, मरना ही तो साथ ही मरो···साथ मरना भी उतना नहीं खलता ।"

"उफ···शैतान कहीं के···चलो···बढ़ो आगे ! मौत का ज़िक्र क्यों करते हो ? क्या बेकार की बकबक है यह ?" और, क्रोध से पागल ग्रिगोरी तो आगे कुछ और भी कहता, मगर समुद्र की तरफ़ से आती गरज मे उसकी आवाज डूब गई ।

'एम्पायर ऑफ़ इंडिया' नाम का जहाज खाड़ी से बाहर हो गया था, और उसने वहां से अपनी बारह इंच के दहानोंवाली तोपों से गोलों की बौछार कर दी थी ।···

जहाज ने खाड़ी से बाहर जानेवाले सभी स्टीमरों को ढक लिया। लाल और हरी सेना की नगर के बाहरी हिस्सों की तरफ़ बढ़ती क़तारों को जमीन से पाट दिया, और फिर लाल तोपखानों को निशाना बनाने के लिए अपनी तोपों के दहाने दर्रे की चोटी की तरफ़ मोड़ दिए । ब्रिटिश तोपों के गोले घाट पर जमा कज्जाकों के सिरों के ऊपर से उड़ने लगे ।···

ऐसे में बोगातिरयोव का घोड़ा कूल्हे के बल बैठ गया तो उसने उसकी लगाम पूरे ज़ोर से खींची और गोलाबारी के तूफ़ान के बीच चिल्लाकर बोला—"भाई जान, ब्रिटिश तोपों की ज़बान काफ़ी तेज है । लेकिन, वे अपनी सारी आग सिर्फ़ बरबाद कर रही हैं, और कुछ नहीं । सिवाय गरज से आसमान सिर पर उठाने के और क्या कर पा रही हैं वे !"

"गरजने दो ब्रिटिश तोपों को ! हमारे लिए इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता ।" ग्रिगोरी ने मुस्कराते हुए अपना घोड़ा सनकारा और गली में मुड़ दिया । नुक्कड़ पर खड़े छः घुड़सवार, नंगी तलवारें लपलपाते, अपने घोड़े उछालते उसकी ओर लपके ।

सबसे आगेवाले घुड़सवार के सीने पर ख़ूनी लाल रंग का रिबन चमका ।

भाग ८

: १ :

पिछले दो दिन दक्षिणी गरम हवा बहती रही थी···खेतों की बची-खुची बर्फ़ गलती गई···वसन्त की झाग उगलती छोटी-छोटी धाराओं का कल-निनाद थिर हो गया···स्तेपी के नाले-नालियां और छोटी-मोटी नदियां शांत हो गईं।···

पर, तीसरे दिन तड़के हवा थम गई और मैदान के पसारे पर धुंध के भारी-भरकम बादल उतर आए। पिछले साल की फ़ेदर घास के झुरमुटों पर नमी की चांदी मढ़ गई। डूह, खड्ड, गिरजों के घंटों के ऊपर की मेहरावें, और पिरामिड-चिनारों के नुकीले ताज अभेद्य, दूधिया धुंधलके में डूब गए।···दोन के चौड़े स्तेपी मैदान में वसन्त आ गया।

उस दिन सवेरे की घड़ियां धुंध में नहाई रहीं कि बीमारी से उठने के बाद पहली बार अकसीनिया बाहर निकलकर बरसाती में आई और बहुत देर तक वसन्ती हवा की ताज़गी और नशीली मिठास से अपनी सांसें सींचती रही। फिर वह टहलते-टहलते बगिया तक जा पहुंची और हाथ की बाल्टी नीचे रखकर कुएँ की जगत पर बैठ गई।

अकसीनिया को दुनिया एकदम नई-नई सी लगी···बहुत ही शानदार···किसी ताज़े जादू से भरी। उसका मन तरह-तरह की भावनाओं से भर उठा और आंखें मन के संकेत पर चमकने लगीं। उसने बच्चों की तरह स्कर्ट का सिरा अपनी उँगलियों में लपेटते हुए आसपास की हर चीज़ को आंख भर-भरकर देखा। क्या धुंध की चादर में लिपटी दूरी,

क्या गली हुई बर्फ़ के पानी में किल्लोल करते बग़ीचे के सेब के पेड़, क्या गीली बाड़ें और क्या गहरे पानी से लबालब लीकोंवाली आगे की सड़क सभी कुछ उसे इतना सुन्दर लगा कि कल्पना जवाब दे गई। हर चीज़ में तरह-तरह के रंगों के कोमल फूल खिलने लगे, और ऐसा अनुभव हुआ, जैसे कि धूप का किरीट उनके चारों ओर जगमग कर रहा हो।···

वृक्ष के बीच से झांकते आसमान के एक झलाझल टुकड़े ने अपने शीतल नीलम से अकसीनिया की आंखों में चकाचौंध पैदा कर दी। सड़ते हुए तिनकों और बर्फ़ से खाली काली मिट्टी से उठती गंध उसे इतनी जानी-पहचानी और प्यारी लगी कि उसकी सांसों की लम्बाई बढ़ गई और उसके होंठों के सिरों पर मुस्कराहट थिरकने लगी। इसी बीच कहीं दूर गाती बुलबुल के सरल-सहज स्वर कानों में पड़े तो उसके मन में अनजाने ही एक उदासी-घुली गांव-घर की दूरी खटकी, दिल की धड़कन तेज़ हुई और दो छोटे-छोटे आंसू पलकों से ढुलक पड़े।···

फिर, उसे लगा कि एक ज़िन्दगी है जो मुझसे रूठकर फिर मेरे पास आ गई है। बस, तो सोच-विचार त्यागकर वह ज़िन्दगी के नए उल्लास में डूब गई। उसमें अदम्य इच्छा जागी कि वह हर चीज़ को अपने हाथों से छुए, हर चीज़ को अपनी आंखों से देखे। उसके मन ने कहा—नमी से संवराई-खड़ी कुरान्त की झाड़ी पर हाथ रखकर देख···पीले-गुलाबी, मखमली फूलों से भरे सेब की शाख से गाल सटाकर खड़ी हो जा··· गिरी हुई बाड़ों को पार कर···सारे रास्तों से दूर दलदल के बीच हिल ···और चौड़े खड्ड के पार वहां पहुंच जहां खेत धुंधलाई दूरी में खो रहे हैं और जहां जाड़े की फ़सल में हरियाली की परियां जगमगा रही हैं।···

कई दिन तक अकसीनिया को किसी भी क्षण ग्रिगोरी के आने की आशा रही। पर, फिर घर के मालिक के यहां जो पास-पड़ोस के लोग आए, उन्होंने बतलाया कि लड़ाई अब भी चल रही है। कितने ही कज्ज़ाक जहाज़ों में बैठकर नोवोरोस्सिइस्क से क्रीमिया चले गए हैं और जो बाक़ी रह गए हैं वे या तो लाल सेना से जा मिले हैं या उन्हें खानों

में भेज दिया गया है···

सो, सप्ताह खत्म होते-न-होते अक्सीनिया ने घर लौटने का पक्का इरादा कर लिया, और मौक़े की बात कि सफ़र के लिए उसे एक साथी भी जल्दी ही मिल गया।

हुआ यह कि एक दिन शाम को नाटे क़द का एक बूढ़ा कुबड़ा बिना दरवाज़ा खटखटाए, घर में घुस आया। अन्दर आने पर झुककर अभिवादन तो उसने किया, पर मुंह से कुछ नहीं बोला और धूल से नहाए अपने अंग्रेज़ी बरानकोट के बटन खोलने लगा।···कोट की सारी सीवन जहां-तहां से उधड़ी दीखी और उसके बदन पर वह बोरे-सा झूलता मालूम पड़ा।

घर के मालिक ने 'मान-न-मान, मैं तेरा मेहमान' के प्रतीक उस आदमी को आश्चर्य से घूरकर देखा। बोला—"भले आदमी, दुआ-सलाम कुछ नहीं···और उम्मीद शायद यह कर रहे होगे कि यहां तुम्हें आराम से ठहरने को जगह मिल जाएगी ?"

बूढ़े ने फुर्ती से अपना बरानकोट उतारा, ड्योढ़ी पर झटका, सावधानी से हुक पर टांगा, फिर अपनी छोटी, सफ़ेद दाढ़ी पर हाथ फेरा और बोला—"माफ़ करना, मेरे भाई ! लेकिन इस ज़माने में कैसे काम करना चाहिए, यह मैंने खूब सीख लिया है···सीखा है कि पहले अपने कपड़े उतारो और फिर किसी भी मकानवाले से मकान में ठहरने की बात करो, नहीं तो घर में घुस नहीं पाओगे···इन दिनों ऐसा गंवारपन फैल गया है कि कोई किसी मेहमान को देखकर खुश नहीं होता···"

"लेकिन हम तुम्हें रखेंगे क्या ? देखो न, यहां तो भीड़ पहले से ही लगी हुई है।" मकान-मालिक ने ज़रा और मुलायम पड़ते हुए कहा।

"मुझे उतनी ही जगह चाहिए, जितनी किसी कुत्ते को···मैं तो यहीं दरवाज़े के पास पैर सिकोड़कर पड़ा रहूंगा और सो जाऊंगा।"

"लेकिन तुम हो कौन, बाबा ? सोवियत लोगों के पास से भागकर आए हो क्या ?" मालकिन ने उत्सुकता से पूछा।

बकबकिया बूढ़े ने दरवाज़े के पास एड़ियों के बल बैठते हुए जवाब दिया—"तुमने बिलकुल ठीक समझा···मैं उन्हीं लोगों के पास से

भागकर आ रहा हूँ···मैं दौड़ता रहा···दौड़ता रहा, यानी समन्दर तक दौड़ता चलता आया हूँ। चुपचाप दुबारा लौटा जा रहा हूँ, दौड़ते-दौड़ते चूर हो गया हूँ···।"

"यह सब तो हुआ···लेकिन तुम हो कौन ? कहाँ के हो ?" घर के मालिक ने अपना सवाल दोहराया।

बूढ़े ने दर्जी वाली एक जोड़ कैंचियाँ जेब से निकालीं, उन्हें बार-बार उलटा-पलटा और उसी तरह मुस्कराते हुए बोला—"यह रहा मेरा पासपोर्ट···इसी के सहारे इतना फ़ासला तय कर नोवोरोस्सिइस्क तक आ सका हूँ। लेकिन मेरा घर यहाँ से अभी दूर है···यानी व्येशेन्स्काया ज़िले के दूसरी तरफ़ है···और समन्दर के खारे पानी का ज़ायका लेने के बाद अब वहीं वापस जा रहा हूँ।"

"मैं भी व्येशेन्स्काया की हूँ, बाबा !" अकसीनिया ख़ुशी से खिलते हुए बोली।

"सचमुच !" बूढ़े ने आश्चर्य से कहा—"कहीं भी अपने देश-गाँव की किसी बहू-बेटी से मुलाकात हो जाए तो बड़ी ख़ुशी होती है। वैसे आजकल ताज्जुब इस पर भी नहीं होता। हम तो यहूदियों की तरह पूरी दुनिया में फैले हुए हैं। कुबान में हालत यह थी कि कोई किसी कुत्ते को लकड़ी खींचकर मारता तो वह दोन के किसी-न-किसी कज़्ज़ाक को लगती। जहाँ देखो वहीं कज़्ज़ाक कि इनसे जान छुड़ाना मुश्किल। और मज़ा यह कि दोन के जितने कज़्ज़ाक वहाँ इस तरह नज़र आए, उनसे कहीं ज़्यादा ज़मीन के नीचे मौत से मुंह ढांके पड़े रहे। मेरे अज़ीज़ो, फ़ौज के इस तरह पीछे हटने के दौरान, मैंने क्या-क्या नहीं देखा ! तुम सोच नहीं सकते कि लोग किस तरह तकलीफ़ें उठा रहे हैं, मुसीबतें झेल रहे हैं। अभी दो दिन पहले की बात है कि मैं ऐसे ही किसी स्टेशन के मुसाफ़िरखाने में बैठा था और मेरी बग़ल में बैठी थी किसी शरीफ़ घर की एक चश्मे वाली औरत। औरत चश्मे के अन्दर से जुएं देख रही थी और जुओं की फ़ौजों की फौजें उसके बदन पर मार्च कर रही थीं। वह उँगलियों से जुएँ बीन-बीनकर फेंक रही थी, और यों मुंह बना रही थी जैसे कि जंगली सेब दाँतों के नीचे आ गया हो।

उस पर यह कि वह जितनी जुएँ पकड़-पकड़कर मारती थी, उसके माथे पर उतने ही बल पड़ते जाते थे। ऐसा लगता था जैसे कि औरत अभी दोहरी हुई और अभी मरी। और दूसरी तरफ़ हट्टे-कट्टे लोग दूसरे लोगों को तलवार के घाट उतार देते हैं और उनके चेहरे पर शिकन तक नहीं आती। वे उधर से निगाहें तक नहीं मोड़ते। ऐसे ही एक 'सिकन्दर' को मैंने देखा। उसने तीन कालमीकों को काटकर फेंक दिया, तलवार अपने घोड़े की अयाल से पोंछी, सिगरेट निकालकर जलाई, अपना घोड़ा मेरे पास लाया और बोला—"ऐसे आँखें फाड़-फाड़कर क्या देख रहे हो, बाबा ? चाहते हो कि तुम्हारे भी बीच से दो टुकड़े कर दूँ ?' मैंने जवाब दिया—'ऊपर वाला मुझे बचाए! अगर तुम मेरा सिर धड़ से अलग कर दोगे तो मैं रोटी कैसे खाऊँगा ?···' आदमी हँसा और घोड़े को उड़ा ले चला।"

"चाहे जो कहो, मगर इन्सान का हाथ आज इन्सान के मामले में इतना साफ़ हो चुका है कि उसे उसके मारने में कुछ नहीं लगता··· जुएँ मारने में तो कुछ लगता भी है। बगावत के इस ज़माने में इन्सान तो ऐसा सस्ता हो गया है कि बस!" घर के मालिक ने संक्षेप में कहा।

"यह सच है।" मेहमान ने मेज़बान की हाँ-में-हाँ मिलाई—"आदमी जानवर तो होता नहीं···जानवर ही आसानी से हर चीज़ के आदी हो सकते हैं···इसीलिए मैंने उस औरत से पूछा—'कौन हैं आप? देखने से किसी मामूली घर की तो मालूम होती नहीं।'···उसने मुझे देखा और चेहरा आँसुओं से तर करते हुए बोली—'मैं जनरल ग्रेचीखिन की बीबी हूँ।'···मैंने मन-ही-मन कहा—'खैर···तुम मेजर की बीबी हो और चाहे जनरल की, लेकिन जुएँ तुम्हारे बदन में वैसी ही हैं जैसे कि किसी खौरही बिल्ली के बदन में।'···और, फिर मैं उससे बोला—'माफ़ कीजिए, मेम साहब···लेकिन अगर आप इन रेंगते हुए कीड़ों को इसी रफ़्तार से मारती रहीं तो माँ-मेरी की दावत के दिन तक तो आपको साँस मिलेगी नहीं···फिर, आपके सारे-के-सारे नाखून टूट जाएँगे, सो अलग से! अरे, इन सबको एक बार में मसल डालिए।'

···औरत ने पूछा—'लेकिन यह मुमकिन कैसे है ?'···मैंने कहा—'अपने कपड़े उतारकर किसी कड़ी जमीन पर फैला दीजिए और फिर उन पर बोतल फिरा-फिराकर जुओं का काम तमाम कर दीजिए।'··· फिर क्या था, मैंने देखा कि जनरल की बीवी अपनी जगह से उठी, भागकर पानी के हौज़ के पीछे गई और अपने कपड़े उतारकर उन पर हरे कांच की बोतल इस तरह फिराने लगी जैसे कि जिन्दगी-भर यही करती रही हो। मैंने मन-ही-मन कहा—'नीली छतरीवाले के यहां किसी चीज की कमी नहीं···हर चीज़ की कसरत है। उसने इन कीड़ों को बड़े घरों के लोगों पर भी छोड़ दिया है कि हमेशा मेहनतकशों का ही खून न चूसते रहो, जरा इनके खून का भी मज़ा लो। ऊपर वाला कोई ऐसा-वैसा थोड़े ही है। वह अपना काम खूब जानता है और कभी-कभी लोगों पर रहम कर ऐसे फ़ैसले करता है कि उससे बेहतर कुछ और दिमाग़ में ही नही आता'···।"

दर्ज़ी बेरोकटोक बकता गया और घर के मालिक और मालकिन को अपनी बात में पूरी तरह दिलचस्पी लेते देखकर बोला—"बतलाने को तो मेरे पास तमाम दिलचस्प बातें हैं, पर फिर देखा जाएगा···इस वक़्त थकान बहुत है··· और बड़ी नींद आ रही है।"

सो, खाने के बाद सोने की तैयारी करते समय अकसीनिया से बोला—"तो, तुम यहां अभी और ठहरने की बात सोच रही हो क्या ?"

"नहीं, मैं घर लौटने की बात सोच रही हूं, बाबा !"

"तो, मेरे साथ ही चलो···हम दोनों के लिए ही अच्छा रहेगा।"

अकसीनिया बड़ी प्रसन्नता से राज़ी हो गई और अगले दिन घर के मालिक और मालकिन से विदा लेने के बाद दोनों नोवोमिखाइलोव्स्की नाम के उस वीरान गांव से रवाना हो गए।···

बारहवें दिन, रात भीगने के बाद वे मिल्युतिन्स्काया नाम के गांव में पहुंचे, और उन्होंने एक बड़े, देखने में खाते-पीते परिवार के घर में ठहरने की अनुमति मांगी। अगले दिन अकसीनिया के साथ के बूढे ने एक सप्ताह तक वहीं ठहरकर सुस्ता लेने और अपने कटे हुए, खून से तर पैरों को ठीक-ठाक कर लेने का फ़ैसला किया। आगे बढ़ना उसे

दुश्वार लगा। फिर यह हुआ कि उस बड़े घर में उसके लिए कुछ काम निकल आया, और अपना धंधा नए सिरे से शुरू करने को उत्सुक वह बूढ़ा तड़पड़ खिड़की के पास आराम से जम गया। यानी उसने तांबे की कमानियों वाला अपना चश्मा नाक पर चढ़ा लिया, और तेजी से कपड़ा काटने लगा।

फिर, अकसीनिया वहां से जाने को हुई तो उस बूढ़े मसखरे ने उसके सिर पर क्रॉस बनाया और आशा के विपरीत उसकी आंखों में एकाध आंसू भी आ गए। लेकिन उन्हें फ़ौरन ही पोंछते हुए, हमेशा की तरह, हंसकर बोला—

"ग़रज़ खुद तो किसी की मां नहीं बनती, पर लोगों को लोगों से जोड़ ज़रूर देती है।···तुम अकेली जा रही हो, मेरा दिल बहुत दुख रहा है···लेकिन···हो कुछ नहीं सकता···बेटी, तुम्हें अकेले ही जाना पड़ेगा, क्योंकि तुम्हारा रहबर लंगड़ा हो गया है और ज़रूरत इसकी है कि कोई जौ की रोटी पका-पकाकर खुद उसे खिलाए··· फिर, यह भी है कि सत्तर साल की इस उम्र में तुम्हारे साथ काफ़ी घुड़दौड़ कर चुका मैं···अगर कहीं मेरी बूढ़ी बीवी से मुलाकात हो जाए तो कह देना कि तुम्हारा बुड्ढा ठीक-ठाक है···सही-सलामत है। दूरमार तोप के दहाने के सामने रह चुकने के बावजूद जिन्दा है, रास्ते में शरीफ़ों के लिए कुछ पाजामे-पजामे सीने लगा है···किसी भी दिन वापस आ सकता है।···कहना, बूढ़ा बुद्धू है···मोर्चे से पीछे हट आया है, और घर लौट रहा है···और दुबारा स्टोव के ऊपर चढ़कर बैठने के लिए तड़फ रहा है···"

···अकसीनिया को रास्तें में कई दिन लग गए। वोकोव्स्काया में उसे उधर ही जाती गाड़ी मिल गई, तो वह उस पर सवार होकर तातारस्की आ गई। शाम ढलते-ढलते अहाते में दाखिल हुई और उसने ग्रिगोरी के घर पर नजर डाली तो एक सिसकी गले में घुटकर रह गई। औरत वीरान बावर्चीखाने में आकर फूटकर रोई। इस तरह एक अर्से का दिल का बोझ उतारने के बाद नदी से पानी लाई, स्टोव जलाया और मेज़ के किनारे हाथ लटकाकर बैठ गई। फिर विचारों में ऐसी खोई कि

दरवाज़े के चरमराने और इलीनीचिना के अन्दर आने का उसे पता ही न चला। हाँ, ग्रिगोरी की माँ को देखकर उसका खयालों का तार ज़रूर टूटा। बुढ़िया शांत भाव से बोली—"ज़्द्रावियत[1] पड़ोसिन...बहुत दिन बाहर रहीं...।"

अकसीनिया ने घबराहट से उसकी ओर देखा और एकदम उठकर खड़ी हो गई।

"लेकिन तुम इस तरह मुझे घूर क्यों रही हो? कुछ बोलतीं क्यों नहीं? कोई बुरी खबर तो नहीं लाईं?" इलीनीचिना धीरे-धीरे मेज़ के पास आकर बेंच के सिरे पर बैठ गई। पर, उसकी निगाह प्रश्न बनी अकसीनिया के चेहरे पर उसी तरह गड़ी रही।

"बुरी खबर क्यों होगी मेरे पास? तुम्हारे यहाँ आने की उम्मीद तो थी नहीं...और, तुम आईं तो आहट भी नहीं मिली, इसलिए तुम्हें देखकर थोड़ा-सा चौंक-सी गई थी मैं...और बस!" अकसीनिया ने खीझते हुए कहा।

"तुम तो बहुत ही दुबली हो गई हो...हड्डियाँ-भर बदन पर रह गई हैं।"

"मुझे टायफ़स हो गया था।"

"और हमारा ग्रिगोरी...कैसा है? उसे कहाँ छोड़ा तुमने? जीता-जागता तो है न?"

अकसीनिया ने संक्षेप में ग्रिगोरी की पूरी जानकारी शब्दों में बाँध दी। इलीनीचिना ने बीच में एक शब्द नहीं कहा। बात पूरी होने पर पूछा—"तुमसे जब वह अलग हुआ तो बीमार तो नहीं था न?"

"नहीं...बिलकुल बीमार नहीं था।"

"और, उसके बाद तुम्हें उसके बारे में कुछ पता नहीं चला?"

"नहीं।"

इलीनीचिना ने चैन की साँस ली। "खैर...इस खुशखबरी के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया...यहाँ गाँव में तो जाने क्या-क्या कहा जा रहा है

---

१. अभिवादन।

उसके लिए !"

"क्या-क्या कहा जा रहा है ?" अकसीनिया ने बहुत ही धीरे से पूछा।

"उफ़···किस तरह बकवास करते हैं लोग !···उनकी बेसिर-पैर की बातें सुनकर कान पर हाथ रख लेना पड़ता है···जहाँ तक उधर से आने वालों का सवाल है, इतने गाँव वालों में सिर्फ़ एक बेस्खलेबनोव वापस आया है···उसने येकेतेरिनोदार में ग्रिगोरी को अपनी आँखों से बीमार देखा है···बाक़ी किसी की बात का मुझे यक़ीन नहीं।"

"लेकिन, लोगों ने बतलाया क्या-क्या है, दादी ?"

"सुना कि सीनगिन गाँव के एक कज्ज़ाक ने कहा कि ग्रिगोरी को लाल फौजियों ने नोवोरोस्सिइस्क में मार डाला है। सो···माँ का दिल कैसे मानता !···इतनी लम्बी मंज़िल तय कर सीनगिन गई और उस खास कज्ज़ाक से मिली। वह बिलकुल नकार गया। बोला—मैंने न तो ग्रिगोरी को देखा है और न ही उसके बारे में कुछ सुना है।··· फिर एक दूसरी अफ़वाह सुनी कि उसे जेल में डाल दिया गया और वहाँ वह टाइफ़स से मर गया।"

इलीनीचिना ने पलकें झुका लीं और फिर बहुत देर तक अपने बड़े-बड़े गाँठ-गँठीले हाथ चुपचाप देखती रही। औरत के चेहरे और चेहरे की झूलती खाल से शान्ति टपकती रही। उसके दोनों होंठ भिंचे रहे। पर सहसा ही उसके साँवले गालों पर लाली दौड़ गई और पलकें फड़-फड़ाने लगीं। उसने अकसीनिया पर धधकती हुई नज़र डाली और भर्राए हुए गले से बोली—"मैं इस बात पर ज़रा भी यक़ीन नहीं करती···कर नहीं सकती। हो नहीं सकता कि मेरा आखिरी बेटा भी कोई मुझसे लूटकर ले जाए···वह नीली छतरीवाला किस जुर्म की ऐसी सज़ा देगा मुझे ! अब मुझे थोड़े दिन और जीना है···मेरे दिन तो अब इने-गिने हैं···और, कौन कम सदमे उठाए हैं अब तक जो यह नया पहाड़ गिरेगा मेरे सिर पर ! ग्रीशा सही-सलामत है। मेरे दिल को कभी कुछ ऐसा-वैसा लगा ही नहीं, इसलिए मेरे कलेजे का टुकड़ा···मेरा बेटा अभी ज़िंदा है।"

अकसीनिया कुछ नहीं बोली। सिर्फ मुँह मोड़ लिया। इसके बाद बावर्चीखाने में बहुत देर तक सन्नाटा रहा। अचानक ही हवा ने बरसाती वाला दरवाजा झटके से खोल दिया तो दोन के किनारे के दूर के चिनारों के बीच बाढ़ का पानी लहरें लेता दीखा और पानी के आरपार जंगली कलहंस एक-दूसरे को चिंता से आवाजें लगाते सुन पड़े।

अकसीनिया ने उठकर दरवाजा बंद कर दिया और स्टोव के सहारे खड़ी हो गई। जरा देर बाद सधे हुए स्वर में बोली—"ग्रिगोरी को लेकर मन मैला न करो, दादी···दुनिया की कोई बीमारी ऐसे आदमी को तोड़ नहीं सकती···वह तो लोहा है बिलकुल! उस तरह के लोग मरते नहीं। हम रवाना हुए तो हाथ ठंड से जमे जा रहे थे, मगर उसने रास्ते-भर एक बार भी दस्ताना नहीं पहना।"

"उसे बच्चों की भी याद आती है कभी?" इलीनीचिना ने बुझे मन से पूछा।

"वह बच्चों की और तुम्हारी, दोनों की ही याद अक्सर करता है···बच्चे ठीक-ठाक तो हैं न?"

"बच्चे ठीक-ठाक हैं···उन्हें क्या तकलीफ़ हो सकती है? हाँ, हमारा पँन्तेली-प्रोकोफियेविच जरूर नहीं रहा···हम बिलकुल अकेले रह गए···"

अकसीनिया ने क्रॉस बनाया, और बुढ़िया ने जिस स्थिर मन से अपने पति के मरने की बात कही, उसे देखकर उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा।

इलीनीचिना मेज पर हाथ टेककर उठी। बोली—"मैं यहाँ तुमसे बैठी बातें करती रही और वह देखो···वहाँ अहाते में अँधेरा उतर आया।"

"जरा और बैठो न, दादी!"

"नहीं, दून्या घर में अकेली है···अब मुझे जाना चाहिए।" बुढ़िया ने अपने सिर का रूमाल ठीक करते हुए कहा। बावर्चीखाने में चारों तरफ़ नजर दौड़ाई और त्योरियाँ चढ़ाते हुए बोली—"तुम्हारा स्टोव धुआँ दे रहा है···तुम्हें चाहिए था कि कहीं गई थीं तो इतने वक्त के लिए किसी और को यहाँ टिका जातीं···अच्छा···मैं चली···अलविदा!"

फिर दरवाजे की कुंडी पर हाथ रखा तो बिना गर्दन मोड़े बोली—

"घर ठीक-ठाक कर लेना तो आना हमारे यहाँ भी···जरूर आना··· शायद इस बीच तुम्हें ग्रिगोरी की कुछ खोज-खबर मिल जाए···मिल जाए तो हमें भी बतला देना।"

और उस दिन से अकसीनिया और ग्रिगोरी के परिवार के लोगों के बीच के सम्बन्ध एकदम बदल गए, जैसे कि ग्रिगोरी के जीवन की चिन्ता उन्हें एक-दूसरे के पास ले आई और अपनापे के सूत्र में बाँध गई।

अगले दिन सवेरे दून्या की नजर अहाते में खड़ी अकसीनिया पर पड़ी तो उसने उसे आवाज दी, खुद बाड़ तक बढ़ गई, उसके गल-बहियाँ डाल ली और प्यारे ढंग से मुस्कराते हुए सहज भाव से बोली—"उफ़···तुम कितनी दुबली हो गई हो, अकसीनिया! माँस तो हड्डियों पर बचा ही नहीं!"

"ऐसी ऊबड़खाबड़ जिन्दगी हो तो आदमी दुबला न होगा तो और क्या होगा!" अकसीनिया जवाब में मुस्कराई और दून्या के गालों पर भरपूर जवानी और हुस्न के गुलाब खिलते देखकर उसे उससे मन-ही-मन ईर्ष्या हुई।

लड़की ने जाने क्यों आवाज धीमी कर ली। पूछा—"माँ कल आई थीं तुम्हारे पास?"

"हाँ, आई थीं।"

"तो, तुमसे ग्रिगोरी के बारे में भी कुछ पूछा था उन्होंने?"

"हाँ।"

"और रोई-धोई तो नहीं?"

"बिलकुल नहीं···बुढ़िया बड़े ही मजबूत दिल की है।"

फिर विश्वास-भरी दृष्टि से अकसीनिया की ओर देखती हुई दून्या बोली—"अच्छा होता कि थोड़ा रो लेती···मन हल्का हो जाता···तुम जानती हो, अकसीनिया, इस जाड़े में तो वे जैसी अजीब हो गई हैं वैसी पहले कभी थीं ही नहीं···उन्होंने पापा की मौत की खबर सुनी तो मैं एकदम डर गई···मुझे लगा कि इनका कलेजा फट जाएगा··· लेकिन, उन्होंने आँख में एक आँसू नहीं आने दिया। सिर्फ़ बोलीं—

'ऊपरवाला तुम्हारे पापा को अपनी बाँहों में ले···उन्हें दुनिया की दुख-मुसीबत से छुटकारा मिल गया है···।' और रात होने तक किसी से कुछ नहीं बोली। मैंने उनसे तमाम तरह की बातें करनी चाहीं, पर उन्होंने मुझे साफ़ टाल दिया और मुंह नहीं खोला। ऐसा मन कलपा मेरा कि कुछ न पूछो! पर शाम को मैं ढोर बाँधकर अहाते से आई तो पूछा—'माँ, खाने को कुछ बनेगा या नहीं?···' सिर्फ तब अपने दिल से ग़म का पत्थर हटाकर उन्होंने बोलना शुरू किया···।' दून्या ने लम्बी आह भरी, और ऊपर देखते हुए पूछा—"हमारा ग्रिगोरी मर गया क्या?"

"मैं नहीं जानती, दून्या!"

दून्या ने उसे प्रश्न-भरी, तिरछी दृष्टि से देखा और उसके मुंह से और लम्बी आह निकल गई—"माँ तो बस भैया के लिए तड़पती रहती हैं। जब ग्रिगोरी का नाम लेती हैं तो उसे अपना सबसे छोटा बेटा कहती हैं और सपने में भी उसके दुनिया से उठ जाने की बात नहीं सोचतीं···लेकिन जानती हो अकसीनिया, अगर उन्हें मालूम हो जाए कि वह सचमुच मर गया, तो सदमे से उनका दम निकल जाएगा। अब एक वही तो है उनकी जिन्दगी का सहारा। एक उसी उम्मीद के सहारे तो वे जीती हैं। अब तो जैसे बच्चों तक की उनको दरकार नहीं···फिर, खुद उनका अपना दिल भी तो किसी काम में नहीं लगता···देखो न, एक साल के अन्दर-अन्दर घर के चार-चार आदमी चल बसे हैं···।"

अकसीनिया संवेदना से भर उठी। उसने बाड़ पर झुककर दून्या को अपनी बाँहों में भरा और उसे बहुत ही प्यार से चूमा। "माँ को किसी-न-किसी काम में बझाये रहो दून्या···जैसे भी हो, उनका ग़म थोड़ा ग़लत करो।"

"किस काम में बझाएगा कोई उन्हें?" दून्या ने रूमाल के कोने से आँखें पोंछीं। बोली—"तुम आओ कभी हमारे यहाँ और उनसे थोड़ी इधर-उधर की बातें करो। शायद इस तरह थोड़ा बहल···आखिर हम लोगों से इस तरह कटी-कटी क्यों रहती हो तुम?"

"मैं आऊँगी···जरूर आऊँगी···यक़ीन मानो।"

"मुझे कल खेत जाना है। अनीकुश्का की बेवा के साथ जुताई की बात है। थोड़ा-सा गेहूँ बोने का इरादा है। कुछ बोने-बाने का ख़याल तुम्हारा भी है ?"

"मैं तो ख़ूब बोआई करूँगी।" अकसीनिया ने उदासी से कहा—"मेरे पास बोने को है। दूसरे बोआई करने से फ़ायदा! एक अकेली हूँ···मुझे ज्यादा-कुछ नहीं चाहिए···जैसे-तैसे काम चल ही जाएगा।"

"स्तीपान की कोई ख़बर मिली ?"

"नहीं···कोई ख़बर नहीं मिली।" अकसीनिया ने तटस्थ मन से कहा और अपने शब्दों पर स्वयं आश्चर्य करने लगी। "मुझे उसकी ऐसी कोई ख़ास फ़िक्र भी नहीं है।" जाने कैसे, आशा के विपरीत, सच्चाई मुँह से निकल गई और औरत अचकचा गई। फिर, अपनी परेशानी पर पर्दा डालते हुए जल्दी-जल्दी बोली—"अच्छा चलूँ···दून्या, घर में सभी कुछ उल्टा-सीधा पड़ा है···सफ़ाई अलग से करनी है।"

दून्या ऐसी बनी जैसे कि अकसीनिया के मन की परेशानी पर उसकी नजर पड़ी ही नहीं। दूसरी तरफ़ देखते हुए बोली—"सुनो तो···मैं तो तुमसे यह पूछना चाहती थी कि तुम हमारे काम में थोड़ा हाथ बँट लोगी ? मिट्टी सूख जाएगी और फिर हम कुछ न कर पाएँगे। कज्ज़ाक गाँव में दो बचे हैं और वे भी लँगड़े हैं।"

अकसीनिया ने भरसक मदद करने का वचन दे दिया। दून्या तैयारी करने को चल पड़ी और फिर पूरे दिन अगली सुबह के काम का सरजाम करती रही। उसने अनीकुश्का की बीवी की मदद से बीज छाने, पटेले की मरम्मत की, गाड़ी के पहियों को तेल दिया और बोआई करने वाला यंत्र ठीक-ठाक किया। शाम को उसने बोआई वाला थोड़ा-सा अनाज रूमाल में बाँधा, क़ब्रगाह ले गई और प्योत्र, नताल्या और दार्या की क़ब्रों पर छिटक आई कि अगले दिन चिड़ियाँ उड़-उड़कर वहाँ आएँ, फुदक-फुदककर चहचहायें और उसका भाई और दोनों भाभियाँ मरने के बाद भी खुशी से भर-भर उठें।

भोले-भाले मन की भोली-भाली कल्पना···क्या कहिए !

केवल तड़का होने के एक घंटा पहले दोन के किनारों पर एक तरह का सन्नाटा बरसा। जंगल में भरा बाढ़ का पानी धीरे-धीरे कल-कल करता, चिनारों के पीले हरे तनों को चारों ओर से धोता और शाहबलूत के पानी में डूबे सिरों को रह-रहकर झकझोरता रहा। झीलें ऊपर तक लबालब रहीं और पानी के अन्दर की सेवार लहरियों के हाथों झुक-झुककर, सरसर-सरसर करती रही। बाढ़ के शिकार खेतों के तंग कोनों में जहां पानी किसी जादू से बंधा-सा रहा और जहां झुटपुटे के सितारे धरती पर उतर-उतर आए, वहां ध्रुवप्रदेशीय हंस हलके-हलके कीके, मुर्गाबियों के निदामे नर फुसफुसाए, और कहीं और जाकर बसेरा जमाने वाली बत्तखों के रुपहले स्वर कभी-कभी हवा में बजे। दिन दूनी रात चौगुनी मोटाती किसी मछली ने अकसर ही अंधेरे में पानी की बौछार की, कोई कंपकंपाती लहर झलाझल पानी की सतह पर दूर तक लोटती चली गई और कोई चिड़िया कहीं चौंककर चीख-चीख उठी। फिर, दोन-किनारे के मैदान ने सन्नाटों की चादर में दुबारा मुंह छिपा लिया। लेकिन, तड़का होते ही पहाड़ियों की खड़ियावाली चोटियों पर गुलाबी दौड़ी कि मंद-मंद पवन चलने लगा और नदी की धारा पर बिछलते ही तेज़ हो उठा। नदी के किनारे सात-सात फुट ऊंची लहरें जमा हो गईं, जंगल में पानी ठाठें मारने लगा और पेड़ हवा में झूम-झूमकर हांफ-हांफ उठे। इसके बाद पूरे दिन हवा सर्राटे भरती रही और उसने केवल रात भीगने पर दम लिया। और, फिर यह मौसम बराबर कई-कई दिन तक चलता रहा।

पूरे मैदान पर बकाइनी-धुंध का पर्दा पड़ा रहा। फिर मिट्टी सूख गई, घास की बाढ़ रुक गई, और शरद की जुताई वाले खेतों में दरारें पड़ गईं। धरती हर घंटे ज्यादा-से-ज्यादा खुश्क होती गई।…

ऐसे में तातारस्की के खेतों में शायद ही कोई कहीं नज़र आया। गांव में इने-गिने सफ़ेद दाढ़ी वाले लोग ही दीख पड़े। जो कज्ज़ाक लौटे वे या तो पाले के मारे बीमार रहे या हाथ-पैर से अपाहिज रहे। नतीजा यह कि खेतों में काम करती मिलीं या तो औरतें या कम उम्र लोग। हवा खाली गांव में गर्द उड़ाती फिरी। उसने घरों की

झिलमिलियां सड़काई और शेडों की छानियों के फूंस में जाने क्या सँखोरती फिरी।

"इस साल हमें रोटी मयस्सर होने से रही।" गांव के बड़े-बूढ़ों ने कहा—"खेतों में औरतें-ही-औरतें काम कर रही हैं···इस पर भी सिर्फ़ हर तीसरे घर की तरफ़ से बोग्राई की जा रही है···और, इससे बड़ा दर्द यह है कि धरती बांझ हो चुकी है···उससे किसी तरह की उम्मीद करना बेकार है!···"

यानी, दून्या और दूसरी औरतें दो दिन बोग्राई कर चुकी तो दिन ढले के वक़्त अकसीनिया बैलों को हांककर ताल पर लाई। बांध पर ओबनीजोव का दस साल का लड़का एक ज़ीन कसे घोड़े की लगाम थामे खड़ा दीखा। घोड़ा अपने होंठ चलाता रहा और अपने मखमली, भूरे नथुनों से रह-रहकर बूंदें बरसाता रहा। दूसरी तरफ़, लड़का सूखी मिट्टी के ढेले फेंक-फेंककर पानी में भँवरों पर भँवरें बुनता रहा और उन्हें देख-देखकर खुश होता रहा।

"कहाँ जा रहे हो वान्या ?" अकसीनिया ने पूछा।

"मैं मां के लिए खाना लेकर आया हूं।"

"अच्छा···तो, गांव की कोई नई खबर है तुम्हारे पास ?"

"नहीं···कुछ नहीं है। सिर्फ़ इतना है कि जेरासिम-बाबा ने कल रात एक शानदार कार्प फँसाई और फ़्योद्र-मेलनीकोव वापस आ गया।"

लड़के ने पंजे के बल खड़े होकर घोड़े के मुंह में लगाम पहनाई और उचककर फुर्ती से काठी पर बैठ गया। फिर, समझदार किसान की तरह पहले तो उसने घोड़े को क़दम चाल में डाला, पर कुछ दूर पहुँचने पर उसने मुड़कर अकसीनिया को देखा और जानवर को तेज़ी से दौड़ा चला। उसकी कमीज का पिछला हिस्सा हवा से फूलकर गुब्बारे की तरह फड़फड़ाता रहा।

उधर बांध पर बैल पानी पीने लगे तो अकसीनिया वहीं पसर गई और फिर उसने गांव को लौटने का फ़ैसला किया। सोचा—'मेलनीकोव फ़ौजी कज्ज़ाक है। उसे ग्रिगोरी के बारे में कुछ-न-कुछ पता

जरूर होगा ।'···फिर, बैलों को हांककर खेमे तक ले जाने के बाद दून्या से बोली—"मैं जरा गांव जा रही हूं · कल सवेरे फिर आ जाऊंगी।"

"कोई काम है ?"

"हां।'

और, वह अगले दिन सवेरे जब लौट कर आई तो दून्या बैलों को जोतती मिली। अकसीनिया तटस्थ मन से एक टहनी झुलाती रही, पर उसकी भौहें तनी रहीं और उसके होंठ भावावेश से भिचे रहे।

"फ्योद्र-मेलनीकोव गांव आया है। मैं उससे मिली थी। कहता है कि ग्रिगोरी के बारे में उसे कुछ पता नहीं।" उसने नपे-तुले शब्दों में कहा और एड़ियों के बल मुड़कर बोआई के यंत्र की ओर बढ़ी।

और, बोआई के बाद अकसीनिया ने खुद अपने फ़ार्म पर काम शुरू किया। उसने खरबूजों वाली ज़मीन में तरबूज़ बोए, दीवारों पर पलस्तर चढ़ाया, घर की पुताई की, और बचे-खुचे फूंस से शेड पर अच्छी-से-अच्छी छानी डाली। इस तरह व्यस्तता में दिन-पर-दिन गुजरते गए, पर मन ग्रिगोरी के लिए रह-रहकर बराबर उड़ता रहा। वह स्तीपान के खयाल तक से कतराई और जाने क्यों उसे लगा कि अब वह कभी नहीं लौटेगा। इस पर भी जब भी कोई कज्जाक गांव आया, उसने पहला सवाल स्तीपान के बारे में ही किया। पूछा—"तुमने मेरे स्तीपान को भी कहीं देखा ?"···इसके बाद उसने गोलमोल ढंग से ग्रिगोरी के बारे में पूछताछ की।

वैसे गांव के हर आदमी को उन दोनों के सम्बन्धों की जानकारी थी, इसलिए गांव की पंचायती औरतों ने भी उनके बारे में इधर-उधर की बातें करना बंद कर दिया था। लेकिन, अकसीनिया किसी के भी सामने अपना मन खोलकर रख देने में सदा ही शरमाई और जब भी किसी चुप्पा फ़ौजी ने गांव लौटने पर ग्रिगोरी का कोई जिक्र नहीं किया तो उसने बड़े संकोच के साथ, आंखें सिकोड़ते हुए पूछा—"लेकिन, तुम्हारी मुलाक़ात अपने पड़ोसी ग्रिगोरी पंत्तेलेयेविच से तो कहीं नहीं हुई ? उसकी मां को बड़ी फ़िक्र है···बेचारी गम में घुली

जा रहा है···"

पर, सच्चाई यह थी कि नोवोरोस्सिइस्क में दोन सेना के हथियार डाल देने के बाद न तो किसी ने कहीं स्तीपान को देखा था और न ग्रिगोरी को। पर, जून के अंत में स्तीपान की रेजीमेंट का एक कज्जाक, अपने गांव को लौटते समय, रास्ते में अकसीनिया से मिलने आया। कहने लगा—"स्तीपान क्रीमिया चला गया···मैं सच कह रहा हूं तुमसे!···जहाज पर सवार होते तो मैंने उसे अपनी आंखों से देखा है। हां, उससे बात करने का मौक़ा जरूर नहीं मिला। भीड़ वहां ऐसी थी कि लोग एक-दूसरे के ऊपर चढ़े जा रहे थे।"

फिर, जब अकसीनिया ने ग्रिगोरी की बात पूछी तो फ़ौजी ने टालने की कोशिश ज्यादा की। बोला—"मैंने उसे घाट पर देखा था···कंधे पर पट्टियां नजर आई थीं···लेकिन, उसके बाद फिर कहीं उससे मुलाकात हो नहीं हुई···लाल फ़ौजी तमाम अफ़सरों को मास्को ले गए हैं···कोई नहीं जानता कि इस वक़्त वह कहां है···"

परन्तु, इसके एक सप्ताह बाद ही प्रोखोर-जिकोव तातारस्की आया। वह जख्मी था और मिलेरोवो स्टेशन से गाड़ी पर लादकर लाया गया था।

अकसीनिया ने खबर सुनी तो गाय के थन से हाथ हटा लिया, बछड़ा छोड़ दिया और खुद रास्ते में सिर पर रूमाल बांधती हुई प्रोखोर के अहाते की ओर, दौड़ती-सी लपकी। बीच में खयाल आया—प्रोखोर राज़ समझ लेगा···खैर उसे तो समझना ही चाहिए। लेकिन—अगर कहीं उसने बताया कि ग्रिगोरी मर गया···तब···तब क्या करूंगी मैं···और, हर बढ़ते क़दम के साथ औरत के मन की आशंका बढ़ती गई और हाथ कलेजे को दबाते गए···

प्रोखोर उसे देखकर मुस्कराया और अपना कटा हुआ हाथ पीठ के पीछे कर, उसे बड़े स्नेह से सोने के कमरे में ले आया। बोला—"कहो, अकसीनिया···प्रीवियत···तुम्हें जीता-जागता देखकर कितना खुश हूं मैं! हमने तो समझा कि तुम उस छोटे गांव में ही चल बसी···उफ़···किस तरह लेटी थीं तुम वहां···कैसी खराब थी

तुम्हारी तबीयत ! और, इसके बाद कैसे हसीन हो उठते हैं तुम्हारे जैसे लोग…मेरा मतलब है, टाइफ़स के बाद ! लेकिन ज़रा देखो कि पोलों ने कैसी पच्चीकारी की है मेरी ! मौत ले जाए उन्हें !" प्रोखोर ने अपनी खाक़ी ट्यूनिक की आस्तीन में लगी गाँठ दिखलाई—"मेरी बीवी ने देखा तो इस तरह धाड़ें मार-मारकर रोई कि क्या कहो ! मगर, मैंने उससे कहा—इस तरह ढरका क्यों बहा रही हो…बिल्कुल बेवकूफ़ हो तुम ! लोग ऐसे भी तो होते हैं जिनके सिर धड़ से अलग हो जाते है, पर जो मुँह से उफ़ करके नहीं देते ! वैसे भी हाथ ऐसी चीज़ भी क्या है ! असली हाथ की जगह लकड़ी का हाथ आसानी से लगाया जा सकता है । इस पर मज़ा यह है कि लकड़ी का हाथ हो तो न सर्दी का डर, न कटने का खतरा । बेकार खून बहने का सवाल ही नहीं उठता । बुरी बात सिर्फ़ यह है कि एक हाथ से काम लेना अभी तक मुझे आया नहीं । मुसीबत यह है कि पतलून के बटन बंद नहीं कर सकता । कीएव से यहाँ तक बटन खुले-के-खुले ही रहे आए । बड़ी शर्म आई । इसलिए, कुछ कहीं गड़बड़ लगे तो तुम भी माफ़ करना । अरे, आओ…बैठो…मेरी मेहमानी कबूल करो, और मेरी बीवी जब तक आए, तब तक कुछ गपशप करो । मैंने ईसा की उस दुश्मन को वोदका लेने को भेजा है । यानी, कहाँ तो एक हाथ लिए आदमी घर आया है, और कहाँ उसकी सेहत का जाम पीने के लिए भी घर में कुछ है ही नहीं ! आदमी कहीं चले जाएँ तो तुम तमाम औरतें यों ही रहती हो । मैं तुम लोगों को खूब जानता हूँ… तुम लोग दुमदार शैतान हो, और तुम्हारी दुमें हमेशा गीली रहती हैं ।"

"ज़रा यह तो बतलाओ कि……"

"मैं जानता हूँ…सब-कुछ बतलाऊँगा तुम्हें ।…उसने कहा है कि मैं उसकी तरफ़ से तुम्हारे सामने इस तरह झुकूँ ।" प्रोखोर मजाक करते हुए झुका, और आँखें ऊपर कीं तो ताज्जुब से बोला—"क्या कहने हैं… यह खूब है । बेवकूफ़ हुई हो…रो क्यों रही हो ? तुम सब औरतें एक मिट्टी की बनी होती हो । यानी, आदमी मारा जाए तो रोओ और

सही-सलामत घर आ जाए तो रोओ। पोंछो…आंसू पोंछो।…
नोवोरोस्सिइस्क में हम दोनों कॉमरेड बुदयोन्नी की चौदहवीं घुड़सवार
टुकड़ी में शामिल हो गए। ग्रिगोरी पंतेलेयेविच ने कम्पनी की—मेरा
मतलब है कि स्क्वेड्रन की—कमान सम्हाली। मैं तो अर्दली में रहा ही.
फिर मार्च करते हुए हम कीएव पहुंचे। यानी, लड़की, हमने उन पोलों
को छठी का दूध याद करा दिया। राह में ग्रिगोरी बोला—'मैं जर्मनों
को मार चुका हूं…तरह-तरह के ऑस्ट्रियनों पर भी तलवार आज़मा
चुका हूं · मैं नहीं समझता कि पोलों की खोपड़ियां कुछ खास तरह की
बनी होती हैं…मेरा ख़याल है कि रूसियों के मुक़ाबले उन्हें काटकर
फेंक देना कुछ ज्यादा ही आसान होगा…क्यों, क्या ख़याल है तुम्हारा?'
और मेरी तरफ़ देखकर उसने आंख मारी और हँसा। लाल फ़ौज
में शरीक़ होते ही तो वह जैसे बिल्कुल बदल गया। हर वक़्त खुश नज़र
आने लगा और आल्हा की तरह चमाचम करने लगा। लेकिन फिर
ऐसा लगा कि आपस में खटपट हुए बिना रहेगी नहीं।…एक दिन मैंने
मज़ाक में कहा—'बहुत हुआ अब ज़रा रुककर सुस्ता लेना चाहिए
माई-बाप कॉमरेड मेलेखोव साहब।'…इस पर वह आंखें नचाता हुआ
बोला—'ख़त्म करो इस तरह का मज़ाक…वरना अच्छा न होगा।'…और
उसी दिन शाम को उसने मुझे किसी काम से भेजा तो जाने कौन-सा
भूत मेरी ज़बान पर बैठ गया कि मैंने फिर उसे माई-बाप और जाने
क्या-क्या कह दिया…उफ़ इस पर उसने अपनी मॉजर-बन्दूक उठा ली।
चेहरा बिल्कुल सफ़ेद पड़ गया और भेड़िए के दांतों की तरह दांत
निकल आए। दांतों की कम-से-कम एक फ़ौजी टुकड़ी ही उसके मुंह
में…मैं तो घोड़े के पेट के नीचे जा दुबका और फिर जान बचाकर
निकल भागा…शैतान के हाथों मरते-मरते बचा उस दिन।"

"शायद छुट्टी में घर आएगा।"…अकसीनिया ने अटकते-अटकते
कहा।

"इसका ख़याल दिमाग़ से निकालो। अब तो वह तब तक उन लोगों
के साथ रहेगा जब तक कि उसके सारे पिछले गुनाह धुल नहीं जाएंगे।
और यह वह करके दम लेगा। बेवकूफ़ी कुछ मुश्किल तो होती नहीं।

एक बार एक हमले के वक्त वह हमें एक छोटे कस्बे के ऐन क़रीब तक ले गया और मेरे देखते-देखते उसने वहाँ के चार जल्लादों को काटकर फेंक दिया ···वँयहत्या तो वह बचपन का है, गो उसने दोनों तरफ़ से मज़ा चखाया उन्हें···लड़ाई के बाद, पूरी रेजीमेंट के सामने खुद बुदयोन्नी ने उससे हाथ मिलाया और उसका और पूरी रेजीमेंट का शुक्रिया अदा किया···ये कारनामे हैं इन दिनों तुम्हारे पेन्तेलेयेविच के।"

अकसीनिया की आँखें अचरज से चौंधिया उठीं···अपने आपे में न रही। होश उसे आया सिर्फ़ ग्रिगोरी के फाटक पर। दून्या बरसाती में दूध दुहती दीखी और सिर झुकाए-ही-झुकाए बोली—"खमीर लेने आई हो? मैंने पहुँचा देने का वायदा किया था, पर बात दिमाग़ से ही उतर गई।" परन्तु अकसीनिया की गीली आँखों और खुशी से चमकते चेहरे पर नज़र पड़ते ही वह सब-कुछ समझ गई।

अकसीनिया ने अपना आग-सा भभकता चेहरा दून्या के कन्धे पर टिका दिया और खुशी से हाँफकर, फुसफुसाती हुई बोली—"ग्रिगोरी सही-सलामत है···बिल्कुल ठीक है···सबको याद किया है···जाओ···जाओ···और माँ से बतला दो।"

: २ :

तातारस्की के जो कज्ज़ाक श्वेत सेनाओं के साथ पीछे हटे, उनमें से कोई तीस गरमी तक लौट आए। लौटनेवालों में ज्यादातर रहे बूढ़े और सयानी उम्र के फ़ौजी। यानी बीमारों और ज़ख्मी लोगों के अलावा गाँव में जवान नज़र ही न आए। जवानों में से कुछ तो लाल सेना में रहे। बाक़ी रैंगेल-रेजीमेंटों में शामिल होकर क्रीमिया में वक़्त गुज़ारते और दोन के क्षेत्र पर नए सिरे से धावा बोलने की तैयारी करते रहे।

यों समझिए कि जो लोग गए उनमें से आधे से ज्यादा कज्ज़ाकों को तातारस्की की मिट्टी दुबारा देखने को न मिली। कुछ टाइफ़स से मर गए, कुछ कुबान की आखिरी मुठभेड़ में खेत रहे। कुछ मानीच के पार स्तेपी में जमकर बर्फ़ हो गए। दो को पार्टीज़ानों ने क़ैद किया तो फिर उनकी हवा भी न मिली। संक्षेप में यह कि गाँव के जाने कितने

कज्ज़ाक ग़ायब हो गए। औरतों की जिन्दगी दूभर हो गई। वे दिन-भर परेशानी और फ़िक्र से घुलती रहती, राह में पलकें बिछाए रहतीं। फिर शाम होती और वे चरागाहों से लौटती गायों को सड़क से बाड़ों में हांकने जाती तो आंखों पर हथेलियां रखकर काफ़ी तक दूर-दूर तक निगाहें दौड़ाती रहतीं। सोचती कौन जाने, शायद शाम की इस बकाइनी धुंध को चीरता कोई मुसाफ़िर इधर आता ही हो कि देर आयद, दुरुस्त आयद !···

और कोई कज्ज़ाक बीमारी से टूटा, जुओं की सेना लिये, शरीर के नाम पर गिनती के हाड़ सहेजे, किसी दिन गाँव लौटता तो उसके घर में खुशियों का ठिकाना न रहता। हर तरफ़ चहल-पहल नज़र आने लगती। गर्द और धूल से काले फ़ौजी के लिए पानी गरम किया जाता। बच्चे अपने पिता का मुंह जोहने में एक-दूसरे से होड़ करते और उसकी हर हरकत आँखें फाड़-फाड़कर देखते। घर की मालकिन यानी उसकी पत्नी प्रसन्नता से आधी पागल हो जाती, दौड़-दौड़कर खाने की मेज़ सजाती और सन्दूक से धुला हुआ जांघिया निकालने को दौड़ती। लेकिन कपड़ा जाने कब का बदला उससे लेता कि फटा निकलता; और औरत उसकी मरम्मत करने बैठती तो कांपती हुई उँगलियों से सुई में तागा न डाला जाता। सुख के ऐसे अवसर पर, दूर से ही मालिक को पहचान लेने और उसका हाथ चाटते हुए ड्योढ़ी तक चले आने वाले अहाते के कुत्ते तक को घर में बेरोकटोक आ जाने दिया जाता। प्लेटें-प्याले तोड़ देने, दूध बिखेर देने या ऐसी ही दूसरी ग़लतियां कर देने पर भी बच्चे बेदाग़ छूट जाते, और उन्हें डाँट तक न पड़ती। फिर, वह फ़ौजी साफ़ कपड़े भी न बदल पाता कि दूर-पास की तमाम औरतें घर में आ जमा होतीं, उससे अपने सगे-सम्बन्धियों की कुशल-क्षेम पूछतीं, और उसका हर शब्द उत्कंठा और आशंका से भरकर सुनतीं। ज़रा देर बाद उनमें से कोई औरत निकलकर अहाते में आ जाती, और आँसुओं से तर चेहरा हथेलियों से ढंककर यों क़दम बढ़ाती, जैसे कि अंधी हो और रास्ता न दिपता हो। फिर, किसी छोटे घर में कोई औरत अपने विधवापन पर विलाप करती और पतली आवाजों में बच्चे उसका साथ देते।

इस तरह तातारस्की के एक घर में गुम आता तो दूसरे घरों के लिए दुख-दर्द अपने साथ लाता।···

वह कज्जाक दाढ़ी बनाता और मूंछें तराशता तो उसकी उम्र जैसे घट जाती। फिर अगले दिन वह तड़के उठता, फ़ार्म का चक्कर लगाता और देखता कि कौन काम कहाँ एकदम जरूरी है। इसके बाद किसी शेड में या छायादार जगह में रंदा सनसनाता या कुल्हाड़ी खटखट करती तो जैसे नगाड़े की चोट पर कहती कि काम के दीवाने, मजबूत, मर्दाने हाथों-वाला आदमी एक बार फिर अहाते में आया है। लेकिन, जिस परिवार को पिता या पति के मरने की खबर मिलती वहाँ अटूट सन्नाटा और वीरानगी बरसती। पत्नी सदमे से गुमसुम होकर पड़ रहती और बच्चे उसे चारों ओर से घेरे रहते यतीम बच्चे रातों-रात जैसे कि बूढ़े हो उठते।

इलीनीचिना जब भी किसी कज्जाक की वापसी की खबर सुनती, कहती—"लेकिन, मेरा ग्रिगोरी आखिर कब घर आएगा? दूसरे कज्जाक गाँव चले आ रहे हैं, मगर वह है कि उसका कुछ पता ही नहीं चलता।"

"जवान कज्जाकों को कोई नहीं आने देता···यह मामूली-सी बात तुम्हारी समझ में क्यों नहीं आती, माँ?" दून्या खीझ से जवाब देती।

'जवान कज्जाकों को नहीं आने देते? मगर फिर, तीखोन-जिरासिमोव को कैसे आने दिया? वह तो ग्रीशा से भी छोटा है।"

"पर, वह तो जख्मी है, माँ!"

"जख्मी है···फु" इलीनीचिना आपत्ति करती—"मैंने कल उसे लुहारखाने के बाहर देखा···वह तो ऐसे उछल-उछलकर चल रहा था, जैसे कि परेड कर रहा हो। जख्मी लोग इस तरह नहीं चलते।"

"वह जख्मी हो गया था, पर अब तो ठीक हो रहा है।"

"मगर, हमारा ग्रिगोरी हजार बार जख्मी नहीं हुआ क्या? उसके तो बदन-भर में निशान-ही-निशान हैं···तुम्हारे खयाल से उसे ठीक-ठाक होने की जरूरत नहीं है?"

दून्या अपनी माँ को समझाने की भरसक कोशिश करती कि फ़िल-

हाल ग्रिगोरी का इन्तजार करना बिल्कुल बेकार है। पर, इलीनोचिना से कुछ भी कहना मुश्किल हो जाता। वह बेटी को डांट देती—"चुप कर, बेवकूफ कहीं की। मैं तुझसे कुछ कम नहीं जानती-समझती। अभी तू मुझे समझाने लायक नहीं हुई है। आखिर मैं तेरी मां हूँ··· मेरा कहना है कि ग्रीशा को घर आना चाहिए···इसके मतलब हैं कि वह घर आएगा और जरूर आएगा···मैं तुझसे दिमाग़ लड़ाना नहीं चाहती।"

बुढ़िया बड़ी बेसब्री से बेटे का इन्तजार करती और जब-तब उसका नाम भी लेती रहती। मीशात्का जब भी उसकी बात न मानता, वह उसे धमकाती—"बन्दर कहीं का···रुक जा···जरा आने दे अपने बाप को···मैं उससे तेरी शिकायत करूँगी, और वह क़ायदे से तेरे कान गरम करेगा।"

इलीनीचिना जब भी खिड़की से देखती और उधर से गुजरती किसी भी गाड़ी में कोई कज्जाक घर आता दीखता, तो वह कहती—"देखो, वह भी गाँव लौट आया, मगर हमारे ग्रिगोरी को तो जैसे किसी ने हमेशा-हमेशा के लिए कोठरी में बन्द कर रखा है।···"

बुढ़िया ने जिन्दगी-भर तम्बाकू को हाथ न लगाया था, और सिग-रेट वग़ैरा पीनेवालों को उसने हमेशा बावर्चीखाने से बाहर निकाल दिया था; पर इस माने में भी उसमें अब ख़ासा रद्दोबदल नज़र आता। अकसर ही दून्या से कहती—"जा, और जरा प्रोखोर को बुला ला···आकर यहाँ बैठे, एक सिगरेट पिए···यहाँ से मुर्दनगी की बू तो निकले। वैसे तो ग्रीशा के आने पर ही अब यह घर कज्जाकों के घर-सा लगेगा।"

इलीनीचिना हर दिन फालतू खाना पका लेती और खाने के बाद पातगोभी का शोरबा बटलोई में भरकर स्टोव पर रख देती। दून्या इसका कारण पूछती तो ताज्जुब से आँखें फैलाकर कहती—"क्यों, शोरबा क्यों नहीं रखना चाहिए मुझे? अरे, मेरा ग्रीशा अगर कहीं से घर आ जाएगा तो उसे फ़ौरन ही खाने को कुछ-न-कुछ तो गरम तैयार मिलेगा। यह न रहेगा तो जब तक कोई चीज पकाई जाएगी तब तक

उसे भूखा रहना पड़ेगा !···"

ऐसे-ही-ऐसे एक दिन दून्या खरबूज के खेत से लौटी तो उसे बावर्चीखाने की कील में भाई का पुराना कोट और बदरंग, लाल पट्टीवाली चोंचदार टोपी लटकी नजर आई। उसने माँ की तरफ़ प्रश्न-भरी दृष्टि से देखा तो माँ ने करुणा से अधिक अपराध की-सी भावना से मुस्कराते हुए कहा—"ये चीज़ें मैंने बक्से से निकाल ली हैं, दून्या ! अहाते से अन्दर आकर इन्हें देखती हूँ तो घर कुछ ज्यादा घर-सा लगता है··· लगता है जैसे कि ग्रीशा लौट आया है···"

दून्या ग्रिगोरी से सम्बन्धित इन बे-सिर-पैर की बातों से आखिरकार ऊब गई और ज्यादा बर्दाश्त न हुआ तो एक दिन माँ पर बरस पड़ी—"माँ, हमेशा एक ही चीज के बारे में बातें करते-करते तुम थकती नहीं ! तुम्हारी बकबक से जान हलाकान हो गई। जब देखो तब ग्रीशा ···ग्रीशा···ग्रीशा, और बस !"

'अपने बेटे के बारे में बातें करने से भला क्यों थकूंगी मैं ? ज़रा रुको, तुम्हारे बच्चे हो जाएँ···तब पता चलेगा तुम्हें···" इलीनीचिना ने शान्त भाव से जवाब दिया, ग्रिगोरी की टोपी और कोट अपने कमरे में ले गई, और फिर कई दिन तक बेटे का नाम उसकी ज़बान पर नहीं आया। पर, घास की तैयारी के थोड़ा पहले दून्या से बोली—"मैं ग्रीशा का नाम लेती हूँ तो चिढ़ती है तू···पर, उसके बिना हम जिएँगे कैसे··· खुद तेरे दिमाग़ से वह उतरा है कभी, बुद्धू कहीं की ! अब घास काटने का वक़्त आ रहा है, लेकिन घर में कोई ऐसा नहीं है जो और कुछ न करे तो हँसिए की धार तो तेज़ कर दे !···जरा देख कि घर की हर चीज किस तरह चौपट हो रही है और हमारे साधे कुछ भी नहीं सध रहा है···अरे, मालिक बाहर रहता है तो घर का जर्रा-ज़र्रा रोता है उसके लिए।"

दून्या कुछ नहीं बोली। उसने फ़ौरन ही समझ लिया कि माँ खेती-बारी के मसलों से परेशान नहीं, बल्कि ये तो सिर्फ़ बहाने हैं। इनके सहारे वे ग्रिगोरी की चर्चा कर अपने दिल का बोझ हल्का करती हैं।···फिर, बेटे के लिए इलीनीचिना की कलप और भी बढ़ गई और

उसके छिपाए यह राज छिपा नहीं। एक दिन शाम को उसने खाने से इन्कार कर दिया तो दून्या ने पूछा—"क्यों, तबियत तो ठीक है मां ?"

जवाब मिला—"मैं बूढ़ी हूं···मेरा दिल कचोटता है ग्रीशा के लिए···अब तो मन ऐसा उचाट रहता है कि किसी चीज़ से नहीं बहलता···दुनिया काटने लगी है जैसे !"

लेकिन, उस परिवार के अहाते का मालिक बनकर ग्रिगोरी नहीं आया···आया कोई और !

घास की कटाई के जरा पहले मीशा-कोशेवोइ मोर्चे से लौटा। रात उसने दूर के रिश्तेदारों के यहां बिताई। अगले दिन सवेरे मेले-खोव-परिवार से मिलने आया। इलीनीचिना खाना पकाने में लगी रही कि हलके से दरवाजा खटखटाने और कोई जवाब न पाने के बाद वह बावर्चीखाने में दाखिल हुआ और टोपी उतारकर मुस्कराते हुए बोला—"कहो···इलीनीचिना चाची···तुम्हें मेरे आने की उम्मीद तो नहीं थी न ?"

"श्रीवियत···मगर तुम कौन हो मेरे कि मुझे तुम्हारे आने की उम्मीद हो ?" इलीनीचिना ने कोशेवोइ के चेहरे की तरफ़ नफ़रत से देखते हुए, रुखाई से कहा।

मीशा इस स्वागत से जरा भी परेशान न हुआ और बोला—"आखिरकार हम एक-दूसरे के जान-पहचानी तो हैं ही !"

"हां, बस, जान-पहचानी ही हैं।"

"और, इतना मेरे यहां आने के लिए काफ़ी है। मैं यहां छाकर रहने तो आ नहीं रहा।"

"ऐसी खुशी का दिन मेरी क़िस्मत में न हो तभी अच्छा !" इलीनीचिना ने कहा और आगन्तुक की परवाह न कर फिर से खाना पकाने में लग गई।

मीशा ने उसके शब्दों की अनसुनी कर, बावर्चीखाने में चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई और बोला—"मैं तो आया कि चलूं, देख आऊं, तुम लोग सही-सलामत और ठीक-ठाक तो हो, एक साल से ज़्यादा हुआ यहां आए।"

"हमें ऐसी कोई याद भी नहीं आई तुम्हारी !" इलीनीचिना ने बरतन कोयलों पर एक जगह से दूसरी जगह रखते हुए, तुनककर कहा।

इस बीच दून्या सोने के कमरे में अपने बाल ठीक करती रही। मीशा की आवाज कानों में पड़ी तो उसका चेहरा पीला पड़ गया और उसने हाथ पीट लिए। हिलने की हिम्मत न हुई। वहीं बेंच पर बैठ गई और पूरी बातचीत कान लगाकर सुनने लगी। इस बीच कभी उसके गालों पर लाली दौड़ गई तो कभी नाक के ऊपर, छोटी-छोटी सफ़ेद लकीरें खिंच गईं। उधर मीशा, बावर्चीखाने में, पहले तो ज़ोर-ज़ोर से चहलक़दमी करता रहा, पर बाद में बैठ गया। कुर्सी चरमरा उठी। उसने सिगरेट निकाली और दियासलाई जलाई। तम्बाकू की महक सोने के कमरे में उड़ आई।

"सुना कि पैन्तेली मर गया ?"

"हाँ ··"

"और, ग्रिगोरी ?"

इलीनीचिना कुछ देर तक चुप रही और फिर न चाहते हुए भी बोली—"ग्रीशा लाल फ़ौजियों के साथ है और उसकी टोपी पर भी वैसा ही सितारा है जैसा तुम्हारी टोपी पर···"

"यह तो उसकी टोपी पर कभी का लग जाना चाहिए था।"

"अपना काम वह जाने।"

और, मीशा की आवाज में उत्सुकता घुल उठी। पूछा—"और, येवदोकिया-पैन्तेलेयेवना कहाँ है ?"

"कपड़े बदल रही है···तुम बहुत तड़के आ गए···शरीफ़ लोग इतने सवेरे किसी के यहाँ नहीं जाया करते।"

"कभी-कभी मजबूरी से भी ग़लत काम करने पड़ते हैं···मैं दून्या से मिलना चाहता था और इसीलिए इस तरह आ गया। इसमें 'इस वक़्त' और 'उस वक़्त' का फ़ैसला मैं क्यों करने बैठता ?"

"उफ़···मिखाइल···मुझे बेकार गुस्सा न दिलाओ।"

"मैं तुम्हें गुस्सा कैसे दिला रहा हूँ, चाची ?"

"इसी सबसे।"

"किस इसी सबसे ?"

'यानी अपनी इस बातचीत से।"

दून्या ने मीशा की लम्बी आह सुनी तो फिर अधिक सहन न हुआ। वह उछलकर खड़ी हुई, अपनी स्कर्ट ठीक की और बावर्चीखाने में आई। मीशा खिड़की के पास बैठा दीखा, और उसके हाथ की सिगरेट खत्म होती नजर आई। वह इतना दुबला-पतला और जर्द था कि मुश्किल से ही पहचान में आया। परन्तु दून्या को देखते ही उसकी आँखें खुशी से चमक उठीं और उसके चेहरे पर हल्की लाली दौड़ गई। तेजी से उठते हुए भर्राए गले से बोला—"अच्छा···तुम आ गईं···'दोब्रए-ऊत्रा' (गुड-मॉर्निंग)।"

"दोब्रए-ऊत्रा" दून्या ने बहुत ही धीरे से जवाब दिया।

इलीनीचिना ने बेटी को सिर से पैर तक देखते हुए हुक्म दिया—"जाकर पानी ले आ···"

और, दून्या चली गई तो मीशा बड़े धैर्य से उसके लौटने की प्रतीक्षा करता रहा। चुप वह भी रहा, पर आखिरकार सिगरेट के सिरे को उँगलियों से मसलता हुआ बोला—"तुम मुझसे इस तरह नाराज क्यों हो, चाची ? मैंने तुम्हारा कुछ नुकसान किया है या क्या बात है ?"

इलीनीचिना इस तरह एकदम मुड़ी, जैसे कि बिच्छू ने डंक मार दिया हो। बोली—"तुम यहाँ आते हो तो तुम्हारी रूह तुम्हें कचोटती नहीं ? आँखों की शर्म बिल्कुल ही धोकर पी गए हो, तुम ? फिर, मुझसे इस तरह के सवाल करने का तुम्हारा हिआव भी होता है ! क़ातिल हो तुम !"

"क़ातिल कैसे हूँ मैं ?"

"पक्के कातिल हो, असली ! प्योत्र को आखिर किसने मारा ? तुम्हीं ने न ?"

"हाँ।"

"ठीक···तो, उसके बाद फिर रह क्या जाता है ? और, अब तुम

यहाँ आते हो हम लोगों से मिलने···और इस तरह आकर बैठते हो जैसे कि···।" इलीनीचिना की आवाज़ फँस गई और वह चुप हो गई। फिर, अपने को साधती हुई बोली—"मैं उसकी माँ ही तो हूँ न ? तुम कुछ और समझते हो ?···तुम मुझसे आँखें किस दिल से मिलाते हो···कैसे हिम्मत पड़ती है तुम्हारी ?"

मीशा का चेहरा पीला पड़ गया। इस विषय के उभरकर सामने आने की तो उसे आशा भी थी। सो, खीझ के कारण अटकते हुए बोला—"ऐसी कोई वजह नहीं है कि तुमसे आँखें मिलाने में शर्म आए मुझे। मान लो कि मैं प्योत्र के हाथ आ जाता, तो प्योत्र क्या करता ? तुम्हारा खयाल है कि वह मुझे चूमता ? वह मुझे मार डालता। हम उन पहाड़ियों पर नाच-नाचकर एक-दूसरे को चूमने के लिए जमा हुए थे क्या ? किया क्या जाए, लड़ाई होती ही इसलिए है।"

"और, कोरशुनोव को किस लिए मारा था ? चुपचाप ज़िन्दगी बिताने वाले बूढ़ों को मारना भी लड़ाई का ही एक हिस्सा है क्या ?"

"क्यों नहीं है लड़ाई का ही एक हिस्सा ?" मीशा ने आश्चर्य से कहा—"बेशक यह भी लड़ाई है ! मैं चुपचाप ज़िन्दगी बिताने वाले इन बूढ़ों को खूब जानता हूँ। ये चुपचाप ज़िन्दगी बिताने वाले बूढ़े अपने पतलून हाथों से थामे अपने-अपने घरों के अन्दर बैठे रहते है, मगर नुक़सान मोर्चे के लोगों से ज़्यादा पहुँचाते हैं। बातूनी ग्रीश्का जैसे बूढ़ों ने ही तो कज़्ज़ाकों को हमारे खिलाफ़ उकसाया और उभारा। इन्हीं की बदौलत तो यह सारी लड़ाई छिड़ी। किसने बग़ावत की हमारे खिलाफ़ ! इन्हीं लोगों ने···इन्हीं चुपचाप ज़िन्दगी बितानेवाले लोगों ने। और, तुम हो कि क़ातिल मुझे कहती हो ! पहले तो मैं किसी मेमने या सूअर को भी मार न पाता था और न ही आज मार पाऊँगा। दूसरे लोग हैं जो जानवरों को हलाल कर देते हैं। मैं तो ऐसे मौक़ों पर अपने कान बंद कर लेता हूँ और आँखें मूँद लेता हूँ···ज़्यादातर तो हट जाता हूँ ऐसी जगह से !"

"मगर हमारे रिश्तेदार···"

"तुम और तुम्हारे रिश्तेदार···" मीशा ने गुस्से से बीच में ही

बात काट दी—"तुम्हारे उस रिश्तेदार से हमें उतना ही फ़ायदा पहुंचा, जितना बकरे से किसी को दूध मिलता है। हां, नुकसान उसने खासा पहुंचाया। मैंने उसे बाहर निकल आने को कहा, मगर वह बाहर नहीं आया तो ठौर-की-ठौर ढेर कर दिया गया। मुझे बड़ा गुस्सा आता है इन पर···इन बूढ़े शैतानों पर! मैं गुस्से में न हूं तो किसी बकरी के बच्चे पर भी हाथ नहीं उठा सकता···मगर, माफ़ करना, तुम्हारे रिश्तेदार जैसों की बात हो तो, गिनती किए बिना, गाजर-मूली की तरह काटता जा सकता हूं। मेरे हाथ वैसे बेकार हैं, मगर ऐसे दुश्मनों के मामले में ऐसे सधे हुए हैं कि कुछ न पूछो!"

"तुम्हारी पत्थरदिली ने ही तुम्हें हड्डी-हड्डी बनाकर छोड़ दिया है।" बुढ़िया ने ज़हर उगला—"मेरा खयाल है कि तुम्हारी रूह काट रही है तुम्हें?"

"मैं नहीं मानता यह बात!" मीशा मुलायम पड़ते हुए मुस्कराया—"उस बूढ़े बक्शी जैसे लोगों के लिए मेरी रूह मुझे नहीं कोसती··· मुझे तो बुखार ने तोड़ दिया, वरना मैं तो, मां···।"

"मुझे मां न कहो!" इलीनीचिना गरम हो उठी—"तुम किसी कुतिया को मां कहकर पुकारो!"

"देखो, मेरी मां को कुतिया न कहो।" मीशा ने गम्भीर होते और क्रोध से आंखें तरेरते हुए कहा—"अपनी हद में रहो···हद से बाहर हो जाओगी तो मुझसे बर्दाश्त न होगा···लेकिन, एक बात तुमसे मैं ज़रूर कहना चाहता हूं, चाची, और, वह यह कि तुम्हें प्योत्र को लेकर मुझसे बिगड़ना नहीं चाहिए। उसने मुंहमांगी मुराद पाई।"

"तुम क़ातिल हो···क़ातिल! निकल जाओ यहां से···तुम्हें देखने से मेरी आंखों में दर्द होता है।" इलीनीचिना ने कड़ाई से कहा।

मीशा ने एक दूसरी सिगरेट जलाई और शांत भाव से पूछा—"अच्छा, तुम्हारे एक दूसरे रिश्तेदार का नाम लूं, यानी मीत्का-कोरशुनोव का ज़िक्र करूं···क्या राय है तुम्हारी, वह क़ातिल नहीं है? और, खुद तुम्हारा ग्रिगोरी क्या है? अपने दुलारे बेटे के मामले में तुम्हारा मुंह तो शायद ही खुले···मगर वह असली क़ातिल है और

इस बात में जरा बराबर झूठ नहीं है।"

"बकवास बंद करो।"

"बकवास करने की आदत तो मैंने जाने कब की छोड़ दी! लेकिन बतलाओ न कि क्या है तुम्हारा ग्रिगोरी? हमारे कितने आदमियों को उसने दुनिया से रुखसत कर दिया, तुम्हें पता है? असली बात यह है! अगर तुम लड़ाई में हिस्सा लेने वाले हर आदमी को इसी नाम से पुकारना चाहोगी तो मैं कहूँगा कि हम सब कातिल हैं! सवाल तो यह है कि हम किसे मारते हैं और क्यों मारते हैं"···मीशा ने ज़ोर देकर कहा।

इलीनीचिना चुप हो गई, पर मेहमान को वहाँ से हटने का नाम भी लेते न देखा तो सख्ती से बोली—"अच्छा, बहुत हुआ! मेरे पास तुमसे बात करने को वक्त नहीं है। बेहतर हो कि तुम जाओ अपने घर!"

"मेरा कोई एक घर थोड़े ही है···मेरे घर उतने ही हैं, जितने कि किसी खरगोश के पास सोने के कमरे!"

यानी, मीशा ऐसी बातों से डरने और ऐसी लानत-मलामतों से घबरानेवाला कहाँ था! मन से इतना कमज़ोर कहाँ था कि एक क्रुद्ध बुढ़िया के अपमानजनक वाक्यों से डगमगा जाता। वह दून्या के मन के प्यार को समझता था, उसके दिल में अपनी जगह जानता था, और इसीलिए उस बुढ़िया-सहित उसे किसी चीज़ की कोई परवाह न थी।···

अगले दिन वह फिर दून्या के यहाँ आया और उसने इलीनीचिना का अभिवादन यों किया, जैसे कुछ हुआ ही न हो। इसके बाद खिड़की के पास बैठ गया और दून्या का चलना-फिरना, उठना-बैठना, सब-कुछ ग़ौर से देखने लगा।

इलीनीचिना ने भी अभिवादन के जवाब में कुछ नहीं कहा और बरस ऊपर से पड़ी—"तुम बहुत ज्यादा आते हो हमारे यहाँ!"

दून्या का चेहरा तमतमा उठा। उसने क्रोध से जलती नजर अपनी माँ पर डाली और फिर, बिना कुछ बोले, आँखें नीची कर लीं। मीशा बदले में मुस्करा उठा। बोला—"मैं तुमसे मिलने नहीं आता चाची इलीनीचिना···तुम्हें डरने की कोई जरूरत नहीं।"

"तुम्हारे हक़ में बेहतर यही होगा कि तुम इधर का रास्ता ही बिल्कुल छोड़ दो, निकाल दो दिमाग़ से !"

"मगर, यहाँ नहीं आऊँगा तो और कहाँ जाऊँगा मैं ?" मीशा ने गम्भीर होते हुए पूछा—"तुम्हारे अज़ीज़ मीत्का की मेहरबानी से दुनिया में अकेला रह गया हूँ, और मैं कोई भेड़िया तो हूँ नहीं कि झोंपड़ी में अकेले पड़ा रहूँ ! चाची, तुम्हें अच्छा लगे और चाहे बुरा, मगर मैं तो यहाँ आऊँगा और बराबर आऊँगा।" उसने कहा और पैर फैलाकर आराम से बैठ गया।

इलीनीचिना ने उसे बहुत ही घूरकर देखा। लेकिन, आम तरीक़े से घर से निकाल बाहर कर देना बहुत आसान न लगा। आदमी के भारी-भरकम शरीर, सिर साधने के ढंग और होंठों के जमाव ने चिल्ला-चिल्ला कर चुगली खाई कि आदमी ज़िद्दी और अड़ियल है।···

लेकिन, फिर वह चला गया तो इलीनीचिना ने बच्चों को अहाते में भेज दिया और दून्या की ओर मुड़कर बोली—"देख, उससे कह दे कि वह दुबारा यहाँ क़दम न रखे, समझी ?"

दून्या ने बिना पलक झपकाए अपनी माँ की ओर देखा तो उसकी आँखें मेलेखोव-परिवार के हर आदमी की आँखों की तरह ही क्रोध से जलने लगीं। लड़की ने आँखें आक्रोश से सिकोड़ीं और जैसे हर शब्द दाँत से काटते हुए बोली—"नहीं···ऐसा नहीं होगा···वह यहाँ आएगा और ज़रूर आएगा···तुम उसे रोक नहीं सकतीं। वह ज़रूर आएगा।" और, अपने को सम्हालने में असमर्थ पाकर उसने अपना मुँह हाथों से ढक लिया और दौड़ती हुई बाहर बरसाती में निकल गई।

इलीनीचिना खिड़की के पास बैठी बहुत देर हाँफती, चुपचाप सिर हिलाती और अनदेखती आँखों से दूर स्तेपी को देखती रही। उसकी निगाह सचमुच वहाँ जमी रही, जहाँ धूप के साए में खड़े चिरायते के पौधों की गोट ज़मीन को असमान से अलग करती रही।

···इसके बाद माँ और बेटी में बोलचाल न हुई कि शाम से ज़रा पहले दोन के किनारे की सब्ज़ियों की एक क्यारी में, गिरी हुई बाड़ के पास दोनों चुपचाप बैठी दीखीं। सहसा ही मीशा आया और

दून्या के हाथ से फावड़ा लेते हुए बोला—"ये गड्ढे तो बहुत ही कम गहरे हैं···हवा का एक भी तेज़ झोंका आया कि तुम्हारी यह बाड़ उड़ी।" और, इतना कहकर वह खुद गड्ढे गहराने लगा। फिर बाड़ जमाई, खम्भे साधे और चला गया।

अगले दिन सवेरे उसने दो नए हेंगे और एक पचांगुर का हत्था लाकर मेलेखोव परिवार की बरसाती में खड़ा कर दिया और इलीनीचिना का अभिवादन करने के बाद काम की बात करते हुए बोला—"चरागाह की घास काटने का इरादा नहीं है क्या? और लोग कभी के दोन के पार पहुँच गए?"

इलीनीचिना कुछ नहीं बोली। उसकी जगह दून्या बोली—"नदी के पार जाने को कुछ नहीं है हमारे यहाँ···पतझर के दिनों से हमारी नाव छानी में पड़ी है और उसका हर तख्ता सूखकर ऐंठ गया है।"

"तुम्हें बहार के वक़्त उसे पानी में डाल देना चाहिए था।" मीशा ने भर्त्सना-सी की। "इसके छेद बन्द कर दिए जाएँ, क्या खयाल है? नाव के बिना तो काम चलेगा नहीं···"

दून्या ने आजिज़ी से अपनी माँ की तरफ़ देखा और सोचा कि माँ कुछ कहेगी। पर इलीनीचिना बाक़ायदा गारा सानती रही और यों बनी रही जैसे कि उस बातचीत का उससे कोई सम्बन्ध ही न हो।

"नाव खींचने को थोड़ी-सी रस्सी होगी घर में?" मीशा ने होंठों-ही-होंठों मुस्कराते हुए पूछा।

दून्या मालखाने में गई और दोनों हाथों में भरकर पटुआ ले आई। अब मीशा ने दोपहर के खाने के समय तक नाव ठीक-ठाक कर दी और बावर्चीखाने में आकर बोला—"लो, नाव मैंने नदी में उतार दी है···अब वह पानी सोखेगी···मगर उसे किसी पेड़ के तने से बाँध दो, वरना कोई लेकर चलता बनेगा।" फिर, उसने पूछा—"क्यों चाची, घास की कटाई कैसी चल रही है? कहो तो हाथ बँटा दूँ··· इस समय वैसे भी खाली हूँ।"

"उससे पूछो।" इलीनीचिना ने दून्या की ओर देखकर सिर हिलाया।

"मैं तो घर की मालकिन से पूछ रहा हूँ···"

"कौन कहेगा कि इस घर की मालकिन मैं हूँ !"

दून्या फूट पड़ी और सोने के कमरे में भाग गई।

"ठीक···तो मैं हाथ बटाऊँगा।" मीशा ने अपनी ओर से फ़ैसला दिया—"बढ़ईगीरी के औज़ार कहाँ रखे हैं ? एक नया हेंगा बना दूँ··· यहाँ के पुराने हेंगे बेकार लगते हैं मुझे !"

और, वह शेड में चला गया और सीटी बजाते हुए हेंगे के लिए दाँते तैयार करने लगा। नन्हा-मुन्ना मीशात्का नाच-नाचकर आग्रह से उसकी आँखों में आँखें डालने लगा। बोला—"मीशा-चाचा, एक छोटा-सा हेंगा बना दो···कोई नहीं बनाता मेरे लिए। हेंगा बनाना न दादी जानती हैं और न बूआ। तुम्हीं बना सकते हो। बहुत अच्छा बनाते हो तुम।"

"मैं बना दूँगा तुम्हारे लिए, मीशात्का···ऊपर वाले की क़सम, ज़रूर बना दूँगा, मगर ज़रा दूर हटकर खड़े हो···ऐसा न हो कि लकड़ी उछलकर तुम्हारी आँख में गिर-गिरा जाए।" कोशेवोइ ने हँसते हुए कहा और आश्चर्य से सोचने लगा—'उफ़, लड़का कितना मिलता है अपने बाप से ! पुराने साँचे की असली नई नकल है ! वैसी ही आँखें हैं···वैसी ही भौंहें हैं और वैसे ही गोल होंठ हैं···ग्रिगोरी का कमाल ही है यह !'

और, मीशा छोटा हेंगा बनाने लगा, पर काम पूरा भी न कर पाया कि उसके होंठ नीले पड़ गए और उसका पीला, तमतमाया हुआ चेहरा एकदम उतर गया। उसने सीटी बंद कर दी, हाथ का चाकू नीचे रख दिया और अपने कंधे यों सिकोड़े जैसे ठंड लग रही हो।

मीशात्का से बोला—"मिखाइल-ग्रिगोरिच, ज़रा मुझे कोई बोरा या ऐसी ही कोई दूसरी चीज़ ला दो···थोड़ा लेटना चाहता हूँ।"

"लेकिन क्यों ?" बच्चे ने उत्सुकता से पूछा।

"मैं बीमार होना चाहता हूँ।"

"लेकिन, क्यों ?"

"उफ़, तू तो बर्र की तरह पीछे पड़ जाता है···क्यों क्या, मेरे

बीमार होने का वक़्त आ गया है, और बस, जा···जाकर जल्दी से ले आ कुछ।"

"लेकिन, मेरा हुगा नहीं बनाओगे ?"

"बाद में बना दूंगा।"

मीशा का बदन सिर से पैर तक कंपकंपाने लगा और उसके दांत कटकटाने लगे। इस बीच बच्चा बोरा ले आया तो वह उस पर पड़ रहा और फिर टोपी उतारकर उसने अपना चेहरा उससे ढक लिया।

"तुम सचमुच बीमार हो गए हो क्या ?" मीशात्का ने निराशा-भरे स्वर में पूछा।

"हां भाई, तबीयत खराब हो गई है।"

"लेकिन, तुम कांप क्यों रहे हो ?"

"बुखार आ गया है।"

"पर तुम्हारे दांत क्यों बज रहे हैं ?"

मीशा ने टोपी के नीचे से एक आंख से परेशान मीशात्का को देखा, हल्के से मुस्कराया और सवालों के जवाब देना बंद कर दिया। मीशात्का घबराहट से उसे घूरता रहा और फिर घर के अन्दर भाग गया। बोला—"दादी···दादी···मीशा चाचा छानी में पड़े हैं···सारा बदन कांप रहा है और दांत कटाकट बज रहे हैं।"

इलीनीचिना ने खिड़की से बाहर नज़र दौड़ाई, मेज़ के पास गई और जाने क्या सोचती रही। बच्चा उसकी आस्तीन से सटते हुए बेसब्री से बोला—"तुम कुछ बोलतीं क्यों नहीं, दादी ?"

इलीनीचिना उसकी ओर मुड़ी और दृढ़ता से बोली—"मुन्ने, कम्बल ले ले और ईसा के उस दुश्मन को ओढ़ने के लिए दे आ। जूड़ी आ गई है, इसीलिए कांप रहा है···जूड़ी एक तरह की बीमारी होती है···कम्बल उठ जाएगा तुझसे ?" वह फिर खिड़की के पास गई, अहाते को एकटक देखती रही और जल्दी-जल्दी बोली—"ठहर··· ठहर ज़रा···कम्बल की कोई ज़रूरत नहीं है।"

इस बीच दून्या ने कोशेवोइ को भेड़ की अपनी खाल से ढक दिया और उस पर झुककर कुछ कहने लगी। फिर, दौरा खत्म हो गया तो

मीशा दिन-भर घास-कटाई की तैयारी करता रहा। साफ़ है कि जूड़ी ने उसे झकझोरकर रख दिया। उसकी हर हरकत से कमज़ोरी टपक रही थी। फिर भी उसने मीशात्का के लिए छोटा-सा हेंगा बना ही दिया।

शाम को इलीनीच्चिना ने खाना पकाया, बच्चों को लाकर मेज के किनारे बैठाया और दून्या की तरफ़ देखे बिना बोली—"जा और बुला ला उसे खाने को···क्या नाम है उसका···"

दून्या गई और बुला लाई तो वह बिना क्रॉस बनाए मेज़ के किनारे आ बैठा। उसका बदन थकान से गठरी बना रहा। पीले चेहरे पर छिटकी पसीने की बूंदों से थकान टपकती रही और खाने के लिए चम्मच मुंह तक ले जाते समय उसका हाथ कांप गया। उसने बीच-बीच में चारों तरफ देखते हुए जैसे-तैसे, बेमन से थोड़ा-बहुत खाया। परन्तु, यह देखकर इलीनीच्चिना के आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि जब भी उस 'कातिल' की निगाह मीशात्का पर पड़ी, उसकी आंखें खुशी से चमकने लगीं, उनसे ममता और प्यार की चिनगारियां फूटने लगीं और होंठों के सिरों पर मुस्कान थिरकने लगी। फिर, उसने अपनी निगाह उधर से हटा ली और अन्यमनस्कता का बादल एक बार फिर उसके चेहरे पर उतर आया।

इलीनीच्चिना ने उसकी निगाहें बचाकर बार-बार देखा तो बीमारी के कारण वह उसे बहुत ही दुबला और कमज़ोर लगा। भूरी गर्द-भरी ट्यूनिक के नीचे से गले की हड्डियां झांकती रहीं। कंधे दबे-से रहे, हड्ड उभरे-से दीखे और बच्चों की-सी पतली गर्दन में टेंटुआ बड़ा ही भद्दा लगा। यानी, इलीनीच्चिना ने उस क़ातिल के लचे हुए बदन और मोम-से चेहरे को जितना ही अधिक देखा, उसका मन अन्दर-ही-अन्दर उतना ही अधिक कलपा, जैसे कि कोई खुद उसके कलेजे के टुकड़े-टुकड़े किए डाल रहा हो। फिर, जिस व्यक्ति को वह इतनी घृणा करती थी···उसके लिए उसके अन्तर में सहसा ही एक अयाचित करुणा उभरी। यह ऐसी मातृ-सुलभ करुणा रही जो मजबूत-से-मज़बूत औरत को भी लचा ही देती है। और, इलीनीच्चिना इस नई भावना को किसी तरह दबा न पाई। उसने तश्तरी भर दूध मीशा

की तरफ़ खिसकाया और बोली—"पी लो···तुम नीली छतरी वाले के लिए पी लो···तुम इतने कमज़ोर दीखते हो कि मेरा तो जी घबराता है···दूल्हा बनने के सपने देख रहे हो···कैसे शानदार लगोगे उस वक़्त !"

: ३ :

गाँव के लोग कोशेवोइ और दून्या के बारे में कानाफूसी करने लगे। एक दिन घाट के पास एक औरत यों ही दून्या से मिली तो साफ़-साफ़ हँसी उड़ाते हुए बोली—"मिखाइल को मजदूरी पर रख लिया है क्या ? जब देखो तब अहाते में ही नज़र आता है !"

इस पर दून्या ने घर लौटकर माँ से बड़ी आरज़ू-मिन्नत की और उसे बड़ा मनाया कि वह उसे मीशा से शादी करने की अनुमति दे दे। पर, बुढ़िया ने एक हठ पकड़ा कि पकड़ा। बोली—"तुम चाहे जितना कहो···मैं तुम्हें उससे शादी करने की इजाज़त हरगिज़ नहीं दूँगी··· मेरा दिल तुम्हें दुआएँ कभी नहीं देगा।"

लड़की ने कोई और रास्ता न देखा तो अपनी चीज़-बस्त बटोरने लगी। बोली—"ठीक है···मैं जाकर, बिना शादी के ही, उसके साथ रहूँगी।" अब तो बुढ़िया के हाथों के तोते उड़ गए और मजबूरन उसे अपना इरादा बदलना पड़ा। घबराकर कहने लगी—"ज़रा होश की बातें कर ! इन बच्चों को अकेले कैसे सम्हालूँगी मैं ? तू चाहती है कि हम सब मर जाएँ ?"

"यह तो तुम अच्छी तरह समझ सकती हो, माँ ! लेकिन, मैं गाँव-भर की हँसी का निशाना नहीं बन सकती।" दून्या ने अपनी क्वाँरी उम्र की चीजें बक्से से बाहर फेंकते हुए शांत भाव से कहा।

इलीनीचिना होंठ फड़फड़ाते हुए मौन खड़ी रही। फिर बहुत देर बाद देव-मूर्तियोंवाले कोने की ओर यों बढ़ी, जैसे कि पैर मन-मन-भर के हो उठे हों। वहाँ देवताओं के सामने झुकते हुए फुसफुसाई—"ख़ैर बेटी···जो तेरा मन कहे, वही कर···अगर यही तेरे दिमाग़ में है तो यही सही···ऊपर वाला तेरे सिर पर मदद का हाथ रखे···"

दून्या खुशी से खिल उठी और हवा की तेज़ी से झुकी। मां ने आशीश दी और कांपती हुई आवाज़ में बोली—"मेरी मरहूम मां ने इसी देवता से दुआ दिलाई थी मुझे···आह···काश कि तेरे पापा तुझे देखते इस वक़्त···याद है, एक बार उन्होंने क्या कहा था तेरे होने वाले आदमी के बारे में···नीली छतरी वाला ही जानता है कि फ़िलहाल क्या गुज़र रही है मुझ पर···" बुढ़िया मुड़कर बाहर बरसाती में चली गई।

उसके बाद मीशा ने बड़ी कोशिश की और उसे तरह-तरह से समझाया-मनाया, पर लड़की ने ज़िद पकड़ी सो पकड़ी, और एक ही रट लगाए रही कि शादी होगी तो गिरजे में ही होगी। आखिरकार हज़ार दांत पीसने के बाद भी, मीशा को उसकी बात माननी पड़ी। उसने मन-ही-मन दुनिया की हर चीज़ को पानी पी-पीकर कोसा और ब्याह की तैयारी यों की, जैसे कोई फांसी का फंदा गले में डालने को तैयार हो। फिर वह दिन भी आया। फ़ादर-विसेरियान ने गिरजे में रात को चुपचाप सारा संस्कार पूरा करा दिया, तरुण दम्पती को बधाई दी और उपदेश देते हुए बोला—"सोवियत-कॉमरेड-जवान, देखा तुमने, जिन्दगी किस तरह करवटें बदलती है। पारसाल तुमने अपने हाथ से मेरे घर में आग लगाई, उसे आग की लपटों के हवाले कर दिया, और आज मैंने कराई है तो तुम्हारी शादी हुई है। कहा है न कि कुएं में कभी न थूको, तुम्हें प्यास लग सकती है, और उसके पानी की ज़रूरत पड़ सकती है। खैर, छोड़ो···मुझे खुशी है और दिली खुशी है कि तुम सही रास्ते पर आ लगे हो और तुमने ईसा का गिरजा अपना लिया है।"

मीशा को आखिरी ठोकर लगी। वैसे भी वह अपने मन की कमज़ोरी पर बहुत लज्जित और अपने-आपसे बहुत नाराज़ था। पर, अब उससे बिल्कुल न रहा गया तो उसने जलती हुई नज़र से पादरी को देखा और दून्या को बचाते हुए धीरे से बोला—"अबे लम्बी अयाल के शैतान, क़िस्मतवर था कि उस वक़्त गांव से भाग निकला, वरना तेरे घर के साथ तुझे भी जलाकर राख कर दिया होता मैंने! बात

तेरी समझ में आई या नहीं ?"

मीशा की इस आकस्मिक चोट से पादरी आश्चर्य से अवाक् रह गया और पलकें झपकाते हुए उसे एकटक देखता रहा। पर वह अपनी जवान बीवी की आस्तीन को कसकर थामते हुए सख्ती से बोला—"आओ चलें!" और, अपने फ़ौजी बूट बजाता हुआ दरवाज़े की ओर बढ़ा।

शादी बहुत ही खुश्क रही। न वोदका का कोई दौर चला, और न गाने हवा में गूंजे। इस अवसर पर best man की भूमिका अदा करने वाले प्रोखोर-जिकोव ने अगले दिन अकसीनिया से उसकी शिकायत की और ज़मीन पर बार-बार थूकते हुए बोला—"पूछो मत, कैसी शानदार शादी रही! गिरजे में मिखाइल ने पादरी को जाने क्या कह दिया कि उसके जबड़े उखड़कर गिरने-गिरने को हो गए और बाल-बाल बचे! और, जानती हो कि खाने को हमें क्या मिला? तन्दूरी-फ़ाख्ता और दही…और बस! काश कि शैतान के बच्चों ने वोदका की दो-चार बूंदें ही दे दी होतीं! अरे, ग्रिगोरी-पैन्तेलेयेविच होता तो देखता कि उसकी बहन की शादी किस तरह हुई। अरे, वह होता तो अपना सिर थामकर बैठ जाता! नहीं, अकसीनिया, बहुत हुआ…अब मैं इन नए छोकरे-छोकरियों की शादी में कभी न जाऊँगा। मैं तो कहता हूं कि उससे ज्यादा हँसी-खुशी तो कुत्ते की शादी के मौके पर देखी जाती है…वे कम-से-कम एक-दूसरे के बाल तो नोचते हैं और इस नाते कुछ चीख-पुकार और कुछ शोर-शराबा तो होता है। लेकिन, इन कम्बख्तों की शादी में न शराब पीने को मिली और न हाथापाई देखने को मिली। इन गुनाहगारों पर और गुनाह चढ़े! शादी के बाद मेरा दिमाग़ तो ऐसा खराब हुआ कि रात-भर नींद नहीं आई। और सवेरे तक सारा बदन यों खुर-खुर करता रहा, जैसे किसी ने कमीज़ के नीचे मुट्ठी-भर पिस्सू डाल दिए हों…"

कोशेवोइ मेलेखोव-परिवार में आकर जमा कि फिर दिनों-दिन चीज़ों की शक्लें बदलती गईं। उसने देखते-देखते बाड़ ठीक-ठाक की, गाड़ी में लाद-लादकर घास खलिहान में पहुँचाई, उसकी टालें लगाई

श्रौर टालों के ऊपर सफ़ाई से छप्पर डाले । वोश्राई का वक़्त श्राया तो उसने एक नया चबूतरा बनाया, वोश्राई की मशीन में पाल लगाए, श्रोसाई के लिए मेहनत से ज़मीन साफ़ की, श्रोसाई की पुरानी मशीन ठीक की श्रौर घोड़े की काठी की मरम्मत की । यही नहीं, उसने मन-ही-मन बैलों की जोड़ी बदलने के मंसूबे बांधे श्रौर कई बार दून्या से कहा—"सुनो, हमें एक घोड़ा ख़रीदना चाहिए···इन बैलों की जोड़ी को हांको तो ऐसा लगता है कि खेतों के बजाय किसी को दफ़न करने के लिए क़ब्रगाह चले जा रहे हैं ।"

ऐसे-ही-ऐसे गोदाम में उसके हाथ सफ़ेद श्रौर नीले रंग का एक टीन लग गया तो उसने घर की, उम्र से सफ़ेद सारी झिलमिलियां रंग डालने का फ़ैसला किया श्रौर रंग डाला । बस तो, मेलोखोव-परिवार का मकान जवान हो उठा श्रौर श्रपने पहले दिन के नीले चौखटों की याद दिलाने लगा ।

मीशा बड़ा ही मेहनती किसान साबित हुश्रा श्रौर बुखार के बावजूद उसने क्षण-भर को भी काम की चीजें हाथ से नीचे नहीं रखीं । दून्या ने उसका हर काम में भरसक हाथ बंटाया ।

फिर, दाम्पत्य जीवन के कुछ दिनों के श्रन्दर-ही-श्रन्दर उसका हुस्न निखर उठा श्रौर उसके कंधे श्रौर कूल्हे चौड़ा उठे । उसके श्रांखों, चाल-ढाल श्रौर बाल बांधने के ढंग तक में एक नयापन झलकने लगा । उसकी चाल का श्रब तक का भद्दापन, तबीयत का बचपन श्रौर चंचलपन पर लगाकर जाने कहां उड़ गया । श्रब वह प्रतिक्षण मुस्कराती, स्थिर-चित्त से श्रपने पति के चेहरे को निहारती, श्रौर श्रपने चारों श्रोर घटती हर चीज से पूरी तरह बेखबर रहती ।···जवानी की खुशी के पास श्रांखें होतीं भी तो नहीं ।···

पर, इलीनीचिना इधर जिस श्रकेलेपन की शिकार हो गई थी, वह दिनों-दिन बढ़ती गई । जिस घर में उसने पूरी ज़िन्दगी गुज़ार दी थी, वहीं श्रब वह श्रपने को ग़ैर-जरूरी पाने लगी । दून्या श्रौर मीशा यों मेहनत करते रहे जैसे कि किसी नई जगह वे कोई नया बसेरा तैयार कर रहे हों । वे इलीनीचिना से कुछ भी न पूछते श्रौर फ़ार्म में

कुछ नया जोड़ना-घटाना चाहते तो उसकी रज़ामन्दी ज़रूरी न समझते। यही नहीं, वे बुढ़िया से बात करते तो मोह के दो शब्द भी उनकी जबान पर न आते। मेज़ पर खाना खाने को बैठते तो उससे इधर-उधर की बातें करते रहते।

नतीजा यह हुआ कि रह गई एक अकेली बुढ़िया और रह गए उसके मन को कचोटने वाले उदासी से भरे विचार। वह बेटी की खुशी को अपनी खुशी न मान पाई। घर में एक अजनबी का रहना उसे बराबर खुला और उस नए आदमी को यानी अपने दामाद को वह अपना कभी न समझ पाई। खुद ज़िन्दगी उसके लिए एक बोझ बन गई। एक साल के अन्दर इतने सारे अपनों के धरती से उठ जाने और स्वयं जिए जाने के कारण वह जैसे टूट गई। सचमुच ऐसी बूढ़ी हो गई कि उसे देखकर सहज ही दया आने लगी। अब तक इतना दुख भोगने की वजह से अब उसमें और सहने की शक्ति न बची। ऊपर से मन में दहशत बनी रहने लगी कि मौत ने घर का दरवाज़ा देख लिया है तो अभी क्या है, अभी तो जाने कितनी बार वह डेरा डालेगी यहाँ! दून्या के मामले में मन से समझौता कर लेने के बाद अब केवल एक हसरत उसे दिन-रात सताने लगी कि ग्रिगोरी आए, वह उसके बच्चे उसे सौंप दे और फिर हमेशा-हमेशा को आँखें मूँद ले···इतनी जीतोड़ ज़िन्दगी बिताने के बाद अब तो आराम का उसका अधिकार भी था···

गरमी के दिन अनन्त रूप से खिंचते रहे। सूरज दमकता रहा और ताप बढ़ता गया। परन्तु इलीनीचिना के मन में उष्णता भरने में वह भी अपने को असमर्थ पाने लगा। वह घंटों, आस-पास की हर चीज़ से बेखबर धूप से भरी सीढ़ियों पर बैठी रहती, और पहले की तरह घर में इधर-उधर, फुर्ती-से दौड़-धूप करती कभी न दीखती। कुछ करने-धरने का उसका मन ही न होता। सब-कुछ उसे बेकार, ग़ैर-ज़रूरी और नक़ली-नक़ली-सा लगता। वैसे अब पहले की-सी ताक़त भी बदन में उसे महसूस न होती। अकसर मशक़्क़त के ·ों से भरे हाथ वह देखती और सोचती—'खैर, मेरे यह हाथ अपने

हिस्से का काम कर चुके···अब तो दम लेना ही चाहिए···अपनी जिन्दगी मैं जी चुकी···बहुत जी चुकी···अब तो सिर्फ अपने ग्रीशा को अपनी आंखों से एक बार और देख लूं और···बस···।'

सो, अपनी पुरानी तेज़ी और स्फूर्ति का अनुभव उसे एक ही बार और हुआ, वह भी थोड़ी ही देर को। एक दिन व्येशेन्स्काया से लौटते समय प्रोखोर वहां आया और दूर से ही चीखा—'कुछ खिला-पिला रही हो इलीनीचिना दादी ? तुम्हारे बेटे की चिट्ठी लाया हूं मैं।"

बुढ़िया पीली पड़ गई और सदा की भांति इस बार भी, किसी अशुभ समाचार के बिना वह उस पत्र की भी कल्पना न कर पाई। पर प्रोखोर ने चिट्ठी पढ़कर सुनाई तो इसमें आधे से ज्यादा कज्ज़ाक और घर के प्राणियों के लिए प्यार-दुलार की बातें निकलीं और अन्त में यह खबर सुनने को मिली कि पतझर के समय गांव आने की कोशिश करूंगा।···इलीनीचिना प्रसन्नता से अवाक् रह गई और गुड़ियों के-से आंसू पलकों से बह-बहकर गाल की झुर्रियों में आ अटकने लगे। उसने अपना सिर झुकाया और अपनी आस्तीन और खुरदरी हथेली से उन्हें पोंछा। पर, आंसू कि जैसे रुकना उन्होंने जाना ही नहीं। ऐप्रन पर टपाटप यों झरने लगे जैसे कि मूसलाधार पानी बरस रहा हो।

पर, प्रोखोर को सिर्फ़ औरतों का रोना पसंद न था, बल्कि वह तो उसे किसी तरह सुहाता ही न था। इसीलिए क्रोध से त्योरी चढ़ाते हुए बोला—"क्या गत तुमने अपनी बना ली है, दादी ? तुम्हारी जैसी औरतों की आंखों में जाने कितना पानी बेकार होता है! तुम्हें तो रोने के बजाय खुश होना चाहिए।···अच्छा···मैं तो चला···अलविदा! तुम्हें इस शक्ल में देखना मेरे लिए कोई बहुत खुशी की बात नहीं।"

इलीनीचिना ने आंखें पोंछीं और उसे रोका—"तुम इतनी अच्छी खबर लेकर आए हो तो तुम्हें इस तरह कैसे जाने दे सकती हूं मैं ? ज़रा ठहरो·· कुछ थोड़ा-सा खा-पी लो।" बुढ़िया ने बक्से से, बहुत दिनों की रखी एक बोतल निकाली।

प्रोखोर ने बैठकर अपनी मूंछों पर हाथ फेरा और पूछा—"तो इतनी प्यारी खबर के नाम पर मेरे साथ एक घूंट पियोगी नहीं तुम ?"

मगर इसके साथ ही चिन्ता से न जाने किस जवान से मुंह से यह बात निकल गई—"अब भी वह साथ ही बैठ जाएगी और बोतल है कि उसमें होंठ भिगोने-भर को भी वोदका नहीं है···"

परन्तु इलीनीचिना ने इन्कार कर दिया। उसने चिट्ठी मोड़ी और देवमूर्ति वाली टाँड के ऊपर रख दी। लेकिन दूसरे ही क्षण कुछ सोचा। एक क्षण तक उसे हाथों में लिये रही और फिर अपने सीने से लगाकर उसे ऐप्रन के अन्दर रख लिया।

दून्या खेत से लौटी तो उसने पत्र बार-बार पढ़ा। आखिर मुस्कराई और आह भरकर बोली—"उफ़···काश कि वह जल्दी आ जाता···तुम तो पहले जैसी बिल्कुल ही नहीं रही हो, माँ !"

इलीनीचिना ने पत्र बेटी से लिया, फिर अपने सीने में दुबकाकर रखा और मुस्कराकर खुशी से चमकती हुई आँखों से बेटी की ओर देखती हुई बोली—"मैं तो अब इतनी अनचाही हो गई हूँ कि मुझे देखकर कुत्ते तक नहीं भोंकते। लेकिन मेरा सबसे छोटा बेटा है जिसने अपनी माँ को याद किया है। कैसी चिट्ठी लिखी है उसने ! लिखा है मैं तुम्हारे क़दमों में झुकता हूँ माँ ! बच्चों की भी याद की उसने··· तुम्हारा जिक्र करना भी तो नहीं भूला है, दून्या !···लेकिन, तुम हँस किस बात पर रही हो ?···तुम बेवक़ूफ़ हो···बिल्कुल बेवक़ूफ़ हो।"

"माँ, अब क्या हँस भी नहीं सकती मैं ? लेकिन तुम जा कहाँ रही हो ?"

"मैं आलू की खुदाई करने के लिए बाग जा रही हूँ।"

"मैं खुद यह काम कल कर लूँगी···तुम कहीं न जाओ। कहाँ तो तुम तबीयत खराब होने की बात करती रहती हो, और कहाँ तुमने अपने लिए काम भी ढूँढ़ लिया !"

"नहीं, मैं जाऊँगी···मैं बहुत खुश हूँ और थोड़ी देर बिल्कुल अकेली रहना चाहती हूँ।" इलीनीचिना ने बात सीधे-सीधे मान ली और जवान औरतों की तरह तेजी से रूमाल सिर में बाँधा।

रास्ते में अकसीनिया को देखने को रुकी, तो पहले तो शोभा के

ख़याल से इधर-उधर की बातें करती रही, बाद में पत्र निकाला और बोली—"मेरे बेटे ने चिट्ठी भेजी है···अपनी मां का कलेजा ठंडा कर दिया है···छुट्टी में घर आने को लिखा है···लो, पढ़ो और मुझे भी सुनाओ···एक बार और सुन लूं।"

इसके बाद अकसीनिया को अकसर ही वह पत्र इलीनीचिना को पढ़कर सुनाना पड़ा। बुढ़िया जब-तब ही शाम को आ धमकी, रूमाल में लिपटा पीला लिफ़ाफ़ा सावधानी से निकाला और आह भरकर बोली—"पढ़ो इसे अकसीनिया···आज दिल पर कुछ बोझ-सा है। मैंने सपने में बचपन का अपना ग्रीशा देखा···बिलकुल उस शक्ल में सामने आया जिस शक्ल में पढ़ने को जाता था।"

फिर होते-होते वक्त के हाथों पत्र के शब्द धुंधले हो चले और दो-चार तो पढ़ने में भी नहीं आने लगे। लेकिन इससे अकसीनिया के लिए कोई अन्तर न पड़ा, क्योंकि बार-बार पढ़कर सुनाने के कारण पूरी-की-पूरी चिट्ठी उसे लगभग ज़बानी याद हो गई। नतीजा यह कि काग़ज़ चिंदी-चिंदी हो गया तो भी पहली पंक्ति से अंतिम पंक्ति तक अविकल सुना देने में किसी तरह की कोई कठिनाई कभी अनुभव न हुई।

पर, पत्र आने के पन्द्रह दिन बाद इलीनीचिना की तबीयत काफ़ी खराब हो गई। दून्या खलिहान में बझी रही और बुढ़िया ने उसे काम से काटना उचित न समझा। पर, खाना पकाना उसके लिए अकेले मुमकिन न रहा तो एक दिन बेटी से बोली—"आज मुझसे उठा नहीं जा रहा···घर का कामकाज तुम अकेले ही देख लो।"

"क्यों, तबीयत कुछ ज्यादा खराब हो गई है, माँ ?"

इलीनीचिना ने अपनी समीज़ की सिलवटें दूर करते हुए आँखें नीची किए-ही-किए जवाब दिया—"बदन का जोड़-जोड़ जवाब दे रहा है, जैसे कि अन्दर-ही-अन्दर कोई सब-कुछ चूर-चूर किए डाल रहा हो। जब मैं जवान थी तो तुम्हारे पापा अक्सर बौखला उठते थे और मुझ पर इस्पाती मुट्ठियाँ बरसाने लगते थे···फिर मैं हफ़्तों ऐसे पड़ी रहती थी, जैसे कि बदन में जान ही नहीं रह गई हो। बिल्कुल वैसा ही लग रहा है इस वक्त भी···बदन की हड्डी-हड्डी टूटती मालूम हो रही है।"

"मिखाइल को डॉक्टर के लिए भेजूं ?"

"क्या ज़रूरत है डॉक्टर की ? उठ ही जाऊँगी जैसे-तैसे !" और दूसरे दिन वह सचमुच उठी और निकलकर अहाते में आई। पर, शाम होते-होते फिर जाकर पलंग पर लेट रही। उसका चेहरा थोड़ा सूज गया, और आँखों के नीचे पानी नज़र आने लगा। रात को कई बार उसने तकियों की टेक लगाकर हाथों के सहारे उठने की कोशिश की और लम्बी-लम्बी साँसें लेने लगी। अक्सर साँस मुश्किल से आई। लेकिन, फिर साँस बदस्तूर आने लगी और वह पीठ के बल आराम से लेट गई। यही नहीं, बिस्तर से उठी भी और कई दिन उसने शांति से बिताए। मगर, पूरी दुनिया जैसे उससे अलग-थलग रही और उसने हर तरह अकेले रहना चाहा। ऐसे में अकसीनिया आई तो उसने उसके सवालों के जवाब बहुत उलटे-सीधे दिए और चली गई तो जैसे सचमुच चैन की साँस ली। बच्चे बाहर खेलते रहे और दून्या ने उसे आकर अपनी बातों से हलाकान किया तो उसने बड़ी ही प्रसन्नता और संतोष का अनुभव किया, जैसे कि उसे किसी की हमदर्दी या सान्त्वना की आवश्यकता ही न रही, जैसे कि ज़िन्दगी का एक-एक क्षण दोहराना ही उसका एक काम हो गया। वह घण्टों, बिना हिले-डुले, आँखें मूँदे पड़ी रही और अपनी सूजी हुई उँगलियों से रह-रहकर कम्बल की सलवटें समेटती रही। गुज़रे हुए वर्ष-माह-दिन आए और उसकी निगाहों के आगे से गुज़र गए।

अचरज ही समझिए कि बुढ़िया की इतनी लम्बी ज़िन्दगी इतनी छोटी और बेचारा हो उठी, उसे इस तरह सताने और घोटने लगी और याद उसके एक बड़े हिस्से से कतराने लगी। पर जाने क्यों उसकी सारी स्मृति और सारे विचार मात्र ग्रिगोरी के चारों तरफ चक्कर काटने लगे। शायद इसलिए कि लड़ाई के इन सारे वर्षों में वह उसके लिए चिंतित रही थी, क्षण-भर को भी उसे उसकी चिंता से छुटकारा न मिला था और उसकी ज़िन्दगी का एक सहारा वही था···शायद इसलिए कि बेटे और पति की कसक में वक़्त के साथ वह टीस न रह गई थी, वे उसे अब कभी-कभी याद आते थे और उसे अपने और उनके बीच धुँधलाई

धुंध का एक सागर ठाठें मारता लगता था···

अपनी जवानी के दिन, अपनी दादी के लगहे याद आए तो जैसे उसने उन्हें टोका कि नहीं, मुझे तुम्हारी जरूरत नहीं···ये मील के पत्थर है जो बहुत पीछे छूट गए हैं और इनसे अब न मुझे खुशी होती है, न चैन मिलता है।···जब भी अतीत सामने आकर खड़ा हुआ, वह गम्भीर और अविचलित रही। पर, अपना 'नन्हा-मुन्ना' जब भी कल्पना में आया, चित्र की एक-एक रेखा स्पष्ट हो उठी। इसके साथ ही हर बार उसके दिल की धड़कनें तेज हो गईं, गले में कुछ आकर अटक-अटक गया। चेहरा सफेद पड़ गया और वह काफी देर तक बेहोश पड़ी रही। पर होश आते ही फिर अपने छोटे बेटे की बात सोचने लगी और उसे भुलाए न भूली।

एक दिन वह अपने सोने के कमरे में पड़ी रही कि बाहर दोपहर का सूरज दमका। आसमान के दायें सिरे पर सफेद बादल हवा के कंधों पर चढ़कर, आँखों में चकाचौंध पैदा करने वाले नीलम के सागर की लहरों पर शान से तैरने लगे। दम घोंटने वाले सन्नाटे का तार निदासी टिड्डियों की सर-सर से टूटने लगा। बाहर, खिड़की के ऐन नीचे घर की नींव से सटी घास अब तक हरी दीखी और यहीं टिड्डियाँ अपना अड्डा जमाए रहीं। इलीनीचिना ने उनका अनन्त संगीत सुना, कमरे के अन्दर घुस आई घास की बास से अपनी साँस खींची और क्षण-भर को एक सपना उसकी पलकों पर उतर आया। सपने में उसने देखा अगस्त की धूप में तपता स्तेपी का मैदान, गेहूँ की सुनहरी खूंटियाँ और पेड़की के रंग की धुंध में नहाया, चमचमाता नीला आसमान।···

उसने साफ़-साफ़ देखे चिरायते के पौधों से पटे मैदान के बीच चरते बैल, गाड़ी और गाड़ी के ऊपर तनी कनात। उसने स्पष्ट सुने टिड्डियों के सर्राटे और अनुभव की चिरायते की तेज़, तीखी महक···देखा तो खुद अपने को पाया हसीन, जवान···बदन कि हर तरफ़ से भरा हुआ··· गई पड़ाव की तरफ़ तो नीचे की खूंटियों ने पीलियाँ पकड़-पकड़ लीं, हवा ने स्कर्ट से सटे ब्लाउज़ का पसीना सुखा दिया और गर्दन जैसे झुलसा-झुलसा दी। गाल धूप से तमतमा उठे और दिमाग़ की नसों में उमड़ते खून

के कारण कान सनसनाने लगे। एक हाथ से उसने दूध से भरी, भारी छातियां साधी, बच्चे की सिसकियां सुनकर क़दम तेज किए और आगे बढ़ते-बढ़ते ब्लाउज के बटन खोले।···

उसने गाड़ी के नीचे लटकते झूले से सांवले ग्रीशा को उठाया तो गरमी में खुश्क होंठ कांपे और उन पर मुस्कान दौड़ गई। मां ने फ्रॉस के पसीने से तर तागे को दांत से एक तरफ़ करते हुए जल्दी-जल्दी छाती बच्चे के मुंह में दी और भिचे दांतों के बीच से बोली—"मेरे राजा···मेरे नन्हे-मुन्ने बेटे···मेरे हुस्न···तेरी मां ने तुझे भूख से तलफा डाला···" ग्रीशा ने अब भी सुबकते हुए दूध पीना शुरू किया और अपने छोटे-छोटे दांत छाती की घुंडी में गड़ाए दि। और पास ही खड़ा, काली मूंछों वाला जवान-पिता हँसिए पर धार धरता दीखा। मां ने झुकी पलकों से उसकी मुस्कान देखी। गरमी के कारण सांस लेना दूभर लगा और पसीना भौंहों से बह-बहकर, बूंद-बूंद कर गालों पर आने लगा।···और उसके देखते-देखते रोशनी मद्धिम हुई···फिर और मद्धिम हुई···फिर और मद्धिम हुई।···

बुढ़िया का सपना टूटा। उसने आंसुओं से नहाए चेहरे पर हाथ फेरा और फिर जड़-सी बनी पड़ी रही। बीच-बीच में उसकी सांस फँस-फँस गई और जब-तब ही उसे दिखलाई पड़ने पर भी कुछ भी न दीखा, जैसे कि देखने की ताक़त किसी ने छीन ली हो।

उस दिन रात गए दून्या और उसका पति सोने को चले गए तो बुढ़िया बची-खुची ताक़त जुटाकर उठी और अहाते में आई।

उधर अकसीनिया अपनी गाय की तलाश में बाहर गई थी। गाय दूसरी गायों से अलग होकर इधर-उधर हो गई थी। सो, वह लौटी तो उसने इलीनीचिना को धीरे-धीरे, डगमगाते क़दमों से खलिहान की ओर बढ़ते देखा, तो अचरज में पड़कर सोचने लगी—'बीमार तो है, यह वहां क्या करने चली जा रही है?' फिर, चोरी-चोरी मेलेखोव-परिवार के खलिहान के पास की बाड़ की ओर बढ़ी और वहां पहुंचकर अन्दर झांककर देखा।

आसमान से पूनों का चांद धरती पर चांदी बरसाता रहा और हवा

स्तेपी की ओर से बह-बहकर आती रही। पुआल की एक टाल की घनी छाया नंगी, पत्थर के रोलर से बराबर की गई जमीन पर पड़ती रही। इलीनीचिना दोनों हाथों से बाड़ का सहारा लिये स्तेपी में दूर-दूर तक नजर दौड़ाती रही। मैदान में घास काटने वालों के अलाव की आग दूर के छोटे-से सितारे-सी लौ देती रही, और यह सितारा जैसे कि पहुँच के बाहर लगा। इलीनीचिना के सूजे हुए चेहरे पर निलहरी चाँदनी की भरपूर छूट दीखी और सफ़ेद बालों की लट काले शॉल से बाहर झाँकती नजर आई।

बुढ़िया बहुत देर तक सँवराते स्तेपी को एकटक देखती रही और फिर ग्रीशा को इस तरह धीरे से आवाज देने लगी, जैसे कि वह कहीं आसपास ही हो—"ग्रीशा-बेटे!···मेरे दुलारे बेटे!"

फिर एक क्षण तक चुप रहने के बाद, एक दूसरी खोखली नीची आवाज़ में बोली—"मेरे हाड़-माँस···मेरी रगों के खून!"

अक्सीनिया टीस और आशंका की अवर्णनीय भावना से काँप उठी, बाड़ से पीछे हटी और अपने घर की ओर चल दी।

उस रात इलीनीचिना ने समझ लिया कि अब दिन क़रीब हैं··· मौत सिरहाने खड़ी है।···दूसरे दिन तड़के उसने ग्रिगोरी की कमीज़ बक्से से निकाली और तह कर अपने तकिए के नीचे रख ली। साथ ही उसने कब्र के दूसरे कपड़े और चलती बिरिया पहनाई जाने वाली कमीज भी सहेजकर धर दी।

सवेरा होने पर सदा की तरह ही दून्या माँ के कमरे में गई तो इलीनीचिना ने ग्रिगोरी की कमीज तकिये के नीचे से सावधानी से निकाली और बिना कुछ बोले, चुपचाप उसकी तरफ़ बढ़ा दी।

दून्या ने आश्चर्य से पूछा—"यह क्या है?"

बहुत ही धीमी आवाज़ में जवाब मिला—"ग्रीशा की कमीज़ है··· अपने आदमी को दे दो···कह दो कि इसे पहन ले···पुरानी कमीज़ पसीने से गल गई होगी।"

दून्या ने माँ की काली समीज़, कमीज़ और बुने हुए कपड़े के स्लीपर यानी आखिरी सफ़र की सभी चीजें पास ही रखी देखीं

श्रौर उसका चेहरा पीला पड़ गया।

'ये तमाम चीज़ें तुमने क्यों जमा कर रखी हैं, माँ ? ईसा के लिए इन्हें हटा दो यहाँ से ! ऊपर वाला रहम करे···अभी तुम्हें मरने को बहुत दिन हैं !"

"नहीं, मेरा वक़्त आ गया है बेटी !" इलीनीचिना फुसफुसाई—"मेरी पारी आ गई है····बच्चों की फ़िक्र रखना···ग्रिगोरी के आने तक उनकी पूरी देखरेख करना···मुझे साफ़ नजर आ रहा है कि मैं उस वक़्त तक चलने से रही !···अरे नहीं, उस वक़्त तक मैं जी नहीं सकती···"

दून्या से आँसू छिपाने के लिए इलीनीचिना ने मुँह दीवार की तरफ़ कर लिया और चेहरा रूमाल से ढक लिया।···

और फिर तीन दिन बाद उसने शरीर छोड़ दिया। उसकी हम-उम्र औरतों ने उसे नहलाया, क़ब्र के कपड़े पहनाए और सोने के कमरे की मेज पर लिटा दिया। शाम को अकसीनिया मृतात्मा को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने आई तो बुढ़िया को पहचानना कठिन हो गया—कहाँ वह गर्वीली बहादुर इलीनीचिना और कहाँ यह छोटे कद की बुढ़िया ! अकसीनिया ने उसकी ठंडी पीली भौंह चूमी तो बालों की वही अक्खड़ लटें सफ़ेद रूमाल के नीचे से झाँकने लगीं। छोटे गोल कानों के सीप जवान औरत के-से मालूम हुए।···

अकसीनिया दून्या से पूछकर बच्चों को अपने घर ले आई। वे इस नई मौत से ऐसे डरे रहे कि उनके मुँह से बोल न फूटा, और अकसीनिया ने खाना खिलाकर साथ सुलाया तो दोनों उसकी दोनों बग़ल चिपट गए। इससे उसे बड़ा ही अजीब-अजीब लगा और अपने मन के राजा ग्रिगोरी की याद हो आई, पर अपने मन को दूसरी तरफ़ कर वह उन्हें बहलाने के लिए और दादी की याद भुलाने के लिए अपने बचपन की परियों की कहानियाँ सुनाने लगी। मजबूर यतीम वान्युश्का की कहानी उसने धीरे-धीरे यों कही जैसे कि साथ-ही-साथ गा भी रही हो—

···सुनो···सुनो, हंस राजा सुनो—
कैसे उजले पंख तुम्हारे !—

मुझे इनके सहारे ले चलो।
दूर···बहुत दूर···
वहाँ जहाँ मेरा देश है···
मेरा बड़ा दुलारा देश है···

और कहानी खत्म भी न हुई कि बच्चों की पलकों पर नींद उतर आई। मीशात्का एक किनारे होकर कन्धे पर चेहरा टेककर सो गया। अकसीनिया ने बच्चे का सिर सहारे से सीधा कर दिया। सहसा ही किसी ने उसका दिल अपने हाथों में लेकर इस तरह ऐंठा कि उसका गला रुँध गया। फिर वह इस तरह फूट-फूटकर रोई कि सिर से पैर तक सारा बदन सिहर-सिहर उठा। लेकिन अपने आँसू पोंछने के लिए भी वह नहीं हिली, क्योंकि ग्रिगोरी के बच्चे उसकी बाँहों में थे, और उसके हिलने-डुलने से उनकी नींद टूट जाने का डर था···

: ४ :

इलीनीच्निना की मौत के बाद मीशा घर का पूरा मालिक बन गया। ऐसे में स्वभावतया उसे और मेहनत करनी चाहिए थी। फ़ार्म को नए ढग से सँवारना चाहिए था, उसे बढ़ाना चाहिए था, पर ऐसा हुआ नहीं, उलटे मीशा की दिलचस्पी दिन-ब-दिन घटती गई। अब तो वह शाम होते ही बरसाती में निकल जाता और रात के तीसरे पहर तक वहीं बैठा धुआँ उड़ाता रहता—किसी सोच-विचार में डूबा रहता। होते-होते पति का यह परिवर्तन दून्या से भी अनदेखा न रहा। अकसर तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा और वह मन-ही-मन विस्मय में पड़ गई—'यह आखिर हुआ क्या? अभी थोड़े ही दिनों पहले की बात तो है कि काम करता था तो इसे तन-बदन की सुध न रहती थी। मगर अब तो यह जब-तब ही, एकाएक बिना किसी खास वजह के हाथ की कुल्हाड़ी या रंदा ज़मीन पर रख देता है, और आराम करने लगता है!···'

फिर जाड़े की राई की बोआई शुरू हुई, तो भी यही हुआ। मीशा खेत के एक-दो चक्कर लगाने के बाद बैल रोक देता। अपने लिए

सिगरेट रोल करता और फिर जुती हुई जमीनपर बैठ कर बहुत-बहुत देर तक कश खींचता रहता। रह-रह कर उसके माथे पर बल पड़ते रहते।

पर उत्तराधिकार मे अपने पिता की व्यवहारबुद्धि पाने वाली दून्या अकसर ही चिंतित हो उठती। सोचती—'आदमी कुछ चला नहीं… लगता है कि या तो यह बीमार है, या अब हाथ-पैर हिलाना नहीं चाहता…ऐसे आदमी से शादी की है कि मुसीबत ही नज़र आती है! मैं और आस-पास के दूसरे लोग इसके लिए जैसे अजनबी हो उठे हैं। आधे दिन धुआँ उड़ाता है…आधे दिन इधर-उधर मटरगश्ती करता है…पूरा दिन गायब…काम में हाथ लगाने की नौबत ही नहीं आती। तो मुझे इसे परेशान तो नहीं करना चाहिए। पर घुमा-फिरा-कर बात ज़रूर करनी चाहिए कि अगर तुमने इसी तरह मेहनत की तो घर की ज़रूरतें तो पूरी होने से रहीं।'

बस तो एक दिन बड़े ही नपे-तुले ढंग से दून्या ने उससे पूछा—"मीशा, तुम तो अब बिलकुल दूसरे ही नज़र आते हो…बुखार कुछ ज्यादा हलाकान कर रहा है क्या?"

"बुखार…बुखार से क्या मतलब? बुखार के अलावा भी तो हज़ार बीमारियाँ यहाँ जान को लगने को हैं!" मीशा ने तुनककर जवाब दिया। बैल सनकारे और बोआई के यन्त्र के पीछे-पीछे चल पड़ा।

दून्या ने आगे और कुछ कहना-सुनना उचित न समझा। उसे लगा कि अपने आदमी को हुक्म देना औरत का काम नहीं। और बात वहीं खत्म हो गई।

पर लड़की का निशाना ठीक न बैठा था। मीशा के पहले की तरह खटकर काम करने के आड़े आती थी उसके मन की एक कचोट। कचोट दिनों-दिन बढ़ती गई थी और अपने ही गाँव में इतनी जल्दी जम जाना उसे हर वक़्त खलने लगा था।…बहुत जल्दी खेती-बारी में लग गया…बड़ी हड़बड़ी से काम लिया मैंने! वह झुँझलाकर सोचता, और क्षेत्रीय समाचारपत्रों में लड़ाई की रिपोर्टें पढ़ने के बाद या लाल सेना से अलग किये गए कज्ज़ाकों की कहानियाँ किसी भी दिन शाम को सुनने के बाद एकदम खीझ उठता।

लेकिन ख़ास परेशानी उसे होती गाँव वालों का रवैया देखकर। उनमें से कुछ खुल्लमखुल्ला कहते—'सोवियत सरकार जाड़ा आते-आते ख़त्म समझो! रैंगेल तावरिया से आगे बढ़ चुका है और माखनो के साथ रोस्तोव के पास तक आ पहुँचा है···दोस्त मुल्कों ने नोवोरोस्सिइस्क में भारी फ़ौज जमा दी है।"···संक्षेप में यह कि गाँव में एक-से-एक अफ़वाहें उड़ती रहतीं। कन्सेंट्रेशन कैम्पों या खानों से लौटे हुए कज़्ज़ाक गरमी के घर के खानों से मोटे नज़र आते। वे खासे लिए-दिए रहते, रात को घर की बनी वोदका पीते, मनमाने विषयों पर बातें करते और मीशा से मिलते तो बनावटी तटस्थ भाव के साथ पूछते—"कोशेवोइ, तुम तो अख़बार पढ़ते हो। ज़रा रैंगेल के बारे में बतलाओ कुछ। वे लोग जल्दी ही उसका ख़ात्मा कर देंगे क्या? और यह बात सच है या महज़ गप है कि दोस्त मुल्कों के लोग हमें फिर तावड़तोड़ दबा रहे हैं?···"

ऐसे में एक बार इतवार के दिन शाम को आया प्रोखोर।···मीशा अभी-अभी खेत से लौटा था और बरसाती के पास खड़ा हाथ-मुँह धो रहा था। दून्या घड़े से उसके हाथ पर पानी डाल रही थी और अपने पति की पतली, धूप से सँवराई गर्दन पर निगाह डालते हुए मोह से मुस्करा रही थी।

सो प्रोखोर पति-पत्नी का अभिवादन कर बरसाती की नीचे वाली आखिरी सीढ़ी पर बैठ गया। एक क्षण बाद पूछा—"ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच ने कोई चिट्ठी लिखी···कोई खबर भेजी इधर?"

दून्या बोली—"नहीं···कोई चिट्ठी नहीं आई।"

"तुम उसकी फ़िक्र में क्यों दुबले हुए जा रहे हो?" मीशा ने मुँह-हाथ पोंछते हुए प्रोखोर की आँखों में आँखें डालीं। होंठों पर गम्भीरता बनी रही।

प्रोखोर ने आह भरी और अपनी आस्तीन ठीक की—"हाँ, हो रहा हूँ···इसमें कोई शक नहीं कि मैं उसकी फ़िक्र में दुबला हो रहा हूँ··· आखिर एक ज़माने तक हम फ़ौज में एक साथ रहे हैं···।"

"और अब कुछ और करने की बात सोच रहे हो···है न?"

"और क्या?"

"अरे यही उसकी खिदमत !"

"नहीं···मत उसकी खिदमत क्या करूँगा ! वे दिन तो चले गए !"

"मैंने सोचा कि शायद अब भी उसके इन्तज़ार में हो कि तुम्हें फिर उसकी ख़िदमत का मौक़ा मिले।" मीशा अब भी बिना मुस्कराए कहता गया—"फिर सोवियत सरकार से लड़ने का मौक़ा मिले···।"

'देखो मुझसे इस तरह बात न करो।" मिखाइल प्रोखोर ने चिढ़ते हुए कहा।

"क्यों न करूँ आखिर ? गाँव में इधर-उधर तमाम तरह की बातें सुनता हूँ।"

"तुमने मेरे मुँह से कभी कुछ सुना है ? कहाँ क्या सुन लिया तुमने ?"

"तुमने तो कुछ नहीं कहा, लेकिन तुम्हारी और ग्रिगोरी की तरह ही तो तमाम लोग हैं जो 'अपने लोगों' की राह देख रहे हैं।"

"नहीं, मैं किन्हीं लोगों की राह नहीं देख रहा। मेरे लिए उनसे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।"

"गुनाह तो यही है कि उनसे तुम्हारे लिए कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। आओ···अन्दर आओ···नाराज़ न हो···मैं तो यों ही हँसी कर रहा था।"

प्रोखोर बेमन से सीढ़ियों पर चढ़ा और ड्योढ़ी पार करते हुए बोला—"तुम्हारी हँसी की बातों में मेरे भाई हँसने को कुछ नहीं है··· जो गुज़र गया, उसे भूलना ही चाहिए···मैंने तो बीती बातों की कीमत अदा की है।"

"लेकिन सारी-की-सारी बीती बातें भुलाई नहीं जा सकतीं।" मीशा ने मेज़ के किनारे बैठते हुए सख्ती से कहा—"खैर छोड़ो···आओ, खाना खा लो।"

"शुक्रिया···सचमुच सारी बीती बातें भुलाई नहीं जा सकतीं। मिसाल के तौर पर मेरा एक हाथ जाता रहा है, और इस हादिसे को भूलने में मुझे बड़ी ही खुशी होगी···लेकिन इसे भूलना मुमकिन नहीं है···बात दिमाग़ में रह-रहकर ताज़ी होती रहती है।"

दून्या ने मेज लगाते-लगाते मीशा की तरफ़ देखे बिना कहा—"तुम्हारा खयाल है कि गोरे फ़ौजियों के साथ जो भी रह चुका है, उसे माफ़ी मिल ही नहीं सकती ?"

"क्या ? और तुम्हारा क्या खयाल है ?"

"मेरा खयाल···मैं तो सोचती हूँ कि जो बीती बातें कुरेदता है, उसकी आँखें निकाल ली जाती है···ऐसा ही तो कहते हैं लोग।"

"बाइबिल में ऐसा लिखा होगा।" मीशा ने अन्यमनस्क भाव से कहा—"मेरे दिमाग़ से तो आदमी जो कुछ करता है, उसे उसके लिए जवाबदेह होना पड़ता है।"

"सरकार तो ऐसा कुछ कहती नहीं।" दून्या ने शांत मन से कहा। उसने एक दूसरे कज्ज़ाक के सामने मीशा से उलझना ठीक न समझा, पर अन्दर-ही-अन्दर उससे खासी चिढ़ी रही। उसे लगा कि प्रोखोर से इसने बेतुका मज़ाक किया है और मेरे भाई के साथ खुल्लमखुल्ला दुश्मनी दिखलाई है।

पर मीशा बोला—"सरकार तुमसे कुछ नहीं कहती। तुमसे वह कहेगी भी क्या ! पर गोरी फ़ौज में काम करने वाले हर आदमी को सोवियत क़ानून को जवाब देना ही पड़ेगा···।"

"यानी अपने काम के लिए मुझे भी जवाब देना पड़ेगा ?"

"तुम्हें क्यों जवाब देना पड़ेगा ! तुम तो भेड़ हो·· चरागाह में चरते रहे और फिर अपने बाड़े में वापस आ गए ! अर्दलियों से कौन क्या पूछेगा ? लेकिन लौटने पर ग्रिगोरी को लोहे के चने चबाने पड़ेंगे। हम उससे पूछेंगे कि बग़ावत क्यों हुई, कैसे हुई, किसने कराई, खुद उसका इसमें कितना हाथ रहा ?"

"और यह सवाल कौन करेगा···तुम ?" दही का प्याला मेज़ पर रखते-रखते दून्या की आँखें कौंध-सी उठीं।

"हाँ, पूछने वालों में मैं भी शामिल रहूँगा।" मीशा ने बिना आवेश में आए जवाब दिया।

"तुम्हारा यह काम नहीं···तुम्हारे बिना भी सवाल-जवाब करने वालों की कमी न होगी। जहाँ तक ग्रिगोरी का सवाल है, वह माफ़ी

का हकदार हो गया है···उसने लाल फ़ौज का साथ दिया है।"

दून्या की आवाज़ कांपने लगी और वह ऐप्रन की झालर उँगलियों में उलझाते हुए मेज के किनारे बैठ गई। पर मीशा ने जैसे कि अपनी पत्नी की परेशानी देखी ही नहीं। बिना डगमगाए कहता गया—"मैं भी दो-एक सवाल कर लूंगा···दिलचस्पी रहेगी···जहाँ तक बात माफ़ी की है, वह तो हम लोगों को देखना-समझना पड़ेगा···फिर से सोचना पड़ेगा कि माफ़ी किस हद तक दी जा सकती है···उसने हमारा काफ़ी खून बहाया है। तराजू पर तोलकर देखना पड़ेगा कि खून इस तरफ़ का भारी पड़ता है या उस तरफ़ का···।"

इस तरह शादी के बाद पहली बार मीशा और दून्या के सम्बन्धों के बीच कोई दरार पड़ी, और बावर्चीखाने में ऐसा सन्नाटा हो गया, जो रह-रहकर खटकने लगा। मीशा बीच-बीच में तौलिए से होंठ पोंछते हुए चुपचाप दही खाता रहा। प्रोखोर सिगरेट पीता और दून्या को घूरता रहा। फिर उसने खेती-बारी के क़िस्से छेड़ दिए और इसके बाद कोई आधे घंटे तक वहाँ और रहा। चलते-चलते बोला—"किरील-ग्रोमोव लौट आया है···तुम लोगों ने सुना ?"

"नहीं सुना···लेकिन वह लौटा कहाँ से है ?"

"लाल फ़ौज से···वह भी पहली घुड़सवार फ़ौज में था।"

"यह वही आदमी है जिसने ममोनतोव की मातहती में काम किया है ?"

"हाँ वही है।"

"बड़ा भारी सूरमा रहा है वह तो !" मीशा मजाक बनाते हुए हँसा।

"हाँ लूटपाट के मामले में सूरमा ही रहा है। ऐसा कोई मौक़ा कहीं नज़र नहीं आया कि वह फ़ौरन तैयार !"

"लोग कहते हैं कि उसने बिना किसी तरह की रू-रियायत के क़ैदियों को गाजर-मूली की तरह काटकर फेंक दिया है और उन्हें मौत के घाट उतार दिया है सिर्फ़ बूटों-जैसी चीज़ के लिए।"

"सुनते तो ऐसा ही हैं।" प्रोखोर ने बात पर मुहर मारी।

"और माफ उसे भी कर देना चाहिए···क्यों ?" मीशा ने धीरे से कहा—"परमपिता ने अपने दुश्मनों को माफ कर दिया और हमसे भी ऐसा ही करने को कहा···है न ?"

"इस सवाल का जवाब उतना आसान नहीं है···लेकिन तुम उसके मामले में करोगे क्या ?"

"ख़ैर देखा जाएगा···इस मामले में भी जो कुछ जरूरी होगा मैं करूँगा ही।" मीशा ने अपनी आँखें सिकोड़ीं—"मैं तो वह करूँगा कि इसके बाद वह दुनिया छोड़ देगा···साथ ही यह भी है कि हजार चाहकर भी सजा से बच न पाएगा···व्येशेन्स्काया में दोन चेका[1] है···उसके लोग इसके गले में प्यार से बाँहें डालेंगे···"

प्रोख़ोर मुस्कराया और बोला—"कहावत ठीक ही है कि सिर्फ़ पोढ़े लोग ही ऊँट का कूबड़ बराबर कर सकते है। वह तो लाल फ़ौज से भी लूटपाट करके ही लौटा होगा। उसकी बीवी मेरी बीवी से दून की ले रही थी कि मेरा आदमी एक ज़नाना कोट, जाने कितने जोड़े कपड़े और जाने कितनी चीजें लाया है। आदमी मस्लाक-ब्रिगेड में था और वहाँ से घर आया है। मैं तो सोचता हूँ कि भागकर आया होगा, क्योंकि हथियार साथ हैं।"

मीशा ने पूछा—"कौनसे हथियार ?"

'अरे एक कारबाइन, एक पिस्तौल और जाने क्या-क्या !"

"सोवियत में उसने अपना नाम दर्ज कराया या नहीं, तुम्हें पता है ?"

प्रोख़ोर हँसा और उसने हाथ हिलाया—"उसे तो रस्सी से घसीटकर भी वहाँ ले जाना मुमकिन नहीं। मैं सोचता हूँ कि भागा हुआ है वह और आज नहीं तो कल घर से खिसक जाएगा। अब यह किरील है जो लड़ाई में अपने और कुछ हाथ दिखलाना चाहता है। लेकिन तुम मेरे बारे में ग़लत सोचते हो। नहीं भाई, मैं अपने हिस्से की लड़ाई लड़ चुका···इस तरह के दिल-बहलाव से मेरा जी पूरी तरह भर चुका।"

फिर प्रोख़ोर जल्दी ही चला गया। इसके बाद मीशा भी घर से

---

१. १९१७ से १९२२ के बीच रूसी पुलिस का गुप्तचर विभाग।

बाहर आया। दून्या ने बच्चों को खिलाया-पिलाया और बिस्तर लगाए कि पति लौटा। उसके हाथ में बोरी में लिपटा कुछ दीखा।

"कहाँ गये थे भला तुम?" दून्या ने नाराज होते हुए पूछा।

"अपना दहेज उगाहने गया था।" मीशा मजे से मुस्कराया, बोरा खोलकर एक राइफ़ल, कारतूसों की एक थैली, एक पिस्तौल और दो हथबम बेंच पर रखे, और एक तश्तरी में थोड़ा-सा पैराफ़ीन बड़ी ही सावधानी से उँडेला।

"यह सब कहाँ से आ गया?" दून्या ने भौंहों से हथियारों की तरफ इशारा किया।

"ये हथियार मेरे हैं…मोर्चे से साथ लाया था।"

"लेकिन, तुमने अब तक कहाँ छिपा रखा था इन्हें?"

"जाने दो इस बात को, चाहे जहाँ भी रहे हों, इतना है कि इनकी खासी फिक्र की गई है।"

"बात समझ में नहीं आई…तुम्हें तो अपनी चीजें अपने पास रखने का शौक है…फिर तुमने इनका जिक्र भी कभी नहीं किया…यानी अपनी बीवी से भी चोरी?"

मीशा ने बरबस, लापरवाही से मुस्कराते हुए बीवी को मनाने की कोशिश की। बोला—"तुमसे जिक्र करने को इसमें भला क्या था? यह औरतों का काम नहीं। इन्हें यहीं रहने दो। अब इनका तुम्हारे पास रहना ऐसा कुछ खराब नहीं है बीवी।"

"पर इन्हें यहाँ क्यों ले आए हो तुम? तुम तो अब क़ानून का इतना खयाल रखने लगे हो…सभी-कुछ जानते हो…यह काम क्या ग़ैर-क़ानूनी नहीं है? क्या इसके लिए तुम्हें जवाब देना नहीं पड़ेगा?"

"तुम बेवकूफ हो। किरील ग्रोमोव जब ये हथियार लेकर गाँव आया है तो उसने सोवियत सरकार के लिए खतरा पैदा किया है। लेकिन, मैं जब इन्हें यहाँ लाया हूँ तो मैंने सोवियत सरकार की हिफाजत की बात सोची है। आई बात समझ में? किसे जवाब देना पड़ेगा—मुझे? तुम जाने क्या बक-बका रही हो। जाओ और जाकर सो रहो।"

उसने अपनी बुद्धि से ठीक ही सोचा कि गोरी फौज के लोग हथियार लेकर लौट सकते हैं। ऐसी हालत में मुझे तैयार रहना चाहिए।··· सो, उसने बड़ी मेहनत से राइफल और पिस्तौल साफ़ की और दूसरे दिन उजाला होते ही व्येशेन्स्काया जाने का सरंजाम करने लगा।

दून्या ने थैले में खाना रखते समय नाराज़ होकर कहा—"तुम जाने क्यों मुझसे कुछ-न-कुछ छिपाए रहते हो हमेशा ! कम-से-कम यह तो बतला दो कि कब तक के लिए जा रहे हो, और क्यों जा रहे हो ? इसी को ज़िन्दगी कहते हो तुम ? जब मन चाहा तब चल दिए और कुछ भी बतलाने के नाम पर गोल। तुम मेरे अपने आदमी हो या मेरी कमीज़ के महज़ कोई बटन हो ?"

"मैं व्येशेन्स्काया जा रहा हूँ, फौजी कमीशन के सामने पेश होने। और क्या जानना चाहती हो तुम ? बाक़ी सब-कुछ लौटूँगा तो बतला दूँगा।"

और अपना थैला बग़ल में दबाकर सीधा दोन के किनारे आया। नाव पर सवार हुआ और नाव को तेजी से दूसरे किनारे की तरफ खे चला।

व्येशेन्स्काया पहुँचा तो डॉक्टरी के बाद डॉक्टर ने रुखाई से कहा—"मेरे प्यारे कामरेड, तुम लाल सेना में शामिल होने के लायक नहीं। मलेरिया ने तुम्हें कहीं का नहीं छोड़ा है। अच्छा हो कि तुम इलाज करा लो, वरना हालत और खराब हो जाएगी। लाल सेना को तुम्हारे जैसे लोगों की जरूरत नहीं है।"

"फिर, और कैसे लोगों की जरूरत है ? मैं दो साल फौज में रह चुका हूँ और अब मेरी ज़रूरत नहीं है···कैसे हो सकता है ऐसा ?"

"सबसे बड़ी और ज़रूरी बात यह है कि हम जिन लोगों को लें, वे हर तरह ठीक-ठाक और तन्दुरुस्त हों। तुम पहले ठीक हो जाओ, फिर देखा जाएगा···यह नुस्खा लेते जाओ···दवाखाने से कुनैन मिल जाएगी तुम्हें।"

"समझा।" कोशेवोइ ने कमीज़ यों पहनी जैसे कि किसी आलसी

घोड़े के गले में पट्टा डाल रहा हो। लगा कि सिर उसमें जाएगा ही नहीं। पतलून के बटन उसने सड़क पर आकर बन्द किए और सीधा पार्टी की क्षेत्रीय कमेटी के दफ्तर की ओर बढ़ा।

और, फिर गाँव की क्रान्तिकारी समिति का अध्यक्ष बनकर गाँव लौटा। घर पहुँचने पर, पत्नी से जल्दी-जल्दी बोला—"समझी, अब देखा जाएगा।"

"क्या मतलब ?" दून्या ने अचरज से पूछा।

"वही जो पहले था।"

"पहले आखिर क्या था ?"

"मैं सदर बन गया हूँ। अब बात समझ में आई।"

दून्या ने खीझ से अपने हाथ पीट लिए और कुछ कहने को हुई। परन्तु मीशा उसकी बात सुनने को रुका ही नही। शीशे के सामने खड़े होकर अपनी बदरंग, खाकी ट्यूनिक की पेटी ठीक की और सोवियत के दफ्तर के लिए रवाना हुआ।

बूढ़ा मिखेयेव जाड़े मे क्रान्तिकारी समिति का अध्यक्ष नियुक्त हुआ था और तब से अब तक वही इस पद पर रहा था। वह कुछ कम-ही-कम देखता और सुनता था और अपनी जिम्मेदारियों के कारण काफ़ी परेशान रहता था। इसलिए जब मीशा कोशेवोइ ने उससे अपनी नियुक्ति की बात कही तो वह बहुत ही खुश हुआ।

"ये रहे काग़जात···और यह रही गाँव की मुहर—सम्हालो इन्हें, ईसा के नाम पर सहेजो।" उसने क्रास बनाते और हाथ मलते हुए, स्वाभाविक प्रसन्नता से कहा—"मैं सत्तर का हुआ। और ज़िन्दगी-भर मैंने कभी कोई ओहदा सम्हाला नहीं। अब बुढ़ापे में यह ज़िम्मेदारी गले पड़ गई थी···यह सब तो तुम्हारे जैसे जवान लोगों के लिए है···मुझसे भला काम भी क्या हो सकता है ? न मैं ठीक उसे सुन सकता हूँ, न ही अच्छी तरह से देख सकता हूँ। मेरा तो वक्त यह है कि ऊपर वाले की याद करता अपने इने-गिने दिन जैसे-तैसे गुज़ार देता—मगर उन लोगों को जाने क्या सूझी कि उन्होंने मुझे सदर बना दिया···"

मीशा ने ज़िला क्रान्तिकारी समिति के आदेशों और आज्ञाओं पर

सरसरी नजर डाली और पूछा—"सेक्रेटरी कहाँ है ?"

"क्या ?"

"अरे मैंने पूछा कि सेक्रेटरी कहाँ है ?"

"सेक्रेटरी ? वह राई की बोआई कर रहा है। हफ्ते में सिर्फ़ एक बार आता है यहाँ···मौत ले जाए उसे !" कभी-कभी ज़िले से कोई कागज आ जाता है और उससे पढ़वाना ज़रूरी हो जाता है, मगर गाँव-भर में जाल डलवाने पर भी वह हाथ नहीं आता। नतीजा यह कि कागज कई-कई दिन तक ज्यों-का-त्यों पड़ा रहता है। जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं तो लिखना-पढ़ना नाम-भर को जानता हूँ···बिल्कुल नाम-भर को। जैसे-तैसे दस्तखत-भर बना लेता हूँ। काम सिर्फ़ एक कर सकता हूँ और वह यह है कि मुहर मार लेता हूँ।"

कोशेवोइ ने क्रान्तिकारी समिति की काली दीवारें देखीं तो उसकी भौंहें तन गईं। दीवारों पर जहाँ-तहाँ खरोंचें नजर आईं और उन पर बाबा आदम के ज़माने का सिर्फ़ एक पर्चा चिपका दीखा। पर्चा भी मक्खियों की कारीगरी से भरा समझ पड़ा।

बूढ़े मिखेयेव को इस ज़िम्मेदारी से छुटकारा पाने पर ऐसी खुशी हुई कि कोशेवोइ को फटे कपड़े में लिपटी मुहर सहेजते समय वह हँसी तक कर बैठा। बोला—"यह है गाँव की पूरी मिलकियत। नक़द रकम सौंपने को कुछ नहीं है, और सोवियत हुकूमत के इस ज़माने में भला अतामान की यादगार को लोग वैसे भी कोई खास अच्छी निगाह से नहीं देखते। कहो तो अपनी पुरानी बात मैं तुम्हें नज़र करूँ।" और, पोपले मुँह से मुस्कराते हुए उसने ऐश का अपना बेंत मीशा की ओर बढ़ाया। बेंत का हत्था इस्तेमाल से चमकता लगा।

लेकिन कोशेवोइ को हँसी अच्छी न लगी। उसने उस कमरे पर एक बार फिर निगाह डाली और त्योरी चढ़ाते हुए आह भरकर बोला, "तुमसे सब-कुछ मिल गया। तुमने यहाँ की हर चीज़ सौंप दी बाबा··· मान लिया, मगर अब तुम यहाँ से फ़ौरन नौ-दो-ग्यारह हो जाओ।" उसने आँखों से दरवाज़े की तरफ इशारा किया।

उसके बाद वह मेज के किनारे आकर बैठ गया और बहुत देर

तक वहीं बैठा दाँत पीसता रहा। सोचता रहा—पिछले दिन मैंने कैसे गधेपन में बिताए हैं। जहाँ-तहाँ जमीन खुरचता फिरा हूँ, और सिर उठाकर एक बार भी आहट नहीं ली है कि आसपास आखिर हो क्या रहा है। किसी चीज़ को कायदे से कान नहीं दिया है।

उसे अपने साथ-साथ हर चीज पर बड़ा गुस्सा आया। वह अपनी जगह से उठा, ट्यूनिक ठीक की, दूर आँख गड़ाई और दाँत भींचे-ही-भींचे बोला—"हाँ बरखुरदारो, तुम्हें···तुम्हें दिखलाऊँगा मैं कि क्या होती है, सोवियत सरकार।"

"उसने दरवाज़ा बन्द किया। जंजीर लगाई और चौक पारकर घर की ओर बढ़ा। रास्ते में गिरजे के पास उसकी भेंट ओबनिजोव के लड़के से हुई, लापरवाही से उसकी तरफ़ देखकर सिर हिलाया और बग़ल से गुज़र गया। पर, सहसा ही इसे कुछ ख़याल आया तो मुड़ा और चिल्लाकर बोला—"ए अन्द्रेयुश्का रुको ज़रा···सुनो तुमसे कुछ काम है।"

वह भूरे बालों वाला शर्मीला लड़का, बिना कुछ बोले, लौट आया। मीशा ने उसकी तरफ़ यों हाथ बढ़ाया जैसे कि वह बच्चा न होकर बड़ा, सयाना मर्द हो। बोला—"कहाँ जा रहे थे? गाँव के उस नुक्कड़ की तरफ़ घूमने जा रहे हो? सुनो, तुम तो उच्च आरम्भिक पाठशाला में जाते रहे हो,···जाते रहे हो न? बहुत अच्छा। दफ़्तर का काम-धाम जानते हो कुछ?"

"दफ़्तर का किस तरह का काम?"

"अरे, यही छोटा-मोटा मामूली काम···जैसे यह कि दफ़्तर में जो कुछ आया उसे सहेज लिया। और जो कुछ भेजना जरूरी हुआ, उसे बाहर भेज दिया।"

"मैं समझा नहीं कामरेड कोशेवोइ!"

"अरे भाई, दफ़्तर में काग़ज आते हैं···इनके बारे में कुछ जानते-समझते हो तुम? पता है कुछ काग़ज बाहर भेजने के होते हैं और कुछ दूसरे काम आते हैं।" मीशा ने अपनी उँगलियाँ ऐंठीं और जवाब का इन्तज़ार किए बिना दृढ़ता से कहा—"नहीं जानते हो तो कोई बात

नहीं। जल्दी ही सीख जाओगे। अब गांव की क्रान्तिकारी समिति का सदर मैं हूं···और तुम पढ़े-लिखे लड़के हो—तुम्हें मैं सेक्रेटरी बनाता हूं। दफ्तर जाओ और वहां की सारी चीजें सहेजो। मेज पर पड़ी है। मैं अभी आता हूं।···समझे ?"

"कॉमरेड कोशेवोइ !"

मीशा ने हाथ झटका और अधीरता से बोला—"बाक़ी बातें बाद में होंगी। फ़िलहाल जाओ और अपना काम सम्हालो !" और, वह नपे-तुले क़दम रखते हुए आगे चल दिया।

घर पहुंचने पर उसने नया पतलून पहना, पिस्तौल जेब में डाली और शीशे के सामने खड़ा होकर कुछ देर तक टोपी जमाता रहा। फिर दून्या से बोला—"मैं काम से कहीं जा रहा हूं। जल्दी ही लौटूंगा। कोई सदर के नाम पर मुझे पूछे तो बतला देना।"

अध्यक्ष बनते ही मीशा में कुछ परिवर्तन आवश्यक हो गए। वह ज़रा धीरे-धीरे यों चलने लगा, गोया कोई महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हो। परन्तु, उसकी यह चाल ऐसी अस्वाभाविक लगी कि कुछ गांव के लोग उसे देखते ही ठिठक गए और मुस्करा-मुस्कराकर, घूर-घूरकर देखने लगे। प्रोखोर-जिकोव उसे सड़क पर देखते ही आदर से पीछे हटकर बाड़ के पास पहुंच गया और पूछने लगा—"मगर, यह सब है क्या, मिखाइल ? काम के दिन तुमने ऐसे शानदार कपड़े पहन रखे हैं और सड़क पर यों चल रहे हो, जैसे परेड कर रहे हो। आखिर बात क्या है ? दुबारा शादी करने तो नहीं जा रहे ?"

"ऐसा ही कुछ समझो।" मीशा ने ज़रा मर्यादा से होंठ सिकोड़ते हुए कहा।

और, ग्रोमोव के फाटक के पास उसने थैली निकालने के लिए पतलून की जेब में हाथ डाला और लम्बे-चौड़े अहाते में फैली इमारतों और घर की खिड़कियों पर तेज निगाह डाली।

किरील ग्रोमोव की मां, पशुओं को खिलाने के लिए कद्दू के टुकड़े लिये बरसाती से निकलती दीखी। मीशा ने बड़े आदर से उसका अभिवादन किया और सीढ़ियों की ओर बढ़ा।

"किरील घर पर है, चाची ?"

'हां, घर में है···सीधे अन्दर चले जाओ।" बुढ़िया ने उसे रास्ता देने के लिए एक तरफ हटते हुए कहा।

मीशा अँधेरी बरसाती में घुसा और थोड़े उजाले में दरवाजे का हत्था टटोलने लगा।

सफ़ाचट दाढ़ी-मूंछ वाले किरील ने सोने के कमरे का दरवाजा खोला और उसे देखते ही एक क़दम पीछे हट गया। थोड़ा नशे में नज़र आया। उसने मीशा पर सिर से पैर तक एक निगाह डाली और थोड़ी परेशानी से बोला—"लो भई एक फौजी और हाज़िर ! अन्दर आ जाओ, कोशेवोइ···आओ···बैठो। मेरी मेहमानी क़बूल करो। हम लोग पी रहे थे···यही थोड़ी-सी पी रहे थे···।"

"एक मेहमान-नवाज़ी हज़ार पकवानों की कमी पूरी करती है," मीशा ने मेज के चारों तरफ बैठे मेहमानों को देखते हुए घर के मालिक से हाथ मिलाया।

मीशा को लगा कि वह बेवक़्त आया है। मिखाइल के लिए बिलकुल अनजाने, चौड़े कन्धों वाले एक कज्ज़ाक ने कोने पर बैठे-ही-बैठे किरील को तेज़, प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा और अपना गिलास झटके से दूर खिसका दिया। मीशा को देखते ही दूसरी तरफ बैठे कोरशुनोव के एक सम्बन्धी सेम्योन अख्वात्किन के माथे पर बल पड़ गए और उसने अपनी आंखें इधर से हटा लीं।

किरील ने मीशा से बैठने का आग्रह किया। मीशा बोला—"शुक्रिया···।"

"लेकिन, बैठो न···ऐसा क्यों करते हो कि हमें बुरा लगे ? थोड़ा पिओ न !'

मीशा मेज़ के किनारे बैठ गया और अपने मेजबान के हाथों से घर की बनी वोदका का गिलास लेते हुए सिर हिलाकर बोला—"मैं तुम्हारे घर लौटने के नाम पर जाम उठाता हूँ, किरील—इवानोविच !"

"शुक्रिया···तुम्हें फौज से लौटे बहुत वक़्त हुआ क्या ?"

"बहुत वक़्त हुआ···मैंने तो इस बीच अपना घर भी बसा लिया।"

"यानी, घर बसा लिया और शादी कर ली···क्या कहते हैं ? मगर इस तरह मुँह क्यों बना रहे हो ? गिलास खाली करो न !"

"मुझे अब और नहीं चाहिए···तुमसे कुछ जरूरी बातें करनी हैं।"

"भई, यह ज्यादती है। नहीं चलेगी। आज काम की बात मैं नहीं कर सकता। इस वक़्त तो दोस्तों के साथ जश्न मना रहा हूँ। अगर कोई काम हो तो कल फिर चले आना।"

मीशा मेज से उठा और शांत मन से मुस्कराते हुए बोला—'काम तो जरा-सा है, मगर टाला नहीं जा सकता। एक मिनट के लिए जरा बाहर आओ न!"

किरील अपनी मूँछों पर हाथ फेरते हुए एक क्षण तक चुप रहा और फिर उठ खड़ा हुआ।

"यहीं कर लो बात···जमी हुई महफ़िल क्यों उखाड़ते हो ?"

"नहीं, बाहर ही आओ।" मीशा ने धीरे से पर आग्रह के साथ कहा।

"चले जाओ न बाहर···बेकार की बहस क्यों कर रहे हो ?" चौड़े कन्धों वाले अजनबी कज़्ज़ाक ने कहा।

किरील मीशा को लेकर, बावर्चीखाने की तरफ बढ़ा और स्टोव के पास कुछ पकाने में व्यस्त अपनी पत्नी से बुदबुदाकर बोला—"जरा यहाँ से बाहर चली जाओ, कतेरीना !"···फिर, बेंच पर बैठते हुए रूखे ढंग से बोला—"बतलाओ, बात क्या है ?"

"कितने दिन हुए तुम्हें लौटे ?"

"क्यों, क्या मामला है ?"

"मैं जानना चाहता हूँ कि तुम्हें यहाँ आए कितने दिन हुए ?"

"चौथा दिन है···मेरे खयाल से।"

"और अभी तक क्रांतिकारी समिति के दफ़्तर नहीं गये तुम ?"

"नहीं, अभी तक तो नहीं गया।"

"और, व्येशेन्स्काया में फ़ौजी कमीशन के सामने पेश होने जा रहे हो तुम ?"

"तुम कहना क्या चाहते हो ? जिस काम से आए हो, वह

बतलाओ न !"

"मैं काम की ही बात तो कर रहा हूं ।"

"अगर ऐसा है तो ऐसी-तैसी में जाओ। आखिर तुम हो क्या कि मैं तुम्हें हज़ार सवालों के जवाब देता फिरूँ ?"

"मैं क्रांतिकारी समिति का सदर हूं···अपनी रेजीमेंट के काग़ज़ात दिखलाओ ज़रा ।"

"तो यह बात है ।" किरील ने कहा और सहसा ही मीशा को गम्भीर दृष्टि से देखते हुए बोला—"यानी मतलब तुम्हारा यह है ?"

"हां···ठीक समझा तुमने । अपने काग़ज़ात दे दो मुझे ।"

"मैं आज उन्हें सोवियत के दफ़्तर में ले आऊँगा ।"

"नहीं···अभी दिखलाओ···फ़ौरन ।"

"कहीं बांधकर डाल दिए हैं मैंने ।"

"डाल दिए हैं कहीं, तो खोज लो ।"

"नहीं, फ़िलहाल मैं उन्हें ढूंढ़ने से रहा । घर जाओ मिखाइल··· बेकार का तमाशा न करो यहाँ ।"

"नहीं तमाशा तो छोटा-सा दिखलाऊँगा तुम्हें मैं ।" मीशा ने दाहिना हाथ जेब में डाला—"कोट पहनो अपना ।"

"छोड़ो भी, मिखाइल···और अपना भला चेतो तो अपना हाथ मेरे बदन से दूर ही रखो ।"

"चलो मेरे साथ···मैं कहता हूं ।"

"कहाँ चलूं ?"

"क्रांतिकारी समिति के दफ़्तर···।"

"मेरी तो ऐसी कोई खास ख्वाहिश नहीं ।" किरील पीला पड़ गया, पर मुस्कराते हुए बोला ।

मीशा थोड़ा बायें कटा, जेब से पिस्तौल निकालते हुए खटके पर उँगली रख ली और धीरे से बोला—"चलते हो या नहीं ?"

किरील, बिना कुछ बोले, सोने के कमरे की तरफ बढ़ा तो मीशा रास्ते में अड़कर खड़ा हो गया और आँखों से बरसाती के दरवाजे की तरफ़ इशारा करने लगा ।

"साथियो !" किरील बनावटी तटस्थता ओढ़ते हुए चिल्लाया—"मैं तो गिरफ़्तार-सा हो गया हूँ···वोदका मेरे बिना ही खत्म कर लेना।"

इसी समय सोने के कमरे का दरवाज़ा भड़ाक से खोला और अस्ता-त्किन ड्योढ़ी की ओर लपका। लेकिन पिस्तौल अपनी तरफ़ तनी देख-कर दरवाज़े के पीछे छिप गया।

"चलो।" मीशा ने किरील को आदेश दिया।

किरील ऐंठते हुए धीरे-धीरे दरवाज़े की ओर बढ़ा, एक उछाल में ही बरसाती पार की, दरवाज़ा भड़ाक से बन्द किया। उछलते हुए सीढ़ियाँ पार कीं और अहाता पार करने के बाद दोहरा होकर बगिया की तरफ भागा। मीशा ने उसे दो बार गोलियाँ मारीं, पर वार खाली गए। फिर, पैर फैलाकर, पिस्तौल की नली टेढ़े-मेढ़े बाएँ हाथ की कुहनी के आरपार जमाकर निशाना साधा। तीसरी गोली लगते ही किरील डगमगाता लगा, पर चोट पर काबू पाने के बाद उछलकर हलके से बाड़ पर चढ़ गया मीशा। बरसाती से निकलकर दौड़ा। इसी समय पीछे के मकान से धांय से राइफ़ल दगी। गोली ने शेड की सफ़ेद दीवार की चिकनी मिट्टी उधेड़ी तो सामने आवाज़ हुई और पत्थर के भूरे टुकड़े मैदान-भर में बिखर गए।

किरील तेज़ी से दौड़ा। उसका झुका हुआ शरीर सेब के पेड़ों की हरी पत्तियों के बीच कौंधा। मीशा छलाँग मारकर बाड़ पर चढ़ा, लेकिन गिर पड़ा। फिर, वहीं पड़े-पड़े उसने भागने वाले पर दो बार फ़ायर किया और मुड़कर घर की तरफ चेहरा कर लिया। बाहर का दरवाज़ा खुला दीखा और किरील की माँ सीढ़ियों पर खड़ी, आँखों पर हथेली की ओट कर बगिया में निगाह दौड़ाती नज़र आई।

'मुझे बात करने के बजाय उसे ठौर-की-ठौर गोली मार देनी चाहिए थी।' मीशा ने सोचा, कई मिनट तक घर की तरफ़ एकटक देखता रहा और, मशीन की तरह, नपे-तुले ढंग से घुटनों की धूल झाड़ने लगा। इसके बाद उठा, शरीर पर बल देते हुए चढ़कर बाड़ पार की और पिस्तौल की नली नीचे कर घर लौट गया।

: ५ :

ग्रोमोव तो उड़ा ही, अस्ताखिन के साथ ग्रोमोव के कमरे का वह अजीबो-गरीब कज्जाक भी गांव से उड़ दिया। रात को दो दूसरे कज्जाक भी गायब हो गए। सहसा ही व्येशेन्स्काया से दोन-चेका[1] की एक छोटी टुकड़ी के लोगों ने कज्जाकों को गिरफ़्तार किया, और बिना काग़जात के रेजीमेंटों से भागकर घर आने वाले चार लोगों को व्येशेन्स्काया की पेनल-कम्पनी के पास भेज दिया।

कोशेवोइ पूरे दिन क्रांतिकारी समिति के कार्यालय के कमरे में बैठा रहता और सिर्फ़ शाम को घर लौटता। वह हमेशा भरी हुई राइफ़ल सिरहाने रखता, पिस्तौल तकिए के नीचे दबा लेता, और बिना कपड़े उतारे सोने को लेट जाता।

सो, किरील वाली घटना के तीसरे दिन दून्या से बोला—"आओ, चलो, बरसाती में सोएँ।"

"आखिर क्यों?" दून्या ने आश्चर्य से पूछा।

"वे लोग खिड़की से गोली चला सकते हैं। पलंग खिड़की से सटा हुआ है।"

दून्या, बिना एक शब्द कहे, पलंग चुपचाप बरसाती में ले आई। पर, दूसरे दिन शाम को बोली—"ज़रा यह बतलाओ कि हम लोग कब तक जाल में फँसे खरगोशों की तरह रहते रहेंगे? जाड़ा आ रहा है और क्या उस वक़्त भी हम बरसाती में ही बसेरा जमाए रहेंगे?"

"जाड़ा अभी दूर है, पर इस बीच तो हमें इसी तरह यहीं रहना होगा।"

"और यह इस बीच कब तक चलेगा?"

"जब तक कि मैं किरील को ठिकाने न लगा दूँगा।"

"तुम्हारा खयाल है कि वह तुम्हारे हाथ आसानी से आ जाने देगा अपने को?"

"किसी-न-किसी दिन तो हाथ आ ही जाएगा।" मीशा ने विश्वास

---

१. रूसी पुलिस का गुप्तचर विभाग, १९१७-१९२२।

के साथ उत्तर दिया।

लेकिन उसकी बात ग़लत निकली। किरील ग्रोमोव और उसके साथी दोन के किनारे के इलाके में कहीं दूर जा छिपे। फिर अराजकतावादी माखनो के ज़िले के पास तक आ पहुँचने की खबर पाकर वे दूसरे किनारे को लौटे और क्रास्नोकुत्स्काया की बस्ती में चले गए। यहाँ अफ़वाहें कानों में पड़ीं कि माखनो की टुकड़ी वहाँ कभी की पहुँच चुकी है। किरील ने रात तातारस्की में बिताई तो संयोग से उसकी भेंट सड़क पर प्रोखोर-ज़िकोव से हो गई। बोला—"कोशेवोइ को मेरा प्रोचित्त कहना और कहना कि मैं जल्दी ही वापस आकर उसका बदला चुका दूंगा।"

अगले दिन सवेरे प्रोखोर ने मीशा-कोशेवोइ को किरील से अपनी मुलाक़ात की बात बताई और पूरी बातचीत सुनाई।

प्रोखोर की बात सुनने के बाद मीशा बोला—"बहुत ठीक, आने दो। एक बार वह बच निकला। लेकिन दूसरी बार नहीं बचेगा। मैं तो उसका शुक्रगुज़ार हूँ कि उसने मुझे सबक़ दे दिया है और मैं जान गया हूँ कि उसकी तरह के लोगों के साथ किस तरह का बरताव किया जाना चाहिए।"

वास्तव में माखनो अपनी टोली के साथ ऊपरी दोन के क्षेत्र में पहुँच गया था और उसका सामना करने के लिए व्येशेन्स्काया से जो बटेलियन भेजी गई थी, उसने उसे कोनकोव के पास मामूली लड़ाई में तार-तार कर दिया था। पर वह केन्द्रीय क्षेत्र की तरफ़ बढ़ने के बजाय मिलेरोवो स्टेशन की तरफ़ बढ़ा था और उत्तर से रेलवे लाइन पार कर स्तारोबेल्स्क की दिशा में पीछे हट गया था। श्वेत गारद के सबसे ज्यादा काम करने वाले कज्ज़ाक उससे जा मिले थे। पर अधिकांश घर पर बने रहकर देखते रहे थे कि देखें, होता क्या है!

कोशेवोइ इस बीच, हर वक्त ज़मीन से कान लगाए रहा और गाँव में आसपास घटने वाली हर घटना को ग़ौर से देखता-समझता रहा। लेकिन तातारस्की के जीवन में कोई विशेष उल्लास बाक़ी न रहा। कज्ज़ाकों को जहाँ जो कमियाँ दिखाई देतीं, उनके लिए वे

सोवियत सरकार को पानी पी-पीकर कोसते। स्थानीय सहकारी समिति द्वारा हाल में खोली गई छोटी दूकान में जैसे कुछ भी न रहता। साबुन, चीनी, नमक, पैराफ़ीन, दियासलाई, गाड़ी के धुरे में लगाने को ग्रीज वग़ैरा रोज़मर्रा की जरूरत की चीजें वहां मिलती ही नहीं। उनकी जगह खाली अलमारियों में क़ीमती सिगरेटों के पैकेट और लोहे के इने-गिने बरतन रखे दीखते। इन चीजों को महीनों-महीनों कोई न पूछता।

गांव वाले पैराफ़ीन की जगह पिघला हुआ मक्खन और पिघली चर्बी इस्तेमाल करते। कारखानों में तैयार तम्बाकू की जगह घर की उगाई तम्बाकू ले ली जाती। दियासलाइयों की जगह चकमक पत्थरों और लुहारों के बने मामूली लाइटरों से आग जलाई जाती। जल्दी आग पकड़ने के लायक़ बनाने के लिए लकड़ी सूरजमुखी के डठलों के घोल में उबाली जाती, लेकिन इस पर भी बात न बनती। मीशा क्रान्तिकारी समिति के दफ़्तर से लौटते समय कई बार धुआं उड़ाने वालों को नुक्कड़ में जमा देखता। वे चकमक पत्थरों से चिनगारी पैदा करने में जुटे रहते और होंठों-ही-होंठों गालियां बकते रहते। कई बार फुसफुसाकर कहते—"सोवियत सरकार, ज़रा आग दे न!" आखिरकार उनमें से किसी एक की कोशिश से सूखी चैली पर चिनगारी गिर पड़ती, और वह थोड़ा-बहुत आग पकड़ लेती तो सभी उस पर टूट पड़ते। फिर अपनी-अपनी सिगरेट जलाने के बाद वे जमीन पर उकड़ूं बैठ जाते और एक दूसरे को तरह-तरह की खबरें सुनाने लगते।

इन सारी चीजों के साथ सिगरेट बनाने के लिए किसी तरह का काग़ज भी कहीं न मिलता। फलतः कज्ज़ाकों ने पहले तो गिरजे के रजिस्टरों के काग़ज़ से सिगरेटें बनाईं और फिर घर की हर चीज़ के काग़ज़ में सिगरेट रोल कर डाली। यानी बच्चों की पुरानी स्कूली किताबों और बूढ़ों की धार्मिक पुस्तकों तक की खैर न रही।

अकसर ही मेलेखोव-परिवार के अहाते का चक्कर लगाने वाले प्रोखोर-जिकोव ने मिख़ाइल से एक-एक काग़ज वसूल लिया और भरे गले से बोला—"मेरी बीवी के खानदानी सन्दूक के ढक्कन में पुराने

यह अखबार के कागज-ही-कागज मढ़े हुए थे। पर मैंने उन्हें चीरकर सिगरेटें बना डालीं। हमारे घर में 'नया करार'[1] की एक जिल्द थी··· तुम तो जानते हो कि मजहबी किताब है यह। लेकिन मैंने उसे भी फूंक दिया और 'पुराना करार'[2] को भी सिगरेटों में फूंक दिया। बुरी बात तो यह है कि इन सन्तों ने करार[3] बहुत लिखे नहीं।···इसके अलावा मेरी बीवी के पास एक रजिस्टर था और उसमें उसने सभी जिन्दा और मुर्दा रिश्तेदारों के नाम लिख छोड़े थे। मगर मैंने उसे भी नहीं छोड़ा। अब क्या पातगोभी के पत्तों और पोदीने की पत्तियों को कागज की तरह इस्तेमाल करूं? नहीं मिखाइल, तुम जो चाहे सो कहो, मगर एक अखबार तो दे दो। मैं बिना सिगरेट पिए रह नहीं सकता। जर्मन मोर्चे के जमाने में तो मैंने कई बार रोटी का अपना राशन दे दिया और एक औंस तम्बाकू ले ली।···"

उस बार शरद में तातारस्की की जिन्दगी की सांसें जैसे और पतली पड़ गईं। ग्रीज इस तरह नापैद हो गई कि गाड़ियां सड़कों पर से गुजरीं तो उनके पहिए बुरी तरह चरमराए। चमड़े की काठियां और जूते तक चिकनाहट की कमी से चिमड़ गए। पर सबसे ज्यादा कमी खली नमक की। तातारस्की के लोग अक्सर व्येशेन्स्काया गये और एक-एक खाई-पी मोटी भेड़ के बदले सिर्फ़ पांच-पाच पौंड नमक लेकर सोवियत सरकार को कोसते लौट आए। इस गुनहगार नमक ने मिखाइल के लिए बड़ी मुसीबत खड़ी कर दी। एक दिन बूढ़ों की टोली सोवियत के दफ़्तर आई। टोली के लोगों ने अध्यक्ष को टोपियां उतारकर, आदर से अभिवादन किया और बेंचों पर बैठ गए!

एक बोला—"गांव में नमक नहीं है, सदर साहब।"

"अब साहब-वाहब कोई नहीं रहा।" मीशा ने वक्ता को सही किया।

"माफ़ी चाहता हूं···आदत पड़ गई है, इसीलिए मुंह से निकल

---

१. न्यू टेस्टामेंट।
२. ओल्ड टेस्टामेंट।
३. टेस्टामेंट।

जाता है···खैर कहने का मतलब यह कि साहबों के बिना तो ज़िन्दगी चल सकती है, पर नमक के बिना नहीं चल सकती।"

"अच्छा तो बुज़ुर्गो, यह बतलाओ कि तुम सब चाहते क्या हो?"

"सदर तुम्हें जैसे भी हो, गाँव के लिए नमक तो मँगाना ही चाहिए···बैलगाड़ियों के सहारे मानीच में जाकर यहाँ नमक लाना मुमकिन नहीं है।"

"मैं क्षेत्रीय दफ़तर को इस मामले में लिख चुका हूँ। उम्मीद है कि वे लोग जल्दी ही यहाँ थोड़ा-बहुत नमक भेजने का इन्तज़ाम करेंगे।"

"लेकिन चिड़ियाँ खेत चुग ही जाएँगी तो पछताने से क्या होगा?" एक बूढ़ा फ़र्श पर निगाह गड़ाते हुए बोला।

मीशा क्रोध से लाल हो उठा और मेज़ के पास से उठकर अपनी जेबें उलटता हुआ बोला—"मेरे पास तो नमक है नहीं···देखते हो न? मैं अपने-आप तो नमक लिये फिरता नहीं और फूंक मारकर पैदा भी नहीं कर सकता···समझे न?"

"तो आखिर आएगा कहाँ से यह नमक?" चुमाकोव नाम के एक काने बूढ़े ने एक क्षण चुप रहकर चारों तरफ़ आश्चर्य से दृष्टि दौड़ाते हुए कहा—"पुराने जमाने में पिछली सरकार की हुकूमत में अम्बार लगा रहता था हर जगह···लेकिन आज देखने को नहीं मिलता।"

"हमारी सरकार से इसका कोई मतलब नहीं।" मीशा ने शान्त होते हुए कहा—"अगर कोई सरकार इसके लिए कसूरवार है तो तुम्हारी पिछली सरकार है। उस सरकार के लोग ही हैं जिन्होंने इतनी बरबादी की है कि नमक लाने को आज गाड़ियाँ तक नहीं हैं। सभी रेलवे लाइनें टूटी हुई हैं। ट्रक भी किसी काम के लायक़ नहीं हैं।"

फिर मीशा ने कितनी ही देर तक उन बूढ़ों को समझाया कि फ़ौजों के पीछे हटते समय श्वेत गार्दों ने किस तरह राज्य की सम्पत्ति बरबाद की, किस तरह फैक्ट्रियाँ उड़ा दीं और कैसे गोदामों में आग लगा दी। इस वर्णन में कुछ हिस्सा तो लड़ाई के ज़माने में उसके अपने आँखों देखे अनुभव का रहा, इससे अधिक सुनी-सुनाई बातों का रहा और बाक़ी इन लोगों के मन से सोवियत सरकार का विरोध दूर करने

के लिए उसने अपनी कल्पना से गढ़ लिया। यही नहीं, उसने कुछ देर तक सोचा और अपनी सरकार की वकालत के लिए, उसे लांछना से बचाने के लिए, कितनी ही जोरदार कहानियां बुन ली। बोला—"ऐसा कुछ बुरा न होगा अगर मैं तुम लोगों को इन सूअर के बच्चों के बारे में एक बात बतलाऊँ···सूअर तो वे हैं ही, इसलिए मेरे सूअर के बच्चे कहने से उनमें कुछ घटे-बढ़ेगा नहीं···पर इस बात से हम सबका फ़ायदा ज़रूर होगा।···तुम्हारा खयाल है कि इन बुर्जुआ लोगों के पास अक्ल की कोई कमी है ? नहीं···ऐसा नहीं है···वे बेवकूफ नहीं हैं। यानी इन लोगों ने रूस-भर से हजारों पौंड नमक और चीनी इकट्ठी की, उसे क्रीमिया ले गए और वहां जहाजों पर लादकर बिक्री के लिए बाहर के मुल्कों को भेज दिया।" उसकी आंखें चमकने लगीं।

"और, गाड़ी के धुरे में लगाने की ग्रीज भी वे गाड़ियों पर लादकर कहीं ले गए ?" काने चुमाकोव ने अविश्वास से पूछा।

"तुम्हारा खयाल है कि तुम्हारे लिए ग्रीज यहां छोड़ दिया है उन्होंने ? बाबा, तुम सोचते हो कि उन्हें तुम्हारी और मेहनतकश लोगों की कोई जरूरत है ? ग्रीज खरीदने वाले भी ढूंढ़ लिए होंगे उन्होंने। अरे उनका बस चलता तो लोगों को भूखा मारने के लिए वे तो सब-कुछ गाड़ियों में भरकर यहां से ले जाते।"

"खैर, यह तो ठीक है।" एक बूढ़े ने मीशा की बात से सहमत होते हुए कहा—"ये रईस होते ही ऐसे हैं···आखिरी जर्रा तक छोड़ना नहीं चाहते। आदमी जितना दौलतमन्द होता है, उतना ही लालची होता है। यह बात तो हम लोग बाबा आदम के जमाने से जानते हैं। व्येशेन्स्काया में एक ऐसा सौदागर था कि पहली बार फ़ौज पीछे हटी तो उसने हर चीज गाड़ियों पर लाद ली और तागे की रील तक अपने साथ ले गया। अरे लाल फ़ौजी दरवाजे तक आ गए, मगर उसने अहाते से बाहर निकलने का नाम तक नहीं लिया। भेड़ की खाल में सजा-बजा इधर-उधर दौड़-दौड़कर दीवारों से कीलें निकालता रहा। बोला—'ऐसी-तैसी में जाएँ ये लोग···मैं नाम को एक कील तक न छोडूंगा इनके लिए।' इसलिए कोई ताज्जुब नहीं कि वे लोग ग्रीज भी अपने साथ ले गए हों।"

"यह सब तो ठीक है, मगर नमक के बिना हमारा काम कैसे चलेगा ?" मकसायेव ने अन्त में शान्त स्वर में पूछा ।

मीशा ने सावधानी बरतते हुए सलाह दी—"हमारे कामगार नमक खोदेंगे, मगर इस बीच तुम लोग अपनी गाड़ियाँ मानीच भेज दो ।"

"लोग गाड़ियाँ लेकर वहाँ जाना नहीं चाहते । काल्मीक बहुत परेशान करते हैं । वे झीलों पर हमें नमक लेने नहीं देते और हमारे बैल ले जाते हैं ऊपर से । हमारा एक जान-पहचानी गया तो सिर्फ़ चाबुक हाथ मे लेकर लौटा । हुआ यह कि एक दिन रात में तीन हथियारबन्द सवार घोड़ों पर सवार होकर आए, उसके बैल हाँक ले गए और उसके गले की तरफ़ इशारा करते हुए बोले—'मुँह न खुले वरना तुम्हारी जान की खैर नहीं ।' यह होता है वहाँ जाने का मतलब !"

"आज इन्तज़ार करना पड़ेगा हमें ।" चुमाकोव आह भरकर बोला ।

मीशा ने इन बूढ़ों को तो जैसे-तैसे समझा लिया । पर इसी नमक के कारण घर पर उसके और दून्या के बीच खासी कहा-सुनी हो गई । वैसे भी उन दोनों के बीच काफ़ी पहले से मनमुटाव चल रहा था और इसकी शुरुआत हुई थी तब, जब प्रोखोर के सामने मीशा ने ग्रिगोरी को कुछ कहा था । वह छोटी-सी तकरार अभी तक हरी थी । सो, एक दिन खाते समय मीशा बोला—"तुम्हारा शोरबा नमकीन नहीं है, मालकिन ! अगर घर में न हो तो पीठ से झाड़ लो थोड़ा-सा··· समझी !"

"तुम्हारी इस सरकार की हुकूमत में फ़िलहाल तो किसी के भी यहाँ काफ़ी नमक होने से रहा । तुम्हें पता है कि कितना नमक रह गया है घर में ?"

"कितना रह गया है ?"

"बस, दो मुट्ठी ।"

"हालत पतली है ।" मीशा ने लम्बी साँस खींची ।

दून्या फटकार बरसाती हुई बोली—"और लोग तो गरमी में

मानीच गये और नमक ले आए, मगर तुम्हें तो इसके बारे में सोचने तक की फ़ुर्सत नहीं मिली।"

"किस चीज को गाड़ी में जोतकर चला जाता मानीच ? शादी के पहले साल तुम्हें जोतना तो कुछ जमता नहीं···और, जहाँ तक बैलों का सवाल है···"

"मजाक फिर करना···बिना नमक का खाना खाते वक़्त तुम्हीं को मजाक सूझ सकता है।"

"तुम आखिर मुझसे चाहती क्या हो ? कहाँ से ले आऊँ नमक मैं ? तुम औरतें भी खूब ही होती हो कि डकार से नमक पैदा कर दो, मगर कर दो। लेकिन, नमक अगर है नहीं तो थुक्का-फ़जीहत करोगी तुम ?"

"दूसरे लोग बैलगाड़ियाँ लेकर मानीच गये और आज उनके यहाँ न नमक की कमी है, और न किसी और चीज़ की कमी है। मगर हम हैं कि सीठा खाना चबा रहे हैं।"

"किसी तरह काम चला लो, दून्या ! जल्दी ही नमक भेजने का इन्तज़ाम करेंगे लोग ! हमारे पास क्या ऐसा टोटा है ?"

"नहीं, तुम्हारे पास तो हर चीज की खत्तियाँ भरी हैं।"

"तुम्हारे पास, मानी ?"

"तुम कम्युनिस्टों के पास।"

"अच्छा हम कम्युनिस्ट हैं तो तुम क्या हो फिर ?"

"मैं जो हूँ सो तो तुम देख ही रहे हो। तुम तो गाल-भर बजाते रहे हो—'हमारे पास हर चीज होगी···खूब होगी···सब लोग एक ही हालत में जिएँगे···और आराम से जिएँगे···' यही है तुम्हारा आराम से जीना कि शोरबे में डालने को नमक तक नहीं है ?"

मीशा ने चौंकते हुए, पत्नी को घूरकर देखा और पीला पड़ गया—"यह सब क्या है ? दून्या, क्या कह रही हो तुम ? इस तरह तुम्हारी जबान से निकलता कैसे है ?"

लेकिन, दून्या को मौक़ा मिल गया था। वह भी गुस्से और नफ़रत से जर्द पड़ गई और आवाज़ ऊँची कर चीखती हुई बोली—"अच्छा तो यह बतलाओ कि ऐसे कैसे जिएगा कोई ? इस तरह आँखें क्या दिखला

रहे हो ? जनाव सदर साहव, आपको पता है कि नमक की कमी से लोगों के मसूड़े सूज रहे है ? लोग उसके लिए नेचायेव-ढूह तक जाते हैं, खारी मिट्टी खोदते हैं, और इस मिट्टी को शोरवे में डालते हैं।"

"ठीक है, लेकिन बहुत चीखो मत···अच्छा तो आगे ?"

दून्या ने हाथ पीट लिए—"आगे और क्या चाहते हो तुम ?"

"लेकिन, हमें तो किसी तरह काम चलाना ही है···आखिर अव तक चलाया है कि नहीं ?"

"तो तुम चलाओ किसी तरह काम···"

"मैं तो चला ही लूंगा···मगर तुम···। मेलेखोव खानदान की हो न···खून कहाँ जाएगा ! वही रंग ला रहा है इस वक्त।"

"खून से तुम्हारा मतलव ?"

"मतलव यह है कि तुम्हारे खानदान ने हमेशा इन्कलाव को पीठ दिखलाई है और वही खून तुम्हारी रगों में भी दौड़ रहा है।" मीशा ने सधे हुए स्वर में कहा और मेज से उठ गया। उसकी आँखें फ़र्श पर गड़ गईं और होंठ काँपने लगे। पत्नी की ओर देखे विना वोला—"अगर दुवारा तुम्हारे मुंह से इस तरह की वात निकली तो तुम अलग और मैं अलग···समझीं ! तुम्हारी वातों से दोस्ती नहीं, दुश्मनी टपकती है···दोस्त नहीं दुश्मन हो तुम !"

इस पर दून्या कुछ कहने को हुई, पर मीशा ने त्यौरी चढ़ाकर उसकी ओर देखा और मुट्ठी उठाई। भारी आवाज़ से वोला—"ज़वान वंद कर !"

दून्या ने बिना किसी झिझक के पति को घूरकर देखा और एक क्षण के वाद, शांत स्वर में प्रसन्नता से भरकर वोली—"खैर···हटाओ··· यह भी कोई वात हुई···हम नमक के विना भी काम चला लेंगे।" इसके वाद वह ज़रा देर चुप रही और फिर मीशा की मनभावन मुस्कान होंठों पर सजाती हुई वोली—"नाराज़ न हो मीशा ! अगर तुम हर छोटी-मोटी वात पर हम औरतों से विगड़ने लगे तो हो लिया···फिर तो, तुम्हें इसी से छुट्टी न मिलेगी कभी ! अरे, मेरी-जैसी वुद्धू औरत से तुम कुछ उम्मीद ही क्यों करते हो ?···अच्छा यह

बतलाओ कि उबले फल ले आऊँ तुम्हारे लिए या दही लोगे ?"

दून्या कम-उम्र होने के बावजूद काफ़ी दुनियादार थी। उसे अच्छी तरह पता था कि कब अपनी बात पर अड़ा जाए और कब पीछे हटकर समझौता कर लिया जाए।

और फिर, पन्द्रह दिन बाद ग्रिगोरी का एक पत्र आया। उसने लिखा—"मैं रेगेल के मोर्चे पर जख्मी हो गया हूँ। अच्छा होते ही शायद फ़ौज से छुट्टी मिल जाएगी।" दून्या ने मीशा को सब-कुछ बतलाया और पूछा—"मीशा, ग्रिगोरी घर आ जाएगा तो कैसे-क्या करेंगे हम लोग ?"

"हम अपनी झोंपड़ी में चले चलेंगे···वह यहाँ रहेगा···बस, जमीन-जायदाद में साझा रहेगा।"

"वैसे भी हम साथ नहीं रह सकते···मुझे तो लगता है कि वह अकसीनिया को ले आएगा यहाँ।"

"अगर रह सकते तो भी मैं तुम्हारे भाई के साथ एक ही मकान में कभी न रहता।" मीशा ने तड़पकर उत्तर दिया।

दून्या ने आश्चर्य से भरकर आँखें ऊपर कीं, "भला ऐसा क्यों, मीशा ?"

"इस क्यों का जवाब तो तुम खुद भी अच्छी तरह जानती हो।"

"शायद इसलिए कि उसने गोरे गारदों का साथ दिया है ?"

"बिल्कुल ठीक समझा तुमने !"

"यानी आज तुम उसे कितना नापसंद करते हो, और एक जमाना था कि तुम दोनों कितने दोस्त थे !"

दून्या चरखा कातने लगी और चरखा एक लय-तान के साथ अपने गीत गुनगुनाने लगा। पर, अचानक ही सूत टूट गया, तो दून्या ने चक्के पर हथेली रखी, सूत के दोनों सिरे एक साथ ऐंठे और पति की ओर देखे बिना पूछा—"क्यों मीशा, ग्रिगोरी आएगा तो कज्जाकों की उसकी नौकरी का क्या होगा ?"

"उस पर मुक़दमा चलेगा···अदालत बैठेगी।"

"लेकिन, क्या सजा दी जाएगी उसे ?"

"यह मैं कैसे वतला सकता हूं···मैं कोई जज तो हूं नहीं।"

"उसे गोली से तो नहीं उड़ा दिया जाएगा ?"

मीशा ने पलंग पर सोते मीशात्का और पोल्युशका पर एक निग डाली, उनकी साँसों की आहट ली और आवाज़ नीची करते हुए बोला—"उड़ाया जा सकता है।"

दून्या ने आगे कुछ और नहीं पूछा और अगले दिन गाय दुहने के बाद अकसीनिया के यहां गई।

अकसीनिया ने लोहे के वर्तन में पानी भरकर कोयलों पर रखा और हाथ से सीना दबाया। दून्या ने उसका तमतमाया चेहरा देखा तो वोली—"खुशी से फूली न समाओ ! मेरा आदमी कहता है कि मुक़दमा चलेगा तो उसकी जान आसानी से न छूटेगी। क्या सजा मिलेगी उसे, यह ऊपर वाला ही जाने !"

अकसीनिया की आंसू-भरी, लौ देती आँखों में एक क्षण के लिए आशंका और भय घुल उठा। पर, फिर अपनी मुस्कान को ज्यों-का-त्यों सहेजते हुए झटके से पूछा—"लेकिन, आखिर किसलिए ?"

"वग़ावत के लिए···हर बात के लिए···"

"बकवास है ! उस पर मुकदमा-वुकदमा कुछ नहीं चलेगा। तुम्हारा मिखाइल इस मामले में कुछ नहीं जानता। सिर्फ़ बनता बहुत है, जैसे कि दुनिया की हर बात जानता है।"

"शायद न चले मुक़दमा।" दून्या यह कहकर पल-भर को शांत हो गई और फिर मुँह से निकलती आह दवाती हुई बोली—"मीशा ग्रिगोरी से वहुत ही नाराज़ है और इस बात का मेरे दिल पर पत्थर-सा घरा रहता है। मैं तुम्हें वतला नहीं सकती कि कितना बोझ रहता है मेरे मन पर ! ग्रिगोरी के लिए जी वहुत ही दुखी रहता है। दुबारा जख्मी हो गया है···उसकी ज़िन्दगी तो जैसे तार-तार होकर रह गई है।"

"खैर, आने तो दो उसे, हम लोग बच्चों को साथ लेकर कहीं छिप रहेंगे।" अकसीनिया ने परेशानी से कहा।

पता नहीं क्यों, उसने सिर का रूमाल खोला, फिर सिर पर बांधा

और बेंच के बर्तन यों ही इधर से उठाकर उधर और उधर से हटाकर इधर रखने लगी। उसके मन में जो तूफ़ान उठा, वह जैसे सम्हाल में ही न आया। दून्या ने देखा कि वह बेंच पर बैठी तो उसके हाथ कांपते रहे और वह अपने पुराने, फटे-पुराने ऐप्रन की घुटनों की सिलवटें बराबर करती रही।

दून्या के गले में जैसे कोई चीज़ आकर अटक गई। उसका जी चाहा कि वह कहीं चली जाए और फूट-फूटकर रोए। शांत भाव से बोली—"ग्रिगोरी वापस आ रहा है···पर देखो कि मां को उसे दुबारा देखना बदा न था···अच्छा, मैं चली···मुझे स्टोव जलाना है।"

गलियारे में अकसीनिया ने दून्या की गर्दन मशीन की तरह चूम ली। इसके बाद लपककर उसका हाथ अपने हाथ में लिया और उस पर भी होंठ रख दिए।

"ख़ुश हो तुम ?" दून्या ने दबी हुई, कांपती आवाज़ में पूछा।

"हां···खुश हूं···थोड़ी ख़ुश तो ज़रूर हूं।" अकसीनिया ने हँसते हुए जवाब दिया और अपने पलकों के छलछलाते आंसुओं पर मुस्कान का पर्दा डाल दिया।

: ६ :

ग्रिगोरी को लाल सेना के विघटित सेनापति के रूप में मिलेरोवो स्टेशन पर गाड़ी और घोड़ों की व्यवस्था मिली। उसने घर के रास्ते में हर उक्रइनी बस्ती में घोड़े बदले और वह उसी दिन ऊपरी दोन की सीमा में पहुंच गया। लेकिन पहले कज़्ज़ाक गांव में प्रवेश करते ही, लाल सेना से अभी-अभी लौटा एक युवक क्रांतिकारी समिति का अध्यक्ष उससे बोला—"कॉमरेड कमाण्डर, आपको बैलों से काम चलाना पड़ेगा ···हमारे यहां गांव-भर में घोड़ा एक है और उसका भी एक पैर बेकार है। बात यह है कि फ़ौज के पीछे हटते वक़्त सभी घोड़े कुबान में छूट गए।"

"शायद उस एक घोड़े से ही मेरा काम चल जाए।" ग्रिगोरी ने मेज़ पर उँगलियां बजाते और अध्यक्ष की ख़ुशी से चमकती आंखों

में आँखें डालते हुए कहा।

"वह घोड़ा आप लेंगे तो कभी भी अपने गाँव न पहुँच पाएँगे··· एक हफ़्ते के बाद भी रास्ते में ही नजर आएँगे···लेकिन फ़िक्र न करें ···हमारे यहाँ बैल एक-से-एक अच्छे हैं···तेज़ चलते हैं···और बैलगाड़ी तो यों भी व्येशेन्स्काया जाएगी···टेलीफ़ोन के थोड़े-से तार वहाँ भेजने हैं···लड़ाई के दौरान यहाँ फँसे रह गए थे।···यानी बैलगाड़ी से जाएँगे तो फिर आपको सवारी अदलने-बदलने की ज़रूरत न पड़ेगी···आप ऐन दरवाज़े तक पहुँचा दिए जाएँगे।···"

फिर अध्यक्ष ने अपनी बाईं आँख दबाई और आँख मारकर मुस्कराते हुए बोला—"हम आपकी गाड़ी के लिए अच्छे-से-अच्छे बैल देंगे, और गाड़ी हाँकने के लिए एक जवान बेवा साथ कर देंगे। हमारे यहाँ एक औरत है, जो बहुत ही गरम है···इतनी गरम है कि दूसरी उस तरह की ढूंढ़े नहीं मिलेगी। यानी उसके साथ आपको पता भी नहीं चलेगा और आप घर पहुँच जाएँगे···मैं खुद फ़ौज में रहा हूँ, इसलिए सब जानता हूँ कि फ़ौजी को क्या चाहिए और क्या नहीं।"

ग्रिगोरी ने बार-बार सोचा और मन-ही-मन तय किया—'उधर जाने वाली किसी भी गाड़ी का इन्तजार करना बेकार होगा और पैदल जाना मुमकिन नहीं है। रास्ता लम्बा है, इसलिए चलो बैलगाड़ी ही सही।'

और फिर गाड़ी एक घंटे के अन्दर-अन्दर आ गई। पुरानी गाड़ी के पहिये बुरी तरह चरमराते रहे। पीछे का ढाँचा टूटा दीखा और लापरवाही से लदी सूखी घास के लच्छे जहाँ-तहाँ झूलते नज़र आए। ···'यह है लड़ाई का करिश्मा!' ग्रिगोरी ने सवारी देखकर सोचा।

गाड़ीवान औरत चाबुक नचाती, बैलों की बग़ल-बग़ल पैदल आई। औरत का बदन खबसूरत था और वह खुद काफ़ी सुन्दर। पर भारी-भारी छातियाँ क़द के हिसाब से निकलती हुई थीं और हुस्न को जैसे बिगाड़ती थीं। गोल ठोड़ी पर तिरछा-सा दाग़ था, और इस दाग़ से उसकी उम्र बढ़ती थी। चेहरा गुलाबी भूरा था और नाक की हड्डी के पास ज्वार के बीजों-सी सुनहरी चित्तियाँ थीं।···

औरत ने अपना रूमाल ठीक करते हुए आँखें सिकोड़ीं, ग्रिगोरी को सिर से पैर तक देखा और पूछा—"तुम्हें ले चलना है मुझे ?"

ग्रिगोरी सीढ़ी से उठा और उसने अपना बरानकोट कन्धे पर डाला। बोला—"हां मैं ही चलूंगा···तार लाद लिए तुमने ?"

"आखिर तुम क्या सोचते हो कि क्या हूं मैं ?" कज्ज़ाक औरत बजती हुई आवाज़ में चिल्ला पड़ी—"ये लोग हर दिन मुझे कहीं-न-कहीं भेज देते हैं। और मेरे लिए कोई-न-कोई काम निकाल लेते हैं। आखिर इन लोगों ने समझा क्या है मुझे ? लादना हो तो खुद लादें तार, वरना मैं गाड़ी खाली ले जाऊँगी।"

इस पर भी उसने तार की गरारियाँ घसीटकर गाड़ी पर लादीं। अध्यक्ष से ज़ोर-ज़ोर से जाने क्या-क्या कहा-सुना और बीच-बीच में ग्रिगोरी को कनखी से देखा। अध्यक्ष हँसा और उसने उस जवान औरत को यों देखा जैसे कि उसकी तारीफ़ करते थक न रहा हो। बीच-बीच में ग्रिगोरी को आंख मारी, जैसे कि कह रहा हो—'देखा आपने, ऐसी औरतें हैं हमारे यहां ! कहा नहीं था मैंने आपसे ?'

गांव के पार भूरा बदरंग स्तेपी यहाँ से दूर वहाँ तक फैला रहा और पतझर का नाम दोहराता रहा। सड़क के पार के जुते हुए खेतों से धुएँ का मटमैला-भूरा रिबन हवा में लहराता रहा। हलवाहे झाड़-झंखाड़ और चरागाह की सूखी घास वगैरा जलाते रहे। नतीजा यह कि धुएँ की बू से ग्रिगोरी के दिमाग़ में पुरानी यादें हरी हो गईं और उसका मन कुरेदने लगीं। उसे लगा कि पतझर के दिनों में सुनसान स्तेपी में कभी वह भी खेत जोतता था। रात होने पर आसमान के अँधेरे से नहाते शून्य में चमचमाते हुए सितारों को एकटक देखता रहता था, क्षितिज में उड़ते कलहंसों की कीकें सुनता रहता था।···

वह गाड़ी में बैठे-ही-बैठे खिसका, सूखी घास की तरफ़ बढ़ा और गाड़ीवान औरत को देखने लगा। बोला—"खूबसूरत औरत हो तुम··· क्या उम्र है तुम्हारी ?"

"ऐसी ही कोई साठ साल।" उसने सिर्फ़ आँखों-ही-आँखों मुस्कराते हुए शोखी से जवाब दिया।

"नहीं, मज़ाक न करो...ठीक-ठीक बतलाओ।"

"बीस साल की हूँ..."

"और बेवा हो ?"

"हाँ..."

"तुम्हारा आदमी कैसे मरा ?"

"उसे मार डाला गया..."

"अभी हाल में ?"

"नहीं, दो साल पहले..."

"बगावत के वक़्त ?"

"नहीं, बाद में...पतझर के दिनों में..."

"लेकिन उसके बाद अब तुम्हारा काम कैसे चलता है ?"

"अरे काम का क्या, वह तो किसी तरह चल ही जाता है।"

"अकेलापन खलता नहीं तुम्हें ?"

औरत ने उसे ग़ौर से देखा और मुस्कान छिपाने के लिए होंठों पर रूमाल खींच लिया। इसके साथ ही उसकी आवाज़ और भारी हो गई और उसमें एक नयापन आ गया। बोली—"आदमी काम में बझा रहे तो अकेला-दुकेला कुछ भी नहीं लगता।"

"लेकिन आदमी के बिना ज़िन्दगी वीरान और सूनी नहीं लगती?"

"नहीं, मैं अपनी सास के साथ रहती हूँ और खेत में काम इतना रहता है कि सिर उठाने का मौक़ा नहीं मिलता।"

"पर आदमी के बिना तुम्हारा काम कैसे चलता है ?"

औरत ने अपना चेहरा उसकी ओर मोड़ा। उसके गालों पर लाली छिटक गई और आँखों में चिनगारियाँ फूटने और बुझने लगीं—"क्या मतलब है तुम्हारा ?"

"मतलब तो मेरा साफ़ ही है।"

उसने अपना रूमाल होंठों से हटाया और जमुहाई लेती हुई बोली—"नेमत की इस ज़िन्दगी में कोई कमी नहीं है। दुनिया में हज़ारों लोग ऐसे हैं जो दूसरों की खुशी के लिए सभी कुछ कर देते हैं।" वह एक क्षण रुकी और फिर कहने लगी—"अपने आदमी के साथ

जिन्दगी का मजा लेने का कोई खास मौका नहीं मिला मुझे। हम लोग सिर्फ़ एक महीने तक साथ रहे और फिर उसे लड़ाई में खींच लिया गया।···मेरा तो काम उसके बिना भी चल ही जाता है···अब तो कुछ आसानी है···जवान कज्जाक गाँव में लौट आए हैं···पहले जरा मुश्किल थी···हे···गंजे···हे···ट···ट···तो फौजी जी, यह है मेरी जिन्दगी··· समझ गए न तुम!"

ग्रिगोरी ने आगे कुछ नहीं कहा··उसका मन ही न हुआ, ऐसी घुटन महसूस हुई उसे··उसे तो बात शुरू करने के लिए ही पछतावा होने लगा।

ऊँचे, अच्छी खिलाई-पिलाई वाले बैल उसी शान और नपे-तुले क़दमों से चलते रहे। उनमें से एक का बायाँ सींग कभी टूट गया था। और फिर माथे के आर-पार उग आया था।···

ग्रिगोरी कुहनी टेककर आधी आँखें मूँदकर गाड़ी में लेट गया और याद करने लगा कि बचपन में और फिर बाद में बड़े होने पर उसका कैसे-कैसे बैलों से पाला पड़ा। उन सभी के रंग, देह और स्वभाव अलग-अलग थे। सींग तक एक के दूसरे से न मिलते थे। एक बार उसके पास एक ऐसा बैल था जिसका सींग इस बैल के सींग की तरह ही कटा और मुड़ा हुआ था। जानवर बड़ा ही बिगड़ैल और चालाक था। सदा अपनी लाल-लाल आँखें नचाते हुए, कनखी से देखता, पीछे से आदमी के पास आने पर लात चलाने की कोशिश करता, और रातों को ढोरों के साथ चरने को छोड़ दिए जाने पर या तो भागकर घर आ जाता या इससे भी बुरा काम करता कि जंगल या दूर घाटियों में जा छिपता। फिर ग्रिगोरी उसकी तलाश में घोड़े पर सवार होकर दिन-दिन-भर पूरे-का-पूरा स्तेपी मैं झाता फिरता और जब पूरी तरह निराश हो जाता तो सहसा ही किसी दर्रे के तल में किसी अभेद्य कँटीली झाड़ी में या किसी सघन जंगली सेब के पेड़ के नीचे खड़ा मिल जाता। वह टूटे सींग वाला शैतान गर्दन गरियावन से बाहर निकाल लेता। रात को ढोरों के बाड़े के फाटक की आड़ हटा देता, बाहर निकल जाता, तैरकर दोन पार कर लेता और चरागाह में

घूमता फिरता। इस तरह ग्रिगोरी को बहुत ही तकलीफ़ देता और तरह-तरह से परेशान करता।···

सो उसने औरत से पूछा—"कैसा है यह टूटे सींग वाला बैल ?··· बिगड़ैल तो नहीं है न ?"

"नहीं···लेकिन क्यों···यह सवाल कहाँ से उठ गया ?"

"कुछ नहीं, सिर्फ़ यों ही पूछ लिया···थोड़ी दिलचस्पी हुई।"

"सिर्फ़ बड़े काम का लफ्ज़ है···आदमी के पास और कुछ कहने को न हो, तो इससे बड़ी मदद मिलती है।"

ग्रिगोरी फिर चुप हो रहा। गुजरे हुए ज़माने, शांति से भरे उन वर्षों, उस समय के कामकाज और लड़ाई से किसी तरह का कोई सम्बन्ध न रखने वाली हर चीज़ के बारे में सोचना उसे बहुत ही प्यारा लगा। बात यह है कि इन सात वर्षों में वह लड़ाई से इस बुरी तरह ऊब गया था कि कुछ न पूछिए। फलतः लड़ाई या उससे जुड़ी हुई किसी भी घटना का ध्यान आते ही उसका जी मिचलाने लगता था और खीझ से उसके हाथ-पैर सुन्न हो जाते थे।

लड़ाई से उसका जी भर गया था और उसने उससे छुटकारा ले लिया था। आखिरकार अब वह घर लौट रहा था, नये सिरे से गाँव-घर के काम में लगने और अपने बच्चों और अकसीनिया के साथ चैन से रहने। मोर्चे पर ही उसने फ़ैसला कर लिया था—बच्चों को पालने और हमेशा पास रहने के लिए अकसीनिया को बुलाकर अपने साथ रखने का। उसे लगा कि इस कहानी का भी अन्त होना ही चाहिए, और जब अन्त होना ही है तो जितनी जल्दी हो जाए, उतना ही अच्छा···।

उस समय वह कल्पना करने लगा कि घर पहुँचने पर इस तरह मैं ट्यूनिक और बूट उतारूँगा, इस तरह चौड़े पंजे के सैंडिल पहनूँगा, इस तरह सफ़ेद ऊनी मोज़े में पतलून के पाँयचे खोंसूंगा और ऊनी जैकेट पर घर का बुना कोट डालकर इस तरह खेत में जाऊँगा।···उसने सोचा, हल के हत्थे थामकर नम लीकों के किनारे-किनारे चलने में बड़ा मज़ा आएगा···नथुने टूटती मिट्टी की ताज़ी सोंधी बास और हल की फाल से कटी घास की तीखी गंध से भर उठेंगे···अरे और जगह की तो मिट्टी

और घास की महक तक कुछ दूसरे ही ढंग की होती है···पोलैंड, उक्रइन
और क्रीमिया में कितनी ही बार मैंने चिरायते का डंठल लेकर हथेली में
मला और सूँघा तो मन ने नफ़रत से कहा—'नहीं' यह महक अपने
यहाँ के चिरायते की महक-सी नहीं है···बिलकुल ही अलग है···'

पर, गाड़ीवान औरत तो उसके इन विचारों में हिस्सा बँटा नहीं
पाई। बेचारी को चुप्पी काटने लगी और उसका मन बात करने को
मचलने लगा। उसने बैलों को हाँकना बन्द कर दिया, आराम से जमकर
बैठ गई और चाबुक से खिलवाड़ करते हुए ग्रिगोरी के गम्भीर चेहरे
और अधमुंदी आँखों को ग़ौर से देखने लगी। अन्दर-ही-अन्दर बोली—
'आदमी की उम्र ऐसी कुछ ज्यादा नहीं है। हालांकि बाल सफ़ेद हैं···
पर, आदमी अपने-आपमें कुछ अजीब ही है। हर वक़्त आँखें सिकोड़े
रहता है। आखिर इसके माथे पर बल क्यों पड़े रहते हैं? कोई देखे तो
समझे कि थकान से इस तरह चूर है, जैसे कोई घोड़ा समझकर
इसे गाड़ी में जोतता रहा है।···लगता है कि अपने जमाने में काफ़ी
भोगना पड़ा है इसे!···लेकिन, आदमी देखने-सुनने में बुरा जरा भी
नहीं है···सिर्फ़ यह है कि सिर के साथ-साथ मूँछों के भी काफ़ी बाल
सफ़ेद हैं···इतना न हो तो सोना-ही-सोना है···पर, यह इतना सोचता
क्यों है? पहले तो लगा कि आदमी खुशमिजाज है और कुछ हँसी-
खुशी की बातें करेगा, पर वह तो चुप हो गया···और मुँह भी
खोला तो जाने क्यों बैल के बारे में पूछताछ करने लगा। इसे यह पता
नहीं कि किस चीज के बारे में बात करे और किस चीज के बारे में न
करे? पर, हो सकता है कि आदमी तबीयत से शर्मीला हो···वैसे
लगता तो नहीं···आँखों में एक तरह की सख्ती है···नहीं, कज्जाक
शानदार है···सिर्फ़ जाने क्यों अजीब-अजीब है थोड़ा-सा! तो, सिए
रह अपने होंठ, कुबड़ा-शैतान कहीं का! मुझे बड़ी जरूरत पड़ी है तेरी!
मैं भी अपनी जबान पर ताला लगाए रह सकती हूँ।···घर जाकर बीवी से
मिलने की बेचैनी है!···खैर, यह चाहता है तो यही सही···लगाए रहे
चुप···इससे बड़ा भला होगा तेरा!"

औरत गाड़ी के बाजू से टिक गई और धीरे-धीरे गाने लगी। दिन

का पहला पहर अब भी अपनी बहार पर रहा। सड़क की पहरेदारी करती, पिछले साल की भटकटैया की परछाईं ने जैसे कि बार-बार दोहराया—अभी क्या है, दोपहर के बाद देखना, मेरी परछाईं चौगुनी से भी ज्यादा नजर आएगी।

स्तेपी का पूरा-का-पूरा मैदान इस तरह गुमसुम रहा, इस तरह सुन्न रहा, जैसे कि किसी ने जादू से बाँध दिया हो। धूप में मामूली गरमी महसूस हुई। हवा के हलके झोंके सूखी हुई, ललछरी-भूरी घास की पत्तियों को बिना आवाज़ किए, हलके-हलके हिलाते-डुलाते रहे। न कहीं चिड़िया की चहचहाहट सुनाई पड़ी और न कहीं जंगली चूहे की सीटी। पीलेपन की झाईं मारते नीले आसमान में न कहीं कोई चील उड़ती दीखी और न कहीं कोई बाज। केवल एक छाया सड़क के आर-पार फिसली और जब तक ग्रिगोरी सिर उठाकर देखे, तब तक राख के रंग का मटमैला सारंग ज़ोर-जोर से पंख मारता उधर से उड़कर दूर के एक ढूह पर जा बैठा। वहाँ एक खड्ड का साया दूर की बकाइनी उदासियों में घुलता रहा।···

ऐसे गहरे उदास सन्नाटे का अनुभव ग्रिगोरी को इसके पहले सिर्फ़ पतझर के बाद के दिनों में हुआ। उस समय उसे अकसर ऐसा लगा था जैसे कि मोथा-घास का जो पौधा हवा की चपेट में आया, वह सूखी घास के ऊपर सरसराता चला गया और फिर स्तेपी को पार करता चला गया दूर—बहुत दूर।···

सड़क कहीं खत्म होती ही नजर न आई। वह चक्कर लगाकर ढाल के ऊपर चढ़ी, किसी दर्रे में उतरी, और फिर किसी पठार की चोटी पर चढ़ गई। और, ऐसे में यही वीरान स्तेपी हर तरफ़ पसरा दीखता रहा और चरागाहें इस तरह फैली लगती रहीं जैसे कि इनका कहीं अंत ही न हो।

सहसा ही ग्रिगोरी ने ढाल पर मैपल का एक झुरमुट देखा तो उसकी आँखें खुशी से चमक उठीं। पहले पाले से ऐंठी उसकी पत्तियाँ चमकती रहीं और उनका रंग झुटपुटे के वक़्त का-सा जामनी लगता रहा। ऐसा लगा जैसे कि किसी ने किसी पड़ाव के अलाव के ठण्डे पड़ते

अंगारे उन पर छिड़क दिए हों।···

"तुम्हारा नाम क्या है, भले आदमी ?" गाड़ीवान औरत ने ग्रिगोरी के कंधे को चाबुक से धीरे से छूते हुए पूछा।

वह चौंककर उसकी तरफ़ मुड़ गया। पर, वह किसी और तरफ़ देखने लगी। ग्रिगोरी बोला—"मेरा नाम है, ग्रिगोरी···और तुम्हारा ?"

'मेरा नाम क्या···जिस नाम से चाहो पुकार लो।"

"चाहे जिस नाम से चाहो पुकार लो, के मानी क्या ? तुम बतलातीं क्यों नहीं ?"

"मैं तो इस चुप्पी से थक गई। चुप्पी साधे-साधे आधा दिन गुजर गया···मेरा मुँह सूखने लगा है···पर, तुम इतने उदास-उदास-से क्यों हो, ग्रीशा ?"

"मगर, जश्न मनाने को भी क्या है ?"

"क्यों नहीं है···घर जा रहे हो···तुम्हें तो खुश होना चाहिए।"

"मेरी हँसी-खुशी के दिन निकल गए।"

"हँसी-खुशी के दिन निकल गए ! यानी, बूढ़े हो गए तुम ! पर, इतनी कम उम्र में भी तुम्हारे बाल इस तरह सफ़ेद क्यों हो गए हैं ?"

"यानी, तुम तो सभी कुछ जानना चाहती हो···कह सकती हो कि ऐसे आराम की जिन्दगी मैंने अब तक बिताई है कि वक़्त के पहले ही बूढ़ा हो गया हूँ।"

"ग्रीशा, तुम्हारी बीवी है ?"

"हाँ, है···और, मेरी सलाह मानो तो तुम भी जल्दी ही दूसरा आदमी तलाश लो।"

"आखिर क्यों ?"

"इसलिए कि तुम खिलाड़ी तबीयत से कुछ ज्यादा हो !"

"तो, क्या यह कोई बहुत बुरी बात है ?"

"हाँ, बहुत बुरी बात भी साबित हो सकती है···एक बार एक तुम्हारी ही तरह की खिलाड़ी औरत से मेरी मुलाकात हुई···उसका आदमी भी मर चुका था···सो, वह मजे लेती रही, लेती रही, मगर फिर उसकी नाक कटकर गिरने को हो गई।"

"उफ़···हद है !" औरत ने इस प्रकार बनकर कहा जैसे कि सहज ही आशंकित हो उठी हो···पर, फिर तुरन्त ही व्यावहारिक ढंग से बोली—"बेवा औरत की ज़िन्दगी होती ही ऐसी है । मैं तो कहती हूँ कि भेड़िए का डर हो तो जंगल में जाओ ही क्यों !"

ग्रिगोरी ने उस पर निगाह डाली तो वह दांत भींचकर अन्दर-ही-अन्दर हँसती दीखी । उसका झूलता हुआ ऊपरी होंठ फड़कता रहा और झुकी हुई आंखें शरारत से चमकती रहीं ।···ग्रिगोरी हँस पड़ा और उसने अपना हाथ उसके गरम, गोल घुटने पर रख दिया । हमदर्दी दिखलाते हुए बोला—"बेचारी···बेचारी ! इन बीस बरसों की ज़िन्दगी में ही कितना दुख-दर्द देखा और सहा है !"

पर, दूसरे ही क्षण औरत के चेहरे से खुशी बिजली के कौंधे की तरह लापता हो गई । उसने झटककर ग्रिगोरी का हाथ हटा दिया । उसकी भौंहें चढ़ गईं और गाल इस तरह तमतमा उठे कि नाक की हड्डी के पास की सारी चित्तियां गायब हो गईं । बोली—"हमदर्दी, घर पहुंचने पर, अपनी बीबी के साथ दिखलाना ! मेरे साथ हमदर्दी दिखलाने वाले ऐसे भी काफ़ी हैं···तुम्हारी मुझे कोई ज़रूरत नहीं ।"

"सुनो तो, बिगड़ो नहीं ।"

"उफ़···ऐसी-तैसी में जाओ तुम ।"

"मैंने तो यह बात इसलिए कही, क्योंकि मेरा दिल सचमुच तुम्हारे लिए दुखा ।"

"तुम्हारा दुख जाए ।" मर्दानी गाली सफ़ाई से देखते-देखते उसके होंठों पर आ गई और उसकी काली आंखें क्रोध से जलने लगीं ।

ग्रिगोरी ने पलकें उठाईं और परेशानी से बोला—"यानी तुम इस तरह की गाली भी इतनी आसानी से दे सकती हो । कैसी जंगली हो तुम !"

"और, तुम क्या हो ? जुओं से भरा बरानकोट पहने कोई सन्त महात्मा । मैं तुम लोगों को अच्छी तरह जानती हूँ कि शादी कर लो फिर तो सब-कुछ चलता ही है । लेकिन यह बतलाओ कि यह महात्मागीरी क्या बहुत पहले से अख्तियार कर रखी है तुमने ?"

"नहीं, ऐसे कोई बहुत पहले से तो नहीं।" ग्रिगोरी ने हँसते हुए कहा।

"तो मेरे नाम पर यह कानून क्यों बघार रहे हो? यह सब करने के लिए घर पर मेरी सास है।"

"अच्छा, बस करो···इसमें इतना बिगड़ने की क्या बात है? बिल्कुल बेवकूफ़ हो तुम। मैंने तो महज़ एक बात कही।" ग्रिगोरी ने समझौते की कोशिश करते हुए कहा—"ज़रा देखो, हम लोग इधर बातों में खोए रहे और उधर बैल सड़क से बिल्कुल हट गए।"

ग्रिगोरी ने गाड़ी में और आराम से लेटते हुए खुशमिजाज औरत पर एक सरसरी नजर डाली तो उसकी आँखों में आँसू छलछलाते हुए मिले। उसे बड़ा अटपटा-अटपटा-सा लगा। मन-ही-मन सोचा—'हो गया···यह है इनकी आखिरी ताक़त···ये औरतें हमेशा यही करती हैं।'

इसके ज़रा देर बाद ही उसने बरानकोट के सिरे से अपना चेहरा ढँक लिया और पीठ के बल पड़कर सो गया। फिर उसकी आँख दोनों वक्त मिलने पर खुली तो साँझ के सितारे आसमान में टिमटिमाते दीखे और उसके नथुने सूखी घास की ताज़ी प्यारी महक से भर उठे।

"बैलों के चारा-पानी का वक्त हो गया।" गाड़ीवान औरत बोली।

"ठीक···तो रोक लो गाड़ी।" ग्रिगोरी ने कहा, खुद बैलों की जोत खोली, फिर अपने थैले से गोश्त का एक टीन और रोटी निकाली। इधर-उधर से सूखी चैलियाँ जमाकर गाड़ी के पास ही आग जलाई और औरत से बोला—"आओ···बैठो, थोड़ा-सा खाना-पीना हो जाए। बहुत नाराज़ हो लीं।"

औरत आग के पास बैठ गई और मुँह से बिना कुछ कहे, उसने बोरा झाड़कर रोटी और सूअर की, जाने कब की फफूंदी लगी चरबी का एक लोंदा निकाला। खाने के बाद गाड़ी में जाकर सो गई। पर ग्रिगोरी ने आग बनाए रखने के लिए कंडियों के कुछ टुकड़े उसमें डाले और फ़ौजी तरीक़े से अलाव की बग़ल में ही पड़ रहा। फिर बहुत देर तक आसमान

के जगमगाते सितारों को देखता और अपने बच्चों और अकसीनिया की इधर-उधर की बात सोचता रहा। इसके बाद औंघा गया तो उसे जगाया उस हट्टी-कट्टी औरत की जोरदार आवाज ने—"सो गए फ़ौजी, नींद आई या नहीं ?"

ग्रिगोरी ने सिर उठाया तो देखा कि औरत गाड़ी से आधी लटकी हुई है···चेहरे पर नीचे की, ठंडी पड़ती आग की हलकी-हलकी रोशनी पड़ रही है···गुलाबी चेहरे पर ताज़गी है, और रूमाल की बेल अँधेरे में चमक रही है। औरत इस तरह मुस्कराई, जैसे कि उनके बीच किसी तरह की कोई कहा-सुनी कभी हुई ही न हो। साथ ही भौंहें नचाती हुई बोली—"ऐसा न हो कि तुम जम जाओ वहाँ। ज़मीन ठंडी है। बहुत सर्दी लग रही हो तो मेरे पास आ जाओ। मेरी भेड़ की खाल बहुत गरम है। आते हो ?"

ग्रिगोरी ने एक क्षण सोचा और फिर आह भरकर बोला—"शुक्रिया···मगर मेरा जी नहीं कहता···अगर एक-दो साल पहले की बात होती तो···वैसे आग के पास हूँ···सर्दी से जमने की नौबत नहीं आएगी।"

औरत के मुँह से भी आह निकल गई। बोली—"जैसा तुम्हारा मन।" और फिर भेड़ की खाल उसने सिर तक खींच ली।

ज़रा देर बाद ग्रिगोरी उठा, अपनी चीज़-वस्त जमा कीं और तातारस्की तक की मंज़िल पैदल ही मार देने का फ़ैसला किया। सोचा—'मैं कमाण्डर हूँ···फ़ौज से लौट रहा हूँ···दिन में सभी देखेंगे···बैलगाड़ी पर सवार होकर गाँव पहुँचना बहुत ही भद्दा लगेगा। लोग हर तरफ़ बेकार की बातें करने और मज़ाक बनाने लगेंगे। ऐसे भी तड़का होते-होते तो वहाँ पहुँच ही जाऊँगा।'

उसने गाड़ीवान औरत को जगाया। बोला—"मैं पैदल जा रहा हूँ···यहाँ अकेले डर तो नहीं लगेगा तुम्हें ?"

"नहीं, मैं डरने वाली औरत नहीं···फिर पास ही तो एक गाँव है। लेकिन हुआ क्या ? सब्र नहीं करते बनता ?"

"नहीं···ठीक समझा तुमने। अच्छा···अलविदा···मुझे बुरा

आदमी न समझना।"

वह सड़क पर आया और उसने अपने बरानकोट का कॉलर उलटा लिया। बर्फ़ के पहले फूल उसकी बरौनियों पर बरसे। हवा उत्तर की ओर से बहने लगी, और उसकी साँस बर्फ़ की सुहानी महक से बस गई। ग्रिगोरी को यह महक सदा की जानी-पहचानी मालूम हुई।

कोशेवोइ व्येशेन्स्काया से शाम को लौटा। दून्या ने उसे फाटक के पास पहुँचते देखा तो जल्दी-जल्दी कन्धे पर शाल डाला। बाहर निकलकर अहाते में आई और अपने पति की ओर चिन्ता से एकटक देखती हुई बोली—"आज सवेरे ग्रीशा आ गया।"

"तो तुम खुशियाँ मनाओ।" ग्रीशा ने तटस्थ भाव से बात में परिहास घोलते हुए कहा और जोर से होंठ भींचते हुए बावर्चीखाने में आया। इस बीच उसके गालों की हड्डियों के नीचे की माँस-पेशियाँ थरथराती रहीं। दूसरी ओर बूआ के पहनाए, सफ़ेद फ्रॉक में सजी-बजी पोल्युशका अपने पापा के घुटनों पर सवार बैठी रही। पर बहनोई को देखते ही ग्रिगोरी ने बच्ची को धीरे से फ़र्श पर बैठा दिया और मुस्कराकर अपना बड़ा साँवला हाथ आगे बढ़ाते हुए उससे मिलने को लपका। उसने तो उसे अपनी बाँहों में भरना तक चाहा, पर उसकी स्नेहहीन, भावशून्य गम्भीर आँखें देखते ही अपना मन मार लिया। बोला—"प्रीवियत मीशा!"

"प्रीवियत!"

"एक जमाना हुआ तुमसे मिले···लगता है कि पूरी एक सदी बाद मुलाक़ात हो रही है।"

"हाँ, सचमुच ज़माना हुआ···तुम्हारा घर लौटना मुबारक।"

"शुक्रिया···अब तो हम नजदीकी रिश्तेदार हैं एक-दूसरे के?"

"सो तो है···पर तुम्हारे गाल पर यह खून कैसा है?"

"कुछ नहीं, जल्दी में दाढ़ी बनाते कट गया।"

दोनों मेज़ के किनारे आ बैठे और एक-दूसरे को ग़ौर से देखने लगे। उनकी निगाहों में जितना अटपटापन रहा उतना ही परायापन।

फलतः गम्भीरता से बातचीत आरम्भ करना सम्भव न लगा। फिर भी मीशा ने बड़े आत्म-संयम से काम लिया और फ़ार्म और फ़ार्म में होने वाले परिवर्तनों की चर्चा छेड़ दी।

ग्रिगोरी खिड़की से पहली निलछरी बर्फ़ से ढकी धरती और सेब के पेड़ों की नंगी डालों को एकटक देखता रहा। मिखाइल से इस तरह मिलने की बात शायद ही कभी उसके दिमाग़ में आई हो।

फिर, जल्दी ही मिखाइल बाहर चला गया। गलियारे में उसने सिल्ली पर रगड़-रगड़कर अपने चाकू की धार तेज़ की और दून्या से बोला—"किसी मेमने को हलाल करने के लिए किसी को देखने जा रहा हूँ···घर का मालिक घर आया है तो आखिर उसकी खातिर तो होनी ही चाहिए। तुम दौड़कर जाओ और कहीं से थोड़ी-सी वोदका ले आओ। नहीं, ठहरो···तुम प्रोखोर के पास जाओ और उससे कहो कि वह, जहाँ से भी हो, वोदका लेकर आए···इसके लिए उसे दुनिया के दूसरे छोर तक जक जाना पड़े, तब भी कोई बात नहीं। यह काम वह तुमसे बेहतर कर सकता है। और देखो, साथ ही उसे शाम को यहाँ आने की दावत भी दे आना।"

दून्या का चेहरा खुशी से खिल उठा और उसने अपने पति को मौन कृतज्ञता से भरी दृष्टि से देखा। मन-ही-मन सोचा—'शायद आगे सब-कुछ अच्छा-ही-अच्छा हो···लड़ाई ये लोग कर चुके···अब है क्या जिसे लेकर झगड़ा करेंगे ये दोनों? नीली छतरीवाले ऐसा कर कि ये अक्ल से काम करें!' प्रोखोर की झोंपड़ी की तरफ़ बढ़ते हुए उसका अन्तर आशा से भर गया और आधे घंटे के अन्दर-अन्दर प्रोखोर हांफता हुआ भागा आया।

"ग्रिगोरी-पॅन्तेलेयेविच···प्यारे ग्रिगोरी···मैंने तो सोचा था कि तुमसे अब शायद ही मुलाक़ात हो।" वह रुआँसी आवाज़ में चीखा और ड्योढ़ी पर लड़खड़ा गया तो हाथ की वोदका-भरी सुराही टूटते-टूटते बची।

उसने सुबकते, मुट्ठी से आँखें पोंछते और आँसुओं से तर मूँछों पर ।: फेरते हुए ग्रिगोरी को गले लगाया। ग्रिगोरी के गले में भी कुछ

श्रा झटका, पर उसने अपने को सम्हाल लिया । फिर भी बुरी तरह द्रवित होते हुए उसने अपने वफ़ादार अर्दली की पीठ थपथपाई और अस्फुट स्वर में बोला—"यानी हमारी मुलाक़ात फिर हो गई···बड़ी खुशी हुई है···प्रोखोर, मुझे सचमुच बड़ी खुशी हो रही है । मगर बुड्ढे, तू इस तरह रो क्यों रहा है ? मन कमजोर हो गया है ? मन के कल-पुर्जे ढीले हो गए हैं ? अच्छा यह बतला कि तेरा हाथ कैसा है ? यानी तेरी बीवी ने तेरा दूसरा हाथ अभी तक नहीं तोड़ा ?"

प्रोखोर ने नाक बारम्बार छिनकी और अपनी भेड़ की खाल उतारी ।

"अरे बुढ़िया की कुछ न पूछो, अब तो हम दोनों पेड़की जोड़े की तरह रहते हैं । जैसे तुमने अभी-अभी देखा, मेरा दूसरा हाथ अब तक सही-सलामत है, और गोरे गारदों ने जो हाथ काट दिया था वह भी दुबारा उग रहा है···ऊपरवाला देखने वाला है । एक साल के अन्दर-अन्दर उस पर भी उंगलियां न आ जाएं, तब कहना ।" प्रोखोर ने हमेशा की तरह हँसते और अपनी छूंछी आस्तीन झुलाते हुए कहा ।

लड़ाई ने उन्हें सिखला दिया था अपनी सच्ची भावनाओं पर मुस्कान का पर्दा डाल लेना और रोटियों और बातों दोनों को ही खासा नमकीन बना लेना । इसलिए ग्रिगोरी इसी तरह हँसता और मजाक करता रहा—"बुड्ढे बकरे, क्या हाल हैं ज़िन्दगी के ? रफ़तार बदस्तूर तेज़ है ?"

"अरे बूढ़ा हुआ तो वह पुरानी बात अब कहाँ से आएगी ? उतनी तेज़ी तो अब सपने की बात हो गई है ।"

"मुझसे अलग होने के बाद फिर कुछ नहीं फाँसा तुमने ?"

"क्या मतलब ?"

"मतलब क्या···अरे पिछले जाड़े में जिस माल को लेकर दून की ले रहे थे, वह हाथ लगा कि नहीं ?"

"पैन्तेलेयेविच, क्या कह रहे हो तुम ! ऊपर वाला बचाए ऐसे गुनाहों से ! अब उस ऐयाशी से फ़ायदा भी क्या ? दूसरे, एक हाथ से बात भी क्या बनेगी ! यह सब तो अब तुम्हारे लिए है···जवान आदमी

के धन्धे हैं ये सब ! मेरा तो अब वह वक़्त है कि अपनी बुढ़िया से कह दूं ले भई, बची-बचाई चिकनई से अपने तवे चिकना ले ।"

खाइयों में एक-दूसरे का साथ देने वाले दोनों खड़े एक-दूसरे को देखते और हँसते-हँसाते रहे । इस भेंट की खुशी ही जैसे उनके सम्हाले न सम्हली ।

"लड़ाई को हमेशा-हमेशा के लिए सलाम कर आए ?" प्रोखोर ने पूछा ।

"हाँ हमेशा-हमेशा को सलाम कर आया ।"

"आखिरकार पहुँचे किस ओहदे तक ?"

"रेजीमेंट के कमाण्डर के बाद दूसरी जगह थी मेरी ।"

"फिर इतनी जल्दी वापस कैसे भेज दिए गए ?"

ग्रिगोरी के चेहरे पर एक बादल-सा घिर आया । रुखाई से बोला—"उनके लिए मेरा कोई इस्तेमाल नहीं रह गया शायद ।"

"यह कैसे ?"

"पता नहीं···शायद मेरे पिछले रिकार्ड की वजह से ।"

"लेकिन तुम्हें तो अफ़सरों का चुनाव करने वाले खास कमीशन से चुना था···फिर पिछली कारगुजारियों का सवाल कैसे उठा ?"

"कौन क्या कह सकता है !"

"लेकिन···मिखाइल कहाँ है···नजर नहीं आता ?"

"अहाते में है···ढोरों को ठिकाने लगा रहा है ।"

प्रोखोर ग्रिगोरी के और पास आया और आवाज धीमी करते हुए बोला—"इन लोगों ने प्लातोन र्‍याबचिकोव को गोली से उड़ा दिया···कोई एक महीने पहले ।"

"सचमुच ?"

"ऊपर वाला गवाह है !"

इसी समय बरसाती का दरवाज़ा चरमराया ।

"बातें अब बाद में होंगी ।" प्रोखोर ज़रा जोर से बोला—"तो साथी कमाण्डर तुम्हारे घर आने की खुशी में वोदका तो चलेगी न ? मैं जाकर मिखाइल को बुला लाऊँ ?"

"हाँ बुला लो जरा।"

दून्या ने मेज लगाई। उसका मन उमड़ा कि अपने भाई की खातिर के लिए क्या-क्या न कर डाले। उसने एक साफ़ तौलिया उसके घुटने पर बिछाया। तरबूज के सिरके की तश्तरी खींचकर उसकी ओर कर दी और उसका गिलास कम-से-कम पाँच बार पोंछा। वह ग्रिगोरी से संकोच करती और 'तुम' या 'तुम्हें' कहने में सकुचाती लगी।

मिखाइल मेज पर पहले-पहले बिलकुल सन्न बैठा रहा और ग्रिगोरी की एक-एक बात बड़े ध्यान से सुनता रहा। वोदका उसने थोड़ी पी और जितनी भी पी, हिचक-हिचककर पी। पर प्रोखोर गिलास-पर-गिलास ढालता रहा। आखिरकार उसका चेहरा बिलकुल जर्द पड़ गया और वह अपनी मूँछों पर और भी जल्दी-जल्दी हाथ फेरने लगा।

और फिर बच्चों को सुलाने के बाद दून्या ने उबले हुए गोश्त की एक तश्तरी मेज पर रखी और ग्रिगोरी से फुसफुसाकर कहा—"भई मैं दौड़कर अकसीनिया को बुलाए लाती हूँ···ठीक रहेगा न ?"

ग्रिगोरी ने मुँह से कुछ नहीं कहा, सिर्फ़ सिर हिला दिया। सारी शाम उसका मन कलपता रहा था। उसने यह बात किसी के सामने नहीं आने दी थी। पर दून्या ने उसे हर आहट पर कान देते और कनखी से दरवाजे की ओर घूरते देखा था। लड़की की निगाह काफ़ी तेज थी। उससे कुछ भी बच सकना मुश्किल ही था···।

"और वह कुबान-कज्जाक तेरेशचेंको···अब भी ट्रूप की कमान उसके हाथों में है ?" प्रोखोर ने गिलास को इस तरह हाथों से जकड़े-ही-जकड़े पूछा, जैसे कि कोई उसे छीनकर भाग जाने की कोशिश कर रहा हो।

जवाब मिला—"उसे ल्वोव में मार डाला गया।"

"खैर···ऊपर वाला उस पर रहम करे! घुड़सवारों में शानदार फौजी था वह!" प्रोखोर ने जल्दी-जल्दी क्रॉस बनाया और कोशेवोइ की मुस्कान के व्यंग्य की अनदेखी करते हुए जोर की चुस्की ली। "और क्या हालचाल हैं उस आदमी के···अजीब-सा नाम था उसका ? अरे वही जो दाहिने बाजू अपना घोड़ा रखता था···क्या नाम था उसका ?

···शायद मैवोरोदा था···वह मोटा, हँसमुख उक्रइन था न एक···उसने ओदी में एक पोलिश अफ़सर को बीच से दो कर दिया था···वह ज़िन्दा और ठीक-ठाक तो है ?"

"बिलकुल स्टैलियन है अब तक । उसका तबादला मशीनगन वाली स्क्वैड्रन मे कर दिया गया है ।"

"और अपना घोड़ा तुमने किसको सौंपा ?"

"मेरे पास दूसरा घोड़ा आ गया था बाद में ।"

"तो उस सितारे वाले घोड़े का क्या हुआ ?"

"उसे तोप के गोले का एक टुकड़ा लगा और वह मर गया ।"

"लड़ाई में ?"

"हमने एक गाँव में पड़ाव डाल रखा था कि तोपों के गोले आ-आकर गिरने लगे, और उसी में उसका काम तमाम हो गया ।"

"आह···बहुत ही बुरा हुआ···कैसा शानदार घोड़ा था वह !" प्रोखोर ने आह भरी और फिर होंठ गिलास पर जमा लिए ।

इसी समय बाहर दरवाजा खड़का तो ग्रिगोरी चौंक-सा उठा । अकसीनिया ने ड्योढ़ी के इस पार कदम रखा और अस्पष्ट शब्दों में कहा—"प्रीवियत !" इसके बाद, बुरी तरह हाँफ़ते और ग्रिगोरी को फटी-फटी चमचमाती आँखों से एकटक देखते हुए उसने रूमाल उतारा और दून्या के बगल में आ बैठी । उसकी भौंहों, बरौनियों और पीले गालों से बर्फ़ के फूल एक-एक करके उड़ने लगे । उसने अपनी आँखें सिकोड़कर हथेली से चेहरा पोंछा, लम्बी साँस ली और केवल तब अपने ऊपर क़ाबू पाते हुए भावना से गद्‌गद दृष्टि से ग्रिगोरी की ओर देखा ।

"साथी-फ़ौजो ! अकसीनिया ! हम साथ-साथ पीछे हटे । हमने साथ-साथ जुओं को खून पिलाया···। दुःख है कि कुबान में तुम्हें छोड़ देना पड़ा, पर और हम करते भी क्या ?" प्रोखोर ने अपना गिलास अकसीनिया की ओर बढ़ाया तो वोदका मेज़ पर छलक गई । बोला—"पियो, ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच की सेहत का जाम पियो ! घर वापस आया है···इसे मुबारकबाद दो । मैंने तुमसे कहा था न कि वह सही-सलामत लौटेगा···और देखो कि लौट आया । सामने बैठा है···नई

पिन की तरह चमचमा रहा है।"

"वह काफ़ी मजे में है···उसकी बात सुनने की जरूरत नहीं।" ग्रिगोरी हँसा और उसने प्रोखोर की तरफ़ आँखों से इशारा किया।

अकसीनिया ग्रिगोरी और दून्या के सामने झुकी और गिलास थोड़ा उठाया। और उठाने में उसे आशंका हुई कि दूसरे लोग उसके हाथों का काँपना कहीं देख न लें।

"ग्रिगोरी पेन्तेलेयेविच, यह है तुम्हारी अवाई, और दून्या, यह है तुम्हारी खुशी का जाम!"

"और, तुम्हारा···तुम्हारे ग़म का जाम?" प्रोखोर ने हँसी का ठहाका लगाया और मिखाइल को बग़ल में कुहनी मारी।

अकसीनिया के चेहरे पर लाली दौड़ गई। उसके कानों के छोटे-छोटे नीचे के हिस्से भी एकदम गुलाबी हो गए। लेकिन प्रोखोर की ओर जमकर क्रोध से देखते हुए उसने जवाब दिया—"और यह है मेरी खुशी···मेरी दिली खुशी का जाम।"

प्रोखोर का हथियार जैसे किसी ने उसके हाथ से छीन लिया। वैसे इस साफ़गोई का उसके दिल पर बड़ा गहरा असर पड़ा। चिल्लाकर बोला—"लगाओ होंठों से···ऊपर वाले के नाम पर लगाओ होंठों से और एक घूंट में ही आखिरी बूंद तक गले के नीचे उतार लो··· इतनी साफ़ बात करनी आती है तो इतनी ही सफ़ाई से पीना भी आना चाहिए। अच्छी शराब कोई गिलास में छोड़ता है तो कलख से मेरा कलेजा टूक-टूक हो जाता है।"

अकसीनिया देर तक वहाँ न रही। जितनी देर ठहरना उसने ठीक समझा, उतने समय के बाद वह उठ खड़ी हुई। इस बीच भी उसने अपने मन के राजा की ओर कभी-कभी ही देखा और सो भी एकाध क्षण को ही देखा। उसने ग्रिगोरी की निगाह जान-बूझकर बचाई और बरबस दूसरों की तरफ़ देखती रही, क्योंकि ग्रिगोरी के प्रति तटस्थ रहने का ढोंग भरना उसे सम्भव न लगा और दूसरों के सामने अपने मन को खोलकर रख देना उसने ठीक न समझा।

बस, तो ग्रिगोरी की निगाह से उसकी निगाह सीधे-सीधे सिर्फ़ तब

मिली जब वह दहलीज़ तक पहुंच गई। उस निगाह में जाने कितना प्यार और जाने कितना समर्पण घुला रहा। यही कारण है कि वह एक निगाह ही जाने कितना कुछ कह गई। ग्रिगोरी उठा और उसे पहुंचाने के लिए बाहर गया। नशे में धुत प्रोखोर पीछे से चीखा—"बहुत देर न लगाना। देर लगाई तो एक बूंद न मिलेगी। हम लोग पी-पाकर बराबर कर देंगे।"

ग्रिगोरी ने बरसाती में पहुंचने पर, मुंह से एक शब्द कहे बिना, अकसीनिया की भौंहें और होंठ चूमे और पूछा—"कहो अकसीनिया, क्या हाल है?"

"उफ़···इस वक्त एक सांस में ही सब-कुछ बतला देना मेरे लिए मुमकिन नहीं है···कल आना घर···आओगे न?"

"जरूर आऊंगा।"

औरत घर की तरफ़ इस तरह तेजी से लपकी जैसे कि वहां कोई जरूरी काम पड़ा हो। फिर, सिर्फ़ अपने दरवाज़े पर पहुंचने के बाद उसने चाल धीमी की और चरमराती हुई सीढ़ियों पर होशियारी से चढ़ी। अपने मन के विचारों में खोने और अपने अन्तर की खुशी को सहेजने के लिए उसने जल्दी-से-जल्दी एकान्त चाहा। यह प्रसन्नता उसे बहुत ही अप्रत्याशित लगी।

उसने अपनी जैकेट और रूमाल एक तरफ़ लुढ़काया और दीया-बत्ती किए बिना सोने के कमरे में पहुंची। रात का गहरा बकाइनी अंधेरा बिना झिलमिली की खिड़की से चोरी-चोरी अन्दर आता रहा। स्टोव के पीछे एक चमगादड़ सुर में गाता रहा। अकसीनिया ने आदत के अनुसार शीशे में अपना चेहरा देखा, और अंधेरे में कुछ भी न दीखने के बावजूद बाल ठीक किए। ब्लाउज़ के सीने की सलवटें दूर कीं, फिर खिड़की के पास आई और बेंच पर ढह पड़ी।

ज़िन्दगी में कितनी ही बार उसकी अभिलाषाएं झूठी हो चुकी थीं। शायद इसलिए उसको नई खुशी की जगह बार-बार चिन्ता लेती रही। सवाल उठा—ज़िन्दगी आखिर कौन-सा मोड़ लेगी अब? आगे आखिर बदा क्या है? हर औरत की तरह मेरी ज़िन्दगी में भी खुशी नज़र

आ रही है, लेकिन इसका सही वक्त क्या सचमुच निकल नहीं गया है ?

और, वह सारी शाम परेशान और चूर-चूर रही। खिड़की के ठंडे पाले से मढ़े शीशे से गाल सटाए, अन्धकार में दृष्टि गड़ाए, चुपचाप, उदास बैठी रही। अंधेरे में सिर्फ़ बर्फ़ ही हलके-हलके चमकती रही।

ग्रिगोरी मेज के किनारे आ बैठा। फिर उसने वोदका से गिलास भरा और एक सांस में ही पूरा गिलास खाली कर दिया।

"अच्छी है न ?" प्रोखोर ने पूछा।

"मैं कुछ नहीं कह सकता···मैंने तो एक जमाने से चखी तक नहीं।"

"बिल्कुल जारों वाली वोदका है···ऊपर वाला गवाह है।" प्रोखोर ने विश्वास के साथ कहा और झूमते हुए मीशा को बांहों में भर लिया। मीशा बोला, "तुम्हें शराब की उतनी ही तमीज है जितनी गाय के बछड़े को मोरी के पानी की होती है। मगर···जहाँ तक शराब का मामला है, मैं जानता हूँ कि कौन चीज़ क्या होती है। उफ़ क्या-क्या शराबें पी हैं मैंने अपने जमाने में ! एक शराब ऐसी होती है कि डाट खोलने के पहले ही उसकी बोतल से झाग निकलने लगते हैं···बिल्कुल वैसे ही जैसे पागल कुत्ते के मुँह से ··ऊपर वाला झूठ न बुलवाए···पोलेंड में हमने मोर्चा तोड़ा और घोड़ों पर सवार होकर आगे बढ़े तो एकाएक एक खास जागीर में जा निकले। उस जागीर में दोमंजिला या शायद दो से भी ज्यादा मंज़िलों का एक मकान था···अहाते में मवेशी बिल्कुल गँजे हुए थे ··जाने कितनी तरह की चिड़ियाँ इधर-उधर फुदकती फिर रही थीं···थूकने को भी जगह नहीं थी कहीं···कहने की गरज़ यह कि वह जमींदार बिल्कुल शहज़ादे की तरह रहता था···हम लोग पहुँचे तो वहाँ अफ़सरों की दावत चल रही थी···हमारी उम्मीद किसे थी···सो, हमने तमाम लोगों को बगिया और सीढ़ियों पर काटकर फेंक दिया···सिर्फ़ एक आदमी को कैद किया···आदमी देखने-सुनने में बड़ा अफ़सर लगा···कैद होते ही उसकी मूँछें झूल गईं और डर से उसका सारा बदन सुन्न पड़ गया···ग्रिगोरी उस वक्त था नहीं···उसे स्टाफ़ के

दफ़्तर ने बुला लिया था···सो, मालिक हम ही थे···हम सीढ़ियों से उतरकर कमरों में गये तो बड़ी-सी मेज़ सजी-सजाई देखी हमने···क्या-क्या चीज़ें दिखाई पड़ीं मेज़ पर···हम खड़े-खड़े तारीफ़ें करते रहे, पर भूखे होने पर भी खाने की हिम्मत हमारी न पड़ी···हमने सोचा—कौन जाने, इन चीज़ों में कहीं ज़हर-वहर न मिला हो। इस बीच हमारा कैदी हमें कनखी से देखता रहा···बस, तो हमने उसे हुक्म दिया—"ए···खाओ तो ये चीज़ें जरा।" और वह लाख न चाहने पर भी खाने लगा। हमने कहा—"पियो, यह शराब।"···और उसने पी ली···होते-होते हमने उसे हर तश्तरी से थोड़ाथोड़ा खिला दिया और बोतल से थोड़ा-थोड़ा पिला दिया···नतीजा यह हुआ कि उसका पेट घड़े की तरह फूलता गया और हम खड़े-खड़े तरसते और मुंह से लार टपकाते रहे···और फिर उसे हर तरह ठीक-ठाक देखकर हम भी मेज पर टूट पड़े···फिर तो हमने खूब माल उड़ाए और खूब ढाली···इसी वक्त उस अफ़सर ने तावड़तोड़ कै करनी शुरू की···हमने सोचा—'भाड़ में जाए। अपना काम तो हो लिया। यह जहरीला साँप जान-बूझकर इस तरह ठूंसता चला गया··· और अब इसने हमारी भीजानें लीं।' तो, अपनी-अपनी तलवारें खींचकर हम सब उसकी ओर झपटे, पर उसने अपने हाथ-पैर दोनों हिलाए और चीखकर बोला—"आपकी मेहरबानी से मैंने थोड़ा ज्यादा खा लिया है··· मगर आप परेशान न हों···खाने में किसी तरह की कोई खराबी नहीं है।" बस, तो हमने फिर शराब पीनी शुरू कर दी···हमने एक बोतल खोली तो उसकी काग बन्दूक की गोली की तरह हवा में उड़ी और झाग का एक बादल-सा छा गया और फिर उस शराब का ऐसा नशा चढ़ा कि उस रात मैं तीन-तीन बार घोड़े से गिरा···यानी घोड़े की पीठ पर सवार होते ही हर बार जैसे हवा मुझे उड़ा-उड़ा ले गई···मगर वही शराब, जो इस जमाने में एकाध गिलास खाली पेट पीने को मिल जाए तो मैं सौ बरस पार कर जाऊँ···लेकिन आज जो हालत है उसमें कौन जी सकता है इतना? मिसाल के तौर पर इसे शराब कहेगा कोई? यह तो ऐसी है कि इसे पियो तो अपने वक्त के पहले ही सिधार जाओ।"
प्रोखोर ने सिर हिलाकर वोदका की सुराही की तरफ़ इशारा किया

और गिलास दुबारा लबालब भर लिया।

दून्या बच्चों के पास सोने को चली गई। इसके ज़रा देर बाद ही प्रोख़ोर भी उठ गया, लड़खड़ाते क़दमों से भेड़ की खाल अपने कंधों पर डाली और बोला—"मैं ख़ाली सुराही यहाँ से लेकर जाने से रहा। मेरी रूह गवाही नहीं देगी कि मैं ख़ाली बरतन लेकर यहाँ से जाऊँ। घर पहुँचते ही बीवी मेरा बुख़ार उतारकर रख देगी···इस मामले में उसका जवाब नहीं है। जाने कहाँ से एक-से-एक गंदी गालियाँ खोज लाती है! मैं ज़रा भी पीकर घर पहुँचता हूँ कि वह मुझ पर बरसने लगती है— शराबी बुलडॉग···हथकटे कुत्ते···तू यह है, तू वह है।' इस पर मैं बड़े ही ठंडे दिमाग से, शराफ़त के साथ उसे समझाने की कोशिश करता हूँ—'तू बिल्कुल गधी है···कभी किसी बुलडॉग या हथकटे कुत्ते को तूने पीते देखा है? इस दुनिया में तो ऐसे कुत्ते कहीं नज़र आते नहीं।' फिर तो यह होता है कि मैं उसकी एक बेहूदी बात काटता हूँ तो वह दूसरी कह देती है, और दूसरी काटता हूँ तो तीसरी उगल देती है। और, फिर यह सिलसिला रात-भर चलता रहता है। कभी-कभी मैं इन बातों से ऊब जाता हूँ, छानी में जाकर सो जाता हूँ। फिर, कभी-कभी ऐसा भी होता है कि मैं पीकर घर पहुँचता हूँ और वह बिल्कुल गाली-गलौज नहीं करती। मगर, ऐसे में भी मैं सो नहीं पाता। किसी चीज की कमी जैसे खटकती है। बदन में एक तरह की खुजली-सी होने लगती है, आँखें किसी भी तरह लगती ही नहीं और सारी मोहब्बत दम तोड़ती मालूम होती है। बस, तो मैं अपनी बीवी को छेड़ देता हूँ, और फिर उसके मुँह से फूल बरसने लगते हैं। आख़िरकार मेरा सारा नशा काफ़ूर हो जाता है। उस औरत के अन्दर कहीं-न-कहीं शैतान का वासा है, और मैं इस मामले में कुछ भी नहीं कर सकता। मैं भी सोचता हूँ—चलने दो···रियाज़ बढ़ेगा। ठीक है कि नहीं? अच्छा, मैं चला, अलविदा! मगर, दूसरा मन करता है कि मैं अपनी औरत की नींद ख़राब न करूँ और अस्तबल में ही रात बिता लूँ। क्या ख़याल है?"

"घर पहुँच जाओगे आराम से?" ग्रिगोरी ने हँसते हुए पूछा।

"केंकड़े की रफ़्तार से पहुँचूँगा' मगर पहुँच जाऊँगा। आख़िर तो

मैं कज़्ज़ाक हूँ···है कि नहीं ? तुम्हारे मुँह से ऐसा सवाल सुनकर मेरा दिमाग़ खराब हो गया है।"

"अच्छा···तो···जाओ !"

ग्रिगोरी ने प्रोखोर को छोटे फाटक तक पहुँचाया और फिर बावर्चीखाने में लौट आया। बोला—"क्यों मिखाइल, हम बातें कर अपने मन हल्के कर लें ?"

"जरूर कर लें।"

वे मेज़ के आरपार आमने-सामने बैठ गये, मगर चुप रहे आए। अंत में ग्रिगोरी ने मौन तोड़ा—"हमारे बीच कोई-न-कोई दीवार है। तुम्हारे चेहरे से साफ़ है कि तुम्हारे जी में कोई-न-कोई बात खटक रही है। मेरे वापस आने से तुम्हें खुशी नहीं हुई···ठीक है न ?"

"ठीक···तुमने ठीक समझा···मुझे खुशी नहीं हुई।"

"क्यों नहीं हुई ?"

"एक परेशानी और बढ़ी।"

"मैं अपना पेट आप भर लूँगा···तुम फ़िक्र न करो।"

"यह बात मेरे दिमाग़ में नही है।"

"फिर क्या है तुम्हारे दिमाग़ में ?"

"हम एक-दूसरे के दुश्मन हैं।"

"हैं नहीं, कभी थे।"

"हाँ थे, और लगता है कि आगे भी रहेंगे।"

"मैं नहीं समझता कि आखिर आगे भी क्यों रहेंगे ?"

"तुम पर इत्मीनान नहीं किया जा सकता।"

"तुम बिल्कुल ग़लत बात कह रहे हो···बिल्कुल बकवास कर रहे हो।"

"नहीं, न मैं ग़लत बात कह रहा हूँ और न बकवास कर रहा हूँ···सवाल है कि ऐसे वक़्त तुम फ़ौज से वापस क्यों भेजे गये ? दे सकते हो इस सवाल का जवाब ?"

"मैं बिल्कुल नहीं जानता।"

"नहीं, वजह तुम जानते हो, सिर्फ बतलाना नहीं चाहते···वे लोग

तुम पर यकीन नहीं करते—है न ?"

"अगर वे लोग मुझ पर यकीन न करते तो अपनी एक स्क्वैड्रन की कमान मुझे न सौंपते।"

"यह कमान तो उन्होंने शुरू में सौंपी थी···लेकिन, तुम जब फौज में रहने के लायक नहीं समझे गए तो बात साफ है, मेरे भाई !"

"पर, तुम मेरा यकीन करते हो या नहीं ?" ग्रिगोरी ने मीशा की आँखों में आँखें डालते हुए पूछा।

"नहीं···भेड़िये को चाहे जितना खिलाओ-पिलाओ, मगर मुँह उसका जंगल की ही तरफ़ रहता है !"

"तुम पी कुछ ज्यादा गए हो, मिखाइल !"

"छोड़ो यह बात···नशा मुझे उतना ही है, जितना तुम्हें। उन लोगों ने तुम्हारा भरोसा वहाँ नहीं किया और वे तुम्हारा भरोसा यहाँ भी नहीं करेंगे। समझे बात ?"

ग्रिगोरी चुप हो गया। उसने, यों ही, सिरके के खीरे का एक टुकड़ा तश्तरी से उठाया, कुचला और थूक दिया। मिखाइल बोला—"मेरी बीवी ने तुम्हें किरील-ग्रोमोव का किस्सा सुनाया ?"

"हाँ, सुनाया।"

"मुझे उसका भी यहाँ लौटना पसंद नहीं आया और उसकी वापसी की बात सुनते ही मैंने दिन के दिन···।"

ग्रिगोरी के चेहरे का रंग उड़ गया और उसकी आँखों से क्रोध की चिनगारियाँ फूटने लगीं—"यानी मैं तुम्हारे लिए किरील-ग्रोमोव हूँ ?"

"चीखो मत···किस मानी में उससे बेहतर हो तुम ?"

"खैर···यह तो तुम जानते हो कि···"

"यह जानने और न जानने का सवाल नहीं है···जानते तो हम सब-कुछ एक ज़माने से हैं। अच्छा, मान लो कि तुम्हारी तरह ही मीत्का-कोरशुनोव भी लौट आए, तो मैं क्या कोई जश्न मनाऊँगा··· नहीं, अच्छा होता कि तुमने गाँव में अपना मुँह न दिखलाया होता।"

"तुम्हारे लिए अच्छा होता ?"

"मेरे लिए तो अच्छा होता ही, बाकी लोगों के लिए भी अच्छा होता···ज़रा धीरे से बात करो।"

"मेरा मुकाबला दूसरों से न करो।"

"ग्रिगोरी, मैं तुमसे पहले ही कह चुका···उस बात को लेकर सिर मारने से कोई फ़ायदा नहीं। तुम किसी मानी में बाक़ी लोगों से बेहतर नहीं। सच पूछो तो उनसे भी बदतर हो तुम। तुम उनसे कहीं ज्यादा खतरनाक हो।"

"कैसे खतरनाक हूं मैं? तुम कहना क्या चाहते हो?"

"बात साफ़ है···वे कुछ भी हैं तो मामूली कज्ज़ाक हैं···मगर तुमने तो बग़ावत शुरू की है।"

"मैंने बगावत शुरू नहीं की···मैं तो महज एक डिविजन का कमांडर था।"

"इतना काफ़ी नहीं है क्या?"

"काफ़ी है या काफ़ी नहीं है, यह तो सवाल ही नहीं है···अगर उस दिन शाम को लाल फ़ौजी मुझे मार डालने के मनसूबे न बांधते तो मैं शायद बग़ावत में हिस्सा ही न लेता।"

"अगर तुम फ़ौजी अफ़सर न होते तो कोई तुम्हारे बदन को हाथ लगाने तक की बात न सोचता।"

"अगर फ़ौज में न लिया जाता तो अफ़सर मैं होता ही नहीं··· यह तो बात को खींचना और तिल का ताड़ बनाना है।"

"बात तुम्हारी लम्बी भी है और सड़ी-गली भी···"

"खैर, जो बीत गया, वह तो बीत गया, उसके लिए अब किया भी क्या जा सकता है!"

दोनों चुपचाप धुआं उड़ाने लगे। कोशेवोइ ने नाखून से सिगरेट की राख झाड़ते हुए कहा—"मैं तुम्हारी बहादुरी के कारनामों के बारे में सभी कुछ जानता हूं। पूरी दास्तान सुन चुका हूं। तुमने हमारे अनगिनत लोगों को तलवार के घाट उतार दिया। तुम्हें इस तरह, यहां अपनी आंखों के सामने पाना और बर्दाश्त करना, मेरे लिए ज़रा भी आसान नहीं है···यह कोई एक झटके में भूल जाने की चीज़ नहीं।"

ग्रिगोरी व्यंग्य से हँसा—'तुम्हारी याददाश्त के क्या कहने हैं! तुमने मेरे भाई प्योत्र को काटकर फेंक दिया। मैंने तो तुम्हें उसकी याद नहीं दिलाई—अगर हम हर बात याद करने पर आ गए तो इन्सानों की बजाय भेड़ियों का-सा बरताव करना पड़ेगा हमें।"

"हाँ, मैंने प्योत्र को मारा···मैं उससे इन्कार नहीं करता···और, उस वक़्त, अगर तुम मेरे हाथ आ गए होते तो तुम्हारी भी मैं वैसी ही खातिर करता।"

"लेकिन मैं···जब उन लोगों ने उस्त-खोपरस्काया में इवान-अलेक्सेयेविच को क़ैद कर लिया तो मैं भागा-भागा घर आया कि कहीं तुम उनके बीच न हो, और कज्जाक कहीं तुम्हें न मार डालें···लगता है, उस वक़्त मैंने कुछ ज्यादा जल्दबाज़ी से काम लिया।"

"क्या कहने हैं आपकी शराफ़त के!···मैं सोच सकता हूँ कि अगर आप जीत जाते तो मुझसे किस तरह बातें करते! आप मेरी बोटी-बोटी काटकर रख देते। यह तो वक़्त की बात है कि आज आप इतने मेहरबान नजर आ रहे हैं···"

"हो सकता है कि दूसरे यही करते···मैं तो अपने हाथ गन्दे करता नहीं।"

"तो यह बात साफ़ हुई कि तुम किसी दूसरी मिट्टी के बने हो, और मैं किसी दूसरी मिट्टी का बना हूँ।···जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं अपने दुश्मनों पर हाथ साफ़ करने से कभी नहीं हिचका, और जरूरत पड़ने पर आज भी मुँह से उफ़ करके नहीं दूँगा।" मिखाइल ने बाकी वोदका गिलासों में उँडेली और पूछा—"पियोगे इसे?"

"ठीक है···पिये लेता हूँ···ऐसी बातें इतनी संजीदगी से नहीं की जातीं···।"

उन्होंने आपस में गिलास लड़ाए और शराब गले के नीचे उतार ली। ग्रिगोरी मेज की ओर आगे झुका और अपनी मूँछें ऐंठते हुए, अधमुँदी आँखों से मिखाइल को सिर से पैर तक देख गया।

"लेकिन तुम्हें मुझसे डर क्या है, मिखाइल? तुम्हारा खयाल है कि मैं सोवियत हुकूमत के खिलाफ़ दुबारा बग़ावत कर दूँगा?"

"मुझे कोई डर नहीं है ··लेकिन यह मैं जरूर सोचता हूँ कि अगर कुछ हो गया तो फ़िर तुम उछलकर दूसरी तरफ़ पहुँच जाओगे।"

"तो क्या मैं पोलों से नहीं मिल सकता था ? उस वक़्त तो पूरी एक रेजीमेंट की रेजीमेंट पोलों से जा मिलती।"

"तुम यह कर नहीं सकते थे।"

"नहीं, यह बात नहीं है···मैंने तो यह कभी चाहा ही नहीं। बात यह है कि मैं अपने हिस्से की लड़ाई लड़ चुका और अब किसी की तरफ़ से लड़ने का मेरा जी नहीं। उम्र के हिसाब से कहीं ज्यादा लड़ाई देख चुका हूँ···बिलकुल चूर-चूर हो गया हूँ···हर चीज से ऊब गया हूँ··· क्या इन्क़लाब से और क्या इन्क़लाब के बदले किए जाने वाले इन्क़लाब से ! सब-कुछ जाए ऐसी-तैसी में···बाकी जिन्दगी मैं अपने बच्चों के साथ बिताना चाहता हूँ···फिर से अपनी खेती-बारी में लग जाना चाहता हूँ, और बस ! यक़ीन करो···मिखाइल···मेरा यकीन करो···दिल की पूरी ईमानदारी से कह रहा हूँ यह बात।"

लेकिन मिखाइल की दिलजमई किसी तरह न हुई। ग्रिगोरी ने सच्चाई समझी और आगे कुछ नहीं कहा। उसे क्षण-भर अपने ऊपर खीझ भी आई। सोचने लगा—'मैंने अपनी तरफ़ से इतनी सफ़ाई दी ही क्यों ? अपने को पाक-साफ़ करने की कोशिश ही की क्यों ? क्या ज़रूरत थी कि शराब के नशे में इस तरह की बातें की जाएँ और मिखाइल की बेसिर-पैर की नसीहतें सुनी जाएँ ? भाड़ में जाए···' और वह उठ खड़ा हुआ। बोला—"आगे बात करना बिलकुल बेकार है···काफ़ी बातें हो चुकीं। आखिर मैं तुमसे बस एक बात कहना चाहता हूँ—मेरे गले पर ही कुछ आ जाए तो बात और है, वरना मैं हुकूमत के खिलाफ़ कभी कुछ न करूँगा। लेकिन मेरी गर्दन पर कुछ आ ही जाएगा तो मैं अपना पूरा बचाव करूँगा। मैं प्लातोन-र्याबचिकोव की तरह बग़ावत के नाम पर अपना सिर देने को तैयार नहीं।"

"क्या मतलब ?"

"मतलब वही है, जो मैं कह रहा हूँ। उन्हें चाहिए कि वे लाल फ़ौज की मेरी खिदमत को समझें और उस खिदमत के सिलसिले मे

खाए जख्मों का लेखा-जोखा करें। मैं बग़ावत के नाम पर जेल जाने को तैयार हूँ, लेकिन अगर तुम कहोगे कि नहीं, इसके लिए अपना सिर दो, तो मैं कहूँगा कि यह नहीं होगा, माफ़ करो, जरूरत से जरा ज्यादा क़ीमत चाहते हो तुम।"

मिखाइल नफ़रत से हँसा—"क्या बात की है तुमने ! क्रांतिकारी अदालत या 'चेका' के लोग यह तो पूछेंगे नहीं कि तुम क्या चाहते हो और क्या नहीं चाहते ? वे तुमसे सौदेबाजी तो करेंगे नहीं। तुम एक बार मुजरिम साबित हुए कि हुए। फिर तो पुराने कर्ज साफ़ करने ही पड़ेंगे।"

"खैर देखा जाएगा···।"

"बेशक···वह तो देखा ही जाएगा···।"

ग्रिगोरी ने अपनी पेटी और कमीज उठाई, भुनभुनाते हुए बूट उतारना शुरू किया और उनके टूटे हुए तल्लों को जरा ज्यादा ग़ौर से देखते हुए बोला—"हम लोग क्या साथ रहेंगे यहाँ ?"

"इस सवाल के तय होने में बहुत वक़्त न लगेगा···मैं अपनी जगह ठीक कराए लेता हूँ, और फिर वहाँ चला जाऊँगा।"

"हाँ हम दूर-ही-दूर रहें तभी अच्छा···साथ हम नहीं रह सकते।"

"हाँ साथ हम सचमुच नहीं रह सकते।"

"खैर मैं यह नहीं समझता था कि मेरे बारे में तुम्हारी यह राय है···फिर भी मेरा खयाल है कि···।"

"मेरे दिल में जो कुछ था मैंने तुमसे साफ़-साफ़ कह दिया···अच्छा यह बताओ कि तुम व्येशेन्स्काया कब जा रहे हो ?"

"जल्दी ही किसी-न-किसी दिन हो आऊँगा।"

"यह कुछ नहीं···तुम्हें कल ही जाना होगा।"

"मैंने अभी-अभी चालीस वर्स्ट की मंज़िल पैदल तय की है, और मैं बुरी तरह थका हुआ हूँ। तो कल आराम करूँगा और परसों चला जाऊँगा वहाँ।"

"हुक्म तो फ़ौरन ही नाम दर्ज कराने का है। तुम कल ही जाओ।"

"एक दिन आराम कर लेना कोई गुनाह है क्या ? कहीं भाग तो

जाऊँगा नहीं।"

"कौन जाने कि क्या करो और क्या न करो तुम, मैं तुम्हारी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर नहीं ले सकता।"

"कैसे सुअर हो गए हो तुम, मिखाइल···?" ग्रिगोरी ने अपने पहले के गहरे दोस्त के गम्भीर चेहरे की ओर देखकर आश्चर्य से कहा।

"देखो बेकार को सुअर-वुअर न बनाओ···मुझे यह सब सुनने की आदत नहीं है···" मिखाइल ने तेज़ी से सांस ली और अपनी आवाज़ ऊँची की—"ये फ़ौजी अफ़सरों वाली अपनी आदतें छोड़ो! तुम कल जाओ व्येशेन्स्काया···अगर ऐसे न जाओगे तो मुझे सिपाहियों के साथ भेजना पड़ेगा तुम्हें···समझे ?"

"हाँ समझ गया···अब सब-कुछ मेरी समझ में आ गया।" ग्रिगोरी ने कमरे से बाहर जाते-जाते मिखाइल की पीठ की तरफ़ घृणा से देखा और फिर बिना कपड़े उतारे उसी तरह पलंग पर पड़ रहा।

बस तो सब-कुछ आशा के अनुरूप ही हुआ। आखिर ग्रिगोरी ने वापसी पर और उम्मीद ही किस तरह के बरताव की की थी ? आखिर उसने यह सोचा ही क्यों था कि लाल सेना के थोड़े दिनों के काम से पहले के सारे पाप धुल जाएँगे ? शायद मिखाइल ने ठीक ही कहा था कि हर चीज़ माफ़ नहीं की जाएगी और पुराने कर्ज़े तो पूरी तरह चुकता करने ही पड़ेंगे···।

ग्रिगोरी ने सपने में देखा स्तेपी का खुला मैदान और मैदान में हमले के लिए तैयार एक रेजीमेंट। सहसा ही दूर से कमान की आवाज़ कान में आई—"एक स्क्वैड्रन···!" इस आवाज़ के साथ ही ग्रिगोरी ने समझा कि उसके घोड़े के बंद कसे हुए नहीं हैं। तो उसने बदन का पूरा बोझ बाईं रक़ाब पर डाला। काठी नीचे से फिसल गई। शर्म और डर से भरकर वह बन्द कसने के लिए घोड़े की पीठ से कूदकर नीचे आया। इसी समय घोड़ों की टापों की टपाटप एकाएक बढ़ी और फिर तेज़ी से हलकी पड़ गई। पता चला कि रिजीमेंट ने बिना उसके ही हमला बोल दिया···।

उसने करवट बदली और नींद खुली तो भर्राये गले की अपनी ही

कराह अपने कानों से सुनी।

खिड़की के बाहर नजर दौड़ाई तो लगा कि दिन का उजाला अभी-अभी ही छिटकने लगा है और शायद रात को हवा ने झिलमिली खोल दी है···पाले से भरे धीमे से ढलते चांद की चमचमाती थाली दीखी। ग्रिगोरी ने अपनी थैली टटोली और सिगरेट जलाई। उसका दिल अब तक जोर-जोर से धड़कता रहा। दिल ने कहा—'सपना था कि बकवास थी! यानी लड़ाई के वक़्त और तुम पीछे छूट गए···! और सुबह की उन पहली घड़ियों में एक बार भी उसके अन्तर ने यह न कहा कि अभी क्या है, अभी तो कई बार लड़ाई पर जाना पड़ेगा—सपने में नहीं, होशहवास में!'

: ७ :

दून्या दूध दुहने के खयाल से तड़के ही उठ बैठी। ग्रिगोरी खांसता और बावर्चीखाने में चहलक़दमी करता रहा। दून्या ने बच्चों को अच्छी तरह कम्बल ओढ़ाया, फुर्ती से कपड़े पहने और बावर्चीखाने में आई। भाई बरानकोट के बटन बन्द करता दीखा।

"इतने सवेरे कहाँ जा रहे हो भैया?"

"जरा गाँव का एक चक्कर लगाने जा रहा हूँ···।

"पहले कुछ नाश्ता तो कर लो।"

"नहीं, कुछ भी खाने की तबीयत नहीं है···सिर दर्द कर रहा है।"

"तो नाश्ते के वक़्त तक तो आ जाओगे न? मैं स्टोव जलाने जा ही रही हूँ।"

"मेरा इन्तजार न करना···मैं देर से लौटूँगा।"

ग्रिगोरी निकलकर सड़क पर आया। अनुभव हुआ कि सुबह से ही बर्फ़ गलने लगी है, हवा दक्षिण की ओर से बढ़ रही है और उसमें नमी के साथ गरमी भी है।···सो मिट्टी-मिली बर्फ ग्रिगोरी के बूटों की एड़ियों से चिपक-चिपक गई। गाँव के मध्य भाग की ओर धीरे-धीरे क़दम बढ़ाते हुए बचपन से जाना-पहचाना एक-एक घर और एक-एक शेड उसने ग़ौर से देखा। जैसे कि किसी अजनबी बस्ती में आ

गया हो। पिछले साल कोशेवोइ ने सौदागरों के जो मकान और दुकानें जला दी थीं, उनके अधजले काले खंडहर चौक में खड़े मिले। गिर्जे की अधढही दीवार जैसे मुंह फैलाकर जम्हाई लेती रही।

'ईंटें स्टोव बनाने के काम आ गई होंगी।' ग्रिगोरी ने तटस्थ भाव से सोचा। छोटा गिरजा पिछले जमाने की तरह ही जमीन में धँसता लगा। उसकी लम्बी बिना पालिश की छत में ज़ंग नजर आई। दीवारें नमी से भूरी मालूम हुईं। जहाँ का पलस्तर उखड़ गया था, वहाँ की चमकदार ताज़ी ईंटें रह-रहकर बाहर झाँकती समझ पड़ीं।

सड़कें और गलियाँ वीरान मिलीं। कुएँ के पास दो-तीन निदासी औरतें उसकी बग़ल से गुजरीं। उन्होंने झुककर उसका इस तरह अभिवादन किया, जैसे कि वह परदेसी हो। उसके आगे निकल जाने पर वे ठिठकीं और उसे एकटक देखती रहीं।

वह मुड़ा तो उसे खयाल आया कि माँ उसे और नताल्या की क़ब्र पर जाना चाहिए। बस तो वह क़ब्रगाह की सड़क पर बढ़ चला, परन्तु कुछ दूर जाने के बाद रुक गया। वहाँ गए बिना भी उसे अपना मन काफ़ी भारी और उदास लगा। मन-ही-मन बोला—'फिर कभी हो आऊँगा क़ब्रों पर!'··· इस फैसले के साथ ही वह मुड़ दिया और उसके क़दम प्रोखोर के घर की तरफ़ बढ़ने लगे। रास्ते में सोचने लगा—'माँ या नताल्या के लिए मेरे वहाँ जाने या न जाने से क्या फ़र्क़ पड़ता है! उनके लिए दोनों बराबर है। उनकी रूहें आराम कर रही हैं। उनकी क़ब्रों पर बर्फ के फूल बिछे होंगे, मगर अन्दर की ज़मीन ज़रूर ठंडी होगी···खैर उन्होंने अपना वक़्त गुज़ारा···जिन्दगी कितनी जल्दी सपने की तरह गुज़र गई। अब वहाँ वे लोग अग़ल-बग़ल लेटी हुई हैं···मेरी बीवी और मेरी माँ···प्योत्र और मेरी भाभी दार्या···पूरा ख़ानदान-का-ख़ानदान दूसरी दुनिया में पहुँच गया है···वहाँ उन सभी को चैन है··· सिर्फ मेरे पापा एक ऐसे हैं, जो अनजाने मुल्क में पड़े हुए हैं···अजनबियों के बीच, हो-न-हो वे ऊब रहे होंगे···।"

इसके बाद ग्रिगोरी ने आसपास, इर्द-गिर्द नज़र नही दौड़ाई। वह अपने पैरों और जमीन पर पड़ी गलती हुई बर्फ़ को एकटक देखता हुआ,

आगे बढ़ता गया। बर्फ़ इतनी मुलायम लगी, इतनी मासूम लगी कि क़दमों के नीचे आ-आकर भी जैसे उसने अपना किसी तरह का कोई एहसास नहीं कराया।

सहसा ही उसे अपने बच्चों का ध्यान हो आया। सोचने लगा—दोनों कितने अजीब हो गए हैं! बिलकुल बँधे-बँधे-से रहते हैं। बहुत ही कम बोलते हैं। इस उम्र में तो ऐसा नहीं होना चाहिए। उनकी अपनी माँ थी तब तो वे ऐसे नहीं थे। मौत की बड़ी कीमत अदा की है उन्होंने। हमेशा सहमे-सहमे-से मालूम होते हैं। ··और मुझे देखते ही पोल्युश्का फूट क्यों पड़ी थी? बच्चे किसी से मिलते हैं तो अकसर रोते तो नहीं! वह तो बच्चा जैसे रही ही नहीं। आखिर मुझे देखने पर उसे किस बात का ख़याल हो आया? और मैंने उसे गोद में लिया तो उसकी आँखें कौंध आख़िर क्यों उठीं? शायद अब तक उसने अपने पापा को मर गया माना हो, और उसके आने की उम्मीद ही न की हो। शायद इसीलिए उसे देखते ही डर गई हो। ख़ैर इन बच्चों के लिए मुझे अपने ऊपर लानत बरसाने की ज़रूरत नहीं···लेकिन इतना ज़रूर है कि मुझे अकसीनिया से कहना चाहिए कि अब वह उन्हें ममता दे और जहाँ तक हो सके माँ की कमी खलने न दे!···हो सकता है कि वक़्त के साथ उन्हें इस सौतेली माँ से भी लगाव हो जाए! औरत भली है···दया-माया वाली है···मुझे प्यार करती है। इसी नाते मेरे बच्चों को भी ज़रूर ही अपनायेगी और उन्हें जी-भर दुलार देगी···!'

पर यह विषय भी उसे काफ़ी दर्द-भरा और भारी लगा।

उसे सब-कुछ जैसा आसान लगा था, वैसा निकला नहीं। ज़िन्दगी अभी कुछ समय पहले जितनी सहज प्रतीत हुई थी, उतनी साबित नहीं हुई। अपने भोले-भाले स्वभाव और अपनी बाल-सुलभ सरलता के आधार पर उसने कभी सोचा था कि मैं घर पहुँचा नहीं और मैंने अपने फ़ौजी बरानकोट को उतारकर किसानों वाला कोट पहना नहीं कि सब-कुछ मुँह का कौर हुआ। उसने कभी सोचा था कि घर पर मुझसे कोई कुछ न कहेगा···डाँट-फटकार बिलकुल न होगी ··सब कुछ अपने-आप ठीक-ठाक हो जाएगा। और मैं अपनी ज़िन्दगी के आखिरी दिन

तक चैन से जिऊँगा···खेती-बारी करूँगा···खानदान पालूँगा···और मेरा खानदान दूसरों के लिए एक मिसाल होगा···लेकिन नहीं, सपने जब सच्चाई के धरातल पर उतरे तो उनकी कलई देखते-देखते उतर गई···

वह ज़िकोव के घर पहुँचा तो छोटा फाटक एक कब्जे पर झूलता मिला। उसने उसे बड़ी होशियारी से खोला। प्रोखोर कायदे के जोड़ों वाले फ़ेल्ट के बूट पहने, और तिकोनी टोपी अपनी आँखों तक खींचे, दूध की खाली बाल्टी झुलाता सीढ़ियों की ओर बढ़ता दीख पड़ा। बर्फ पर दूध की सफेद बूँदें जहाँ-तहाँ पड़ी रहीं।

"रात चैन से बीती, कॉमरेड-कमाण्डर ?" प्रोखोर ने ग्रिगोरी का अभिवादन किया।

"ऊपर वाले का रहम है।"

"सुबह भी थोड़ी-सी वोदका चाहिए थी—मेरा दिमाग़ तो बिलकुल ऐसा हो रहा है, जैसी यह खाली बाल्टी।"

"बात तो कायदे की कही है तुमने···मगर यह बाल्टी खाली क्यों है ? खुद गाय दुही है क्या ?"

प्रोखोर ने जवाब में सिर हिलाया तो टोपी खोपड़ी के पहले हिस्से पर जा पहुँची। सहसा ही ग्रिगोरी का ध्यान गया तो उसे अपने मित्र का चेहरा गैर-मामूली तौर पर उदास लगा।

"अरे, मैं न दुहूँगा तो क्या वह शैतान की बच्ची गाय दुहेगी मेरे लिए ? हाँ, मैंने ही दूध दुहा है। इसके बदले उसका पेट ऐंठ-ऐंठकर न रहे, तब कहना।" प्रोखोर ने क्रोध से बाल्टी एक तरफ को लुकाई और उसी रौ में बोला—"आओ अन्दर चलें।"

"तुम्हारी बीवी ने दूध क्यों नहीं दुहा ?" ग्रिगोरी ने यों ही पूछा।

"शैतान लग गए हैं उसे।···मैं कल रात आया तो मुझे देखते ही हाथ धोकर पीछे पड़ गई। तमाम तक़रीरें दे डाली···हुक्म दे दिए और फिर बोली—'मैं काले बेर बीनने के लिए गाड़ी से क्रूजलिन्स्की जा रही हूँ···मकसायेव की बहुएँ भी साथ जा रही हैं···।' मैंने मन-ही-मन कहा—'जाओ भी' तुम्हारा जी करे तो नाशपातियाँ बीनने जाओ···

जान तो छूटे तुमने किसी तरह !'···फिर, मैं उठा, स्टोव जलाया और गाय दुही। दुहाई में कहीं कोई गड़बड़ी नहीं हुई। सोच सकते हो तुम कि आदमी एक हाथ से ऐसे-ऐसे काम भी कर सकता है ?"

"अरे ! तो तुम किसी औरत से कहते और वह दुह देती···निरे काठ के उल्लू हो तुम !"

"काठ का उल्लू होती है भेड़···माँ-मेरी की दावत के दिन तक अपनी माँ के थन से ही चिपकी रहती है, मगर मैं तो जिन्दगी-भर कभी ऐसे नहीं रहा। इसीलिए मैंने सोचा कि मैं ही कर लूंगा सब-कुछ। और आखिरकार कर भी लिया। मैं गाय के थनों के पास उकड़ूँ बैठ गया। लेकिन, पहले तो वह एक जगह खड़ी नहीं हुई—कभी इधर को हट तो कभी उधर को हट···यह देखकर मैंने अपनी टोपी उतार ली कि शायद इसे देखकर भड़कती हो, मगर उससे भी कोई बात नहीं बनी। होते-होते मेरी कमीज पसीने से तर हो गई, तब कहीं वह सधी। फिर मैंने दूध निकालना शुरू किया और काम खत्म कर बाल्टी खींचने को हाथ बढ़ाया कि गाय ने नाचना शुरू कर दिया। नतीजा यह कि बाल्टी एक तरफ़ को लुढ़क गई और मैं दूसरी तरफ को। यह तमाशा हुआ। वह गाय थोड़े ही है, वह तो शैतान है और इस शैतान के सींग हैं। मैंने उस जानवर के मुँह पर थूक दिया और चला आया। दूध के बिना भी काम चल जाएगा। थोड़ी शराब चलेगी।"

"घर में है ?"

"एक बोतल है···जाने कब से छिपाकर रखे रहा हूँ।"

"हम दोनों के लिए काफ़ी होगी।"

"आओ···अन्दर तो आओ। मेरे मेहमान, कुछ अंडे-वंडे तलूँ। दो सेकेंड में तैयार हो जाएँगे।"

ग्रिगोरी ने सूअर की थोड़ी-सी चर्बी काटी और आग जलाने में प्रोखोर की मदद की। फिर दोनों चुपचाप ध्यान से देखते रहे। चर्बी के छोटे-छोटे टुकड़े छनछनाए, पिघले और फ्राइंग-पैन में फिसलने लगे। इसके बाद प्रोखोर ने देव-मूर्तियों के पीछे से गर्द से नहाई एक बोतल निकाली और सफाई देते हुए बोला—"अपनी बीवी की निगाहों से

बचाकर जो कुछ रखना चाहता हूं, वह यहीं रखता हूं मैं ।"

दोनों मित्र छोटे, खूब गरम सोने के कमरे में बैठकर खाने-पीने और धीमे-धीमे बातें करने लगे। ठीक भी है···अगर ग्रिगोरी प्रोखोर से अपने मन की बात न कहता तो फिर किससे कहता ?

वह मेज के किनारे अपने लम्बे-लम्बे, कसे हुए पैर फैलाए बैठा रहा और गहरी, भारी, फटी-फटी-सी आवाज में बातें करता रहा। बोला—"मैं जब तक फ़ौज में रहा या जब तक घर के रास्ते में रहा, मैंने कितनी हसरत से सोचा कि लड़ाई का यह शैतानी रोज़गार खत्म···अब इस तरह अपनी धरती के सीने से लगकर रहूँगा···इस तरह अपने खानदान के लोगों के बीच आराम की जिन्दगी बसर करूँगा···आखिर सात साल तक घोड़े से नीचे क़दम न रखना, कोई मजाक बात तो है नहीं। इतने वक्त के बाद तो हर रात लड़ाई के सपने आने लगते हैं और वही सब तूफान नज़र आते है कि या तो तुम दुश्मन को मार रहे हो या दुश्मन तुम्हें मार रहा है···लेकिन, प्रोखोर, अब लगता है कि हसरत पूरी कभी न होगी···मंसूबे मंसूबे ही रह जाएँगे···मुझे तो दिखलाई यह पड़ रहा है कि ज़मीन की देखरेख करेंगे दूसरे लोग···उसे जोते-बोएंगे दूसरे लोग—मैं नहीं···"

"मिखाइल से कल कोई बातचीत हुई ?"

"हां। तबीयत बाग़-बाग़ हो गई।"

"उसने कहा क्या ?"

ग्रिगोरी ने दो उँगलियों से तलवारों की कैंची बनाई। बोला—"यह है हमारी दोस्ती की सूरत। वह गोरे गारदों की मेरी नौकरी रह-रहकर मेरे चेहरे पर मारता है। उसका ख़याल है कि मैं नई हुकूमत का दुश्मन हूं और उसके लिए अपनी बग़ल में छुरी छिपाए फिरता हूं। उसे दुबारा बग़ावत के भड़क उठने का डर है, लेकिन मुझे जर्रा बराबर तमन्ना नहीं है अब इस या उस बग़ावत की, यह बात वह समझता ही नहीं···बेवकूफ कहीं।"

"यही बात उसने मुझसे कही थी।"

ग्रिगोरी के होंठों पर दर्द-भरी खोखली मुस्कान दौड़ गई। कहने

लगा—"पोलैण्ड की मार्च के वक्त हमें एक उक्रइन मिला और उसने अपने गांव की हिफ़ाजत के लिए हमसे हथियार मांगे। बात यह थी कि डाकुओं ने उसकी जगह लूट ली थी और उसके सारे ढोर-डंगर काटकर फेंक दिए थे। पर रेजीमेंट का कमांडर मेरे सामने बोला—'तुम्हें हथियार दें हम, ताकि तुम खुद डाकुओं से जा मिलो।' मगर वह उक्रइनी हँसा और बोला—'हमें हथियार-भर दे दो, साथी···फिर देखो हम डाकुओं को गांव के पास न फटकने देंगे और तुम्हें भी गांव से दूर-ही-दूर रखेंगे।' और इस वक्त बिल्कुल उसी इक्रइनी की तरह मेरा दिमाग़ काम कर रहा है···मैं सोचता हूं कि कितना अच्छा होता कि तातारस्की में न गोरे गारद आते और न लाल फौजी। मेरे खयाल से तो मेरे रिश्तेदार मीत्का कोरशुनोव और मिखाइल कोशेवोइ दोनों एक ही रंग में रंगे है। मिखाइल सोचता है कि गोरे गारदों से मुझे इतनी मोहब्बत है कि मैं उनके बिना जी नहीं सकता। उल्लू का पट्ठा कहीं का! मुझे उनसे सचमुच बड़ी मोहब्बत है। थोड़े वक्त की बात है—हम क्रीमिया में बढ़ रहे थे कि कोरनीलोव का एक नाटा-छोटा कर्नल मुझसे आ टकराया···अंग्रेज़ी काट की मूंछें थी उसकी, सो मैंने ऐसे ठाठ से उसका हिसाब-किताब किया कि मेरा कलेजा खुशी से खिल गया। उस नाटे कर्नल के सिर पर बाकी रह गई आधी टोपी और धड़ पर रह गया आधा सिर···उसका अफ़सरों वाला सफेद तुर्रा तो हवा में उड़ता चला गया···ऐसी मोहब्बत है मुझे इन गोरे गारदों से! उन्होंने जिन्दगी में मुझे कुछ कम तकलीफें नहीं दी हैं। मैं अपने खून की क़ीमत अदा कर अफ़सर के ओहदे तक पहुंचा, लेकिन अफसरों के बीच मैं सदा हंसों की पांत में कौआ ही समझा गया। सूअर के बच्चों ने मुझे आदमी तो कभी समझा ही नहीं। मुझसे हाथ मिलाने में उन्हें हमेशा घिन छूटी···गाज गिरे उन पर···इसके बाद तो उनका नाम लेने में भी मेरा जी मिचलाने लगता है। और यह कहना तो कमाल ही है कि मैं दुबारा उनकी हुकूमत चाहता हूं। यानी···मैं जनरल फ़िट्शालौरोव को यहाँ आने की दावत देना चाहता हूं।···यह खेल भी एक बार कर देखा···पूरे एक साल तक हिचकियां आती रहीं। काफ़ी हो लिया···सबक सीख

लिया मैंने···खुद मुझी पर बीती है।"

प्रोखोर, गरम चर्बी में रोटी तलते हुए बोला—"अब बग़ावत-अगावत तो होती नहीं। पहली बात तो यह कि कज्जाक ही कितने है! जो वापस आए हैं उनकी भी आंखें खुल गई हैं। हमारे इन भाइयों ने लड़ाई में इतना खून बहाया है और अब ये इतने होशियार और अमन-पसंद हो गए हैं कि गर्दनों मे फंदे डालकर भी इन्हें बग़ावत में खींचना मुमकिन नहीं है। फिर यह भी है कि लोग चैन की ज़िन्दगी के लिए तड़प रहे हैं। काश कि तुम लोगों को इस गरमी में काम करते देखते! उन्होंने सूखी घास की टालों पर टालें लगा डालीं और कटाई करने पर आए तो एक दाना भी खेत मे बाक़ी नहीं छोड़ा। वे थकान से कराह रहे हैं, लेकिन इस पर भी इस तरह जुताई और बोआई कर रहे हैं, जैसे कि उनमें से हर एक सौ साल जीने के सपने देख रहा हो। नहीं, बग़ावत का तो सवाल उठाना ही बकवास है। बिल्कुल बेमतलब बात है। वैसे यह तो ऊपर वाला ही कह सकता है कि कज्ज़ाकों के मन में कब क्या आ जाएगा।

"क्या आ जाएगा उनके मन में? क्या कहना चाहते हो तुम?"

"मिसाल के लिए हमारे पड़ोसियों के दिमाग़ों में कुछ आ गया है···"

"क्या?"

"क्या से क्या फ़र्क पड़ता है! वोरोनेज़ के इलाके में बोगुचार के पार कहीं लोगों ने सिर उठा लिए हैं।"

"बेकार की बात है।"

"नहीं, बेकार की बात बिल्कुल नहीं है। मिलिशिया के एक आदमी ने कल मुझे यह खबर दी है। लगता है कि अफ़सर वहाँ मिलिशिया भेजने का इरादा कर रहे हैं।"

"वहाँ यानी कहाँ?"

"मोनास्तिर्शचिना, सुखोई-दोनेत्स, पासेका, स्ताराया, नोवया कालीत्वा और ज़िले की और जगहों को। कहते है कि बग़ावत बड़े पैमाने पर की गई है।"

"लेकिन इसका ज़िक्र तुमने कल क्यों नहीं किया ··गधे कहीं के?"

"मिखाइल के सामने मैंने जान-बूझकर यह बात नहीं छेड़ी। फिर ऐसी बातें करने में मज़ा भी तो कुछ नहीं है। मैं तो बग़ावत-वग़ावत का नाम तक सुनना नहीं चाहता।"

ग्रिगोरी का चेहरा उतर गया। कुछ देर सोचने के बाद बोला—"बुरी खबर सुनाई तुमने।"

"लेकिन, तुम्हें इससे क्या लेना-देना! खोखोलों को होना हो तो वे फ़िक्र से दुबले हों। इतनी ठोकरें पड़ेंगी कि चूतड़ कटकर गिर जाएँगे। तब समझ में आएगा उनके कि सिर उठाना किसे कहते हैं। मगर, इसका तुमसे या मुझसे कोई मतलब नहीं। मुझे उन खोखोलों के लिए कोई अफ़सोस नहीं।"

"ऐसा नहीं है···इससे मेरी गुत्थी उलझेगी।"

"यह कैसे?"

"तुम्हारी समझ में नहीं आता? अगर रीजन के अफ़सरों की राय मेरे बारे में वही हुई जो कोशेवोइ की है, तो मैं जेल में ठूँसे जाने से बचाए नहीं बचता। बग़ल के इलाके में लोग सिर उठा रहे हैं, मैं अभी कल तक अफ़सर रहा हूँ और बाग़ी के नाम से जाना-माना जाता रहा हूँ···अब हुई बात साफ़?"

प्रोखोर ने मुँह चलाना बन्द कर दिया और सोच में पड़ गया। यह बात उसे पहले खटकी ही न थी।···मगर, इस वक्त शराब के कारण उसके दिमाग़ ने काफ़ी धीरे-धीरे, और सो भी काफ़ी मुश्किल से काम किया। ताज्जुब से पूछा—"मगर, तुम इस झगड़े में आते कहाँ हो, पैन्तेलेयेविच?"

ग्रिगोरी की भौंहों पर बल पड़ गए और उसने कोई जवाब नहीं दिया, जैसे कि बग़ावत के इस समाचार ने उसे हिलाकर रख दिया हो। इसी समय प्रोखोर ने गिलास उसकी ओर बढ़ाया, पर ग्रिगोरी ने अपने दोस्त का हाथ एक तरफ़ को झटक दिया और दृढ़ता से बोला—"अब मुझे नहीं पीना।"

"अरे, बस···एक गिलास और पियो···जब तक चेहरे का रंग एकदम बदल न जाए, तब तक पियो। हँसी-खुशी से भरी इस ज़िन्दगी का महज़ एक इलाज है, और वह है वोदका।"

"तुम बदलो अपने चेहरे का रँग। दिमाग़ ने काम करना यों ही बन्द कर दिया है···देर-सवेर मरक रहोगे। मुझे अपना नाम दर्ज कराने आज व्येशेन्स्काया जाना है।"

प्रोखोर ने उसे घूरकर देखा तो उसका धूप से सँवराया चेहरा गहरा भूरा लगा। सफ़ेदी सिर्फ़ उलटे हुए बालों की जड़ों में ही नज़र आई। आदमी मन से काफ़ी शान्त रहा। उसने ज़िन्दगी में कितना ही कुछ देखा था और लड़ाई और मुसीबतों ने प्रोखोर को उसके स्नेह-सूत्र में बाँध दिया था। वह उसका अपना हो उठा था।

उसकी कुछ-कुछ सूजी आँखों से उदासी टपकी और निगाह से सख्ती और थकान। प्रोखोर ने पूछा—"तुम व्येशेन्स्काया जा रहे हो···तुम्हें डर नहीं लगता कि वे लोग तुम्हें जेल में डाल देंगे?"

ग्रिगोरी ने तड़ से जवाब दिया—"यही तो डर लग रहा है, भाईजान! मैंने जेल कभी देखी नहीं, इसलिए मुझे मौत से ज्यादा डर जेल जाने से लगता है। लेकिन, लगता है कि इसका मज़ा भी एक बार चखना ही पड़ेगा।"

"तुम्हें घर नहीं आना चाहिए था।" प्रोखोर हमदर्दी से बोला।

"लेकिन, घर न आता तो फिर जाता कहाँ?"

"तुम कस्बे में कहीं छिप रहते, यह ऊँट किसी करवट बैठ जाने देते और तब आते।"

ग्रिगोरी ने हाथ हिलाया और हँसा—"यह मेरे काम करने का तरीका नहीं। इन्तज़ार से बुरा कोई नहीं। फिर मैं अपने बच्चों को कैसे छोड़ देता?"

"क्या बात कही है! आखिर अभी तक तुम्हारे बिना भी तो रहते ही रहे हैं वे। बाद में उन्हें भी ले जाते और उनके साथ ही अपनी जानमन को भी ले जाते। अरे हाँ यह बताना तो तुम्हें भूल ही गया कि तुम्हारे यानी तुम्हारे और तुम्हारी अकसीनिया के पुराने मालिक

इस दुनिया से चल बसे।"

"यानी, दोनों लिस्तनित्स्की नहीं रहे ?"

"हाँ, यही नाम तो है। फौज पीछे हटी तो मेरा रिश्तेदार जाखार
छोटे लिस्तनित्स्की का अर्दली रहा। उसने बताया कि बूढ़ा तो
मोरोज़ोव्स्की में टायफ़स से मर गया। छोटा लिस्तनित्स्की येकेतेरीनोदार
पहुंच गया। पर वहाँ उसकी बीवी जनरल पोकरोवस्की से फँस गई। यह
उससे बर्दाश्त न हुआ और उसने गुस्से मे अपने को ही गोली मार ली।"

"खैर···भाड़ में जाएँ वे दोनों।" ग्रिगोरी ने तटस्थ मन से कहा—
"मैं तो उन शरीफ़ लोगों के लिए दुखी हूँ जो इस धरती से उठ गए हैं।
इन दोनों के लिए सीना पीटने कोई नहीं बैठेगा।" फिर वह उठा,
बरानकोट पहना और दरवाजे के हत्थे को पकड़कर कुछ सोचते हुए
बोला—"हालांकि मैंने कहा कि भाड़ में जाएँ लिस्तनित्स्की···मगर छोटे
लिस्तनित्स्की या मीशा-कोशेवोइ जैसों से मुझे डाह बहुत होती है···
उनके सामने हर चीज शुरू से ही साफ़ रही है, लेकिन मेरे सामने
तो आज भी कुछ भी साफ़ नहीं है। दोनों के सामने सीधे रास्ते हैं
और दोनों के सामने एक मंजिल रही है। लेकिन, मैं १९१७ से अब
तक बराबर शराबी की तरह एक ही घेरे का चक्कर काटता रहा हूँ···
मैं गोरे गारदों से कट गया, मगर लाल फ़ौजियों में नहीं खपा···मैं तो
जैसे जमे हुए पानी के छेद में उतराता हुआ गोबर हूँ···देखो न प्रोखोर,
मुझे चाहिए था कि मैं लाल फ़ौजियों के साथ चिपक जाता···उस हालत
में जो कुछ होता मेरे भले के लिए होता। तुम तो जानते हो कि शुरू
में मैंने पूरी ईमानदारी से सोवियत सरकार की खिदमत की। मगर बाद
में सब-कुछ गड़बड़ा गया। गोरे गारदों में उनकी कमान के लोगों के
बीच मैं अजनबी माना गया···हमेशा शुबहा की नजर से देखा गया···
और आखिर होता भी क्या ? मैं एक किसान का बेटा, बेपढ़ा-लिखा
कज़्ज़ाक···मेरी उनसे रिश्तेदारी कौन-सी हो सकती थी ? बस, तो
उन्होंने मेरा कभी यकीन नहीं किया। और, यही हालत मेरी लाल
फ़ौजियों के बीच हुई। आखिर मैं अन्धा तो नहीं हूँ न···कमीसारों
और स्क्वैड्रन के कम्यूनिस्टों की निगाह मैंने खूब समझी···एक बार

लड़ाई के दौरान तो उन्होंने मेरे मामले में ऐसी होशियारी बरती कि जहाँ मेरा कदम पड़ा, वहाँ उनकी नज़र पड़ी। शायद उन्होंने सोचा—'ओ यह सूअर पहले का गोरा गारद कज़्ज़ाक अफ़सर है…हमें चौकस रहना चाहिए…कहीं ऐसा न हो कि दग़ा दे जाए हमें।' और जब मैंने यह देखा तो मेरी नसों का खून जम गया। और बाद में तो उनका इस तरह यकीन न करना मेरी बर्दाश्त के बाहर हो गया। आखिरकार गरमी से तो पत्थर तक पिघल जाता है। और यह सचमुच बहुत ही अच्छा हुआ कि उन्होंने मुझे फ़ौज से घर भेज दिया। इससे बात जल्दी ही खत्म हो गई।" उसने अपना भर्राता गला साफ़ किया, एक क्षण चुप रहा और फिर प्रोखोर की तरफ़ देखकर बदलती हुई आवाज़ में बोला—"खाने के लिए शुक्रिया! अब मैं चला। ठीक-ठाक रहना। अगर सही-सलामत वापस आ गया तो शाम तक आऊँगा तुमसे मिलने। मगर यह बोतल तो हटा दो यहाँ से…नहीं तो तुम्हारी बीवी आकर फ्राइंग पैन तोड़ डालेगी तुम्हारी पीठ पर।"

प्रोखोर सीढ़ियों तक उसके साथ गया और बरसाती में पहुँचने पर फुसफुसाकर बोला—"उफ़…पैन्तेलेयेविच, देखना कि वे लोग तुम्हें वहीं न रख लें।"

"देखो, देखूंगा।" ग्रिगोरी ने उत्तर दिया।

फिर ग्रिगोरी घर नहीं गया। वह दोन के किनारे आया। यहाँ उसने किनारे से किसी की नाव खोली, अँजुरी-अँजुरी कर पानी निकाला। बाड़ से एक सरकंडा खींचा, किनारे की बर्फ़ काटी और नाव खे चला।

हवा के थपेड़ों से चंचल गहरी-हरी लहरें पश्चिम की ओर उमड़ती रहीं। वे किनारे के शान्त पानी की हलकी झलाझल बर्फ चटखाती रहीं और सेवार के पन्ने से हरे पसारे को रह-रहकर झकझोरती रहीं। जमे हुए पानी के बिल्लौरी टुकड़े जहाँ-तहाँ चमचमाते रहे और पानी से घुल-घुल कर किनारे के कँकड़ हलके-हलके खड़खड़ करते रहे। लेकिन, मँझधार में तेज़ और जमे हुए प्रवाह के बीच लहरें नाव के बाएँ बाजू पर आ-आकर पानी की बौछार करती रहीं और किनारे के जंगल में हवा के

बराबर हरहराने की गूंज होती रही।

ग्रिगोरी ने दूसरे तट पर पहुंचने पर नाव का आधा हिस्सा पानी के बाहर निकाला, फिर ज़मीन पर बैठकर बूट उतारे और आसानी से चलने के लिए पैर की पट्टियाँ फिर से बाँधीं।

दोपहर होते-होते वह व्येशेन्स्काया पहुंच गया।

क्षेत्रीय सैनिक-कमीसारियट में बड़ी भीड़ नज़र आई और काफ़ी शोरगुल सुन पड़ा। टेलीफ़ोन की घंटियाँ ज़ोर-ज़ोर से घनघनाती रहीं, फ़ौजियों के आने-जाने पर दरवाज़े भड़ाक-भड़ाक बजते रहे और अलग-अलग कमरों से टाइप राइटरों की खड़खड़ सुनाई पड़ती रही। गलियारे में भेड़ की खाल की जैकेट से लैस एक नाटे आदमी को घेरे खड़े कोई एक दर्जन लाल सैनिक ज़ोर-ज़ोर से बातें करते एक-दूसरे के बीच में बोलते और हँसी के ठहाके लगाते रहे। ग्रिगोरी ने गलियारे में क़दम रखा कि दो लाल सैनिक एक मशीनगन की गाड़ी दूसरी तरफ़ के किनारे से इस तरफ़ लाते दीखे। लकड़ी के ऊँचे-नीचे फ़र्श पर गाड़ी के छोटे-छोटे पहिए खड़खड़ाते रहे। मशीनगन के साथ के लोगों में से एक लम्बा हट्टा-कट्टा आदमी हंसते हुए चिल्लाकर बोला—"सज़ा देने वाली कम्पनी के लोगो···एक तरफ़ हो जाओ···वरना तुम पर चला दूंगा गाड़ी।"

ग्रिगोरी ने मन-ही-मन सोचा—'लगता है जैसे कि सचमुच लोग बग़ावत को दबाने की तैयारी में हैं।'

उसे रजिस्ट्रेशन में बहुत देर न लगी। जल्दी-जल्दी उसके कागज़ात देखने के बाद फ़ौजी कमीसारियेट बोला—"दोन चेका के राजनीतिक विभाग में जाइए। आप पहले अफ़सर रहे हैं, इसलिए आपको वहाँ हाज़िर होना पड़ेगा।"

"बहुत अच्छा।" ग्रिगोरी ने सेल्यूट मारी, पर उसके मन की उथल-पुथल अब तक कहीं से घटी नहीं।

चौक में उसके क़दम अपने-आप रुक गए। अंतर अपनी पूरी शक्ति से विद्रोह करने लगा। मन ने कहा—'तुम्हें उस महक़मे में जाना है, मगर वहाँ तुम जेल में ठूंस दिए जाओगे।' वह आशंका, भय और घृणा से

कांप उठा और स्कूल के पास खड़ा-खड़ा अनदेखी आंखों से देखता रहा तो उसके सामने आ गई जेलखाने की ज़मीन, तहखाने में जाने वाली एक गन्दी सीढ़ी से नीचे उतरते उसके अपने पैर और पीछे पिस्तौल का हत्था कसकर जकड़े, पिस्तौल उसकी ओर ताने एक आदमी।··· उसने अपनी मुट्ठियां बांध लीं और अपने हाथों की फूली हुई नीली नसों पर नज़र डाली। सोचा—'और, इन्हीं हाथों को बांध लेंगे वे।' उसके चेहरे पर खून दौड़ गया—"नहीं, आज वहां नहीं जाऊंगा। ज़रूरत होगी तो कल चला जाऊंगा। आज का दिन अपने बच्चों के साथ बिताऊंगा, अकसीनिया से मुलाक़ात करूंगा···और कल व्येशेन्स्काया लौट आऊंगा। इतना ज्यादा चल पड़ने से पैर दर्द करते हों तो करें। आज तो मैं घर जाऊंगा ही, कल लौट आऊंगा···ज़रूर लौट आऊंगा यानी जो होना हो कल हो, आज कुछ नहीं···'

"ओह मेलेखोव, उमरें हो गईं तुमसे मिले!"···

ग्रिगोरी ने मुड़कर देखा। प्योत्र की रेजीमेंट का साथी दोन सेना की २८वीं विद्रोही रेजीमेंट का पूर्व-सेनापति याकोव-फ़ोमीन पास आया। वह ग्रिगोरी को बिल्कुल बदला हुआ लगा।

अब उसके बदन पर अतामान रेजीमेंट के ज़माने के भद्दे, लापरवाही से पहने गए कपड़े न थे। इन वर्षों में उसमें ज़मीन-आसमान का अन्तर हो गया था। घुड़सवार फ़ौज का शानदार काट का कोट उसके बदन पर बहुत ही फिट बैठ रहा था। लाल मूंछें किसी चीज़ से ऐंठी हुई थीं। उसकी चाल की आन-बान-शान, आत्म-सन्तोष से भरी मुस्कान और उसके आसपास की हर चीज़ से लगता था कि उसे अपने बड़प्पन और विशेष सम्मान का पूरा बोध है।

सो, ग्रिगोरी से हाथ मिलाते और उसकी आंखों में अपनी बड़ी-बड़ी नीली आंखें डालते हुए उसने पूछा—"कैसे आए यहां?"

"फ़ौज से अलग कर घर भेज दिया गया था···फ़ौजी कमीसारियट से अभी-अभी मिलकर चला आ रहा हूं।"

"आए देर हुई?"

"नहीं, कल ही गांव पहुंचा।"

"मुझे अकसर ही तुम्हारे भाई प्योत्र-पैन्तेलेयेविच का खयाल आता है। शानदार कज्जाक था, मगर उसकी मौत बुरी हुई। हमारी तो दांत-काटी रोटी थी।···तुम्हें पिछले साल की बगावत में हिस्सा नहीं लेना चाहिए था मेलेखोव! वह तुमने बड़ी ग़लती की।"

ग्रिगोरी को जवाब में कुछ कहना जरूरी लगा। बोला—"हां, कज्जाकों ने ही गलती की···"

"किस फ़ौज में थे तुम?"

"पहले घुड़सवार ब्रिगेड में।"

"क्या थे?"

"स्क्वैड्रन-कमांडर।"

"अच्छा···इस वक्त मैं भी स्क्वैड्रन-कमांडर हूं। यहां व्येशेन्स्काया में एक बचाव-टुकड़ी है।" फिर अपने चारों तरफ निगाह दौड़ाकर, आवाज नीची कर बोला—"सुनो, चलते चलो···मेरे साथ चलो थोड़ी दूर···यहां लोग बहुत हैं···बात करने का मौका न मिलेगा।"

दोनों सड़क पर बढ़ते गए। ग्रिगोरी को कनखी से देखते हुए फोमीन बोला—"घर पर ही रहने की सोच रहे हो?"

"हां, वहीं रहूंगा···और कहां रह सकता हूं?"

"खेती-बारी करने का इरादा है?"

"हां।"

फोमीन ने हमदर्दी से सिर हिलाया और आह भरी। "मेलेखोव, बहुत बुरा वक्त चुना है तुमने···सचमुच बहुत बुरा वक्त चुना है।··· अभी साल-दो-साल तुम्हें आना नहीं चाहिये था।"

"क्यों नहीं आना चाहिए था?"

फोमीन ने ग्रिगोरी की बांह पर हाथ रखा और उसकी ओर थोड़ा झुकते हुए धीरे से बोला—"इलाक़े में उथल-पुथल है···कज्ज़ाक खाने के सवाल को लेकर काफ़ी गरम हैं···बोगुचार ज़िले में लोग बग़ावत कर रहे हैं। उन्हें दबाने के लिए हम लोग आज जा रहे हैं। मेरी सलाह मानो जवान, तो तुम यहां से फ़ौरन ही खिसक दो। प्योत्र मेरा बड़ा दोस्त था, इसीलिए तुम्हें यह राय दे रहा हूं मैं।"

"लेकिन, जाने को कहीं ठौर भी तो हो।"

"अरे, यहाँ से दूर रहकर चीज़ों को देखो-समझो! मैं तो तुमसे यह इसलिए कह रहा हूँ कि राजनीतिक विभाग पहले के अफ़सरों को गिरफ़्तार कर रहा है। इसी हफ़्ते तीन अलमबरदार दुदारेवका से और एक रेशेतोवका से लाया गया है। दोन के दूसरे किनारे से तो लोगों के झुंड-के-झुंड लाए जा रहे हैं। ये लोग तो इस वक्त मामूली कज्ज़ाकों को भी कस रहे हैं···अब अपना फ़ैसला आप कर लो, ग्रिगोरी-पन्ते-लेयेविच!"

"सलाह के लिए शुक्रिया···मगर मैं इस सबके बावजूद कहीं जाऊँगा नहीं।" ग्रिगोरी ने हठपूर्वक कहा।

"खैर, तुम जानो, तुम्हारा काम जाने।"

फिर फोमीन, क्षेत्र की स्थिति, क्षेत्रीय अधिकारियों से अपने सम्बन्धों और क्षेत्रीय सैनिक कमीसार शाखायेव की चर्चा करने लगा। पर ग्रिगोरी अपने विचारों में ही डूबा रहा, इसलिए उसकी बातें उसने ध्यान से सुनी नहीं।

इस तरह तीन ब्लाकों तक वे साथ रहे कि फोमीन एकदम रुका, "मुझे किसी से मिलने जाना है···अच्छा, 'पॅका'।[1] अपनी फ़र की टोपी पर हाथ रखकर उसने सैल्यूट मारी। ग्रिगोरी से उदास मन से अलग हुआ और किनारे की एक गली में मुड़ गया। इस समय वह जिस तरह शान से तनकर चला, उससे उसकी नई पेटी चरमराई और पूरा नक्शा बहुत भद्दा लगा। ग्रिगोरी उसे कुछ देर तक देखता रहा और फिर लौटा दिया।···

वह राजनीतिक विभाग पहुँचा और वहाँ की पत्थर की सीढ़ियों पर चलते समय मन-ही-मन बोला—'अगर खेल खत्म ही होना है तो हो··· जितनी जल्दी हो, उतना ही अच्छा! मामले को खींचने से कोई फ़ायदा नहीं···ग्रिगोरी, अगर तुम्हें उस वक्त नुकसान पहुँचाना आता था, तो इस वक्त उसकी कीमत अदा करना भी आना चाहिए···उसके लिए जवाब भी देना चाहिए।'

---

१. फिलहाल अलविदा!

: ८ :

सबेरे कोई आठ बजे अकसीनिया ने स्टोव के कोयले उलटे-पलटे और बेंच पर बैठकर ऐप्रन से अपना तमतमाया हुआ, पसीने से तर चेहरा पोंछने लगी···

खाने की तबालत से फुरसत पाने के लिए वह तड़के ही उठ बैठी थी। उसने चूज़ा उबाल लिया था। पैन टिकियाँ बना ली थीं। पकौड़ियों पर खूब क्रीम डाल दी थी और उन्हें तल लिया था। उसे पता था कि ग्रिगोरी को पकौड़ियाँ बहुत पसन्द हैं। यानी, उसे ग्रिगोरी के साथ खाने की आशा थी, इसीलिए उसने खास चीजें तैयार की थीं···

उसका बड़ा जी चाहा कि वह किसी-न-किसी बहाने मेलेखोव-परिवार में जाए और एकाध मिनट वहाँ रहकर अपने मन के राजा की एक झाँकी ले आए। उसे अजीब-सा लगा कि वह बग़ल में हो और वह उसकी एक झलक को तरसे। इस पर भी उसने अपना मन मार लिया और गई नहीं। उसे लगा कि इस उम्र में इस तरह चंचल होना भी क्या!

उसने हाथ-मुँह कहीं ज्यादा मन और सावधानी से धोया, कसीदेवाली समीज़ के ऊपर साफ कमीज़ पहनी, और स्कर्ट चुनने के लिए बहुत देर तक खुले बक्से के सामने खड़ी रही। काम के मामूली दिन खास कपड़ों की वैसे कोई जरूरत न थी, पर उसका किसी तरह जी न माना कि आज के दिन भी वह रोज़ के-से कपड़े पहने। मगर उसकी समझ में न आया कि निकाले तो निकाले क्या? उसके माथे पर बल पड़ गए और उसने लोहा की हुई तमाम स्कर्टें लापरवाही से उलट डालीं। आखिरकार उसने गहरी-नीली स्कर्ट और काली गोटवाली नई, नीली चोली निकाल ली। इससे अच्छे कपड़े उसे नजर ही न आए। सोचा उसने—'मैं क्यों फिक्र करूँ कि पड़ोसी क्या सोचेंगे और क्या नहीं सोचेंगे? उनका हो काम का दिन···मेरा तो आज जश्न का दिन है···'

सो, उसने जल्दी-जल्दी सारे कपड़े पहने और शीशे के सामने जा खड़ी हुई, आश्चर्य से भरी। मंद मुस्कान उसके होंठों पर दौड़ गई। उत्सुकता से भरी और प्रसन्नता से चमकती आँखें उसे एकटक देखने लगीं। उसने अपना चेहरा ग़ौर से देखा और उसके मुँह से सन्तोष की

साँस निकल गई। उसे लगा, नहीं, अभी मेरा हुस्न मुरझाया नहीं… अभी भी कितने ही कज्जाक ऐसे निकलेंगे जो मुझे देखते ही राह में ठिठक जाएँगे और मुझे हसरत से घूरते रह जाएँगे।'

और शीशे के सामने अपनी स्कर्ट ठीक करते समय उसने ज़ोर से कहा—"हाँ, ग्रिगोरी-पैन्तेलेयेविच, अब देखो ज़रा!" फिर अपने चेहरे पर लाली दौड़ते देखकर मन-ही-मन हंस पड़ी। इस पर भी कनपटियों पर कुछ सफेद बाल दीख ही गये तो उसने उन्हें तोड़कर फेंक दिया। उसे लगा कि ग्रिगोरी को ऐसा कुछ दिखलाई नहीं पड़ना चाहिए जिससे उसे उसकी उम्र का खयाल आए। उसके लिए तो उसने आज सात साल पहले के रूप का गुलाब अपने चेहरे पर खिलाने की कोशिश की।

फिर दोपहर के खाने के समय तक वह जैसे-तैसे घर पर बनी रही। लेकिन, इसके बाद अपने को रोक न पाई और सफेद बकरे की खाल का शॉल अपने कंधे पर डालकर मेलेखोव परिवार के घर की ओर चल पड़ी। दून्या घर में अकेली मिली। अकसीनिया ने उसका अभिवादन किया और पूछा, "अभी तक खाना नहीं हुआ तुम्हारे यहाँ?"

"ऐसे घुमक्कड़ घर में हों तो कहीं वक्त पर खाना हो सकता है? मीशा सोवियत के दफ्तर में है। ग्रिगोरी व्येशेन्स्काया गया है। बच्चों को खिला चुकी हूँ…बड़ों का इन्तज़ार है।"

अकसीनिया को यह सुनकर बड़ी निराशा हुई, पर अपनी किसी गतिविधि या बात से उसने मायूसी झलकने नहीं दी। बोली—"मैंने तो सोचा कि सभी लोग इस वक्त घर पर ही होंगे। अच्छा ग्रीशा, मेरा मतलब, ग्रिगोरी-पैन्तेलेयेविच लौटेगा कब तक? आज आजाएगा न?"

दून्या ने अपनी पड़ोसिन के शानदार कपड़ों पर निगाह डाली और ज़रा हिचकती हुई बोली—"वह अपना नाम दर्ज कराने गया है।"

"कब तक लौटने की उम्मीद है?"

दून्या की आँखें छलछला आईं। अपनी अटकती आवाज़ में फटकार घोलते हुए बोली—"क्या वक्त चुना है तुमने इस तरह सजने का…तुम्हें यह पता नहीं कि हो सकता है कि वह बिल्कुल लौटकर आए ही नहीं…"

"क्या मतलब ?"

"मिख़ाइल का कहना है कि उसे व्येशेन्स्काया में गिरफ़्तार कर लिया जाएगा···" दून्या की पलकों से आक्रोश-भरे आंसू टपकने लगे। उसने आस्तीन से आंखें पोंछीं और चीख पड़ी—"गाज गिरे···इस ज़िन्दगी पर गाज गिरे···पता नहीं यह सब ख़त्म कब होगा ? ग्रीशा वहां चला गया है, और बच्चे जैसे पागल हो गए हैं। मुझे दम-भर को भी चैन नहीं लेने देते। बार-बार पूछते हैं पापा कहां गये हैं ? कब तक लौटेंगे ? अब मैं कहां से जवाब दूं ? मैंने बच्चों को तो अहाते में भेज दिया है, पर मेरा अपना दिल कचोट रहा है···क्या कहोगी तुम इस कम्बख़्त ज़िन्दगी को ? लाख कलेजा छलनी कर डालो, मगर किसी को कभी चैन नहीं मिलता।"

"अगर वह शाम तक वापस नहीं आएगा तो कल मैं ख़ुद व्येशेन्स्काया जाऊँगी और पता चला लाऊँगी।" अकसीनिया ने यह बात ऐसे तटस्थ भाव से कही, जैसे कि किसी ऐरे-गैरे की चर्चा कर रही हो, और परेशानी की ज़रा भी ज़रूरत न हो।

दून्या ने उसके चित्त के सन्तुलन और मन के सब्र पर अचरज करते हुए आह भरकर कहा—"आज उसका इन्तजार करने से कोई फ़ायदा नहीं···यह तो साफ़ है···आते ही हजार तरह की मुसीबतों से घिर गया है।"

"हमें अभी तक कुछ पता तो है नहीं···तुम रोना बन्द करो, दून्या, वरना बच्चे जाने क्या खयाल करेंगे।···अच्छा···मैं चली। अलविदा !"

ग्रिगोरी शाम होने के काफ़ी देर बाद लौटा, घर में थोड़ी देर रहा और फिर अकसीनिया से मिलने चल दिया······

परन्तु अकसीनिया पूरे दिन जिस तरह चिंता में घुलती रही, उसने दोनों की मुलाकात का मज़ा किरकिरा कर दिया···शाम होते-होते उसे ऐसा लगने लगा, जैसे कि वह बिना कमर लचाए सारे दिन काम करती रही है। आखिरकार इन्तजार करते-करते उसका दिल टूट गया और वह थकान से चूर होकर पलंग पर जा लेटी। लेकिन खिड़की के बाहर पैरों की आहट आते ही औरत कमसिन लड़की की

तरह फुर्ती से उठकर खड़ी हो गई।

उसने ग्रिगोरी को देखते ही उसके गले में हाथ डाल दिया। पूछा—'तुमने मुझे बतलाया क्यों नहीं कि तुम व्येशेन्स्काया जा रहे हो?···"
और इसके साथ ही वह उसके बरानकोट के बटन खोलने लगी।

"कहने का मौका ही नहीं मिला···मैं बड़ी हड़बड़ी में था।"

"तुम उधर गये और इधर हमने यानी दून्या ने और मैंने रो-रोकर आँखें काली कर डालीं—हमने सोचा कि अब तुम लौटोगे ही नहीं।"

ग्रिगोरी उदास मन से मुस्कराया।

"नहीं, अभी वह नौबत नहीं आई।" और, एक क्षण रुकने के बाद फिर बोला—"कम-से-कम अभी तक तो जान बची ही है।"

वह लंगड़ाता हुआ गया और मेज़ के किनारे जा बैठा। खुले दरवाज़े से सोने के कमरे में नज़र आया। कोने में पड़ा लकड़ी का चौड़ा पलंग, और बक्से की हल्के-हल्के चमकती ताम्बे की पत्तियाँ। पूरी व्यवस्था को देखकर उसे जवानी के दिनों में, स्तेपान के न रहने पर, वहाँ अपना आना याद हो आया। कोई फेर-बदल कहीं समझ ही न पड़ा। ऐसा लगा जैसे कि वक्त इस तरफ़ से तो गुज़रा, पर उसने अन्दर झाँककर नहीं देखा। और तो और हॉप की ताज़ी लतरों, रगड़े हुए साफ़ फ़र्श और अजवाइन के मुरझाए पौधों से भी वैसी ही भीनी-भीनी महक आती रही। यों अनुभव हुआ जैसे कि अभी कल सवेरे ही वह यहाँ से गया हो···पर, वास्तव में समय कितना बीत चुका था।···

उसने उमड़ती आह रोकी और जान-बूझकर सिगरेट रोल करने लगा। लेकिन, जाने क्यों उसके हाथ काँपने लगे और तम्बाकू घुटनों पर बिखर गई।

अक्सीनिया ने जल्दी-जल्दी मेज लगाई। लपसी को गरम करना ज़रूरी लगा तो भागकर शेड से लकड़ी लाई और हाँफते हुए स्टोव में आग जलाने लगी। चेहरा पीला नज़र आया। उसने मुंह से फूंक-फूंककर कोयले दहकाने की कोशिश की तो चिनगारियाँ इधर-उधर उड़ने लगीं। इसके बावजूद उसने गुड़ीमुड़ी बनकर बैठे, धुआँ उड़ाते ग्रिगोरी को बीच-बीच में भर-आँख देख ही लिया।

"कैसा, क्या रहा ? हर बात का फ़ैसला हो गया ?"

"सब-कुछ ठीक हो रहा ।"

"तब फिर तुम्हारी गिरफ़्तारी की बात दून्या के दिमाग में कहाँ से आ गई ? उसने तो मुझे बहुत ही डरा दिया ।"

ग्रिगोरी की भौंहें चढ़ गईं और उसने खीभ से हाथ की सिगरेट एक तरफ़ को फेंक दी ।

"मिखाइल उसके कान फूंकता रहा है । वही तो मेरे लिए सारी मुसीबत खड़ी कर रहा है ।"

अक्सीनिया मेज के पास गई तो ग्रिगोरी ने उसे अपनी तरफ़ खींचकर कस लिया और उसकी आँखों की तरफ़ देखते हुए बोला—"लेकिन, सच बात यह है कि मेरी हालत डाँवाडोल है । मैं वहाँ गया तो खुद भी मुझे लगा कि अब मैं लौटता नहीं । इससे तो इन्कार नहीं कि बगावत के ज़माने में एक डिविजन की कमान मेरे हाथों में थी और मैं स्क्वैड्रन-कमाण्डर था । मेरे जैसे लोग तो फ़ौरन से पेश्तर धर ही लिए जाते हैं ।"

"लेकिन, वहाँ के लोगों ने तुमसे क्या कहा ?"

"वहाँ मुझे एक फ़ार्म भरने को दिया गया और मुझे बताना पड़ा कि फ़ौज में मैंने क्या-क्या किया है । लेकिन, लिखने की आदत तो मुझे है नहीं···वैसे भी लिखने का काम मैंने कम ही किया है··· इसलिए दो घण्टे लगे मुझे सारा कुछ लिखने में । फिर दो फ़ौजी कमरे में आए और उन्होंने मुझसे बगावत के बारे में तरह-तरह के सवाल पूछे । लोग ठीक-ठाक ही लगे । मुझसे काफ़ी मोहब्बत से बातें करते रहे । उनमें से जरा सयानी उम्र के आदमी एक ने पूछा—'चाय पियोगे··· वैसे यह है कि काम सेक्रीन से चलाना पड़ेगा ।' मैंने सोचा—'क्या करना है मुझे चाय का ? यहाँ से सही-सलामत वापस लौट सकूँ, यही बहुत है ।···"

फिर जरा देर चुप रहने के बाद नफ़रत से यों बोला, जैसे कि किसी बाहरी से बातचीत कर रहा हो—"हिसाब-किताब साफ करते-करते मेरी तो आँखें छलछला आईं । मैंने खासा बुज़दिल पाया अपने को ।"

वह अपने-आप पर काफ़ी खीझा लगा कि व्येशेन्स्काया में न वह हिम्मत से काम ले सका और न अपने मन की दहशत निकाल सका। और गुस्सा उसे इस बात पर आया कि डर बे-बुनियाद साबित हुआ। उसकी सारी परेशानी बेहूदी और शर्मनाक मालूम हुई। वह तो सारे रास्ते यही सोचता रहा था। शायद इसीलिए उसने अपने-आप पर हँसते हुए अक्सीनिया से सब-कुछ बतलाया और ज़रा बढ़ा-चढ़ाकर बताया।

अक्सीनिया ने उसकी पूरी बात ध्यान से सुनी, फिर अपने हाथ धुलाए और स्टोव के पास गई। आग जलाते हुए पूछा—"आगे का क्या है अब ?"

"एक हफ़्ते के अन्दर-अन्दर वहाँ फिर जाकर हाजिर होना है मुझे।"

"तुम्हारा ख़याल है कि आख़िरकार वे तुम्हें गिरफ़्तार कर ही लेंगे ?"

"लगता तो ऐसा ही है कि देर-सबेर गिरफ़्तार कर ही लिया जाऊँगा।"

"उस हालत में हम लोग क्या करेंगे ? हम कैसे रहेंगे, ग्रीशा ?"

"कुछ समझ में नहीं आता···बाद में बात करेंगे इस मामले में···मुँह-हाथ धोने को थोड़ा पानी है ?"

ग्रिगोरी मुँह-हाथ धोने के बाद खाने को बैठा तो औरत की सुबह की खुशी लौट आई और सारे बाँध तोड़ चली। उसके मन का राजा पास ही नज़र आया कि न देखने में चोरी से काम लेने की ज़रूरत और न यह सोचने की मजबूरी कि दूसरे देख रहे हैं या नहीं देख रहे हैं। उसकी निगाहों ने सीधे-सीधे सब-कुछ साफ़-साफ़ बेहिचक कह दिया।

···हे भगवान् ! वह उसके लिए कितनी कलपी थी ! उसके मोटे, खुरदरे हाथों के लिए उसके शरीर का अंग-अंग किस तरह प्यासा हो उठा था !

सो, उसने खाने की किसी चीज़ को हाथ से छुआ तक नहीं। वह

आगे की ओर झुककर ग्रिगोरी का खाना देखती रही। उसकी धुंधलाई आँखें उसके चेहरे, ट्यूनिक के ऊँचे कॉलर से कसी सांवली गर्दन, चौड़े कंधों और मेज़ पर रखे हाथों पर प्यार बरसाती रही। वह उसके बदन से उमड़ती पसीने और तम्बाकू की खारी, चिर-परिचित गंध से अपनी साँसें सींचती रही। उसे लगा कि यह गंध बेशक़ीमती है और सिर्फ़ उसके तन-बदन से उभर सकती है। इस गंध के सहारे ही आँखों पर पट्टियाँ बाँधकर भी, हज़ार लोगों में वह अपने ग्रिगोरी को पहचान लेती। उसके चेहरे पर गुलाब खिल गए और दिल की धड़कनों की रफ़्तार तेज़ हो गई। पर, आज शाम को घर की मालकिन के रूप में अपने कर्त्तव्यों के पालन में वह सचमुच असमर्थ हो उठी। ग्रीशा के अलावा, आस-पास उसे और कुछ दीखा ही नहीं। लेकिन, ग्रीशा ने उसकी चिंता की अपेक्षा भी न की। खुद अपने लिए रोटी काटी, खुद स्टोव से नमकदानी खोज लाया और खुद अपनी तश्तरी में दुबारा लपसी उँडेल ली।

मुस्कराकर जैसे कि माफ़ी माँगते हुए बोला—"बिल्कुल कुत्ते की तरह भूखा हो रहा हूं। सुबह से कुछ नहीं खाया है।"

और, अब, इस वाक्य के बाद अकसीनिया को अपने घरेलू कर्त्तव्य का ध्यान आया। वह तेजी से उछलकर खड़ी हो गई—"उफ़ कैसा दिमाग हो गया है मेरा! मैं तुम्हें पकौड़ियाँ और पैनकेक देना तो बिल्कुल भूल ही गई! लो, थोड़ा-सा चूज़ा तो लो! और खाओ···जी भरकर खाओ, मेरे राजा! अभी लाई हर चीज़!"

लेकिन ग्रिगोरी एक-एक कर सारी चीजें इस तरह और इतनी देर तक खाता रहा, जैसे कि पूरे एक हफ़्ते से खाना न खाया हो। कहने-सुनने की जरूरत ही नहीं हुई। औरत बड़े धैर्य से राह देखती रही, पर आखिरकार और न रुका गया तो उसकी बग़ल में बैठ गई। उसने बाएँ हाथ से उसे अपनी ओर खींचा और दाएँ हाथ से कसीदेकारी वाला, साफ़ तौलिया लेकर अपने प्रियतम के चिकने होंठ और ठुड्डी पोंछ दी। इसके बाद साँस खींचकर उसने आँखें बंद कीं तो उनसे छोटी-छोटी नारंगी चिनगारियाँ फूटने लगीं। और फिर औरत ने

अपने होंठों से उसके होंठ भींच लिए।

मनुष्य के मन की प्रसन्नता सचमुच बहुत ही सहज होती है। जो भी हो, उस दिन शाम को अकसीनिया की खुशी का ठिकाना न रहा।

: ६ :

ग्रिगोरी को कोशेवोइ से मिलना बहुत ही खलने लगा, बर्दाश्त के बाहर हो गया। उसके मन ने कहा—मेरे और उसके ताल्लुक तो, वापसी के बाद, पहले दिन ही साफ़ हो गए। अब मिलने-बोलने-बतलाने को रहा ही क्या है? और, उससे फ़ायदा भी क्या है?

शायद मिखाइल को भी ग्रिगोरी से मिलना-जुलना उतना ही खला। उसने दो मज़दूर रख लिए और उन्होंने तड़-पड़ उसका छोटा घर ठीक-ठाक कर दिया। छत की अधसड़ी बल्लियों की जगह नई बल्लियाँ लगा दीं। गिरती दीवारें नए सिरे से बना दीं, नए चौखटे लगा दिए और दरवाज़े नए कर दिए।

व्येशेन्स्काया से लौटने के बाद ग्रिगोरी गाँव की क्रांतिकारी समिति में गया, सैनिक कमीसारियट द्वारा प्रमाणित अपने काग़ज़ात कोशेवोइ को दिये, मुँह से एक शब्द कहे बिना वापस आ गया, और काम की थोड़ी चीज-वस्त और बच्चों को लेकर अकसीनिया के यहाँ जाकर रहने को चलने लगा। दून्या ने उसे नए घर में जाते देखा तो फूट पड़ी और आग्रह से बोली—"मेरे दुलारे भैया, मुझसे नाराज़ न हो···मैंने तुम्हारी कोई बुराई नहीं की है।"

भाई ने बहन को धीरज बँधाया—"तुमसे नाराज़ होने की क्या बात है? जब तुम्हारा जी चाहे, वहाँ आना और आकर मिल जाना। तुम्हारे अपनों के नाम पर खानदान में एक मैं ही तो बाक़ी बचा हूँ। मुझे तुमसे हमेशा मोहब्बत रही है और आज भी है···लेकिन···तुम्हारा आदमी···वह कुछ और ही क़िस्म का इन्सान है। मेरे यहाँ से जाने में तुम्हारा और मेरा रिश्ता थोड़े ही टूट जाएगा!"

"हम दोनों जल्दी ही यहाँ से चले जाएँगे···तुम इस तरह बिगाड़

कर कहीं मत जाओ।"

"तुम यहाँ से भला क्यों जाओगी ?" ग्रिगोरी ने परेशानी से कहा—"बहार तक तो यहाँ रहो ही। तुम मेरे लिए कोई मुसीबत नहीं। फिर, अकसीनिया के यहाँ बहुत जगह है···मैं बच्चों के साथ वहाँ बहुत आराम से रह सकता हूँ।"

"तुम अकसीनिया से शादी करने जा रहे हो, ग्रीशा ?"

"अभी बहुत वक़्त पड़ा है इसके लिए।" ग्रिगोरी ने अनिश्चय से कहा। परन्तु दून्या जैसे फ़ैसला देती हुई बोली—"तुम उससे शादी कर लो, भैया···बड़ी अच्छी औरत है। माँ ज़िन्दा थीं तो कहती थीं कि एक वही औरत तुम्हारी बीवी बनने के लायक़ है। अपनी जिन्दगी के आखिरी दिनों में वे उसे बहुत मानने लगी थी। अकसर उससे मिलने भी जाती थीं।"

ग्रीशा मुस्कराते हुए बोला—"तुम तो जैसे मजबूर कर रही हो मुझे ! मगर, उससे न करूँगा तो और किससे शादी करूँगा मैं ? तुम्हारा खयाल है कि उस बूढ़ी अन्द्रोनीखा को बीवी बनाकर लाऊँगा ?

अन्द्रोनीखा गाँव में सबसे बड़ी उम्र की, चुड़ैल-सी औरत थी। सौ साल कभी के पूरे कर चुकी थी। सो, उसकी दोहरी कमर का खयाल आते ही दून्या ठठाकर हँस पड़ी।

"कैसी बातें करते हो, भैया ? मैं तो सिर्फ़ यों ही पूछ रही थी। फिर, मेरे पूछने की एक वजह यह भी थी कि तुम अपनी शादी का जिक्र कभी करते ही नहीं।"

"मैं चाहे जिसे बीवी बनाने का इरादा करूँ, पर शादी में तुम्हें जरूर बुलाऊँगा।" ग्रिगोरी ने हँसकर कहा, बहन की पीठ थपथपाई और मन का बोझ-सा उतारते हुए घर से चला आया।

सच तो यह कि उसे इसकी चिन्ता ही न थी कि वह कहाँ रहता है और कहाँ नहीं। वह तो सिर्फ़ चैन से रहता था। लेकिन, यह मन की शान्ति उसे ढूंढे से भी न मिल पा रही थी।

तो, अकसीनिया के यहाँ दो-चार दिन उसने इस तरह काहिली में गुज़ारे कि खुद अपने को ही काटने लगे। उसने उसके फार्म के एक-

दो कामों में हाथ लगाया भी, तो उसे कुछ भी कर सकना मुमकिन न लगा। किसी चीज में जैसे उसकी तबीयत जमी ही नहीं। अपने भविष्य का अनिश्चय उसे काटता रहा और उसकी ज़िन्दगी हराम करता रहा। एक क्षण को भी यह बात उसके दिमाग़ से न उतरी कि मैं कभी भी पकड़कर जेल में ठूंस दिया जा सकता हूँ और जेल में ठूंस दिया जाना ही क्या है, गोली से भी उड़ाया जा सकता हूँ।

ऐसे में अकसीनिया की जब भी आधी रात के वक़्त आँख खुली उसने उसे जागता पाया। वह हमेशा पीठ के बल लेटा, हाथ सिर के नीचे रखे, भावहीन, कड़ी निगाहों से अंधकार भेदता मिला। अकसीनिया को उसकी चिन्ता की पूरी जानकारी रही, पर उसकी सहायता कर सकने का रास्ता उसकी समझ में कुछ न आया। उसे पीड़ित देखकर वह सदा ही दुखी रही और उसके साथ जीने के मंसूबे तक उसे बुझते समझ पड़े। पर, उसने उससे पूछा कभी कुछ नहीं कि जो कुछ तय करना हो वह अपने आप करे।···सिर्फ़ एक दिन ऐसा हुआ कि उसकी आंख खुली तो उसने अपने पास ही सिगरेट जलती देखी। बोली—"ग्रीशा, तुम तो बिल्कुल सोते ही नहीं। कुछ दिनों के लिए गाँव छोड़ ही क्यों न दो! या कहो तो हम लोग भी चलें और कहीं छिप रहें?"

ग्रिगोरी ने अपने पैर कम्बल से अच्छी तरह ढँक लिए। जवाब दिया—"सोचूँगा···फिलहाल, तुम सो जाओ।"

'फिर, जब कुछ अमन-चैन हो जाएगा, हम यहाँ लौट आएंगे··· क्यों, क्या खयाल है?"

उसने फिर यों ही-सा जवाब दिया, जैसे कि इस विषय में कोई फ़ैसला किया ही न हो—"खैर देखो, क्या होता है! तुम सो रहो, अकसीनिया!" और, उसने उसके नंगे, रेशम की तरह ठंडे कंधे पर अपने होंठ जमा दिए।

परन्तु, फ़ैसला तो मन-ही-मन वह कर ही चुका था—'मैं अब दुबारा व्येशेन्स्काया न जाऊँगा। राजनीतिक विभाग का वह आदमी मेरा इन्तजार करता हो तो करे। बगावत की दास्तान मुझसे सुनते

वक़्त कैसे बैठा था मेज की दूसरी तरफ़ पसरकर···बरानकोट कंधों पर डाले···उँगलियाँ चटखाते और बनावटी जम्हाइयाँ लेते हुए ! खैर, अब फिर उसे वह दास्तान सुनने को मिलने से रही। कहानी खत्म हो चुकी। जिस दिन वहाँ पहुँचने की बात है, उस दिन मैं गाँव से ही ग़ायब हो जाऊँगा। ज़रूरी होगा तो लम्बे वक़्त तक गायब रहूँगा।'

पर, वह कहाँ जाएगा, यह बात उसके सामने साफ़ न थी। निकल भागने का इरादा उसने जरूर कर लिया था क्योंकि न तो वह मरना चाहता था और न जेल में बंद रहना चाहता था। परन्तु, अपने इस निश्चय का जिक्र उसने अकसीनिया से पहले से करना ठीक न समझा था।

सो, उसने सोचा—'इसके दिन मेरे साथ इने-गिने हैं। इनमें जहर घोलने से कोई फ़ायदा नहीं। वैसे भी दिन कोई खास हँसी-खुशी से नहीं गुजर रहे। अपने फ़ैसले का जिक्र तो मैं इससे आखिरी दिन करूँगा। इस वक्त मेरी बगल में चेहरा दुबकाए सो रही है तो सोने दो। इस बीच कई बार रह चुकी है कि तुम्हारी बाँह की छाँह में सोना मुझे बहुत ही अच्छा लगता है। तो ठीक फिलहाल सोने दो इसे। बेचारी···बेचारी···मेरे सीने से लगकर सोने की गिनती की घड़ियाँ बाकी रह गई हैं इसकी···इस तरह एकाध दिन बीते। क्रम-सा बँध गया। सवेरा होता तो ग्रिगोरी बच्चों से खेलता और फिर बेमतलब ही, गाँव में इधर-उधर चहलकदमी कर आने को निकल पड़ता। लोगों के साथ उठता-बैठता तो तबीयत जरा बहल जाती।

ऐसे ही ऐसे एक दिन प्रोखोर बोला—"सुनो, चलो निकिता मेलनीकोव के यहाँ चलें। थोड़ा पीना-पिलाना रहेगा, और साथ ही अपनी पुरानी रेजीमेंट के जवान कज्ज़ाकों से भी मुलाक़ात हो जाएगी।" पर, ग्रिगोरी ने साफ़ इन्कार कर दिया। वह गाँव वालों से बातें कर चुका था, और जानता था कि अनाज-वसूली को लेकर वे काफ़ी असन्तुष्ट हैं। वह यह भी समझता था कि पीना-पिलाना होगा तो यह बात भी छिड़ेगी। पर, वह नहीं चाहता था कि उस मामले में सन्देह उस पर किया जाए। वह तो परिचितों से मिलने पर राजनीतिक बातें

करने से यों भी बचता था। राजनीति उसके जीवन में काफ़ी रही थी, और उसकी ज़िन्दगी को काफ़ी हद तक चौपट कर चुकी थी।

उसकी तरफ़ से यह सावधानी वैसे भी आवश्यक थी, क्योंकि अनाज-वसूली कुछ खास हो नहीं पा रही थी और परिणामस्वरूप तीन बूढ़े, सिपाहियों के साथ, व्येशेन्स्काया रवाना कर दिए गए थे।···

अगले दिन सहकारी दूकान के पास उसकी भेंट, लाल सेना से अभी-अभी लौटे, तोपची ज़ाखार क्राम्स्कोव से सहसा ही हो गई। वह नशे में धुत, लड़खड़ाता नजर आया, परन्तु ग्रिगोरी के पास आते ही अपनी गंदी जैकेट के सभी बटन बन्द करते हुए, भर्राए गले से बोला—"हमेशा तन्दुरुस्त रहो, ग्रिगोरी-पैन्तेलेयेविच !"

"तुम्हें भी ऊपर वाला हमेशा सेहतमंद रखे!" ग्रिगोरी ने मोटे-तगड़े तोपची की जोरदार मुट्ठी हिलाई।

"मुझे पहचाना ?"

"क्यों, पहचानूंगा क्यों नहीं ?"

"याद है, पिछले साल तुम्हारी जान वोकोव्स्काया के पास हमारे तोपखाने ने कैसी बचाई थी ? हम न होते तो तुम्हारी घुड़सवार टुकड़ी को दांतों चने चबाने पड़ जाते। उस दिन लाल फौजियों को हमने किस तरह मसला। अव्वल दर्जे की तोप थी उस दिन मेरे हाथ में।" ज़ाखार ने अपने चौड़े सीने पर मुट्ठी बजाई।

ग्रिगोरी ने निगाह बचाकर चारों तरफ़ देखा तो ज़रा दूर पर ही खड़े कुछ लोग बातचीत सुनते दीखे। उसके होंठ फड़के। उसने क्रोध से दाँत पीसे और धीरे से बोला—"तुम नशे में हो। जाओ और सो रहो। बेकार गाल न बजाओ।"

"नहीं, मैं नशे में नहीं हूँ।" तोपची आपे से बाहर होते हुए चीखा—"शराब का नशा नहीं है···अगर कोई नशा है तो दुख-दर्द का है··· मुसीबतों का है। मैं घर वापस आया हूँ···मगर यहाँ की ज़िन्दगी भी कोई ज़िन्दगी है···दोज़ख है हर तरफ़···कज़्ज़ाक यहाँ रहते नहीं और जो रहते हैं, उनमें एक कज्जाक नहीं है। आधा अटन नाज उन्होंने एक अकेले मुझसे वसूल लिया है···क्या कहोगे इसे तुम ? बोया-काटा था

उन्होंने जो अनाज पर हक़ जमाने को आ गए ?"

उसने खून की तरह लाल-लाल आंखों से घूरकर देखा, लड़खड़ाते हुए ग्रिगोरी के हाथ पर जोर का हाथ मारा और वोदका की बू से उसका चेहरा भर दिया—"मगर, तुमने यह बिना धारियों का पतलून क्यों पहन रखा है ? किसान बन गए क्या ? यह हम नहीं होने देंगे। प्यारे ग्रिगोरी-पन्तेलेयेविच, एक बार फिर जमकर लोहा लेना होगा। पिछले साल की तरह हम फिर नारे लगाएंगे—'कम्यून मुर्दाबाद, मगर सोवियत हुकूमत जिन्दाबाद'।"

ग्रिगोरी ने उसे भद्दे ढंग से एक ओर को ढकेल दिया और बुद-बुदाया—"जा घर जा अपने, शराबी, सूअर कहीं का···समझता भी है कि क्या कह रहा है ?"

कामस्कोव ने एक हाथ झटके से आगे बढ़ाया, तम्बाकू के दागों से भरी अपनी उंगलियां फैलाईं और अटकते हुए बोला—"अगर···कोई··· ऐसी-वैसी ग़लत बात मुंह से निकल गई हो तो माफ़ कर दो। मुझे अफ-सोस है···मगर तुमसे पूरी ईमानदारी से बात कर रहा हूं···तुम्हें अपना कमांडर जानकर तुमसे कहना चाहता हूं कि एक बार तो फिर लोहा लेना ही पड़ेगा।"

ग्रिगोरी चुपचाप मुड़ा और चौक पार कर घर की ओर बढ़ दिया। पर, इस बेवक्त की बातचीत का असर उसके दिमाग पर शाम तक बना रहा। उसे नशे में धुत क़ामस्कोव की चीखों, हमदर्दी से भरी चुप्पी और मुस्कानों का ध्यान रह-रहकर आता रहा। उसने सोचा—'मुझे जल्दी-से-जल्दी निकल जाना चाहिए यहां से···इस तरह रहने से कोई फ़ायदा नहीं···'

उसे शनिवार को व्येशेन्स्काया पहुंचना था। यानी तीन दिन में अपना प्यारा गांव यों भी छोड़ देना था। पर, वह नौबत ही नहीं आ पाई। बृहस्पति की रात को वह सोने की तैयारी में रहा कि किसी ने बहुत ही जोर-जोर से दरवाज़ा खटखटाया। अकसीनिया बाहर निकलकर बरसाती में गई। पूछा—"कौन है ?" ग्रिगोरी ने सवाल तो सुना, पर जवाब नहीं सुना। इसलिए उत्सुक होकर पलंग से उठा और खिड़की

के पास पहुंचा। इसी समय गलियारे में सिटकनी बजी और सामने आई दून्या। ग्रिगोरी ने उसका पीला चेहरा देखते ही, बिना कुछ पूछे बेंच से अपनी टोपी और बरानकोट उठा लिया।

"भैया...!"

"क्या बात है ?" बरानकोट की बाँहों में हाथ डालते हुए उसने धीरे से पूछा।

दून्या तेज़ी से हांफती हुई, जल्दी-जल्दी बोली—"भैया, तुम यहाँ से फ़ौरन भाग जाओ। व्येशेन्स्काया से चार घुड़सवार आए हैं और सोने के कमरे में बैठे हैं...उन्होंने बात फुसफुसाकर की, मगर मैंने सभी कुछ सुन लिया...मिखाइल कहता है कि तुम्हें फ़ौरन ही गिरफ्तार कर लिया जाना चाहिए...वह उनसे तुम्हारे बारे में सभी-कुछ बतला रहा है...तुम निकल भागो यहाँ से।"

ग्रिगोरी उसके पास पहुंचा और उसके गले में हाथ डालकर उसने उसका गाल भरपूर स्नेह से चूमा। बोला—"शुक्रिया...दून्या, तुम लौट जाओ, वरना वे लोग समझ जाएँगे कि तुम यहाँ आई हो। जाओ ...अलविदा!" फिर अकसीनिया की ओर मुड़ा—"रोटी जल्दी करो... नहीं, पूरी रोटी न दो...सिर्फ़ बड़ा-सा टुकड़ा दे दो एक।"

इस तरह उसकी चैन की ज़िन्दगी ने उससे रुखसत ले ली...वैसे रही भी वह कै दिन थी!

ग्रिगोरी ने इस तरह तड़पड़, मगर आत्मविश्वास के साथ काम किया, जैसे कि लड़ाई के मैदान में हो। वह सोने के कमरे में आया और बच्चों को चूमने के बाद उसने अकसीनिया को बाँहों में भर लिया। बोला—"अच्छा फिलहाल अलविदा...तुम्हें मेरी खैर-खबर जल्दी ही मिल जाएगी...प्रोखोर बतला देगा तुम्हें। बच्चों की फिक्र रखना...दरवाज़ा अन्दर से बन्द कर लो। अगर वे लोग यहाँ आकर खटखटाएँ तो कहना कि ग्रीगोरी व्येशेन्स्काया गया है। अच्छा, मैं चला...बेकार दुखी न हो अकसीनिया!" और उसने उसे चूमा तो खारी आँसू उसके होंठों पर आकर टपाटप गिरने लगे।

पर, उसे धीरज बँधाने या उसके मायूस, टूटे हुए दिल की बातें

सुनने का समय उसके पास नहीं था। उसने अकसीनिया की बाँहें धीरे से अलग कीं, गलियारे में आया, आहट ली और फिर बाहर का दरवाजा पूरा खोला। दोन की तरफ़ से आती हवा के झोंके ने उसके मुँह पर तमाचा-सा मारा। ग्रिगोरी ने अँधेरे का आदी होने के लिए क्षण-भर को अपनी आँखें मूंद लीं।

ग्रिगोरी ने सड़क पर पैर बढ़ाए तो बर्फ नीचे चरमराई। अकसीनिया ने यह आवाज़ सुनी और हर क़दम के साथ उसके दिल की कचोट बढ़ती गई। फिर, कदमों की आवाज़ दूरी में खो गई तो उसने बेंतों वाला छोटा फाटक बंद कर दिया। हर तरफ सन्नाटा भायँ-भायँ करने लगा। सिर्फ़ हवा, दोन के पार के जंगल में सर्राटे भरती रही।

अकसीनिया ने हवा के झकोरों के बीच भी आहट लेने की कोशिश की, पर कुछ भी सुनाई न पड़ा। उसका शरीर एकदम बर्फ हो उठा। फिर, वह बवर्चीखाने में गई और उसने चिराग बुझा दिया।

: १० :

सोवियत सरकार की अनाज-वसूली की नीति कामयाब न हुई तो १६२० की बहार के बाद के दिनों में हुकूमत ने इस काम के लिए खास टुकड़ियाँ बना दीं। फलस्वरूप दोन की कज्जाक आबादी के बीच उथल-पुथल मच गई। ऊपरी दोन के शुमिलिन्स्काया, कजान्स्काया, मिगुलिन्स्काया, मेश्कोव्स्काया, व्येशेन्स्काया और येलान्स्काया जिलों के साथ-साथ दूसरी जगहों में भी छोटे-छोटे हथियारबन्द जत्थे बन गए। संगठन के मूल में रहा अमीर कज्जाकों का सरकारी अनाज-वसूली का विरोध और इस आग में घी का काम किया इस मामले में ज्यादा-से-ज्यादा सख्ती बरतने और कड़े-से-कड़े क़दम उठाने के सोवियत सरकार के फ़ैसले ने।

अधिकांश जत्थों में रहे पहले के सक्रिय श्वेत-गारद, स्थानीय कज्जाक शामिल हुए और इनमें से एक-एक जत्थे में पाँच-पाँच से बीस-बीस के बीच लोग रहे। यह रहे १६१८ और १६१६ में सजा देने वाली फ़ौजी टुकड़ियों के सदस्य ; सोवियत सरकार की सितम्बर की फ़ौजी

भरती से जान चुराने वाले पहले की दोन सेना के नॉन-कमीशन अफ़सर और जूनियर अफ़सर, और पिछले वर्ष के विद्रोह के समय फ़ौजी लूट-पाट कर और क़ैद लाल फ़ौजियों को फाँसी देकर नाम कमाने वाले क़ातिल। संक्षेप में यह कि सोवियत शासन में किसी भी तरह कहीं भी पैर न जमा सकने वाले तमाम लोग इस तरह एक सूत्र में बँधे।

ये जत्थे अलग-अलग गांवों में अनाज उगाहने वाली टुकड़ियों पर टूट पड़े। उगाही के केन्द्रों को जाने वाली अनाज से भरी गाड़ियाँ राह में उलट दीं और सोवियत शासन के प्रति वफ़ादार रहने वाले कम्यूनिस्टों और ग़ैर-पार्टी कज्ज़ाकों को मार डाला।

इन जत्थों को पूरी तरह बरबाद कर देने का काम व्येशेन्स्काया और बाज़की के गाँव में तैनात एक रक्षक बैटालियन को सौंपा गया। लेकिन जत्थे पूरे दोन प्रदेश में फैले रहे और इन्हें कुचलने की सारी कोशिश बेकार गई, क्योंकि सबसे बड़ी बात यह कि स्थानीय लोगों की हमदर्दी दंगाइयों के साथ रही। उन्होंने उनके खाने-पीने की व्यवस्था तो की ही, उन्हें लाल सेना की गतिविधि की सूचना बराबर दी और छिपाकर अधिकारियों के हाथों में पड़ने से बचाया। इसके अतिरिक्त एक समाजवादी क्रान्तिकारी जारशाही सेना का भूतपूर्व स्टाफ़-कैप्टन, बटेलियन कमाण्डर कापारीन क्षेत्र की क्रांति-विरोधी शक्तियों को दबाने के मामले में ज़रा भी उत्सुक न लगा और उसने उनके खिलाफ़ की जाने वाली हर कार्रवाई की कलाई मरोड़ी। केवल क्षेत्रीय पार्टी कमेटी के अध्यक्ष द्वारा विवश किए जाने पर ही कभी-कभी अपनी टुकड़ियाँ लेकर जहाँ-तहाँ गया। मगर जल्दी-से-जल्दी व्येशेन्स्काया लौट आया। बहाना बनाया कि व्येशेन्स्काया, उसके क्षेत्रीय संगठनों और गोदामों को अरक्षित छोड़कर न तो मैं अपनी फ़ौजी टुकड़ियाँ इधर-उधर भेज सकता हूँ, और न ग़फ़लत में आकर खतरे मोल ले सकता हूँ···।

सो कोई चार सौ संगीनों, और चौदह सौ मशीनगनों से लैस उस बटेलियन ने गढ़ की रक्षा की। लोग क़ैदियों की रक्षा करते, पानी लाते, जंगल के पेड़ काटते और अपने अनिवार्य कर्तव्य के रूप में स्याही के लिए माजूफल बटोरते रहे। बटेलियन ने अनगिनत क्षेत्रीय संगठनों और

दफ्तरों की स्याही और नकली की जरूरतें बड़ी ही कामयाबी ने पूरी कीं। पर इस बीच इलाके में बागी गर्दों की गिनती लगातार बढ़ती गई। मगर जब तक दिसम्बर का महीना नहीं आया और ऊपरी दोन-क्षेत्र की सीमा पर स्थित वोरोनेज प्रान्त के बोगुचार ज़िले में लोगों ने एकदम सिर नहीं उठा लिए, तब तक बटेलियन इमारती लकड़ी बदस्तूर काटती रही और माज़ूफल बाक़ायदा बटोरती रही, परन्तु फिर मजबूरी हो गई और यह सिलसिला एकदम टूट गया। दोन प्रान्त के फ़ौजी कमांडर के हुक्म से तीन फ़ौजी कम्पनियाँ और एक मशीनगन विभाग वाली इस बटेलियन को बग़ावत को कुचलने के लिए भेजा गया। उसके साथ ही इस काम में योग देने के लिए भेजी गई एक घुड़सवार टुकड़ी, अनाज-वसूली वाली बारहवीं रेजीमेंट की पहली बटेलियन और दो छोटी-छोटी स्थानीय रक्षा-टुकड़ियाँ···।

फिर सुखोई-दोनेत्स नामक गाँव के पास जो मुठभेड़ हुई तो याकोव फ़ोमीन की कमान में व्येशेन्स्काया की स्क्वैड्रन ने बाज़ू से बाग़ियों की क़तारों पर हमला किया, उन्हें घेरकर मार भगाया और पीछे खदेड़ते समय कोई एक सौ सत्तर लोगों को काटकर फेंक दिया। उनके अपने सिर्फ़ तीन आदमी मारे गए। कुछ इने-गिने लोगों को छोड़कर स्क्वैड्रन में सभी कज़्ज़ाक रहे और प्रायः ऊपरी दोन के इलाके के रहने वाले निकले। नतीजा यह हुआ कि इस लड़ाई में उन्होंने एक बार फिर सदियों पुरानी कज़्ज़ाक परम्पराओं के प्रति अपनी वफ़ादारी का परिचय दिया। लड़ाई खत्म होने पर साथ के दो कम्यूनिस्ट लाख विरोध करते रहे, मगर उन्होंने अपने पुराने बरानकोट और रूईदार जैकेटें उतार फेंकीं और भेड़ की शानदार खालें मुर्दा बाग़ियों के ऊपर से उतारकर खुद ओढ़ लीं।

विद्रोह के दब जाने के कुछ दिन बाद स्क्वैड्रन को कज़ान्स्काया बुला लिया गया। फ़ोमीन ने अपनी फ़ौजी ज़िम्मेदारियों से राहत पाने के बाद यहाँ जी-भर आराम और तबीयत-भर ऐश की। यह पूरी तरह बिगड़ा हुआ, औरतबाज़, बैठक बाज़ कज़्ज़ाक कई-कई रातों को बरा-बर र   ग़ायब हर दिन तड़का होने पर ही ठिकाने पर लौटा।

एक दिन शाम को उसके मुँह-लगे फ़ौजियों ने उसे चमाचम बूट पहने सड़क पर जाते देखा तो आपस में एक-दूसरे को आँखें मारते हुए बोले—"यानी हमारा स्टैलियन फिर घोड़ियों के पास चला···अब सुबह होने तक इसकी परछाईं तक मिलने से रही···।"

यों स्क्वैड्रन के कमीसार या राजनीतिक निर्देशक को तो कभी मालूम न हुआ; पर फ़ोमीन के यार-कज़्ज़ाकों ने जब भी उसे वोदका का लालच दिलाया और परियों से रोशन जश्न का जिक्र किया, वह बिना चूके उनमें से किसी के भी यहाँ पहुँच गया। होते-होते ये दावतें आदत बन गईं। जश्न जब-तब ही रखे जाने लगे और वह उनमें अक्सर ही जाने लगा। लेकिन जल्दी ही वह जीवट का कमाण्डर इस नई जिन्दगी से ऊब गया। उसका जी जैसे कि भर गया, और वह दिल बहलाने के सारे नए तरीके रहे-रहे भूलने लगा। ऐसे में न हर शाम उसने जूते चमचमाये और न हर दिन दाढ़ी बनाई। वह स्क्वैड्रन के अपने साथियों के यहाँ तो पीने-पिलाने के लिए भूले-भटके जाता रहा, पर बातचीत में हिस्सा लेना उसने सचमुच बन्द कर दिया।

फिर व्येशेन्स्काया से एक रिपोर्ट आई तो लगा कि ऐसी हालत में यह सब बकवास चलनी नहीं चाहिए। रिपोर्ट में दोन-चेका के राजनीतिक विभाग ने नपे तुले शब्दों में लिखा कि उस्त मेदवेदित्स्काया के पास के मिखाइलोवका में गढ़रक्षक बटेलियन ने वाकुलीन की कमान में विद्रोह कर दिया है।···वाकुलीन उसका रेजीमेंट का साथी और दोस्त था। कभी मिरोनोव की विद्रोही सेना में उन्होंने साथ काम किया था, और बुदयोन्नी की घुड़सवार-फ़ौज द्वारा उस सेना के घिर जाने पर उन्होंने हथियारों के अम्बार एक साथ लगाए थे। दोनों के बीच मित्रता के सम्बन्ध इस बीच बराबर रहे थे। उनमें कभी किसी तरह की कोई ढील न पड़ी थी और अभी थोड़े समय पहले सितम्बर के आरम्भ में वाकुलीन व्येशेन्स्काया आया था। उस समय भी उसने दाँत पीसकर कहा था—"आज तो इन्हीं कमीसारों की हुकूमत है। वे अनाज वसूल कर-करके इन किसानों की जिन्दगी चौपट कर रहे हैं और देश को बरबादी के रास्ते पर ढकेल रहे हैं।" और अपने अन्तरतम में अपने

मित्र की बात से सहमत होने पर भी फ़ोमीन ने विवेक और सावधानी से काम लिया था। यों भी वह बहुत चौकन्ना रहता था और न हड़बड़ी में कभी कुछ करता था, और न फ़ौरन ही अपने को किसी तरह बांधता था······।

परन्तु, बाकुलीन की बटेलियन के बग़ावत करने की खबर पाते ही उसकी स्वभावगत सावधानी ने उसका हाथ सहसा ही छोड़ दिया।···

एक दिन शाम को, स्क्वैड्रन के व्येशेन्स्काया के लिए रवाना होने से जरा पहले कितने ही कज्ज़ाक ट्रूप-कमांडर अलफ़ेरोव के यहां जमा हुए। वोदका घोड़े वाली बाल्टी में लबालब भर दी गई। मेज को चारों तरफ़ बैठे लोग बड़े जोश में बातें करने लगे। शराबियों की इस महफ़िल में फ़ोमीन बातें चुपचाप सुनता रहा और फिर उसने उसी तरह धीरे से बाल्टी की सारी वोदका नीचे लुढ़का दी। पर एक कज्ज़ाक ने सुखोई-दोनेत्स के पास के हमले की याद दिलाई तो विचारों में खोए-खोए ही अपनी मूंछ ऐंठता हुआ बोला—"माना कि हमने उक्रइनों को गाजर-मूली की तरह काटकर फेंक दिया, मगर कहीं ऐसा न हो कि अब हम इसी तरह काटकर फेंक दिए जाएं। मान लो कि व्येशेन्स्काया पहुंचने पर हमें लगे कि अनाज की वसूली करने वाली टुकड़ियां लोगों के घरों का दाना उंडेल कर ले गई हैं···तब बतलाओ कि क्या होगा? कज़ान्स्काया के लोगों को तो इन टुकड़ियों के ये लोग फूटी आंखों नहीं सुहाते। वे बुहारियों से झाड़-झाड़कर खत्तियां खाली करते रहे हैं।"

कमरे में सन्नाटा छा गया। फ़ोमीन ने अपने साथियों की ओर देखा और बरबस मुस्कराते हुए बोला—"मैं तो महज़ मज़ाक कर रहा था··· खयाल रखना और किसी के सामने बेकार मुंह न खोलना···पता नहीं हँसी की बात का मतलब कौन क्या लगा ले।···"

फिर, व्येशेन्स्काया लौटते समय अपनी घुड़सवार टुकड़ी के आधे ट्रूप के साथ वह अपने गांव, रुबेजनी की तरफ़ मुड़ आया। घर के फाटक के पास घोड़े से उतरा, रासें साथ के एक आदमी को थमाईं और अन्दर दाखिल हुआ। यहां उसने भावहीन ढंग से झुककर अपनी

पत्नी का अभिवादन किया, माँ का नमन किया। आदर से हाथ मिलाया और अपने बच्चों को सीने से लगाया। फिर स्टूल पर बैठते और अपनी तलवार, अपने घुटनों के बीच रखते हुए पूछा—"लेकिन पापा कहाँ है ?"

"चक्की पर गये हैं।" माँ ने जवाब दिया और बेटे को सिर से पैर तक कड़ी नज़रों से देखते हुए जैसे आदेश दिया—"टोपी उतार··· पापी कही का ! देवताओं के नीचे टोपी लगाकर भला कौन बैठता है ? उफ़ याकोव, मुझे लगता है कि तुम्हारा दिमाग़ एक-न-एक दिन खराब होकर ही रहेगा।"

फ़ोमीन ज़बरदस्ती मुस्कराया, टोपी उतारकर हाथ में ले ली, मगर बाहर के कपड़े उतारने की नहीं सोची।

माँ ने फिर पूछा—"कोट क्यों नहीं उतारते आखिर ?"

"मैं तो एकाध मिनट को तुम सबको देखने आया हूँ।···काम के मारे वैसे कभी साँस तो मिलती नहीं।"

"चलो-चलो, तुम्हारे काम का सबको पता है।"···बुढ़िया ने रुखाई से कहा और व्येशेन्सकाया में औरतों के साथ गुलछर्रे उड़ाने की ओर संकेत किया। अफ़वाहें पर लाकर रुब्रेजनी तक आ चुकी थीं।

समय से पहले ही बूढ़ी, चहरे से पीली और सबकी निगाहों में गिरी हुई वह औरत यानी फ़ोमीन की बीवी घबराकर सास की ओर देखने लगी और उठकर स्टोव के पास चली गई। फिर अपने पति को खुश करने के लिए, उसका अनुग्रह करने के लिए और अधिक नहीं तो एक बार ही उसकी कृपा-दृष्टि से कृतकृत्य होने के लिए उसने स्टोव के नीचे से कपड़े का टुकड़ाउठाया, आकर घुटनों के बल बैठी और उसके बूटों का कीचड़ साफ़ करने लगी।

"कैसे शानदार बूट हैं तुम्हारे, याकोव ? लेकिन गीली मिट्टी बहुत चिपकी हुई है···मैं अभी साफ़ कर चमकाए देती हूँ इन्हें।" बिना सिर ऊपर उठाए उसने बहुत ही धीरे से कहा और फ़ोमीन के चारों ओर, घुटनों के बल घूमने लगी।

फ़ोमीन को कभी इस औरत से बहुत प्यार था, पर इधर वर्षों से

वह उसके साथ न रहा था और उसके मन में उसके लिए एक घृणाभरी करुणा के अतिरिक्त और कुछ न था···न कोई प्यार···न कोई स्नेह···और न कोई ममता। पर औरत उसे उसी तरह प्यार करती और उसका हर गुनाह माफ़ करती गई थी। उसके देर-सबेर लौटने की आशा भी उसने अपने मन में कहीं-न-कहीं चुपचाप, सँजो रखी थी। फार्म का सारा कामकाज सम्हालना, बच्चों को पालना पोसना और सनकी सास को खुश रखने के लिए भरसक सभी कुछ करते रहना, इतने समय से उसकी ज़िन्दगी थी। खेतीबारी के काम का ज़्यादातर बोझ उसी के कन्धों पर था। इस तरह जीतोड़ मेहनत और दूसरे बच्चे की पैदाइश के बाद लग जाने वाली बीमारी ने उसे चूसकर रख दिया था। हर साल बदन की ताक़त चुसती गई थी, कमजोरी आती गई थी. चेहरे के गुलाब मुरझाते गए थे और बुढ़ापे ने उम्र से पहले ही गालों पर झुर्रियों का मकड़ी का जाला बुन दिया था। समझदार पर बीमार जानवरों की आँखों में नाचने वाली भयजन्य विनय की भावना उसकी आँखों में भी नजर आने लगी थी। पर तेजी से बुढ़ाने और हर दिन स्वास्थ्य के गिरते जाने का अनुभव खुद उसे जैसे कभी हुआ ही न था। उसके अन्तर में अब भी कहीं आशा लौ देती थी और साल-छः महीने बाद भी पति से मिलने पर उसके मन में उसके लिए इस तरह प्यार उमड़ता था कि निढाल हो उठती थी। मन-ही-मन उसकी सराहना करते थकती न थी।···

फ़ोमीन ने अपनी पत्नी की दोहरी कमर, उसके कन्धों की उभरी हुई शानदार हड्डियाँ और बूटों की गीली मिट्टी पोंछते हुए बड़े-बड़े मेहनती हाथ नजर गड़ाकर देखे। मन-ही-मन सोचा—'औरत हसीन है, इसमें दो रायें नहीं···यानी यह औरत है जिसके साथ कभी मैं रातें बिताता था। पर अब तो चेहरे से किस तरह उम्र टपकने लगी है। कैसे बुढ़िया लगने लगी!'

"चलो-चलो···काफ़ी है···हो गए साफ़ बूट, अभी फिर कीचड़ में सन जाएँगे।" पत्नी के हाथों से पैर छुड़ाते हुए उसने नाराज़ होकर कहा।

औरत ने बड़ी कोशिश से कमर सीधी की और उठकर खड़ी हो गई। चेहरे पर हलकी-हलकी लाली दौड़ गई। प्यार के साथ-साथ कुत्तों की-सी वफ़ादरी ने भी आंसू-भरी आंखों के कोनों से उसे झांककर देखा तो फ़ोमीन दूसरी तरफ़ को मुड़ गया और अपनी मां से बोला—"ख़ैर, और हालचाल क्या है···कैसा कामकाज चल रहा है ?"

"कोई नई बात नहीं है···सब बदस्तूर है।"

"अनाज वसूल करने वाली कोई टुकड़ी अभी तक यहां आई या नहीं ?"

"अभी कल ही तो यहां से नीज्ने-क्रोम्स्काया गई है।"

"हमारे यहां से भी अनाज वसूला उन लोगों ने ?"

"हां, यहां से भी लिया···कितना अनाज लिया उन लोगों ने दावीदका ?"

"दादा ने देखा था···वे ही जानते हैं। मेरे खयाल से दस बोरे ले गए हैं।" बच्चे ने जवाब दिया। चौदह साल के उस बच्चे की बड़ी नीली आंखें, बिल्कुल अपने पिता की आंखों-जैसी थीं।

"उ···फ़···।" फ़ोमीन उठा और अपने बेटे पर एक तेज़ नजर डालकर अपनी पेटी ठीक करने लगा। फिर एक सवाल मन में आते ही उसका चेहरा ज़र्द पड़ गया। पूछा—"तुमने उन लोगों से मेरा नाम नहीं लिया ? उन्हें पता तो लगता कि वे किसका अनाज उठाकर ले गए यहां से।"

बुढ़िया ने हाथ झटका और मुस्कराई तो उसकी आवाज़ में कुछ-कुछ हिक़ारत भी घुल उठी। बोली—"उन्होंने तुम्हारे नाम से कोई खास रोब नहीं खाया। उनका कमांडर बोला—'जिसके पास जितना फालतू होगा, उसे उतना सब देना पड़ेगा। इस मामले में कहीं किसी तरह का कोई फ़र्क नहीं किया जाएगा। चाहे फ़ोमीन हो चाहे खुद क्षेत्रीय अध्यक्ष, अनाज फालतू होगा तो हम लेंगे। हम किसी को नहीं जानते।'···और इसके बाद वे लोग अनाज की खत्तियां खखोरने लगे।"

"इन लोगों से भी समझूंगा मां···मैं इन लोगों से भी समझ लूंगा।" फ़ोमीन ने भारी आवाज़ में कहा और घर के लोगों से जल्दी-जल्दी

विदा लेकर चलता बना।

घर के इस दौरे के बाद वह बड़ी ही सतर्कता से अपनी स्क्वैड्रन के लोगों के मन की थाह लगाने लगा। जल्दी ही उसे पूरा विश्वास हो गया कि अधिकांश लोग अनाज-वसूली की नीति से असन्तुष्ट हैं। उनकी पत्नियाँ और दूर-पास के नाते-रिश्तेदार आ-आकर अनाज वसूली करने वाली टुकड़ियों की कहानियाँ उन्हें सुनाते थे कि कैसे कहाँ-कहाँ उन्होंने तलाशी ली और बोआई और खाने-भर को छोड़कर बाकी सारा अनाज ढो ले गए।···

फलतः रक्षक-बटेलियन की जो बैठक बाजकी में जनवरी के अन्त में हुई, उसमें क्षेत्रीय सैनिक कमीसार शाखालेव का बोलना लोगों ने असम्भव कर दिया। क्षण-क्षण पर बात काटी और बीच-बीच में चीख-चीखकर कहा—"अनाज-वसूली करने वाली टुकड़ियाँ वापस बुला लो।"

"अब तो हमारा अनाज लेना बन्द कर लो।"

"अनाज-वसूली करने वाले कमीसारों का नाम मिटे।"

बदले में रक्षक टुकड़ी के लाल सैनिकों ने चिल्लाकर कहा—"क्रान्ति-विरोधी हो तुम सब।"

"इन सूअर के बच्चों के गिरोह तोड़ो और इन्हें अलग-अलग रेजीमेंटों में भेजो।"

बैठक तूफ़ानी रही और काफ़ी देर तक चली। रक्षक-बटेलियन के इने-गिने कम्यूनिस्टों में से एक चिन्तित होते हुए फ़ोमीन से बोला—"इस मौके पर अपनी तरफ़ से तुम कुछ कहो, कॉमरेड-फ़ोमीन! जरा देखो कि तुम्हारी स्क्वैड्रन के लोग क्या तमाशा कर रहे हैं।"

फ़ोमीन होंठों-ही-होंठों मुस्कराया—"लेकिन मैं तो पार्टी का सदस्य नहीं हूँ···मेरी बात ध्यान से सुनेगा कोई?"

इस तरह फ़ोमीन ने अपना मौन नहीं तोड़ा और बैठक समाप्त होने से बहुत पहले ही वहाँ से उठकर चला गया। उसके साथ ही बटेलियन-कमाण्डर कापारिन भी उठ गया। फिर व्येशेन्स्काया के रास्ते में नई परिस्थितियों की चर्चा चली तो दोनों को अपने विचार बहुत-कुछ एक

से लगे । एक सप्ताह बाद फ़ोमीन के ठिकाने पर बातें करते हुए कापारिन ने साफ़-साफ़ कहा—"इस वक्त हालत यह है कि 'करो या मरो।' यानी या तो हमें फ़ौरन ही कोई-न-कोई क़दम उठाना चाहिए या कभी कोई क़दम न उठाने का फ़ैसला कर सब्र से बैठ रहना चाहिए। याकोव येफ़िमोविच, मौक़ा मिला है तो हमें इससे फ़ायदा उठाना ही चाहिए। बहुत ही सही वक्त है। कज़्ज़ाक हमारा पूरा साथ देंगे। पूरे इलाक़े में तुम्हारा बड़ा मान है। इससे मुआफ़िक़ हवा दुबारा कभी न मिलेगी। आख़िर चुप क्यों हो? कुछ तो सोचो।"

"मुझे सोचना क्या है?" फ़ोमीन ने नीची आँखों ही कापारिन की ओर देखते हुए कहा—"सवाल तो तय हो ही चुका है···अब तो एक नक़्शा-भर बनाना है कि सब-कुछ ठीक-ठाक ढंग से चले और कोई गड़बड़ी कहीं न हो···बस, तो, आओ, उस नक़्शे के बारे में ही बातें कर लें।"

परन्तु, फ़ोमीन और कापारिन की इस दोस्ती ने संदेह उपजाया और यह अनदेखी न रही। बटेलियन के कम्यूनिस्टों ने पूरी निगरानी का इन्तज़ाम कर दिया और अपने मन के संदेह की बात राजनीतिक विभाग के अध्यक्ष अर्तेमयेव और सैनिक कमीसार शाखायेव को पहुँचा दी।

अर्तेमयेव ने हँसते हुए कहा—"एक बार दहशत खानेवाला दो बार शरमाता है। कापारिन बुज़दिल है। तुम्हारा ख़याल है कि वह पक्के इरादे के साथ कोई बड़ा क़दम उठा सकता है। जहाँ तक फ़ोमीन का सवाल है, उस पर निगाह रखी जाएगी और काफ़ी जमकर रखी जाएगी। वैसे बिल्कुल मुमकिन नहीं लगता कि वह ख़ुद कुछ करने की हिम्मत करेगा।" फिर जैसे अपनी ओर से फ़ैसला दिया—"यह सब तुम्हारे दिमाग़ का ख़लल है।"

पर, षड्यन्त्रकारियों के बीच समझौता पहले ही हो गया, इसलिए फ़ोमीन पर अब निगाह रखना बेकार ही रहा। उनके बीच निश्चित हुआ कि विद्रोह बारह मार्च को आठ बजे सवेरे आरम्भ किया जाए। उस दिन फ़ोमीन अपने स्क्वैड्रन को लड़ाई के पूरे साज-सामान के

साथ सुबह के अभ्यास के लिए बाहर ले जाए और इसी समय व्येशेन्स्काया के बाहरी इलाके में ठहरी मशीनगन वाली टुकड़ी पर अचानक ही हमला बोल दिया जाए, मशीनगनें छीन ली जाएँ और इसके बाद क्षेत्रीय संगठनों के मांजे जाने के काम में रक्षक-सेना की भरपूर सहायता की जाए।

पर, कापारिन का मन दुविधा में पड़ा कि शायद पूरा बटेलियन मेरा साथ दे। और, उसने मन का यह चोर फ़ोमीन के सामने रख पूरी बात ध्यान से सुनने के बाद कहा—"मशीनगनें हाथ में आ जाएँ, फिर तो दो मिनट में तुम्हारी बटेलियन के पूरे-के-पूरे लोगों का मुंह बंद हो जाएगा।"

इस बीच फ़ोमीन और कापारिन पर बहुत ही कड़ी निगाह रखी जाने लगी। पर, उसका नतीजा कुछ न निकला। वे आपस में बहुत ही कम मिले। जब मिले तो फ़ौजी काम से ही मिले। हाँ, फ़रवरी के अंत में जरूर एक गश्तीटुकड़ी ने एक रात उन दोनों को एक खास सड़क पर, एक साथ देखा। उस समय फ़ोमीन अपने घोड़े की लगाम थामे आगे-आगे चलता नजर आया और कापारिन उसकी बग़ल में क़दम बढ़ाता दीखा।

गश्ती टुकड़ी ने अपनी रिपोर्ट देते हुए कहा—"हमने ललकारा तो कापारिन ने जवाब में कहा—'दोस्त!' और फ़ोमीन को अपने क्वार्टर में ले गया। फ़ोमीन ने वहाँ अपना घोड़ा बरसाती के जंगले से बांधा। क्वार्टर में कोई दीया-बत्ती नहीं की गई। तड़के चार बजे फ़ोमीन बाहर निकला, घोड़े पर सवार हुआ और अपने क्वार्टर की तरफ़ रवाना हो गया। इससे ज्यादा हमसे कुछ नहीं कह सकते।"

क्षेत्रीय सैनिक सेनापति शाखायेव ने कोड-भाषा में एक तार दोन-प्रदेश के फ़ौजी कमांडर के नाम भेजा और उसमें फ़ोमीन और कापारिन की संदिग्ध स्थिति के बारे में सब-कुछ लिखा। दो-चार दिनों में ही तार का जवाब आ गया कि दोनों को उनकी जगहों से हटा दिया जाए और गिरफ़्तार कर लिया जाए।'

फिर, क्षेत्रीय पार्टी ब्यूरो की एक बैठक बुलाई गई। बैठक में तय

किया गया कि फ़ोमीन को एक संदेश भेजा जाए। संदेश में कहा जाए कि क्षेत्रीय सैनिक कमीसारियट का हुक्म है कि तुम नोवोचेरकास्सक लौट जाओ. फ़ौजी-कमांडर के सामने हाजिर हो, और यहाँ अपनी बटेलियन अपने सहायक ओवचिन्निकोव को सौंप दो।

साथ ही आशंका हुई कि फ़ोमीन की गिरफ़्तारी की खबर पाते ही कहीं वह बटेलियन बग़ावत न कर दे। इसलिए तय पाया कि कजान्स्काया में हथियारबंद जत्थे के आ धमकने का बहाना बनाकर उसे उसी दिन वहाँ भेज दिया जाए और अगले दिन षड्यन्त्रकारियों को गिरफ़्तार कर लिया जाए।

रक्षक-सेना की दूसरी कम्पनी के कमांडर त्कार्शेंको नाम के कम्यूनिस्ट को आदेश दिया गया कि अपनी बटेलियन के कम्यूनिस्टों और प्लैटून कमांडरों को बग़ावत की हालत से आगाह कर दो और अपनी कम्पनी के साथ-साथ, मशीनगनवाली टुकड़ी को भी लड़ाई के लिए पूरी तरह तैयार रखो।

फ़ोमीन को अगले दिन सवेरे वापसी का हुक्म मिल गया। उसने बहुत ही शांत और सधे हुए स्वर में कहा—"ठीक है…तुम स्क्वैड्रन सम्हालो, ओवचिन्निकोव ! मैं नोवोचेरकास्सक चला। स्क्वैड्रन का हिसाब-किताब देखना चाहते हो ?"

ओवचिन्नकोव ग़ैरपार्टी-ट्रुप कमांडर था। उसे न कभी चेतावनी मिली थी और न उस पर किसी तरह का कोई संदेह किया गया था। वह स्क्वैड्रन के काग़ज़ात में डूब गया।

फ़ोमीन को मौक़ा मिला तो उसने फ़ौरन ही कापारिन के नाम एक पत्र-लिखा—"हम आज ही पूरी कार्रवाई करेंगे। मुझे वापस बुला लिया गया है। तैयार रहना।" और बरसाती में उसने चिट अपने अर्दली को देते हुए फुसफुसाकर कहा—"इसे अपने गाल में दबा लो। घोड़े पर सवार होकर क़दम चाल से कापारिन के पास जाओ, यह काग़ज उसे दो और फ़ौरन ही लौट आओ ! हाँ, खयाल रखना, अगर सड़क पर तुम्हें कहीं कोई रोके-टोके तो इसे साफ़ निगल जाना।"

उधर कज़ान्स्काया जिला-केन्द्र ले जाने का हुक्म मिला तो

ग्रोवचिन्निकोव ने मार्च की तैयारी की और स्क्वैड्रन को गिरजे के चौक में परेड कराना शुरू किया। फ़ोमीन अपने घोड़े पर सवार होकर उसके पास पहुँचा। बोला—"मैं अपनी स्क्वैड्रन के लोगों से अलविदा तो कह लूँ ?"

"ज़रूर···ज़रूर, मगर जल्दी करो···हमें रोको नहीं।"

और फिर अपना उछलता हुआ घोड़ा स्क्वैड्रन के सामने रोकते हुए फ़ोमीन ने लोगों की तरफ़ देखकर, चिल्लाकर कहा—"साथियो, तुम सब मुझे जानते हो। तुम जानते हो कि मैंने किस चीज़ के लिए हमेशा कशमकश की है। मैं हमेशा तुम लोगों के साथ रहा हूँ। लेकिन, आज मैं तुम्हारे साथ नहीं रह सकता, क्योंकि कज्ज़ाक लूटे जा रहे हैं, और अनाज उगाने वालों से उनका अनाज लूटा जा रहा है। यही वजह है कि तुम्हारी कमान मेरे हाथों से ले ली गई है, और मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मेरे मामले में लोगों के इरादे क्या हैं! बस, तो, इसीलिए तुमसे अलविदा कहना चाहता हूँ मैं···"

एक क्षण तक स्क्वैड्रन के लोग बीच-बीच में चिल्लाए-चीखे, मगर फ़ोमीन रक़ाबों पर तनकर खड़ा हो गया और आवाज़ ऊँची करते हुए और तेज़ी से बोला—"अगर तुम इस लूटपाट और डाकेज़नी से अपने को छुटकारा दिलाना चाहते हो तो अनाज-वसूली करने वाली टुकड़ियों को बाहर निकाल दो और शाखायेव जैसे कमीसारों को मार डालो··· वे दोन तक चढ़ आए हैं···"

उसके अंतिम शब्द कोलाहल में डूब गए। वह एक क्षण तक रुका और फिर उसने ऊँची आवाज़ में कमान दी—"दाएँ···तीन-तीन की कतार में···क्विक-मार्च !"

स्क्वैड्रन ने कमान का पूरा पालन किया। ग्रोवचिन्निकोव सारा-कुछ देखकर अवाक् रह गया। घोड़ा दौड़ाता हुआ फ़ोमीन के पास पहुँचा और पूछने लगा—"जा कहाँ रहे हो, साथी फ़ोमीन ?"

फ़ोमीन ने, गर्दन मोड़े बिना, उसी तरह उत्तर दिया—"कुछ नहीं, गिरजे के चारों ओर ज़रा घुड़सवारी करने···"

पिछले कुछ क्षणों में जो कुछ सामने आया, उसका महत्त्व

ओवचिन्निकोव ने केवल अब समझा, और अपना घोड़ा कतार से बाहर निकाल लिया। उसके बाद बाहर आया राजनीतिक निर्देशक, उप-कमीसार और एक और आदमी। परन्तु उनके कोई दो सौ क़दम निकल जाने के बाद उन पर फ़ोमीन की नज़र पड़ी। अपना घोड़ा मोड़ते हुए चीखा—"ओवचिन्निकोव…हाल्ट !" परन्तु वे चारों अपने घोड़ों को हवा की रफ़्तार से दौड़ा चले। बर्फ़ घोड़ों की टापों के नीचे से उछल-उछलकर चारों तरफ़ उड़ने लगी। फ़ोमीन ने हुक्म दिया—"आर्म्स ! ओवचिन्निकोव को गिरफ़्तार कर लो ! पहला ट्रूप…पीछा करे इन लोगों का !"

और, गोलियाँ बरसने लगीं। पहले ट्रूप के सोलह लोग उन तीनों का पीछा कर चले। इस बीच फ़ोमीन ने बाक़ी स्क्वैड्रन को दो हिस्सों में बाँट दिया। पहले हिस्से को, तीसरे ट्रूप के कमांडर चुमाकोव के अधीन मशीनगनवाली टुकड़ी को निहत्था करने के लिए भेज दिया, और दूसरे हिस्सों को लेकर खुद गांव के बाहरी इलाक़ों की ओर चल पड़ा। वहाँ रक्षा-सेना की कम्पनी ने बड़े-बड़े अस्तबलों में पड़ाव डाल रखा था।

पहली विद्रोही टोली गोलियों से हवा को छलनी करती और तलवारें लपलपाती खास सड़क पर घोड़े दौड़ा चली। रास्ते में लाल-सेना की मशीनगनवाली टुकड़ी के लोग अपने-अपने क्वार्टरों से दौड़ते हुए निकले तो उसने उनमें से चार को तलवार के घाट उतार दिया।

मशीनगनवाली टुकड़ी के लोग जिस घर में ठहरे हुए थे, वह बाक़ी गांव से ज़रा अलग-थलग था। लेकिन, उसमें और बाक़ी घरों में सिर्फ़ कोई दो सौ क़दमों का फ़ासला था।

सो, मशीनगनों ने कज्ज़ाकों को बिल्कुल पास से भूनना शुरू किया, तो वे फ़ौरन ही वापस हो लिए। पर, उनमें से तीन पास-से-पास की गली में भी मुड़ न पाए कि वे गोलियों के शिकार हो गए और अपनी काठियों से नीचे आ रहे।

मशीनगनचालकों पर एकदम हमला कर उन्हें हथिया लेने की पूरी कोशिश बेकार गई और विद्रोहियों ने इस दिशा में दुबारा प्रयत्न

नहीं किया। टोली का कमांडर अपने फ़ौजियों को छानी के नीचे-नीचे ले चला और, घोड़े से बिना उतरे, पत्थर के शेड से चालाकी से झांकते हुए बोला—"उन्होंने दो को और ले डाला।" उसने अपनी फर की टोपी से पसीने से तर भौंहें पोंछीं और दूसरों की तरफ़ मुड़ा—"जवानो, पीछे लौट चलो···आए और फ़ोमीन अकेला मशीन-गनों को हथियाए···बर्फ़ पर के लोगों को पड़ा छोड़ आए हैं हम—तीन को न ? खैर, अब वह खुद जोर लगाकर देखे जरा !"

गांव के पूर्वी बाहरी इलाके में गोलियां चलनी शुरू हुईं तो कम्पनी का कमांडर त्काचेंको भड़भड़ाकर बाहर निकला और रास्ते में कपड़े पहनते हुए बैरकों की तरफ़ भागा। वहां कोई तीस लाल सैनिक पहले से ही एक कतार में खड़े दीखे। उन्होंने उसका अभिवादन किया और साथ ही सवालों की बौछार कर दी—"गोलियां कौन चला रहा है ?"

"आखिर मामला क्या है ?"

पर कमांडर ने सवालों के जवाब दिए बिना, बैरकों से उमड़ते लाल फ़ौजियों को भी कतार में खड़ा होने का हुक्म दिया। बेरकों में दौड़कर आ गये। क्षेत्रीय प्रशासन के कई कम्यूनिस्ट कार्यकर्त्ता भी उन्हीं में शामिल हो गये। राइफ़लें गांव में जहां-तहां गोलियां बरसाने लगीं। इसी समय बाहरी इलाके में, पश्चिम की ओर कहीं हथबम का धड़ाका हुआ। कोई पचास घुड़सवारों को, नंगी तलवारें चमकाते हुए, बैरकों की ओर आता देखकर त्काचेंको ने इत्मीनान से अपनी पिस्तौल केस से बाहर निकाली। कतारों में सन्नाटा छा गया और हुक्म पाने के पहले ही फ़ौजियों ने अपनी राइफ़लें तैयार कर लीं।

"लेकिन ये तो अपने ही आदमी हैं। देखो न, वह रहा हमारी अपनी बटेलियन का कमांडर कॉमरेड कापारिन।" एक लाल सैनिक चिल्लाकर बोला।

घुड़सवार, जैसे कि कमान पर, गली के किनारे-किनारे बढ़े और घोड़ों की गर्दनों से सटते हुए पूरी रफ़्तार से बैरकों की ओर उठ चले।

"देखो, ये लोग पास न आने पाएँ।"-त्काचेंको ने पूरी आवाज से

चीखकर कहा।

और इसी समय जो गोलियाँ चलीं तो उसकी आवाज़ डूब गई। दूसरी तरफ़ घुड़सवार अभी सौ क़दम दूर ही रहे कि उनमें से चार हड़बड़ाकर काठियों से नीचे आ रहे और बाक़ी तितर-बितर होकर लौट गए। गोलियाँ उनका पीछा करती रहीं। एक घुड़सवार हल्का जख्म खाने पर भी काठी से खिसककर नीचे आ गया। पर रासें उसने हाथों से नहीं छोड़ी और सरपट दौड़ते घोड़े के साथ कोई सौ गज़ तक घसिटता चला गया। पर इसके बाद उसने अपने पैर जमाए। रक़ाब और काठी का पिछला हिस्सा कसकर थामा, देखते-देखते फिर घोड़े पर सवार हुआ। उसे झटके से मोड़ा और सबसे पास की गली में गायब हो गया।

पहली टुकड़ी के लोगों को ओवचिन्निकोव की तलाश में कोई कामयाबी नहीं मिली और वे गाँव लौट आए। कमीसार शाखायेव को ढूंढ़ने का भी कोई नतीजा नहीं निकला। वह न वीरान फ़ौजी कमी-सारियट में मिला और न अपने क्वार्टर में। बात यह हुई कि गोलियों की आवाज़ सुनते ही वह दौड़ता हुआ दोन के किनारे पहुँचा। जमे हुए पानी की बर्फ़ पारकर जंगल में घुँसा। वहाँ से वाज़की गाँव पहुँचा और अगले दिन व्येशेन्स्काया से पचास वर्स्ट से ज्यादा दूर उस्त-खोपरस्काया के ज़िले में जा जमा।

अग्रगण्य क्षेत्रीय अधिकारियों में से अधिकांश समय रहते बच निकले और उनकी खोज फिर खतरे से खाली न लगी, क्योंकि इस बीच मशीनगन वाली टुकड़ी के लाल फौजी हल्की मशीनगनें लेकर व्येशेन्स्काया के मध्य भाग की ओर बढ़ गए और उन्होंने खास चौक को जाने वाले सभी रास्ते घेर लिए।

दूसरी ओर स्क्वैड्रन के लोग तलाश का काम छोड़कर दोन के किनारे आए और फिर घोड़ों पर सवार होकर गिरजे के चौक में पहुँचे। यहीं से उन्होंने ओवचिन्निकोव का पीछा करना शुरू किया था।

होते-होते जल्दी ही सभी लोग वहाँ जमा हो गए। फोमीन ने उनमें से कुछ की गारद बिठा दी और बाकी लोगों को क्वार्टरों में

जाने का हुक्म दिया, लेकिन हिदायत दी कि घोड़े बराबर कसे खड़े रहें।

फिर फ़ोमीन, कापारिन और ट्रुप कमांडर आपस में सलाह-मश-वरा करने के लिए गाँव के बाहर के एक मकान में जमा हुए।

"सारा खेल चौपट हो गया।" कापारिन ने बेंच पर ढहते हुए, निराशा से कहा।

"हाँ, बात तो ऐसी ही है···ज़िला-केन्द्र हम हथिया नहीं सके, तो अब यहाँ कदम जमाए रखना मुश्किल ही होगा।" फोमीन ने शांत भाव से कहा।

चुमाकोव ने प्रस्ताव सामने रखा। "पूरे इलाके में घेरा डाल दिया जाए, याकोव-येफ़िमोविच ! अब सहमने से कोई फ़ायदा नहीं। आखिर मौत आने के पहले तो हम मरेंगे नहीं। हमें कज़्ज़ाकों को उभारना चाहिए और इस तरह जिला-केन्द्र को हथियाना चाहिए।"

फ़ोमीन ने मुंह से बिना कुछ कहे उसे घूरकर देखा और कापारिन की ओर मुड़ा। "अब दिमाग खराब हो रहा है, सरकार ! यह रोना-धोना खत्म कीजिए। जैसा फन्दा गले में भेड़ के मारने पर पड़ेगा, वैसा ही मैमने को हलालने पर पड़ेगा। जब एक कदम साथ-साथ उठाया है, तो अब आखिर तक साथ-साथ चलिए। क्या खयाल है ? अब यह बतलाइए कि हम व्येशेन्स्काया से पीछे हटें या एक बार फिर कोशिश करें ?"

चुमाकोव तड़ से बोला—"नहीं, अब दूसरे लोग करें कोशिश। मैं मशीनगन का सामना करने नहीं जा रहा। यह बेकार का खिल-वाड़ है। इससे आना-जाना कुछ नहीं।"

"मैं तुमसे तो पूछ नहीं रहा। तुम चुप रहो।" फोमीन ने चुमा-कोव पर नजर डाली, मगर उसने अपनी आँखें दूसरी तरफ कर लीं।

कापारिन एक क्षण बाद बोला—"हाँ, यह बात तो ठीक है··· दुबारा कोशिश करने का कोई मतलब नहीं होता। लाल फौजियों के पास हमसे बेहतर हथियार हैं। उनके पास चौदह मशीनगनें हैं जबकि हमारे पास मशीनगन एक नहीं है···लोग भी उनके पास ज्यादा हैं···

हमें तो पीछे हटकर और कज्जाकों को उभारकर बगावत की तैयारी करनी चाहिए। यानी, जब तक लाल फौजों को कुमुक मिलेगी, तब तक पूरे इलाके मे आग फैल जाएगी। अब तो एक तिनके का जो आख़िरी सहारा है, वह यही है।"

काफी देर तक चुप रहने के बाद फ़ोमीन बोला—"ख़ैर, तो हमें इसी तिनके का सहारा लेना होगा···ट्रुप कमांडरो, तुम फ़ौरन जुट जाओ, साज-सामान देखो और पता लगाओ कि हर आदमी के पास कितने कितने कारतूस हैं। साथ ही सख्त हुक्म दे दो कि एक भी कारतूस बरबाद न किया जाए। इसके बाद जो भी यह हुक्म तोड़ेगा उसकी गरदन मैं खुद अपनी तलवार से उड़ा दूँगा। लोगों से कह दो यह!" फिर एक क्षण तक चुप रहने के बाद, उसने मेज़ पर ज़ोर से मुट्ठी मारी। "उफ़···कम्बख्त मशीनगनें! काश कि हमने उनमें से चार भी हथिया ली होतीं ··अब क्या, अब तो वे लोग हमें यहाँ से खदेड़ बाहर करेंगे ही। अच्छा, तो यह बातचीत अब खत्म···अगर हम हाँक-कर बाहर ही न कर दिये गए तो रात व्येशेन्स्काया में बिताएँगे और कल तड़के इलाके में आगे कदम बढ़ाएँगे···"

और रात चैन से बीत गई। व्येशेन्स्काया के एक सिरे पर विद्रोही स्क्वैड्रन के लोग रहे और दूसरे छोर पर कम्यूनिस्टों और नवागन्तुक जवान कम्यूनिस्टों वाली रक्षक-सेना के सदस्य। यानी दोनों पक्षों के बीच मकानों के सिर्फ दो सिलसिले रहे, मगर रात में हमला करने की हिम्मत दो में से एक की भी न हुई।

अगले दिन सवेरे बागियों ने बिना लड़े गाँव छोड़ दिया, और दक्षिण-पूर्व की ओर बढ़ चले।

: ११ :

ग्रिगोरी अपना गाँव छोड़ने के बाद, तीन सप्ताह तक, येलान्स्काया-जिले के वेर्ख़ने-क्रिव्स्कोइ नाम के गाँव में अपनी रेजीमेंट के एक जान-पहचानी कज्ज़ाक के यहाँ रहा। इसके बाद वह गोरबातोव्स्की नामक गाँव में चला गया, और एक महीने से अधिक समय तक अकसीनिया के दूर के एक रिश्तेदार के साथ टिका रहा।

यहाँ वह दिनों-दिन घर के अन्दर बंद रहा। सिर्फ़ रात को बाहर निकलकर अहाते में आया। लेकिन यह जिन्दगी क़ैद की जिन्दगी से बेहतर किसी मानी में न लगी। निकम्मेपन के कारण मन गिरा-गिरा-सा बराबर रहा। इसके अलावा वह निरन्तर अपने बच्चों और अकसीनिया की ओर खिंचता रहा।

अकसर ही रात को नींद न आती तो वह बरानकोट पहनता और तातारस्की लौटने का पक्का इरादा करता। परन्तु फिर विचार बदल जाता। वह अपना कोट उतार देता और कराह के साथ चेहरा तकिए में गड़ाकर, पलंग पर पड़ रहता। जिन्दगी ज़रूरत से ज्यादा इम्तहान लेती लगती। मेज़बान उसके साथ बड़ी हमदर्दी दिखलाता, लेकिन ऐसे मेहमान को हमेशा अपने यहाँ बनाए रखना उसे बस के बाहर की बात लगती।

एक दिन रात को ग्रिगोरी खाना खाने के बाद अपने कमरे में गया तो मालकिन की नफ़रत से भरी पतली आवाज़ उसके कानों में पड़ी—"यह खटराग आखिर खत्म कब तक होगा ?"

"कैसा खटराग ? क्या कह रही हो तुम ?" मालिक ने भारी आवाज में पूछा।

"मेरा मतलब है कि इस अपाहिज अजगर से आखिर हमें कब छुटकारा मिलेगा ?"

"ज़बान बंद कर !"

"मैं बिल्कुल ज़बान बंद नहीं करूँगी···अनाज घर में इतना थोड़ा है कि बिल्ली भी देखे तो रो दे। मगर, तुम हो कि इस पर भी इस कुबड़े को घर में डाले हुए हो···दिन-पर-दिन ठुँसाते जा रहे हो, शैतान के बच्चे को ! मैं पूछती हूँ कि यह कब तक चलेगा ? और, मान लो कि सोवियत को जानकारी हो जाए इस बात की ? वे लोग हमारे सिर धड़ से अलग कर देंगे और हमारे बच्चे यतीम होकर रह जाएँगे।"

"मुँह बंद कर, अवदोत्या !"

"मैं किसी तरह मानूँगी नहीं। हमारे आगे बच्चे हैं, और हमें

उनकी भी तो बात सोचनी है। कितना अनाज है हमारे घर में जो तुम इस काहिल का पेट भाटते जा रहे हो ? वह कौन है तुम्हारा ? भाई है, भतीजा है, साला है, बहनोई है, क्या है ? तुम्हारा कोई पास-नज़दीक का नाते-रिश्तेदार तक तो है नहीं। मगर इसके बाद भी, उसके खाने-पीने का बोझ तुमने अपने ऊपर उठा रखा है…उफ़…गंजे, शैतान की आंत…तू खुद मुँह बंद कर, और मुझे मत डरा…नहीं तो कल चली जाऊँगी सोवियत में और बतला आऊँगी कि घर में कैसा गुलाब उगा रखा है तूने !"

अगले दिन मालिक ग्रिगोरी के कमरे में आया और फ़र्श पर नज़र गड़ाए-ही-गड़ाए बोला—"ग्रिगोरी-पैन्तेलेयेविच, तुम जो चाहो सो सोचो मेरे बारे में, मगर अब तुम्हारा यहां टिका रहना मुमकिन नहीं है। मैं तुम्हारा बड़ा लिहाज करता हूं। वैसे तुम्हारे पापा थे तो मैं उनको भी जानता था और उनकी भी बड़ी इज्ज़त करता था। लेकिन अब तुम्हें यहाँ रखना और खाना खिलाना मुश्किल है। अब तो डर यह भी है कि कहीं लाल अफ़सरों को तुम्हारे यहाँ रहने का पता न चल जाए ! मेरे सामने पूरा खानदान है और मैं तुम्हारे नाम पर अपना सिर देने को तैयार नहीं हूँ। ईसा के लिए मुझे माफ़ करो…और जैसे भी हो मेरी जान छोड़ो !"

"ठीक !" ग्रिगोरी ने रुखाई से कहा—"यहां पनाह देने और खिलाने-पिलाने के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया ! हर चीज़ के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया ! यह तो मैं समझ गया हूं कि मैं तुम्हारे लिए एक बोझ हूँ, मगर अब सवाल यह है कि मैं जाऊँ तो जाऊँ कहाँ ? मेरे तो सभी रास्ते बन्द हैं।"

"यह तो तुम्हारे अपने तय करने की बात है…"

"अच्छा, मैं आज चला जाऊँगा यहां से…हर चीज़ के लिए तुम्हें बहुत-बहुत शुक्रिया अर्तामोन-वैसिलयेविच…"

"शुक्रिया की ऐसी कोई ज़रूरत नहीं।"

"तुम्हारी इस मेहरबानी को मैं कभी नहीं भूलूंगा। शायद मैं भी किसी दिन तुम्हारे कुछ काम आ सकूं।"

मेज़बान द्रवित हो उठा और उसने स्नेह से ग्रिगोरी की पीठ थपथपाई। बोला—"इसकी क्या बात है? जहाँ तक मेरा सवाल है, तुम दो महीने और भी यहाँ रहते तो भी मेरे लिए कोई ख़ास फ़र्क़ नहीं पड़ता। लेकिन, झगड़ा तो सारा मेरी बीवी का है। वह नहीं चाहती कि तुम यहाँ रहो। हर दिन मेरी जान को पड़ी रहती है। भाड़ में जाए वह! ग्रिगोरी-पैन्तेलेयेविच, हम दोनों कज्जाक हैं, और हम दोनों सोवियत हुकूमत के खिलाफ़ हैं। मैं तुम्हारी भरसक मदद करूँगा। तुम आज यागोदनी चले जाओ। मेरे बेटे का ससुर वहाँ रहता है। मेरा नाम लेना। वह तुम्हें अपने बेटे की तरह रखेगा। और जब तक हो सके खिलाए-पिलाएगा। हम लोग बाद में आपस में हिसाब-किताब कर लेंगे। यह सब हो जाएगा, मगर इस वक्त तो तुम यहाँ से चले ही जाओ। मैं यहाँ तुम्हें रख नहीं सकता। बीवी हाथ धोकर मेरे पीछे पड़ी है। दूसरे कहीं सोवियत वालों को पता लग गया तो और मुसीबत समझो! तुम जब तक यहाँ रहे, मज़े में रहे, यह भी कुछ कम नहीं है, ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच! मुझे अपने सिर का भी तो कुछ-न-कुछ खयाल है।"

ग्रिगोरी काफ़ी रात गए वहाँ से निकला। पर, वह गाँव के ऊपर की पहाड़ी की हवाचक्की तक भी न पहुँच पाया कि तीन घुड़सवार जैसे धरती फोड़कर उग आए और उसे टोकते हुए बोले—"रुक··· ओ···सूअर के बच्चे···रुक! कौन है तू?"

ग्रिगोरी का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा। पर, वह कुछ कहे बिना, ठहर गया। भागना पागलपन होता। दो ग़ज़ आगे जाना भी मुश्किल हो जाता। सड़क के पास न कहीं कोई छेद-सूराख था और न कहीं कोई झाड़-झंखाड़ था। यहाँ से वहाँ तक फैला सिर्फ़ खाली मैदान।

"कम्यूनिस्ट हो? लौटो···मौत ले जाए तुम्हें! चलो···क्विक मार्च!"

इतने में ही एक दूसरा आदमी ग्रिगोरी के पास अपना घोड़ा लाया और हुक्म देते हुए बोला—"हाथ ऊपर करो···हाथ जेबों से

निकालो—निकालो, नहीं तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े करके रख दूंगा अभी।"

ग्रिगोरी ने हाथ चुपचाप जेबों से निकाल लिए। पर, उसकी समझ में अब तक यह नहीं आया कि आखिर यह हुआ क्या, और ये लोग हैं कौन? फिर भी उसने पूछा—"कहाँ चलना है?"

"गाँव चलो···लौटो।"

एक घुड़सवार उसके साथ गाँव तक गया। बाक़ी दो चरागाह के पास अलग हो गए और बड़ी सड़क पर अपने घोड़े बढ़ा चले।

ग्रिगोरी बिना कुछ बोले, क़दम बढ़ाता रहा। पर, सड़क के पास पहुँचने पर उसने अपनी रफ़्तार धीमी कर ली और पूछा—"सुनो, तुम आखिर हो कौन?"

"चलो···चलो···बेकार बात न करो···हाथ पीछे रखो···सुनते हो?"

ग्रिगोरी ने चुपचाप आदेश का पालन किया, लेकिन थोड़ी देर बाद फिर पूछा—"यह सब तो ठीक है, मगर तुम हो कौन?"

"रूसी सनातनी[1] समझते हो मुझे?"

"मैं तो खुद सनातनी नहीं हूँ।"

"ठीक, तो खुशी मनाओ कि तुम सनातनी नहीं हो।"

"लेकिन, तुम मुझे कहाँ लिये चल रहे हो?"

"कमांडर के पास···चल···चल···साँप कहीं का···नहीं तो, अभी मैं···"

उस आदमी ने ग्रिगोरी के बदन में तलवार की नोक चुभोई। नोक के तेज ठंडे इस्पात ने बरानकोट के कॉलर और फ़र की टोपी के बीच के गर्दन के खुले हिस्से में डंक-सा मारा। क्षण-भर को उसके अंतर में डर बिजली की तरह कौंध उठा और इसके बाद उसे क्रोध आया। मगर, क्या कर सकता था उसका यह क्रोध!

उसने अपना कॉलर उलटा और पहरेदार को भर-निगाह देखने

---

१. ऑरथॉडॉक्स।

के लिए आधा मुड़ते हुए, दांत पीसकर बोला—"बेवकूफ़ी का काम मत करो, समझे ! नहीं तो तलवार देखते-देखते तुम्हारे उस हाथ से इस हाथ में आ जाएगी···"

"बढ़···बढ़···आगे बढ़···गधा कहीं का ! बेकार ज़बान मत चला, वरना अभी इस दुनिया से दूसरी दुनिया में भेज दूंगा···हाथ पीछे कर !"

ग्रिगोरी कुछ क़दम मौन चला और फिर बोला—"मैं वैसे भी चुप हूँ···तुम्हें गाली-गलोज करने की ज़रूरत नहीं । कैसे सूअर हो तुम !"

"पीछे मुड़कर मत देख ।"

"मैं पीछे मुड़कर नहीं देख रहा ।"

"मुंह बन्द कर और क़दम और तेज़ कर !"

"तुम दौड़ाना चाहते हो मुझे ?" ग्रिगोरी ने अपनी बरौनियों से बर्फ़ झाड़ते हुए पूछा ।

साथ के सवार ने मुंह से कुछ न कहकर, केवल घोड़े को सनकारा। जानवर के पसीने और रात की नमी से तर, सीने ने ग्रिगोरी को पीछे से धक्का दिया ।

"इतनी ज्यादती मत करो !" ग्रिगोरी ने घोड़े के सीने को हाथ से पीछे ठेलते हुए कहा । घुड़सवार ने अपनी तलवार ग्रिगोरी के सिर के पास लाते हुए शांत स्वर में कहा—"तू आगे बढ़ता चल···कुतिया का बच्चा···दोगला कहीं का !···बेकार की बातें न बना, वरना मंज़िल तक पहुंचने की भी नौबत न आएगी ! इस तरह के कामों में मेरा हाथ बहुत ही साफ़ है ! अब होंठ नाम को भी न खुलें···समझा न !"

फिर, गाँव तक दोनों चुपचाप गये और पहला अहाता सामने आते ही सवार घोड़े की रास खींचते हुए बोला—"फाटक में दाखिल हो···अन्दर चलो ।"

ग्रिगोरी खुले फाटक से अन्दर आया तो अहाते के बीचों-बीच उसे एक लम्बा-चौड़ा, टीन की छतवाला मकान नज़र आया । शेड के नीचे

घोड़े हीसते और मुह चलाते दीखे। वरसाती के आसपास छः हथियार-बंद लोग चहलक़दमी करते मिले। साथ के सवार ने घोड़े से उतरते हुए तलवार से हवा काटी और बोला—"गलियारे से होकर सीधे चले जाओ…पहली मंजिल पर बायें से! चलो, आगे बढ़ो…इधर-उधर निगाहें दौड़ाने की जरूरत नहीं। कितनी बार कहनी पड़ेगी तुमसे एक ही बात ?"

ग्रिगोरी धीरे-धीरे वरसाती की सीढ़ियों पर चढ़ा तो घुड़सवार-फ़ौजियों वाला लम्बा ओवरकोट डाटे और लाल सेनावाली टोपी लगाए एक आदमी जंगले के पास खड़ा दिखलाई पड़ा। बोला, "किसी को पकड़कर लाए हो ?"

"हाँ।" ग्रिगोरी के साथ आए सवार ने परिचित भर्राई हुई आवाज़ में कहा—"हवाचक्की के पास पकड़ा।"

"कौन है…पार्टी के ग्रुप का सेक्रेटरी है ?"

"शैतान ही जाने कि कौन है! कोई सूअर का बच्चा होगा। लेकिन, जल्दी ही सब-कुछ मालूम हो जाएगा इसके बारे में।"

'या तो यह गोरे गारदों का गिरोह है या व्येशेन्स्काया की चेका के लोग चालाकी से काम ले रहे हैं, और गोरे गारद होने का बहाना बना रहे हैं। जो भी हो, मैं तो बुरी तरह फँस गया।' ग्रिगोरी ने जान-बूझकर पीछे रहते हुए सोचा और कुछ याद करने की कोशिश करने लगा।

फिर, दरवाजा खोलते ही सबसे पहले उसके सामने पड़ा फ़ोमीन। वह एक मेज़ के पास बैठा था और उसे चारों ओर से घेरे बैठे थे फ़ौजी वर्दियाँ पहने कितने ही लोग। ग्रिगोरी इनमें से किसी को भी न जानता था। बरानकोट और भेड़ की खालें पलंग पर उल्टी-सीधी पड़ी थीं, कारबाइन-बन्दूकें बेंच के पास जमा थीं और खुद बेंच पर तलवारों, कारतूस के झोलों और घुड़सवारी के थैलों का अम्बार लगा था। लोगों, बरानकोटों और आसपास की तमाम चीज़ों से घोड़े के पसीने की तेज बू उड़ रही थी।

ग्रिगोरी ने अपनी फर की टोपी उतारी और शान्त भाव से

अभिवादन किया।

"अरे, मेलेखोव ! सच ही कहा है कि स्तेपी का मैदान भले ही लम्बा-चौड़ा हो, मगर रास्ता सँकरा है। किस्मत ने हम लोगों को फिर एक-दूसरे से मिला दिया। मगर तुम आ कहाँ से रहे हो ? कोट उतारो, आओ और बैठो इधर।" फ़ोमीन उठा और हाथ आगे करते हुए ग्रिगोरी की ओर बढ़ा—"इस जगह के आसपास भला क्या करते घूम रहे थे तुम ?"

"मैं काम से गाँव आया था।"

"किस काम से आए थे ? बड़ा लम्बा रास्ता तय किया तुमने।" फ़ोमीन ने ग्रिगोरी की ओर प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखा—"ठीक-ठीक बतला दो···यहीं कहीं छिपे हुए थे···यही न ?"

"हाँ, सच बात तो यही है।" ग्रिगोरी ने बरबस मुस्कराते हुए जवाब दिया।

"लेकिन हमारे आदमियों के हाथ कहाँ आ गए तुम ?"

"गाँव के बाहर।"

"जा कहाँ रहे थे ?"

"बिल्कुल नाक की सीध में।"

फोमीन ने फिर ग्रिगोरी की आँखों की तरफ़ ग़ौर से देखा और मुस्कराया—"मैं तुम्हारे मन की बात समझ सकता हूँ। तुम्हारा खयाल है कि तुम हमारे हाथ आ गए हो, तो अब हम तुम्हें व्येशेन्स्काया ले जाएँगे। नहीं मेरे भाई, अपना रास्ता वह नहीं है···तुम्हें डरने की जरूरत नहीं···हम सोवियत हुकूमत की नौकरी को सलाम कर चुके··· हमारी उसके साथ पटी ही नहीं।"

"तलाक़ दे दिया हमने।" स्टोव के पास धुआँ उड़ाते, सयानी उम्र के एक कज्जाक ने गहरी आवाज़ में कहा। इस पर मेज के पास बैठे एक दूसरे व्यक्ति ने हँसी का ठहाका लगाया।

"तुमने मेरे बारे में कुछ सुना नहीं ?" फ़ोमीन ने ग्रिगोरी से पूछा।

"नहीं।"

"खैर, तो आओ बैठो···बातें होंगी···देखो पातगोभी का शोरबा और गोश्त लाओ मेहमानों के लिए।"

ग्रिगोरी ने फ़ोमीन की किसी भी बात पर विश्वास न किया और उसका चेहरा उसी तरह पीला पड़ा रहा। उसने नपे-तुले ढंग से कोट उतारा और मेज़ के पास आकर बैठ गया। उसका जी सिगरेट पीने को हुआ, लेकिन ख़याल आया कि पिछले दो दिन से पास कुछ भी तो नहीं है।

"सिगरेट-विगरेट है कुछ ?" उसने फ़ोमीन से पूछा।

फ़ोमीन ने अनुग्रह-सा करते हुए अपना चमड़े का सिगरेट-केस उसकी तरफ़ बढ़ाया। पर सिगरेट लेते समय ग्रिगोरी का हाथ काँपता देखा तो होंठों-ही-होंठों फिर मुस्कराया—"हमने सोवियत हुकूमत के खिलाफ सिर उठाया है। हम आम जनता के साथ हैं और अनाज-वसूली और कमीसारों से हमारा तीन और छः का रिश्ता है। एक ज़माने तक उन्होंने हमें बेवकूफ़ बनाया है, लेकिन अब हम उन्हें बेवकूफ़ बनाएँगे। समझे, मेलेखोव ?"

ग्रिगोरी ने कुछ नहीं कहा। वह सिगरेट के लम्बे-लम्बे कश-भर लेता रहा। होते-होते उसका सिर चक्कर खाने लगा। और जी मचलाने लगा। उसने केवल अब समझा कि पिछले एक महीने से कायदे का खाना न खाने के कारण उसे कितनी कमज़ोरी आ गई है। सो, सिगरेट बुझाकर वह खाने पर टूट पड़ा। इस बीच फ़ोमीन ने उसे पूरी कहानी संक्षेप में सुनाई और बताया कि कैसे विद्रोह हुआ और कैसे इस सिलसिले में पूरे इलाक़े में जहाँ-तहाँ मारे-मारे फिरना पड़ा। यही नहीं, इस भटकन को उसने हमलों का नाम दिया। ग्रिगोरी सब-कुछ चुपचाप सुनता रहा और रोटी और मैमने का कच्चा-पक्का गोश्त बिना चबाए ही गले के नीचे उतारता रहा।

"मगर तुम तो दूसरे लोगों के यहाँ मेहमान क्या रहे, दुबले हो गए।" फ़ोमीन ने सहृदयता से हँसते हुए कहा।

ग्रिगोरी ने हिचकियाँ लेते हुए, झटके से कहा—"कोई सास के घर तो रहा नहीं।"

"यह तो नजर ही आ रहा है···फ़िलहाल, खाओ और जी भर खाओ···हमारे यहाँ कोताही किसी चीज की नहीं।"

"शुक्रिया···अब तो एक सिगरेट और चाहिए।" ग्रिगोरी ने अपनी ओर बढ़ती सिगरेट ली, बेंच पर रखे बर्तन के पास पहुंचा और लकड़ी के मग में थोड़ा-सा पानी उँडेला। पानी बर्फ़ की तरह ठंडा और चखने में थोड़ा-थोड़ा खारी लगा। सो, इस तरह छककर खाने के बाद उसने दो मग पानी पिया और फिर सिगरेट का धुआँ उड़ाने लगा।

फ़ोमीन ग्रिगोरी की बग़ल में आ बैठा और अपनी कहानी जारी रखते हुए बोला—"कज्जाक भी कुछ साथ दे नहीं रहे हैं···पिछले साल की बग़ावत ने इन्हें हिलाकर रख दिया है···इस पर भी कुछ वालंटियर हमारे साथ हैं···कोई चालीस आदमी आ गये हैं···लेकिन हमारा मक़सद इससे पूरा नहीं होता। हमारा मक़सद सचमुच तब पूरा होगा, जब पूरे-का-पूरा इलाक़ा सीना तानकर खड़ा हो जाएगा और खोपर और उस्त-मेदवेदित्सा के इलाक़े भी हमारी मदद को आ जाएँगे। इस वक्त क्या, उस वक्त हम सोवियत हुकूमत से दो-दो बातें करेंगे।"

इस बीच मेज के पास बैठे दूसरे लोग आपस में जोर-जोर से बातें करते रहे और ग्रिगोरी ने फ़ोमीन की बातें सुनते-सुनते उनमें से एक-एक को ग़ौर से देखा। उसने फ़ोमीन का यक़ीन अब भी न किया और हर बात के पीछे चालाकी देखते हुए अपनी जबान बराबर बंद रखी। लेकिन, फिर चुप्पी साधे रहना मुमकिन न रहा। उसने आती हुई ओघाई को टालने की कोशिश करते हुए पूछा—"कॉमरेड-फ़ोमीन, अगर तुम हर बात संजीदगी से कह रहे हो तो जरा यह बतलाओ कि तुम चाहते क्या हो? नई लड़ाई शुरू करना चाहते हो?"

"इसका जिक्र तो मैं तुमसे कर ही चुका।"

"यानी तुम सरकार बदलना चाहते हो?"

"हाँ।"

"और, इस सरकार की जगह किस तरह की सरकार चाहते हो तुम?"

"यही अपनी कज्जाक सरकार।"

"यानी अतामानों की सरकार ?"

"ख़ैर, अतामानों की इस चर्चा को फ़िलहाल एक किनारे रखो, इस पर बातचीत फिर होगी, हम तो वह सरकार चाहेंगे जो आम जनता खुद बनाए। लेकिन यह मसला इस वक्त सामने नहीं है। साथ ही मैं राजनीति की गहराइयों में जाना चाहता भी नहीं। मेरा काम तो है कम्युनिस्टों और कमीसारों की जड़ खोदना। सरकार के बारे में तुम्हें सब-कुछ मेरा चीफ़-ऑफ़-स्टाफ़ कापारिन बताएगा। इस मामले में मैं उसके दिमाग़ से चलता हूँ। आदमी वह अक्लमन्द और पढ़ा-लिखा है।" फिर फ़ोमीन, ग्रिगोरी की तरफ झुककर फुसफुसाते हुए बोला—"कापारिन पहले ज़ारशाही फ़ौज में स्टाफ़ कैप्टन रहा है। होशियार आदमी है। इस वक्त दूसरे कमरे में सो रहा है। तबीयत शायद ठीक नहीं है। बात यह है कि इस तरह की ज़िन्दगी की आदत तो है नहीं। बड़ी-बड़ी लम्बी मंज़िलें मारी हैं हमने।"

इसी समय अचानक ही बरसाती में कदमों की आहट हुई। चीख-पुकार सुनाई पड़ी। कराह के साथ एक घुटी हुई आवाज़ कानों में पड़ी—"दो तो इसे खाने-भर को।" इसके साथ ही मेज़ के पास की बातचीत खत्म हो गई और फ़ोमीन उत्सुकता से दरवाज़े की ओर देखने लगा। दरवाज़ा भड़ाक से खुला तो भाप का एक सफ़ेद बादल-सा कमरे में उमड़ा। छींटदार खाकी जैकेट और भूरे फ़ेल्ट-बूट पहने एक लम्बे क़द के, नंगे-सिर आदमी की पीठ पर किसी ने पीछे से भरपूर हाथ जमाया तो वह कमरे के अन्दर लड़खड़ाता चला आया और उसका कन्धा स्टोव के बाहर निकले हुए हिस्से से ज़ोर से जा टकराया। बरसाती में खुशी से भरी आवाज़ें गूंजीं। फिर दरवाज़ा बन्द कर दिया गया।

"एक आदमी और रहा यह।"

फ़ोमीन उठा और उसने अपनी ट्यूनिकवाली पेटी ठीक की। इसके बाद अधिकार के साथ पूछा—"कौन हो तुम ?"

छींटदार जैकेटवाले आदमी ने, हाँफते हुए, अपने बालों पर हाथ फेरा, कन्धे झटके और दर्द से ऐंठ उठा। उसकी रीढ़ की हड्डी पर

चोट की गई थी···शायद राइफ़ल के कुन्दे से।

"बोल नहीं सकते ? मुंह में जबान नहीं है ? कौन हो तुम ?" मैंने पूछा।

"लाल फ़ौजी हूं।"

"किस यूनिट के ?"

"बारहवीं अनाज-वसूली-रेजीमेंट का।"

"क्या बात है ! यह रहा शिकार।" मेज के पास बैठे एक आदमी ने मुस्कराकर फतवा-सा दिया।

फ़ोमीन ने अपने सवाल जारी रखे—"यहां क्या कर रहे थे तुम ?"

"हमें बचाव का इन्तजाम करना था···इसलिए भेजे गए थे।"

"ठीक। तुम्हारे साथ के लोग गांव में थे···कितने थे गिनती में ?"

"चौदह।"

"बाक़ी लोग कहां हैं ?"

लाल सैनिक ने इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया। मुंह खोलने में मुश्किल होने लगी। आवाज में पानी के बुलबुले-से फूटे और मुंह के बाएं कोने से खून की पतली धार बहकर ठुड्डी पर आने लगी। उसने हाथ से होंठ पोंछे, हथेली देखी और पतलून पर रगड़ ली।

"यह हैं, तुम्हारे सूअर···।" उसने खून निगलते हुए पानी के बीच से उभरते-से स्वर में कहा—"मेरे फेफड़े जख़मी कर दिए हैं।"

"कोई बात नहीं···डरो मत, हम तुम्हारा इलाज करवा देंगे।" एक मोटे कज़्ज़ाक ने मेज़ के पास से उठते और दूसरों की तरफ़ देखकर आंख मारते हुए व्यंग्य से कहा।

"तुम्हारे बाक़ी साथी कहां हैं ?" फ़ोमीन ने फिर पूछा।

"वे लोग मालगाड़ी के साथ येलान्स्काया चले गये हैं।'

"और तुम कहां के हो ? किस ज़िले में पैदाइश हुई तुम्हारी ?"

उस आदमी ने क्रोध से जलती आंखों से फ़ोमीन की तरफ़ देखा, खून का थक्का फ़र्श पर थूका और साफ़, बजती हुई भारी आवाज़ में बोला—'प्सकोव-इलाक़े का हूं मैं।"

"प्सकोव, मास्को···हम तुम्हारी क़िस्म के लोगों को खूब जानते

हैं।" फ़ोमीन ने हँसी उड़ाते हुए कहा—"दूसरों का अनाज छीनने के लिए काफ़ी दूर आना पड़ा तुम्हें, साहबज़ादे! तो अब, क्या चाहते हो? क्या करें हम तुम्हारे साथ?"

"जाने दीजिए मुझे। छोड़ दीजिए।"

"साहबजादे, आदमी तुम भोले-भाले हो।···शायद इसे छोड़ ही देना चाहिए ···क्यों, क्या राय है, दोस्तो?" मूँछों-ही-मूँछों मुस्कराते हुए फ़ोमीन मेज़ के पास बैठे लोगों की तरफ़ मुड़ा।

ग्रिगोरी ने भूरे, धूप में सँवराए शान्त चेहरों पर समझदारी की मुस्कान देखी। एक आदमी बोला—"दो महीने यह हमारे साथ रहे··· हमारा साथ दे···इसके बाद हम इसे इसकी बीवी के पास रवाना कर देंगे।"

फ़ोमीन ने भी अपनी मुस्कान छिपाने का असफल प्रयत्न करते हुए कहा—"हमारा साथ देना पसन्द करोगे तुम? हम तुम्हें घोड़ा देंगे, काठी देंगे और फेल्ट-बूटों की जगह पिंडलियों तक के लम्बे, नए बूट देंगे।···तुम्हारे यहाँ के कमांडर इन चीज़ों का काफ़ी खयाल नहीं रखते। इसे जूता कहते हो तुम? बर्फ़ गल रही है और ऐसे में इन फ़ेल्ट-बूटों में बाहर जाओगे तुम। तो, आते हो हमारे साथ?"

"बेचारा किसान है···ज़िन्दगी में घोड़े की पीठ पर काहे को सवार हुआ होगा कभी!" एक दूसरे कज़्ज़ाक ने बनावटी आवाज़ में कहा, जैसे कि अपनी तरफ़ से मज़ाक किया।

लाल सैनिक मौन रहा। इस बीच उसकी आँखें साफ़ हो गईं और स्वाभाविक ढंग से चमकने लगीं। उसने स्टोव की टेक लगा ली और चारों तरफ निगाह दौड़ाई। पर जब-तब ही दर्द के कारण उसके माथे पर बल पड़े और साँस लेने में दिक़्क़त होने पर मुँह फैल गया।

"तो तुम हमारे साथ आ रहे हो या नहीं?" फ़ोमीन ने फिर पूछा।

"लेकिन आप लोग हैं कौन?"

"हम लोग हैं कौन?" फ़ोमीन ने भौंहें ऊपर उठाईं और गल-मुच्छों पर हथेली फेरी—"हम मेहनतकश लोगों की तरफ से लड़ने वाले

लोग हैं। हम कमीसारों और कम्यूनिस्टों की ज्यादतियों के खिलाफ़ हैं। हम नहीं चाहते कि ये लोगों को तरह-तरह से सताएँ। यानी में हैं हम लोग।"

ग्रिगोरी को लाल सैनिक के चेहरे पर आकस्मिक मुस्कान थिरकती दीखी।

"तो ये हैं आप लोग···मैं इसी ताज्जुब में पड़ा हुआ था कि किन लोगों से पाला पड़ गया।" बन्दी मुस्कराया तो उसके खून से नहाए दाँत चमके और उसके शब्दों से ऐसा लगा, जैसे कि इस समाचार से उसे जितना आश्चर्य हुआ उतनी ही प्रसन्नता का अनुभव हुआ। लेकिन उसकी आवाज में एक खटका ऐसा भी लगा कि सभी लोगों के कान खड़े हो गए—"तो अपने लफ़्ज़ों में आप जनता की तरफ़ से लड़ने वाले लोग हैं? हूँ···! हो सकता है। मगर हमारी नजर में तो आप सिर्फ़ डाकू हैं। और कुछ नहीं। और आप चाहते हैं कि मैं आपका साथ दूँ? यानी मानना पड़ेगा कि मजाक करने का माद्दा आपमें खासा है।"

"तुम्हारी जबान भी कुछ ज्यादा-ही-ज्यादा चलती है।" फ़ोमीन ने अपनी आँखें चढ़ाईं और सख्ती से पूछा—"कम्यूनिस्ट हो?"

"नहीं···बिल्कुल नहीं···मैं पार्टी का आदमी नहीं हूँ।'

"ऐसा लगता तो नहीं···"

"ईमान की बात है कि मैं पार्टी का आदमी नहीं हूँ।"

फ़ोमीन ने अपना गला साफ़ किया और मेज के पास बैठे लोगों की तरफ़ मुड़ा—"चुमाकोव, कर दो इसका काम तमाम।"

"मुझे मारने से कोई फ़ायदा नहीं होगा···और मुझे मारने की वैसे कोई वजह भी नहीं है।" क़ैदी ने शांत भाव से कहा।

जवाब किसी ने कुछ नहीं दिया। खूबसूरत बदन का, अंग्रेज़ी चमड़े की जकिन वाला, चुमाकोव नाम का कज़्ज़ाक बेमन से अपनी जगह से उठा और अपने चमकीले भूरे बाल बराबर करने लगा। फिर बेंच पर जमा तलवारों के बीच से अपनी तलवार उठाते और अँगूठे से उसकी धार देखते हुए बोला—"मैं तो ऊब गया इस धन्धे से!"

फोमीन ने अपनी तरफ़ से सलाह दी—"तुम खुद मत करो यह

काम···अहाते में तमाम लोग हैं···किसी से कह दो।"

चुमाकोव ने क़ैदी को सिर से पैर तक देखा और बोला—"सामने जाकर खड़े हो, साहबज़ादे!"

लाल सैनिक ने कन्धे झटके और लड़खड़ाता हुआ दरवाज़े की तरफ़ बढ़ा तो फ़र्श पर उसके गीले फ़ेल्ट-बूटों के निशान बन गए।

"अन्दर आए थे तो पैर रगड़कर आते···यह क्या कि आए और फ़र्श गन्दा कर दिया···अजीब जानवर हो तुम भी, बिरादर!" चुमाकोव ने उसके पीछे जाते हुए बनावटी गुस्से से कहा।

फ़ोमीन ने पीछे से चिल्लाकर कहा—"लोगों से कहो कि इसे गली या खलिहान में ले जाएँ। घर के पास मारोगे तो आसपास के घरों के मालिक शिकायत करेंगे।"

इसके बाद वह आकर ग्रिगोरी के पास बैठ गया और बोला—"पूछताछ हम यों ही करते हैं और देखते-देखते मुक़दमा खत्म कर देते हैं···क्या खयाल है?"

"हाँ, सो तो है।" ग्रिगोरी ने उसकी निगाहें बरकाते हुए कहा।

फ़ोमीन ने आह भरी—"और कोई चारा नहीं है। अब तो यही करना पड़ेगा···।" और वह कुछ कहने को हुआ ही कि इतने में गलियारे में पैरों की आवाज़ हुई। कोई चीखा और बन्दूक का खटका हुआ।

"यहाँ पता नहीं क्या तूफ़ान कर रहे हैं ये लोग!" फ़ोमीन ने नाराज़ होते हुए कहा।

मेज़ के पास बैठा एक आदमी झटके से खड़ा हुआ और ठोकर से दरवाज़ा खोलकर चीखा—"क्या हो रहा है यहाँ?"

पर चुमाकोव अन्दर आया और तेज़ी से बोला—"वह शैतान का बच्चा तो खासा तेज़ निकला। सबसे ऊपर की सीढ़ी से कूदकर चलता बना। मुझे एक कारतूस उस पर बरबाद करना पड़ा। अब बाहर कज़्ज़ाक उसका हिसाब-किताब कर रहे हैं।"

"उनसे कहो कि उसे अहाते से गली में घसीट ले जाएँ।"

"मैंने पहले ही कह दिया है, याकोव-येफ़िमोविच!"

इसके बाद कमरे में एक क्षण तक सन्नाटा रहा। फिर किसी ने

जमुहाई लेते हुए पूछा—"मौसम कैसा है, चुमाकोव ? आसमान साफ़ हो रहा है ?"

"नहीं, बादल घिरे हुए हैं···"

"अगर पानी बरसा तो बची-बचाई बर्फ़ भी बह जाएगी।"

"आखिर तुम क्यों चाहते हो कि पानी बरसे ?"

"मैं नहीं चाहता कि बरसे···कीचड़ में छप-छप करते हुए चलना मुझे पसन्द नहीं।"

ग्रिगोरी उठा और उसने पलंग से अपनी टोपी उठाई। फ़ोमीन ने पूछा—"कहाँ जा रहे हो ?"

"जरा यों ही ताजा हवा लेने।" और वह बाहर निकलकर बरसाती की सीढ़ियों पर आया।

इस समय चाँदनी बादलों के बीच से हल्के-हल्के छनती रही; और लम्बे-चौड़े अहाते, शेडों की छानियों, चिनारों के सिरों और खूंटों से बँधे कपड़ों से ढंके खड़े घोड़ों के साथ-साथ हर चीज पर आधी रात की रोशनी बरसती रही।

ऐसे में बरसाती से कुछ क़दम के फ़ासले पर वह लाल सैनिक पड़ा रहा और उसका सिर गलती हुई बर्फ़ की तलैया के मद्धिम चमकते पानी में उतराता रहा। तीन कज़्ज़ाक उसके ऊपर झुककर आपस में धीरे-धीरे बातें करते जाने क्या करते रहे !

उनमें एक घबराहट से भरे स्वर में बोला—"अभी साँस ले रहा है···ऊपर वाले की कसम ! इस तरह मारा जाता है, बेहूदा, गधा कहीं का ? मैंने कहा था कि सिर पर भरपूर वार करो। अरे, तू बिलकुल काठ का उल्लू है !"

ग्रिगोरी को यहाँ लाने वाला, कर्कश आवाज का कज़्ज़ाक बोला—"निकल जाएगा दम···एक साँस और···और दम निकल जाएगा ! लेकिन जरा ऊपर उठाओ न इसे ! मुझसे इसका यह कोट तो किसी तरह उतरता ही नहीं···बाल पकड़कर ऊपर उठाओ जरा···ठीक··· और अब पकड़े रहो ऐसे ही !"

ग्रिगोरी ने पानी का छपाका सुना। इसी समय क़ैदी के ऊपर झुके

लोगों में से एक आदमी सीधा हुआ। कर्कश आवाज़ वाला कज्ज़ाक छींटदार जैकेट बदन से खींचते हुए कराह दिया और एकाध क्षण बाद बोला—"मेरा हाथ बहुत हलका है···इसीलिए मुझ पर नहीं फुफकारा वह। घर पर कभी सूअर को हलालने का मौक़ा आया तो···अरे साधे रहो उसे···गिरने मत दो···ऐसी-तैसी में जाए···हाँ तो मैं कह रहा था कि घर पर कई बार सूअर हलालने का मौक़ा मिला और मैंने चाकू ऐन गर्दन के आरपार कर दिया, मगर इस पर भी कम्बख़्त जानवर उठा और अहाते-भर में टहल आया···और फिर काफ़ी देर तक टहलता रहा। यानी ख़ून की नदी बहती रही, पर जानवर ज़िन्दा बना रहा··· यानी अगर ऐसा है तो हल्का हाथ तो हुआ ही। अच्छा ठीक है, अब लिटा दो इसे···अब भी साँस चल रही है··· हो नहीं सकता···मैंने तो गर्दन बीच से करीब-करीब दो कर दी है।"

तीसरे आदमी ने लाल फ़ौजी की जैकेट उसके फैले हुए हाथ के ऊपर डाल दी। बोला—"हमने इसका बायाँ अंग ख़ून में डुबो दिया है···मेरे हाथ चिपक रहे हैं···फु···कैसी गदगी है!"

"साफ़ हो जाएँगे हाथ···ख़ून है, कोई ग्रीज़ थोड़े ही है।" कर्कश आवाज़ वाला कज्ज़ाक बोला और फिर ज़मीन पर बैठ गया—"छूट जाएगा या कम-से-कम धुल तो जाएगा ही। ऐसी कोई ख़ास बात नहीं है।"

"अच्छा अब क्या इरादा है तुम्हारा? अब क्या उसका पतलून भी उतार लोगे तुम?" पहले कज्ज़ाक ने मन के असन्तोष को वाणी देते हुए कहा।

कर्कश आवाज़ वाले व्यक्ति ने तड़ से उलटकर जवाब दिया—"अगर तुम हड़बड़ी में हो या तुम्हारा घोड़ों के पास जाना ज़रूरी हो तो तुम जाओ···यहाँ तुम्हारे बिना भी काम चल जाएगा। हम अच्छी चीज़ों को इस तरह छोड़ नहीं सकते।"

ग्रिगोरी मुड़ा और घर के अन्दर चला गया। फ़ोमीन ने तेज़ी से उस पर नज़र डालते हुए उसका स्वागत किया और उठकर खड़ा हो गया। कहने लगा—"चलो दूसरे कमरे में चलकर बातें करेंगे···यहाँ

बड़ा हंगामा है।"

दूसरा कमरा काफ़ी बड़ा और गरम महसूस हुआ। पर चुहियों और पटसन के बीजों का भभका उठता रहा। पलग पर छोटे कद का एक आदमी खाकी ट्यूनिक पहने गन्दे तकिए से गाल सटाए सोता दीखा। उसके बाल बिखरे रहे और उन पर रोंओं और चिड़ियों के छोटे-छोटे परों का छिड़काव-सा नजर आया। छत से लटकते लैम्प की रोशनी उसके पीले गालों और बढ़ी हुई दाढ़ी से भरे चेहरे पर पड़ती रही।

फ़ोमीन ने सोने वाले को जगाया—"उठो···कापारिन···देखो मेह-मान आया है एक···यह हैं ग्रिगोरी-मेलेखोव···हमारे दोस्त···कभी स्क्वैड्रन कमांडर थे।"

कापारिन ने पैर पाटी से नीचे झुकाए, चेहरे पर हाथ फेरा और उठ बैठा—"बड़ी खुशी हुई तुमसे मिलकर···मैं हूं स्टाफ़-कैप्टन कापारिन।"

फ़ोमीन ने ग्रिगोरी के लिए बड़े स्नेह से एक कुर्सी खींची और खुद पास पड़े एक बक्से पर बैठ गया। उसने एक नजर में ही भांपा कि क़ैदी के क़त्ल से ग्रिगोरी का मन बुरी तरह उदास हो गया है। बोला—"तुम यह न सोचो कि सारे क़ैदियों के साथ हम इसी तरह का बरताव करते हैं। यह तो अनाज-वसूली करने वाली टुकड़ी का आदमी था; और हम ऐसे लोगों और कमीसारों तक को इस तरह जाने नहीं दे सकते।··· वैसे मामूली लोगों को हम छोड़ देते हैं। कल ही हमने मिलिशिया के तीन आदमियों को पकड़ा, मगर उनके घोड़े, काठियां और साज-सामान लेकर उन्हें आजाद कर दिया। उन्हें मारने से फ़ायदा?"

ग्रिगोरी मौन रहा और घुटनों पर हाथ रखे अपने ही विचार में डूबा रहा। फ़ोमीन की आवाज तो जैसे उसने नींद में सुनी।

फ़ोमीन कहता गया—"फ़िलहाल हम इस तरह अपनी लड़ाई चला रहे है, लेकिन इस पर भी कज्जाकों को उभारने का हमारा खयाल है। ···सोवियत हुकूमत चल नहीं सकती। देखो न क़रीब-क़रीब हर जगह ही लड़ाई छिड़ी हुई है। क्या साइबेरिया, क्या उक्रइन और क्या पेत्रोग्राद, हर जगह लोग बग़ावत कर रहे हैं। पूरे-के-पूरे बेड़े ने गदर मचा दिया है···उस गढ़ी में···क्या नाम है उसका?"

"फ़ोन्स्तादत् ।" कापारिन ने सहायता की।

ग्रिगोरी ने सिर उठाया, खाली-खाली-सी अनदेखती आँखों से फ़ोमीन की ओर देखा और फिर कापारिन को एकटक देखने लगा।

"लो सिगरेट पिओ।" फ़ोमीन ने अपना सिगरेट केस आगे बढ़ाया—"हाँ, पेत्रोग्राद ले लिया गया है, और लोग मास्को के पास तक पहुँच गए हैं। और हर जगह एक ही राग छिड़ा हुआ है। ऐसे में कोई वजह नहीं कि हम बैठे ऊँघते रहें। हम कज्ज़ाकों को उभारेंगे, सोवियत हुकूमत का नाम-निशान मिटा देंगे और अगर कैडेट हमारा साथ दे देंगे तो फिर मजा आ जाएगा। हम तो कहते है कि पढ़े-लिखे कैडेट सरकार बनाएँ। हम उनकी मदद करेंगे।" इसके बाद एक क्षण तक चुप रहने के बाद बोला—"तुम्हारा क्या खयाल है मेलेखोव ? अगर कैडेट काला सागर के इलाके में जोर मारें और हम उनके साथ जा मिलें तो वे यह तो मानेंगे न कि पीछे के इलाकों में सबसे पहले हमने सिर उठाया ? कापारिन कहता है कि मानेंगे और इसकी तारीफ़ करेंगे। मिसाल के लिए इसके लिए तो मुझे गुनाहगार ठहराएँगे नहीं कि १६१८ में जब अट्ठाईसवीं रेजीमेंट पीछे हटी तो मैं उसके आगे-आगे रहा और दो साल मैंने सोवियत सरकार की खिदमत की ?"

'तो इस निशाने पर गोली बिठा रहे हो तुम ! तुम बेवकूफ़ हो, हालाँकि घुटे हुए बेवकूफ़ हो !' ग्रिगोरी ने बनावटी ढंग से मुस्कराते हुए सोचा। फ़ोमीन उसके उत्तर की प्रतीक्षा में रहा। साफ़ है कि इस समस्या ने उसका दिल-दिमाग़ घेर रखा था।

ग्रिगोरी ने हिचकिचाते हुए कहा—"इसमें वक़्त लगेगा।"

'सो तो लगेगा ही···सो तो लगेगा ही।" फ़ोमीन ने सहमति प्रकट की—"ये सब बाद में सोचने की बातें हैं। इस वक़्त तो हमें कदम उठाना चाहिए और पीछे के इलाकों में कम्युनिस्टों को तार-तार कर देना चाहिए। अब हम उन्हें चैन की साँस किसी तरह लेने-देने से रहे ! उनका खयाल है कि अपने पैदल फ़ौजियों को गाड़ियों में भरकर वे हमारा पीछा कर सकते हैं। तो करें···कर देखें कोशिश। जब तक घुड़सवार फ़ौज उनकी मदद को आएगी, तब तक हम पूरे-का-पूरा इलाका

उलटकर रख देंगे।"

ग्रिगोरी ने फिर विचारों में डूबते हुए अपने पैरों की ओर देखा। कापारिन माफ़ी मांगकर पलंग पर लेट गया। हल्के-हल्के मुस्कराते हुए बोला—"मैं बहुत थका हुआ हूँ···बात यह है कि मंजिलों पर मजिलें मारनी पड़ती हैं···पागलों की तरह···मगर, सोने को वक्त बहुत थोड़ा मिल पाता है।"

"काफ़ी वक़्त हुआ···हम भी सो जाएँ अब!" फ़ोमीन उठा और उसने अपना भारी हाथ ग्रिगोरी के कन्धे पर रखा—"मेलेखोव, तुमने उस दिन व्येशेन्स्काया में मेरी सलाह मान ली···बड़ी ही अक़्लमंदी का काम किया। अगर उस वक़्त तुम छिप न गए होते तो वे लोग तुम्हें ख़त्म कर देते। तुम व्येशेन्स्काया के बाहर की बलुही पहाड़ियों पर पड़े होते और तुम्हारे नाख़ून सड़-गल गए होते। मेरी यह बात बिलकुल सच समझो तुम!···ख़ैर तो तुमने तय क्या किया? बतला दो···और फिर सोने चलें!"

"क्या बतला दूं तुम्हें मैं?"

"यही कि तुम हमारा साथ दोगे या नहीं, या क्या करोगे? आख़िर ज़िन्दगी-भर तो दूसरों के घरों में छिपते फिरोगे नहीं?"

ग्रिगोरी को तो इस सवाल की आशा थी ही। सो उसने अपने-आपसे कहा—"भाई मेरे, रास्ते तीन हैं। पहला कि गाँव-गाँव मारे-मारे फिरो, भूखे-प्यासे, बेघरबार मरो, और फिक्र से आप अपना कलेजा छलनी करते रहो कि कोई-न-कोई मेजबान किसी-न-किसी दिन दगा दे दे और अफ़सरों को पता दे आए; दूसरा कि राजनीतिक विभाग में चलो और हथियार डाल दो; तीसरा कि फ़ोमीन का साथ पकड़ लो। अब इनमें से एक का चुनाव कर लो······।"

और उसने अपना रास्ता चुन लिया। उस दिन शाम को पहली बार उसने फ़ोमीन की आँखों में सीधे आँखें डालीं और मुस्कराते हुए बोला—"मैं क्या चुनूं और क्या न चुनूं? मेरी हालत तो परी देश की कहानी के राजकुमार-सी है। यानी बाईं तरफ गए कि घोड़े से हाथ धोया; दायीं तरफ गए कि मारे गए।···फिर मेरे सामने तो तीन रास्ते

हैं, लेकिन इनमें से एक भी मेरी मंजिल की तरफ़ नहीं जाता···'

"तुम अपनी बात करो···और परी-कहानियों को फ़िलहाल, एक तरफ़ रखो···यह सारी-की-सारी बाद में कह लेना······"

"मेरा अपना कोई ठौर-ठिकाना नहीं है···यानी चुनाव तो हो ही गया···"

"यानी ?"

"यानी कि मैं तुम्हारे जत्थे में शामिल होता हूं।"

फ़ोमीन के माथे पर बल पड़ गए और वह असन्तोष से मूंछें चबाने लगा। "यह लफ़्ज़ छोड़ो। तुम हमारी टोली को जत्था क्यों कहते हो ? यह नाम तो हमें कम्यूनिस्ट देते हैं। तुम्हें यह ज़ेबा नहीं देता। हम तो सीधे-सीधे वे तमाम लोग हैं जिन्होंने हुकूमत के खिलाफ़ सिर उठाया है। बात जितनी ही मुख्तसर है, उतनी ही दोटूक है।"

पर फ़ोमीन का यह असंतोष क्षणिक रहा। सच तो यह है कि ग्रिगोरी के फ़ैसले से वह खुशी से खिल उठा और यह प्रसन्नता उसके छिपाए छिपी नहीं। हाथ रगड़ते हुए बोला—"अरे भई, एक और साथी मिला। सुनते हो, स्टाफ़-कैप्टन ?···मेलेखोव हम तुम्हारी कमान में ट्रूप दे देंगे···वैसे अगर तुम ट्रूप की कमान सम्हालना न चाहते हो तो स्टाफ़ पर रहो···कापारिन के साथ···मैं तुम्हें खुद अपना घोड़ा दे दूंगा···मेरे पास एक घोड़ा फ़ालतू है।"

: १२ :

तड़का होते-होते हल्का-हल्का कोहरा पड़ने लगा। गढ़े-गढ़ैयों पर जमे हुए पानी की झिल्ली तन गई। बर्फ मोटी पड़ गई और बुरी तरह चरमराने लगी। घोड़ों की टापों ने बर्फ पर गोल निशान छोड़े। जहां कल बर्फ गलने से नंगी ज़मीन निकल आई थी और जहां पिछले साल की मुर्दा घास अब भी ज़मीन के सीने से सटी हुई थी, वहां घोड़ों के पैर पड़े तो बहुत मामूली निशान बने और खोखली-खोखली-सी झन-झनाहट हुई।

फ़ोमीन का जत्था, गांव के बाहर कतार बनाकर खड़ा हुआ।

अगुआ-पड़तालो गश्ती के छः घुड़सवार बीच-बीच में दूर सड़क पर नजर आते रहे।

फ़ोमीन अपना घोड़ा ग्रिगोरी के पास लाया और मुस्कराते हुए बोला—"ये रहे मेरी फ़ौज के लोग! ऐसे जवान हों तो खुद शैतान के टुकड़े-टुकड़े किये जा सकते हैं।"

ग्रिगोरी ने कतार पर एक नजर डाली और दर्द से मन-ही-मन सोचा—'अगर तुम और तुम्हारी फ़ौज के लोग मेरी बुदयोन्नी-स्क्वैड्रन से टकरा जाते तो आधे घंटे के अन्दर-अन्दर तुम्हारी धज्जियाँ उड़ जातीं।'

फ़ोमीन ने अपने चाबुक से इशारा किया और पूछा—"क्या खयाल है तुम्हारा इनके बारे में?"

ग्रिगोरी ने नीरस ढंग से कहा—"क़ैदियों का काम तमाम करने और मुर्दों के कपड़े उतारने के लिए लोग ऐसे कोई बुरे नहीं। लेकिन कह नहीं सकता कि लड़ाई के मैदान में कैसे हाथ दिखलाएँगे ये!"

फ़ोमीन ने काठी पर मुड़ते हुए हवा की तरफ पीठ की, सिगरेट जलाई और बोला—"लड़ाई के मैदान में इनके हाथ देखने का भी मौका मिलेगा तुम्हें। हमारे ज्यादातर लोग बाक़ायदा फ़ौज से आए हैं, इसलिए वक्त पर तुम्हें नीचा नहीं देखना पड़ेगा।"

लड़ाई के हथियारों और रसद की चीजों से भरी दो-दो घोड़ों वाली छः गाड़ियाँ, कतार के बीचों-बीच ला जमाई गईं। फिर फ़ोमीन का घोड़ा सरपट दौड़ता आगे पहुँचा और उसने आगे बढ़ने की कमान दी। टीले पर पहुँचने पर वह फिर ग्रिगोरी के पास आया और बोला—"क्यों, कैसा है मेरा घोड़ा? तुम्हें पसन्द है?"

जवाब मिला—"अच्छा घोड़ा है।"

वे लोग कुछ देर तक घोड़ों पर अगल-बगल आगे बढ़ते रहे। इसके बाद ग्रिगोरी ने पूछा—"तातारस्की से होकर चलेंगे हम लोग?"

"अपने घर के लोगों से मिलना चाहते हो?"

"हाँ, जरा मिल लेंगे।"

"ठीक···तो हम उधर से ही चले चलेंगे। वैसे मेरा इरादा विर

चलने और कज्ज़ाकों को थोड़ा झकझोर देने का है।"

लेकिन कज्ज़ाक 'झकझोरे जाने' के लिए तैयार न थे। ग्रिगोरी को दस्ते के साथ कुछ दिन रहने के बाद ही, इस बात का यकीन हो गया।

यों समझिए कि दस्ते के लोग जब भी कोई गांव या ज़िला-केन्द्र हथियाते, फ़ोमीन हुक्म देकर वहाँ के लोगों की सभा बुलवाता। ऐसे अवसर पर अक्सर तो वह खुद ही बोलता। पर कभी-कभी उसकी जगह कापारिन भाषण देता। इस तरह अनाज-उगाही के कारण नतीजा के कंधों पर पड़ रहे बोझ की चर्चा की जाती और कहा जाता कि अगर सोवियत सरकार का तख्ता पलटा न जाएगा तो नतीजा सिर्फ एक निकलेगा—यानी हर तरफ़ बरबादी नज़र आएगी और पूरी बरबादी नजर आयेगी।

फ़ोमीन की वक्तृता, कापारिन की वक्तृता की भाँति व्याकरण की दृष्टि से पूरी तरह शुद्ध और क्रमबद्ध तो न होती, लेकिन हमेशा बोलता वह ऐसी भाषा में जो कज्ज़ाकों के गले के नीचे उतरती चली जाती। भाषण के अन्त में प्रायः कुछ रटे-रटाए वाक्य चिपकाता—"आज से हम तुम सबको अनाज देने की इस मुसीबत से बरी करते हैं। अब अनाज-उगाही के सदर मुकामों को गाड़ियाँ भर-भरकर अनाज भेजने की कोई ज़रूरत नहीं। निकम्मे कम्यूनिस्टों का पेट बहुत भर चुके। अब बस हुआ। वे तुम्हारे अनाज के सहारे फूल-फूलकर कुप्पा हुए हैं। मगर दूसरे के बल पर जीने के दिन उनके लद गए। तुम लोग आज़ाद हो। अपने को हथियारों से लैस कर हमारे निज़ाम के हाथ मजबूत करो।···कज्ज़ाक···हुर्रा!"

इन सभाओं में पुरुष तो ज़मीन पर आँखें गड़ाए चुप खड़े रहते, लेकिन औरतों की ज़बानें चलने लगतीं और उनके बीच से व्यंग्य-भरे सवालों की बौछार होने लगती।

"तुम्हारा निज़ाम तो ठीक ही लगता है, मगर हमारे इस्तेमाल के लिए साबुन लाये हो तुम?"

"कहाँ रहती है तुम्हारी सरकार···तुम्हारे घोड़े की काठी वाले

थैले में ?"

"लेकिन तुम खुद किसका अनाज खा-खाकर जी रहे हो ?"

"मेरा खयाल है कि अभी-अभी तुम अहाते-अहाते झोली फैलाते फिरोगे।"

"ओ बाबा, इनके पास तलवारें हैं···ये तो किसी से पूछेंगे भी नहीं और चूजों को हलालना शुरू कर देंगे।"

"कहना तो बहुत आसान है कि हम गाड़ियाँ भर-भरकर अनाज न भेजें···मगर तुम आज यहाँ हो और कल कहीं और होगे···शिकारी कुत्तों के ढूंढ़े भी न ढूंढ़े जाओगे···उस हालत में जवाबदेही तो आखिरकार हमीं को करनी पड़ेगी न !"

"हम अपने आदमियों पर तुम्हें हाथ न रखने देंगे···लड़ाई लड़नी है,तो जाओ और खुद जान दो।"

यही नहीं, औरतें तो अपनी सनक में और जाने क्या-क्या बक जातीं। बात यह थी कि लड़ाई के वर्षों ने उनके सारे भ्रम दूर कर दिये थे, वे नई लड़ाई की सम्भावना-मात्र से डरने लगी थीं और उन्होंने एक बार मायूस होने के बाद अब अपने पतियों को अपने से अलग न करने की जिद-सी ठान रखी थी।···

फ़ोमीन, उल्टी-सीधी चीख-पुकारें तटस्थ मन से सुनता, उनकी कीमत समझता, लोगों के शांत हो जाने की राह देखता और फिर कज्जाकों की ओर मुड़ता। पर कज्जाक गम्भीरता से दोटूक जवाब देते। "हमें सताओ मत, साथी फ़ोमीन···लड़ाई हम काफ़ी लड़ चुके।"

"बग़ावत की भी आजमाइश कर देखी है···१९१९ में हमने सिर उठाया था न !"

"हमारे पास बग़ावत करने को कुछ भी नहीं है, और बग़ावत करने का मतलब भी कुछ समझ में नहीं आता। फ़िलहाल, तो उसकी कोई ज़रूरत महसूस होती नहीं।"

"यह बोआई का वक्त है, लड़ाई का नहीं।"

ऐसे-ही-ऐसे एक दिन भीड़ के पीछे से कोई चीख उठा—"इस वक्त तो बड़ी मीठी-मीठी बातें बना रहे हो, मगर १९१९ में जब

हमने सिर उठाया था तब कहाँ गये थे तुम ? वहुत देर से चौंके, फ़ोमीन !"

ग्रिगोरी ने देखा कि फ़ोमीन का चेहरा वदला, पर उसने अपने आप पर कावू रखा और कोई जवाव न दिया।

पहले हफ्ते जव कज्ज़ाकों ने तरह-तरह के एतराज सामने रखे और साथ देने के अनुरोध पर साफ़ इन्कार कर दिया, तो फ़ोमीन ने सव-कुछ चुपचाप सुना और शांत रहा। औरतों की चीख-चिल्लाहट तक उसे हिला न पाई। वह सिर्फ मूंछों-ही-मूंछों मुस्कराया और अकड़कर बोला—"ठीक है, हम रास्ते पर ले आएँगे इन्हें।" लेकिन इसके वाद उसे पूरी कज्ज़ाक आवादी अपने खिलाफ़ लगी और सभाओं में वोलने वालों के प्रति उसका अपना रवैया विलकुल वदल गया। अव घोड़े से उतरे विना, उसने वातें कम कीं, धमकियाँ ज्यादा दीं। लेकिन इस पर भी नतीजा वही रहा और जिन कज्ज़ाकों का उसे बड़ा भरोसा रहा, उन्होंने ही उसकी वातें जैसे चुप-चुप सुनीं, वैसे ही चुपचुप वे अपने-अपने घरों को चले गये।···

एक गांव में फ़ोमीन का भाषण समाप्त होते ही एक कज्ज़ाक-वेवा जवाव देने को उठ खड़ी हुई। लम्वी, हट्टी-कट्टी औरत, मर्दों की तरह ज़ोर-ज़ोर से हाथ नचा-नचाकर, विलकुल मर्दानी आवाज़ में चीखने लगी। उसके चौड़े, चेचक के दाग़ों से भरे चेहरे पर क्रोध के साथ संकल्प झलका और होंठ रह-रहकर नफरत से फड़के। उसने घोड़े की काठी पर पत्थर की तरह जमे-वैठे फोमीन की तरफ अपना सूजा हुआ लाल हाथ दिखा-दिखाकर वातें नहीं कीं, वातों के डंक मारे। "यहाँ क्यों मुसीवत खड़ी कर रहे हो ? हमारे कज्ज़ाकों को हांककर कहां ले जाना चाहते हो तुम···किस सूराख में ? तुम्हारी इस कम्वख्त लड़ाई ने अभी क्या कुछ कम औरतों को वेवा वनाया है ? अभी क्या कुछ कम वच्चे यतीम हुए हैं ? तुम मुसीवतों के नए पहाड़ ढाना चाहते हो हमारे सिर पर ?···ज़रा देखो कि क्या ठाठ का ज़ार आया है रेवेजनी गांव से, हमें आज़ादी देने ! पहले अपना घर ठीक-ठाक करो और उसे वरवादी से वचाओ। पीछे सिखाना हमें कि हम कैसे जिएँ और

कैसे न जिएँ, कौन-सी हुकूमत मानें और कौन-सी न मानें। हमें अच्छी तरह पता है कि अभी तो तुम्हारे घर के अन्दर तुम्हारी बीवी तक के गले का पट्टा कटा नहीं है। लेकिन तुम मूछें फुलाए, घोड़े पर सवार लोगों के दिमाग़ खराब करते फिर रहे हो। अरे, अगर खुद हवा ने ही न साधा होता तो तुम्हारा-अपना घर अब तक कभी का मिट्टी में मिल गया होता। क्या शानदार रहनुमा हो तुम!···कुछ बोलो न···आखिर चुप क्यों हो? कुछ झूठ कह रही हूँ मैं?"

इस पर भीड़ में हँसी की एक लहर ने हवा की तरह सर्राटा भरा और हवा की तरह ही थम गई। काठी की कमानी पर रखे फ़ोमीन के बाएँ हाथ की उँगलियाँ रासों के बीच चलने लगीं और बँधे हुए गुस्से से उसका चेहरा काला पड़ गया। वह शांत रहा और इस भद्दी स्थिति से निकलने का कोई रास्ता खोजने लगा।

"और क्या है तुम्हारी यह सरकार, जिसका साथ देने की दावत तुम हमें दे रहे हो?" औरत पूरी ताकत से चीखती गई, हालाँकि इस बीच उसकी शक्ति जवाब दे चली।

उसने अपने हाथ कमर पर रखे और चूतड़ मटकाती फ़ोमीन की ओर बढ़ चली। भीड़ के लोगों ने अपनी हँसी छिपाते और अपनी आँखें नीची करते हुए उसे रास्ता दे दिया। साथ ही एक-दूसरे से छेड़-छाड़ करते हुए उन्होंने यों घेरा बना दिया, जैसे कि कोई नाचने जा रहा हो।

"तुम्हारे जाने के बाद तुम्हारी सरकार एक लमहा न चलेगी।" विधवा ने अपनी भारी, गहरी आवाज़ में कहा—"यह सरकार तुम्हारे पीछे-पीछे घिसटती चलती है और एक घंटे से ज्यादा एक जगह नहीं टिकती। आज यह तुम्हारे इस घोड़े पर नजर आती है तो कल धूल में तुम्हारी इस तोंद के ऊपर दिखलाई देगी। यह हो तुम और ऐसी है तुम्हारी यह सरकार!"

फ़ोमीन ने घोड़े को एड़ लगाई और उसे भीड़ में धँसाया। हर तरफ लोग हड़बड़ाकर पीछे हट गए। सिर्फ औरत घेरे के बीच में खड़ी रही। फ़ोमीन के दाँत भिंचे रहे और उसका चेहरा गुस्से से सफेद

रहा, मगर जिन्दगी में कितना ही कुछ देख चुकने के कारण वह उसे शांत मन से घूरती रही।

फ़ोमीन ने अपना घोड़ा उसके पास बढ़ाया और चाबुक ऊपर उठाया। "मुंह बंद कर अपना···चित्तीदार गिद्ध कहीं की ! यहाँ हंगामा आखिर क्यों मचा रखा है तूने ?"

घोड़े के दाँत निकल आए और रास से खिंचकर उसका थूथन बेधड़क औरत के सिर के ऐन ऊपर तन गया। झाग का पिलछरा-हरा थक्का लगाम से उड़ा और औरत के काले रूमाल पर चू पड़ा। इसके बाद गाल पर भी गिर गया। उसने उसे हाथ से पोंछा और एक क़दम पीछे हट गई।

"यानी, तुम जो चाहे सो कहो, मगर हम मुंह न खोलें ?" फ़ोमीन की क्रोध से फटी-फटी-सी जलती हुई आंखों को घूरते हुए औरत चीखी। फ़ोमीन ने उसे मारा नहीं, पर चाबुक लपलपाते हुए गरजा— "बोलशेविक···ग़लीज़ कहीं की ! अभी तेरा सारा सूअरपन झाड़कर रख दूंगा। तेरी अपनी स्कर्ट से बँधवाकर तुझे इतने बेंत लगवाऊँगा कि तबीयत हरी हो जाएगी। देखते-देखते होश ठिकाने आ जाएंगे।"

औरत और दो क़दम पीछे हटी। सहसा ही फ़ोमीन की तरफ़ पीठ कर जमीन पर झुकी और उसने अपनी स्कर्ट का पिछला सिरा एकदम उलट दिया—"सूरमा-अनीका, यह चीज शायद तुमने कभी देखी नहीं, तो आज देख लो···" उसने चीखकर कहा और ताज्जुब में डालनेवाली फुर्ती से सीधी होती हुई फिर फ़ोमीन की तरफ़ मुड़ी—"मुझे···यानी मुझे बेंत लगवाओगे···बड़ा दम मालूम होता है तुम्हारे बेंत में !"

फ़ोमीन ने बौखलाकर थूका और पिछड़ते हुए घोड़े को रोकने के लिए रासें खींचीं।

"जबान बंद कर···लद्दू घोड़ी कहीं की ! मांस का एक भारी-भरकम लोथड़ा है तू, और कुछ नहीं।" वह तेज़ आवाज़ में बोला और गम्भीर बनने का निष्फल प्रयत्न करते हुए घोड़ा नचाया।

भीड़ के लोग आपस में बुदबुदाने और हँसने लगे। फ़ोमीन का एक आदमी उसके आहत सम्मान की रक्षा के लिए कारबाइन बन्दूक

ताने औरत की ओर लपका। पर, उससे दो हाथ ऊँचे एक कज्जाक ने अपने घोड़े कंधों से उसकी आड़ कर ली। शांत और सधे हुए ढंग से बोला—"यह सब नहीं चलेगा!"

इसी समय तीन दूसरे कज्जाक आगे आए, और उन्होंने औरत को धक्का देकर पीछे कर दिया। उनमें से चमकदार बालोंवाले कम उम्र कज्जाक ने फ़ोमीन के आदमी के कानों में फुसफुसाकर कहा—"किसको अपनी गोली का निशाना बनाने जा रहे हो और क्यों? गोया, औरत को मारना कोई बड़ा आसान काम है! मर्दानगी दिखलानी है तो लड़ाई के मैदान में जाकर दिखलाओ···अपने घर में तो शेर सभी बनते है!"

फ़ोमीन अपने घोड़े को क़दम चाल से बाड़ के पास ले गया, रकाबों पर बल देकर तना और धीरे-धीरे तितर-बितर होती भीड़ के लोगों को सम्बोधित करते हुए चिल्लाकर बोला—"कज्जाको, खूब सोच लो···एक बार और सोच लो! अभी तो हम तुमसे सीधे सीधे बातें कर रहे हैं, मगर एक हफ़्ते बाद लौटकर आएँगे, तो हमारी जबान बिल्कुल दूसरी ही होगी।"

पता नहीं क्यों और कैसे इस बीच उसका मन बिल्कुल बदल गया, वह हँसी-मजाक करने लगा और उछलते हुए घोड़े को साधते हुए जोर से बोला—"हम लोग बुजदिल नहीं हैं···तुम औरतों से हमें डरा नहीं सकते!" इसके बाद उसने कुछ बातें ऐसी कहीं जिनका जिक्र यहाँ हो नहीं सकता···

फिर बोला—"हमने चेचक के दाग़ोंवाली तो देखी ही है, जाने कितने-कितने दूसरे दाग़ोंवाली औरतें भी देखकर फेंक दी हैं···फ़िलहाल हम जाते हैं; मगर फिर आएँगे और अगर उस वक़्त तुम लोग अपने मन से हमारी टुकड़ी में शामिल न होगे तो हम तमाम जवान कज्जाकों का नाम जबरदस्ती लिख लेंगे। बात समझ में आई न! हमारे पास वक़्त नहीं है कि हम तुम्हारी बलाएँ लें, और आँखों में आँखे डाले रहें।"

भीड़ के लोगों के दिल इस बीच एक क्षण तक सर्द रहे, मगर इसके बाद लोग फिर हंसने और सरगर्मी से बातें करने लगे। फ़ोमीन

ने अब भी मुस्कराते हुए हुक्म दिया—"घोड़ों पर सवार हो!"

ग्रिगोरी का चेहरा हँसी दबाए रहने के कारण नीला पड़ गया और उसी हालत में उसने अपना घोड़ा अपने ट्रूप की ओर बढ़ाया।

फ़ोमीन की टुकड़ी, कीचड़ से भरी सड़क, जैसे-तैसे पार कर, टीले की चोटी पर पहुँची और वह जान का दुश्मन गाँव आँख से ओझल हो गया। परन्तु 'ग्रिगोरी को बीच-बीच में हँसी आती रही। मन-ही-मन सोचता रहा यह तो बड़ी ही अच्छी बात है कि हम कज्ज़ाकों को अपने मजाकों से इतना प्यार है। हमारी ज़िन्दगी में मजाक दर्द से ज्यादा जीता है। ऊपरवाला गवाह है कि ज़िन्दगी में अगर सिर्फ़ संजीदगी होती, तो मैं तो जाने कब का गले में फंदा डालकर लटक गया होता!" और, फिर ग्रिगोरी की तबीयत काफ़ी देर तक मिली रही। केवल दूसरा पड़ाव आने पर ही उसके मन को फिर कटुता और चिंता ने घेरा। बार-बार खयाल आया कि न तो हमें कज्ज़ाकों को उभारने में कामयाबी मिलेगी, और न फ़ोमीन के नक़्शे पूरे उतरेंगे। ये इमारतें तो ढहनी ही हैं, सो ये ढहकर ही रहेंगी।

: १३ :

फिर वसन्त आया। धूप में और गर्मी आ गई। पहाड़ियों के दक्षिणी ढालों पर बर्फ़ गलने लगी और दोपहर को पिछले साल की सूखी घास से ढकी धरती पर बकाइनी धुंध छाई रहने लगी। ढूहों पर रेत-भरी मिट्टी के बीच आधे दबे गोल पत्थरों के नीचे से नई घास की हरी-हरी, पतली-पतली, प्यारी पत्तियाँ झांकने लगीं। जुते हुए खेतों ने बर्फ़ का कण-कण झाड़ फेंका। जाड़े की वीरान सड़कों से कौए खलिहानों और गली हुई बर्फ़ के पानी से लबालब, जाड़े की फ़सलों के खेतों में उड़ आए। घाटियों में बर्फ़ अब भी नीली झाईं मारती रही और यहाँ की साँसों में अब भी तीखी ठंडक घुली रही। लेकिन नालों में बहार का संकेत देने वाले सोते बर्फ़ के नीचे कल-कल करने लगे। मैदान के चिनारों की शाखें, निगाह की पकड़ में न आनेवाली हल्की-

हल्की हरियाली से नहाने लगी।

इसके साथ ही मेहनत-मशक़्क़त के दिन आए और फोमीन के जत्थे के लोग धीरे-धीरे कम होने लगे। रात के हर पड़ाव के बाद दो-दो तीन-तीन लोग कम नजर आने लगे। होते-होते एक दिन सवेरे टुकड़ी के आधे लोग ग़ायब मिले। फिर आठ आदमी अपने घोड़ों और साज-समान के साथ, हथियार डालने के लिए व्येशेन्स्काया चले गए। धरती ने जोताई और बोआई के लिए अपने बेटों से गुहार की, कज्जाकों को अपने मोह से खींचा तो संघर्ष को निरर्थक समझकर जत्थे के कितने ही लोग चुपचाप उड़ दिए और घोड़ों पर सवार होकर अपने-अपने घर जा पहुँचे। बचे सिर्फ़ ऐसे गए-बीते लोग जिनका जाना हर तरह असम्भव रहा। इन लोगों ने सोवियत शासन का विरोध करने के लिए बड़े-से-बड़े जुर्म किए थे, और इन्हें माफी की किसी तरह की कोई आशा न थी।

सो, अप्रैल का आरम्भ होते-होते फ़ोमीन की कमान में तलवारों से लैस सिर्फ अड़सठ आदमी रह गए। पर, ग्रिगोरी अब भी जत्थे में बना रहा। वह घर लौटने का हियाव न जुटा पाया।

वैसे उसे अच्छी तरह पता था कि फ़ोमीन अपनी बाज़ी हार गया है और आज नहीं तो कल यह जत्था टूट ही जाएगा। वह यह भी जानता था कि लाल सेना की घुड़सवार टुकड़ी से कहीं भी जमकर मुठभेड़ हुई नहीं कि जत्थे का एक-एक आदमी खत्म हुआ। इस पर भी उसने फ़ोमीन का साथ नहीं छोड़ा और मन-ही-मन गुप्त योजना बनाई—'गरमी तक खिंच जाए किसी तरह! उसके बाद मैं टुकड़ी के अच्छे-से-अच्छे दो घोड़े लूंगा, रातों-रात तातारस्की पहुंचूंगा और वहाँ से अकसीनिया को लेकर दक्खिन चला जाऊँगा···दोन का स्तेपी का मैदान इस छोर से उस छोर तक फैला हुआ है। हजारों सुनसान रास्ते हैं। गरमी में सभी सड़कें चालू रहती हैं, और मौक़ा पड़ने पर कहीं भी पनाह ली जा सकती है।' उसने आगे सोचा—'घोड़े कहीं छोड़ दूंगा, अकसीनिया के साथ पैदल कुबान चला जाऊँगा और फिर काकेशिया की तलहटी की पहाड़ियों में आबादी से दूर, कहीं मुसीबत

का वक़्त काट दूंगा। इसके सिवाय और कोई रास्ता नजर ही नहीं आता।'

पर कापारिन की सलाह पर फ़ोमीन ने, वर्फ़ टूटने से पहले-पहले दोन पार कर बाएं किनारे पहुंचने का निश्चय किया। उसे लगा कि खोपर के इलाके में घने जंगल बहुत हैं, और वहां, मौका पड़ने पर पिछयाए जाने से छुटकारा पाया जा सकता है।

फलतः दस्ते ने रिवनी गांव के पास दोन पार की। जहां धार तेज़ मिली, वहां की वर्फ़ पहले से ही ग़ायब दीखी, और अप्रैल की तेज़ धूप में पानी ऐसा चमचमाता लगा, जैसे कि उसके ऊपर चांदी की ऊंची-नीची सीढ़ियां बनी हों। लेकिन जहां वर्फ़ का अम्बार दो फुट गहरा रहा, वहां नदी पत्थर-सी कड़ी पड़ी रही। नतीजा यह कि टूटे हुए सिरे पर टहनियां बिछाई गई। एक-एक कर सभी घोड़ों को पार पहुंचाया गया, फिर खुद उस तरफ़ पहुंचा गया। एक पड़ताली गश्ती-टुकड़ी आगे-आगे भेजी गई और येलान्स्काया ज़िले की तरफ़ बढ़ना शुरू कर दिया।

दूसरे दिन ग्रिगोरी को सुयोग से अपने गांव तातारस्की का एक आदमी मिल गया। वह काना-बूढ़ा अपने नाते-रिश्तेदारों से मिलने ग्रियाजनोव्स्की जा रहा था, और उस गांव के पास ही, अनायास ही, जत्थे के सामने पड़ गया था।

ग्रिगोरी बूढ़े को एक ओर ले गया। पूछा—"बाबा, मेरे बच्चे तो ठीक-ठाक, सही-सलामत हैं न ?"

"ऊपर वाले का रहम है, ग्रिगोरी-पैन्तेलेयेविच ! सभी सही-सलामत और ठीक-ठाक हैं।"

"बाबा, मुझे एक बड़ी जरूरी बात कहनी है। तुम गांव में मेरी बहन येवदोकिया-पैन्तेलेयेवना को मेरा बहुत-बहुत प्यार कहना···प्रोखार-ज़िकोव को मेरी याद दिलाना, और अकसीनिया से कहना कि मैं जल्दी ही आऊंगा। लेकिन, खयाल रखना कि मुझसे यहां मिलने की बात किसी के सामने भूल से भी होंठों पर न लाना। करोगे न इतना ?"

"करूंगा···ज़रूर करूंगा, बेटे···तुम डरो मत···तुमने जो-कुछ

कहा है, मैं वह सब-कुछ, वैसे ही कह दूंगा उन लोगों से।"

"गांव की और खबर क्या है?"

"कोई बात नई नहीं है···सब-कुछ बदस्तूर है।"

"कोशेवोइ अब भी सदर है?"

"हां, अब भी सदर वही है।"

"वह मेरे घरवालों को सताता तो नहीं?"

"मैंने तो कुछ सुना नहीं। इसके मानी है कि उन लोगों को हाथ नहीं ही लगाया होगा उसने। फिर, उन्हें तंग वह करेगा भी क्यों? तुम्हारी हरक़तों के लिए तुम्हारे घरवाले जिम्मेदार नहीं हैं।"

"वैसे गांव में लोग क्या कहते हैं मेरे बारे में?"

बूढ़ा नाक छिनकता और काफ़ी देर तक लाल रूमाल से अपनी मूंछें और दाढ़ी पोंछता रहा। इसके बाद सवाल टालने की कोशिश करते हुए बोला—"ऊपर वाला जाने···तरह-तरह की बातें सुनाई पड़ती हैं···जो जिसके जी में आता है, वही कह देता है···वैसे तुम सोवियत हुकूमत से समझौता जल्दी ही कर नहीं रहे?"

ग्रिगोरी इस सवाल का जवाब देता भी तो क्या देता? टुकड़ी के पीछे-पीछे जाने की कोशिश करते, अपने घोड़े को रोकते हुए मुस्कराकर बोला—"कुछ नहीं कह सकता, बाबा! फ़िलहाल तय कुछ भी नहीं है।"

"यह क्यों? हमने सिरकैशियनों से लड़ाई लड़ी, तुर्कों से लड़ाई लड़ी, और आखिर में सुलह हो गई। लेकिन तुम···तुम सब अपने ही लोग हो और एक-दूसरे के साथ समझौता नहीं कर सकते···यह बात ठीक नहीं है, ग्रिगोरी···पैन्तेलेयेविच···सचमुच यह बात बिलकुल ठीक नहीं है···ऊपर वाला सब पर अपना रहम बरसाता है···वह सबको देखता है···मगर याद रखना मेरी बात कि वह तुम सबको माफ़ नहीं करेगा···। मैं तुमसे पूछता हूं कि नीले आसमान वाले की मोहब्बत में यक़ीन रखने वाले रूसी क्या आपस में ही इस तरह लड़ते जा सकते हैं कि यह रगड़ा कहीं खत्म हो ही नहीं। थोड़ी-बहुत लड़ाई की बात और है···लेकिन तुम एक-दूसरे की जान के गाहक रहे हो, और इसको यह

चौथा साल है···मेरे बूढ़े दिमाग़ में तो यह आता है कि अब यह मारकाट खत्म होनी चाहिए।"

ग्रिगोरी ने विदा ली और अपनी टुकड़ी को पकड़ने के लिए घोड़ा सरपट दौड़ाया। बूढ़ा अपनी लकुटिया पर झुका आस्तीन से अपनी खाली आँख का गढ़ा रगड़ता और दूसरी तेज़ आँख से ग्रिगोरी को एक-टक देखता रहा। फिर उसके शानदार व्यक्तित्व की सराहना से उसका मन भर उठा तो धीरे-धीरे फुसफुसाकर अपने-आपसे बोला—'क्या शानदार कज्ज़ाक है···क्या शानदार बदन है···क्या शानदार सब-कुछ है···मगर आदमी चौपट है···रास्ते से भटक गया है। हक़ की बात तो सिरकेशियनों से लड़ना है। मगर देखो कि इसके जी में समाया क्या है। आखिर सरकार के लिए जाने देने का खलल क्यों है इनके दिमाग़ों में? आखिर सोच क्या रहे हैं, ये तमाम जवान कज्ज़ाक? ग्रीशा से कुछ उम्मीद रखना वैसे भी बेकार है···उस खानदान के तो कुल-के-कुल लोग चौपट रहे हैं और जिन्दगी-भर चौपट रहे हैं! इसका बाप मर गया। मगर ज़िन्दा था तो बिलकुल इसी मिट्टी का बना था··· और उसका बाबा प्रोकोफ़ी···मैंने तो उसे भी देखा है···आदमी क्या था, जंगली सेब था पूरा! लेकिन सवाल तो यह है कि इसके सिवाय और भी तो कज्ज़ाक हैं, और उनकी तबीयत में आखिर क्या है?··· ऊपर वाला मेरा गुनाह माफ़ करे···मेरी समझ में कुछ-नहीं आता···।'

अब फ़ोमीन ने किसी नए गाँव पर अधिकार किया तो वहाँ के लोगों की कोई सभा नहीं बुलाई। अनुभव से उसने बहुत-कुछ सीखा और प्रचार बिलकुल बेमतलब लगने लगा। उसे अपनी टोली के लोगों को ही साथ बनाए रखने के लिए इतना प्रयत्न करना पड़ा कि नए लोगों को जत्थे में शामिल करने की उसने कोशिश ही नहीं की। वह प्रायः उदास और गुमसुम रहने लगा और मन की शांति के लिए वोद्का की शरण लेने लगा। होते-होते यह हालत हो गई कि जब भी रात में किसी गाँव में पड़ाव डाला गया, शराबखोरी की महफ़िलें गरम हो उठीं और अपने अतामान की देखा-देखी उसके साथ के लोग भी ढालने लगे।

नतीजा यह हुआ कि रोबदाब-कायदा-क़ानून खत्म हो गया, और लूट-पाट आम हो गई। जत्थे के पास पहुंचने पर जो भी सोवियत कर्मचारी जानें बचाने के लिए भागे उनके घर की एक-एक चीज समेट ली गई और लादने लायक सभी सामान घोड़ों पर लाद लिया गया। कई लोगों ने तो कई बार काठियों वाले थैलों में चीजें इस तरह ठूंस-ठूंसकर भरीं कि वे फटने-फटने को हो गए। एक दिन ग्रिगोरी ने अपने जत्थे के एक आदमी को सिलाई की मशीन लेकर जाते देखा।

मशीन हाथ से चलाने की थी और उस आदमी ने रासें काठी की कमानी में अटकाकर चीज को बाईं बगल में दबा रखा था···।

ग्रिगोरी ने उसे इस काम से रोका, मगर उसने एक नहीं सुनी और ग्रिगोरी के चाबुक का स्वाद चखने पर ही उस मशीन को जहां-का-तहां छोड़ा।

उस दिन शाम को ग्रिगोरी और फ़ोमीन के बीच काफी तेज बातें हुईं। हुआ यह कि शराब चलती रही और दोनों कमरे मे अकेले रहे। फ़ोमीन मेज़ के पास बैठा रहा और उसका चेहरा नशे से तमतमाया रहा। ग्रिगोरी, लम्बे-लम्बे डग भरता, कमरे में चहलक़दमी करता रहा। सहसा ही फ़ोमीन गुस्से से चमकते हुए बोला—"बैठ जाओ··· इस तरह टहलते मत फिरो···मुझे अच्छा नही लगता।" पर ग्रिगोरी ने उसके शब्दों की ओर कुछ भी ध्यान नही दिया और वह उस छोटे कमरे में उसी तरह घूमता रहा। आखिरकार बोला—"फ़ोमीन, मेरा जी ऊब गया इस तूफान से! यह लूटपाट और यह शराबखोरी बन्द करो।"

"क्यों, कल रात कोई खराब सपना देखा क्या?"

"ज्यादा मजाक अच्छा नहीं···लोग हमारे बारे में उल्टी-सीधी बातें करने लगे है।"

फ़ोमीन ने हिचकते हुए कहा—"यह तो मेरे साथ-साथ तुम भी जानते हो कि मैं इन जवानों का कुछ नहीं कर सकता।"

"लेकिन तुम इनका कुछ करने की कोशिश तो कर नहीं रहे।"

"खैर छोड़ो, मुझे तुमसे सीख नही लेनी···साथ ही यह भी है कि लोग भी इस लायक नही है···हम इन सूअरों के लिए मरते फिर रहे

हैं, मगर यह सब···अब तो मैं सिर्फ़ अपनी फ़िक्र करूँगा···और बस !"

"लेकिन अजब यह है कि तुम तो अपनी फ़िक्र भी नहीं कर रहे। इस सदाबहार शराबखोरी की वजह से तुम्हें तो सोचने का भी वक़्त नहीं मिलता। पिछले चार दिनों से तुम आदमी नहीं रहे हो, और तुम्हारे साथ ही बाक़ी लोग भी ढाल रहे हैं। वे तो चौकियों पर तैनात होने पर भी पीते हैं और रात-भर पीते रहते हैं। आखिर तुम्हारा इरादा क्या है ? तुम चाहते हो कि हम किसी गाँव में फँस जाएँ और शराब के ये दौर चलते रहें कि काटकर फेंक दिए जाएं ?"

"और तुम्हारा खयाल है कि मौत से बच सकते हैं हम !" फ़ोमीन ने मज़ाक बनाते हुए कहा—"एक-न-एक दिन तो मरना ही है। जिस बर्तन में पानी भरकर लाया जाता है, वह भी एक-न-एक दिन तो टूट ही जाता है। यह बात तुम जानते हो न ?"

"अगर ऐसा है तो चलो, कल ही व्येशेन्स्काया चलें और हथियार डाल दें कि लो, आ गए हम···हम अपने को सौंपते हैं तुम्हें !"

"नहीं, फ़िलहाल तो हम जिन्दगी का मज़ा लेंगे।"

ग्रिगोरी मेज़ की दूसरी तरफ़ ठहर गया, पैर फैलाकर खड़ा हो गया और सधे हुए शांत स्वर में बोला—"अगर तुम जत्थे के लोगों को कायदे में लाकर यह लूटपाट और शराबखोरी खत्म न करोगे तो मैं तुम्हारा साथ छोड़ दूंगा, और आधे लोगों को अपने साथ ले जाऊंगा।"

"ज़रा कोशिश करके देखो !" फ़ोमीन ने धमकी दी।

"इसमें ज़्यादा कोशिश की ज़रूरत नहीं पड़ेगी···"

"देखो···तुम···तुम इस तरह मुझे धमकाना बन्द करो।" फ़ोमीन ने अपनी पिस्तौल के केस पर हाथ रखा।

'पिस्तौल हाथ में न लेना, वरना तुम्हारी गोली से पहले मैं तुम्हारे पास पहुँच जाऊँगा।" ग्रिगोरी ने जल्दी-जल्दी कहा और पीले पड़ते हुए अपनी तलवार म्यान से आधी बाहर निकाल ली।

फ़ोमीन ने हाथ मेज पर रख लिए और मुस्कराने लगा—"किसलिए परेशान कर रहे हो तुम मुझे ? मेरा सिर यों ही फटा जा रहा है। ऊपर से तुम बेवकूफी की बातें कर रहे हो। अपनी तलवार म्यान

में कर लो। यानी मैं तुमसे मज़ाक भी नहीं कर सकता क्या? बिल-कुल छुई-मुई के फूल मालूम होते हो—बिलकुल सोलह साल की लड़की की तरह···"

"मेरे जो मन में था, मैंने तुमसे कह दिया···अब इसे समझ लो और सहेजकर दिल में रख लो···हममें से हर एक का दिमाग़ तुम्हारा जैसा तो है नहीं।···"

"यह तो मैं जानता हूँ।"

"बस तो इसे समझ लो और हमेशा याद रखो! तुम्हें कल सुबह हुक्म देना है कि सारे थैले खाली कर दिए जाएँ···हमारे इन फ़ौजियों के ये घोड़े फ़ौजी काम के लिए हैं। वे किसी कारवाँ के लद्दू-घोड़े नहीं हैं। उस पर मज़ा यह है कि ये लुटेरे आम जनता के नाम पर जान की बाज़ी लगाने का दावा भी करते हैं। इन्होंने लूट का सामान लाद लिया है और अब ये बिसातियों की तरह गाँव-गाँव सौदागरी करते चलते हैं। मेरी तो गर्दन शर्म से झुक जाती है। सोचता हूँ कि मैं तुम्हारे इस जत्थे में आखिर शामिल हुआ ही क्यों?" ग्रिगोरी ने गुस्से और नफ़रत से ज़मीन पर थूका और वहाँ से हटकर खिड़की के पास जा खड़ा हुआ।

फ़ोमीन ने हँसी का ज़ोर का ठहाका लगाया और बोला—"अभी एक बार भी किसी घुड़सवार टुकड़ी ने दबोचा नहीं हमें। जब कोई शिकारी किसी मोटे-तगड़े भेड़िए को दौड़ाता है तो भेड़िए की सारी खाई-पी डकार में ही निकल जाती है। मतलब यह है कि अगर हमारे इन बदमाशों का भी क़ायदे से शिकार किया जाता तो इनकी यह सारी मस्ती हिरन हो जाती।···तो ठीक है, मेलेखोव, तुम बेकार परे-शान न हो, सब-कुछ दुरुस्त कर लूंगा। बात यह है कि मेरे मुंह का ज़ायक़ा ज़रा बिगड़ गया था, और इस ग़फ़लत में इनकी लगाम मुझसे कुछ ढीली हो गई थी। अब उसे खींच दूंगा थोड़ा। हम अपनी टुकड़ी तार-तार नहीं होने देंगे और दुख-दर्द का जाम एक साथ पिएँगे।"

और उन दोनों की यह बातचीत खत्म भी न हो पाई कि पातगोभी का भाप छोड़ता शोरबा लेकर घर की मालकिन कमरे में आ गई।

साथ ही चुमाकोव और दूसरे कज्जाक भी अन्दर घुस आए।

लेकिन बातों का असर हुआ। अगले दिन सवेरे फ़ोमीन ने हुक्म देकर सभी थैले खाली करवाए और सामान अपनी देख-रेख में बाहर पहुँचाया। इस सिलसिले में एक घराऊ-लुटेरे ने बड़ी फूं-फां की और लूट का माल देने को किसी तरह राजी ही न हुआ। इस पर फ़ोमीन ने उसे खड़े-खड़े गोली से उड़ा दिया और अपने बूट से उसकी लाश एक तरफ़ को ठेलते हुए बोला—"उठाकर बाहर फेंक दो इसे। सूअर के बच्चो, यह लूटपाट बन्द…करो बहुत हो चुकी। सोवियत हुकूमत के खिलाफ़ मैंने तुम्हें इसलिए उभारा था? जिन्दा तो जिन्दा मुर्दा दुश्मन का पतलून तक उतार लेने का हक तुम्हें है। और चाहो तो उतार सकते हो। लेकिन खबरदार जो उनके घर के लोगों को तुमने उँगली से भी छुआ। हम औरतों से लड़ने नहीं आए, और जो ऐसा करेगा, उसकी वही हालत होगी जो इस गधे की हुई है!"

फौजियों के बीच धीरे-धीरे भनभनाहट शुरू हुई, और फिर खत्म हो गई।

इस तरह व्यवस्था स्थापित हो गई-सी लगी। टोली के लोग दो-तीन दिन तक दोन के बायें किनारे पर चक्कर काटते, स्थानीय-रक्षा-दलों के छोटे-छोटे दस्तों से टक्कर लेते और उन्हें बरबाद करते रहे।

फिर टुकड़ी शुमिलिन्स्काया ज़िले में पहुँची तो कापारिन ने वोरोनेज प्रान्त के सीमा-क्षेत्र में प्रवेश करने का प्रस्ताव सामने रखा। बोला—"वहाँ के लोगों ने अभी-अभी सोवियत हुकूमत के खिलाफ़ सिर उठाया था। इसलिए वे हमारी बड़ी मदद करेंगे।" लेकिन जवाब में फ़ोमीन ने अपनी तजवीज़ सामने रखी तो सभी ने उसका एक स्वर से समर्थन किया। फ़ोमीन बोला—"हम अपने इलाके के बाहर क़दम न रखेंगे।"

परन्तु बाद में टुकड़ी के लोगों की कई बैठकें हुईं, और फ़ैसला बदलना पड़ा, क्योंकि उन्हें एक घुड़सवार टुकड़ी से मुठभेड़ बचाने के लिए चार दिन तक बराबर पूर्व की ओर पीछे हटना पड़ा। यह टुकड़ी उनका पीछा करते-करते कज़ान्स्काया ज़िले से यहाँ तक चली आई थी।

लेकिन उनके रास्ते रोकना कठिन हो उठा क्योंकि खेतों में बसन्त, कालीन कार्य चलता रहा, और स्तेपी के दूर-से-दूर स्थानों के लोग भी काम में जुटे रहे।

सो उस दिन टुकड़ी सदा की तरह, रात में पीछे हटी, और सवेरा होने पर घोड़ों के दाने-पानी के लिए रुकी कि दुश्मन की पड़ताली गश्ती टुकड़ी के लोग घोड़ों पर सवार पास ही नजर आए और हल्की मशीन-गन देखते-देखते खड़खड़ाने लगी। ऐसे में फ़ोमीन के लोगों ने घोड़ों के मुंह में जल्दी-जल्दी जैसे-तैसे लगामें डालीं और उड़ दिए। व्येशेन्स्काया जिले में मेलनीकोव गांव के पास फोमीन को दुश्मन को चकमा देने में कामयाबी मिल गई और वह अपनी टुकड़ी के साथ साफ़ बच निकला। फिर अपनी ही जासूसी गश्ती टुकड़ियों की रिपोर्ट से उसे पता चला कि लाल-घुड़सवार टुकड़ी की कमान, बुकानोव्स्काया जिले के एक बहुत ही जहीन और पक्के-दिल आदमी के हाथ में है···उस टुकड़ी में इस टुकड़ी से लगभग दुगुने लोग हैं···छः हल्की मशीनगनें हैं और ताज़ा घोड़े हैं···इन घोड़ों ने लम्बी मंज़िलें तय नहीं की हैं और ये ज़रा भी थके नहीं हैं।

ऐसी परिस्थिति में फ़ोमीन के लिए लड़ाई बरकाना और अपने फ़ौजियों और घोड़ों को आराम देना ज़रूरी हो गया। उसने सोचा—'खुली लड़ाई में तो मुमकिन है नहीं···पर अब मैं छिपकर एकदम धावा बोलकर लाल घुड़सवार टुकड़ी को तोड़ूँगा। इसके बाद वह पहले की तरह हमारा पीछा न कर सकेगी और शायद उससे ही हमें कुछ मशीनगनें और राइफ़ल की गोलियाँ भी मिल जाएँगी।'

परन्तु फ़ोमीन के अनुमान गलत निकले और ग्रिगोरी के मन में दस्ते को लेकर जो शंका थी उसकी पुष्टि १८ अप्रैल को हो गई।

१७ अप्रैल की शाम को फ़ोमीन और दस्ते के आम फ़ौजियों ने धुआंधार पिलाई की। तड़के उन्होंने रात के पड़ाव वाला गांव छोड़ा। परन्तु रात-भर के जागरण के कारण अधिकांश लोग घोड़ों की पीठों पर बैठे-ही-बैठे ओंघाने लगे। सवेरे कोई नौ बजे वे ओजोगिन गांव के पास के जंगल के बाहर रुके। फ़ोमीन ने गारद तैनात कर घोड़ों को जई

खिलाने का हुक्म दिया।

इसी समय पूर्व की ओर से अंधड़-सा चलने लगा। रेतीली गर्द के भूरे-भूरे बादल क्षितिज पर नीचे उतर आए और उन्होंने पूरे स्तेपी पर अँधेरे की एक चादर-सी तान दी। सूरज की किरणें कोशिश करके भी यह चादर भेद नहीं पाईं। लोगों के बरानकोटों के सिरे और घोड़ों की अयालों और दुमों के बाल हवा में उड़ने लगे। जानवरों ने हवा की ओर पीठ की और जंगल के किनारे फैली हॉथर्न की झाड़ियों के बीच जाकर पनाह ली। गर्द के रेतीले कण लोगों की आँखों में आ-आकर पड़ने लगे, और बिलकुल पास की चीज़ को भी देख पाना असम्भव हो गया।

ग्रिगोरी ने अपने घोड़े का मुंह और आंखें बड़ी सावधानी से साफ़ कीं, जई की कंडिया उसकी गर्दन में लटकाई और कापारिन के पास गया। कापारिन बरानकोट में जई भरकर अपने घोड़े को खिलाता मिला।

"क्या जगह चुनी है तुमने ठहरने के लिए!" ग्रिगोरी ने चाबुक से जंगल की ओर इशारा करते हुए कहा।

कापारिन ने अपने कन्धे झटके, "मैंने तो उस बेवक़ूफ़ से कहा था, लेकिन उससे बहस कौन करे!"

"हमें स्तेपी के अन्दर या गाँव के बाहर रुकना चाहिए था।"

"जंगल से हमला हो सकता है? क्या खयाल है तुम्हारा?"

"हां, हो सकता है।"

"मगर, दुश्मन तो दूर है···"

"मगर दुश्मन पास भी तो हो सकता है···वे कोई पैदल फ़ौजी तो हैं नहीं।"

"जंगल छूंछा है इस वक़्त···वे लोग आएंगे तो दिखलाई पड़ जाएंगे।"

"मगर उन्हें देखेगा कौन? क़रीब-क़रीब सभी लोग तो सो रहे हैं। मैं तो सोचता हूं कि गारद के लोग तक शायद ही जाग रहे हों।"

"कल रात की पिलाई के बाद तो लोग खड़े होने की हालत में नहीं

हैं···कोई जगा नहीं सकता उन्हें !" कापारिन के माथे पर बल पड़े, जैसे कि उसे बहुत दर्द महसूस हो रहा हो। फिर धीरे से बोला—"ऐसा रहबर है हमारा कि हमारी नाव तो डूबी समझो। आदमी बोतल की तरह खोखला है और ऐसा बेवकूफ है कि क्या कहो! मैं कहता हूँ कि कमान तुम अपने हाथों में क्यों नहीं ले लेते? क्यों नहीं चाहते तुम? कज्जाक तुम्हारा अदब करते हैं और बहुत खुशी-खुशी तुम्हारा हर हुक्म बजाएँगे।"

"मैं कमान अपने हाथों में लेना बिलकुल नहीं चाहता। मैं तो दो-चार दिन का मेहमान हूँ यहाँ।" ग्रिगोरी ने उत्तर दिया और अपने घोड़े की ओर बढ़ा। परन्तु बिना सोचे-समझे अपने अन्दर की बात सामने रख देने के कारण उसे मन-ही-मन दुख होने लगा।

कापारिन ने बरानकोट की बची-खुची जई जमीन पर उँडेली और ग्रिगोरी के पीछे लपका। फिर उसके साथ-साथ बढ़ते काँटों से भरी एक शाख तोड़ते और फूली हुई कलियों को उँगलियों से दबाते हुए बोला—"मेलेखोव, मेरा खयाल है कि अगर हम मास्लाक के ब्रिगेड जैसी किसी बड़ी सोवियत की खिलाफ़त करने वाली फ़ौज में शामिल न होंगे तो अब बहुत देर तक क़दम जमाए रखना मुमकिन न होगा। मास्लाक इलाके के दक्खिनी हिस्से में कहीं घूम रहा है। हमें उससे मिलना चाहिए वरना एक दिन हम गाजर-मूली की तरह काटकर फेंक दिए जाएँगे···।"

"लेकिन यह तो बाढ़ का वक़्त है। हम दोन पार नहीं कर सकते।"

"अभी न सही—लेकिन बाढ़ का पानी उतरते ही हमें पीछे हट जाना चाहिए···क्या राय है तुम्हारी?"

ग्रिगोरी ने कुछ सोचने के बाद जवाब दिया—"ठीक है···हमें यह इलाक़ा तो खाली कर ही देना चाहिए···यहाँ लटके रहना बिलकुल बेकार है···।"

कापारिन और उमंग में आ गया। बोला—"हमें उम्मीद थी कि लोग हमारा साथ देंगे। मगर इस मानी में सिर्फ़ मायूसी हाथ लगी हमें। अब तो फ़ोमीन को जैसे भी हो, समझाना चाहिए, बिना मतलब

पूरा इलाक़ा मंझाते फिरने से रोकना चाहिए और किसी और मजबूत फ़ौज का दामन पकड़ने पर ज़ोर देना चाहिए।"

ग्रिगोरी बकवास सुनते-सुनते थकने लगा। इस बीच उसने निगाह अपने घोड़े पर गड़ा रखी। कंढिया खाली होते ही उतारी, मुंह में लगाम दी और तंग कसी।

कापारिन ने कहा—"अब तो एक अर्से तक हम आगे बढ़ नहीं सकेंगे। इसलिए यह जल्दबाजी और हड़बड़ी बिलकुल बेमानी है।"

ग्रिगोरी ने जवाब दिया—"अच्छा हो कि तुम जाओ और अपना घोड़ा कसो। बाद में ज़ीन कसने का मौक़ा न मिलेगा।"

कापारिन ने उसे बहुत ही घूरकर देखा और गाड़ियों की क़तार के पास खड़े अपने घोड़े की तरफ़ क़दम बढ़ाए।

ग्रिगोरी अपने घोड़े को लगाम से साधे फ़ोमीन के पास पहुंचा तो कमाण्डर, उबले चूज़े का पंख कुटकुटाता, अपने लबादे पर टांग फैलाए पड़ा मिला। वह उसे देखते ही एक तरफ को खिसक गया और ग्रिगोरी को बैठने का इशारा करते हुए बोला—"आओ बैठो, थोड़ा आराम कर लो।"

"अब यहां से निकल चलना चाहिए···आराम के लिए वक़्त नहीं है।" ग्रिगोरी ने कहा।

"घोड़े दाना-पानी कर लें तो हम लोग आगे बढ़ें।"

'घोड़ों को दाना-पानी बाद में भी कराया जा सकता है।"

'ऐसी जल्दी क्या पड़ी है?" फ़ोमीन ने हड्डी लुकाई और हाथ लबादे में पोंछे।

"दुश्मन हमें यहां आ दबोचेगा···बहुत ही खतरनाक जगह है यह।"

"कैसे आ दबोचेंगे हमें वे शैतान के बच्चे? गश्ती टुकड़ी के लोग अभी-अभी आए थे। बतला गए हैं कि पहाड़ी पर कहीं कोई आदमी नहीं है। लगता है कि लोग रास्ते में भटक गए हैं कहीं। अगर ऐसा न होता तो हमारा पीछा कर रहे होते। जहां तक हमले का सवाल है, बुकानोव्स्काया जिले से हमें इस तरह का कोई खतरा नहीं होना चाहिए। वहां का सैनिक कमीसार, आदमी तो बहादुर है, लेकिन उसकी

कमान में फ़ौजी बहुत नहीं है और वह सामने आकर हमारा सामना शायद ही करे। मेरा ख़याल है कि यहाँ हम जी-भर आराम कर लें, इस हवा को रुक जाने दें और तब यहाँ से चलें।···ग्रिगोरी बैठो···लो थोड़ा-सा भूजा खाओ···इस तरह सवार क्यों हो मेरी खोपड़ी पर ? मेलेखोव, मुझे लगता है कि अब तुम बुजदिल हो गए हो, और हालत यह हो गई है कि जो भी झाड़ी सामने आएगी, तुम उसके चारों ओर घोड़ा नचाते फिरोगे।" उसने अपने हाथ से आधा घेरा बनाया और जी खोलकर हँसा।

ग्रिगोरी उसे बुरा-भला कहते हुए वहाँ से चला आया, एक झाड़ी में घोड़ा बाँधकर पास ही लेट गया और हवा से बचाव करने के लिए बरानकोट का पल्ला चेहरे पर खींच लिया। हवा ने सीटियाँ बजा-बजाकर और बदन के ऊपर झुकी लम्बी-सूखी घास की पत्तियों ने सर-सर की मधुर लोरियाँ सुना-सुनाकर उसे सुला दिया।

फिर, उसकी आँख तब खुली जब मशीनगनें खड़खड़ाने लगीं और उनका यह सिलसिला काफ़ी देर तक चलता रहा। उसने चौंककर उठते ही झटके से अपना घोड़ा खोला। इसी समय बाक़ी सभी आवाजों को दबाता हुआ फ़ोमीन का स्वर गूंजा—"टुकड़ी घोड़ों पर सवार हो।" इस बीच जंगल की दाईं ओर से दो-तीन मशीनगनें गोलियाँ बरसाने लगीं।

ग्रिगोरी घोड़े पर सवार हुआ। उसने एक नजर में ही सारी स्थिति का अनुमान लगा लिया। जंगल के सिरे पर गर्द के बादल के कारण देखना सहज न रहा, तो कोई पचास लाल सैनिक धावा बोलते और पीछे हटकर पहाड़ियों तक पहुँचने का पूरा रास्ता काटते समझ पड़े। उनकी चमचमाती तलवारें हलकी-हलकी धूप में निलछरा रँग घोलती लगी। जंगल के झाड़ी से ढके, एक ढूह से मशीनगनें ताबड़तोड़ गोलियाँ उगलती रहीं। बाईं तरफ़ लाल सेना की लगभग आधी स्क्वैड्रन के लोग चुपचाप तलवारें लपलपाते हुए घेरे को पूरा करने की कोशिश में अपने घोड़े सरपट दौड़ाते रहे। ऐसे में विद्रोही-टुकड़ी के बचाव का सिर्फ़ एक रास्ता रहा कि वह बाईं ओर के हमलावरों की पतली क़तार

भेदे और दोन की तरफ़ पीछे हटे। सो, ग्रिगोरी ने चिल्लाकर फ़ोमीन से कहा—"मेरे पीछे-पीछे चले आओ।···"और अपनी तलवार म्यान से निकालकर अपना घोड़ा हवा की रफ़तार से दौड़ा दिया। फिर कोई चालीस गज निकल जाने के बाद उसने मुड़कर देखा तो क़रीब बीस ग़ज के फ़ासले पर फ़ोमीन, कापारिन, चुमाकोव और कई दूसरे लोग अपने घोड़े सरपट दौड़ाते हुए आते नज़र आए। अब जंगल की मशीनगनें शान्त हो गईं और सिर्फ़ धुर दक्षिण वाली मशीनगन रुक-रुककर मालगाड़ियों के आसपास फ़ोमीन के साथियों को अपने क्रोध का शिकार बनाती रही। ज़रा देर बाद उस मशीनगन ने भी जैसे हाथ खींच लिया तो ग्रिगोरी को लगा कि दुश्मन कैम्प के ऐन सिरे पर पहुँच गया है, और पीछे के लोग तलवार के घाट उतारे जा रहे हैं। उनके इस अनुमान की आधार रही मायूसी से भरी चीख़-पुकार और अपने बचाव के लिए चलाई गई छिटपुट गोलियाँ। लेकिन पीछे मुड़कर देखने का समय उसके पास नहीं था। यानी, उसकी ओर उमड़ते लाल सैनिकों की ओर उसका घोड़ा सरपट दौड़ता रहा कि भेड़ की खाल के छोटे कोट वाले एक फ़ौजी को उसने अपने निशाने के लिए मन-ही-मन तय कर लिया। फ़ौजी के भूरे घोड़े की रफ़तार कोई बहुत तेज़ न रही। एक क्षण में ही ग्रिगोरी के सामने कौंध गया घोड़े का झाग से नहाया सफ़ेद सीना, घोड़े पर सवार जवान का उत्तेजना से तमतमाया चेहरा और उसके पीछे, दोन तक फैलता चला गया स्तेपी के मैदान का पसारा। दूसरे ही क्षण उसके लिए ज़रूरी हो गया विरोधी का वार बचाना और अपनी तलवार हाथ में साधना।

बस, तो, घुड़सवार अभी कोई दस गज के फ़ासले पर रहा कि ग्रिगोरी ने अपना बदन तेज़ी से बाईं तरफ़ झटका, सिर के ऊपर तलवार की तेज़ सनसनाहट महसूस की और दूसरे घोड़े की बग़ल से गुज़रते हुए, सीधे होकर सवार के सिर पर अपनी तलवार से भरपूर वार किया। हाथ ने जैसे झटका अनुभव ही नही किया। लेकिन पीछे मुड़ने पर उसने देखा कि आदमी काठी से धीरे से नीचे खिसका और भेड़ की खाल के पीले कोट की पीठ ख़ून की गाढ़ी धार से भर उठी।

भूरा घोड़ा मुंह ऊपर उठाए, तेज़ दुलकी मारता इस तरह किनारा काटने लगा जैसे कि अपनी परछाईं से डर रहा हो।

ग्रिगोरी अपने घोड़े की गर्दन पर झुक गया और उसने अपनी तलवार नीची कर ली। उसके सिर के ऊपर गोलियाँ तेज़ी से सर्राटे भरती रहीं। जानवर के कान सिर से लग गए और सिरों पर पसीने की बूंदें झलकने लगीं। ग्रिगोरी ने अपने ऊपर चलाई गई गोलियों की सीटियाँ और अपने घोड़े के तेज़ी से हाँफने की आवाज़-भर सुनी। उसने मुड़कर देखा तो उसकी नज़र फ़ोमीन और चुमाकोव पर पड़ी। कापारिन अब अब भी दूर उनसे कोई सौ क़दम के फ़ासले पर रहा। दूसरे ट्रूप का, स्तेरलयादनिकोव नाम का केवल एक लँगड़ा सैनिक हमला करने वाले दो घुड़सवार फ़ौजियों से जूझता किसी तरह आगे बढ़ता लगा। समझ में आया कि फ़ोमीन के पीछे भागने वाले बाक़ी सभी आठ या नौ सैनिक तलवार के घाट उतार दिए गए हैं, उनके घोड़े दुमें लहराते सभी दिशाओं में भाग रहे हैं, लाल सैनिक उनका पीछा कर उन्हें पकड़ रहे हैं, फ़ोमीन के फ़ौजी का सिर्फ़ एक कुम्मैत घोड़ा अपने मालिक की लाश घसीटता कापारिन की बग़ल में हींसता हुआ सरपट दौड़ रहा है और मालिक है कि गिरते समय उसका पैर रक़ाब में फँसा-का-फँसा रह गया है।

ग्रिगोरी ने बलुहे ढूह के पार पहुँचने के बाद अपना घोड़ा रोका, कूदकर ज़मीन पर आते हुए अपनी तलवार झटके से म्यान में डाली, मात्र एक हफ़्ते की ही ट्रेनिंग में कुशल अपने घोड़े को देखते-देखते लिटाया और इस आड़ के पीछे से अपनी सारी-की-सारी गोलियाँ चला डालीं। पर, हड़बड़ी और परेशानी के कारण निशाने सधे नहीं और सिर्फ़ आख़िरी गोली से एक लाल सैनिक का घोड़ा गिर सका। इस पर भी फ़ोमीन के पाँचवें फ़ौजी को पीछा करने वालों से जान बचाकर भागने का मौक़ा मिल गया।

"घोड़े पर सवार हो और यहाँ से उड़ दो, वरना दुश्मन के हाथ पड़ जाओगे।" फ़ोमीन ने ग्रिगोरी के बराबर आने पर चिल्लाकर कहा।

खून खूब बहा। पूरी टुकड़ी के लोग मारे गए। सिर्फ़ पाँच फ़ौजी जान बचाकर भाग सके। उन्हें अन्तोनोवस्की गाँव तक खदेड़ा गया और गाँव के चारों ओर के जंगल में उनके छिप जाने पर ही दुश्मन ने उनका पीछा करना छोड़ा।

जो पांच फ़ौजी बचे उन्होंने पागलों की तरह अपने घोड़े सरपट दौड़ाए और राह में मुँह तक नहीं खोला। इस बीच छोटी-सी नदी पड़ी और वहाँ कापारिन का घोड़ा गिरा तो कुल मिलकर भी उसे उठा न सके। दूसरे घोड़े भी थकान से चूर-चूरकर हो गए। वे लड़खड़ाने लगे, क़दम बढ़ाना मुश्किल हो गया और मुँह से झाग के सफ़ेद थक्के जहाँ-तहाँ ही नजर आने लगे।

ग्रिगोरी ने घोड़े से उतरते और फ़ोमीन की निगाह बचाते हुए कहा—"तुम्हें तो फ़ौजी टुकड़ी की कमान सम्हालने के बजाय भेड़ें चरानी चाहिए।" इस पर फ़ोमीन कुछ नहीं बोला और नीचे उतरकर अपने घोड़े की जीन खोलने लगा। लेकिन फिर उसने जीन छोड़ दी, पौधों से भरे पास के टीले पर जा बैठा, और भय से भरी आँखों से चारों ओर नजर दौड़ाते हुए बोला—"घोड़ों को यहीं छोड़ना पड़ेगा हमें।"

"फिर क्या होगा?" चुमाकोव ने पूछा।

"फिर हम पैदल दोन के उस पार चलेंगे।"

"कहाँ चलेंगे?"

"रात भीगने तक जंगल में रुकेंगे और फिर नदी पार कर फ़िलहाल रुबेज़नी में छिपेंगे। मेरे कितने ही रिश्तेदार हैं वहाँ।"

"एक दूसरा शानदार तीर देखिए आपका।" कापारिन क्रोध से लाल होते हुए बोला—"तुम्हारा खयाल है कि वहाँ दुश्मन हमारी तलाश नहीं करेगा? अरे अब तो वह वहीं खोजेगा हमें। तुम्हारे पास दिमाग है या और कुछ?"

"अच्छा तो वहाँ नहीं चलेंगे तो और कहाँ चलेंगे हम?" फ़ोमीन ने उदास मन से पूछा।

ग्रिगोरी ने गोलियाँ और एक टुकड़ा रोटी अपने थैले से निकाली

और बोला—"पानी, बातचीत कुछ देर तक करने का इरादा है क्या? आओ चलें, घोड़े बांधें, उनकी जीनें खोलें और आगे बढ़ें, वरना लाल फ़ौजी यहीं घर लेंगे हमें।"

चुमाकोव ने हाथ का चाबुक जमीन पर फेंका, पैर से रौंदकर कीचड़ में दबाया और कांपती आवाज में कहने लगा—"तो अब पैदल चलना पड़ेगा। हमारे सभी साथी नेस्तनाबूद हो गए हैं। हे मां-मेरी, दुश्मन ने किस तरह झकझोरा हमें! मुझे उम्मीद नहीं थी कि मैं आज जिन्दा बचकर निकल आऊँगा···मौत अपने सिर पर मंडराती देखी मैंने।"

इसके बाद उन्होंने चुपचाप जीनें खोलीं, चारों घोड़े आल्डार की झाड़ी से बांधे और जीनें अपनी बांहों में भरकर, भेड़ियों की तरह एक-दूसरे के पीछे-पीछे एक-एक की क़तार में बढ़ चले। रास्ते में जहां घनी झाड़ियां मिलीं, वहां उन्हें ओट मिल गई।

: १४ :

बसन्त मे जब दोन में बाढ़ आती है और पानी सभी निचली चरागाहों में भर जाता है, तब भी रुबेजनी गांव के सामने के बाएँ किनारे का एक ऊँचा हिस्सा सूखा और पानी से बिल्कुल अछूता रहता है। फिर यह कि नए सरपतों, शाहबलूतों और निलछरी ओसिर-बेंत की झाड़ियों से भरा यह द्वीप नदी के किनारे की पहाड़ियों से दूर से ही नजर आता है।

गरमी में जंगली हॉप-लतरें पेड़ों के सिरों तक चढ़ जाती है, नीचे की जमीन अभेद्य कांटेदार काली बेरियों की झाड़ियों से भर जाती है, पिलछरी नीली लबलाबी लताएँ झाड़ियों को हर ओर से घेर लेती हैं और खुली जगहों में उपजाऊ मिट्टी के रस से प्राण खींचकर, घास आदमी के क़द से भी ज्यादा ऊँची हो जाती है।

इन दिनों दोपहर में भी जंगल में उजियाले के साथ अंधियारा घुला-सा रहता है। हर तरफ़ शान्ति और तरी रहती है। ऐसे में मौन का तार सिर्फ़ काले और पीले पंखों वाली ओरिओल चिड़ियां तोड़ती हैं

और कोयलें किसी की ज़िन्दगी के अनजिए वर्षों की गिनती करने में एक-दूसरे से होड़ करते थकती नहीं। लेकिन जाड़े में जंगल बिल्कुल लुटा-लुटा-सा वीरान होता है। उसके पैरों में मौन के-से सन्नाटे की बेड़ियाँ पड़ी रहती हैं। आसमान की बदरंगी के बीच पेड़ों के सिरों के काँटे और काले लगते हैं। झुरमुटों के बीच सिर्फ़ भेड़ियों के बच्चे पनाह पाते हैं। वे दिन-भर बर्फ़ से लदे, सूखे घास-पात पर पड़े रहते हैं।

सो ग्रिगोरी मेलेखोव और रक्तपात से बचकर निकल आने वाले दस्ते के बाक़ी लोगों ने यहीं अपना पड़ाव डाला और भरपूर आराम की ज़िन्दगी बिताई। जहाँ तक खाने का सवाल है, फ़ोमीन का चचेरा भाई जो कुछ अच्छा-बुरा सड़ा-गला ले आया, उन्होंने खाया। अक्सर उनका पेट नहीं भरा। पर घोड़ों की काठियों को सिरहाना बनाकर वे जब भी लेटे, जी-भर सोए। रात को उन्होंने पारी-पारी से पहरा दिया और आग भूलकर भी न जलाई कि कोई उनका पता न पा ले।

द्वीप के चारों ओर का बाढ़ का पानी दक्षिण की ओर उमड़ता रहा। जहाँ पुराने देवदार के पेड़ राह के आड़े आए वहाँ वह धमकी देते हुए ढहराया। लेकिन बाद में संगीत-भरे स्वर में मर्मर ध्वनि करता आगे बढ़ा तो बीच की झाड़ियों के सिरे हवा में लहर-लहर उठे।

ग्रिगोरी जल्दी ही आसपास के पानी के निरन्तर कलकल का आदी हो गया। वह ढलवाँ कटे हुए किनारे के पास घंटों पड़ा रहता और पानी के पसारे और धूप से नहाई, बकाइनी धुन्ध में लिपटी नदी के किनारे की पहाड़ियों को घूरता रहता। उसे लगता कि वहाँ···धुन्ध के पार, उसका अपना गाँव है···अकसीनिया है···और उसके अपने बच्चे हैं···तो, उसके उदासी से भरे विचार पर लगाकर उड़ते और वहीं पहुँच जाते। उसे अपने स्वप्न याद आते तो क्षण-भर को उसके मन में हसरत धधकने-सी लगती और वह एक बेजान नफरत से उबलने-सा लगता। लेकिन वह इन भावनाओं को दबाता और दोन के किनारे की पहाड़ियों की तरफ से नजर बचाने की कोशिश करता। उसे दुख-भरी यादों को बेलगाम छोड़ना बेमतलब समझ पड़ता। ज़िन्दगी यों भी काफ़ी दर्दीली महसूस होती। साफ़ है कि लड़ाई में खाए जख्मों, लड़ाई

की मुसीबतों और टाइफस के अपना काम करने के कारण उसके दिल की धड़कन अपना रंग दिखलाती रहती और इसका भान उसे बराबर होता रहता। बाईं छाती के नीचे सीने में कभी-कभी ऐसी पीड़ा उठती कि उसे छेद-छेद देती। तकलीफ इस तरह असह्य हो उठती कि उसके होंठ खुश्क हो जाते और कराह भी गले मे आकर फँस-फँस जाती। लेकिन इस व्यथा से मुक्ति पाने का वह एक टकसाली रास्ता खोज निकालता, यानी वह गीली जमीन से अपना बायाँ सीना सटाकर लेट रहता या अपनी कमीज ठंडे पानी से भिगो लेता, और इसके बाद दर्द धीरे-धीरे, मगर बेमन से उसके तन से रुखसत ले लेता।······

ऐसे में होते-होते वातावरण में ठहराव आ गया और मौसम सुहाना हो गया। अब सिर्फ कभी-कभी ही हवा ऊपर के छोटे-छोटे, उजले बादलों को छेड़ती और वे आसमान के नीलम पर इस पार से उस पार तक उतराते चले जाते। उनके साए बाढ़ के पानी में तैरते हंसों की तरह सरकते और दूर के किनारे को छूते ही उड़नछू हो जाते।······

ग्रिगोरी को किनारे पर भयंकर रूप से उमड़ती तेज़ धार को एकटक देखना, पानी के मर्मर-संगीत को तन्मय होकर सुनना भला लगता। किसी और चीज़ का खयाल करना, मन को तकलीफ़ देने वाली किसी भी चीज़ की बात को दिमाग में आने तक देना उसे खलता। वह सनकी की तरह, अनन्त रूप से बदलते हुए धार के घेरे को घंटों घूरता रहता। लहरियाँ रह-रहकर अपने रूप बदलतीं। जहाँ सरपत की टहनियों, रूखी-सूखी पत्तियों और जड़ों सहित उखड़ी घास के गुच्छों को अपनी सतह पर सहेजे अभी-अभी स्थिर गति से बहती धारा दीख पड़ती, वहीं दूसरे ही क्षण एक अजूबा कुप्पी-सी बन जाती। यह कुप्पी अपनी पहुँच की हर चीज को मरभुखे की तरह गटक लेती और फिर ज़रा देर बाद गायब हो जाती। फिर वही पानी उबलने लगता और बेतरतीब भँवरें चक्कर काटने लगतीं। ये भँवरें कभी सेवार की काली-पड़ी जड़, कभी शाहबलूत की कोई चौड़ी पत्ती और कभी, न जाने कहाँ से बह आए, पुआल के ढेर-के-ढेर तिनके ऊपर उछाल देतीं।

शाम को सूरज डूबने के बाद, पश्चिम का आसमान चेरी की

लाली से नहाया रहता कि किसी लम्बे-चौड़े देवदार के पीछे से चाँद उगता। चाँदनी दोन पर चाँदी की शीतल लपटें बरसा देती। जहाँ हवा बढ़-बढ़कर लहरियों से छेड़ा करती, वहाँ ये लपटें टूटकर परछाइयों में ढल जातीं या काजल के तालों में बदल जातीं। रात के समय पूरे द्वीप में, पानी के कल-कल के गले में बाँहें डालकर उत्तर की ओर उड़ते कलहंसों के दलों के स्वर गूंजते। इन चिड़ियों को रोकने-टोकनेवाला कोई न होता, और वे अक्सर ही द्वीप के पूर्वी सिरे पर बसेरा ले लेतीं। पीछे की तरफ़, पानी-भरे जंगल के बीच नर-मुर्गाबी चुनौती देता, बत्तखें की-की करतीं और ध्रुव-प्रदेश के हंस और आम कलहंस धीरे-धीरे कीकते और आपस में सवाल-जवाब करते···

ऐसे-ही-ऐसे एक दिन ग्रिगोरी दबे-पाँवों किनारे गया तो उसने द्वीप के पास ही हंसों का एक बड़ा झुंड देखा। सूर्य अभी अस्ताचल में ही रहा, पर जंगल के पार उषा की चटख लाली छिटकती मिली। यह लाली लहरों में छनी तो पानी में गुलाब घुले, और सूर्योदय की प्रतीक्षा में पूर्व की ओर मुंह मोड़कर बैठी बड़ी-बड़ी शानदार चिड़ियाँ गुलाबी मालूम हुईं। पर तट पर सरसराहट होते ही वे ज़ोर-ज़ोर से चीखकर उड़ दीं; और जंगल से ऊपर उठीं तो उनके बर्फ़ के-से उजले पंखों की अद्भुत चमक से ग्रिगोरी की आँखों में चकाचौंध पैदा हो गई।

······इस बीच फ़ोमीन और उसके हर साथी ने अपना वक्त, अपने ढंग से काटा। मेहनती स्तेरलयादनिकोव अपने लँगड़े पैर को आराम देते हुए सुबह से रात तक काम में लगा रहता। वह या तो कपड़ों और जूतों की मरम्मत करता रहता या होशियारी से अपने हथियारों की सफ़ाई करता रहता। रात के समय गीली ज़मीन पर सोने से कापारिन के स्वास्थ्य में कोई सुधार नज़र न आता और वह सिर तक भेड़ की खाल खींचे दिनों-दिन धूप में पड़ा खों-खों करता रहता। फ़ोमीन और चुमाकोव, मामूली काग़ज़ को काटकर बनाए गए ताश के पत्ते हर वक्त पीटते रहते। ग्रिगोरी द्वीप में इधर-उधर चहलक़दमी करता और घंटों पानी के किनारे बैठा रहता। वे अब

आपस में कम-ही-कम बातें करते जैसे कि कहने लायक सभी बातें जाने कब की कर और कह चुके हों। एक-दूसरे से मिलते वे खाने के वक्त या शाम को फ़ोमीन के चचेरे भाई की राह देखते वक्त। उन पर हर वक्त ऊब सवार रहती। यानी, यह समझिए कि इस द्वीप के पूरे प्रवास-काल में ग्रिगोरी ने सिर्फ एक बार चुमाकोव और स्तेरलयादनिकोव को देखा कि न जाने कैसे उनके मन से बोझ उतरा और वे दोनों गरजते, हँसी-मजाक करते और रह-रहकर एक जगह पैर पटकते हुए आपस में कुश्ती लड़ने लगे। उनके पैर घुट्टों-घुट्टों तक सफेद बालू में धँस गए। लँगड़ा स्तेरलयादनिकोव जहाँ ज्यादा ताकतवर था, वहीं चुमाकोव ज्यादा फुर्तीला। वे पैरों पर निगाह जमाए, कंधे आगे की ओर किए, एक-दूसरे की कमर कसे गुँथे रहे कि उनके चेहरे जोर पड़ने से सफेद पड़ गए और साँस तेज हो गई। ग्रिगोरी को यह तमाशा देखकर बड़ा ही मजा आया। इस बीच ठीक मौका पाते ही चुमाकोव अपने विरोधी को अपने साथ घसीटते हुए, सहसा ही जमीन पर पीठ के बल लेट गया और ऐसे पैर चलाए कि स्तेरलयादनिकोव दूर जा गिरा।

फिर एक क्षण बाद ही ध्रुव-प्रदेश की बिल्ली की तरह फुर्ती से वह झपटकर उसके सीने पर सवार हो गया। स्तेरलयादनिकोव नीचे हाँफते और हँसते हुए बोला—"लेकिन, तुम धोखेबाजी कर रहे हो··· हमने एक-दूसरे को लोका देने की बात तय नहीं की थी।"

"तुम लोग तो जवान मुर्गों की तरह एक-दूसरे से गुँथे हुए हो··· चलो, फ़िलहाल मामला यहीं छोड़ो···हाँ, अगर सचमुच लड़ ही रहे हो तो बात और है।" फ़ोमीन बोला।

लेकिन, उनका सचमुच लड़ने का इरादा तो था नहीं, इसलिए एक-दूसरे को बाँहों में जकड़े वे बालू पर आ बैठे और चुमाकोव ने प्यारी, भाती आवाज में गाना छेड़ दिया। स्तेरलयादनिकोव ने अपना पतला स्वर मिलाया और फिर वे, आशा के विपरीत लय-तान में बेधकर गाते रहे।

पर सहसा ही स्तेरलयादनिकोव से रहा न गया और अपनी उँगलियाँ चटकाते और लँगड़े पैर से बालू उड़ाते हुए वह नाचने लगा।

चुमाकोव ने गाते-ही-गाते अपनी तलवार उठाई, बालू में एक छिछला गढ़ा खोदा और बोला—"अबे ओ लँगड़े, ठहर ज़रा···तेरा एक पैर छोटा पड़ता है और हमवार जमीन पर तुझसे कायदे से नाचते नहीं बनता···तो, या तो तू ढाल पर नाच या अपना लम्बा पैर इस गढ़े में साध ले···फिर देख कैसा जमता है तेरा नाच···बस···शुरू कर।"

स्तेरलयादनिकोव ने भौंहों का पसीना पोंछा, और अपना ठीकठाक पैर गढ़े में जमा लिया। बोला—"तुम ठीक कहते हो···अब सचमुच आसानी होती है।"

चुमाकोव ने हँसी से हाँफते हुए तालियाँ बजाईं और तेज़ी से गाने लगा। स्तेरलयादनिकोव का चेहरा सभी नर्तकों की तरह गम्भीर हो उठा और वह पूरी गति से नाचने लगा। यही नहीं, उसने इस नाच के सिलसिले नें, कूल्हों के बल ज़मीन पर बैठने और पैर चलाने की भी कोशिश की।······

दिन एक तरह से बीतते गए। हर रोज़ अँधेरा होते ही वे सब-के-सब फ़ोमीन के चचेरे भाई का बेताबी से इन्तज़ार करते। वे नदी के किनारे जमा होते, दबे स्वरों में बातें करते और अपने बरानकोटों के सिरों के नीचे जलती हुई सिगरेटें छिपाते हुए धुआँ उड़ाते।···

आखिरकार उन्होंने एक सप्ताह और ठहरने, रात को नदी पार कर दाहिने तट पर पहुँचने, घोड़े हथियाने और फिर दक्षिण की ओर बढ़ने का निश्चय किया। इस बीच अफ़वाह उनके कानों में पड़ गई थी कि मास्लाक का ब्रिगेड अब भी प्रदेश के दक्षिणी इलाके में कहीं घूम-फिर रहा है।···

सो फ़ोमीन ने घोड़े तलाशने और आसपास की हर घटना की सूचना देने का काम अपने रिश्तेदारों को सौंपा। पता चला कि फ़ोमीन की खोज में बायाँ किनारा मँझाया जा रहा है, और रुबेज़नी आकर और उसके घर की तलाशी लेकर लाल फ़ौजी अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर वहाँ से चलते बने हैं।···

होते-होते चुमाकोव एक दिन नाश्ते के वक़्त बोला—"यहाँ से जल्दी ही निकल चलना चाहिए। आखिर यहाँ जमे रहने से फ़ायदा भी

क्या होगा ! तो, क्यों न कल ही यह जगह छोड़ दें हम लोग ?"

फ़ोमीन बोला—"पहले यह तो मालूम हो जाए कि घोड़े मिलेंगे या नहीं ! ऐसी हड़बड़ी भी क्या है ? खाना-वाना ज़रा कायदे का मिले तो मैं तो जाड़े तक यहां से टस-से-मस होने का नाम न लूं । ज़रा देखो कि यह जगह कितनी खूबसूरत है । थोड़ा आराम कर लें, फिर चलेंगे यहां से । दुश्मन हमारे लिए चाहें जितना जाल डालें मगर हम आसानी से उनके हाथ आने से रहे ! मैं जानता हूँ कि मेरी बेअक्ली रही कि हम इस तरह तार-तार होकर रह गए । बात बड़े दर्द की है, लेकिन किस्सा यहीं खत्म नहीं होता । कोई बात नहीं । घोड़े मुहय्या होते ही हम आसपास के गांवों में चलेंगे और एक हफ्ते के अन्दर-अन्दर आधी स्क्वैड्रन जमा हो जाएगी । हो सकता है कि पूरी कम्पनी ही बन जाए । मेरा खयाल है कि हमें अपने काम के आदमी मिल जाएंगे । न मिल जाएँ तब कहना ।"

"बकवास है । बेकार की अकड़ और शेखी की बातें हैं ।" कापारिन खीझकर बोला—"कज़्ज़ाकों ने हमें नीचा दिखाया है । वे हमारे कदमों पर नहीं चले और आगे भी नहीं चलेंगे । हमें न तो सच्चाई से आँखें बचानी चाहिए और न बेसिर-पैर की उम्मीदों से अपने को धोखे में डालना चाहिए ।"

"क्यों···क्यों नहीं चलेंगे कज़्ज़ाक हमारे क़दमों पर ?"

"क्योंकि पहले नहीं चले; और पहले नहीं चले तो अब भी नहीं चलेंगे ।"

"देखा जाएगा ।" फ़ोमीन ने चुनौती-भरे स्वर में जवाब दिया—"मैं तो हथियार डालने से रहा ।"

कापारिन व्यर्थ की बातों से जैसे थकते हुए बोला—"इन बातों में रखा कुछ नहीं है ।"

"शैतान की खोपड़ी !" फ़ोमीन क्रोध से उबलकर चीखा—"तू यहां लोगों के हाथ-पैर क्यों फुला रहा है ? ये ढरके···ये आहें-कराहें... तू तो मुर्दा जड़ों से भी गया-बीता है । अगर ऐसा है तो सवाल यह है कि आखिर हमने सिर उठाया ही क्यों था ? अगर तेरी नसें इस तरह

कमज़ोर हैं तो तू इस बग़ावत में शामिल ही क्यों हुआ था ? तू ही तो है जिसने मुझे बग़ावत के लिए भड़काया, और अब तू हाथ झाड़कर निकल जाने के मंसूबे बांध रहा है! और कुछ कहना है तुझे ?"

"मुझे तुझसे कुछ नहीं कहना…भाड़ में जा तू… बेवकूफ कहीं का।" कापारिन ने बौखलाते हुए कहा। वह सिर से पैर तक कांपने लगा तो उसने भेड़ की खाल अच्छी तरह ओढ़ ली और कालर उलट लिया।

"ये मखमल के गद्दों पर पले लोग बड़े नाज़ुक होते हैं। कुछ भी हुआ नहीं कि हिम्मत हवा और हाथ-पांव ढीले।" फ़ोमीन आह भरते हुए बोला।

फिर वे बैठे कुछ देर तक पानी के एक तरह से हहराने की आवाज़ सुनते रहे। इसी समय एक कीकती बत्तख का पीछा करते मुर्गाबियों के दो नर सिर के ऊपर से गुजरे। मैनाओं का एक दल अपने बोलों से आसमान सिर पर उठाता, घाटी में उतरा, पर इन्सानों को देखते ही फिर उड़ दिया। ऐसा लगा जैसे कि काले, रेशमी फीते हवा में लहराते चले जा रहे हों।

जरा देर बाद कापारिन वापस आया, और फ़ोमीन की ओर देखकर तेजी से पलकें झपकाते हुए बोला—"मैं आज रात को गांव जाना चाहता हूं।"

"किसलिए ?"

"अजीब सवाल है। तुम्हारी आंखें नहीं हैं ? तुम्हें नजर नहीं आता कि मुझे बुरी तरह सर्दी लग गई है और खड़े होने में पैर कंपकंपाते हैं ?"

"ठीक, लेकिन इससे हुआ क्या ? तुम्हारा खयाल है कि गांव जाने से तुम्हारी सर्दी दूर हो जाएगी ?" फ़ोमीन ने बहुत ही शांति से पूछा।

"कुछ रातें किसी गरम जगह बितानी चाहिए मुझे।"

"तुम गांव-आंव कहीं नहीं जाओगे।" फ़ोमीन ने दृढ़ता से कहा।

"यानी, यहीं फ़ना हो जाऊंगा मैं ?"

"हो जाओ फ़ना !"

"लेकिन, आखिर मैं जा क्यों नहीं सकता ? आजकल सर्दी में सोना

मौत होगा मेरे लिए।"

"और गाँव में जाने पर तुम्हें कहीं दुश्मन ने घर पकड़ा तब ? यह बात आई है तुम्हारे दिमाग में ? तब तो···तब तो हम सब खतम हो जाएँगे। तुम्हारा खयाल है कि तुम्हें जानता नहीं मैं ? पहली जिरह में ही हमें ले डूबोगे तुम ! और यह गद्दारी तो तुम रास्ते में ही करोगे··· पहले···व्येशेन्स्काया तो बाद में पहुँचोगे।"

चुमाकोव ने हँसी का एक ठहाका लगाया और बात का पूरा समर्थन करते हुए सिर हिलाया। लेकिन, कापारिन ज़िद पकड़ गया। बोला, "नहीं···मैं तो जाऊँगा ही···तुम्हारी इन शानदार कठबैठियों से मेरा इरादा बदलने का नहीं।"

"लेकिन, मैंने तुमसे कहा न कि फ़िलहाल, आराम से बैठो।"

"पर, याकोव-येफ़िमोविच, तुम्हारी समझ में यह नहीं आता कि जानवरों की-सी यह ज़िन्दगी मुझसे अब आगे नहीं चलेगी। मुझे प्ल्युरिसी तो है ही, शायद निमोनिया भी है।"

"यह कोई बात नहीं···थोड़ा धूप में लेटोगे तो ठीक हो जाओगे।"

इस पर कापारिन ने जमी हुई आवाज में कहा—"जो भी हो, मैं आज जाऊँगा···मुझे रोकने का तुम्हे कोई हक नहीं। हर हालत में जाऊँगा मैं।"

फ़ोमीन ने उसे घूरकर देखा, संदेह से भरकर आँखें सिकोड़ीं और चुमाकोव की तरफ़ देखकर आँखें मारते हुए उठ खड़ा हुआ—"कापारिन, लगता है तुम सचमुच बीमार हो गए हो···तुम्हें बुखार काफ़ी तेज़ है···तुम्हारा माथा देखूँ जरा।" और अपना हाथ फैलाते हुए, वह कापारिन की तरफ़ बढ़ा।

कापारिन ने फ़ोमीन के चेहरे के भाव पढ़े, झटके से पीछे हटा और चीखकर बोला—"हटो···दूर हटो।"

"चीखो मत···इस तरह चिल्ला क्यों रहे हो ? मैं जानना चाहता हूँ कि आखिर मामला क्या है ?" फ़ोमीन ने कापारिन के पास पहुँचकर उसका कॉलर थाम लिया—"सूअर कहीं के···दुश्मन को सौंप देना चाहते हो अपने को ?" और, उसने जोर लगाकर उसे जमीन पर दे

मारने की कोशिश की ।

ग्रिगोरी बीच-बचाव बड़ी मुश्किल से कर पाया। उसे अपनी पूरी ताक़त लगा देनी पड़ी ।

खाने के बाद गगारिन झाड़ी पर कोई धुला कपड़ा फैला रहा था कि कापारिन उसके पास पहुँचा और बोला—"मैं तुमसे अकेले में कुछ बातें करना चाहता हूँ···आओ, ज़रा बैठो इधर···" और वे एक गिरे हुए देवदार के सड़े-गले तने पर बैठ गए ।

कापारिन खाँसते हुए बोला—"क्या खयाल है तुम्हारा उस गधे के बरताव के बारे में ? तुमने बीच-बचाव कर दिया। मैं तुम्हारा बड़ा एहसानमंद हूँ । तुमने तो वही किया जो एक शानदार अफ़सर को करना चाहिए । लेकिन, अजब बेहूदगी है···मुझसे अब और नहीं चलेगा । हम जानवरों की-सी जिन्दगी बिताते हैं यहाँ···जाने कब से गरम खाना हमने आँखों से नहीं देखा ! उस पर इस तरह हर दिन गीली ज़मीन पर सोना···मुझे सर्दी लग गई है और पसलियों में बुरी तरह दर्द हो रहा है । आग के पास बैठना, गरम कमरे में सोना और अन्दर के कपड़े बदलना मेरे लिए एकदम ज़रूरी हो गया है । साफ़ कमीज़ों और चादरों के तो मुझे सपने आते हैं । नहीं, इस तरह मुझसे नहीं चल सकता !"

ग्रिगोरी ने मुस्कराकर पूछा—"तुमने सोचा था कि लड़ाई के मैदान में हर तरह की ऐश का सरंजाम रहेगा और तुम आराम से लड़ोगे ?"

"लेकिन, आखिर यह लड़ाई भी क्या है ?" कापारिन जोश में आते हुए बोला—"यह लड़ाई नहीं है···यह तो ऐसा है कि चैन की साँस न लो और इधर-उधर मारे-मारे फिरो, सोवियत मजदूरों को एक-एक कर तलवार के घाट उतारो और उड़ दो । हाँ, यह सचमुच लड़ाई होती अगर लोग हमारी मदद करते, अगर बग़ावत छिड़ जाती···मगर, इसे लड़ाई कौन कहेगा···यह कोई और कही की लड़ाई नहीं है ।"

"इसके सिवाय कुछ और हम कर भी तो नहीं सकते । तुम क्या यह चाहते हो कि हम हथियार डाल दें ?"

"तुम्हारी बात अपनी जगह ठीक है···मगर हम भी आखिर क्या करें ?"

ग्रिगोरी ने कंधे झटके और द्वीप में इधर-उधर लेटे रहने पर अकसर ध्यान में आनेवाली बात को शब्दों में बाँधते हुए बोला—"आज़ादी आधी ही सही, शानदार क़ैदखाने से तो बेहतर होती है। तुम जानते हो, अपने यहाँ कहावत है कि क़ैदखाने की मज़बूत सलाखों से सिर्फ़ शैतान खुश होता है।"

कापारिन एक टहनी से बालू पर तरह-तरह के नमूने बनाने लगा, और कुछ देर चुप रहने के बाद बोला—"हथियार डाल देना ऐसा कोई ज़रूरी नहीं है···ज़रूरी है बोलशेविकों से लोहा लेने के नए तरीके निकालना···दम घोट देनें वाली इस सड़ी-गली फ़िज़ा से तो हमें किसी तरह बाहर निकलना ही है···तुम तो पढ़े-लिखे आदमी हो···"

"ऐसी राय तुमने किस तरह बना ली ?" ग्रिगोरी हँसा—"मैं तो यह बात तक सही ढंग से नहीं कह सकता।"

"मगर फ़ौजी अफ़सर हो तुम।"

"सिर्फ़ मौक़े की बात है।"

"नहीं, मज़ाक की बात अलग है, पर तुम अफ़सर हो, अफ़सरों के बीच तुम्हारी अपनी जगह है, तुमने असली इन्सान देखे हैं और तुम फ़ोमीन की तरह छिछोरे नहीं हो! तुम्हें तो यह बात समझनी चाहिए कि हमारा यहाँ रहना बिल्कुल बेमानी है, और खुदकशी करने के बराबर है। फ़ोमीन की वजह से ही हम जंगल में तार-तार हुए और अगर अब भी हम अपनी क़िस्मत उसकी क़िस्मत के साथ नत्थी रखेंगे तो आगे भी बार-बार यही नौबत होगी। वह लफंगा है, और इस मामले में बिल्कुल काठ का उल्लू है! हम उसके साथ रहेंगे तो कहीं के न होंगे।"

ग्रिगोरी ने पूछा—"तो तुम्हारा सुझाव है कि हम हथियार डाल दें, मगर फ़ोमीन को छोड़ दें? ठीक···मगर जायेंगे कहाँ हम? मास्लाक के पास ?"

"नहीं, वह एक दूसरा जाँबाज़ है···ज़रा और बड़ा···मैं तो इस

पूरे मामले में कुछ और ही ढंग से सोचता हूँ···यानी, मास्लाक के पास तो हमें जाना किसी सूरत में नहीं।"

"तो, फिर कहाँ जाना है ?"

"व्येशेन्स्काया चला जाए।"

ग्रिगोरी ने खीझ से अपने कंधे झटके—"मैं तो इसे यों समझता हूँ जैसे कोई खोटे सोने के पीछे खरा सोना लुटा दे···मुझे यह पसंद नहीं।"

कापारिन ने चमकती आँखों से उसे तेज़ी से देखा—"तुम बात समझे नहीं, मेलेखोव···अच्छा, यह बतलाओ कि मैं तुम्हारा यक़ीन कर सकता हूँ ?"

"पूरी तरह।"

"अफ़सर हो···अफ़सरी-ईमान की क़सम ?"

"कज्जाक हूँ···कज्जाक-खून की क़सम।"

कापारिन ने फ़ोमीन और चुमाकोव की तरफ़ देखा और उनके दूर होने पर भी, बात न सुन पाने की स्थिति में होने पर भी आवाज़ नीची करते हुए बोला—"मैं जानता हूँ कि फ़ोमीन और दूसरे लोगों से तुम्हारे ताल्लुक़ क्या और कैसे हैं। उनकी निगाह में तुम उतने ही बाहरी हो, जितना मैं। मैं नहीं जानना चाहता कि सोवियत हुकूमत के ख़िलाफ़ तुमने हथियार क्यों उठाया···अगर मैं ठीक समझता हूँ, तो तुमने हथियार उठाया है जो कुछ गुजर चुका है उसकी वजह से और गिरफ़्तारी के डर की वजह से···है न ?"

"तुमने तो कहा न कि वजह जानना तुम नहीं चाहते।"

"ठीक···ठीक···यह तो मैंने यों ही कहा। अब ज़रा अपने बारे में तुम्हें कुछ बतला दूँ मैं···पहले मैं फ़ौजी अफ़सर था और समाजवादी-क्रांतिकारी पार्टी में शामिल था। मगर, बाद में मेरे खयाल बिल्कुल बदल गए···मुझे लगने लगा कि रूस को अगर कोई बचा सकता है तो बादशाहत बचा सकती है···और सिर्फ़ बादशाहत बचा सकती है··· खुद क़िस्मत ने हमारे अपने मुल्क के माथे पर यह लकीर खींची है··· और वही आगे-आगे यह रास्ता दिखला रही है।··· सोवियत सरकार

का अपना निशान है—हथौड़ा और हँसिया···'मोलोत' और 'सेर्प'··· ठीक है न ?" कापारिन ने हाथ की टहनी से बालू पर हथौड़ा और हँसिया बनाया और लौ देती हुई आँखें गगारिन के चेहरे पर जमाईं— "अब जरा इन दोनों लफ़्ज़ों को मिलाकर उलटी तरफ़ से पढ़ो···समझ में आया कुछ ? लफ़्ज़ बनेगा 'प्रेसतोलोम', यानी सिर्फ़ शाही तख़्त की मदद से ही क्रांति और बोलशेविक हुकूमत का खात्मा किया जा सकता है। जानते हो, यह ख़याल मेरे दिमाग़ में पहले-पहले आया तो मैं एक अनजाने डर से एकदम भर उठा और सिर से पैर तक कांप गया, क्योंकि इस चीज़ को इस तरह देखो तो लगेगा कि ख़ुद ऊपरवाले की उँगली हमारी मुसीबतों की तरफ़ है और वह ख़ुद चाहता है कि इनके दिन लदें।"

कापारिन उत्तेजना से हांफने लगा और चुप हो गया। उसने ग्रिगोरी की तरफ़ निगाहें जमाकर देखा तो आँखों के पीछे से जैसे पागलपन का संकेत मिला। लेकिन, कापारिन की बात से ग्रिगोरी न डर से भरा और न सिर से पैर तक कांपा। वह चीज़ों को और गम्भीर और यथार्थवादी दृष्टि से समझने का आदी था। इसलिए जवाब में बोला—"कहीं किसी की कोई उँगली नहीं है···जर्मनी की लड़ाई के जमाने में मोर्चे पर थे तुम ?"

कापारिन इस सवाल से हैरान हो गया और एकदम कोई उत्तर न दे सका। फिर, ज़रा सम्हलकर बोला—"लेकिन, यह सवाल इस वक़्त कहां से आया तुम्हारे दिमाग़ में ? नहीं, मैं तो सचमुच मोर्चे पर नहीं था।"

"तो, लड़ाई के दौरान कहां थे तुम ? पीछे की तरफ़ ?"

"हां।"

"बराबर ?"

"हां, मेरा मतलब···बराबर तो नहीं रहा, मगर फिर भी रहा··· लेकिन, यह सवाल पूछा क्यों तुमने ?"

"छोड़ो···बात यह है कि १९१४ से आज तक मैं बराबर मोर्चे पर रहा हूं···सिर्फ़ कभी-कभी ही, थोड़े-थोड़े वक़्त के लिए मोर्चे से हटा

हूँ…सो, जहाँ तक उँगली की तुम्हारी बात का सवाल है, वह ऊपरवाले की उँगली कैसे हो सकती है, जब आसमान की नीली छतरी के पार, ऊपरवाला कोई है ही नहीं…इस बकवास से मेरा यक़ीन उठे तो अब एक ज़माना हुआ। १९१५ में पहले-पहले सचमुच की लड़ाई देखी मैंने। तब से लेकर आज तक मेरा ख़याल रहा है कि 'ऊपरवाला' या नीली छतरीवाला जैसा कहीं कुछ नहीं है…बिल्कुल नहीं है। अगर होता तो इन्सानों को वह सब-कुछ करने देता जो वे आज कर रहे हैं…हम आगे बढ़कर लड़ने वालों का तो उससे पीछा जाने कब का छूट चुका है…अब वह सिर्फ़ रह गया है औरतों और बूढ़ों के लिए, और वे जायें और उसके ख़याल में डूबकर हलके हों…तसल्ली हासिल करें… ऊपरवाले की कहीं कोई उँगली नहीं है, और बादशाहत अब बिल्कुल नहीं चल सकती। बादशाहत को आम लोगों ने हमेशा-हमेशा के लिए मिटा दिया है, और यह खिलवाड़ जो तुम कर रहे हो, यह लफ़्ज़ों को इस तरह उलट-पुलटकर पढ़ने की कोशिश जो तुम कर रहे हो, यह महज़ बच्चों का तमाशा है, और कुछ नहीं। बुरा न मानना। फिर मेरी समझ में यह नहीं आता कि यह सारा-कुछ मुझे क्यों बतला रहे हो तुम ? बात ज़रा और खुलकर और साफ़-साफ़ कहो। मैंने कैडेटों की अकादमी में तालीम कभी नहीं पाई, और पढ़ा-लिखा भी ज़रा कम ही हूँ, हालाँकि उसके बिना भी अफ़सर रहा हूँ। अगर मेरी तालीम और क़ायदे की होती तो मैं यहाँ तुम्हारे साथ बाढ़ की वजह से कट गए भेड़िए की तरह, इस जज़ीरे पर बैठा न होता।" गगारिन की आवाज़ से दर्द छलका और भाव चेहरे पर झलक आया।

"इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।" कापारिन जल्दी-जल्दी बोला—"कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि तुम ऊपर वाले में यकीन करते हो या नहीं… यह तो अपने यक़ीदे और अपनी तबीयत का सवाल है। साथ ही इससे भी कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि तुम बादशाहत चाहते हो, या विधान सभा चाहते हो या अपनी हुकूमत के लिए लड़ने वाले एक कज़्ज़ाक हो। इसमें काम की बात सिर्फ़ इतनी है कि हम एक हैं क्योंकि सोवियत हुकूमत के मामले में हमारा रवैया एक है। मानते हो यह बात ?"

"आगे चलो।"

"यानी, हमने कज्ज़ाकों की आम बग़ावत से उम्मीद लगाई··· है न?" मगर, वह उम्मीद काम न आई, और अब कोई दूसरा रास्ता निकालना है। हम बोलशेविकों से अब भी लड़ सकते हैं, पर यह तो ज़रूरी नहीं कि हम फ़ोमीन को ही अपना सरगना मानकर लड़ें। आज तो सबसे बड़ी बात है अपनी जान बचाना···और इसी के लिए मैं तुमसे समझौता करना चाहता हूँ।"

"कैसा समझौता? किसके खिलाफ़ समझौता?"

"फ़ोमीन के खिलाफ़।"

"मैं तुम्हारी बात नहीं समझा।"

"बात बहुत आसान है। मैं तुम्हें दावत देता हूँ कि आओ और मेरा साथ दो।" कापारिन एकदम उत्तेजित हो उठा और हांफते हुए आगे बोला—"तुम और मैं मिलकर यानी हम दोनों इन तीनों को मार डालें और व्येशेन्स्काया चले चलें···क्या खयाल है? इस तरह हमारी बचत हो जाएगी और सोवियत सरकार की इस खिदमत से, इस सजा से बच निकलेंगे, जीते रहेंगे। समझ में आई बात? हम जिन्दा रह सकेंगे। और यह कहने की ज़रूरत नहीं कि मौक़ा मिलते ही फिर बोलशेविकों के खिलाफ़ हथियार उठा सकेंगे। मगर यह तब होगा कि जब क़ायदे से, किसी बड़े पैमाने पर बात बनेगी। बोलो, राजी हो तुम? इतना याद रखो कि आज की इस बीती हालत से छुटकारा पाने का सिर्फ़ एक यही रास्ता है और ठीक रास्ता है।"

"लेकिन यह काम होगा कैसे?" ग्रिगोरी ने पूछा और वह अन्दर-ही-अन्दर नफ़रत से काँपने लगा। परन्तु उसने पूरी शक्ति से अपनी भावना पर पर्दा डालने की कोशिश की।

"मैंने सब-कुछ सोच लिया है। यह काम हम रात के वक्त, ठंडे लोहे की मदद से करेंगे। कज्ज़ाक खाना लेकर अगले दिन रात को आएगा, लेकिन तब तक हम नदी के उस पार तक पहुँच चुकेंगे, और बस। बहुत ही आसान है सब-कुछ···अक्ल और चालाकी का कुछ काम ही नहीं इसमें।"

ग्रिगोरी ने मुस्कराते हुए, बनावटी स्नेह के साथ कहा—"सुनने में तो बात बहुत ही प्यारी लगती है। मगर कापारिन, आज सवेरे जब तुम सर्दी से बचकर भरकने के लिए गाँव जाना चाहते थे, तो तुम्हारा इरादा क्या इस बहाने व्येशेन्स्काया जाने का था? फ़ोमीन ने बात भाँपी या नहीं?"

कापारिन ने मुस्कान के बदले मुस्कान होंठों पर ही सजाते हुए ग्रिगोरी को ग़ौर से देखा, पर उसके चेहरे से थोड़ी परेशानी झलकी—"सच पूछो तो हाँ, इरादा व्येशेन्स्काया जाने का ही था। बात यह है कि अपनी चमड़ी बचाने का सवाल सामने हो तो तरीक़े के चुनाव का खास खयाल कोई नहीं करता।"

"इसका मतलब यह है कि तुम हमारे साथ गद्दारी करते?"

कापारिन ने स्वीकार किया—"लेकिन अगर वे लोग तुम्हें यहाँ इस जज़ीरे में पकड़ लेते तो मैं अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश करता कि निजी तौर पर तुम्हें कोई तकलीफ़ न हो।"

"लेकिन खुद तुमने हम सबको क्यों नहीं मार डाला? रात के वक्त काम खासा आसान होता।"

"इसमें काफ़ी खतरा होता…मैं एक से निबट रहा होता तो बाक़ी।…"

ग्रिगोरी ने अपनी पिस्तौल झटके से हाथ में लेते हुए धीरे से कहा—"अपने हथियार यहाँ रख दो…रख दो, वरना यहीं-की-यहीं तुम्हें गोली से उड़ा दूँगा…मैं अभी खड़ा होकर आड़ करता हूँ ताकि फ़ोमीन न देखे…तुम अपनी पिस्तौल मेरे पैर के पास फेंक दो… इरादा क्या है? गोली चलाने की बात भी दिमाग़ में न लाना, वरना देखते-देखते तुम्हें इस दुनिया के पार भेज दूँगा।"

कापारिन स्थिर बैठा रहा। मगर उसका चेहरा एकदम जर्द पड़ गया और वह अपने सफ़ेद होंठ हिलाते हुए बोला—"मारो नहीं मुझे।"

"मैं तुम्हें मारूँगा नहीं, लेकिन तुम्हारे हथियार ज़रूर छीन लूँगा तुमसे।"

"तुम धोखा करोगे मेरे साथ।"

कापारिन के रोएँदार गालों पर आँसू ढुलक चले। ग्रिगोरी के चेहरे पर नफ़रत और रहम के बल पड़े और उसने जोर से कहा—"फेंको अपनी पिस्तौल···फेंको। मैं तुम्हारे साथ धोखा नहीं करूँगा, हालाँकि करना चाहिए···कैसे घिनौने कुत्ते के बच्चे साबित हुए हो तुम!"

कापारिन ने अपनी पिस्तौल गगारिन के पैरों के पास फेंक दी। गगारिन बोला—"और वह ब्राउनिंग? उसे भी सौंपो फ़ौरन। तुम्हारी ट्यूनिक की सीने वाली जेब में है।"

कापारिन ने चमचमाता, निकल की पॉलिशवाला ब्राउनिंग भी निकालकर फेंक दिया और चेहरा हाथ से ढँककर फफक-फफककर रोने लगा।

"बन्द कर यह ढरका बहाना···ग़लीज कहीं का!" ग्रिगोरी ने तेज़ी से कहा और उस पर एक भरपूर हाथ जमाने की अपनी इच्छा जैसे-तैसे रोकी।

"तुम धोखा करोगे मेरे साथ। मैं तो कहीं का भी नहीं रहा।"···

"मैंने कहा न कि मैं धोखा नहीं दूँगा तुम्हें। मगर हमारे यहाँ से रवाना होते ही मुँह काला कर लेना और अपने बचाव का इन्तज़ाम आप करना। तुम्हारे जैसों की ज़रूरत हमें नहीं।"

कापारिन ने चेहरे से हाथ हटाया तो उसके आँसुओं से तर गाल, सूजी हुई आँखें और कँपकँपाता हुआ निचला जबड़ा देखने में बहुत ही भयानक लगा। हकलाते हुए बोला—"तब क्यों···तब क्यों इस तरह निहत्था कर दिया तुमने मुझे?"

ग्रिगोरी बेमन से बोला—"ताकि तुम कहीं पीछे से मुझ पर गोली न चला दो। तुम्हारे जैसे लोग···तुम्हारे जैसे पढ़े-लिखे लोग कुछ भी कर सकते हैं···तुमसे कुछ भी बाकी नहीं।···और मज़ा यह है कि उँगली, ज़ार और आसमान वाले को लेकर कैसे गाल बजा रहे थे तुम!···तुम आदमी नहीं, जानवर हो और घिनौने जानवर हो।"

कापारिन बार-बार ज़मीन पर थूकता रहा। गगारिन ने फिर उसकी तरफ़ आँखें उठाकर भी नहीं देखा और धीमी चाल से, अपने

साथियों के पास लौट आया।

स्तेरलयादनिकोव मोम लगे तागे से, अपनी ज़ीन को एक जगह से सीता और सीटी बजाता मिला। फ़ोमीन और चुमाकोव घोड़े की पीठ पर बिछाए जाने वाले कपड़े पर लेटे, हमेशा की तरह, ताश खेलते नज़र आए।

फ़ोमीन ने ग्रिगोरी पर एक तेज़ निगाह डाली और पूछा—"कापारिन क्या कह रहा था तुमसे ? क्या बातें हुई तुम लोगों में ?"

"ज़िन्दगी का रोना रो रहा था, और जाने क्या-क्या बक-झक कर रहा था।"

ग्रिगोरी ने अपने वचन की रक्षा की और कापारिन के साथ धोखा नहीं किया। लेकिन उसी दिन शाम को उसने मौक़ा निकाला, उसकी राइफ़ल से खटका निकालकर छिपाकर रख दिया और लेटते-लेटते अपने-आपसे बोला—"रात में कौन जाने, क्या आए इस शैतान के दिमाग़ में !"

अगले दिन सवेरे फ़ोमीन ने ग्रिगोरी को जगाया, और उस पर झुकते हुए धीरे से पूछा—"कापारिन के हथियार तुमने छीने इससे ?"

"क्या ? कैसे हथियार ?" ग्रिगोरी कुहनी के सहारे उठा और उसने दर्द से कन्धे सीधे किए। उसका बरानकोट, फ़र की टोपी और बूट वग़ैरह सभी कुछ ओस से गीला लगा। साथ ही उसे अपनी हड्डी-हड्डी ठंड से अकड़ी महसूस हुई।

"हमें उसके हथियार मिल नहीं रहे। तुमने लिये हैं क्या ?···उठो न, मेलेखोव !"

"क्यों···लिये तो हैं मैंने उसके हथियार···मगर हुआ क्या ?"

इस पर फ़ोमीन ने कुछ कहा और चला गया। ग्रिगोरी उठा और अपना बरानकोट झाड़ने लगा। थोड़ी दूर पर चुमाकोव नाश्ता तैयार करता दीखा। उसने बची-बचाई एकमात्र तश्तरी धोई, रोटी के एक बड़े टुकड़े को सीने से अड़ाकर चार बराबर-बराबर के टुकड़े काटे, फिर सुराही से तश्तरी में दूध उँड़ेला और जुन्हरी की खीर मुँह में डालते हुए ग्रिगोरी की तरफ़ देखा। बोला—"आज देर तक सोते रहे

तुम, मेलेखोव ! जरा देखो तो कि सूरज कहाँ-का-कहाँ पहुँच गया !"

"जिस आदमी की रूह साफ़ होती है, वह हमेशा जमकर सोता है।" स्तेरलयादनिकोव ने लकड़ी का चम्मच धोकर और अपने बरानकोट के सिरे से पोंछते हुए कहा—"लेकिन कापारिन को सारी रात नींद नहीं आई'''सिर्फ़ करवटें बदलता रहा।"

फ़ोमीन ग्रिगोरी को देखकर मुस्कराया।

"बैठो और नाश्ता कर लो, बटमारो !" चुमाकोव बोला और फिर दूसरों की राह देखे बिना अपना दूध पीने लगा। इसके बाद उसने रोटी के टुकड़े में दाँत गड़ाए। इसी समय ग्रिगोरी ने अपना चम्मच उठाया और दूसरों को घुरकर देखते हुए पूछा—"कापारिन कहाँ है ?"

पर फ़ोमीन और स्तेरलयादनिकोव चुपचाप खाते रहे। चुमाकोव ने ग्रिगोरी पर निगाह तो जमाई, पर बोला वह कुछ नहीं।

"कापारिन आखिर है कहाँ ?" ग्रिगोरी ने फिर यों पूछा, जैसे कि रात में जो कुछ घटा हो और उसका धुंधला-धुंधला आभास उसे हो गया हो।

"कापारिन अब तक जाने कहाँ-का-कहाँ पहुँच गया होगा।" चुमाकोव ने स्थिर स्वर में, मुस्कराते हुए कहा—"वह रोस्तोव की तरफ़ बहता चला जा रहा होगा। शायद उस्त-खोपरस्काया के पास टक्कर खा रहा हो कहीं। उसकी भेड़ की खाल लटक रही है, वह''' वहाँ।"

"तुम लोगों ने सचमुच मार डाला उसे ?" ग्रिगोरी ने कापारिन के भेड़ की खाल के कोट पर निगाह डालते हुए पूछा।

वैसे पूछने का मतलब कुछ नहीं था। सारा-कुछ अपनी कहानी आप कह रहा था। इस पर भी जाने क्यों, ग्रिगोरी ने सवाल कर ही तो दिया। पर, पहले कोई कुछ नहीं बोला तो उसने प्रश्न दोहराया।

"हुआ क्या'''बेशक हमने मारा उसे।" चुमाकोव ने कहा और अपनी भूरी औरतों-सी खूबसूरत आँखों की पलकें झुका लीं—"मैंने उसे मारा'''यहीं, यानी लोगों को मारना ही मेरा काम है इन दिनों।"

ग्रिगोरी ने उसे ग़ौर से देखा तो उसके चेहरे से जितनी शान्ति

टपकी, उतनी ही प्रसन्नता उसके भूरे गलमुच्छे चेहरे की सँवराई के कारण और लौ देने लगे। भौंहों और क़ायदे से सँवारे गए बालों का रँग ज़रा और गहरा मालूम हुआ।

एक शब्द में यों कह सकते हैं कि फ़ोमीन के दल का यह सम्मानित जल्लाद देखने-सुनने में सचमुच सुन्दर था।···उसने अपना चम्मच मोमजामे पर रख दिया। हाथ के पिछले हिस्से से अपनी मूँछें पोंछीं और बोला—"तुम्हें याकोव-येफ़िमोविच का एहसान मानना चाहिए, मेलेखोव ! उसने तुम्हारी जान बचाई, वरना दोन में कापारिन के साथ-साथ बहते चले जा रहे होते इस वक्त।"···

"आखिर क्यों ?"

चुमाकोव सम्हल-सम्हलकर धीरे-धीरे बोला—"कापारिन अपने को दुश्मन को सौंप देना चाहता था···यह बात हमसे छिपी न रही थी। इस पर वह काफ़ी देर तक कल तुमसे बातें भी करता रहा। तो, हमने और याकोव-येफ़िमोविच ने उसे इस गुनाह से बचाने की बात सोची··· गगारिन को सब-कुछ साफ़-साफ़ बतला दूँ ?" उसने प्रश्नभरी दृष्टि से फ़ोमीन की ओर देखा।

फ़ोमीन ने सिर हिलाया, और चुमाकोव खीर की जुन्हरी के कच्चे दानों को दांत से चबाता हुआ, आगे बोला—"मैंने शाम शाहबलूत की लकड़ी का एक डण्डा तैयार किया और याकोव-येफ़िमोविच से कहा—मैं कापारिन और मेलेखोव, दोनों का ही हिसाब साफ़ कर दूंगा एक साथ। लेकिन, वह बोला—कपारिन को बेशक खत्म कर दो, पर देखो, मेलेखोव को हाथ न लगाना।···यानी, इस तरह पूरी बात तय हुई और मैं कापारिन के सो जाने का इन्तज़ार करता रहा। फिर, जब वह सो गया और मैंने तुम्हारे भी खर्राटे सुन लिये तो मैं दबे-पांव उसके पास गया और मैंने सोंटा पूरी ताकत से उसके सिर पर दे मारा। हमारे उस स्टाफ़ कैप्टन ने पैर तक नहीं पटके। उसने बड़े अन्दाज से हाथ फैलाए और इस जहान से रुख़सत ले ली। हमने उसकी तलाशी ली, हाथ-पैर पकड़कर उठाया, नदी के किनारे पहुँचाया, उसके बूट, ट्यूनिक और भेड़ की खाल सहेजी और पानी में लुका दिया। मगर, तुम सोते रहे

और तुम्हें इस सबकी कानों-कान खबर तक नहीं लगी। हालांकि याकोव येफ़िमोविच ने तुम्हें हाथ लगाने से मना कर दिया था, तो भी मुझे लगा कि ये दोनों कल जाने क्या षड्यंत्र करते रहे हैं। कुछ दाल में काला ही समझो जब पाँच में से दो आदमी कट जायें और दूसरों से अलग जाकर कुछ घुस-फुस करने लगें!···बस, तो मैं पंजों के बल तुम्हारे पास पहुँचा और मैंने तुम्हें तलवार के घाट उतार देने की तैयारी की। डण्डा मुझे बेकार लगा। मन ने कहा—'तुमसे कहीं मज़बूत है गगारिन···अगर एक हाथ में ही काम तमाम न हुआ और वह उठकर बैठ गया तो तुम्हारी अपनी जान के लेने-के-देने पड़ जायेंगे!' लेकिन, फ़ोमिन ने कुछ होने नहीं दिया। आड़े आ गया। बोला—'उसे उँगली से भी मत छूना। वह हमारे साथ है और हम उसका यक़ीन कर सकते हैं।'···इसके बाद हम दोनों के बीच बातें हुईं, मगर यह समझ में न आया कि कापारिन के हथियार हुए तो हुए क्या? इस तरह तुम्हारी जान बच गई और तुम चैन की नींद सोते रह गए। मगर सोते हो तुम घोड़े बेचकर! इतना सब सोचा गया, मौत तुम्हारे सिर पर मँडराती रही और तुम टाँगें फैलाए बेखबर पड़े रहे।"

ग्रिगोरी शांत भाव से बोला—"और, तुमने मुझे बेकार मार डाला होता···बेवकूफ़ हो तुम! मेरी और कापारिन की कोई साज़िश नहीं थी।"

"लेकिन, उसके हथियार तुम्हारे पास कैसे आ गए?"

ग्रिगोरी मुस्कराया—"मैंने कल उसकी पिस्तौलें उससे छीनी और शाम को उसकी राइफ़ल का खटका निकालकर घोड़ेवाले कपड़े के नीचे छिपाया।"···फिर उसने अपनी और गगारिन के बीच की पूरी बातचीत सुनाई और कैप्टन बहादुर के इरादों का ज़िक्र किया।

फ़ोमीन ने नाराज़गी दिखलाते हुए कहा—"लेकिन, ये सारी बातें तुमने कल क्यों नहीं बतलाईं?"

ग्रिगोरी ने स्पष्ट रूप से स्वीकारा—"उस घिनौने शैतान पर पता नहीं क्यों मुझे रहम आ गया!"

इस पर चुमाकोव सचमुच आश्चर्य में पड़ते हुए बोला—"उफ़···

मेलेखोव···तुम अपना यह रहम भी वहीं दबा आओ, जहाँ कापारिन की राइफ़ल का घोड़ा दबाकर रखा है तुमने ! दफ़न कर आओ घोड़ेवाले कपड़े के नीचे। इस रहम से तुम्हारा कुछ भी भला होने से तो रहा !"

"अच्छा, आप मुझे नसीहत न दीजिए। मैं जानता हूँ कि मुझे क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए।" ग्रिगोरी ने रुखाई से जवाब दिया।

"मैं तुम्हें नसीहत क्यों देने लगा ! मगर ज़रा सोचो कि तुम्हारे इस रहम की वदौलत अगर कल रात, बेवजह मैंने इस दुनिया से तुम्हारा खन्ना काट दिया होता तो ?···तो, क्या होता ?"

"अच्छा ही होता···सस्ता छूटता मैं !" ग्रिगोरी ने एक क्षण सोचने के बाद कहा···फिर, जैसे अपने-आपसे बोला—"दिन के भरे उजाले में मौत सामने आती है तो इन्सान के यों ही छक्के छूट जाते हैं···दम अटक-अटककर निकलता है···मगर, कोई सोता हो और उस वक्त मौत सिरहाने आ खड़ी हो तो काम जरा आसान हो जाता है···"

: १५ :

एक दिन, रात को उन लोगों ने नाव से नदी पार की तो नीज्नी-क्रीव्स्काया गाँव का अलेक्सान्द्र-कोशेलेव नाम का कज़्ज़ाक़ किनारे जैसे उनके इन्तजार में खड़ा मिला। उसने फ़ोमीन का अभिवादन किया और बोला—"मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा, याकोव-येफ़िमोविच ! घर पर रहते-रहते ऊब गया हूँ।"

फ़ोमीन ने ग्रिगोरी को कुहनियाया और फुसफुसाकर बोला—"देखा ? मैंने तो तुमसे पहले ही कहा था ! हम जजीरे से दूर जा भी नहीं पाए कि लोग आ गए···एक आदमी तो यहीं रहा ! इसे मैं जानता हूँ···कज़्ज़ाक लड़ाई के मामले में खासा जाँबाज है। आसार अच्छे नजर आते हैं। अब अपनी गाड़ी चल निकलेगी।"

फ़ोमीन के स्वर ने उसकी संतोष-भरी मुस्कान पर मुहर मारी। साफ़ है कि एक नये साथी के आने से उसे सचमुच बड़ी खुशी हुई।

यानी, कामयाबी से नदी पार कर लेने और ऐन इसी वक़्त एक और आदमी के साथ आ-जाने से वह फूला न समाया और उसकी आशाओं के नये पर निकल आए।

"तो एक राइफ़ल और पिस्तौल के अलावा तुम्हारे पास जंगी दूरबीन भी है ?" उसने कोशेलेव के सामान को अँधेरे में ही देखते-समझते और सन्तोष की साँस लेते हुए कहा—"लो सहेजो'''यह रहा एक कज्जाक। असली कज्जाक है यह। कोई ओगला-दोगला कुत्ता नहीं है।"

. इस बीच फ़ोमीन का चचेरा भाई, छोटे घोड़े वाली एक गाड़ी लेकर आ गया, और खुद जल्दी में होने के कारण फ़ोमीन को हड़बड़ियाते हुए धीरे से बोला—"काठियाँ गाड़ी में रख दो और ईसा के लिए जल्दी करो'''रात भीग रही है और अभी लम्बी मन्जिल सामने है।" पर द्वीप से सही-सलामत निकल आने और अपने गाँव की बलवती धरती पर अपने क़दम महसूस करने के कारण फ़ोमीन बड़े इत्मीनान की साँस लेता लगा। उसने घर पर एकाध घंटे रुककर गाँव के जान-पहचानियों से मिल-भर लेने का फ़ैसला किया।'''

'''तड़का होने के जरा पहले यागोदनी गाँव के पास के घोड़ों के झुंड से अच्छे-से-अच्छे घोड़े चुने गए और उन पर जीनें कस ली गईं। चुमाकोव घोड़ों के बूढ़े रखवाले से बोला—"बाबा, इन घोड़ों के लिए बहुत परेशान होने की जरूरत नहीं।'''फ़िक्र की ऐसी कोई बात नहीं''' हम थोड़ी दूर तक इन घोड़ों पर सवारी करेंगे और बेहतर घोड़ों के मिलते ही इन्हें उनके मालिक को लौटा देंगे। कोई कुछ पूछे तो कह देना कि क्रास्नोकुत्स्काया के मिलिशिया के लोग घोड़े ले गए हैं'''जाओ और वहाँ से वापस ले आओ'''मैं क्या, वे लोग दुश्मन के एक दस्ते का पीछा कर रहे थे।'''"

फिर बड़ी सड़क पर आते ही उन लोगों ने फ़ोमीन के चचेरे भाई को विदा किया, बाईं ओर मुड़े और घोड़ों को तेज दुलकी में डालते हुए दक्षिण-पश्चिम की ओर उड़ चले।

एकाध दिन पहले ही मास्लाक के दस्ते के मेशकोव्स्काया-स्तनीत्सा

के पास ही नज़र आने की अफ़वाह इन लोगों के कानों में पड़ गई थी, इसलिए फ़ोमीन उसी तरफ़ बढ़ा कि दस्ता मिल जाए तो हम पांचों भी उसी में शामिल हो जाएँ।

मास्लाक के दस्ते की तलाश में वे लोग तीन दिन तक स्तेपी के तमाम रास्तों के चक्कर काटते फिरे। पर, बड़े गांवों और बस्तियों को उन्होंने बराबर बरकाया। फिर कारगिन्स्काया बस्ती की सीमा के उक्रइनी गांवों में उन्होंने अपने घोड़े छोड़े और बदले में मोटे-तगड़े, तेज़ उक्रइनी घोड़े कसे।

चौथे दिन, सवेरे एक गांव के पास ही ग्रिगोरी की नज़र पड़ी तो उसने पहाड़ियों की दूर की घाटी में घुड़सवारों की एक क़तार को उस पार से इस पार आते देखा। सड़क पर कम-से-कम दो स्क्वैड्रन समझ पड़े। उनके आगे-आगे और अगल-बग़ल नज़र आईं छोटी-छोटी गश्ती टुकड़ियाँ।

फ़ोमीन ने आँखों पर दूरबीन चढ़ाई। बोला—"यह या तो मास्लाक का दस्ता है या···।"

"हो सकता है पानी हो···हो सकता है बर्फ़ हो···हो सकता है हो और हो सकता है कि न हो।" चुमाकोव ने मज़ाक उड़ाते हुए कहा—"ज़रा ग़ौर से देखो याकोव-येफ़िमोविच···क्योंकि अगर लाल फ़ौजी हों तो हमें चाहिए कि हम मुड़ें और फ़ौरन ही उड़ दें।"

"लेकिन यहाँ से कैसे बताया जा सकता है कि ये कौन हैं और कौन नहीं हैं?" फ़ोमीन ने खीझते हुए कहा।

इसी समय स्तेरलयादनिकोव चीख उठा—"देखो। उन लोगों ने ताड़ लिया हमें। एक टुकड़ी-की-टुकड़ी इसी तरफ़ बढ़ी आ रही है।"

और, उसकी बात ठीक थी। ये लोग सचमुच ताड़ लिये गए थे। इस पर क़तार की दाईं ओर की एक टुकड़ी तेज़ी से मुड़ी थी और घोड़े इन्हीं लोगों की तरफ़ ताबड़तोड़ दौड़े चले आ रहे थे।···

बस, तो फ़ोमीन ने दूरबीन जल्दी-जल्दी केस में डाली। पर ग्रिगोरी मुस्कराता रहा। वह ज़रा झुका और उसने फ़ोमीन के घोड़े की लगाम लपककर थाम ली।

"हड़बड़ाओ नहीं···उन लोगों को जरा और पास आने दो··· गिनती में बारह ही तो हैं···जरूरत पड़ेगी तो हम घोड़ों को दौड़ा देंगे, और निकल भागेंगे। घोड़े हमारे ताजा हैं···तुम्हें डर किस बात का है? अपनी दूरबीन से देखो तो जरा।"

बारह घुड़सवार बराबर पास आते गए और उनके आकार प्रति पल बढ़ते गए। आखिरकार पहाड़ी की ऊँची घास की पृष्ठभूमि में वे बिल्कुल साफ़ नजर आने लगे।

ग्रिगोरी और उसके साथ के बाक़ी लोग फ़ोमीन को एकटक देखते रहे। दूरबीन साधनेवाले फ़ोमीन के हाथ थोड़े-थोड़े काँपने लगे। साथ ही उसने इस तरह आँखें गड़ाकर देखा कि धूप की तरफ़ वाले उसके गाल पर एक आँसू ढुलक आया। अन्त में जोर से चिल्लाया—"अरे, ये तो लाल फ़ौजी हैं। टोपियों के लाल-सितारे साफ़ चमक रहे हैं।" और उसने अपना घोड़ा एकदम मोड़ लिया। बाक़ी लोग भी घोड़े ताबड़तोड़ दौड़ा चले। पीछे से रह-रहकर गोलियों की आवाज आई। कोई दो वर्स्ट तक ग्रिगोरी फ़ोमीन की बग़ल में रहा, और इस बीच रह-रहकर पीछे मुड़कर नजर दौड़ाता रहा।

फ़ोमीन चुप और उदास रहा कि अपने घोड़े की लगाम थोड़ी खींचते हुए चुमाकोव बोला—"हमें गाँवों से दूर-ही-दूर रहना चाहिए और व्येशेन्स्काया के मैदान की तरफ़ बढ़ना चाहिए।···उधर सूना कुछ ज्यादा है।"

लगा कि घोड़ों को अगर इसी तरह कुछ वर्स्ट और सरपट दौड़ना पड़ा तो वे चूर-चूर होकर रह जाएँगे। अभी ही उनकी फैली हुई गर्दन झाग और पसीने से नहा उठी है।···ग्रिगोरी ने कमान दी—"घोड़े धीमे करो···इतनी तेजी की कोई जरूरत नहीं।"

होते-होते पीछे के बारह घुड़सवारों में केवल नौ बाक़ी बचे। बाकी राह में ही गिर गए। सो ग्रिगोरी ने मन-ही-मन अपने और उनके बीच की दूरी का अनुमान लगाया और चिल्लाकर बोला—"अब रुको और दुश्मन पर गोलियों के दो लहरे तो बरसा ही दो।"

पाँच के पाँचों ने घोड़े धीमे कर दुलकी में डाल लिए, फिर खुद

नीचे ज़मीन पर सरक आए और अपनी राइफलें हाथों में ले लीं।

"घोड़ों की लगामें साधो। एकदम बाईं तरफ़ के आदमी पर निशाना साधो…और, अब…फ़ायर!"

प्रत्येक ने कारतूस की एक-एक पेटी समाप्त कर दी, एक लाल फ़ौजी के घोड़े का काम तमाम कर दिया, फिर घोड़ों पर सवार होकर भाग निकले। दुश्मन ने उनका पीछा यों ही-सा किया, काफ़ी दूर से गोलियाँ चलाईं और आखिरकार पीछा करने का इरादा बिलकुल छोड़ दिया।

"घोड़ों को पानी पिला लेना चाहिए…वह…वहाँ एक तलैया नज़र आ रही है।" स्तेरलयादनिकोव ने दूर के नीले धब्बे की तरफ़ चाबुक से इशारा करते हुए कहा।

ग्रिगोरी और उसके साथियों ने घोड़े तेज़ क़दम चाल में डाले, राह की हर खोह और हर खड्ड के मामले में सावधानी बरती और मैदान की ऊँची घास की आड़-ही-आड़ चलने की कोशिश की।

तलैया पर उन्होंने घोड़ों को पानी पिलाया और फिर चल दिए। घोड़े क़दम-चाल में रखे, बाद में दुलकी में। दोपहर हुई तो घोड़ों को खिलाने के खयाल से एक गहरे खड्ड में रुके। फ़ोमीन, कोशेलेव को आदेश देते हुए बोला—"तुम पास के ढूह पर पैदल चढ़ जाओ, वहीं कहीं जमीन पर लेट रहो और चौकसी करो। खयाल रखना, घुड़सवारों की मैदान में कहीं भी झलक मिलते ही आगाह करना और फ़ौरन ही भागकर घोड़ों के पास आ जाना।"

ग्रिगोरी ने अपने घोड़े की ज़ीन ढीली की, उसे चरने को छोड़ा और खुद, पास ही, खड्ड के ढाल पर एक खुश्क जगह लेट रहा।

खड्ड के धूपवाले इस बाज़ू पर घास कहीं लम्बी और कहीं घनी थी। धूप से तपती काली मिट्टी की साँस मुरझाते वायलेट-फूलों की भीनी-भीनी गंध के प्राणों में विष घोलने में असमर्थ थी। वॉयलेट खाली बंजर जगहों में मुस्कराते, लम्बी तिनपतिया घास के सूखे डंठलों के बीच से झाँकते, और एक पुराने खेत की मेड़ के सिरे पर फैलकर तरह-तरह के रंगीन चित्र आँक रहे थे। और तो और, चकमक पत्थर

जैसी कड़ी, अछूती जमीन तक को पिछले साल की मुर्दा घास की पत्तियों को चीरकर, सिर उठाकर, अपनी बच्चों-जैसी नीली-निर्मल आँखों से दुनिया को भर-निगाह देख रहे थे। पर, इस वीराने में भी, उनकी सांसों की गिनती जैसे किसी ने कर ही ली थी। बेचारों के दिन पूरे हो चुके थे। अब उनकी जगह त्युलिप ले रहे थे और सूरज की तरफ देख-देखकर अपने सुर्ख, सफ़ेद और पीले जाम छलका रहे थे। हवा फूलों की तरह-तरह की सुगन्धियों को एक-दूसरे में पिरोकर दूर-दूर लिये जा रही थी।

चोटियों से घिरे उत्तरी ढाल के नुकीले कंकड़ों वाले हिस्से में अब भी बर्फ थी। बर्फ ने सिल्लियों की शक्ल ले ली थी। उससे भाप उठ रही और एक ठिठुरन-सी उमड़ रही थी ठिठुरन। अपने साथ ला रही थी सिर्फ़ वायलेट के बुझे हुए फूलों की हलकी-हलकी, उदासी से भरी महक, और यह महक ऐसी लग रही थी, जैसे कि याद हो जाने किस गुज़रे हुए ज़माने की, जाने किसीकी···

ग्रिगोरी कुहनियों के बल टाँग फैलाकर लेटा आराम करता रहा और धूप की धुंध से नहाए स्तेपी मैदान, दूर के सिलसिले के किनारे-किनारे फैले, नीले रँग की झाईं मारते बड़े-बड़े ढूहों और ढाल की सीमा पर, दूधिया पत्थर की तरह पल-पल पर रँग बदलने वाले मृगजल के प्रवाह को प्यासी निगाहों से पीता रहा। फिर एक क्षण को उसने आँखें मूंद लीं और दूर-पास की बुलबुलों के गीत, चरते हुए घोड़ों के हलके कदमों की आहट, हींस की आवाज, लगामों की खनखनाहट और नई घास में इधर-उधर डोलती हवा की फुसफुसाहट सुनता रहा। साथ ही उसने खुरदरी जमीन से अपना बदन सटाया तो उसका अन्तर एक अजीब तरह की विरक्ति और शान्ति से भर उठा। भावना चिर-परिचित लगी। बात यह कि वह जब भी चिन्ता से घिरा था, उसे ऐसा ही अनुभव हुआ था और उसने आसपास की हर चीज़ को बिल्कुल ही नई नजर से देखा था। ऐसे में हर बार उसकी दृष्टि जैसे और पैनी हो गई थी और कान और सध गए थे। फिर यह कि परेशानी के ऐसे क्षणों बाद पहले की हर अनदेखी चीज़ उसका ध्यान अपनी ओर खींचने लगी थी।

सो, इस समय भी उसने किसी छोटी चिड़िया का पीछा करने वाले छोटी जाति के बाज़ की सीटियाँ बड़ी उत्सुकता से सुनीं और उसकी उड़ान की टेढ़ी काट बड़ी ही दिलचस्पी से देखी। बड़े ही मन से उसने देखा अपनी दोनों कुहनियों के बीच कशमकश करते एक काले गुबरैले का जान-बूझकर रेंगना और अछूते सौंदर्य से जगमग करते खूनी-लाल रंग के ट्युलिप के एक फूल का हलके-हलके हवा में लहराना।

फूल बिल्कुल पास ही, जंगली चूहे के एक धँसे हुए बिल के सिर पर उगा दीखा, जैसे कि हाथ को दावत दे रहा हो कि फलो, आगे बढ़ो और मुझे चुन लो। पर ग्रगारिन बिना हिले-डुले लेटा रहा और फूल और सुबह की ओस की बूँदों को अपनी परतों में सहेजकर रखने वाली उसकी कड़ी पत्तियों की मन-ही-मन सराहना करता रहा। बाद में उसने उधर से निगाह हटा ली और बिना कुछ सोचे-समझे एक बाज़ पर बहुत देर तक जमा रखी। बाज़ क्षितिज के ऊपर, जंगली चूहों के बिलों के मुर्दा शहर पर मँडराता रहा।···

कोई दो घंटे के बाद ग्रिगोरी और उसके साथी फिर घोड़ों पर सवार हुए और रात होने-होने तक येलान्स्काया-ज़िले के जाने-पहचाने गाँवों में पहुँच जाने के ख़याल से बढ़ चले।

कहना न होगा कि इस बीच लाल सेना की गश्ती टुकड़ी ने इन लोगों की ख़बर टेलीफ़ोन से अधिकारियों तक पहुँचा दी। नतीजा यह कि ये लोग कामेन्का बस्ती में पूरी तरह दाखिल भी न हो पाए कि नदी के पार से गोलियों ने इनकी अगवानी की। उनकी सनसनाहट से डरकर फ़ोमीन एक ओर को मुड़ गया। बाक़ी लोगों ने भी आग की बारिश के बीच, बस्ती के बाहरी इलाक़ों का चक्कर काटा और व्येशेन्स्काया के घोड़ोंवाली चरागाह की तरफ़ तेज़ी से घोड़े बढ़ाए। मगर, दूसरी बस्ती के पार मिलिशिया की एक छोटी टुकड़ी ने इनके आड़े आने की कोशिश की।

फ़ोमीन बोला—"क्यों न हम बाएँ से इनके चारों ओर होकर निकल चलें!"

परन्तु ग्रिगोरी दृढ़ स्वर में बोला—"हम हमला बोलेंगे इन पर। ये लोग गिनती में नौ हैं, और हम पाँच···इनके बीच से आगे बढ़ेंगे हम!"

चुमाकोव और स्तेरलयादनिकोव ने उसका समर्थन किया। इस पर सभी ने अपनी तलवारें निकाल लीं और थकान से चूर-चूर घोड़ों को क़दम-चाल में डाल लिया। मिलिशिया के सिपाहियों ने, घोड़ों पर चढ़े ही चढ़े, गोलियों की बौछार की और फिर हमला बचाने के खयाल से एक तरफ़ को कट गए।

कोशेलेव ने मज़ाक बनाते हुए कहा—"बड़े गए-बीते लोग हैं। इधर-उधर से गोलियाँ चलाकर वक़्त खींचते रहेंगे, मगर जमकर लड़ेंगे नहीं।"

फ़ोमीन और उसके साथी, मिलिशिया के सिपाहियों के ज़ोर पकड़ने पर हर बार गोलियों का जवाब गोलियों से देते हुए पूर्व की तरफ़ पीछे हटे। उन्होंने बीच-बीच में झटके से मुड़कर देखा, पर ठिठके वे ज़रा भी नहीं। यानी भागे ऐसे जैसे कि वे भेड़िये हों और शिकारी कुत्ते उन्हें दौड़ा रहे हों। इसी सिलसिले में स्तेरलयादनिकोव घायल हो गया। गोली ने उसके बायें पैर की हड्डी छेद दी। वह पीला पड़ गया और दर्द से कराह उठा—"पैर में गोली मारी है···और पैर यह वही है··· लँगड़ावाला···सूअर की मौत मिले तुम्हें!"

चुमाकोव ठठाकर हँसा और इतना हँसा कि आँख से आँसू बहने लगे। फिर, उसने स्तेरलयादनिकोव को घोड़े पर बिठाया तो ठहाका लगाते हुए बोला—"भला उन्होंने इसी पैर को क्यों चुना? जान-बूझकर गोली चलाई होगी इस पर! तुम्हें लँगड़ाते देख लिया होगा और सोचा होगा कि इसके लँगड़े पैर को निशाना बनाओ···यह फ़ौरन हाथ लग जाएगा। उफ़···स्तेरलयादनिकोव···उफ़···तुम जानकर लेकर छोड़ोगे मेरी!··· तुम्हारा पैर तो जितना है, अब उसका भी एक-चौथाई रह जाएगा··· तब···तब···भला तुम नाचोगे कैसे? मुश्किल मेरी आएगी···मुझे और दो फ़ुट गहरा गड्ढा खोदना पड़ेगा।"

"बक-बक बंद कर···गधा कहीं का! अभी तेरे लिए वक़्त नहीं है

मेरे पास! ज़बान बंद कर···ईसा के लिए ज़बान बंद कर!" स्तेरलयाद-निकोव ने दर्द से कांपते हुए कहा।

इसके कोई आधे घंटे बाद अनगिन गड्ढे सामने आए और ये एक खड्ड से गुजरने लगे कि वह बोला—"थोड़ा रुको और सांस ले लो···मैं जरा ज़ख्म का इन्तजाम कर लूं···बूट भर गया है खून से!"

लोग रुक गए और ग्रिगोरी ने घोड़े थाम लिए। फ़ोमीन और कोशेलेव, मिलिशिया के दूर मंडराते सिपाहियों पर, बीच-बीच में गोलियां चलाते रहे। चुमाकोव बूट खींचने में स्तेरलयादनिकोव की मदद करने लगा। बोला—"लेकिन, बहुत खून निकल गया···सचमुच, बहुत ही ज्यादा खून निकल गया।" फिर उसने भौंहें सिकोड़ते हुए बूट में भरा खून ज़मीन पर उंडेला और पतलून के खून से शराबोर पांयचे को फाड़ने को हाथ लगाया। मगर स्तेरलयादनिकोव ने रोक दिया—"अच्छा-खासा पतलून है···इसे चौपट करने से कोई फ़ायदा नहीं।" वह हथे-लियां टेककर, पिछियाकर बैठ गया और ज़ख्मी पैर ऊपर उठाते हुए बोला—"उतार लो इसे···लेकिन ज़रा-धीरे से खींचना!"

चुमाकोव ने उसकी जेबें खँखोरते हुए पूछा—"पट्टी है कोई?"

"अट्टी-पट्टी की क्या जरूरत है? वैसे ही काम चल जाएगा।" स्तेरलयादनिकोव ने कहा, ज़ख्म का मुंह देखा-समझा, कारतूस के केस से दांतों से एक कारतूस खींची, उसकी बारूद हथेली पर डाली, थूक से मिट्टी सानी और फिर वह मिट्टी बारूद में मिलाई। इस तरह मरहम तैयार कर उसने घाव के दोनों सूराख भरे और सन्तोष-भरे स्वर में बोला—"आज़माई हुई दवा है यह···इससे ज़ख्म सूख जाएगा और दो दिन के अन्दर भर जाएगा।"···

इस बार वे पांचों रवाना हुए तो चिर-नदी के पहले कहीं नहीं रुके। मिलिशिया के सिपाही दूर रहे। हां, जब-तब गोलियां ज़रूर चलाते रहे। फ़ोमीन ने बार-बार मुड़कर देखा और बोला—"बात क्या है, ये लोग हम पर निगाह रख रहे हैं, या कुमक का इन्तज़ार कर रहे हैं? कोई-न-कोई वजह ज़रूर है कि इन्होंने इतनी दूरी बना रखी है।"

चिर नदी इन लोगों ने एक गांव के पास के घाट से पार की और

एक पहाड़ी के ढाल पर थकान से चूर घोड़ों को क़दम-चाल से चढ़ाया। यही नहीं, उन्हें इनकी लगामें थामकर इन्हें खींचना तक पड़ा। बीच-बीच में इन जानवरों की बगलों और पुट्ठों पर झाग जमा हुआ तो वह भी साफ़ किया।

फ़ोमीन की चिन्ता सार्थक निकली। एक गाँव से कोई पाँच वर्स्ट के फ़ासले पर, ताजा, तेज और फुर्तीले घोड़ों पर सवार सात लोगों ने इन लोगों का पीछा किया।

कोशेलेव उदास होकर बोला—"अगर हमें ये लोग आपस में एक-दूसरे को सौंपते गए, तो हमारा तो काम हो लिया!"

तो, जाने-समझे रास्तों को वरकाते, मुड़-मुड़कर गोलियाँ चलाते, और हर बार खुद मोड़ लेते हुए, इन लोगों ने स्तेपी मैदान के बीच घोड़े दौड़ाने शुरू किए। इस सिलसिले मे दो आदमी घास के बीच लेट गए और अपना पीछा करनेवालों पर गोलियाँ चलाने लगे। बाकी लोग कोई पाँच सौ गज आगे निकल गए और घोड़ों से उतरकर दुश्मन पर आग बरसाने लगे। फिर पहले वाले दोनों लोग हज़ार गज़ आगे जाकर घास में लेटकर गोलियाँ चलाने की तैयारी करने लगे। इस तरह इन लोगों ने मिलिशिया का एक आदमी, और मिलिशिया के एक दूसरे सिपाही का घोड़ा मार डाला। थोड़ी देर बाद ही चुमाकोव के घोड़े को भी गोली लग गई।

परछाइयों ने अपने आकार बढ़ाए। सूरज के क़दम अस्ताचल की ओर बढ़े। ग्रिगोरी की सलाह पर वे लोग साथ-साथ रहे और अपने घोड़ों को क़दम चाल से आगे बढ़ाते रहे। चुमाकोव बाजू में बना रहा। जरा देर बाद उन्होंने दो घोड़ों वाली एक गाड़ी पहाड़ी के सिरे पर देखी और सड़क की तरफ़ मुड़े। सयानी उम्र के, दाढ़ीवाले गाड़ीवान ने चाबुक लगाकर घोड़ों को सरपट दौड़ाया, पर गोलियों ने गाड़ी रोक दी।

"मैं इस गधे के बच्चे का एक हाथ में ही काम तमाम किए देता हूँ···इसे घोड़े भगाने का मज़ा मिल जाएगा।" कोशेलेव ने दाँत पीसकर कहा और अपने घोड़े पर चाबुक सटकारता आगे निकल चला।

"उसे हाथ मत लगाना, साशा···मेरा हुक्म है!" फ़ोमीन ने चेतावनी दी और दूर से ही गाड़ीवान से चिल्लाकर कहा—"बाबा, घोड़े खोल दो···सुनते हो? अपनी जान देना न चाहते हो तो घोड़ों को खोल दो!"

बूढ़े ने बड़ी आरज़ू-मिन्नत की, पर इन लोगों ने एक नहीं सुनी, ख़ुद घोड़ों को बमों से बाहर किया, रासें और पट्टे खोले और जानवरों पर जल्दी-जल्दी ज़ीनें कसीं।

बूढ़े ने रोते हुए भीख-सी माँगी—"बदले में कम-से-कम अपना ही एक घोड़ा छोड़ दो।"

कोशेलेव बोला—"होश में रहो···कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे दाँत उखड़कर बाहर आ रहें···घोड़ों की जरूरत हमें ख़ुद है। तुम तो ऊपर वाले का शुक्रिया अदा करो कि तुम जीते-जागते सही-सलामत खड़े हो।"

फ़ोमीन और चुमाकोव नये घोड़ों पर सवार हो गए, परन्तु इसके ज़रा देर बाद ही इन लोगों का पीछा करनेवाले छः घुड़सवारों में तीन और आ मिले।

फ़ोमीन बोला—"हमें घोड़े और तेजी से उड़ाने चाहिए···आओ साथियो!···अगर रात होते-होते हम क्रीन्स्की की घाटियों तक पहुँच गए, तो समझ लो कि बच गए।"

उसने चाबुक जमाया और उसका घोड़ा आगे-आगे सरपट दौड़ चला। बाएँ हाथ से उसने एक दूसरा घोड़ा साथ रखा। इन दोनों जानवरों की टापों से ट्युलिप के लाल फूल हर तरफ़ उड़ने लगे तो ऐसे लगे जैसे कि ख़ून की बड़ी-बड़ी बूँदें हों। फ़ोमीन के पीछे-पीछे घोड़े पर सवार ग्रिगोरी ने लाली की यह बौछार देखी और पलकें मूँद लीं। जाने क्यों उसका सिर चक्कर खाने लगा और एक जानी-पहचानी-सी पीर दिल को कचोटने लगी।

इस तरह घोड़े दौड़ते-दौड़ते अधमरे हो गए और ये लोग भी घुड़सवारी और भूख से चूर-चूर अनुभव करने लगे। स्तेरनयादनिकोव का चेहरा लिनेन-सा सफ़ेद पड़ रहा और वह काठी पर बुरी तरह

हिलने-डुलने लगा। एक ओर बहुत ज्यादा खून निकल जाने से एकदम कमजोरी आ गई तो दूसरी ओर प्यास और मतली ने झकझोरकर रख दिया। उसने थोड़ी-सी सूखी रोटी मुंह में डाली, मगर वह फ़ौरन ही बाहर आ गई।

साँझ के धुँधलके में फ़ीव्स्की गाँव के पास उन्हें स्तेपी से लौटते घोड़ों का एक झुंड मिला। इस झुंड के बीच से उन्होंने कुछ गोलियाँ चलाईं, मगर फिर किसी को पीछा करता न देखकर खुशी से फूले न समाए।

हुआ यह कि काफ़ी पहले, पीछा करने वालों ने अपने घोड़े एक-दूसरे से सटाए, स्थिति पर विचार किया और लौटा दिए।

ग्रिगोरी और उसके साथ के लोग फ़ीव्स्की में, दो दिन, फ़ोमीन के एक परिचित के यहाँ रहे। मेजवान मालदार आदमी था, इसलिए उसने स्वागत में किसी तरह की कोई कोर-कसर न की। घोड़ों को अंधेरे शेड में रखा गया, उन्हें खाने को पेट से ज्यादा जई दी गई और दूसरे दिन की शाम होते-होते वे बिल्कुल ताजा हो गए। उनमें नई जान आ गई। लोगों ने पारी-पारी से घोड़ों की रखवाली की, मकड़ी के जालों की बन्दनवार के, भूसेवाले शेड में फ़र्श पर चैन की नींद ली, और खाया-पिया इतना कि द्वीप पर बीते दिनों की कमी हर तरह पूरी हो गई। वहाँ तो आधा पेट खाकर समय काटना पड़ा था।···

यों तो वे दूसरे दिन उस गाँव से चल देते, पर स्तेरलयादनिकोव के कारण ऐसा हो न सका। उसके जख्म की हालत और बिगड़ गई, सिरों पर आग-सी लाली नजर आने लगी। शाम होते-होते पैर सूज गया और वह खुद बेहोश हो गया। प्यास उसे तोड़ती रही, सो अलग से। रात मे जब भी होश आया, उसने पानी की माँग की और टूटकर पानी पिया। परन्तु, दर्द के कारण, किसी की मदद से भी उठना दुस्वार हो गया। उसने पेशाब लेटे-ही-लेटे किया और बराबर कराहता रहा। आहों-कराहों में कमी करने के खयाल से लोग उसे उठाकर शेड के दूर के कोने में ले गए। मगर उससे भी कोई अन्तर नहीं पड़ा, उल्टे, कभी-कभी कराहें इतनी तेज़ हो गईं कि क्या कहिए। इसके साथ ही

सन्निपात हो गया और वह रह-रहकर चीखने-चिल्लाने लगा।

फिर उसकी भी देख-रेख ज़रूरी हो गई। उसे पानी दिया गया, उसका तपता माथा पानी से तर किया गया और ज़ोर से कराहने या बोलने के समय हर बार उसके मुंह पर हथेली या टोपी रखी गई।

दूसरे दिन के समाप्त होते-होते वह ज़रा सम्हला और अपने को बेहतर बतलाते हुए चुमाकोव की तरफ़ उंगली दिखलाकर बोला—"यहां से कब जा रहे हो तुम लोग ?"

"आज रात को।"

"मैं भी चलूंगा···मुझे यहां मत छोड़ देना···ईसा के लिए।"

फ़ोमीन धीरे से बोला—"लेकिन, तुम कैसे चलोगे ? किस लायक़ हो ? तुम तो हिल-डुल भी नहीं सकते।"

"मैं हिल-डुल तक नहीं सकता ? देखो ज़रा !" स्तेरलयादनिकोव ने बड़ी कोशिश से अपने को आधा उठाया और फिर फ़ौरन ही ढह पड़ा। उसका चेहरा तमतमा उठा और भौंहों पर पसीने की छोटी-छोटी बूंदें झलकने लगीं।

चुमाकोव ने दृढ़ स्वर में कहा—"हम ले चलेंगे तुम्हें···हम साथ ले चलेंगे तुम्हें···तुम डरो नहीं। आंसू पोंछो···तुम औरत तो नहीं हो न !"

"ये तो पसीने की बूंदें हैं।" स्तेरलयादनिकोव ने धीरे से फुसफुसाते हुए कहा और अपनी आंखों पर टोपी खींच ली।

"हम तो तुम्हें खुशी-खुशी यहां छोड़ जाते, मगर दिक़्क़त यह है कि इस घर का मालिक राजी नहीं होगा इसके लिए···तुम अपना दिल छोटा मत करो, वैसिली ! तुम्हारा पैर ठीक हो जाएगा और तुम और मैं यानी हम दोनों फिर डटकर कुश्ती लड़ेंगे और कज़्ज़ाक नाच नाचेंगे।"

दूसरों के मामले में हमेशा सख्ती और जंगलीपन बरतनेवाले चुमाकोव ने ये शब्द इतने शांत भाव से, इतनी ममता से और इतनी ईमानदारी से कहे कि ग्रिगोरी आश्चर्य से उसकी ओर देखने लगा।

फिर तड़के से ज़रा पहले उन लोगों ने उस गांव से रवाना होने की तैयारी की। उन्होंने स्तेरलयादनिकोव को जैसे-तैसे घोड़े की काठी पर

बिठाया, परन्तु वह सधा न रह सका। कभी इस ओर को लुढ़क गया तो कभी उस ओर को। अन्त में चुमाकोव उसकी बगल में बैठा और उसने अपना दाहिना हाथ जख्मी साथी की कमर में डाल दिया।

"इस तरह घसीटना मुश्किल होगा। हमें तो इसे कहीं-न-कहीं छोड़ ही देना होगा।" फ़ोमीन ने ग्रिगोरी के घोड़े के बराबर अपना घोड़ा लाते हुए, सिर हिलाकर धीरे से कहा—"यानी मार डालोगे इसे, क्यों ?"

"और···और हो ही क्या सकता है ? उसकी आंखों में आंखें डालीं तुमने ? जहाँ तक हमारा सवाल है, हम उसके लिए कर भी क्या सकते है ?"

फिर वे कुछ देर तक चुपचाप अपने घोड़ों को कदम चाल से चलाते रहे। इसके बाद चुमाकोव की जगह ग्रिगोरी ने ली और फिर ग्रिगोरी की जगह कोशेलेव ने।···

सूरज उगा। नीचे, दोन की सतह के ऊपर धुंध अब भी मँडराती रही। पर पहाड़ियों से स्तेपी मैदान दूर-दूर तक निर्मल और चमाचम नजर आता रहा। आसमान के गुम्बद का नीलम हर क्षण गहराता गया और क्षितिज पर पंखोंवाले, छोटे-छोटे बादल जमे-से लगने लगे। शबनम ने घास की पत्तियों पर रुपहली ज़री का बारीक़ काम किया। लेकिन घोड़े जहाँ-जहाँ से गुज़रे वहाँ-वहाँ गहरे रंग का रास्ता बन गया और यह रास्ता जैसे पानी पर बहता रहा। स्तेपी को चारों ओर से घेरने वाले अकूत सन्नाटे का तार सिर्फ़ बुलबुलों ने तोड़ा।

बेचारे स्तेरलयादनिकोव का सिर घोड़े की हर हरकत के साथ उछल-उछल जाता रहा। आखिरकार वह धीरे से बोला—"उफ़···अब सहा नहीं जाता।"

हेतमान की बड़ी सड़क के पास एक सारस, घोड़ों की टापों के बीच से एकाएक ऊपर उठा। उसके पैरों की फड़फड़ाहट ने स्तेरलयाद-निकोव को जैसे बेहोशी से होश में ला दिया। बोला—"भाइयो, घोड़े से नीचे उतार दो मुझे !"

कोशेलेव और चुमाकोव ने उसे बड़ी सावधानी से काठी से नीचे उतारा और गीली घास पर लिटा दिया।

"लाओ, तुम्हारा पैर देखें तो ज़रा···अच्छा, अपने पतलून के बटन तो बन्द करो !" चुमाकोव ने उसकी बग़ल में बैठते हुए कहा ।

···स्तेरलयादनिकोव का पैर, इस बीच बहुत ही अधिक सूज गया था । खाल में कहीं एक सिकुड़न न थी और उसने पतलून के पांयचे की पूरी जगह घेर ली थी । ऐन चूतड़ तक खाल गहरी बैंजनी पड़कर धब्बों से भर गई थी । धब्बे छूने पर काफ़ी चिकने और मुलायम लगते थे । ऐसे ही मगर ज़रा हल्के रंग के धब्बे उसके सांवले, धँसे हुए पेट पर भी नज़र आ रहे थे । ज़ख्म के साथ-साथ पतलून पर सूख गए भूरे खून से भी भयानक बू आ रही थी ।···

ऐसे में चुमाकोव ने अपने मित्र का पैर ग़ौर से देखना शुरू किया तो अपनी नाक झटके से ऊपर उठा ली, भौंहें सिकोड़ लीं और मतली जैसे-तैसे रोकी । उसके बाद उसने स्तेरलयादनिकोव की झुकी हुई, नीली पलकों को पास से, ध्यान से देखा, फ़ोमीन की ओर आँखें कीं और बोला—"लगता है कि बदन का अन्दर से सड़ना शुरू हो गया है···ठीक है ।···तुम्हारी हालत ठीक नहीं है, वैसिली-स्तेरलयादनिकोव ! हालत सचमुच काफ़ी खराब है । उफ़···वास्या···वास्या···इतनी तकलीफ़ तुम्हें क्यों हुई आखिर ?"

स्तेरलयादनिकोव लम्बी-लम्बी सांस लेता रहा और कोई जवाब दे न पाया । फ़ोमीन और ग्रिगोरी, जैसे कि किसी कमान पर घोड़ों से उतरे और हवा के रुख को बचाते हुए उसकी ओर बढ़े । वह कुछ देर तक स्थिर लेटा रहा, फिर हाथ के बल उठकर बैठा और खून-सी लाल आँखों से उनकी ओर देखते हुए बोला—"भाइयो, मुझे मौत के हाथों सौंप दो···मैं यों भी ज़िन्दा नहीं हूँ···एकदम टूट गया हूँ···मेरी ताक़त पूरी तरह जवाब दे गई है······"

वह फिर पीठ के बल लेट गया और आँखें बंद कर लीं । फ़ोमीन और उसके साथ के दूसरे लोगों को यों भी इस अनुरोध की आशा थी । सो, कोशेलेव की तरफ़ देखकर आंख मारते हुए फ़ोमीन दूसरी ओर को मुड़ गया । कोशेलेव ने विरोध में कुछ न कहा, झटके से कंधे से राइफ़ल उतारी और चुमाकोव के होंठों की हरक़तों को पढ़ते हुए

सुनने से अधिक समझा—"गोली मार दो !" पर, स्तेरलयादनिकोव ने फिर आँखें खोल लीं, और अपनी उँगली से नाक की हड्डी की तरफ़ इशारा करते हुए बोला—"यहाँ गोली मारना ताकि रोशनी फ़ौरन ही गुल हो जाए···अगर कभी गाँव की तरफ़ जाना हो तो मेरी बीवी को पूरा क़िस्सा सुना देना और कह देना कि वह अब मेरा इन्तजार न करे।"

कोशेलेव, बहुत देर तक, राइफ़ल के खटके से खिलवाड़ करता रहा। उस बीच स्तेरलयादनिकोव को समय मिल गया, और उसने पलकें झुकाते हुए कहा—"मेरे बीवी है सिर्फ़···बच्चे नहीं हैं···एक बच्चा हुआ था, पर वह पेट में ही मर गया था···फिर और कुछ हुआ नहीं।"

कोशेलेव ने दो बार राइफ़ल तानी, पर दोनों ही बार झुका ली और चेहरे की ज़र्दी बराबर बढ़ती गई। इस पर चुमाकोव ने कंधा पकड़कर उसे क्रोध से ढकेल दिया और राइफ़ल उसके हाथ से छीन ली।

"अगर काम नहीं कर सकते तो जिम्मा मत लो···छुईमुई के फूल हो निरे !" भर्राये गले से वह चीखा, टोपी उतारी और बालों पर हाथ फेरे।

"जल्दी करो !" फ़ोमीन ने एक पैर रक़ाब में रखते हुए कहा।

चुमाकोव ने सार्थक शब्दों की खोज करते हुए शांत भाव से, धीरे से कहा—"वैसिली, अलविदा···ईसा के लिए मुझे और मेरे सभी साथियों को माफ़ कर देना···अब मुलाक़ात दूसरी दुनिया में होगी। और यहाँ हमने जो-कुछ अच्छा-बुरा किया है, उस पर फ़ैसला वहाँ दिया जाएगा···तुम्हारी बात तुम्हारी घरवाली तक जरूर पहुँचा दी जाएगी।"

चुमाकोव ने उत्तर की प्रतीक्षा की, पर स्तेरलयादनिकोव चुप रहा। मौत के इन्तजार में उसका चेहरा पीला पड़ गया। केवल उसकी बरौनियों के बाल, जैसे कि हवा से, फड़फड़ाए। साथ ही उसके बाएं हाथ की उँगलियों में हरकत हुई और वह जाने क्यों अपनी ट्यूनिक

का एक ढीला बटन ठीक करने लगा।

ग्रिगोरी ने अब तक जाने कितनी मौतें देखी थीं। इस पर भी स्तेरलयादनिकोव को मरता देखने की हिम्मत वह न जुटा सका, अपने घोड़े की रासें तेज़ी से खींचता जल्दी-जल्दी आगे बढ़ गया, और इस गोली की राह यों देखने लगा, जैसे कि खुद उसकी अपनी खोपड़ी में मारी जा रही हो। उसके दिल ने एक एक क्षण की गिनती की। परन्तु, जब पीछे गोली की आवाज़ हुई तो उसके घुटने कांप गए और वह बड़ी मुश्किल से पिछड़ते हुए घोड़े को सम्हाल सका।

फिर कोई दो घंटे तक वे घोड़ों पर सवार मंज़िल तय करते रहे, पर मुंह उनमें से एक ने भी नहीं खोला। उसके बाद मौन तोड़ा चुमाकोव ने। आंखों पर हथेली की ओट करते हुए, भारी गले से बोला—"मैंने गोली उसे पता नहीं क्यों मार दी? उसे स्तेपी में कहीं छोड़ दिया जाता। बेकार का गुनाह अपने ऊपर लिया मैंने। वह अब भी मेरी आंखों के आगे नाच रहा है।"

फ़ोमीन बोला—"आखिर तुम कब आदी होगे इन चीज़ों के? इतने लोगों को तुम तलवार के घाट उतार चुके, मगर अटपटा तुम्हें अब भी लगता है···आखिर क्यों? तुम्हारे पास दिल नहीं है···दिल की जगह ज़ंगलगा लोहे का एक ढोंका है।"

चुमाकोव का चेहरा तमतमा उठा। उसने फ़ोमीन की ओर क्रोध से नज़र गड़ाकर देखा और बोला—"इस वक़्त मुझसे मत उलझो, याकोव-येफ़िमोविच! मुझे छेड़ोगे तो मैं तुम्हें ठिकाने लगाकर छोड़ूंगा ···हां, तुम्हें भी ठिकाने लगा दूंगा···और, सो भी बड़ी ही आसानी से देखते-देखते।"

"तुमसे भला क्यों उलझूंगा मैं! मुझे अपनी ही परेशानियां कौन कम हैं!" फ़ोमीन ने समझौता-सा करते हुए कहा और धूप के कारण आंखें सिकोड़ते हुए पीठ के बल लेटकर आराम से हाथ-पैर फैला लिए।

: १६ :

ग्रिगोरी की आशा के विरुद्ध अगले दस दिनों के दौरान चालीस

से अधिक कज़्ज़ाक फ़ोमीन के दस्ते में आ शामिल हुए। ये सोवियत सेनाओं द्वारा तार-तार कर दिए गए छोटे-छोटे दस्तों के बचे-खुचे लोग थे। इनके नेता रह गए थे और पूरे इलाके में जहाँ-तहाँ मारे-मारे फिरते थे। इनके सामने कोई उद्देश्य न रह गया था, और इसीलिए ये बड़ी खुशी-खुशी फ़ोमीन से आ मिले थे। उनके लिए सब-कुछ बराबर था। वे किसीकी मातहत रह सकते थे और किसी को भी तलवार के घाट उतार सकते थे। चाहते सिर्फ़ इतना थे कि खानाबदोशों की-सी आज़ाद ज़िन्दगी बिताते रहें और जो हाथ आ जाए उसे लूटते-खसोटते रहें। इनमें से कितने ही लोग देखने में छंटे हुए गुण्डे लगते थे। यही कारण है कि फ़ोमीन ने इन्हें देखा तो नफ़रत से भरकर ग्रिगोरी से बोला—"मेलेखोव, हमारे दस्ते में शामिल होने वाले ये तमाम लोग हर तरह गए-बीते हैं ···इन्सान नहीं है। ये तो फांसी के तख्ते और फांसी के फंदे के लिए चुने गए लोग हैं।"

बात यह है कि फ़ोमीन अपने अन्तरतम में अपने को अब भी मेहनतकशों के लिए लड़ने वाला समझता था और पहले की तरह तो अक्सर नहीं, लेकिन फिर भी जब-तब कहता था—"हम कज़्ज़ाकों को आज़ादी दिलाने वाले लोग हैं।" वह बेहूदी-से-बेहूदी आशा को सीने से लगाकर रखता था, सच्चाई को साफ़ नकार जाता था, अपने साथियों द्वारा की गई लूट-पाट से आँख बचा जाता था और कहता था—"यह सारा तूफ़ान ज़रूरी है···इस सूरत से मुझे समझौता करना चाहिए··· हाँ जल्दी ही वह वक्त आएगा जब लूटपाट करने वाले इन लोगों से छुटकारा ले लूंगा, और डाकुओं के महज एक छोटे दस्ते का अतामान न रहकर, बाग़ी फ़ौजों का सच्चा कमाण्डर बन जाऊँगा।"

···लेकिन चुमाकोव तो अब भी संकोच न करता, फ़ोमीन के सभी साथियों को लुटेरे डाकुओं की संज्ञा देता और पूरी आवाज़ से बहस-करखुद फ़ोमीन को लुटेरा और डाकू साबित करता। कहता—"तुम और कुछ हो ही नहीं सकते···हाँ काम जरा बड़े पैमाने पर करते हो।" यानी वे दोनों जब भी एक-दूसरे को अकेले मिलते, उनमें धुआंधार बहस छिड़ जाती और वे आपे से बाहर होते।

फ़ोमीन गुस्से से लाल होते हुए चीखता—"मेरी लड़ाई तो सोवियत हुकूमत से है और यह उसूल की लड़ाई है···और तुम हो कि मुझे जाने क्या समझते हो। बेवकूफ कहीं के, तुम्हारी समझ में यह नहीं आता कि मैं एक खास खयाल को लेकर अपनी लड़ाई चला रहा हूँ ?"

चुमाकोव जवाब देता—"मुझे चकमा देने की कोशिश न करो, और न मेरी आँखों पर पर्दा डालो। मैं कोई बच्चा नहीं हूँ कि तुम मुझे जो चाहोगे सो समझा दोगे। उसूल···फु:। तुम तो पैदाइशी डाकू हो··· और सिर्फ़ डाकू हो। और अगर हो तो मेरी समझ में नहीं आता कि इस लफ्ज़ से इस तरह भड़कते क्यों हो ?"

"क्योंकि यह बेइज्ज़ती की बात है।···तेरी ज़बान कटकर गिर जाए।···मैंने सरकार के खिलाफ़ सिर उठाया है और सरकार के खिलाफ़ हथियार उठाए हैं···इतने से ही तो मुझे डाकू नहीं कहा जा सकता।"

"बिल्कुल इसीलिए डाकू हो तुम ! सरकार के खिलाफ़ लड़ने की वजह से ही डाकू कहा जाना चाहिए तुम्हें। लुटेरे और बटमार शुरू से ही सरकार के खिलाफ़ रहे हैं। कोई सवाल नहीं कि सोवियत सरकार क्या है और कैसी है···वह एक सरकार है, १९१७ से काम कर रही है और जो भी उसके खिलाफ़ क़दम उठाता है, वह सिर्फ़ लुटेरा है, डाकू है।"

"तुम तो बहुत ही काठ के उल्लू निकले ! अच्छा, जनरल क्रासनोव और देनीकिन···वे भी बटमार और डाकू थे ?"

"और क्या थे वे ? वे लुटेरे थे···सिर्फ़ यह कि उनके कन्धों पर फ़ौजी पट्टियाँ थीं···और, फ़ौजी पट्टियों से कोई खास फ़र्क़ नहीं पड़ता··· तुम्हारे और मेरे कन्धों पर भी वे पट्टियाँ हो सकती हैं।"

फ़ोमीन हाथ पटकता, थूकता और कोई कारगर दलील न सोच पाकर बेकार का झगड़ा खत्म कर देता। सोचता—'चुमाकोव से बहस करने से फ़ायदा ?'

तो, जो लोग दस्ते में आ शामिल हुए थे, उनमें से अधिकांश के पास क़ायदे के कपड़े और शानदार हथियार थे। लगभग सभी के

पास ठाठ के घोड़े थे। ये घोड़े बिना रुके चलते जा सकते थे और एक सौ वर्स्ट आसानी से तय कर सकते थे। इनमें से कुछ लोगों के पास दो-दो तक घोड़े थे। एक पर वे सवारी करते थे तो दूसरा बग़ल-बगल चलता था। जरूरत पड़ने पर वे एक से उतरकर दूसरे पर सवार हो जाते थे। इस तरह दोनों को ही पारी-पारी से आराम मिल जाता था और दो घोड़े वाले लोग एक दिन में दो सौ वर्स्ट की मंजिल मार लेते थे।···

ऐसे ही एक दिन फ़ोमीन, ग्रिगोरी से बोला—"अगर शुरू से ही हममें से हरएक के पास दो-दो घोड़े होते तो दुनिया में कोई ताक़त ऐसी न होती जो हमें पकड़ लेती। मिलिशिया और लाल फ़ौजी न लोगों से घोड़े छीनते हैं और न उन्हें यह पसन्द है। लेकिन हम तो जो मन में आए, वह कर सकते हैं। हमें अपने हर आदमी के लिए एक फ़ालतू घोड़े का इन्तजाम करना चाहिए। मैं कहता हूँ कि इतना हो जाए तो दुश्मन हमें क्या ही पकड़ पाए। अपने बूढ़े सयाने बतलाते हैं कि तातार इसी तरह धावे बोलते थे। उनमें से हरएक के पास कम-से-कम दो घोड़े होते थे। कभी-कभी तीन भी होते थे। ऐसे घुड़सवार किसके हाथ आ जाते भला? और अब हमें भी यही करना चाहिए। तातारों की अक्ल का मैं बड़ा कायल हूँ।"

और इन लोगों ने जल्दी ही और घोड़े हथिया लिए और वे कुछ समय तक सचमुच ही दुश्मन के हाथ नहीं आए। व्येशेन्स्काया में नए सिरे से संगठित मिलिशिया के लोगों ने उन्हें पकड़ने की बड़ी कोशिश की। पर, मेहनत बेकार गई। फ़ोमीन के साथियों ने, गिनती में कम होने पर भी फालतू घोड़ों की मदद से बड़ी ही आसानी से दुश्मन के छक्के छुड़ा दिए। वे काफ़ी आगे रहे। इस तरह खतरनाक मुहिम का कोई मौक़ा ही नहीं आया।

लेकिन इस पर भी मई के मध्य में फ़ोमीन के दस्ते से लगभग चौगुनी सेना ने दोन के सामने, उस्त-खोपरस्काया जिले के बोबरोवस्की गांव के पास दस्ते को घेर लिया। परन्तु थोड़ी लड़ाई के बाद दस्ते के लोग क़तार भेदकर नदी के किनारे की ओर भाग निकले। इस सिलसिले में उनके आठ आदमी मारे गए और घायल

हुए। इसके थोड़े समय बाद फ़ोमीन ने ग्रिगोरी से चीफ़-ऑफ़-स्टाफ़ का पद सम्हालने को कहा। बोला—"हमें किसी पढ़े-लिखे आदमी की जरूरत है, ताकि हम एक नक्शा बनाकर चल सकें, वरना एक-न-एक दिन दुश्मन हम पर हावी हो जाएँगे और हमें झकझोरकर रख देंगे। यह ज़िम्मेदारी तुम अपने ऊपर ले लो, ग्रिगोरी-पैन्तेलेयेविच!"

ग्रिगोरी ने ज़रा मौज में आते हुए कहा—"मिलिशिया के लोगों को पकड़ने और उनके सिर धड़ से अलग करने के लिए चीफ़-ऑफ़-स्टाफ़ की जरूरत नहीं।"

"हर फ़ौजी टुकड़ी का अपना एक स्टाफ़ होना चाहिए।"

"वैसे अगर स्टाफ़ के बिना तुम्हारा काम नहीं चलता हो, तो चुमाकोव को बना दो स्टाफ़।"

"लेकिन तुम इस ज़िम्मेदारी से क्यों बचना चाह होते ?"

"मुझे पता ही नहीं कि उसके मानी क्या होते है ?"

"और चुमाकोव जानता है।"

"नहीं, जानता तो चुमाकोव भी नहीं।"

"तब फिर इस काम के लिए तुम उसका नाम क्यों ले रहे हो ? तुम फ़ौजी अफ़सर हो, और तुम्हें तो इसकी जानकारी होनी चाहिए। लड़ाई के सारे दाव-पेंच वगैरह तुम तो जानते ही होगे।"

"जैसे तुम इस दस्ते के कमांडर हो, बिल्कुल वैसा ही मैं फ़ौजी अफ़सर रहा हूँ। हमने तो सिर्फ़ एक दाव-पेंच जाना है, और वह यह कि पूरे स्तेपी का चक्कर काटो और आँखें हर वक्त खुली रखो।" ग्रिगोरी ने व्यंग्य से कहा।

फ़ोमीन ने ग्रिगोरी की ओर देखकर आँख मारी और उँगली से धमकी दी।

"मैं तुम्हारी बात समझ गया। अपने को आड़ में रखना चाहते हो। सामने आना नहीं चाहते। इससे बच नही सकोगे, मेरे भाई! क्या फ़र्क पड़ता है कि तुम ट्रूप-कमान्डर हो या चीफ़-आफ़ स्टाफ़। तुम्हारा खयाल हैं कि तुम दुश्मनों के हाथ लग जाओगे तो वे तुम्हारे साथ किसी तरह की रू-रियायत बरतेंगे ? खैर न मानते हो तो न मानो, मौक़ा पड़ने पर देख लेना।"

"यह तो बात ही मेरे दिमाग़ में नहीं आई···गलत सोच रहे हो तुम।" ग्रिगोरी ने अपनी तलवार की मूठ पर नजर गड़ाते हुए कहा—"लेकिन जिस काम के बारे में मैं कुछ नहीं जानता, उसे अपने हाथ में ले नहीं सकता।"

"ख़ैर अगर तुम नहीं चाहते तो न सही। हमारा तुम्हारे बिना भी जैसे-तैसे काम चल ही जाएगा।" फोमीन ने क्रुद्ध होते हुए कहा।

इस बीच इलाक़े में स्थिति पूरी तरह बदल गई। जो खाते-पीते कज्जाक फ़ोमीन का पहले खुले दिल से स्वागत करते थे, उनके दरवाज़े उसके लिए बिल्कुल बन्द हो गए। अब दस्ता जब भी किसी गांव में पहुंचा, वहां के घरों के मालिक जल्दी-जल्दी इधर-उधर हो गए और बाग-बगीचों में जा छिपे। व्येशेन्स्काया आने पर क्रान्तिकारी अदालत के लोगों ने फ़ोमीन की खातिर करने वाले कितने ही कज्जाकों को कड़ी-से-कड़ी सजा दी। फिर इसकी खबर हवा की तरह अलग-अलग जिलों में फैल गई, और उसका असर इन लुटेरों की तरफ़ खुल्लमखुल्ला दोस्ती का हाथ बढ़ाने वाले लोगों पर भी पड़ा।

फ़ोमीन ने एक पखवारे के अन्दर-अन्दर ऊपरी दोन के सभी जिलों का दूर-दूर तक दौरा कर डाला। अब तक दस्ते के तलवार-बन्द लोगों की गिनती एक सौ तीन तक पहुंच गई और उनका पीछा करने वाले भी कुछ इने-गिने घुड़सवार ही न रह गए, बल्कि दक्षिणी मोर्चे से भेजी गई तेरहवीं घुड़सवार रेजीमेंट की कई स्ववैड्रनें उस काम मे लग गईं।

फ़ोमीन के दस्ते में हाल में शामिल होने वाले लोग इलाक़े के अलग-अलग हिस्सों के थे और चक्करदार सड़कों से दोन तक पहुंचे थे। इनमें से कुछ लोग कैदियों के गिरोह, जेलखानों और जेल के कैम्पों से एक-एक कर भाग आए थे। लेकिन ज्यादातर लोग या तो कई दर्जन घुड़सवारों के मिले-जुले दल के सदस्य थे, या तौर-तार हो गए और कुरोचकिन-दस्ते के बचे हुए आदमी थे। घुड़सवार मास्लाक से कट गए थे और अपनी इच्छा से अलग-अलग टुकड़ियों में बंट गए थे, पर कुरोचकिन दस्ते के लोगों ने इस तरह बिखरना पसन्द न किया था। उन्होंने अपनी एक टुकड़ी अलग बना ली थी, अपने को एक दृढ़ सूत्र में बांध लिया था और अनेप

को दस्ते के दूसरे लोगों से अलग-थलग रखा था। फिर क्या लड़ाई के समय और पड़ावों के वक्त, उनका अपना हिसाब अलग ही रहा था? यही नहीं, जब भी उन्होंने कोई सहकारी दूकान या गोदाम लूटा था, लूट का पूरा माल एक जगह जमा किया था और फिर, पूर्ण समानता सिद्धान्त के आधार पर, उसे आपस में बराबर-बराबर बाँट लिया था।

…फटे-पुराने सिरकैशियन कोटों से लैस, तेरेक और कुबान के कई कज्ज़ाकों, दो कालमीकों, जांघों तक पहुंचने वाले हंटिंग बूटों के एक लातवियन और धारीदार जर्सियों और नौसैनिकों के बदरंग किटों वाले पाँच नौ-सैनिक अराजकतावादियों के कारण फ़ोमीन के दस्ते में विविधता आ गई थी। दस्ता रंग-बिरंगा हो उठा था।

चुमाकोव ने एक दिन पूरी कतार पर नजर दौड़ाते हुए फ़ोमीन से कहा—"तुम अब भी कहोगे कि तुम्हारी कमान में लुटेरे और डाकू नहीं हैं? क्या नाम दोगे तुम इन तमाम लोगों को? किसी खास उसूल के लिए लड़ने वाले हैं ये सब? बस बिना फ्रॉक वाले एक पादरी और पतलूनों में सजे-बजे कुछ सूअरों की कसर है…ये और आ जाएँ तो दस्ता पहुँचे हुए फ़क़ीरों की एक जमात हो जाए।"

फ़ोमीन ने बात अनसुनी कर दी। वह तो अधिक-से-अधिक लोगों को अपने दस्ते में शामिल करने में उलझा रहा और स्वयंसेवकों को स्वीकार करते समय उसने किसी भी बात की तरफ़ कोई ध्यान नहीं दिया। वह अपनी कमान में आने की इच्छा रखने वाले हर आदमी से खुद सवाल-जवाब करता और रुखाई से कहता—"तुम बिलकुल ठीक हो। मैं तुम्हें लूंगा। अब जाकर मेरे चीफ़-ऑफ़-स्टाफ़ चुमाकोव से मिलो। वह तुम्हें किसी खास ट्रुप में भेज देगा और हथियार दे देगा।"

इसी सिलसिले में मिगुलिन्स्काया ज़िले के एक गाँव में शानदार कपड़ों और घुंघराले बालों वाला एक साँवला, कम उम्र जवान फ़ोमीन के पास लाया गया। जवान ने फ़ोमीन के दस्ते में शामिल होने की ख्वाहिश ज़ाहिर की। पूछताछ के बाद पता चला कि वह रोस्तोव का रहने वाला है, हथियारबन्द डकैती के मामले में हाल में सजा पा चुका

है, परन्तु रोस्तोव जेल से भाग निकला है, और फ़ोमीन का ज़िक्र सुन-कर ऊपरी दोन के इस इलाक़े में चला आया है।···

फ़ोमीन ने उससे पूछा—"कहाँ के हो ? आर्मीनिया के या बुलगारिया के ?"

"मैं यहूदी हूँ", लड़के ने ज़रा परेशानी के साथ जवाब दिया।

इस पर फ़ोमीन आश्चर्य से अवाक् रह गया, कुछ देर तक उसके मुंह से बोल न फूटा, और उसकी समझ में न आया कि इस अप्रत्याशित परिस्थिति में करे तो करे क्या !

थोड़ा सोचने के बाद उसने एक लम्बी साँस भरी और बोला—"ख़ैर, तुम अगर यहूदी हो तो हो। हम यहूदियों पर भी नाक नहीं चढ़ाते। हमें एक आदमी और मिला। पर घुड़सवारी कर लेते हो तुम ?··· नहीं कर सकते ? कोई बात नहीं, सीख लोगे। तुम्हें कोई सीधी किस्म की घोड़ी दे दी जाएगी, और तुम्हें यह काम भी आ जाएगा। फ़िल-हाल चुमाकोव के पास जाओ···वह तुम्हें किसी-न-किसी ट्रुप में भेज देगा।"

और कुछ क्षणों के बाद ही क्रोध से लाल चुमाकोव घोड़ा दौड़ाता, फ़ोमीन के पास आया और रासें खींचकर जानवर को पिछले पैरों के बल खड़ा करता हुआ बोला—"तुम पागल हो गए हो या महज़ मज़ाक सूझा है तुम्हें ? यह यहूदी क्यों भेज दिया तुमने मेरे पास ? मैं उसे क़बूल नहीं करूँगा···जहाँ कहीं उसका सींग समाए, वहाँ चला जाए।"

फ़ोमीन ने शांत भाव से कहा—"ले लो उसे···ले लो···हमारे दस्ते में एक आदमी और बढ़ेगा।"

परन्तु चुमाकोव के मुंह से ग़ुस्से के मारे झाग निकलने लगा और वह चीखा—"मैं नहीं लूंगा उसे···मैं उसे जान से मार डालूंगा, मगर दस्ते में शामिल नहीं करूँगा···कज़्ज़ाक उसे लेकर आसमान सिर पर उठा रहे हैं···तुम जाओ और खुद बात करो उनसे।"

मगर इधर बहस और गरमागरमी चलती रही, और उधर कज़्ज़ाकों ने उस यहूदी को एक मालगाड़ी के पास धर पकड़ा और उसके बदन

की कसीदेकारी की कमीज़ और सूती पाजामा उतार लिया। एक कज़्ज़ाक ने कमीज खुद पहनते हुए कहा—"गाँव के पार वह···वहाँ पुरानी झाड़ी नज़र आती है तुम्हें! बस तो दुलकी चाल से दौड़ते हुए जाओ, और वहाँ लेट रहो···यानी तब तक लेटे रहो जब तक कि हम यहाँ से चले न जाएँ···उठना सिर्फ हमारे जाने के बाद—और जहाँ चाहो वहाँ चले जाना···वैसे अब हमारे पास आने की हिम्मत न करना, वरना मार डाले जाओगे। बेहतर तो यह है कि तुम रोस्तोव लौट जाओ, अपनी अम्मीजान के पास! लड़ना यहूदियों के बस का नहीं है। आसमान वाले ने तुम्हें तिजारत सिखाई है, लड़ाई नहीं। लड़ाई हम तुम्हारे बिना भी चला लेंगे।"

इस तरह उस यहूदी को तो नहीं लिया गया, मगर उसी दिन कज़्ज़ाकों ने व्येशेन्स्काया ज़िले के सभी गाँवों के लोगों के परिचित, 'अक़्ल के धनी' पाशा को पकड़ा और हँसी से लोटपोट होते हुए दूसरे ट्रूप में भेज दिया।

हुआ यह कि उसे स्तेपी में पकड़ा गया, गाँव लाया गया और एक मृत लाल सैनिक की वर्दी ठाठ से पहनाई गई। इसके बाद कज़्ज़ाकों ने उसे राइफ़ल चलाकर दिखलाई और बहुत देर तक तलवार चलाना सिखलाया।

ग्रिगोरी अपने घोड़ों की तरफ़ बढ़ा कि उसने भीड़ जमा देखी और वह इधर ही चल पड़ा कि आखिर बात क्या है? फिर हँसी के ठहाके उसके कानों में पड़े तो उसने क़दम और तेज़ी से बढ़ाए। इसी समय पूर्ण शांति के बीच उसने किसी के निर्देश से भरे स्वर सुने—"नहीं, ऐसे नहीं पाशा! ऐसे तलवार कौन चलाता है? इस तरह तो लकड़ी-भर कट सकती है, आदमी नहीं। इस तरह चलाओ···इस तरह···देखा? जब किसी को पकड़ो तो उसे फ़ौरन घुटनों के बल बैठने का हुक्म दो वरना अगर वह खड़ा रहेगा तो थोड़ी मुश्किल होगी···फिर···तुम यों ···यों पीछे से आकर उसकी गर्दन पर भरपूर वार करो···कोशिश करो कि हाथ सीधा न पड़कर ज़रा तिरछा पड़े···।"

'बुद्धि का धनी' पाशा, डाकुओं से घिरा, अपनी नंगी तलवार की

मूंठ पकड़े अटेंशन खड़ा रहा और मुस्कराकर खूबसूरती से अपनी उभरी हुई भूरी आँखें सिकोड़ते हुए निर्देशक कज्जाक की बातें सुनता रहा। उसके होंठों के कोनों से यों पानी टपकता रहा जैसे कि वह कोई घोड़ा हो और उसके मुंह में कोई झागदार खाने की चीज़ हो। थूक ताम्बे के रंग की दाढ़ी से वह-बहकर सीने पर आता रहा कि सहसा ही उसने अपने गन्दे होंठ चाटे और तुतलाते हुए बोला—"मैं सब-कुछ समझ गया···प्यारे—भाई···अब बिलकुल ऐसे ही करूंगा सब-कुछ··· जब भी किसी को क़ैद करूंगा घुटनों के बल बिठा लूंगा। और ऐन गर्दन पर तलवार जमाऊँगा···मगर सुनो, तुम लोगों ने मुझे पतलून, कमीज़ और बूट तो दिए, पर कोट नहीं दिया···कोट मेरे पास नहीं है···वह भी दे दो तो मैं तुम्हारा जी खुश करके दिखा दूं! पूरी ताक़त लगा दूं अपनी।"

एक कज्ज़ाक बोला—"कोई कमीसार मार डालो कहीं, कोट भी हो जाएगा···लेकिन ज़रा यह बतलाओ कि पिछले साल तुमने शादी किस तरह की?"

पाशा की फैली-फैली-सी झलाझल आँखों में जैसे कोई दहशत झलकी। उसने एक झटके में अनगिनत गालियाँ दे डालीं और फिर हँसी के ठहाकों के बीच जाने कहाँ की कहानी सुनाने लगा। ग्रिगोरी को पूरा दृश्य ऐसा घिनौना लगा कि वह सिर से पैर तक गनगना उठा और तेज़ी से मुड़ गया। उसका मन अपने प्रांत और अपनी आज की गई-बीती ज़िन्दगी के प्रति घृणा से भर उठा। उसने मन-ही-मन सोचा—'और ऐसे लोगों की क़िस्मत के साथ अपनी क़िस्मत नत्थी कर रखी है मैंने!'

वह घोड़ों के खूंटों के पास लेट गया, और उसने उस बुद्धू की चीख-पुकारों और कज्ज़ाकों की गगन-भेदी हँसी को अनसुना करने की कोशिश की। साथ ही खा-पीकर मस्त नज़र आते घोड़ों की तरफ़ देखते हुए फ़ैसला किया—'मैं कल यहाँ से निकल भागूंगा···अब और नहीं चलेगा—।"

इसके बाद उसने बहुत ही सावधानी और समझ-बूझ से दस्ता

छोड़ने की तैयारी की। मिलिशिया के उशाकोव नाम के एक मृत सिपाही के कागज़ात उसने पहले ही लेकर अपने वरानकोट के अस्तर में सी लिए थे। कोई दो सप्ताह से अपने घोड़ों को सरपट दौड़ के लिए तैयार करता रहा था। उसने उन्हें समय से पानी पिलाया था, बड़ी मेहनत से खरहरा किया था। और सही-गलत ढंग से जैसे भी हुआ हर रात उनके लिए दाना मुहय्या किया था। नतीजा यह कि उसके घोड़े बाक़ी सभी घोड़ों से कहीं अच्छी हालत में थे, और उन्हें देखकर पूरा भरोसा बँधता था कि कोई कितना ही पीछा करे, सवार को पा नहीं सकता।

तो ग्रिगोरी उठा, पास की झोंपड़ी में गया और सत्ती की ड्योढ़ी पर बैठी वृद्धा से आदर से बोला—"हँसिया है, दादी ?"

"था तो एक हँसिया घर में, पर पड़ा जाने कहाँ है ! ऐसी क्या ज़रूरत आ पड़ी हँसिए की ?"

"तुम्हारी बगिया से अपने घोड़ों के लिए थोड़ी हरियाली काटना चाहता था···काट लूँ ?"

बुढ़िया थोड़ा सोचने के बाद बोली—"हमारी गरदनों से कब बोझ उतरेगा तुम लोगों का ! आज तो यह कुछ नही है, लेकिन कभी यह दे दो तो कभी वह दे दो। एक झुंड आता है और अनाज की माँग करता है। दूसरा गिरोह आता है और जिस चीज़ पर नजर पड़ती है, उसे ही घसीट ले जाता है। मैं हँसिया नहीं दूंगी तुम्हें···तुम्हारा जो जी आए, सो करो···पर हँसिया हरगिज़ नहीं दूंगी मैं।"

"घास की ही तो बात है, थोड़ी-सी ले लेने दो, बुढ़िया माँ !"

"तुम्हारा ख़याल है कि नंगी जमीन में अब और घास उगेगी ? अपनी गाय को भला क्या खिलाऊँगी मैं ?"

"यानी स्तेपी में घास ही नही है ?"

"तो जाओ स्तेपी में और काट लाओ वहाँ से, साहबजादे ! मैदान में तो घास ही घास है।"

ग्रिगोरी ने खीझते हुए कहा—"दादी, बेहतर यही है कि तुम मुझे हँसिया दे दो और मैं थोड़ी-सी घास काट लूँ। बाक़ी ज्यों-की-त्यों रह

जाएगी। वरना, अगर हमने अपने घोड़े कहीं छोड़ दिए तो तुम्हारी बगिया में घास की एक पत्ती बाक़ी न बचेगी।"

बुढ़िया ने ग्रिगोरी की तरफ़ तेज़ निगाहों से देखा, रास्ते से हट गई और बोली—"जाओ और हँसिया उठा लो खुद···शेड में टँगा होगा कहीं।"

ग्रिगोरी को शेड में एक टूटा हुआ हँसिया मिला और वह बग़ल से गुज़रा तो बुढ़िया के शब्द उसके कानों में पड़े—"तुम्हें मौत भी नहीं पूछती···भाड़ में जाओ तुम!"

परन्तु ग्रिगोरी इसका आदी हो गया था। दस्ते के बारे में कज्ज़ाक क्या सोचते हैं, यह बात वह एक अरसे से जानता था। सो सफ़ाई से घास, जड़-सहित काटते हुए उसने सोचा—'ये लोग भी अपनी जगह ठीक ही तो सोचते हैं। हमसे उन्हें क्या फ़ायदा? हमारी ज़रूरत किसी को भी तो नहीं। हम हर एक के आराम से जीने और चैन से काम करने के आड़े ही तो आते हैं। अब यह सब खत्म होना चाहिए, और जल्द-से-जल्द खत्म होना चाहिए···।'

'और अपने विचारों में डूबा, वह घोड़ों को दूब की कोमल पत्तियाँ अपने काले, मखमली होंठों से उठाते हुए देखता रहा। फिर उसका यह तार तोड़ा जवानी से उमड़ती एक भारी आवाज़ ने—"कैसा शानदार घोड़ा है! घोड़ा है कि हंस है सचमुच!"

ग्रिगोरी ने बोलने वाले की तरफ़ देखा तो मालूम हुआ कि फ़ोमीन के दस्ते में हाल में शामिल होने वाला एक कमउम्र कज्ज़ाक उसके भूरे घोड़े को एकटक देख रहा है और गद्गद भाव से सिर हिला रहा है।

कज्ज़ाक ने घोड़े को मुग्ध मन से देखा और जीभ चटकाते हुए उसके चारों तरफ़ कई चक्कर काटे। पूछा—"यह घोड़ा तुम्हारा है?"

"क्यों? क्या बात है?"

"आओ, अदला-बदली कर लें। मेरे पास दोन की खालिस नस्ल का एक कुम्मैत घोड़ा है। वह बड़ी-से-बड़ी अड़चन पार कर सकता है और बड़ा ही जानदार है। जानदार तो इतना है कि तुम्हें आसानी से

यक़ीन नहीं आएगा। यह समझो कि बिजली है···बिलकुल बिजली!"

"ऐसी-तैसी में जाओ तुम!" ग्रिगोरी ने उत्साहरहित मन से कहा।

कज्ज़ाक एकाध क्षण तक तो चुप रहा, मगर फिर लम्बी आह भरकर पास ही बैठ गया, बहुत देर तक घोड़े को घूरता रहा और फिर बोला—"तुम्हें पता है, इस घोड़े को हँफनी छूटती है।"

ग्रिगोरी कुछ नहीं बोला और एक तिनके से दांत कुरेदता रहा। यह सीधा-सादा लड़का जैसे उसके मन में जगह करने लगा।

लड़के ने ग्रिगोरी की ओर मिन्नत-भरी नजरों से देखा और शांत-भाव से पूछा—"अदला-बदली नहीं करोगे, चाचा?"

"नहीं···बिलकुल नहीं करूँगा···अपने घोड़े के साथ तुम अपने को भी जोड़ दो। तो भी नहीं करूँगा।"

"लेकिन यह घोड़ा तुम्हें मिला कहां?"

"मैंने ईजाद किया है इसे।"

"हटाओ भी, ठीक-ठीक बतला दो न!"

"तो यह घोड़ा भी वैसे ही मिला, जैसे आम तौर पर घोड़े मिलते हैं···किसी घोड़ी ने पैदा किया इसे भी!"

"ऐसे बेवकूफ़ आदमी से बात करने से कोई फ़ायदा नहीं," लड़के ने खीझते हुए कहा और वहां से हट गया।

···ग्रिगोरी के सामने पूरा गांव, मुर्दे की तरह वीरान और बेजान पड़ा रहा। फ़ोमीन के लोगों के अलावा कहीं कोई नजर नहीं आया। गली में यों ही छोड़ दी गई एक गाड़ी, अहाते में चिराई के लिए तैयार लकड़ी के एक कुंदे, उसमें हड़बड़ी में गड़ा दी गई कुल्हाड़ी, आधे रंदे के बाद छोड़ दिए गए, पास ही पड़े लकड़ी के एक तख्ते, सड़क के बीचों-बीच घास की छोटी-छोटी पत्तियां, सुस्ती से चरते, बंधे हुए बैलों और कुएँ की जगत के पास औंधी पड़ी एक बाल्टी ने जैसे चिल्ला-चिल्लाकर कहा कि गांव की ज़िन्दगी और चैन की सांस किसी ने एकदम घोट दी है, गांववालों ने अपने-अपने काम अधूरे छोड़ दिए हैं, और वे जाकर जहां-तहां छिप गए है।···

···आज तो बात ग्रिगोरी के अपने देश की थी और उसे यहां यह

दिन देखना पड़ा था। परन्तु ऐसा ही अनुभव उसे एक बार और भी हुआ था। यानी, जब कज्ज़ाक-रेजीमेंटों के घुड़सवारों ने पूर्व-प्रशिया में प्रवेश किया था, तो भी लोग इसी तरह टूटे थे और इसी तरह मायूस होकर सिर पर पैर रखकर भागे थे। उस समय जर्मनों ने उसका स्वागत तो किया था, पर निगाहों से उस पर उदासी और नफ़रत बरसाई थी। और, आज बिलकुल वही ऊपरी दोन के कज्ज़ाक कर रहे थे।···

ग्रिगोरी को बुढ़िया का एक-एक शब्द याद आया और कमीज़ के कॉलर का बटन खोलते हुए उसने दर्द से चारों ओर नज़र दौड़ाई। पुरानी पीर आज फिर दिल को कुरेदने और कचोटने लगी।

सूरज धरती पर आग बरसाता रहा। गर्द, कुत्ताघास और घोड़ों के पसीने की बू जैसे गली की हवा में लटकी रही। बगिया में टूटे-फूटे बसेरों से लदे, लम्बे-चौड़े बेंतों पर कौए कांव-कांव करते रहे। घाटी के कहीं ऊपर के पानी से लबालब, एक जलधारा धीरे-धीरे बहती और गांव को बीच से बांटती रही। पानी की तरफ़ ढालू कज्ज़ाकों के अहाते घनी बगीचियों से भरे रहे। चेरी के पेड़ों की पत्तियां झोंपड़ियों की खिड़कियों पर आड़ किए रहीं। सेब के पेड़ अपनी शाखों की लम्बी बांहें बढ़ाकर अपनी हरी पत्तियों और फलों की एक झांकी सूरज को देते रहे।

ग्रिगोरी ने जंगलीझाड़ी से भरे अहाते, पीली झिलमिलियों और फूस के छप्पर वाली झोपड़ी और कुएं के दमकले पर एक धुंधली नज़र डाली। खलिहान के पास, टहनियों की पुरानी बाड़ के एक खूंटे के ऊपर घोड़े की पानी से गली एक खोपड़ी टंगी दीखी। उसकी आंखों के खाली गढ़ों में सिपाही जमुहाई लेती लगी। उसी खूंटे पर लौकी की हरी बेल चक्कर काटकर प्रकाश की ओर बढ़ती नज़र आई। सिरे पर उसके तन्तु खोपड़ी के दांतों और उभरे हुए हिस्सों से चिपटे मालूम हुए और उसका आज़ाद सिरा, सहारे की तलाश में, पास के गुलदार के झाड़ की ओर हाथ बढ़ाता समझ पड़ा।

ग्रिगोरी को यह तो याद आया कि यह सब उसने पहले भी देखा

है, पर यह स्पष्ट न हुआ कि कभी सपने में देखा है या दूर छूट गए बचपन में देखा है। सो, भावावेश-भरे कलप ने सहसा ही उसे जकड़ लिया। वह बाड़ के नीचे, सीने के बल लेट गया और हथेली से चेहरा ढककर जाने कब तक पड़ा रहा। उठा केवल तब जब उसके कानों में जोर की आवाज़ पड़ी—"अपने-अपने घोड़ों पर सवार हो जाओ!"

उस दिन रात को मार्च करते-करते वह, क़तार से अलग हो गया जैसे कि काठी ठीक करने के लिए नीचे उतरा और फिर एक जगह खड़ा होकर घोड़ों की दूरी में डूबती टपाटप सुनता रहा। इसके बाद उछलकर घोड़े पर सवार हुआ और फिर सड़क से समकोण बनाते हुए जानवर को सरपट दौड़ा चला।

कोई पाँच वर्स्ट तक उसने अपने घोड़ों को अंधाधुंध दौड़ाया और नाम को भी दम नही लिया। मगर, फिर घोड़ा क़दम चाल में डाल लिया और आहट लेने लगा कि कोई पीछा तो नहीं कर रहा है? पर, स्तेपी में हर ओर सन्नाटा भांय-भांय करता रहा। बलुहे खड्डों में केवल चहा पंछी एक-दूसरे को दर्द से आवाज़ देते रहे और कहीं दूर, बहुत दूर कोई कुत्ता भूंकता रहा।

काले आसमान में टिमटिमाते सितारों का सोना छिटका रहा। स्तेपी के पूरे मैदान में हर तरफ़ सन्नाटे का राज्य रहा और हवा चिरायते की जंगली और तीखी गंध से भारी-भारी रही।

ऐसे में ग्रिगोरी रक़ाबों में पैर जमाकर खड़ा हो गया, और चैन की गहरी सांस लेने लगा।

: १७ :

ग्रिगोरी, तड़का होने के बहुत पहले ही, तातारस्की के पहले पड़ने वाले चरागाह में पहुँच गया और गांव के नीचे, नदी के उथले पानी के पास कपड़े उतार डाले, फिर, उसने कपड़ों, बूटों और हथियारों को घोड़ों के सिरों में बांध लिया, कारतूस की थैली दांतों से जकड़ ली और जानवरों के साथ तैरना शुरू किया। बर्फ़-से ठंडे पानी ने बदन छेद-छेद दिया तो अपने को गरम रखने के लिए उसने दायां हाथ पूरी तेजी से चलाया,

बाएँ हाथ से रासें साध रखीं और हींसते और हिनहिनाते घोड़ों को आगे-ही-आगे खींचता रहा।

किनारे पहुँचने पर उसने जल्दी-जल्दी कपड़े पहने, घोड़ों के बन्द कसे और एक पर सवार होकर जल्दी-जल्दी गाँव की ओर बढ़ा। बरान-कोट, काठी के पट्टे और कमीज पानी से तर-बतर रही और उसके बदन को ठंड से जमाती रही। उसके दांत कटकटाते रहे, पीठ गनगनाती रही और वह सिर से पैर तक कांपता रहा। लेकिन, घोड़ा दौड़ाने के कारण थोड़ी देर बाद ही बदन में गरमी आ गई और गांव के पास पहुँचने पर वह नीचे उतरकर, पैदल चलने लगा। अब उसने चारों तरफ़ नजर गड़ा-गड़ाकर देखा, हर चीज़ की आहट ली और घोड़ों को नाले में छोड़ने का फ़ैसला किया। इसके लिए वह ढालू हिस्से से नीचे उतारा तो कंकड़ घोड़ों की टापों के नीचे खड़खड़ाए और उनकी नालों की रगड़ से आग की चिनगारियाँ फूटने लगीं।

उसने अपने बचपन के गवाह एल्म के पेड़ से घोड़े बांधे और गांव की ओर चल पड़ा।

सामने झलका मेलेखोव-परिवार का पुराना घर, सेब के पेड़ों का अँधेरा झुरमुट और सप्त-ऋषि की तरफ़ हाथ उठाए कुएँ का दमकल। ग्रिगोरी उत्तेजना से हाँफने लगा, नदी में पैठा, बड़ी सावधानी से रेंगता हुआ अस्ताखोव-दम्पती के अहाते के पेड़ों की टहनियों वाले फाटक में दाखिल हुआ और बिना झिलमिली वाली खिड़की के पास पहुँचा। इस समय सिर्फ़ अपने दिल की तेज़ धड़कन और अपने दिमाग़ की नसों में उमड़ते खून की तेजी उसे सुन पड़ी। उसने खिड़की का चौखटा इस तरह धीरे-धीरे खटखटाया कि आवाज़ उसके कानों में भी मुश्किल से ही पड़ी।

अकसीनिया चुपचाप खिड़की के पास आई, और बाहर झांककर देखा। सहसा ही उसके हाथों ने सीना जकड़ लिया और होंठों से हलकी कराह निकल गई। ग्रिगोरी ने खिड़की खोलने का इशारा किया और रायफ़ल अपने कंधे से उतार ली। अकसीनिया ने खिड़की पूरी तरह खोल दी।

वह फुसफुसाते हुए बोला—"और धीरे से खोलो···बिल्कुल आवाज़ न हो !···कैसी हो तुम ?···दरवाज़ा बिल्कुल न खोलो···मैं खिड़की से ही आ जाऊँगा।"

ग्रिगोरी घर की दीवार के उभरे हुए हिस्से पर खड़ा हुआ तो अकसीनिया ने अपनी नंगी बाँहें उसकी गर्दन में डाल दीं। इसके बाद वे प्यारी-प्यारी बेशक़ीमती बाँहें इस तरह काँपीं और सिहरीं कि वह कम्पन और सिहरन ग्रिगोरी से भी अनजानी न रही। बहुत ही अस्फुट स्वर में हकलाते हुए बोला—"अकसीनिया···ठहरो···यह राइफ़ल ले लो ज़रा !"

और अपनी तलवार की मूठ थामकर, खिड़की का दासा पारकर अन्दर जा पहुंचा। उसने अकसीनिया को सीने से लगाना चाहा। लेकिन उसने घुटनों के बल बैठकर उसके पैर पकड़ लिए और उसके गीले बरानकोट से चेहरा सटा लिया। दबी हुई सिसकियों से बुरी तरह कँपकँपाने लगी। ग्रिगोरी ने उसे उठाकर बेंच पर बिठाया। वह उससे सटकर, अपना चेहरा उसके सीने में छिपाकर चुप बनी रही, बार-बार सिर से पैर तक सिहरती रही और अपनी सिसकियाँ दबाने और बच्चों की नींद में बाधा न डालने के खयाल से बरानकोट का सिरा रह-रहकर मुंह में देती रही।

यानी, ऐसा लगा कि सदा की इतनी मज़बूत औरत को भी यातना और दर्द ने तोड़ दिया। उसका अपना जीवन भी पिछले कुछ महीनों से बड़ा ही कटु रहा था।···ग्रिगोरी ने उसकी पीठ पर फ़ैले बालों और जलते हुए, पसीने से तर माथे पर प्यार से हाथ फेरा। पूछा—"बच्चे ठीक-ठाक हैं ?"

"हाँ।"

"और दून्या ?"

"दून्या भी जीती है···सही-सलामत है।"

"मिखाइल घर पर है ?···लेकिन, सम्हलो न···रोना बंद करो··· मेरी सारी क़मीज़ तर हो गई तुम्हारे आँसुओं से···अकसीनिया···मेरी रानी···बस भी करो न ! आँसुओं का मौक़ा नहीं है···वक़्त बहुत ही

थोड़ा है···हां, मिखाइल घर पर है ?"

अकसीनिया ने अपना चेहरा पोंछा और गीली हथेलियों से ग्रिगोरी को दुलराने लगी। फिर आंसुओं के बीच मुस्कराते और अपने मन के राजा को प्यासी निगाहों से एकटक देखते हुए धीरे से बोली—"अब नहीं रोऊंगी···अब बिल्कुल नहीं रोऊंगी मैं···मिखाइल तातारस्की में नहीं है···पिछले दो महीनों से व्येशेन्स्काया में है···किसी फ़ौजी टुकड़ी में काम कर रहा है···इधर आओ, और जरा बच्चों को तो देखो···हमें तुम्हारे आने की बिल्कुल उम्मीद नहीं थी···ज़रा भी उम्मीद नहीं थी···"

मीशात्का और पोल्युशका, हाथ-पैर फैलाए, आराम से, पलंग पर सोते दीखे। ग्रिगोरी ने पास पहुंचकर, झुककर उन्हें देखा, एकाध क्षण ज्यों-का-त्यों खड़ा रहा और फिर दबे पांवों लौटकर अकसीनिया के पास आ बैठा। अकसीनया ने पूछा—"तुम कैसे हो ? यहां तक किस तरह आए ? और अब तक कहां रहे ? मान लो दुश्मन तुम्हें पकड़ ले तो ?"

"मैं तो तुम्हें लेने आया हूं। मेरा खयाल नहीं है कि मुझे पकड़ सकेंगे वे लोग।···तुम चलोगी मेरे साथ ?"

"कहां ?"

"मेरे साथ ! मैं फ़ोमीन के दस्ते में था, पर अब उससे अलग हो गया हूं···तुमने सुनी मेरी बात ?"

"हां, सुनी···पर कहां ले चलोगे तुम मुझे ?"

"दक्खिन की तरफ़ चलेंगे हम दोनों···कुबान या उससे भी आगे। फिर, जैसे भी बनेगा, हम जिएंगे। खाने-पीने का भी कुछ-न-कुछ इन्तज़ाम होगा ही। मैं तो कोई भी काम कर सकता हूं। मेरे हाथों को जरूरत है काम करने की, लड़ने की नहीं···पिछले कुछ महीनों से मेरा दिल इस तरह टूटा-टूटा रहा है कि कुछ न पूछो···लेकिन, खैर···ये सारी बातें बाद में होंगी।"

"मगर, बच्चों का क्या होगा ?"

"इस वक्त हम उन्हें दून्या के साथ छोड़ देंगे···पीछे देखा जाएगा···बाद में उन्हें भी ले जाया जाएगा···क्यों···तुम चलोगी न मेरे

साथ ?"

"ग्रीशा...मेरे मन के राजा...ग्रीशा..."

"नहीं...अब नहीं...अब रोओ मत, रानी ! बहुत हो लिया। इसके लिए बाद में बहुत वक्त मिलेगा...फ़िलहाल...तैयार हो जाओ... घोड़े साथ हैं...नाले में कसे खड़े हैं...क्यों, तो चलोगी न...?"

"क्यों...चलूंगी क्यों नहीं।" अकसीनिया अचानक ही ज़ोर से बोली, पर आशंका से भरकर होंठों पर हाथ रखने के बाद सोते हुए बच्चों की ओर देखने लगी। फिर फुसफुसाती हुई बोली—"तुमने क्या सोचा था ? अकेलेपन से तार-तार मेरी यह ज़िन्दगी कोई बहुत रस से भरी है क्या ? ग्रीशा, मेरे राजा, मैं चलूंगी...ज़रूर चलूंगी...तुम्हारे पीछे-पीछे पैदल चलूंगी...तुम्हारे पीछे-पीछे रेंग-रेंगकर मंजिल पार करूंगी, मगर यहां अब किसी तरह नहीं रहूंगी...तुम्हारे बिना रह भी नहीं सकती...तुम मुझे अपने हाथों से मार डालो, मगर अब यहां मत छोड़ो।"

अकसीनिया ने ग्रीशा को पास खींच लिया। ग्रीशा ने उसे चूमा और तेज़ी से खिड़की पर एक निगाह डाली, जैसे कि कहना चाहता हो, गर्मी की रातें छोटी होती हैं...जल्दी करो न !

अकसीनिया बोली—"क्यों न लेट रहो और आराम कर लो थोड़ा-सा ?"

ग्रीशा घबराकर चिल्ला उठा—"आखिर तुम्हारे दिमाग़ में है क्या? तड़का होने का वक्त हो रहा है। हमें जल्दी-से-जल्दी चलना चाहिए यहाँ से। तुम कपड़ा पहनो और ज़रा दून्या को बुला लाओ। उससे बातें कर ली जाएं। हमें अंधेरे-ही-अंधेरे सुखोइ-घाटी पहुंच जाना चाहिए। दिन हम जंगल में बिताएंगे, सफ़र रात में करेंगे...तुम घोड़े पर तो चढ़ सकती हो न ?"

"अरे, जैसे भी होगा, चली चलूंगी मैं, और घोड़े पर सवार होने में तो बहुत ही खुशी होगी मुझे। लेकिन, मुझे बराबर लग रहा है कि कहीं मैं सपना तो नहीं देख रही। मैं तुम्हें तो अक्सर सपने में देखती हूं, लेकिन हर बार नए होकर आते हो तुम मेरे सामने।" उसने, दांतों में

बाल-पिनें दबाकर, जल्दी-जल्दी बाल काढ़े और इतने धीरे-धीरे बातें कीं कि ग्रिगोरी की समझ में कुछ भी नहीं आया। फिर औरत ने जल्दी-जल्दी कपड़े पहने और दरवाजे की ओर बढ़ी। पूछा—"बच्चों को जगा दूं ? उनसे भी मिल लो जरा।"

"नहीं, बिल्कुल मत जगाओ।" ग्रिगोरी ने दृढ़ स्वर में कहा। अपनी टोपी से थैली निकाली और सिगरेट रोल करने लगा। लेकिन अकसीनिया के बाहर निकलते ही वह पलंग के पास गया और उसने बच्चों को बार-बार चूमा। इसी समय उसे नताल्या का खयाल हो आया और इसके साथ ही शुरू की बदनसीबी से भरी जिन्दगी की जाने कितनी बातें याद हो आईं। उसकी आंखें भर आईं।

इस बीच दून्या आ गई और ड्योढ़ी पार करती हुई बोली—"अरे··· भैया···प्रीवियत[1] ! तो तुम घर आ गए ? तुम पूरे मैदानी इलाके में इस तरह मारे-मारे फिरे···" और उसकी आवाज पीड़ा से भारी हो उठी—"खैर···बच्चे अपने बाप को भर-आंख देखने को आज तक सही-सलामत है·· बेचारे बाप के रहते यतीम हो गए हैं।"

ग्रिगोरी ने बहन को गले लगाया और सख्ती से बोला—"धीरे से बोलो ! बच्चों को जगा दोगी क्या ?···छोड़ो···ये सब बेकार की बातें छोड़ो···यह सब तो मैं पहले भी सुन चुका हूँ···मेरे अपने ही दुख-दर्द कुछ कम नहीं हैं···यह सब सुनने के लिए तो मैंने तुम्हें बुलाया नहीं। यह बतलाओ कि तुम इन बच्चों को ले जाओगी और इनकी देखभाल करोगी ?"

"लेकिन तुम जा कहाँ रहे हो ?"

"मैं यहाँ से जा रहा हूं, और अकसीनिया को अपने साथ लिये जा रहा हूँ। तुम बच्चों की देखरेख कर लोगी ? कोई काम मिल जाए··· फिर, मैं आकर ले जाऊंगा इन्हें।"

"इसमें पूछने की क्या बात है ? अगर तुम दोनों चले जाओगे तो मैं तो बच्चों को ले ही जाऊँगी। वे न तो सड़कों पर छोड़ दिए जा

---

१. अभिवादन।

सकते हैं और न अजनबियों को सौंप दिए जा सकते है ।"

ग्रिगोरी ने मुंह से कुछ कहे बिना अपनी बहन को चूमा और बोला—"बहुत-बहुत शुक्रिया···मेरी बड़ी प्यारी बहन है तू···मैं जानता था कि तू इन्कार नही करेगी ।"

नताल्या बक्से पर बैठ गई और पूछा—"तुम जा कब रहे हो? फ़ौरन ?"

"हाँ ।"

"लेकिन घर और फ़ार्म का क्या होगा ?"

अकसीनिया ने सकुचते हुए कहा—"तुम जो चाहो सो करना! चाहो तो घर में किसी को रख लेना वरना जो जी में आए वही ठीक। वैसे जो कपड़े-लत्ते और दूसरी चीजें हों, उन्हें खुद ले लेना ।"

दून्या ने पूछा—"लेकिन, मैं लोगों से क्या कहूँगी ? जब वे मुझसे पूछेंगे कि कहाँ गईं तुम, तो क्या जवाब दूंगी मैं ?"

"कह देना कि मैं कुछ नहीं जानती ।" ग्रिगोरी ने कहा और अकसीनिया की ओर मुड़ा—"अकसीनिया, ज़रा जल्दी करो न । बहुत साज-सामान अपने साथ न लो···ले लो सिर्फ एक गरम जैकेट, दो-तीन कमीज़ें, सारी-की-सारी लिनेन और एकाध वक्त का खाना और बस ।"

उषा की प्रकाश-किरणें अन्तरिक्ष से झांकीं कि ग्रिगोरी और अकसीनिया ने दून्या से विदाई ली और अब तक सोते बच्चों को चूमकर दोनों बाहर आए । इसके बाद नाले की तरफ़ बढ़े ।

ग्रिगोरी बोला—"हम दोनों इसी तरह एक बार यागोदनोये गए थे···मगर उस वक्त तुम्हारी गठरी ज़रा और बड़ी थी और खुद हम जवान कहीं ज्यादा थे ।"

अकसीनिया ने हर्ष से भरकर कनखी से उसकी ओर देखा और जवाब दिया—"लेकिन मेरा मन बराबर डर रहा है कि मैं हमेशा की तरह कहीं आज भी महज़ सपना ही तो नहीं देख रही । इसलिए तुम अपना हाथ इधर करो ताकि मैं उसे छूकर मन को यक़ीन दिलाऊँ ।" औरत धीरे से हँसी और चलते-चलते ग्रिगोरी के कंधे से सट गई ।

ग्रीशा ने देखा तो उसे उसकी आँखें आंसुओं से सूजी हुई, पर खुशी

से लो देती लगीं। सुबह के अँधेरे में गालों पर पीलापन छिटका नजर आया। उसके होंठों पर मुस्कान दौड़ गई और वह मन-ही-मन सोचने लगा—'तैयार होकर इस तरह आई है जैसे कि किसी के घर मेहमानी खाने जा रही हो। किसी चीज़ से डरती नहीं। औरत दिलेर है।'

फिर जैसे कि उसके मन के विचारों के जवाब में अकसीनिया बोली—"देखा कैसी औरत हूँ मैं···तुमने जैसे कि सीटी भर दी और मैं कुत्ते की तरह तुम्हारे पीछे दौड़ती चली आई···ग्रीशा, तुम्हारे लिए मेरे मन में इतना प्यार और इतनी कलप है कि उसी में जकड़ उठी हूँ मैं···बच्चों के लिए मन ज़रूर दुख रहा है···मगर···खैर···अब तो मैं तुम्हारे क़दमों के पीछे-पीछे चलूँगी···मुझे मौत तक की कोई परवाह नहीं।"

घोड़े पैरों की आहट पाकर हींसे। इस बीच आसमान में उजाला और छिटक गया और पूर्व की ओर एक हिस्सा गुलाबी में नहा उठा। दोन के पानी से धुंध बराबर उठती रही।

ऐसे में ग्रिगोरी ने घोड़े खोले और अकसीनिया को मदद देकर एक पर बिठाया तो उसके पैरों के हिसाब से रक़ाबों की पट्टियाँ कुछ बड़ी लगीं। उसे अपनी अक्ल पर गुस्सा आया। उसने पट्टियाँ छोटी कीं और फिर दूसरे घोड़े पर खुद सवार हो गया। बोला—"मेरे पीछे-पीछे रहना अकसीनिया! नाले से बाहर निकलते ही हम घोड़े सरपट दौड़ाएँगे। तुम बहुत हिलना-डुलना मत। साथ ही, रासें ढीली मत करना··· तुम्हारे घोड़े को यह पसन्द नहीं। और हाँ, अपने घुटनों का खयाल रखना। घोड़ा अक्सर खिलवाड़-खिलवाड़ में घुटनों में दाँत मार देता है···अच्छा···तो फिर···चलो।"

सुखोई घाटी तक का कोई आठ वर्स्ट का फ़ासला उन्होंने जल्दी ही तय कर लिया और सूरज निकलते-निकलते वे जंगलों के पास के इलाके में पहुँच गए। यहाँ ग्रिगोरी घोड़े से उतरा और हाथ देकर अकसीनिया को उसके घोड़े से नीचे उतारने लगा। मुस्कराते हुए बोला—"क्यों, कैसा लगा? आदत न हो तो घुड़सवारी काफ़ी तकलीफ़ देती है···है न?"

अकसीनिया का चेहरा इस नए अभ्यास से तमतमाया रहा और उसकी काली आँखें बिजली-सी कौंध-कौंध उठीं। उसने ग्रिगोरी की तरफ़ देखा। "अच्छा लगा···कम-से-कम पैदल चलने से तो बेहतर रहा ही।" फिर ज़रा परेशानी से मुस्कराई—"ग्रीशा, तुम ज़रा मुड़ो तो···देखूं···पीछे चिपका हुआ है कुछ······"

"कुछ नहीं है···जो कुछ भी है, छूट जाएगा।" ग्रिगोरी ने उसे विश्वास दिलाया—"थोड़ा चलो, लगता है कि तुम्हारे पैर कांप रहे हैं।" फिर, आँखें सिकोड़कर, स्नेह और छेड़छाड़-भरे स्वर में बोला—"हो तुम शानदार कज्ज़ाक!"

घाटी के सिरे पर एक हरी-भरी, हमवार जगह देखकर बोला—"यहाँ पड़ाव रहेगा अपना···तुम ठीक-ठाक हो लो, अकसीनिया!"

उसने ज़ीनें खोलीं, घोड़े बांधे और काठियां और हथियार पास की एक झाड़ी के नीचे ला रखे। घास ओस से नहाई लगी और ओस की बूंदों के नीचे, घास की पत्तियां सिलेटी-भूरी मालूम हुईं। लेकिन, ढाल पर जहाँ तड़के का अंधकार अब भी थोड़ा-बहुत बना हुआ था, वहाँ घास का रंग हल्का नीला प्रतीत हुआ। फूलों की अधखुली पलकों के साए में शहद की बड़ी, नारंगी मक्खियां ऊंघती रहीं। स्तेपी के ऊपर बुलबुलों के बजते हुए स्वर गूंजते रहे और मैदान के अनाज के खेतों और घास के पसारों के बीच बटेरें कहती रहीं—"सोने का वक्त हुआ···सोने का वक़्त हो गया!"

ग्रिगोरी ने पास के, नए शाहबलूत के पेड़ के पास की घास पैरों से रौंदी और एक काठी की टेक लगाकर पड़ रहा। और फिर लवा-पंछियों के तेज़ स्वरों, चातक-पंछियों की लोरियों और दोन के उस पार के, रात में भी पूरी तरह ठंडे न पड़ने वाले रेतकणों के पास से आने वाली हवा उसे थपक-थपककर सुलाने लगी। यानी, उसकी जगह कोई और होता तो शायद अपनी मनमानी करता, पर बराबर कई रातें पलकों में ही बिताने के कारण नींद पर उसका अपना कोई बस न चला। ऊपर से भी बटेरों ने बार-बार आग्रह किया तो उसने अपनी पलकें मूंद ही लीं। अकसीनिया बग़ल में चुपचाप बैठ गई, विचारों में

डूबते हुए, एक फूल की बैंजनी पंखड़ियाँ अपने होंठों से चुनने लगी, और, दाढ़ी की खूँटियों से भरे गालों को फूल के डठल से छेड़ते हुए, धीरे से बोली—"ग्रीशा" यहाँ कोई पकड़ नहीं सकता हम दोनों को ?"

ग्रिगोरी ने जैसे-तैसे ऊँघ काटी और भर्राई आवाज़ में बोला—"मैदान में हर तरफ़ सन्नाटा है···कहीं कोई नहीं है···अकसीनिया, मैं थोड़ा-सा सो लूं···तुम घोड़ों पर नजर रखना···बाद मे तुम भी सो लेना···मैं नीद और थकान से चूर-चूर हूँ···पिछले चार दिन से··· खैर इसकी बात पीछे होगी।"

"सो जाओ···राजा मेरे···आराम से सो जाओ।" अकसीनिया उस पर झुकी, ग्रिगोरी की भौंह के ऊपर से बालों का एक लच्छा हटाया और उसे हल्के से चूम लिया। ज़रा देर बाद फुसफुसाती हुई बोली—"मेरे राजा···मेरे ग्रीशा, तुम्हारे तो सफ़ेद बाल है ! तो, बूढ़े हो रहे हो तुम ? लेकिन, अभी कल की ही तो बात है कि तुम कम-उम्र थे···जवान थे···" उसने मुस्कराते हुए, उदासी से भरी निगाह उसके चेहरे पर डाली।

ग्रिगोरी चैन से सो गया और नींद में उसका मुँह थोड़ा खुल गया। उसकी काली बरौनिया और उनके सिरे धूप में धीरे-धीरे कँपकँपाते रहे। ऊपरी होंठ रह-रहकर फड़कता रहा और इस तरह भिंचे हुए उजले दाँत चमक-चमक जाते रहे।

अकसीनिया ने उसे ग़ौर से देखा और अब उसकी समझ में आया कि उससे बिछुड़ने के बाद, पिछले कुछ महीनों में वह सचमुच कितना बदल गया है ! भौंहों के बीच के गहरे, सीधे बलों, मुँह के भावों और गाल की उभरी हुई हड्डियों से सख्ती ही नहीं, बेरहमी तक छलकती लगी। औरत को पहली बार लगा कि घोड़े पर सवार, हाथ में नंगी तलवार लिये, यह आदमी लड़ाई के मैदान में बहुत ही खूंखार लगता होगा। उसने आँखें नीची कर उसके बड़े-बड़े, गाठ-गंठीले हाथों पर एक निगाह डाली और जाने क्यों उसके मुँह से एक सर्द आह निकल गई।

थोड़ी देर बाद वह उठी, और शबनम से भीगने से बचाने के लिए अपनी स्कर्ट के सिरे को ऊपर उठाए हुए मैदान के दूसरे सिरे की ओर

बढ़ी। पास ही पानी की एक धारा कंकड़ों से खिलवाड़ करती, धीरे-धीरे बहती मिली। दोनों तरफ़ के पत्थरों पर हरी काई की गोट लगी दीखी। अक्सीनिया धारा के पास पहुंची, ठंडा पानी पिया, हाथ-मुंह धोया और सूखे रूमाल से तमतमाया हुआ चेहरा पोंछा। उसके होंठों पर शांति-भरी मुस्कान खिल गई···आंखें खुशी से लौ देने लगीं। ग्रिगोरी एक बार फिर मिल गया था उसे। अनजानी उंगलियां इशारे कर रही थीं और खुशियों के देश की तरफ़ एक बार फिर बुला रही थीं उसे···हालांकि इन खुशियों की चांदनी चार दिन की थी···पर, कितनी रातें उसने पलकों में काटी थीं और सिर्फ़ आंसू बहाए थे···कितने दुःख उठाए थे पिछले कुछ महीनों में···अभी परसों ही वह बाग़ में थी कि पास के खेतों में आलू की खुदाई करते-करते औरतों ने दर्द-भरा एक गाना छेड़ दिया था···इस तरह दिल के जाने किस जख्म का टांका खुल गया था कि वह तड़प-तड़प उठी थी और लाख न चाहते हुए भी कान लगाकर सुनती रही थी···गीत में कहा गया था :

मेरे दुखिया कलहंस, लौट आओ,
अब तो घर लौट आओ।
तैरना खत्म करो।
बहुत वक़्त हो गया, पानी में तैरना खत्म करो।
अब तो मेरे आंसुओं का तार टूटना चाहिए।
पलकों के सारे मोती रीत गए हैं।
मैं यानी एक अबला।
अकेले पड़ी।
जाने कब से रो रही हूं!

औरत ऊंचे स्वर में अपनी फूटी क़िस्मत का रोना रोती रही थी और अकसीनिया पर उसका अपना काबू न रह गया था···आंखों से आंसू बह चले। इस पर अपने मन की कचोट और तड़प को बहलाने के लिए उसने काम में डूबना चाहा था। लेकिन आंखें धुंधला उठी थीं। आंसू आलू के पौधों और मेरे हाथों पर टपाटप गिरने लगे थे, और कुछ भी देखना मुश्किल और काम नामुमकिन हो गया था। उसने खुरपी एक

तरफ़ रख दी थी। खुद जमीन पर पड़ रही थी और फिर हाथों में चेहरा छिपाकर फूट-फूटकर रोती रही थी।

यानी, अभी कल ही अकसीनिया अपनी जिन्दगी पर लानत बरसा रही थी और आस-पास की हर चीज उसे बादलों से भरे दिन-सी नीरस और उदास लग रही थी। लेकिन आज सब-कुछ बदल गया था···अब वही हर चीज उसे खुशी से खिली, और चमाचम नजर आ रही थी, जैसे कि गरमी का दिन हो और बादल टूटकर बरसने के बाद अभी-अभी छँटे हों।

सो, उगते सूरज की तिरछी किरणों में दहकती शाहबलूत की पत्तियों को एकटक देखते हुए अकसीनिया ने सोचा—'यह जिन्दगी हमें भी हमारी जगह देगी।'

झाड़ियों के पास और धूप के ऐन नीचे, रंग-बिरंगे, खुशनुमा फूल मह-मह करते दीखे। अकसीनिया ने अंजरी भर चुने, ग्रिगोरी के पास जा बैठी और अपनी जवानी के दिनों की याद में माला गूंथने लगी।

माला गुंथ गई तो वह उसे सराहती बैठी रही। फिर, उसने उसमें जंगली जवा के कई गुलाबी फूल गूंथे और उसे ग्रिगोरी के माथे पर सजा दिया।

कोई नौ बजे घोड़ों के अचानक हिनहिनाने पर ग्रिगोरी चौंककर उठ बैठा और हथियारों की तलाश में चारों तरफ़ हाथ दौड़ाने लगा।

अकसीनिया शांत भाव से बोली—"कोई भी तो नहीं है कहीं··· तुम इस तरह डर क्यों गए ?"

ग्रिगोरी ने अपनी आँखें मलीं और नींद भरे-ही-भरे मुस्कराया—"मैं तो खरगोश की तरह चौकन्ना रहने का आदी हो गया हूँ···सोता हूँ तो भी एक आँख से झांकता रहता हूँ और मामूली-से-मामूली आहट पर चौंकता रहता हूँ···आदत छोड़ने में वक़्त लगता है, रानी···मैं बहुत देर तक सोता रहा क्या ?"

"नहीं···ऐसा तो नहीं है···तुम और सोना चाहते हो क्या ?"

"इसकी न पूछो···बदन को पूरा आराम तो तब मिले जब मैं चौबीसों घंटे सोता रहूँ···खैर···आओ, चलो, नाश्ता कर लें···घोड़े

की काठीवाले मेरे थैले में रोटी और चाकू है···तुम निकालो···इस बीच मैं जाकर घोड़ों को पानी पिलाए लाता हूँ।"

ग्रिगोरी उठा और अपना बरानकोट सम्हालकर कंधे भटकने लगा। इस बीच धूप में खासी तपन आ गई। हवा से पेड़ों की पत्तियाँ खड़खड़ाने लगीं और इस तरह खड़खड़ाने लगीं कि जलधारा की मंद कलकल खो-खो गई।

वह घोड़ों को लेकर जलधारा के किनारे पहुँचा। वहाँ उसने कंकड़ों और पेड़ों की टहनियों की मदद से बाँध बनाया, तलवार से मिट्टी खोदी और कंकड़ो के बीच की संधों में भर दी। इस तरह पानी बाँध के उस पार जमा हो गया तो उसने घोड़ों को नीचे उतारा, जी भर पानी पीने दिया, फिर उनकी लगामों के दहाने हटाए और उन्हें दुबारा चरने को छोड़ दिया।

नाश्ता करते समय अक्सीनिया बोली—"यहाँ से कहाँ चलेंगे हम लोग ?"

"मोरोज़ोव्स्की ! हम प्लातोव तक घोड़ों पर चलेंगे और बाद में पैदल।"

"घोड़ों का क्या होगा ?"

"इन्हें छोड़ देंगे कहीं।"

"यह तो बहुत ही खराब बात होगी, ग्रिगोरी ! बड़े अच्छे घोड़े हैं। भूरावाला तो ऐसा है कि देखते जाओ, देखते जाओ, जी ही नहीं भरता। उसे भी छोड़ दोगे तुम ? वह तुम्हें मिला कहाँ था ?"

"मिला कहाँ था ?" ग्रिगोरी मुस्कराया और साथ ही उसका मन ग्लानि से भर उठा—"मैंने यह घोड़ा एक उक्रइनी से लूटा था।"

और, थोड़ी देर चुप रहने के बाद बोला—"खराब बात हो और चाहे अच्छी बात हो, इन जानवरों को राह में कहीं-न-कहीं छोड़ना तो पड़ेगा ही···घोड़ों की तिजरात तो हमारा पेशा है नहीं।"

"लेकिन, यह रायफ़ल तुमने अपने साथ क्यों लाद रखी है ? फ़ायदा ? आसमान वाला न करे कि उस पर किसी की नज़र पड़े··· कहीं पड़ गई तो इसकी बदौलत हमारी मुसीबतों की गिनती न

रहेगी।"

"रात में किसकी नजर पड़ेगी ?" साथ रखी है वक्त-ज़रूरत के लिए। इसके बिना कुछ खाली-खाली-सा लगता है। वैसे घोड़े कहीं छोड़ूंगा तो साथ ही इसे भी छोड़ दूंगा। इसके बाद इसकी जरूरत रहेगी नहीं।"

नाश्ते के बाद दोनों बरानकोट पर लेट गए। फिर ग्रिगोरी ने नींद को टालने की बड़ी कोशिश की, मगर वह तो घिर-घिरकर आने लगी। दूसरी तरफ़···अकसीनिया ने कुहनी की टेक लगा-कर उसे पूरी दास्तान सुनानी शुरू की कि उसके बिना कैसे-कैसे ज़िन्दगी काटी और पिछले कुछ महीनों में कितना कुछ सहा। ग्रिगोरी टूटकर घिरती नींद के बीच उसकी बातें सुनता रहा, पर आलस्य से भारी पलकें उसके खोले न खुलीं। बीच-बीच में तो पूरी बात-की-बात ही गोल हो गई। पहले आवाज़ दूर से आती लगी। फिर एकदम हल्की पड़ी और फिर बिल्कुल डूब-डूब गई। वह सिहरा और जागा, मगर कुछ क्षणों में ही पलकें दुबारा बंद हो गईं। थकान इच्छा और कामना से इक्कीस बैठी।

अकसीनिया कहती गई—"बच्चे तुम्हारे लिए बहुत कलपे। अक्सर पूछा—'पापा कहाँ हैं ?' मैंने उन्हें दुलार से सहेजा और उन्हें बहलाने की भरसक कोशिश की। नतीजा यह हुआ कि दोनों मुझसे खूब हिल गए और उनका दून्या के यहाँ जाना कम हो गया। पोल्युशका शरारती नहीं है···सीधी है···मैंने उसके लिए कपड़े के लत्तों की गुड़ियाँ बना दीं तो वह मेज़ के नीचे बैठकर उन्हीं में उलझी रहने लगी। लेकिन मीशात्का ने एक बार परेशानी पैदा कर दी। गली से सिर से पैर तक काँपता हुआ, भागा-भागा आया। मैंने पूछा—'क्या हुआ ?'···बस, फूट पड़ा और फिर फफक-फफककर रोया। बोला—'मेरे साथ लड़के खेलते नहीं···कहते हैं तुम्हारा पापा डाकू है···माँ, क्या पापा सचमुच डाकू है ? और, डाकू कहते किसे है ?' मैंने कहा—'तुम्हारे पापा डाकू बिल्कुल नहीं···सिर्फ किस्मत के हेटे है।' इस पर उसने सवालों की झड़ी लगा दी—'पापा क़िस्मत के हेटे क्यों है ?' और 'क़िस्मत का हेटा होता

क्या है ?' मुझसे जवाब देते न बना। ये बच्चे अपने-आप ही मुझे माँ कहने लगे। ग्रीशा, तुम यह मत समझना कि मैंने सिखलाया है इन्हें। लेकिन, मिखाइल बच्चों के साथ हमेशा ही मोहब्बत से पेश आया··· इनके मामले में उसने हमेशा ही ममता बरती। मुझसे तो मुँह तक खोलकर नहीं दिया···मुझे देखा तो या तो पीठ फेर ली या तेजी से बग़ल से निकल गया। मगर, बच्चों के लिए तो कई बार व्येशेन्स्काया तक से चीनी लाया।···प्रोखोर तुम्हारे लिए बराबर कलपा। अकसर बोला— 'हमने एक सचमुच नेक आदमी खो दिया।'···अभी पिछले हफ़्ते आया और तुम्हारी बातें करते-करते उसकी आँखें छलछला आईं।··· हाँ, वे लोग आए तो उन्होंने मेरे घर की तलाशी ली···कोना-कोना उलटकर फेंक दिया।"

परन्तु ग्रिगोरी पूरी बात सुन न पाया और बीच में ही सो गया। उसके सिर के ऊपर एक नए एल्म के पेड़ की पत्तियाँ हवा में सरसराने लगीं और रोशनी के पीले ताने-वाने उसके चेहरे के आर-पार तन उठे। अकसीनिया उसकी बंद पलकें बहुत देर तक चूमती रही। फिर उसके बाजू की टेक लगाकर खुद भी सो गई और सपनों में भी मुस्कराती रही।

रात काफ़ी भीग गई और चाँद उग आया, तब कहीं वे दोनों सुखोइ की घाटी से रवाना हुए। कोई दो घंटे घोड़े दौड़ाने के बाद वे टीले से नीचे उतरे और चिर-नदी के किनारे पहुँचे। इस समय चरागाह में मुर्ग़ाबियाँ कीकती रहीं, नदी के नरकुलों वाले हिस्सों में मेढ़क टर्र-टर्र करते रहे और दूर कहीं तितलौवा की खोखली आवाज़ रह-रहकर हवा में भाँय-भाँय करती रही।

नदी के किनारे-किनारे फैली बगीचियों में धुंध और भी उदास और मलिन लगने लगी।

···ग्रिगोरी छोटे पुल के पास ही रुका।···आधी रात का सन्नाटा पूरे गाँव पर छाया रहा कि उसने घोड़े को एड़ लगाई और एक तरफ़ को मुड़ा। पुल पार करने का खयाल उसे न भाया, क्योंकि सन्नाटे पर यक़ीन करना वाजिब न जँचा और मन अन्दर-ही-अन्दर डरा।

गाँव के बाहर ग्रिगोरी ने, अकसीनिया के साथ नदी पार की ओर
एक पतली गली में मुड़ा ही था कि पास की खाई से एक आदमी
उभरा···तीन उसके बाद उभरे—"रुको···कौन है ?"

ग्रिगोरी चीख़ पर इस तरह चौंका, जैसे कि उस पर किसी ने चोट
कर दी हो। उसने एकदम रासें खींची, अपने-आप पर क़ाबू पाते हुए
चिल्लाकर जवाब दिया—"दोस्त !" तेजी से घोड़ा मोड़ा और
अकसीनिया से धीरे से बोला—"लौटो ! मेरे पीछे-पीछे आओ।"

अनाज की वसूली से सम्बन्धित फ़ौजी टुकड़ी द्वारा रात की रखवाली
के लिए चौकी पर तैनात चारों आदमी चुपचाप, धीरे-धीरे उन दोनों
की ओर बढ़े। उनमें से एक सलाई जलाकर सिगरेट सुलगाने लगा।
ग्रिगोरी ने अकसीनिया के घोड़े पर पूरी ताक़त से चाबुक जमाया।
जानवर पीछे हटा और सरपट दौड़ दिया। ग्रिगोरी अपने घोड़े की गर्दन
पर दोहरा हो उठा और उसने पहले घोड़े के पीछे-पीछे अपना घोड़ा
डाल दिया। कुछ क्षणों तक काटता-सा मौन चलता रहा। पर इसके
बाद गोलियाँ बरसने लगीं और राइफ़लों की आग अंधकार भेदने लगी।
ग्रिगोरी ने गोलियों की सरसराहट और चीख साथ-साथ सुनी—"हथियार
सम्हालो।"

भूरा घोड़ा जान छोड़कर अंधाधुन्ध दौड़ता रहा कि नदी से कोई दो
सौ गज के फ़ासले पर ग्रिगोरी के घोड़े ने उसे पकड़ लिया और
ग्रिगोरी बराबर आते हुए अकसीनिया से बोला—"और नीचे झुको···
अकसीनिया और नीचे झुको।"

लेकिन उसने रासें खींचीं और अपने को पीछे की ओर झटकते हुए
एक ओर को लुढ़कने लगी। इसके बाद गिरने-गिरने को हुई कि ग्रिगोरी
ने उसे साध लिया। भर्राए हुए गले से पूछा—"ज़ख्मी हो गई हो ?
कहाँ लगी गोली ? बोलो न !"

अकसीनिया चुप रही और उसकी बाँहों पर अधिक-से-अधिक
झूलती गई। उसने घोड़ा दौड़ाते-दौड़ाते उसे सीने से कसे रखा। लेकिन
वह जल्दी ही हाँफने लगा और फुसफुसाते हुए बोला—"ऊपर वाले के
नाम पर कुछ तो बोलो ! आखिर तुम्हें हुआ क्या ?"

लेकिन औरत के मुंह से न एक शब्द निकला और न एक आह-कराह···

गाँव के कोई दो वर्स्ट बाहर ग्रिगोरी तेज़ी से सड़क से कटा, पास की घाटी की ओर बढ़ा, नीचे उतरा और अकसीनिया को उसके घोड़े से उतारकर धीरे ज़मीन पर लिटाया।

इसके बाद उसने उसकी गरम जैकेट उतारी, पतला, सूती ब्लाउज़ चीरा और जख़्म देखना शुरू किया। पता चला कि गोली बाएँ कंधे की हड्डी चीरती हुई बदन में धँसी और गले की दाईं हड्डी के नीचे से निकल गई। ग्रिगोरी ने खून से तर, काँपते हुए हाथों से काठी के थैले से लड़ाई के मैदान वाली अपनी पट्टियाँ और एक साफ़ बनियान निकाली। फिर उसने अकसीनिया को उठाकर अपने घुटने का सहारा दिया और गले की हड्डी के नीचे उमड़ती खून की धार को रोकने की कोशिश करते हुए घाव पर पट्टी बाँधना शुरू किया। मगर बनियान और पट्टियाँ जल्दी ही खून से नहा उठीं और काली पड़ गईं। खून अधखुले मुँह से भी बहता दीखा और गले के अन्दर भी छलछलाता प्रतीत हुआ। ग्रिगोरी आशंका से सुन्न पड़ गया और उसे सारा खेल खत्म लगा। लगा कि जीवन की भयानकतम घटना घट गई।

उसने अकसीनिया को हाथों में साधकर सीधा ढाल पार किया, घास और चरागाही हरियाली से भरा पतला रास्ता तय किया और पूरी सावधानी से घाटी की ओर बढ़ा। औरत का सिर बेसहारा होकर उसके कंधे पर झूलता रहा। गले से सीटी की-सी आवाज होती रही, साँस सिसकियाँ भरती रही, बदन से खून बराबर चुसता रहा और मुँह से बह-बहकर ग्रीशा के सीने पर आता रहा।

घोड़े उन दोनों के पीछे-पीछे घाटी तक आए और हींसते और लगाम के दहाने बजाते हुए हरी-हरी रस-भरी घास चरने लगे।

अकसीनिया ने तड़का होने के ज़रा पहले ग्रिगोरी की बाँहों में दम तोड़ दिया। होश आने का सवाल ही नहीं उठा। ग्रिगोरी ने बर्फ़-से ठंडे, खून से खारे उसके होंठ धीरे से चूमे, उसे सहारे से घास पर लिटाया और खुद उठकर खड़ा हुआ। मगर इसी समय जैसे किसी ने उसके

सीने पर ज़ोर का घूंसा जमाया और वह ढह पड़ा। पर दूसरे ही क्षण वह आशंकित हृदय से, झटके से उठकर खड़ा हो गया। मगर दुबारा गिर पड़ा और इस बार सिर पत्थर से टकरा गया। इसके बाद पड़े-ही-पड़े उसने म्यान से तलवार बाहर खींची और उसकी मदद से क़ब्र खोदने लगा। मिट्टी जितनी ही नम, उतनी ही मुलायम महसूस हुई। ग्रिगोरी ने जल्दी-जल्दी हाथ चलाने शुरू किए, मगर सहसा ही अन्दर से गला घुटता-सा लगा तो आसानी से सांस लेने के लिए उसने कमीज़ का गर्दनवाला हिस्सा खींचकर चीर डाला। इस प्रकार सुबह की तरी, और ताज़गी से भरी हवा पसीने से तर-बतर सीने तक पहुँची तो उसे बहुत ही राहत मिली और काम उतना मुश्किल न रहा। उसने एक पल को भी दम नहीं लिया और बराबर मिट्टी खोदता रहा। मगर कमर तक गहरी क़ब्र की तैयारी में, फिर भी बहुत वक़्त लग गया।

इस बीच दिन चढ़ आया। ग्रिगोरी ने अपनी अकसीनिया को क़ब्र में उतारा तो लिटाकर उसके जर्द सांवले हाथ सीने पर रख दिए और चेहरा रूमाल में ढक दिया कि आसमान को अपलक निहारती, अधखुली आंखों में मिट्टी न पड़े।

इसके बाद उससे विदाई ली। सहसा ही मन के अन्दर से कोई विश्वास झाँककर बोला—'यह अलगाव बहुत दिन नहीं चलेगा···हम जल्दी ही मिलेंगे।'

फिर, ग्रिगोरी ने हथेलियों से ढूह पर नम, पीली, चिकनी मिट्टी डाली और जाने कितनी देर तक सिर झुकाए, घुटनों के बल मज़ार की बग़ल में बैठा रहा। उसका बदन हल्के-हल्के हरकत करता रहा।

अब उसे जल्दी कुछ न रही···उसका सब-कुछ उसके देखते-देखते दफ़न हो गया!

सूरज पूर्व की ओर से बहती, गरम हवा की धुआँ-भरी धुंध को भेदता घाटी के ऊपर उठा। किरणों ने ग्रिगोरी के सिर के बालों में चांदी घोल दी और वे उसके पीले भयानक चेहरे पर फिसल आईं। वह जैसे कि घनघोर नींद से जागा और सिर उठाकर देखने लगा—ऊपर

का आसमान और आसमान में दमकता सूरज। आसमान उसे काला लगा और आंखों की रोशनी हर लेने वाले सूरज का गोला सांवला नज़र आया।

: १८ :

वसन्त के आरम्भ में वर्फ़ गलती है और जाड़े में नीचे दबी रहने वाली घास सूखना शुरू करती है तो स्तेपी में जहाँ-तहाँ आग लग जाती है। फिर हवा के झोंकों के इशारे पर आग की लपटों की धाराएँ प्रवाहित हो उठती हैं। वे खुश्क फ़ॉक्सटेल-घास को निगल लेती हैं, भटकटैया के लम्बे-लम्बे डंठलों पर उछलती फिरती हैं, मगवोर्ट के भूरे सिरों पर फिसलती हैं, और गढ़े-गढ़ैयों में फैल जाती हैं। बाद में आग से काली ज़मीन की जलायँध पूरे पसारे के ऊपर टँगी-सी रहती है। वैसे जहाँ यह सब नहीं होता, वहाँ हर ओर नई घास उगती है। हरियाली बड़ी ही सुहानी लगती है। अनगिनत बुलबुलें आसमान के नीलम में पर तोलती हैं, प्रवासी कलहंस घास-पात पर इधर-उधर मुँह मारते हैं और सारस गरमी के अपने बसेरे ठीक-ठाक करते हैं।

लेकिन दावानल जिधर से भी गुज़रता है, उधर ही धरती वीरान हो जाती है और कोयला बन जाती है। वहाँ कोई पंछी घोंसला नहीं बनाता, कोई जानवर नहीं आता। सिर्फ़ हवा सफ़ेद राख और काली गर्द लिए-दिए दूर-दूर तक सर्राटे भरती रहती है।

आग में झुलसे स्तेपी की तरह, ग्रिगोरी की ज़िन्दगी भी कोयला होकर रह गई। वह अपने मन की हर प्यारी चीज़ से महरूम हो गया। बेरहम मौत ने उससे सब-कुछ छीन लिया, सभी कुछ मिटाकर रख दिया। बचे महज़ बच्चे। लेकिन, इस पर भी वह खुद धरती से इस तरह चिपका रहा, जैसे कि उसकी टूटी और बिखरी हुई ज़िन्दगी का उसके और दूसरों के लिए सचमुच कोई बड़ा महत्त्व हो।···

सो, अकसीनिया को दफ़न करने के बाद वह तीन दिन तक स्तेपी में मारा-मारा फिरता रहा। लेकिन न तो घर लौटा और न हथियार डाल देने की नीयत से व्येशेन्स्काया गया। चौथे दिन घोड़े उस्त खोपर-

स्काया जिले के एक गाँव में छोड़े, दोन पार की ग्रोर स्लाशचेव्स्की के शाहबलूत के जंगल की तरफ पैदल रवाना हुग्रा। इसी जगल के सिरे पर पिछली ग्रप्रैल के महीने में फ़ोमीन के दस्ते ने मुंह की खाई थी। उस समय भी यानी पिछली ग्रप्रैल में भी उसने भागकर ग्राने वाले लोगों के वहीं कहीं बसने की बात सुनी थी।

तो फ़ोमीन के पास लौटने की बात तो उसके दिमाग़ में न ग्राई, पर इन लोगों से मिलने का फ़ैसला उसने जरूर किया।

फिर कई दिन तक लम्बा-चौड़ा जंगल मँझाता फिरा। इस बीच भूख से कलेजा मुँह को ग्रा गया, मगर इन्सान की कोई बस्ती कहीं नजर नहीं ग्राई।

इस पर ग्रकसीनिया की मौत के कारण तो वह ग्रादमी ही बिल्कुल दूसरा समझ पड़ने लगा। ग्रब उसमें न वह जान नज़र ग्राती, ग्रौर न वह हिम्मत ठाठें मारती। ग्रब तो एक टहनी भी कहीं टूटती, एक पत्ता भी घने जंगल में खड़खड़ाता ग्रौर एक पंछी भी कहीं रात में बोल देता तो वह चौंक उठता ग्रौर डर जाता। खाने के नाम पर बस, जंगली स्ट्रॉबेरियों के कच्चे फल, छोटी-छोटी जंगली सांपछतरियाँ, ग्रौर जैतून की पत्तियाँ खाता। नतीजा यह कि बराबर झटकता जाता।···

होते-होते पाँचवें दिन वह भागकर ग्रानेवाले उन लोगों को सुयोग से मिल गया, ग्रौर वे उसे ग्रपनी खाई में ले गए।···

वे लोग गिनती में सात थे। सभी स्थानीय गाँव के थे ग्रौर फ़ौजी भरती से बचने के लिए, पिछले साल, पतझर में यहाँ ग्रा बसे थे। उनकी खाई बिल्कुल कमरे जैसी थी। ग्रन्दर बिल्कुल घर का-सा ग्राराम मिलता था। शायद ही कभी किसी चीज़ की कमी महसूस होती हो। रात को वे ग्रकसर ग्रपने-ग्रपने घर चले जाते, ग्रौर लौटते तो डबल रोटी के छोटे टुकड़े, मामूली रोटियाँ, ग्राटा ग्रौर ग्रालू साथ ले ग्राते। इसके ग्रलावा वे ग्रकसर ही किसी-न-किसी गाँव से एक-न-एक भेड़ पकड़ लाते ग्रौर इस तरह गोश्त भी मुहय्या हो जाता।···

बस तो, उन लोगों में से एक ने, यानी कभी बारहवीं कज्ज़ाक रेजीमेंट में काम करनेवाले एक कज्ज़ाक ने ग्रिगोरी को पहचाना ग्रौर बिना किसी

खास टालमटोल के वह दल में शामिल कर लिया गया।

इसके बाद दिन-पर-दिन बीतते गए, मगर मन से वह बराबर इतना टूटा रहा कि दिनों की गिनती ही दिमाग़ से निकल गई। इस प्रकार वह अक्तूबर तक जैसे-तैसे उस जंगल में रहा। पर पतझर आरम्भ होते ही वर्षा की झड़ी लगी और फिर सर्दी आई तो उसमें एक नई तड़प-सी अप्रत्याशित रूप से पैदा हो गई, और वह कलपने लगा अपने बच्चों को देखने के लिए, अपने गाँव की एक झलक पाने के लिए····

अब समय काटने के लिए वह दिनों-दिन तख्तों के पलंग पर बैठकर लकड़ी के चम्मच बनाता, तश्तरियां गहराता और नाज़ुक लकड़ी से लोगों और जानवरों की मूर्तियां गढ़ता। यानी, वह हर तरह के खयाल से बचने और कलप के ज़हर को अन्दर ही घुलने से बचाने की कोशिश करता। दिन में तो वह अपने प्रयत्नों में सफल हो जाता, मगर रात होते ही पिछली यादें घेर लेतीं, हसरत उसके दिल को ऐंठ-ऐंठ देती और वह पुआल के विस्तरे पर करवटें बदलता रहता। क्षण-भर को भी पलक न झपती। दिन में किसी तरह की कोई शिकायत उसके मुंह से न निकलती, पर रात को वह अकसर सिर से पैर तक कांपता हुआ उठता और चेहरे पर हाथ फेरता तो गाल और छः महीने की बढ़ी दाढ़ी के बाल आंसुओं से तर मिलते।

अगर किसी तरह आंख लग भी जाती तो वह बच्चों, अकसीनिया, मां और सभी मृत सगे-सम्बन्धियों को सपने में देखता। उसे अपनी पूरी जिन्दगी अतीत के चारों ओर लिपटी लगती और वह अतीत उसे क्षणिक और उड़ जाने वाली नींद-सा मालूम होता। अक्सर सोचता—'बस, एक बार···सिर्फ़ एक बार पुरानी जगहों की एक झांकी मिल जाए··· सिर्फ़ एक बार अपने बच्चों को भर-नज़र देख लूं···फिर आंखें मुंदती हों तो भले ही मुंद जाएं!···'

ऐसे में वसन्त के आरम्भ में एक दिन अचानक ही चुमाकोव जाने कहां से आ गया, और कमर तक भीगा रहने पर भी हमेशा की तरह खुश और चुस्त लगा। उसने आग के पास खड़े होकर अपने कपड़े सुखा''

और फिर तख्तों के पलंग पर, ग्रिगोरी की बगल में जा बैठा। बोला—
"तुम्हारे चले आने के बाद हमने बड़ी लम्बी-लम्बी मंजिलें मारीं,
मेलेखोव! हमने करीब-करीब अस्त्राखान तक धावा मारा···काल्मीक
का मैदान सँभाया···बड़ी लम्बी-चौड़ी दुनिया देख डाली। और, जितना
खून बहाया, उसका तो कोई हिसाब ही नहीं है! लाल फ़ौजियों ने
याकोव-येफ़िमोविच की बीवी को धरोहर की बगल में रख लिया और
उसकी सारी ज़मीन-जायदाद ज़ब्त कर ली। नतीजा यह कि वह पागल
हो गया और उसने सोवियत हुकूमत की मातहत काम करने वाले हर
आदमी को तलवार से घाट उतारने का हुक्म दे दिया। और, हम
मुदर्रिसों, डॉक्टरों और खेतिहर-रहनुमाओं वगैरा सभी को काट-काट-
कर फेंकने लगे।···कहना मुश्किल है कि हमने किसे बख्शा! लेकिन
आज हालत यह है कि उन्होंने हमें हमेशा-हमेशा के लिए मिटाकर रख
दिया है!" चुमाकोव आहें भरते और अब भी ठंड से कांपते हुए
बोला—"उन्होंने पहले हमारी ताक़त तीशान्स्काया के पास तोड़ी और
फिर दुबारा, अभी एक हफ़्ते पहले, हमें सोलोम्नी के पास कुचला। रात
को तीन तरफ़ से घेर लिया। सिर्फ़ पहाड़ी की चोटी का एक रास्ता छोड़ा,
मगर वहाँ घोड़ों के पेट तक बर्फ़ रही। इसके बाद तड़का होते ही
मशीनगनों से आग बरसानी शुरू की। इस तरह खात्मे की शुरुआत
हुई।···लाल फ़ौजियों ने हमें गाजर-मूली की तरह काटा। सिर्फ़ दो
लोग बचकर निकल पाए—एक मैं, और एक फ़ोमीन का कम उम्र बेटा
दावीदका···फ़ोमीन पिछले पतझर से उसे बराबर अपने साथ ही रखता
रहा था···याकोव-येफ़िमोविच खुद मारा गया···मेरे देखते-देखते मार
डाला गया···पहली गोली पैर में लगी और घुटने की हड्डी उड़ा ले गई
···दूसरी गोली खोपड़ी के आर-पार हो गई। तीन बार अपने घोड़े से
गिरा···हमने हर बार उसे उठाया और काठी पर बिठाया, मगर थोड़ी
दूर के बाद ही वह फिर भहरा पड़ा। तीसरी गोली, दाईं तरफ़ पसलियों
में लगी···इसके बाद हम मजबूर हो गए और हमें उसे जहाँ-का-तहाँ
छोड़ देना पड़ा। मैंने थोड़ी देर तक घोड़ा सरपट दौड़ाने के बाद मुड़कर
देखा तो वह जमीन पर पड़ा दीखा और दो घुड़सवार तलवारों से उसकी

बोटी-बोटी काटते नज़र आए···"

ग्रिगोरी तटस्थ भाव से बोला—"खैर···यह तो होना ही था।"

चुमाकोव ने रात खाई में बिताई और सुबह होते ही चलने को उठ खड़ा हुआ। ग्रिगोरी ने पूछा—"कहाँ जा रहे हो तुम ?"

चुमाकोव ने मुस्कराते हुए जवाब दिया—"ऐशो-आराम की ज़िन्दगी की तलाश में। तुम चलोगे मेरे साथ ?"

"नहीं···तुम अकेले ही जाओ।"

"तुम ठीक कहते हो···मेरी तुम्हारे साथ निभ भी तो नहीं सकती। तुम्हारा पेशा है प्याले और चम्मच बनाना, और इसमें मुझे कोई दिलचस्पी नहीं है।" चुमाकोव ने चुटकी लेते हुए कहा, टोपी उतारी और झुकते हुए बोला—"अमनपसन्द-डाकुओ···ऊपरवाला तुम्हें बचाए··· मेहमान-नवाजी और पनाह के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया···नीली छतरीवाला तुम्हारी ज़िन्दगी को खुशी बख्शे ! यहाँ तो खासी घुटन महसूस होती है। दिन-रात महज़ उँगलियाँ चटकाते रहते हो···यह भी कोई ज़िन्दगी है ?"

चुमाकोव चला गया। ग्रिगोरी इसके बाद सिर्फ़ एक सप्ताह जंगल में और रहा। फिर वहाँ से रवाना होने की तैयारी करने लगा।

वहाँ रहने वालों में से एक ने पूछा—"घर जा रहे हो ?"

और, इस खाई में आने के बाद पहली बार ग्रिगोरी हल्के-हल्के मुस्कराया और बोला—"हाँ, घर जा रहा हूँ।"

"बहार तक रुको···मई-दिवस पर सरकार की तरफ़ से आम माफ़ी दी जाएगी···और तब हम सभी लोग अपने-अपने घर चलेंगे।"

"नहीं···मैं ठहरूँगा नहीं।" ग्रिगोरी ने जवाब दिया और सभी से बिदा ली।···

अगले दिन सवेरे वह दोन के ठीक सामने बसे अपने तातारस्की गाँव में पहुँच गया, वहाँ अपने अहाते को एकटक देखता बहुत देर तक खड़ा रहा और प्रसन्नता और उमंग से उसके चेहरे का रंग ज़र्द पड़ता गया। फिर उसने राइफ़ल कंधे से उतारी, उसे साफ़ करने का पटुआ और मशीनी तेल की छोटी-सी शीशी निकाली और जाने क्यों कारतूस

गिन डाले। बारह पूरे बिला और छब्बीस छुट्टा गोलियाँ निकलीं।

चट्टान के नीचे की बर्फ़ सिरे से पीछे हट गई लगी। हरा पानी रह-रहकर बौछार करता और किनारे की बर्फ़ की परत को तोड़ता दीखा। ग्रिगोरी ने अपनी राइफ़ल और पिस्तौल नदी में लुका दी, फिर कारतूस फेंक दिए और अपने हाथ ग्रेटकोट के सिरे से रगड़-रगड़कर पोंछ लिए।

उसने गाँव के नीचे की तरफ से नदी पार की और मार्च की नीली, अध-गली, ऊँची-नीची वर्फ पर लम्बे-लम्बे डग भरता घर की ओर बढ़ा। पर अभी थोड़ा फ़ासला रहा कि मीशात्का घाटवाले ढाल पर नज़र आया। पिता अपनी सम्हाल में नहीं रहा और दौड़ता हुआ बेटे की ओर लपका।

मीशात्का पत्थर से लटकते बर्फ़ के नीले टुकड़ों को तोड़ता और फिर उन्हें ढाल पर फेंक-फेंककर एकटक देखता रहा। दूसरे शब्दों में, उनका पूरा मजा लेता रहा।

ग्रिगोरी ढाल के पास पहुँचा और हाँफते हुए, भरे हुए गले से बेटे को आवाज देने लगा—"मीशात्का···नन्हे-मुन्ने, बेटे मेरे!"

मीशात्का ने डर से भरकर उसकी ओर देखा और पलकें झुका ली। यानी, दाढी और भयावने चेहरे से उसने मन-ही-मन अनुमान लगाया और अपने पिता को पूरी तरह पहचान लिया।

दूसरी ओर ग्रिगोरी की हालत अजीब हो उठी। शाहबलूत के जंगल में बच्चों की याद आने पर वह जो प्यार-दुलार-भरे शब्द हर रात होंठों-ही-होठों दोहराता रहा था, इस समय ये सब-के-सब एकदम दिमाग़ से उतर गए। वह घुटनों के बल बैठ गया और बच्चे के गुलाबी नन्हे-नन्हे ठंडे हाथ चूमने लगा। आवाज़ गले में फँसने लगी। मुँह से केवल निकला—"मेरे नन्हे राजा···मेरे प्यारे बेटे···"

फिर ग्रिगोरी ने बच्चे को गोद में उठा लिया और भावावेश से लौ देती, प्यासी आँखें मीशात्का के चेहरे पर टिका दी। पूछा—"तुम सब लोग कैसे हो? बूआ कैसी हैं? पोल्युशका कैसी है? सब लोग ठीक-ठाक तो है?"

मीशात्का ने, अब भी अपने पिता की ओर देखे बिना, शांत भाव

से उत्तर दिया—"दून्या बूआ ठीक हैं। लेकिन पोल्युशका पतझर में मर गई···उसे डिप्थीरिया हो गया था···फूफा मिखाइल लाम पर हैं"।

इस तरह आज ग्रिगोरी की एक ज़माने की हसरत पूरी हुई। इस छोटी-सी हसरत ने उसकी अनेक रातें काली की थीं, पलक नहीं लगने दी थी···और, कलप से तलफा-तलफा कर रखा था। सो इस समय उसका अपना घर सामने था···वह खुद अपने फाटक पर खड़ा था···और, उसका दुलारा बेटा उसकी बाँहों में था।

इतना ही तो ज़िन्दगी ने बाक़ी छोड़ा था उसके लिए···बस, इतना ही तो था, जिसने उसकी साँसों का तार इस धरती और इस लम्बी-चौड़ी दुनिया से जोड़ रखा था।

नीचे धरती और लम्बी-चौड़ी दुनिया पड़ी दमक रही थी··· आसमान से ठिठुरन से ऐंठी-अकड़ी धूप बरस रही थी।

•••